हिन्दी

महाभारत

द्रोणपर्व

लेखक
चतुर्वेदी द्वारकाप्रसाद शर्मा

प्रकाशक
रामनरायन लाल
पब्लिशर और बुकसेलर
इलाहाबाद

१९३०

द्रोणपर्व

विषय-सूची

द्रोणाभिषेक-पर्व

अध्याय पृष्ठ

१—युद्ध का ग्यारहवाँ दिन, धृतराष्ट्र का प्रश्न १

२—कर्ण का आस्फालन ५

३—भीष्म और कर्ण की बातचीत ६

४—भीष्म का कर्ण को आशीर्वाद ११

५—सेनापति-पद पर द्रोणाचार्य का अभिषेक १२

६—द्रोण से सेनापति-पद स्वीकृत करने के लिये प्रार्थना ... १४

७—द्रोण का विक्रम १५

८—द्रोण-वध १६

९—धृतराष्ट्र का परिताप २२

१०—धृतराष्ट्र का सञ्जय से प्रश्न २५

११—श्रीकृष्ण का यशोगान ३१

१२—युधिष्ठिर को पकड़ने का द्रोण का बीड़ा उठाना ... ३५

१३—युधिष्ठिर और अर्जुन की बातचीत ३८

१४—भयङ्कर युद्ध ४०

१५—शल्य और भीम की मुठभेड़ ४१

१६—कौरव-सेना में घबड़ाहट ४६

अथ संशप्तक-वध पर्व

१७—त्रिगर्तों की प्रतिज्ञा ५३

१८—अर्जुन और त्रिगर्तों का युद्ध ५६

पृष्ठ

अध्याय
१९—अर्जुन और संशप्तकों की लड़ाई ५९
२०—व्यूहरचना और घोर युद्ध ६२
२१—द्रोण का रण-कौशल ६७
२२—दुर्योधन का हर्ष ७१
२३—योद्धाओं के रथादि का वर्णन ७४
२४—दैव का प्राबल्य ८१
२५—द्वन्द्व युद्ध ८३
२६—राजा भगदत्त के हाथी का पराक्रम ८७
२७—संशप्तकों की अर्जुन से मुठभेड़ ९२
२८—भगदत्त और अर्जुन की लड़ाई ९५
२९—भगदत्त का विनाश ९८
३०—वृषक और अचल का अर्जुन द्वारा वध १०१
३१—अश्वत्थामा के हाथ से नील का वध १०४
३२—विकट लड़ाई १०७

अभिमन्युवध पर्व

३३—अभिमन्यु वध का संक्षिप्त वृत्तान्त ११२
३४—चक्रव्यूह ११५
३५—चक्रव्यूह भङ्ग करने के लिये अभिमन्यु की प्रतिज्ञा ... ११७
३६—अभिमन्यु का चक्रव्यूह में प्रवेश ११९
३७—अभिमन्यु की वीरता १२३
३८—कौरवों की घबड़ाहट १२६
३९—अभिमन्यु और दुःशासन की मुठभेड़ १२८
४०—दुःशासन और कर्ण की हार १३०
४१—कर्ण के भ्राता का मारा जाना १३३

अध्याय पृष्ठ

४२—जयद्रथ को शिव जी से वरप्राप्ति १३१
४३—जयद्रथ द्वारा पाण्डवों का निवारण १३७
४४—वसाती का मारा जाना १३६
४५—दुर्योधन का रणक्षेत्र से भागना १४०
४६—अश्मक तथा अर्जुननन्दन का वध १४२
४७—बृहद्बल का वध १४५
४८—कपट जाल की रचना १४६
४९—अभिमन्यु वध १५०
५०—समरक्षेत्र का विवरण १५२
५१—युधिष्ठिर का अभिमन्यु के लिये विलाप १५४
५२—अकम्पन का वृत्तान्त १५६
५३—मृत्यु की उत्पत्ति १६०
५४—मृत्यु देवी और प्रजापति का कथोपकथन १६२
५५—राजा मरुत का उपाख्यान १६७
५६—राजा सुहोत्र का उपाख्यान १७१
५७—राजा पौरव का उपाख्यान १७२
५८—राजा शिवि का उपाख्यान १७३
५९—दशरथ-नन्दन श्रीराम का उपाख्यान १७५
६०—राजा भागीरथ का उपाख्यान १७७
६१—राजा दिलीप का उपाख्यान १७८
६२—राजा मान्धाता का उपाख्यान १८०
६३—राजा ययाति का उपाख्यान १८१
६४—राजा अम्बरीष की कथा १८३
६५—राजा शशबिन्दु का उपाख्यान १८४
६६—राजा गय का उपाख्यान १८५

अध्याय				पृष्ठ
६७—राजा रन्तिदेव का उपाख्यान	...	...	...	१८७
६८—राजा भरत की कथा	...	...	...	१८६
६९—राजा पृथु की कथा	...	...	...	१९०
७०—परशुराम जी का उपाख्यान	...	...	...	१९१
७१—सृञ्जय के मृत राजकुमार का पुनः जीवित होना			...	१९२

प्रतिज्ञा पर्व

७२—अर्जुन का शोक ...	...	...	...	१९८
७३—अर्जुन का प्रण ...	...	...	...	२०४
७४—अर्जुन का प्रण जयद्रथ को गुप्तचरों द्वारा मालूम होना ...				२०८
७५—श्रीकृष्ण का कथन	...	...	...	२११
७६—अर्जुन का दृढ़ अध्यवसाय	...	...	...	२१३
७७—सुभद्रा-श्रीकृष्ण संवाद	...	..	...	२१५
७८—सुभद्रा का शोक प्रकाश	...	...	...	२१७
७९—श्रीकृष्ण दारुक संवाद	...	...	...	२२०
८०—अर्जुन को स्वप्न में शिव जी का दर्शन		...	...	२२३
८१—अर्जुन को पाशुपतास्त्र की प्राप्ति ...		..	...	२२८
८२—युधिष्ठिर का नित्यकर्म	...	...	...	२३०
८३—युधिष्ठिर और श्रीकृष्ण की बातचीत		...	...	२३३
८४—अर्जुन की युद्धयात्रा	...	...	...	२३५

जयद्रथवध पर्व

८५—धृतराष्ट्र की व्यग्रता	...	...	.	२३७
८६—सञ्जय का धृतराष्ट्र पर आक्षेप ...		...	...	२४१
८७—शकट व्यूह तथा पद्म-सूची-व्यूह		...	...	२४४
८८—समरभूमि में अर्जुन का आगमन		...	...	२४६

अध्याय पृष्ठ

८९—कौरवों की गज-सेना का नाश २४८
९०—दुःशासन की हार २५०
९१—अर्जुन और द्रोण की लड़ाई २५१
९२—श्रुतायुध और सुदक्षिण का मारा जाना २५६
९३—अम्बष्ठ वध २६१
९४—द्रोण का दुर्योधन को अभेद्य कवच प्रदान २६५
९५—भयङ्कर मार काट २७१
९६—द्वन्द्वयुद्धों का परिणाम २७४
९७—धृष्टद्युम्न और आचार्य द्रोण की लड़ाई २७६
९८—आचार्य द्रोण और सात्यकि की लड़ाई २७९
९९—रणभूमि में सरोवर बना अर्जुन को अपने घोड़ों को जल पिलाना २८२
१००—कौरवों का विस्मित होना २८७
१०१—कौरवों की घबड़ाहट २९०
१०२—दुर्योधन और अर्जुन की मुठभेड़ २९३
१०३—दुर्योधन का रण छोड़ कर भाग जाना २९६
१०४—घमासान लड़ाई २९९
१०५—ध्वजाओं का वृत्तान्त ३०२
१०६—युधिष्ठिर का पिछाड़ी हट जाना ३०४
१०७—सहदेव की वीरता ३०७
१०८—भीमसेन और अलम्बुष राक्षस का युद्ध ३०९
१०९—अलम्बुष का वध ३१२
११०—युधिष्ठिर की व्याकुलता ३१४
१११—सात्यकि का उत्तर ३२१
११२—सात्यकि का शत्रु-सैन्य में प्रवेश ३२५

पृष्ठ

अध्याय

११३—सात्यकि और कृतवर्मा की टक्कर ३३१
११४—कृतवर्मा की वीरता ३३५
११५—जलसन्ध वध १४२
११६—दुर्योधन का बुरी तरह सात्यकि से हारना ३४७
११७—सात्यकि की वीरता ३४९
११८—सुदर्शन वध ३५२
११९—यवनों की हार ३५३
१२०—दुर्योधन का रण छोड़ भागना ३५७
१२१—सात्यकि का सैन्य प्रवेश ३६०
१२२—द्रोण के साथ घमासान युद्ध ३६४
१२३—दुःशासन की हार ३६९
१२४—घोर युद्ध ३७१
१२५—द्रोण की अद्भुत वीरता ३७४
१२६—युधिष्ठिर की व्याकुलता ३७९
१२७—भीम का कौरव-सैन्यव्यूह में प्रवेश और पराक्रम दर्शन ... ३८२
१२८—भीम द्वारा द्रोण के रथों का उलट दिया जाना ... ३८७
१२९—कर्ण की हार ३९१
१३०—दुर्योधन की युधामन्यु एवं उत्तमौजा के साथ लड़ाई ... ३९४
१३१—कर्ण की पुनः हार ३९७
१३२—भीम और कर्ण की पुनः लड़ाई ४०१
१३३—भीम और कर्ण की लड़ाई ४०४
१३४—कर्ण का पलायन ४०७
१३५—धृतराष्ट्र का परिताप ४०९
१३६—भीम के हाथ से पुनः दुर्योधन के सात भाइयों का वध .. ४१२
१३७—विकर्ण तथा चित्रसेन वध ४१४

अध्याय पृष्ठ

१३८—भीमसेन और कर्ण का घोर युद्ध ४१८
१३९—भीम का मरे हाथियों के पीछे जा कर छिपना ४२०
१४०—अलम्बुष वध ४२७
१४१—अर्जुन और सात्यकि की आपस में देखादेखी ... ४२९
१४२—भूरिश्रवा के साथ सात्यकि की लड़ाई ४३१
१४३—भूरिश्रवा का वध ४३६
१४४—सात्यकि और भूरिश्रवा की शत्रुता का कारण .. ४४१
१४५—तुमुल युद्ध ४४३
१४६—जयद्रथ वध ४४६
१४७—कृपाचार्य का अचेत होना ४५८
१४८—अर्जुन का अभिनन्दन ४६३
१४९—युधिष्ठिर द्वारा श्रीकृष्ण का यशकीर्तन ४६८
१५०—दुर्योधन का परिताप ४७२
१५१—द्रोण का दुर्योधन को समझाना ४७५
१५२—दुर्योधन का आक्रमण ४७८

घटोत्कचवध पर्व

१५३—दुर्योधन की हार ४८१
१५४—पाण्डवों तथा सृञ्जयों का आक्रमण ४८४
१५५—द्रोण का पाण्डव-सेना में प्रवेश .. . ४८७
१५६—सात्यकि और घटोत्कच की वीरता ४९०
१५७—बाल्हीक वध ५०३
१५८—कर्ण और कृपाचार्य ५०६
१५९—कर्ण और अश्वत्थामा का कथोपकथन ५११
१६०—अश्वत्थामा की वीरता ५१७

अध्याय	पृष्ठ
१६१—कौरव-सेना का पलायन	५२१
१६२—सोमदत्त वध	५२२
१६३—मशालें जला जला कर युद्ध	५२६
१६४—द्रोण युद्ध	५२९
१६५—युधिष्ठिर का पलायन	५३१
१६६—भीम तथा दुर्योधन	५३४
१६७—सहदेव और द्वितीय अलम्बुष का पलायन	५३७
१६८—फुटकल युद्ध	५४१
१६९—खून खराबी मारकाट	५४४
१७०—धृष्टद्युम्न पर शत्रुओं का बाण बरसाना	५४७
१७१—घोर युद्ध	५५१
१७२—कर्ण और द्रोण द्वारा पाण्डवों की सेना का भगाया जाना	५५४
१७३—घटोत्कच का रणाङ्गण में प्रवेश	५५७
१७४—दूसरे अलम्बुष का वध	५६२
१७५—घटोत्कच का विक्रम	५६५
१७६—अलायुध का रण में आगमन	५७३
१७७—भीम और अलायुध	५७५
१७८—अलायुध का संहार	५७८
१७९—घटोत्कच वध	५८०
१८०—श्रीकृष्ण की प्रसन्नता	५८६
१८१—श्रीकृष्ण के पाण्डवों के प्रति किये गये उपकारों का वर्णन	५८९
१८२—दैव का खिलवाड़	५९२
१८३—युधिष्ठिर का शोक	५९६

अध्याय पृष्ठ

द्रोणवध पर्व

१८४—समरक्षेत्र ही में सेना का शयन करना ६०१
१८५—रात का अंतिम प्रहर ६०५
१८६—प्रभात काल और राजा विराट एवं द्रुपद का मारा जाना ६०८
१८७—नकुल की वीरता ६१२
१८८—दुःशासन और सहदेव ६१६
१८९—दुर्योधन और सात्यकि की बातचीत ६१८
१९०—नरो वा कुञ्जरो वा ६२३
१९१—द्रोण का उदास होना ६२८
१९२—द्रोण का वध ६३१

नारायणास्त्रमोक्ष पर्व

१९३—कृपाचार्य और अश्वत्थामा की बातचीत ६३०
१९४—धृतराष्ट्र की जिज्ञासा ६४४
१९५—अश्वत्थामा का रोष ६४५
१९६—युधिष्ठिर और अर्जुन का वार्तालाप ६४६
१९७—भीमसेन और धृष्टद्युम्न ६५३
१९८—धृष्टद्युम्न और सात्यकि की तड़पातड़पी ६५७
१९९—अश्वत्थामा द्वारा नारायणास्त्र का प्रयोग ६६२
२००—नारायणास्त्र को विफल करना ६६७
२०१—अन्यास्त्र के निफल जाने पर अश्वत्थामा का विस्मय ... ६७१
२०२—शिव-स्वरूप निरूपण ६८४

ग्रन्थ-लेखन

द्रोणपर्व

[द्रोणाभिषेक पर्व]

प्रथम अध्याय

युद्ध का ग्यारहवाँ दिन

धृतराष्ट्र का प्रश्न

नारायण, नरों में उत्तम नर, सरस्वती देवी और श्रीवेदव्यास को प्रणाम कर महाभारत का आरम्भ करना मङ्गलदायक होता है।

राजा जनमेजय ने कहा—हे महान् ! महाबली, अत्यन्त तेजस्वी और बड़े प्रतापी, देवव्रत भीष्म जी को पाञ्चाल देशीय शिखण्डी के हाथ से मरा हुआ सुन कर, महाशोकाकुल एवं परम पराक्रमी राजा धृतराष्ट्र ने क्या किया ? हे तपोधन ! धृतराष्ट्रपुत्र दुर्योधन ने, जो कि भीष्म द्रोणादि महारथियों की सहायता से महाबली पाण्डवों को विजय कर, राज्य चाहता था, सब धनुर्धरों को विजय करने वाले साक्षात् विजय रूप भीष्म जी के मारे जाने पर, जो सोच विचार और अन्य कौरवों से परामर्श कर, निश्चय किया हो, वह सब आप मुझसे कहें।

वैशम्पायन जी बोले—हे जनमेजय ! भीष्म का युद्ध में मारा जाना सुन कौरवों के राजा धृतराष्ट्र चिन्ता और शोक से व्याकुल हो गये। उनके मन की अशान्ति बहुत बढ़ गयी। उधर युद्ध-क्षेत्र-स्थित सञ्जय ने सोचा कि, राजा धृतराष्ट्र के दुःख और शोक की सीमा न होगी—अतः वे रणक्षेत्र से

लौट कर धृतराष्ट्र के पास चले आये। रात होने पर जब सञ्जय सैनिक शिविर से लौट कर हस्तिनापुर में आये और, जब उनके लौट आने का समाचार धृतराष्ट्र ने सुना, तब पुत्र के विजय की अभिलाषा रखने वाले धृतराष्ट्र, अत्यन्त विकल हो भीष्म के लिये विलाप कर के सञ्जय से कहने लगे—हे तात! भीष्म के मारे जाने पर, कौरवों ने क्या किया? महाप्रतापी एवं वीर महात्मा भीष्म के मारे जाने पर, शोकसागर में निमग्न हो कौरवों ने क्या क्या किया? हे सञ्जय! महात्मा पाण्डवों की गगनभेदी सेना तो निश्चय ही तीनों लोकों को त्रस्त करने में समर्थ हुई होगी। सञ्जय ने कहा—हे राजन्! देवव्रत भीष्म के मारे जाने पर, आपके पुत्रों ने जो कुछ किया, उसे आप अपने मन को एकाग्र कर के सुनें। सत्यपराक्रमी भीष्म के मारे जाने पर, आपके समस्त पुत्र अपनी हार और पाण्डवों की जीत का अनुमान कर, शोक और चिन्ता में निमग्न हो गये। हे प्रजानाथ! दोनों ही पक्ष वालों को भीष्म जी के मारे जाने का दुःख हुआ और दोनों ही पक्ष भयभीत हुए और क्षात्र धर्म की निन्दा करने लगे। फिर महातेजस्वी महात्मा भीष्म को प्रणाम कर, उन लोगों ने बाणों ही के तकिये से युक्त शरशय्या बना दी। उस शय्या पर भीष्म जी को लिटा, उनकी रक्षा के लिये पहरा बैठा दिया। फिर सब ने उनकी प्रदक्षिणा कर, उनसे वार्तालाप किया। तदनन्तर क्रोध में भर और लाल लाल नेत्र कर, वे एक दूसरे को घूरते हुए, भीष्म की आज्ञा से पुनः लड़ने को तैयार हो गये। आपकी और पाण्डवों की सेनाएं शङ्ख भेरी बजाती निकलने लगीं। हे राजेन्द्र! भीष्म के शरशय्या-शायी होने के दूसरे दिन, क्रुद्ध एवं कालप्रेरित तथा हतबुद्धि आपके पुत्र, महात्मा भीष्म का कहना न मान कर, लड़ने के लिये शिविर से बाहिर निकले। आपके पुत्रों की दुर्बुद्धि से जिस समय महात्मा भीष्म मारे गये तथा अन्य राजाओं सहित कौरव गण भीष्म के न रहने से ऐसे जान पड़ते थे, जैसे महाविकट वन में रखवाल रहित भेड़ बकरियों का गोल; उस समय कौरवों की सेना ऐसी जान पड़ती थी, जैसे वध के लिये यज्ञीय पशु यज्ञमण्डप में लाये जाते हों। उस

समय कौरवों की सेना के लोग विकल हो रहे थे। इस समय भीष्म के बिना वह कौरवी सेना ताराओं से शून्य आकाश अथवा वायु बिना अन्तरिक्ष अथवा शस्य बिना खेत, या संस्कार बिना वाणी या राजा बलि बिना असुरवाहिनी, या पतिहीन स्त्री, या जल के बिना नदी, या भेड़िया द्वारा पकड़ी हुई मृगी या शरभ द्वारा हत सिंह या बिना पर्वत की कन्दरा। पाण्डवों द्वारा लाखों वीरों को पीड़ित देख, कौरव सेना वैसे ही विकल हो गयी; जैसे तूफान में पड़ समुद्रस्थित नौका पर सवार लोग नौका के उलट जाने पर विकल होते हैं। भीष्म के न रहने से कौरव सेना के समस्त राजा लोग, भयत्रस्त और पाताल में निमग्न होने वाले की तरह कातर हो गये। तदनन्तर जिस तरह गृहस्थ लोग, विद्यासम्पन्न तथा तपोधन किसी अतिथि की प्रार्थना करें, उसी तरह कौरवों ने सर्व-शस्त्र-धारी कर्ण की प्रार्थना की। क्योंकि कर्ण का पराक्रम भीष्म के समान है। जैसे सङ्कटापन्न मनुष्य को अपने भाई बन्धु याद आते हैं वैसे ही उन सब को कर्ण याद पड़े। वे सब हे कर्ण! हे कर्ण!! कह कर पुकारने लगे। वे आपस में कहते कि, इस समय राधेय कर्ण ही मृत्यु से हमारी रक्षा कर सकता है। दस दिन हो गये, जिन यशस्वी कर्ण ने युद्धक्षेत्र में पैर नहीं रखा, उन कर्ण को शीघ्र बुलाना चाहिये। जो पुरुषप्रधान कर्ण, महारथियों से भी बढ़े चढ़े हैं, जो कर्ण रथियों और अतिरथियों की गणना के समय सर्वाग्रणी माने जाते हैं, जो कर्ण प्रसिद्ध शूरवीर हैं, जो कर्ण यम, कुबेर, वरुण और इन्द्र के साथ भी लड़ने की हिम्मत रखते हैं, समस्त क्षत्रियों के सामने बल विक्रमशाली महारथियों की गिनती करते समय भीष्म ने जिन कर्ण को अर्द्धरथी ठहराया था और इस पर क्रोध में भर जिस कर्ण ने गङ्गानन्दन भीष्म के सामने यह प्रतिज्ञा की थी कि, जब तक तुम जीते रहोगे, तब तक मैं कदापि न लड़ूँगा और यदि तुमने पाण्डवों को मार डाला, तो मैं दुर्योधन की अनुमति से वन में चला जाऊँगा और यदि तुम मारे गये तो मैं अकेला ही उन पाण्डवों को नष्ट कर डालूँगा, जिन्हें तुम महारथी बतला रहे हो; जिस कर्ण ने अपने

इस कथन के अनुसार दस दिन तक दुर्योधन की अनुमति से हाथ में धनुष नहीं पकड़ा, उसी कर्ण को आपके पुत्रों ने, भीष्म के शरशय्याशायी होने पर वैसे ही स्मरण किया, जैसे नदी पार होने के लिये पथिक नौका का स्मरण करता है। उस समय आपके सब पुत्र, समस्त सैनिक और आपके पक्ष के समस्त राजागण हा कर्ण !! हा कर्ण !! कह, विकल हो गये और कहने लगे। हे कर्ण ! आओ ! अब समय है; अब तुम्हें युद्ध करना चाहिये। विपत्ति पड़ने पर लोग जैसे अपने भाई बन्धुओं का स्मरण करते हैं, वैसे ही कौरवों की सेना के लोग परशुराम के शिष्य महाबलवान् एवं अत्यन्त तेजस्वी कर्ण का स्मरण करने लगे। वे लोग कहने लगे। जैसे गौएं महा सङ्कट उपस्थित होने पर देवताओं का उद्धार करती हैं, वैसे ही धनुर्धरों में श्रेष्ठ महापराक्रमी कर्ण इस महाविपत्ति के सागर से हम लोगों को पार करेंगे।

वैशम्पायन जी बोले—हे जनमेजय ! जब सञ्जय इस प्रकार बारंबार कर्ण का बखान करने लगे, तब धृतराष्ट्र ने साँप की तरह साँस ले उनसे यह कहा—हे सञ्जय ! कौरवों के अवलंब भीष्म के मारे जाने पर, जब तुम लोगों का ध्यान उस राधेय कर्ण की ओर गया, जो संग्राम में शरीर को भी तुच्छ समझता है, तब क्या कर्ण लड़ने को आगे आये थे ? क्या सत्यपराक्रमी कर्ण ने घबड़ाये तथा डरे हुए एवं रक्षा चाहने वाले कौरवों की आशा पूर्ण की थी ? क्या धनुर्धरों में श्रेष्ठ कर्ण ने भीष्म के रिक्त स्थान की पूर्ति कर, शत्रुओं को भयत्रस्त कर, हमारे पुत्र की विजयकामना चरितार्थ की थी ?

दूसरा अध्याय

कर्ण का आस्फालन

सञ्जय कहने लगे—हे राजन् ! अगाध सागर में उलटी हुई नौका की तरह भीष्म का मारा जाना सुन, अधिरथ-नन्दन कर्ण आपके पुत्रों तथा समस्त कौरव-सेना को सङ्कट से उबारने के लिये सहोदर भाई की तरह आ पहुँचा। शत्रुसन्तापकारी तथा धनुर्धरश्रेष्ठ कर्ण ने जब सुना कि, पुरुषेन्द्र एवं अव्यय वीर महारथी शान्तनुपुत्र भीष्म युद्ध में मारे गये, तब वे हँसते हुए तुरन्त आपकी सेना में आ उपस्थित हुए। शत्रुओं के द्वारा भीष्म के मारे जाने पर, कर्ण विपत्तिरूपी सागर में निमग्न आपके पुत्रों और आपकी सेना को पार करने के लिये नौका बन, वैसे ही आ पहुँचे; जैसे पुत्र को विपत्ति में पड़ा देख, पिता उसकी रक्षा करने को आ जाता है। कर्ण ने आ कर कहा—जिन सदैव कृतज्ञ और ब्राह्मणों के शत्रुओं का संहार करने वाले भीष्म पितामह में धैर्य, बल, बुद्धि, प्रताप, सत्य, धारणा-शक्ति आदि वीरोचित समस्त गुण, अशेष दिव्यास्त्र, विनय, लज्जा, प्रियवाणी और अद्वेष आदि सदा से वैसे ही विद्यमान थे, जैसे चन्द्रमा में चन्द्रलाञ्छन चिन्ह सदा से विद्यमान है, वे ही शत्रुवीरों के मारने वाले भीष्म जी जब मारे गये, तब मैं अन्य समस्त वीरों को मृतक हुआ ही समझता हूँ। इस संसार में कोई भी वस्तु नित्य-स्थित-शील नहीं है। जब देवव्रत भीष्म जी ही मारे गये, तब आज कौन मनुष्य अगले दिन तक जीवित रहने का विश्वास कर सकता है? हे मनुष्यों ! वसु के समान प्रतापी और वसु के वीर्य से उत्पन्न, वसुन्धराधिपति भीष्म जब वसुलोक को चले गये; तब तुम लोगों को अर्थ, पुत्र, पृथिवी तथा कुरुओं की सारी सेना के लिये निश्चय ही शोक करना पड़ेगा।

सञ्जय बोले—हे धृतराष्ट्र ! महाप्रतापी और महातेजस्वी भीष्म के मरने और कौरवों की सेना के पराजित होने पर, कर्ण पूर्वोक्त वचनों को कहते कहते

अत्यन्त दुःखी हुए। उनके नेत्रों से आँसू निकल पड़े। हे राजन्! कर्ण के इन वचनों को सुन आपके पुत्र तथा आपकी सेना के समस्त जन, दुःखी हो, उच्चस्वर से रोने लगे। उनके नेत्रों से आँसू टपकने लगे। तदनन्तर जब लड़ने का समय आया तब सब ने अपनी अपनी अधीनस्थ सेनाओं को सावधान कर खड़ा किया। इस अवसर पर कर्ण, रथिश्रेष्ठ पुरुषों को हर्षित करने के लिये, हर्षोत्पादक वचन कहने लगे।

कर्ण ने कहा—यह जगत अनित्य है और मृत्यु की ओर दौड़ा करता है। जब मैं इस बात पर विचार करता हूँ तब मुझे कोई भी पदार्थ नित्य नहीं देख पड़ता। तुम सब लोगों के उपस्थित रहते भी पर्वत के समान अटल कुरुश्रेष्ठ भीष्म किस प्रकार मारे गये? पृथिवी में पड़े हुए सूर्य के समान महारथी शान्तनुपुत्र भीष्म के मरने पर, जिस प्रकार पर्वत को उखाड़ने वाले पवन के वेग को वृक्षादि नहीं सह सकते—उसी प्रकार अर्जुन के प्रहारवेग को राजा लोग नहीं सह सकते। जिस प्रकार भीष्म ने कौरवों की सेना की युद्ध में रक्षा की थी; उसी प्रकार मुझको आज, प्रहारों से जर्जरित, आर्त, उत्साहहीन और अनाथ कुरुसेना की रक्षा करनी होगी। मैंने अपने मन से इस भार को अपने ऊपर ले लिया है। संसार की अनित्यता और युद्ध में महावीर भीष्म का वध देख कर, मैं क्यों डरूँगा? मैं रणभूमि में घूमता हुआ, अपने बाणों से उन कुरुश्रेष्ठ पाण्डवों को यमपुरी में भेज कर, जगत् में परमयश और कीर्ति को पाऊँगा अथवा उनके हाथ से मारा जा कर, भूमि पर अनन्त निद्रा में शयन करूँगा। युधिष्ठिर धैर्यवान्, बुद्धिमान्, धार्मिक और सत्यवादी हैं। भीम में दस सहस्र हाथियों जितना बल है। अर्जुन देवराज इन्द्र का पुत्र है। अतः बल में देवता भी उसको परास्त नहीं कर सकते। जिस युद्ध में यमराज के सदृश पराक्रमी नकुल सहदेव, सात्यकि और देवकीनन्दन श्रीकृष्ण हैं, उस युद्ध में कापुरुष का बचना, वैसे ही कठिन है, जैसे मृत्यु के मुख में पड़े हुए का बचना कठिन है। प्रतापी और तेजस्वी पुरुष बढ़ी हुई तपस्या को तपस्या से और बल को बल से बद्ध कर सकता

है। अतः मेरा मन बल से शत्रुओं को निवारण करने और अपनी सेना की रक्षा करने के लिये उत्सुक हो रहा है। हे सारथी! मैं आज युद्ध में जा कर, शत्रु की सेना को नष्ट कर, उनको जीत लूँगा। मित्रद्रोह मुझे सह्य नहीं है। जो गिरती हुई सेना को आ कर सहायता देता है, वही मित्र है। अतः मैं सत्पुरुषोचित कर्म करूँगा और प्राण त्याग कर भीष्म का अनुगमन करूँगा। अर्थात् या तो सकल शत्रुओं को नष्ट करूँगा या स्वयं नष्ट हो जाऊँगा। हे सूत! जब धार्तराष्ट्रों का बल पौरुष हेठा पड़ गया है; तब ऐसे अवसर में मैं अपना यह कर्त्तव्य समझता हूँ कि, मैं आज दुर्योधन के शत्रुओं को पराजित करूँ। इस महायुद्ध में प्राण त्याग कर के पाण्डवों तथा अन्य शत्रुओं का संहार कर, दुर्योधन को राज्य दिलाऊँगा। अतः अब तू मणि तथा रत्नों से जड़ा हुआ अद्भुत कवच ला कर मुझे पहना, मेरे मस्तक पर सूर्य की तरह चमचमाता शिरस्त्राण रख। साथ ही धनुष को तथा विषैले सर्पों जैसे बाणों को तथा मेरे सोलहों तूणीरों को रथ में यथास्थान रख दे। रथ में तलवार, शक्ति, गदा और सोने से मढ़ा हुआ विचित्र नाभि से युक्त शङ्ख भी ला कर रख दे। चाँदी की जंजीर, कमल के चित्र से विचित्र दीखती हुई ध्वजा और भले प्रकार गुथी हुई झालर वाली माला को साफ कपड़े से झाड़ पोंछ कर ले आ। हे सारथिपुत्र! सफेद बादलों की तरह चमचमाते, सफेद रंग के शीघ्रगामी हृष्ट पुष्ट घोड़ों को अभिमंत्रित जल से स्नान करा और सुवर्ण निर्मित आभूषणों से अलङ्कृत कर शीघ्र ले आ। सूर्यचन्द्र जैसे चमकते, रत्नों से विचित्र शोभा धारण करने वाले, सुवर्ण माला मण्डित, उत्तम रथ में उन घोड़ों को जोत तथा रथ में युद्ध की आवश्यक सामग्री रख शीघ्र ले आ। वेगवान उत्तम धनुष, मज़बूत रोदे बाणों से परिपूर्ण तूणीर, कवच शीघ्र ले आ। युद्धयात्रा के लिये उपयोगी सम्पूर्ण शुभ वस्तुओं को भी शीघ्र ला। दही से भरे काँसे तथा सोने के पात्र भी ला। मेरे गले में विजय माला पहिना और विजय सूचक भेरियाँ बजवा। फिर हे सूतपुत्र! मुझे रथ पर सवार करा, वहाँ ले चल जहाँ अर्जुन, भीम, धर्मपुत्र युधिष्ठिर, नकुल और

सहदेव हैं। क्योंकि मैं उनसे युद्ध कर उनका संहार करना चाहता हूँ। अथवा उनके हाथ से मारा जा कर भीष्म के निकट जाना चाहता हूँ। यद्यपि यह मेरा दृढ़ विश्वास है कि, जहाँ पर राजा युधिष्ठिर, भीमसेन, अर्जुन, श्रीकृष्ण तथा सात्यकि हैं, वहाँ स्थित सेना अजेय है; तथापि यदि सर्व भूत-नाशकारी साक्षात् मृत्युदेव भी अर्जुन की रक्षा करें, तो भी मैं युद्ध में अवश्य उसका वध करूँगा अथवा मैं स्वयं भीष्म का अनुगामी बनूँगा। मैं उन शूरवीरों के बीच अवश्य जाऊँगा। किन्तु जाने के पूर्व यह अवश्य कहूँगा कि, जो मित्रद्रोही, पापी और अल्प भक्ति वाले पुरुष हैं, मुझे उनकी सहायता अपेक्षित नहीं है।

सञ्जय ने कहा—हे धृतराष्ट्र! तदनन्तर, कर्ण अपने उस समररथ पर सवार हो जय प्राप्त करने की अभिलाषा से चले, जिस रथ पर सोने के पत्तर जड़े हुए थे और जिसमें युद्धोपयोगी समस्त उपस्कर यथास्थान रखे हुए थे। देवतागण जैसे इन्द्र की पूजा करते हैं, वैसे ही धनुर्धारी कर्ण की कौरवों ने पूजा की। कर्ण वहाँ गये, जहाँ भरतवंशश्रेष्ठ भीष्म पड़े हुए थे। अधिरथ सारथि के पुत्र महारथी एवं धनुर्धर तथा अग्नि जैसे तेजस्वी महा-बली कर्ण, सूर्य की तरह दमकते हुए उस रथ पर सवार हो कर गये, जिस पर ध्वजा लगी हुई थी, जो सुवर्ण, रत्न, मोतियों और मणियों से मण्डित था और जिसमें उत्तम घोड़े जुते हुए थे। उस रथ के चलते समय मेघ जैसा गम्भीर शब्द होता था। अग्नि की तरह झलझलाते हुए उत्तम रथ में बैठे हुए कर्ण, विमानस्थित इन्द्र की तरह शोभायमान हो रहे थे।

तीसरा अध्याय

भीष्म और कर्ण की बातचीत

सञ्जय ने कहा—हे राजन्! कर्ण रथ पर सवार हो वहाँ पहुँचे, जहाँ भरतवंशी एवं पितामह महाबलशाली महात्मा भीष्म शरशय्या पर पड़े हुए थे। वहाँ पहुँच उन्होंने देखा, कि, समस्त क्षत्रियों के संहारकर्ता भीष्म, सव्यसाची अर्जुन के दिव्य अस्त्रों के आघातों से आहत हो, शरशय्या पर पड़े हुए हैं। हे राजन्! भीष्म के धराशायी होने से आपके पुत्रों की विजय-आशा, कल्याण तथा रक्षा की आशा पर पानी फिर गया था। क्योंकि निराधार, एवं अगाध उस सैन्यसमुद्र में आश्रयाभिलाषी आपके पुत्रों के अवलम्ब रूप अकेले भीष्म ही थे। चारों ओर से बहने वाले यमुना के प्रवाह की तरह बाणों से भीष्म जी चारों ओर से बिंधे हुए थे। जिस प्रकार महेन्द्र ने असह्य मैनाक को भूमि पर गिराया था, वैसे ही अर्जुन ने भीष्म को धराशायी कर दिया था। भूतल पर पड़े हुए भीष्म पितामह, आकाश से गिरे हुए आदित्य जैसे जान पड़ते थे। पहले जैसे वृत्र ने इन्द्र को अचानक जीत लिया था, वैसे ही अर्जुन ने भी पितामह को सहसा जीत लिया। रणक्षेत्र में भीष्म जी के गिरते ही, उनकी अनुगत कौरवों की सेना घबड़ा गयी। क्योंकि समस्त कौरव-वाहिनी के नायक और धनुर्धरों के आभूषण रूप, महाव्रती भीष्म अर्जुन के बाणों से बिंध कर वीर शय्या पर सो गये थे। उनको देख, महा-कान्ति वाले तथा भरतवंशी राजाओं में महारथी राधेय कर्ण भी घबड़ा गये और हाथ जोड़ उन्होंने भीष्म को प्रणाम किया। भीष्म की दशा देख कर्ण के नेत्र आँसुओं से तर हो गये और वे अस्पष्ट वाणी से बोले—हे पितामह! कर्ण आपको प्रणाम करता है। आप मेरी ओर अपनी कृपा दृष्टि फेरें। मुझसे आप कुछ बातचीत करें, जिससे मेरा कल्याण हो। आप अपने नेत्र खोलें। आप जैसे धर्मपरायण कौरवों के बड़े बूढ़े को आज इस प्रकार रण-भूमि में पड़ा हुआ देख, मुझे प्रतीत होता है कि, इस संसार में किसी को

भी उसके शुभकर्मों का फल नहीं मिलता! राज्य के धनकोष को भरने में, राजनैतिक मंत्रणा में, व्यूहों की रचना में और युद्ध करने में, हे कुरु-कुल-पुङ्गव! मुझे तो आपकी बराबरी का कोई देख नहीं पड़ता। अब कौरवों को भय से मुक्त करने वाला विशुद्धबुद्धि पुरुष मुझे अन्य नहीं देख पड़ता। आप आज युद्ध में असंख्य योद्धाओं का संहार कर, पितृलोक में जाने को तैयार हैं। अतः अब क्रोध में भर पाण्डव, कौरवों का वैसे ही संहार कर डालेंगे जैसे क्रुद्ध सिंह मृगों को नष्ट कर डालता है। हे भरतवंश के पितामह! जैसे असुरगण इन्द्र से भयग्रस्त रहते हैं, वैसे ही आज से कौरव भी गाण्डीव धनुषधारी अर्जुन से भयभीत हो जाँयगे। क्योंकि अर्जुन के गाण्डीव धनुष से छूटे हुए वज्र जैसे बाणों की ध्वनि समस्त कौरवों को तथा अन्य राजाओं को भी भयभीत कर डालेगी। जैसे अग्निदेव अपनी लपटों से वृक्ष समूह को जला कर भस्म कर डालते हैं, वैसे ही अर्जुन के बाण, कौरवों का नाश कर डालेंगे। वन में वायु और अग्नि—दोनों मिल कर, आगे बढ़ जैसे अनेक झाड़ों झँकारों और वृक्षों को भस्म करते चले जाते हैं, वैसे ही अर्जुन बढ़े हुए अग्नि की तरह, और श्रीकृष्ण रूप पवन से सहायता पा कौरवसेना नष्ट हो जायगी। हे वीर! सामना करना तो जहाँ तहाँ अन्य राजा तो, अब आपकी अनुपस्थिति में शत्रुसंहारकारी कपिध्वज अर्जुन के वेग से चलते हुए रथ के शब्द को सुन कर खड़े भी तो नहीं रह सकते। क्योंकि आपको छोड़ अब और कौन ऐसा वीर है जो अर्जुन का सामना कर सके। विद्वानों का कहना है कि, अर्जुन के पास दिव्य अस्त्र हैं, उसने निवातकवच दैत्यों का नाश किया है। उसने युद्ध में महादेव जी को सन्तुष्ट किया है और सन्तुष्ट कर उनसे दुर्लभ वरदान प्राप्त किया है। जिस अर्जुन की रक्षा श्रीकृष्ण करते हैं, उस वीर अर्जुन से कौन युद्ध कर सकता है। आपने देव दानवों से पूजित क्षत्रियों का नाम निशान मिटाने वाले परशुराम जी को रणभूमि में परास्त किया था, सो आप जैसे बलवान् वीर भी जब उसे नहीं जीत सके; तब उसके साथ रणभूमि में कौन युद्ध कर सकेगा। यदि इस समय आप मुझे

अनुमति दें तो मैं आज उस युद्धदुर्जय अर्जुन को अपने अस्त्रों के सहारे मार डालने में समर्थ होऊं।

चौथा अध्याय

भीष्म का कर्ण को आशीर्वाद

सञ्जय बोले—हे धृतराष्ट्र ! कुरु-कुल-वृद्ध पितामह भीष्म इस प्रकार बार बार कहे हुए कर्ण के वचनों को सुन, प्रीति पूर्वक, देश और काल के अनुसार यह वचन बोले—हे कर्ण ! जैसे समुद्र महानदियों का, सूर्य तेजस्वी नक्षत्रों का, सत्पुरुष सत्य का, उर्वरा भूमि बीज का और मेघ स्थावर जङ्गम जीवों का आश्रय है, वैसे ही तुम अपने मित्रों के अर्थात् दुर्योधनादि के आश्रय हो । जैसे देवतागण, इन्द्र के बलबूते पर जीवन धारण करते हैं, वैसे ही तुम्हारे बान्धव तुम्हारे बलबूते पर जीवन धारण करते हैं। तुम शत्रुओं का मान मर्दन कर, मित्रों के आनन्द को बढ़ाओ। जैसे विष्णु देवताओं की गति हैं, वैसे ही तुम कौरवों की गति हो। हे कर्ण ! धृतराष्ट्रनन्दन दुर्योधन के विजयाभिलाषी बन तुमने राजपुर में अपने भुजबल से और पराक्रम से कम्बोजों को, गिरिव्रज में नग्नजित् प्रभृति राजाओं को तथा अम्बष्ठ, विदेह, और गान्धारों को जीता था। हे कर्ण ! तुमने पूर्वकाल में हिमालय-दुर्ग-स्थित एवं रणदुर्मद किरातों को दुर्योधन के वश में कर दिया था। तुमने युद्ध में उत्कल, मेकल, पौण्ड्र, कलिङ्ग, आन्ध्र, निषाद, त्रिगर्त और वाल्हीक राजाओं को जीत लिया था। हे महाबली कर्ण ! तुम दुर्योधन की हित कामना के लिये यत्र तत्र अनेक संग्रामों में बहुत से वीरों को जीत चुके हो। हे कर्ण ! जैसे दुर्योधन सब कौरवों का आधार है, वैसे ही तुम भी जाति कुल बान्धवों सहित समस्त कौरवों के आधार बनो। मैं तुम्हें आशीर्वाद देता हूँ और कहता हूँ कि जाओ, शत्रुओं से लड़ने के लिए कौरवों को उत्साहित

करो, और दुर्योधन के विजय के लिये यत्न करो। जैसे दुर्योधन है, वैसे ही तुम भी मेरे पौत्र के समान हो। जैसा मैं दुर्योधन का हितैषी हूँ, वैसा ही धर्मतः मैं तुम्हारा भी हूँ। हे नरश्रेष्ठ! विद्वान् कहते हैं कि, साधुओं को योनि-सम्बन्ध से भी साधु-सम्बन्ध उत्तम है। इससे तुम सत्य से युक्त हो कर और यह समझ कर कि, यह सब कुरुकुल मेरा ही है—उनकी रक्षा करो।

सूतपुत्र कर्ण, भीष्म की इन बातों को सुन कर तथा उनको प्रणाम कर, विकर्त्तन-नन्दन कर्ण, धनुषधारियों के पास गये। कर्ण ने आ कर उन सब योद्धाओं को व्यूहबद्ध और, अस्त्रों शस्त्रों से सुसज्जित हो, चित्र लिखे पुरुषों की तरह खड़े हुए देख कर, उन्हें उत्साहित किया। दुर्योधन आदि कौरवों ने उन महाबाहु महात्मा कर्ण को युद्ध करने के लिये तैयार देख, शङ्ख, नगाड़े आदि बाजे बजाये और सिंहनाद कर, धनुषों के टंकार कर, कर्ण का स्वागत किया।

पाँचवाँ अध्याय

सेनापति-पद पर द्रोणाचार्य का अभिषेक

सञ्जय बोले—हे राजन्! दुर्योधन रणभूमि में पुरुषश्रेष्ठ कर्ण को युद्ध के निमित्त तैयार देख हर्ष सहित, पुलकित चित्त हो कहने लगा। मेरी सारी सेना तुम्हारे भुजबल से सुरक्षित हो, सनाथ हो गयी है। मैं तो अपने मन में यही समझता हूँ। अब तुम्हें समयानुसार जो उचित और हितकर जान पड़े सो करो। कर्ण ने कहा—हे पुरुषसिंह! आप बुद्धिमान और हम सब के राजा हैं। अतः इस विषय में तो आपही उचित सम्मति दे सकते हैं। अर्थपति जिस तरह कार्यों के विषय में विचार कर निश्चय कर सकते हैं, उसी तरह

दूसरे कदापि विचार कर निश्चय नहीं कर सकते। हम सब लोग आपका अभिप्राय सुनना चाहते हैं। क्योंकि मेरी समझ में आप अनुचित बात कहेंगे ही नहीं।

दुर्योधन ने कहा—हे कर्ण! अवस्था, वीरता और ज्ञान में श्रेष्ठ तथा योद्धाओं के मत से भीष्म सम्पूर्ण कौरव सेना के सेनापति हुए थे। महायशा, महाबली भीष्म ने दस दिनों तक भली तरह युद्ध कर हमारी सेना की शत्रुओं से रक्षा की। वे अत्यन्त कठिन कर्म कर अब शरशय्या पर शयन कर रहे हैं। अतः उनके स्थान पर अब तुम किसको सेनापति बनाना उचित समझते हो? क्योंकि बिना नायक के सेना उसी तरह एक क्षण भी रणक्षेत्र में नहीं ठहर सकती जिस तरह बिना मल्लाह की नाव जल में ज़रा देर भी नहीं टिक सकती। जैसे बिना मल्लाह की नाव और सारथि रहित रथ चाहे जिधर जाने लगते हैं, वैसे ही बिना नायक की सेना की गति होती है। जैसे बिना मुखिया के कोई जनसमुदाय महाकष्ट पाता है, वैसे ही बिना नायक की सेना सब प्रकार के दुःखों को सहती है। इस समय तुम मेरी सेना में भीष्म जैसे किसी योग्य पुरुष को ढूँढ निकालो। तुम जिसे इस काम के योग्य समझोगे, उसीको मैं निस्सन्देह सेनापति बनाऊँगा।

कर्ण ने कहा—ये समस्त राजा महाबली और पुरुषश्रेष्ठ हैं। अतः ये सब सेनापति बनने के योग्य हैं। इसमें सोचने विचारने की कुछ भी आवश्यकता नहीं। क्योंकि ये सब, कुल, शारीरिक बल, ज्ञानबल, पराक्रम तथा बुद्धिबल से सम्पन्न हैं। साथ ही शास्त्रज्ञ और रणक्षेत्र में पीछे पैर रखने वाले नहीं हैं। किन्तु ये सब के सब तो सेनानायक बनाये नहीं जा सकते। अतः इन सब में जो विशेष गुणविशिष्ट हो, उसी एक को सेनापति बनाना ठीक होगा। एक बात और है वह यह कि, इन राजाओं में आपस में डाह है। यदि इनमें से किसी एक का सम्मान किया तो दूसरे अप्रसन्न हो जाँयगे और तुम्हारे हितैषी होने पर भी ये उदासीन हो बैठ जाँयगे तथा मन लगा कर युद्ध न करेंगे। अतएव इन सब राजाओं तथा शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ वृद्ध

आचार्य द्रोण को सेनापति बनाना उचित होगा। शुक्र और बृहस्पति के समान, शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ, किसी से न दबने वाले, तथा ब्रह्मवेत्ता द्रोणाचार्य के जीवित रहते और कौन सेनापति हो सकता है? फिर इन समस्त राजाओं में कोई भी ऐसा राजा नहीं, जो युद्ध करने को जाते हुए द्रोण के पीछे पीछे न जाय। हे राजन्! द्रोणाचार्य सेनापतियों में प्रधान, शस्त्रधारियों में मुख्य, बुद्धिमानों में सर्वोत्कृष्ट होने के अतिरिक्त तुम्हारे गुरु भी हैं। हे दुर्योधन! जैसे देवताओं ने दैत्यों को जीतने के लिये स्वामिकार्तिक को सेनापति बनाया था, वैसे ही तुम भी शीघ्र आचार्य द्रोण को सेनापति बनाओ।

छठवाँ अध्याय

द्रोण से सेनापति-पद स्वीकृत करने के लिये प्रार्थना

सञ्जय बोले—हे धृतराष्ट्र! कर्ण के इन वचनों को सुन, सेना के बीच खड़े हुए द्रोणाचार्य के निकट जा, दुर्योधन ने उनसे कहा—हे आचार्य! आप विद्या, बुद्धि, बल, वीर्य, वर्ण, अवस्था, अधिकार, अर्थज्ञान, नैपुण्य, नीति, विजय-प्राप्ति, ऐश्वर्य, तप, कृतज्ञता, कुल तथा अन्य समस्त गुणों में सर्वश्रेष्ठ हैं। आपके समान अन्य कोई भी इन राजाओं में सेनापति बनने योग्य नहीं है। अतः इन्द्र जैसे देवताओं की रक्षा करते हैं, वैसे ही आप हमारी रक्षा कीजिये। हे द्विजेन्द्र! हमारी इच्छा है कि, हम आपको अपना सेनापति बना शत्रुओं को जीतें। जैसे रुद्रों में कपाली, वसुओं में पावक, यक्षों में कुबेर, मरुतों में वासव, ब्राह्मणों में वसिष्ठ, तेजधारियों में सूर्य, पितरों में धर्मराज, जलवासी जीवों में वरुणदेव, नक्षत्रों में चन्द्रमा और दैत्यों में शुक्र हैं, वैसे ही समस्त सेनापतियों में आप श्रेष्ठ हैं। अतः आप हमारे सेनापति बनें। हे अनघ! यह ग्यारह अक्षौहिणी सेना आपके अधीन है। इसको साथ ले, आप शत्रुओं का संहार वैसे ही कीजिये

जैसे इन्द्र, दानवों का संहार करते हैं। हे द्रोण! जैसे देवताओं के आगे स्वामिकार्तिक चलते हैं, वैसे ही आप हम लोगों के आगे आगे चलिये। जैसे बैल अपने यूथपति वृषभ के पीछे पीछे चलते हैं, वैसे ही हम आपके पीछे पीछे आयँगे। उग्रधन्वा महाधनुर्धर अर्जुन आपको आगे देख, दिव्य धनुष चढ़ा कर भी हमारी सेना पर प्रहार नहीं कर सकेगा। हे पुरुषसिंह! यदि आप सेनापति बन जाँयगे; तो रण में परिवार और बन्धु बान्धवों सहित मैं पाण्डवों को निश्चय जीत ही लूँगा।

सञ्जय ने कहा—हे धृतराष्ट्र! जब दुर्योधन ने द्रोणाचार्य से इस प्रकार कहा; तब वहाँ उपस्थित सब राजा लोग उच्च स्वर से सिंहनाद कर, आपके पुत्र को हर्षित कर, द्रोणाचार्य की जय हो, जय हो कह कर चिल्लाने लगे। अन्य सैनिक भी यश की कामना से, दुर्योधन को आगे कर, हर्ष में भरे हुए द्रोणाचार्य के उत्साह को बढ़ाने लगे। तब द्रोण ने दुर्योधन से यों कहा।

सातवाँ अध्याय

द्रोण का विक्रम

द्रोण ने कहा—हे दुर्योधन! मैं साङ्गोपाङ्ग वेद को, मनुकथित अर्थ विद्या को, शिव-दत्त बाण-विद्या को और अनेक प्रकार के अस्त्रों के चलाने की विधि को जानता हूँ। जय प्राप्त करने वाले जिन गुणों का होना तुमने मुझमें बतलाया है, उन सब गुणों के रहने के कारण, मैं पाण्डवों से युद्ध तो करूँगा; किन्तु युद्ध में मैं धृष्टद्युम्न को कदापि न मार सकूँगा। क्योंकि उसका जन्म मेरे वध के लिये ही हुआ है। मैं समस्त सोमकों का नाश करता हुआ सेनाओं के साथ लड़ूँगा, परन्तु पाण्डव रण में मेरे साथ हर्षित हो कर युद्ध न करेंगे।

सञ्जय ने कहा—हे धृतराष्ट्र! द्रोणाचार्य के इस प्रकार कहने पर भी आपके पुत्र ने शास्त्रोक्त विधि से द्रोणाचार्य को अपनी सेना का सेनापति

बनाया। जैसे पूर्वकाल में देवताओं ने स्वामिकार्त्तिक को देवसेना का सेनापति बनाया था, वैसे ही दुर्योधनादि ने द्रोणाचार्य को कौरवों की सेना का सेनापति बनाया। अब द्रोणाचार्य के सेनापति होने पर नाना प्रकार के जयसूचक बाजों और शङ्खों का महाशब्द सुन पड़ा। तदनन्तर कौरवों ने ब्राह्मणों से पुण्याहवाचन, स्वस्तिवाचन कराया, सूत, मागध और बंदियों की स्तुति, गीत, जयकार और सेना की कवायद से द्रोणाचार्य के प्रति यथोचित सम्मान प्रदर्शित कर, पाण्डवों के हार जाने का निश्चय कर लिया।

सञ्जय ने कहा—हे धृतराष्ट्र! भरद्वाजनन्दन द्रोण कौरवों की सेना का सेनापतिपद ग्रहण कर, अपनी ओर की सेना का व्यूह बना कर और आपके पुत्रों को साथ ले कर, युद्ध के लिये चल दिये। उनकी दहिनी ओर सिन्धुराज, कलिङ्गराज, और आपके पुत्र विकर्ण, अस्त्र शस्त्र ले और कवच पहिन कर चले। उनके पीछे शकुनि ने द्रुतगामी घुड़सवारों और भली भाँति प्रास चलाने वाले गान्धार देशीय वीरों के साथ यात्रा की। कृपाचार्य, कृतवर्मा, चित्रसेन, विविंशति और दुःशासन आदि राजा लोग, सावधान होकर द्रोणाचार्य की बाईं ओर के रक्षक बन कर चले। उनके पीछे यवन और शक लोग काम्बोजराज महाबाहु सुदक्षिण को आगे कर, महावेगवान घोड़ों पर चढ़ कर, आगे बढ़े। मद्र, त्रिगर्त, अम्बष्ठ, प्रतीच्य, औदीच्य, मालव, शिविगण, शूरसेन, शूद्र, मलद, सौवीर, कितव, प्राच्य और दक्षिण देशीय राजा लोग आपके पुत्र दुर्योधन की प्रदक्षिणा कर, कर्ण के पृष्ठरक्षक बन कर चले। सूतपुत्र कर्ण सेनाओं के उत्साह को बढ़ाता और उनको हर्षित करता हुआ, समस्त धनुषधारियों के आगे आगे चलता था। उसका बड़े आकार का, सूर्य जैसा अत्यन्त प्रकाशवान् हस्तिकक्ष नाम का बड़ा भारी झंडा, उसकी सेना को हर्ष देता हुआ, हवा में उड़ रहा था। कर्ण को देख, लोग भीष्म का पतन भूल गये। समस्त कौरव और उनके सहायक राजा लोग, कर्ण को देख शोकरहित हो गये और अनेक योद्धा एकत्र हो तथा हर्षित हो, आपस में कहने लगे—कर्ण को रणक्षेत्र में देख, पाण्डव खड़े भी न रह

सकेंगे। कर्ण चाहे तो देवताओं सहित इन्द्र को भी युद्ध में जीत सकता है। फिर वीरताशून्य एवं पराक्रमहीन पाण्डवों को जीत लेना तो उसके लिये कौन सी बड़ी बात है। भुजबल-धारी भीष्म ने युद्ध करते समय जान बूझ कर अर्जुन को नहीं मारा। किन्तु कर्ण पैने पैने बाण मार कर, पाण्डवों का युद्ध में नाश ही कर डालेगा। हे राजन्! इस प्रकार बहुत से योद्धा आपस में हर्ष के साथ बातचीत करते और कर्ण के प्रति सम्मान प्रदर्शित करते एवं उसकी प्रशंसा करते हुए युद्ध करने को आगे बढ़े चले जाते थे। इस बार द्रोणाचार्य ने अपनी सेना का शकट-व्यूह बनाया था। उधर धर्मराज युधिष्ठिर ने अपने पक्ष की सेना का क्रौञ्चव्यूह बनाया था। क्रौञ्चव्यूह के मुहाने पर श्रीकृष्ण तथा अर्जुन, अपने रथ पर वानर की ध्वजा को फहराते हुए खड़े थे। अमित-तेज-सम्पन्न अर्जुन, समस्त सेना के अग्रणी और समस्त धनुर्धरों के आश्रय स्वरूप गिने जाते थे। उनके रथ की आकाश में फहराने वाली कपिध्वजा विपक्षी लोगों के मन में भय उत्पन्न करती थी। सफेद रंग के घोड़ों से युक्त रथ पर सवार वीरश्रेष्ठ अर्जुन, अपने धनुषश्रेष्ठ गाण्डीव, प्राणिश्रेष्ठ श्रीकृष्ण और चक्रश्रेष्ठ सुदर्शन चक्र के तेजों से युक्त हो, कालचक्र की तरह शत्रुओं के आगे आ खड़े हुए। कौरव सेना के आगे कर्ण खड़े थे और पाण्डवों की सेना के आगे अर्जुन खड़े थे। दोनों ही एक दूसरे को जीत लेना चाहते थे। वे क्रोध में भरे हुए एक दूसरे को मार डालना चाहते थे। अतः वे एक दूसरे को घूर घूर कर देख रहे थे। इतने में अकस्मात् द्रोणाचार्य के आने से घोर आर्त्तनाद से परिपूर्ण हो पृथिवी काँप उठी। सैनिकों के पैर से उड़ी हुई धूल आकाश में गयी। सूर्य के छिप जाने से घोर अन्धकार छा गया। आकाश में बादल न रहने पर भी माँस, हड्डियों और रक्त की वर्षा होने लगी। हे राजन्! हज़ारों गिद्ध, कौए और गोमायु आदि आपकी सेना की ओर दौड़ने लगे। सियारों के झुंड माँस खाने और रक्त पीने की इच्छा से, आपकी सेना की दहिनी ओर चलने लगे। रणक्षेत्र में घोर जलती हुई भूकम्प करती हुईं, उल्काएँ आपकी सेना के

सामने गिरने लगीं। हे राजन्! सेनापति के यात्रा करने पर, सूर्य का तेज बहुत बढ़ गया और वह बिजली से युक्त एवं गर्जते हुए बादलों में छिप गया। वीरों के जीवन का नाश करने वाले यह अपशकुन और उत्पात देख पड़ने लगे। तदनन्तर एक दूसरे का नाश करने की इच्छा रखने वाले कौरवों और पाण्डवों की सेनाओं में घोर युद्ध होना आरम्भ हुआ। तब विजय की इच्छा रखने वाली कौरवों और पाण्डवों की सेनाओं से पैने पैने बाणों की वर्षा होने लगी। तदनन्तर पाण्डवश्रेष्ठ प्रतापी अर्जुन एक एक बार सौ सौ तीक्ष्ण बाणों को छोड़ते हुए अत्यन्त शीघ्रता से आपकी सेना की ओर दौड़े। हे राजन्! द्रोणाचार्य को आक्रमण करने के लिये आते देख और सृञ्जयों के साथ मिल, पाण्डवों ने द्रोणाचार्य के ऊपर विविध बाणों की लगातार वृष्टि की। जैसे वायु से बादल छिन्न भिन्न हो जाते हैं, वैसे ही पाण्डवों की विशाल वाहिनी द्रोणाचार्य की बाणवृष्टि से जर्जरित हो, कई भागों में बँट गयी। द्रोणाचार्य ने क्षण भर में अनेक अस्त्रों शस्त्रों की वर्षा कर, पाण्डवों और सृञ्जयों को पीड़ित तथा दुःखी कर डाला। जैसे इन्द्र के प्रहार से दानव विकल होते हैं, वैसे ही द्रोणाचार्य के बाणों से धृष्टद्युम्न के देशवासी पाँचाल योद्धा विकल हो, काँपने लगे। तदनन्तर महारथी धृष्टद्युम्न ने बाणवृष्टि कर, द्रोणाचार्य की सेना छिन्न भिन्न कर दी। बलवान् धृष्टद्युम्न अपने बाणों से द्रोणाचार्य के बाणों को काट कर, समस्त कुरुसेना का नाश करने लगे। यह देख, द्रोणाचार्य ने पूर्णरीत्या युद्ध में प्रवृत्त हो, भागती हुई अपनी सेना को रोका, और फिर वे धृष्टद्युम्न की ओर बढ़े। जैसे इन्द्र क्रोध में भर दानवों के ऊपर बाणवृष्टि करते हैं, वैसे ही द्रोणाचार्य ने धृष्टद्युम्न के ऊपर एक बार ही बहुत से दिव्य बाणों की वर्षा की। जैसे सिंह को देख छोटे छोटे हिरन इधर उधर भाग जाते हैं, वैसे ही पाण्डव और सृञ्जय गण द्रोणाचार्य के बाणों की मार से काँपते हुए इधर उधर भागने लगे। हे राजन्! बलवान् द्रोणाचार्य, पाण्डवों की सेना में प्रज्वलित अग्नि की तरह चारों ओर घूमने लगे। उस समय का वह दृश्य बड़ा अद्भुत जान पड़ता था।

द्रोणाचार्य आकाशी नगर की तरह, सैनिक विधि से निर्मित, स्फटिक पत्थर की तरह उज्ज्वल फहराती हुई ध्वजा पताका से युक्त, उस उत्तम रथ में बैठे हुए; जिसमें ठुमुक ठुमुक कर चलने वाले घोड़े जुते हुए थे; शत्रु की सेना को त्रस्त कर, उसका नाश कर रहे थे।

आठवाँ अध्याय

द्रोणवध

सञ्जय ने कहा—हे राजन्! जब पाण्डवों ने देखा कि, उनकी सेना के हाथियों, घोड़ों, सारथियों, रथों और योद्धाओं को द्रोणाचार्य नष्ट किये डालते हैं, तब वे बहुत दुःखी हुए; किन्तु बहुत कुछ उपाय करने पर भी वे द्रोणाचार्य को रोक न सके। तब धर्मराज ने धृष्टद्युम्न और अर्जुन से कहा—जैसे बने वैसे तुम लोग आचार्य द्रोण को रोको। तब अर्जुन और अनुचरों सहित धृष्टद्युम्न ने द्रोणाचार्य के ऊपर आक्रमण किया। उन दोनों को आक्रमण करते देख, उनकी सहायता के लिये पाण्डव पक्षी अन्य महारथी यथा—केकय योद्धा, भीमसेन, अभिमन्यु, घटोत्कच, युधिष्ठिर, नकुल, सहदेव, राजा विराट्, हर्ष में भरे राजा द्रुपद के पुत्र, द्रौपदी के पुत्र, सात्यकि, धृष्टकेतु, क्रुद्ध चेकितान, महारथी युयुत्सु—युद्धदुर्मद द्रोणाचार्य की ओर झपटे। उन लोगों ने अपने अपने कुलों और पराक्रम के अनुसार युद्ध के करतब दिखलाये। भरद्वाजपुत्र द्रोणाचार्य, विपक्षी सैन्य को पाण्डवों द्वारा रक्षित देख, क्रोध में भर आँखें फाड़ फाड़ कर इधर उधर देखने लगे। इसके बाद जैसे पवन बादलों को छिन्न भिन्न कर देता है, वैसे ही युद्धदुर्मद द्रोणाचार्य क्रोध में भर रथ में बैठे हुए पाण्डवों की सेना को अपने बाणों से दग्ध करने लगे। वे बूढ़े हो कर भी तरुण पुरुषों से बढ़ कर कर्म करने लगे। वे उन्मत्त की तरह रथ, हाथी, घोड़े, अश्व और पैदलों की ओर दौड़ते हुए चारों ओर घूमने लगे। हे राजन्! उनके वायु के समान चलने वाले

उत्तम लाल रंग के घोड़े रक्त लिपटे हुए शरीर से अत्यन्त शीघ्रता सहित घूमते हुए शोभित होने लगे। पाण्डवों की ओर के वीर योद्धा कालोपम द्रोण को अपनी ओर बढ़ते देख, भयभीत हो तितर बितर हो गये। उस समय उस सेना के भागने और फिर लौटने तथा ठहरने और देखने से वहाँ भयङ्कर शब्द होने लगा। वह शब्द, शूरवीरों को आनन्द देने वाला और कायरों को भयभीत करता हुआ, पृथिवी और आकाश के बीच व्याप्त हो गया। इधर द्रोणाचार्य रणक्षेत्र में अपना नाम उद्घोषित कर, सैकड़ों बाण एक ही बार छोड़ते हुए, अपने रूप को भयङ्कर बना लड़ते लड़ते आगे बढ़ने लगे।

हे राजन्! वे बलवान, अचल द्रोणाचार्य जवान की तरह पाण्डवों की सेना में काल की तरह भ्रमण करने लगे। उन्होंने वीरों के सिर, वीरों की भूषण मण्डित भुजाओं को काटा, शत्रुओं के रथों को मनुष्य शून्य करते हुए, उन्होंने शत्रुसैन्य में घोर कोलाहल मचा दिया। हे प्रजानाथ! उनके उत्साहवर्द्धक सिंहनाद और बाणों के चलाने की फुर्ती को देख कर, शत्रु सैन्य—वैसे ही काँपने लगे, जैसे सर्दी की सताई गाय काँपती है। द्रोणाचार्य के रथ की घरघराहट और धनुष की टँकार से दसों दिशाएँ प्रतिध्वनित हो उठीं। एक एक बार में सहस्र सहस्र छूटे हुए उनके बाण रणक्षेत्र में चारों ओर फैल गये। उनके बाणों से आकाश में जाल सा पूर गया। उनके बाण शत्रुपक्षी सैन्य के रथों, हाथियों, घोड़ों और पैदल वीरों पर चारों ओर से बरसने लगे। पाँचाल और पाण्डव, सेना सहित, अत्यन्त शीघ्रता से बाण और अस्त्रों शस्त्रों से, प्रज्वलित अग्नि की तरह द्रोणाचार्य पर आक्रमण करने लगे। किन्तु द्रोणाचार्य शत्रुओं की समस्त सेना, हाथियों, घोड़ों, पैदलों को अपने पैने बाणों से काट काट कर यमपुरी भेजने लगे। उन्होंने थोड़े ही समय में पृथिवी को रक्त से परिपूरित कर दिया और दिव्यास्त्रों से वे युद्धभूमि में चारों ओर शरजाल बनाने लगे। उस समय जिधर देखो उधर उनका बनाया शरजाल ही देख पड़ता था। जिस प्रकार

बादलों में सर्वत्र बिजली घूमा करती है, उसी तरह मुझे उनका रथ, पैदलों, हाथियों, घोड़ों की ओर घूमता देख पड़ता था। द्रोणाचार्य धनुष बाण लिये हुए केकयों में श्रेष्ठ पाँच महापुरुषों को और राजा द्रुपद को बाणों से व्यथित कर, राजा युधिष्ठिर की सेना पर टूट पड़े।

भीमसेन, अर्जुन, शिनिपुत्र सात्यकि, राजा द्रुपद के पुत्र शैव्यकन्दन काशिराज और शिबिराज ने हर्षित हो कर तथा सिंहनाद कर मारे बाणों के द्रोणाचार्य को ढक दिया। द्रोणाचार्य के धनुष से छूटे हुए और सुवर्ण दण्ड से युक्त तीक्ष्ण बाण उन लोगों के हाथियों, घोड़ों और पैदल योद्धाओं के शरीरों को भेद और रुधिर में सने हुए भूमि में घुस जाते थे। वह रणभूमि बाणों की तथा अन्य अस्त्रों शस्त्रों से मरे हुए शूरवीरों, हाथियों और घोड़ों की लोथों से उसी प्रकार ढक गयी, जिस प्रकार काले बादलों से आकाश छिप जाता है। द्रोणाचार्य राजा दुर्योधन के हितैषी हो कर, सात्यकि भीमसेन, अर्जुन, अभिमन्यु, सेनापति धृष्टद्युम्न, काशिराज और दूसरे अनेक शूरवीरों को अपने बाणों से पीड़ित करने लगे।

हे राजन्! ये महापराक्रमी द्रोणाचार्य ऐसे अन्य अनेक पराक्रम पूरित कार्यों को कर, प्रलयकालीन सूर्य की तरह, समस्त प्राणियों को उत्तप्त करने लगे। इस युद्ध में पाण्डवों की बहुत सी सेना मारी गयी। द्रोणाचार्य सुवर्णमण्डित रथ पर सवार हो पाण्डवों की सेना के सैकड़ों हज़ारों योद्धाओं का वध कर, अन्त में धृष्टद्युम्न के हाथ में पड़ मारे गये। रणकुशल बुद्धिमान् आचार्य द्रोण ने पीछे पैर न रखने वाली दो अक्षौहिणी सेना से भी अधिक शत्रु सैन्य को नष्ट कर, अन्त में वीरगति पायी। हे राजन्! सुवर्णमण्डित रथ पर सवार, अत्यन्त दुष्कर कर्मों को कर, अन्त में पाण्डवों सहित पाञ्चाल योद्धाओं के अशुभ तथा क्रूर कर्मों के अनुष्ठान से द्रोणाचार्य मारे गये। हे राजन्! युद्ध में द्रोणाचार्य के मारे जाने पर, सम्पूर्ण प्राणियों और सैनिकों के हाहाकार करने पर गगनमण्डल प्रतिध्वनित हो उठा। सब लोग चिल्ला कर कहने लगे—धिक्कार है! धिक्कार

है। इस चीत्कार से सारी पृथिवी, आकाश और दसों दिशाएँ व्याप्त हो गयीं। देवता, पितर और उनके पूर्वपुरुषों तथा भाईबंदों ने भरद्वाजपुत्र द्रोणाचार्य को मरा हुआ रणभूमि में देखा। पाण्डव लोग इस लड़ाई में शत्रु पक्ष के एक प्रधान सेनापति का वध कर, हर्षित हो सिंहनाद करने लगे। शूरवीरों के सिंहनाद से पृथिवी काँप उठी।

नवाँ अध्याय

धृतराष्ट्र का परिताप

राजा धृतराष्ट्र ने कहा—समस्त शस्त्रधारियों में अस्त्र शस्त्र के युद्ध में पटु द्रोणाचार्य ने ऐसा कौन सा काम किया था, जिससे वे पाण्डवों और सृञ्जयों के हाथों मारे जा सके। लड़ाई के समय उनका रथ तो कहीं नहीं टूट गया था? अथवा बाण चलाते समय उनका धनुष कट गया था? क्या वे युद्ध के समय असावधानी करने के कारण मारे गये? हे तात! महारथी एवं धर्मात्मा द्रोणाचार्य, शत्रुओं को पराजित करने वाले, कृतास्त्र, द्विजश्रेष्ठ, बड़े दूर के लक्ष्य को वेधने वाले, महापराक्रमी, सब प्रकार के अस्त्रयुद्ध में निपुण थे और उनके पास दिव्यास्त्र भी थे। वे युद्ध में कभी पीठ नहीं दिखाते थे। सो ऐसे द्रोणाचार्य को धृष्टद्युम्न ने कैसे मार डाला। महाबली धृष्टद्युम्न ने वीरवर द्रोणाचार्य को जब मार डाला, तब मुझे साफ मालूम होता है कि, पुरुषार्थ से प्रारब्ध वड़ी बलवान् है। इसीसे तो चार प्रकार की अस्त्र-विद्या में निष्णात द्रोणाचार्य के मारे जाने का दुःसंवाद मुझे तेरे मुख से सुनना पड़ा है। हाय! सोने के रथ पर सवार, व्याघ्रम्बरधारी, सुवर्ण भूषणों से भूषित, द्रोणाचार्य के मरने का समाचार सुन, आज मेरा शोक किसी प्रकार भी शान्त नहीं होता।

हे सञ्जय! निश्चय ही दूसरे के दुःख से कोई मरता नहीं। क्योंकि तू देख न, मैं द्रोण के मरण का समाचार सुन कर भी अब तक

जीता जागता बैठा हूँ। अतः मैं प्रारब्ध को सर्वोपरि मानता हूँ। मैं पुरुषार्थ को व्यर्थ समझता हूँ। निस्सन्देह मेरा हृदय लोहे का बना हुआ है। इसी से यह इतना दृढ़ है कि, द्रोण के मरने का समाचार सुन कर भी उसके सैकड़ों टुकड़े नहीं हुए। गुणग्राही ब्राह्मणकुमार और राजकुमार ब्राह्म और दैव अस्त्रों की विद्या सीखने के लिये जिन द्रोण की सदा उपासना किया करते थे, वह क्यों कर मृत्यु के मुख में पतित हुए। समुद्र का शुष्क होना, सुमेरु पर्वत का चलना और सूर्य के नीचे गिरने के समान, द्रोणाचार्य का वध मुझसे नहीं सहा जाता। शत्रु-नाश-कारी जो आचार्य द्रोण दुष्टों के शासक और शिष्टों के रक्षक थे, जो द्रोणाचार्य दीन दुखियों के पीछे अपने प्राणों तक का मोह नहीं करते थे, जिनके पराक्रम के आसरे मेरे नीचमना पुत्रों को इस युद्ध में विजय प्राप्त करने का पूरा भरोसा था, जो द्रोणाचार्य बुद्धि में बृहस्पति और नीति में शुक्राचार्य के समान थे—वे पराक्रमी द्रोणाचार्य युद्ध में क्यों कर मारे गये। उनके रथ में जुते हुए सुवर्ण के भूषणों से भूषित, पवन के समान वेगवान्, सिन्धु देशीय लाली रंग के उत्तम घोड़े क्या अस्त्र-शस्त्र-प्रहार से उत्पीड़ित हो गये थे? हे तात! वे घोड़े तो हाथियों की चिंघार, शङ्ख नगाड़ों की आवाज़ और धनुष की टंकार को सुन एवं बाणवृष्टि तथा अन्य शस्त्रों के प्रहार को सहने वाले और भड़कने वाले न थे। वे न तो शस्त्रों के प्रहार से पीड़ित होते और न अधिक परिश्रम करने से श्रान्त होते थे। वे तो बड़े शीघ्रगामी थे और शत्रुओं से कभी न हारने वाले वीरों से वे सुरक्षित थे। इससे तो उनके द्वारा वैरियों ही के हारने की बहुत कुछ सम्भावना थी। वे घोड़े पाण्डवों की सेना के पार क्यों न हो सके? जो युद्ध में शत्रुसैन्य को रुलाया करते थे, उन द्रोणाचार्य ने सोने के रथ पर सवार हो कैसा पराक्रम दिखलाया? यह तू मुझे सुना। जगत् भर के योद्धा जिनसे शस्त्रविद्या को सीख, धनुर्धर हुए हैं, उन सत्य पराक्रमी द्रोणाचार्य ने युद्ध में कैसा पराक्रम प्रदर्शित किया था? स्वर्ग में इन्द्र जैसे समस्त देवताओं में श्रेष्ठ हैं, वैसे ही समस्त धनुर्धरों में श्रेष्ठ महा-

भयङ्कर कर्मों को करने वाले द्रोणाचार्य की पृष्ठरक्षा उस समय किन किन महारथियों को सौंपी गयी थी? जब सुवर्णभूषित रथ पर सवार तथा दिव्यास्त्रों की वर्षा करने वाले द्रोणाचार्य को देख कर, पाण्डव लोग अत्यन्त पीड़ित हुए थे, तब फिर उन पर पाञ्चाल योद्धाओं और भाइयों सहित युधिष्ठिर ने द्रोणाचार्य पर किस प्रकार आक्रमण किया? मुझे जान पड़ता है कि, अर्जुन ने मेरी ओर के मुख्य योद्धाओं की गति अपने तीक्ष्ण बाणों से रोक दी—तब पीछे से पापी धृष्टद्युम्न ने द्रोणाचार्य पर आक्रमण किया होगा? अर्जुन रक्षित धृष्टद्युम्न को छोड़, मुझे और कोई भी योद्धा नहीं देख पड़ता, जो तेजस्वी द्रोणाचार्य का वध कर सके। जान पड़ता है कि, जैसे चीटियों द्वारा तंग किये गये सर्प को कोई भी पुरुष मार डाल सकता है, वैसे ही पाञ्चालों में प्रथम योद्धा धृष्टद्युम्न ने, केकय, चेदि, मत्स्य, करूष और अन्य देश के बहुत से राजाओं की सहायता से उन क्लिष्टकर्मा द्रोणाचार्य का वध किया होगा। जिन्होंने साङ्गोपाङ्ग वेदाध्ययन किया था, जो नदियों के आश्रयस्थल सागर की तरह ब्राह्मणों के आश्रयस्थल थे; जो शत्रुनाशन द्रोणाचार्य क्षत्रिय और ब्राह्मण—दोनों ही धर्मों के जानने वाले तथा आचार्यरूप थे, वे वृद्ध तथा ब्राह्मणश्रेष्ठ द्रोणाचार्य क्यों कर अस्त्र-शस्त्र-प्रहार से मारे गये? मैं पाण्डवों को देख, मन ही मन जला करता था और उनको सदा सताया करता था। द्रोणाचार्य जानते थे कि, पाण्डव इस प्रकार सताने योग्य नहीं हैं। अतः पाण्डवों पर उनका प्रेम था। क्या ऐसे बर्ताव का उनको यही फल मिलना चाहिये था? धराधाम के समस्त धनुर्धर योद्धा, जिन द्रोणाचार्य से शस्त्रविद्या सीख कर, धनुर्धर गिने जाते हैं, उन सत्यवादी और पुण्यात्मा द्रोणाचार्य का, राज्य पाने की अभिलाषा से किस प्रकार वध किया? जैसे छोटी छोटी मछलियाँ किसी बड़े मच्छ को मार डालें—क्या वैसे ही द्रोणाचार्य भी मारे गये? शीघ्रता से शस्त्रों को चलाने वाला, बलवान्, दृढ़ धनुर्धर और शत्रुओं का नाश करने वाला जो कोई पुरुष विजय की इच्छा से द्रोणाचार्य के निकट उपस्थित होता था, वह

जीता हुआ, लौट कर नहीं जा पाता था। इसके अतिरिक्त वेद पढ़ने वाले ब्राह्मणों के वेद-स्वर और धनुर्वेद जानने वाले राजाओं के धनुष्टङ्कार का शब्द, जिन द्रोणाचार्य का साथ कभी नहीं छोड़ता था, उस महावीर, अत्यन्त पराक्रमी, पुरुषश्रेष्ठ, लज्जाशील, अपराजित सिंह और हाथी के समान पराक्रमी द्रोणाचार्य का वध होना, मुझे सह्य नहीं है।

हे सञ्जय! जिन द्रोणाचार्य के बल और यश की कोई निन्दा नहीं कर सकता था, धृष्टद्युम्न ने उन द्रोणाचार्य को दूसरे राजाओं के सम्मुख क्यों कर रणभूमि में मारा? उनकी रक्षा करने के लिये किन महारथियों ने उनके निकट खड़े हो युद्ध किया था? वे कौन से महारथी वीर थे, जिन्होंने क्लिष्ट-कर्मा द्रोणाचार्य के रथ के पीछे और रथ की दहिनी और बायीं ओर खड़े रह कर, शत्रुओं के साथ युद्ध किया? वे कौन से महारथी वीर थे, जो महा-तेजस्वी द्रोणाचार्य के आगे थे? उस समय और कौन से वीर योद्धाओं ने शस्त्राघातों से शरीर त्यागा था? उनके युद्ध में और कौन कौन से योद्धा स्वर्ग सिधारे? द्रोणाचार्य की रक्षा का भार जिन क्षत्रिय योद्धाओं को सौंपा गया था, उन मूढ़ क्षत्रियों ने किसके भय से उन्हें त्याग कर, रणभूमि से पलायन किया? अथवा क्या अन्य किसी ने भी उनकी रक्षा नहीं की? वे तो अत्यन्त सङ्कटापन्न हो कर भी शूरता और वीरता से युक्त शत्रुओं के भय से कभी पीठ नहीं दिखलाते थे; तब फिर वह महातेजस्वी द्रोणाचार्य शत्रुओं के अस्त्रों से किस प्रकार मारे गये? हे सञ्जय! श्रेष्ठ पुरुष महाघोर विपत्ति में पड़ कर भी शक्ति के अनुसार पराक्रम करते हैं। द्रोणाचार्य इस कर्त्तव्य को समझते थे। मेरा मन मुग्ध हो रहा है। अब तुम इस समय यह कथा यहीं तक रहने दो। मैं सावधान होने बाद पुनः तुमसे सब हाल पूछूँगा।

दसवाँ अध्याय

धृतराष्ट्र का सञ्जय से प्रश्न

वैशम्पायन जी बोले—हे जनमेजय! धृतराष्ट्र सूतपुत्र सञ्जय से यह कह कर, दुःख से कातर और पुत्रों के विजय की आशा से निराश हो कर, पृथिवी में गिर पड़े। उनको मूर्छित हो, पृथिवी पर गिरा हुआ देख, सेवकों ने उनके ऊपर शीतल जल ला कर छिड़का तथा और सुगन्ध युक्त पंखों से उन पर बयार की। राजा धृतराष्ट्र को मूर्छित हो पड़े देख भरतकुल की स्त्रियाँ उनको चारों ओर से घेर कर, बैठ गयीं और अपने कोमल करों से उनके शरीर को सहराने लगीं। उन वाराङ्गनाओं का कण्ठ शोक से रुद्ध हो गया। उन्होंने धीरे धीरे राजा धृतराष्ट्र को उठा कर आसन पर बिठाया। उस समय भी धृतराष्ट्र भली भाँति सचेत नहीं हुए थे। अतः वे सब स्त्रियाँ उन पर पङ्खा डुला हवा करती थीं। धीरे धीरे धृतराष्ट्र सचेत हो गये और काँपते हुए शरीर से फिर सञ्जय से पूँछने लगे।

धृतराष्ट्र ने पूँछा—हे सञ्जय! जैसे अपने तेज से अन्धकार दूर कर, सूर्य उदित होता है वैसे ही जब अजातशत्रु राजा युधिष्ठिर द्रोणाचार्य के सामने उपस्थित हुए; तब मदचूते हुए, क्रुद्ध, बलवान और अशक्तचित्त दो मतवाले हाथी जैसे ऋतुमती हथिनी के सङ्गम के समय आपस में युद्ध करते हैं, उसी भाँति अजेय मतवाले हाथी के समान प्रसन्नचित्त राजा युधिष्ठिर को देख, कौन सा योद्धा उनको द्रोण के पास से हटा कर, दूर ले गया था? वीरवर, धैर्यधारी और सत्यवादी राजा युधिष्ठिर ने अकेले ही सब वीरों का नाश किया होता। यदि वे मन में धरें तो अकेले ही अपनी क्रोध भरी दृष्टि से दुर्योधन की समस्त सेना को जला कर भस्म कर सकते हैं। विजय के उद्योग में रत उग्र धनुर्धर, जितेन्द्रिय एवं प्रतिष्ठित युधिष्ठिर को युद्ध में किन किन वीरों ने घेरा था? मेरी सेना के कौन कौन से योद्धा, उन कुन्तीनन्दन अच्युत वीर युधिष्ठिर के पास गये थे, जो किसी से कभी

दबते नहीं हैं। जो पुरुषों में व्याघ्र के समान हैं, जिस महाबलवान्, महाकाय महा उत्साही, दस हज़ार हाथियों जितना बल रखने वाले भीमसेन ने शत्रुसैन्य में अपना पराक्रम प्रदर्शित किया था, जिस भीम ने बड़े वेग से द्रोणाचार्य पर आक्रमण किया था, उस भीमसेन को आते देख, मेरी ओर की सेना के किन किन वीरों ने उसे घेरा था?

मैं यह भी जानना चाहता हूँ कि, उस समय तुम्हारे मन में क्या क्या विचार उठे थे? जिस समय रथी, परम पराक्रमी, धनुषरूपी बिजली के प्रकाश से युक्त बादल की समान भयङ्कर, मेघवर्ण रथ पर सवार, रथ के पहियों के शब्द रूप गर्जन से युक्त, बाण छोड़ने के शब्द से दसों दिशाओं को व्याप्त करने वाले, बुद्धिमान्, रोषरूपी वायु से वेगवान्, मन के अभिप्राय के तुल्य शीघ्रगामी, मर्मभेदी बाणों को ग्रहण करने वाले तथा महाभयङ्कर मूर्त्ति वाले अर्जुन ने, इन्द्र के बादलों के समान अपने धनुष का महाघोर शब्द और वज्र समान बाणों की वृष्टि कर, धनुषटङ्कार तथा रथ के शब्द से समस्त दिशाओं को पूर्ण किया था तथा रुधिर रूपी जल से रणभूमि तर की थी तथा लाशों से रणभूमि ढक दी थी; जिस समय अर्जुन ने रौद्र मूर्त्ति धारण कर रणभूमि में आगमन किया था; जिस समय अर्जुन ने, धनुष हाथ में ले गिद्धों के परों से युक्त पैने बाणों से दुर्योधन के अनुयायी राजाओं को पीड़ित किया था, जिस समय कपिध्वजा से युक्त अर्जुन ने बाणवृष्टि से आकाश को पूरित कर, युद्धभूमि में आगमन किया, उस समय अर्जुन को देख, तुम लोगों की क्या दशा हुई थी? अर्जुन जब महाभयङ्कर शब्द करता हुआ तुम लोगों के समीप आया था, तब गाण्डीव धनुष के महाभयङ्कर शब्द से ही तो तुम्हारी सेना नष्ट नहीं हुई? जैसे वायु अपने वेग से बादलों को छितरा देता है, वैसे ही अर्जुन ने भी तो तुम लोगों का प्राण नष्ट तो नहीं किया? जिसके नाम को सुनते ही सेना के आगे चलने वाले शूरवीर काँप उठते हैं, उस गाण्डीव-धनुष-धारी अर्जुन के बाणों की चोट को कौन पुरुष युद्ध में

सह सकता है? उसी अर्जुन के युद्ध से अवश्य ही मेरी सेना के पुरुष कम्पित और भयभीत हुए होंगे। ऐसे अवसर में कौन से वीरों ने द्रोणाचार्य का साथ नहीं छोड़ा? कौन कौन से क्षुद्र जन, उस समय उन्हें रणक्षेत्र में त्याग, भाग गये थे? कौन कौन शूर वीर योद्धा उस समय देवताओं की तरह पराक्रमी अर्जुन के साथ, युद्ध कर, मृत्युमुख में पतित हुए थे? श्वेतवाहन अर्जुन के वेग और वर्षाकाल के मेघगर्जन के समान गाण्डीव धनुष के शब्द को नहीं सह सकते हैं। वह अर्जुन, जिसके सारथि श्रीकृष्ण हैं, जहाँ पर युद्ध करें, वहाँ तो देवता और असुर भी उसे नहीं जीत सकते।

जिस समय सुकुमार, युवा, शूर, दर्शनीय, तेजस्वी, शस्त्र-विद्या-विशारद, बुद्धिमान्, सत्यपराक्रमी पाण्डुनन्दन नकुल ने रणभूमि में, महाघोर शब्द कर, द्रोण पर बाणों द्वारा आक्रमण किया था उस समय किन किन शूर-वीरों ने नकुल का सामना किया था?

जब क्रोध में भरे साँप की तरह बलवान् सहदेव मेरी सेना को नष्ट करता हुआ, रणभूमि में आया था; तब उस व्रतधारी श्रेष्ठपुरुष, अमोघ बाणधारी, लज्जालु तथा अपराजित सहदेव को किन किन वीरों ने निवारण किया था? जिसने सौवीर राज्य की महासेना को भेद कर, सर्वाङ्गसुन्दरी भोजकन्या को ग्रहण किया था, जो पुरुषश्रेष्ठ केवल सत्य, धैर्य और ब्रह्मचर्य व्रत में नित्य स्थित रहता है; जो बलवान सत्य कर्मों का करने वाला निर्भय, अपराजित और युद्ध में श्रीकृष्ण के समान है; जिसने कृष्ण को पा कर भी अर्जुन के उपदेश से अस्त्र-शस्त्र विद्या में निपुणता प्राप्त की है; शस्त्रशिक्षा में अर्जुन के समान उस सात्यकि को, द्रोणाचार्य की ओर आते देख, किसने निवारण किया था? जो वृष्णिवंशश्रेष्ठ, शूर वीर, अस्त्र-विद्या और पराक्रम में श्रीराम के समान है, जो सत्य, धृति, बुद्धि, वीरता और ब्रह्मास्त्र के ज्ञान में त्रैलोक्यपूजित श्रीकृष्ण के समान है, उस देवताओं से भी अजेय सर्व-गुण-विभूषित महाधनुर्धर, सात्यकि को किन किन शूरवीरों ने युद्ध में निवारण किया? जिसने अपने समस्त भाईबंदों को त्याग, अकेले

ही पाण्डवों का आश्रय ग्रहण किया है, उस धृष्टकेतु को द्रोणाचार्य की ओर झपटते देख, किसने उसका सामना किया था? जिस शूर केतुमान ने अपरान्त नामक गिरिद्वार में दुर्जेय राजपुत्र को मार डाला था, वह जब द्रोणाचार्य पर चढ़ कर आया, तब उसको किसने रोका था? जो नरव्याघ्र स्त्रियों और पुरुषों के गुणों और अवगुणों को जानता है तथा जो युद्ध के लिये उत्साही है, जिसने युद्ध में महात्मा भीष्म का वध किया है, उस यज्ञसेन-नन्दन शिखण्डी ने जब द्रोणाचार्य पर चढ़ाई की, तब किस किस शूरवीर ने उसका सामना किया था? जिस वीर में अर्जुन से भी अधिक गुण विद्यमान हैं, जो अस्त्रज्ञ है, जो सत्यवादी और ब्रह्मचर्य-व्रत-पालन में निरत रहता है, जो पराक्रम में श्रीकृष्ण के और बल में अर्जुन के, तेज में सूर्य के और बुद्धि में बृहस्पति के समान है, जो काल के खुले हुए मुख की तरह बड़ा भयङ्कर है, उस महाबली अभिमन्यु को, जब उसने द्रोणाचार्य पर आक्रमण किया, तब किसने रोका था? जिस समय शत्रु का नाश करने वाला और बुद्धिमान् सुभद्रानन्दन अभिमन्यु ने द्रोणाचार्य पर चढ़ाई की, उस समय तुम्हारे मन में क्या क्या विचार उठे थे? पुरुषसिंह द्रौपदी के पुत्र जब द्रोणाचार्य के ऊपर वैसे ही झपटे, जैसे बड़े बड़े नद समुद्र की ओर दौड़ते हैं, तब उनको किन किन वीरों ने रोका था? धृष्टद्युम्न के प्रति सम्मान प्रदर्शित करने वाले क्षत्रञ्जय, क्षत्रदेव, क्षत्रवर्मा नाम वाले जो राजकुमार बारह वर्ष तक खेल कूद के आनन्द को त्याग, उत्तम रीत्या ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करते हुए, भीष्म जी के निकट अस्त्र-विद्या सीखते रहे थे, उन्होंने जब द्रोणाचार्य पर आक्रमण किया, तब उनका निवारण किसने किया था? वृष्णिवंशीय राजन्यवर्ग जिसे युद्ध में समस्त योद्धाओं से श्रेष्ठ गिनते थे, उस महाधनुर्धर चेकितान को द्रोण के ऊपर चढ़ाई करते समय किसने रोका था? जिसने लड़ कर कलिङ्गराजाओं से कन्या छीन ली थी, उस वृद्धिसेन के अनाधृष्टि नामक उदारमना पुत्र ने जब द्रोण पर आक्रमण किया, तब उसे किन किन शूरवीरों ने रोका था?

धर्मात्मा, सत्यपराक्रमी, लाल कवच, शस्त्र और ध्वजा धारी, इन्द्रगोप (बीर-बहूटी) की तरह लाल, पाण्डवों की मौसी के पुत्र, पाँच केकय भ्राताओं ने जब पाण्डवों की विजयकामना से द्रोणाचार्य का वध करने को उन पर आक्रमण किया, तब उनका सामना किसने किया था? वारणावत नगर में जिसे मारने के लिये क्रोध में भरे राजा, छः मास तक युद्ध करते रहे और तिस पर भी जिसे न जीत सके, वह धनुर्धरों में श्रेष्ठ, वीर, सत्य प्रतिज्ञा वाला, महाबली, नरव्याघ्र युयुत्सु जब द्रोण पर चढ़ आया, तब किन वीरों ने उसको घेरा था? जिसने काशी में कन्याहरण करने के लिये, कन्या चाहने वाले महाबली काशिराज के पुत्र को भाले के प्रहार से रथ के नीचे गिरा दिया था, उस पाण्डवों के मंत्री महाधनुर्धर और दुर्योधन का अशुभ करने को तत्पर और द्रोणवध के लिये उत्पन्न धृष्टद्युम्न ने जब योद्धाओं का वध करते हुए द्रोणाचार्य पर आक्रमण किया, तब किन किन वीरों ने उसे चारों ओर से रोका था? द्रुपद द्वारा लालित पालित, अस्त्रज्ञ-श्रेष्ठ, शस्त्रों से रक्षित, शिखण्डी ने जब द्रोण पर चढ़ाई की, तब उसका सामना किसने किया था? शत्रुसंहारकारी जिस महारथी ने अपने विशाल रथ की घरघराहट के शब्द से समस्त पृथिवी को चर्म की तरह ढक दिया था, जिसने प्रजा का पुत्रवत् पालन कर, बड़ी बड़ी दक्षिणाओं वाले दस अश्वमेध और सर्वमेधनामक यज्ञ किये थे, जिस राजा उशीनर-नन्दन ने अगणित गोदान दिये थे, जिसके महादुष्कर कर्मों को देख, देवता कहने लगे थे कि, ऐसे काम तो अन्य किसी मनुष्य ने नहीं किये और न आगे ही कोई ऐसे कर्म करेगा—स्थावर जङ्गम तथा तीनों लोकों में इस शिबिवंशीय उशीनर के समान यज्ञकर्म को पूर्ण करने वाला दूसरा कोई भी उत्पन्न नहीं हुआ था और न आगे उत्पन्न होगा, मत्यलोकवासी मनुष्य जिसके समान श्रेष्ठगति प्राप्त नहीं कर सकते, उसी उशीनर के वंश में उत्पन्न हुए शत्रुनाशक महारथी शैब्य को यमराज के समान द्रोणाचार्य की ओर आते देख, किन किन शूरवीरों ने निवारण किया था?

जब मत्स्यराज विराट की रथसैन्य ने द्रोणाचार्य पर आक्रमण किया, तब किन वीरों ने उस सैन्य का सामना किया था? हे वीर! जिससे मुझे बड़ा भय लगता है, उस भीमसेन के पुत्र महाबली, परम पराक्रमी, मायावी, पाण्डवों का विजय चाहने वाले और मेरे पुत्र के लिये कण्टक रूपी राक्षस-राज, विशाल वपुधारी घटोत्कच को द्रोणाचार्य की ओर जाते देख, किन किन योद्धाओं ने उसका सामना किया था? हे सञ्जय! ये सब तथा इनके अतिरिक्त अन्य अनेक वीर योद्धा जिसके लिये प्राण तक देने को तैयार हैं उनसे न जीतने योग्य कौन पुरुष है? पूर्णतः समस्त लोकों के स्वामी, सनातन पुरुष, दिव्य भाव से युक्त पुरुषसिंह, शार्ङ्ग-धनुष-धारी श्रीकृष्ण, जिन पाण्डवों की रक्षा कर रहे हैं, जिनके हितसाधन में श्रीकृष्ण सदा तत्पर रहते हैं, तथा युद्ध में सहायता दिया करते हैं, उन लोगों के पराजय की आशा क्यों कर की जा सकती है? जिनके दिव्य कर्मों का गान मनीषी जन किया करते हैं; इस समय मैं उन्हीं वासुदेव से कर्मों का, अपना मन स्थिर करने के लिए, भक्तिपूर्वक, कीर्तन करूँगा।

ग्यारहवाँ अध्याय

श्रीकृष्ण का यशोगान

धृतराष्ट्र ने कहा—हे सञ्जय! मैं तुम्हें अब वासुदेव के दिव्य कर्म सुनाता हूँ। तुम उनको सुनो। श्रीकृष्ण ने जो कर्म किये हैं, उन कर्मों को दूसरा कोई भी पुरुष कभी नहीं कर सकेगा। हे सञ्जय! महात्मा श्रीकृष्ण ने बालकपन में गोप के कुल में पालन पोषण होते समय अपना भुजबल त्रिलोक में प्रसिद्ध कर दिया था। उच्चैःश्रवा नामक दिव्य घोड़े की तरह बलवान्, वेग में वायु के समान, यमुना-तटवर्त्ती-वन-वासी मायावी हयराज का श्रीकृष्ण ने वध किया था। बाल्यावस्था ही में श्रीकृष्ण ने वृषभ-रूप-धारी घोरकर्मा उस वृषभासुर को भी नष्ट किया था, जिसका जन्म मानों गौओं

का नाश करने ही के लिये हुआ था। कमलनयन श्रीकृष्ण ने ही महाभयङ्कर प्रलम्बासुर का भी वध किया था। उन्होंने ही नरकासुर, जम्भासुर और इन्द्र समान पराक्रमी मुर नामक राक्षस का वध किया था। जरासन्ध से रक्षित, महातेजस्वी कंस को उसके अनुयायियों सहित मार कर, यमलोक को भेज दिया था। शत्रुओं का नाश करने वाले श्रीकृष्ण ने बलदेव जी की सहायता से भोजराज कंस के सब भाइयों अर्थात् तपस्वी, बलवान्, सुनामा और युद्ध में पराक्रमी अक्षौहिणी-पति राजा शूरसेन का, उनकी समस्त सेना सहित नाश किया था। महाक्रोधी दुर्वासा ऋषि ने स्त्रियों से युक्त श्रीकृष्णचन्द्र द्वारा अत्यन्त पूजित हो कर, उन्हें नाना प्रकार के वर प्रदान किये थे। कमलनयन महावीर श्रीकृष्ण ने स्वयम्वर के बीच समस्त राजाओं को पराजित कर, गान्धारराज की कन्या के साथ विवाह किया था.; उस समय कितने ही पराक्रमी राजा श्रीकृष्ण के अस्त्रों से क्षत-विक्षत शरीर होने के कारण अत्यन्त पीड़ित हुए थे। जनार्दन श्रीकृष्ण ने अक्षौहिणीपति जरासन्ध को उसकी समस्त सेना सहित युक्ति द्वारा दूसरे के हाथ से मरवा डाला था। राजाओं में प्रसिद्ध शिशुपाल ने जब श्रीकृष्ण की बहुत निन्दा की, तब उन्होंने उसे तुरन्त पशु की तरह मार डाला। यदुकुल-शिरोमणि श्रीकृष्ण ने समुद्रतट से आक्रान्त न होने योग्य, शाल्व दैत्य से रक्षित सौभ नामक दैत्यपुरी को अपने अस्त्रों के बल नष्ट कर के, उसे समुद्र में डुबो दिया था। श्रीकृष्णचन्द्र ने युद्ध में अंग, बङ्ग, कलिङ्ग, मगध, काशी, अयोध्या, वात्स्य, गार्ग्य, करूप, पौण्ड्र, अवन्ती, दाक्षिणात्य, कैवल्य, दाशेरक, काश्मीर, औरसिक, पिशाच, मुद्गल, काम्बोज, वाटधान, चोल, पाण्ड्य, त्रिगर्त, मालव और महापराक्रमी दरद देशीय वीर और बहुत सी दिशाओं से आये हुए वीर योद्धा तथा खस और शक देशीय राजाओं तथा सेना सहित यवनराज को पराजित किया था। श्रीकृष्ण ने मकर, उरग आदि जलजन्तुओं से पूर्ण अपार समुद्र में प्रवेश कर, वरुण को जीता था। श्रीकृष्ण ने युद्ध

में पातालतल पर वास करने वाले पञ्चजन नामक दैत्य को मार कर पाञ्चजन्य नामक शङ्ख पाया था। इन महाबली केशव ने अर्जुन के साथ खाण्डव वन में अग्नि को तृप्त कर, उससे दुराधर्ष आग्नेयास्त्र सरीखा सुदर्शन चक्र पाया था। विनतानन्दन गरुड़ पर सवार हो और अमरावती को भयभीत कर, श्रीकृष्ण, महेन्द्र के भवन से पारिजात को लाये थे। महेन्द्र को श्रीकृष्ण का पराक्रम अवगत था, अतः महेन्द्र ने उनके कार्य में बाधा न डाली। राजाओं में कोई भी ऐसा राजा हमने नहीं सुना, जिसे श्रीकृष्ण ने न जीता हो। हे सञ्जय! कमलनयन श्रीकृष्ण ने हमारी राजसभा में जो आश्चर्य में डालने वाला काम किया था, वैसा कर्म दूसरा कौन कर सकता है? उस समय भक्ति के साथ मैंने श्रीकृष्ण के शरण में जा उनके दर्शन किये थे। तब से मुझे शास्त्रवर्णित सब बातें प्रत्यक्ष सी जान पड़ने लगी हैं। हे सञ्जय! परम पराक्रमी और बुद्धिमान् श्रीकृष्ण के कार्यों का ओर छोर पाना असम्भव है। गद, साम्ब, प्रद्युम्न, विदूरथ, अवगाह, अनिरुद्ध, चारुदेष्ण, सारण, उल्मुक, निशठ, पराक्रमी झिल्ली, बभ्रु, पृथु, विपृथु, शमीक, अरिमेजय बड़े बलवान् हैं और प्रहार करने में चतुर हैं। यदि ये वृष्णिवंशीय वीर, श्रीकृष्ण के आमंत्रण को स्वीकार कर, पाण्डवों की सेना में मिल, युद्ध करें; तो मेरी समझ में मेरी सारी सेना भयभीत हो जाय। जहाँ श्रीकृष्ण होंगे, वहाँ ही दस हज़ार हाथियों के समान बल वाले, वीर, कैलास पर्वत के शिखर के समान ऊँचे, वनमाला-धारी हलधर बलराम भी होंगे ही। हे सञ्जय! ब्राह्मण, वासुदेव श्रीकृष्ण को सब का पिता कहते हैं। वासुदेव भी पाण्डवों के लिये युद्ध करेंगे ही। हे तात सञ्जय! जब श्रीकृष्ण पाण्डवों को लिये शस्त्र हाथ में लेंगे, तब उनका सामना करने के लिये हममें से कोई भी आगे नहीं बढ़ेगा। जब समस्त कौरव युद्ध में पाण्डवों को हरा देंगे, तब वृष्णिवंशीय श्रीकृष्ण, पाण्डवों की ओर से अस्त्र ग्रहण करेंगे। वे महाबली और पुरुषसिंह श्रीकृष्ण जी समस्त राजाओं और कौरवों को युद्ध में मार, सारी पृथिवी धर्मराज

युधिष्ठिर को देवेंगे। जिसके सारथि श्रीकृष्ण हैं और जिसका योद्धा धनञ्जय है, उस रथ के सम्मुख लड़ने के लिये कौन सा महारथी आगे बढ़ेगा? मुझे तो किसी भी उपाय से कौरवों की जीत होती हुई नहीं दिखलायी पड़ती। तिस पर भी कौरवों-पाण्डवों का युद्ध किस प्रकार हुआ, ये समस्त वृत्तान्त तुम मुझे सुनाओ। अर्जुन, श्रीकृष्ण का आत्मा-स्थानीय है और श्रीकृष्ण, अर्जुन का आत्मा-स्थानीय है। अर्जुन में सदा ही विजय और श्रीकृष्ण में सनातन कीर्ति विद्यमान है। अर्जुन को कोई भी हरा नहीं सकता और श्रीकृष्ण में समस्त अशेष गुण विद्यमान हैं। मूर्ख दुर्योधन अभाग्य ही से दैववशवर्ती हो, मृत्युपाश में जकड़ा हुआ है। इसीसे वह श्रीकृष्ण और अर्जुन को नहीं पहचान सकता है। दुर्योधन दैवप्रेरणा ही से दाशार्ह श्रीकृष्ण और पाण्डवश्रेष्ठ अर्जुन को नहीं जान पाया। ये दोनों ही प्राचीन कालीन नर और नारायण हैं। यद्यपि इन दोनों का आत्मा एक है, तथापि मर्त्यलोकवासी मनुष्यों को वे दो रूप में दिखलायी पड़ते हैं। ये दोनों महापराक्रमी एवं यशस्वी पुरुष चाहें तो सारी सेना का नाश कर सकते हैं। किन्तु शरीरधारी होने के कारण ही वे ऐसी चाहना नहीं करते। महात्मा भीष्म और द्रोणाचार्य का मारा जाना युगान्तर की तरह सब को आश्चर्य में डाल रहा है। इससे कोई भी पुरुष ब्रह्मचर्य, वेदाध्ययन, नित्यक्रिया, अथवा अस्त्रविद्या द्वारा निस्तार नहीं पा सकता। हे सञ्जय! लोकपूजित, वीर, सब शस्त्रों की शिक्षा में शिक्षित, युद्ध में महापराक्रमी, महावीर भीष्म, और द्रोणाचार्य का मारा जाना सुन कर भी मैं जीवित हूँ। पूर्वकाल में युधिष्ठिर की राज्यश्री देख कर हम लोगों ने उनकी निन्दा की थी और उनकी राज्यश्री हर ली थी, वही श्री अब भीष्म और द्रोणाचार्य का मारा जाना सुन, उनकी अनुगता हो रही है। हे सूत! काल के प्रभाव से पके हुए फल की तरह, जीवों के वध के लिये, तृण भी वज्र के समान हो जाता है। आज जिसके कोप से पद का, भीष्म और द्रोणाचार्य मारे गये, उस महाधनुर्धर राजा युधिष्ठिर ने अनन्त ऐश्वर्य

प्राप्त किया है। प्रकृति ही से धर्म युधिष्ठिर का पल्ला पकड़े हुए है। हमारे पक्ष में अधर्म की वृद्धि हो रही है इससे यह महाक्रूर समय मेरे सर्वनाश के लिये आया है। हे सूत ! मनस्वी बुद्धिमान् पुरुष किसी विषय पर भिन्न प्रकार से विचारते हैं; परन्तु दैवेच्छा से वह होता और तरह से है। इस लिये पुरुषार्थ से अनिवार्य, महाघोर विपद् का मूल स्वरूप यह सर्वनाशकारी युद्ध उपस्थित हुआ है। इस युद्ध में जो जो घटनाएँ घटी हों, उनको तुम मेरे समीप वर्णन करो।

बारहवाँ अध्याय

युधिष्ठिर को पकड़ने का द्रोण का बीड़ा उठाना

सञ्जय ने कहा—हे महाराज ! द्रोणाचार्य के, सृञ्जयों के बीच पराक्रम प्रदर्शित कर, मारे जाने की घटना मेरी आँखों देखी हुई है। अतः मैं उसे वर्णन करता हूँ। आप सुनिये।

महाराज ! भरद्वाजनन्दन आचार्य द्रोण ने सेनापति के पद को ग्रहण कर, आपके पुत्र दुर्योधन से कहा—हे कुलराज दुर्योधन ! भीष्म के मारे जाने पर तुमने मुझे सेनापति बना, मेरा जो सम्मान किया है, सो मैं भी अपने अधिकार के अनुसार कार्य कर तुम्हें सन्तुष्ट करूँगा। अब जो तेरी इच्छा हो—वही वर तू मुझसे माँग ले। इस पर कर्ण, दुःशासन आदि कौरव वीरों से घिरे हुए राजा दुर्योधन, विजयी वीरों में श्रेष्ठ एवं परम पराक्रमी द्रोणाचार्य से बोले—हे आचार्य ! यदि आपकी इच्छा मुझे वर देने की है। तो तुम रथियों में श्रेष्ठ महाबली युधिष्ठिर को जीवित पकड़ कर मेरे सामने उपस्थित करो।

इस पर कौरवगुरु द्रोणाचार्य ने आपके पुत्र दुर्योधन की बात सुन और समस्त सैनिकों को हर्षित कर, यह कहा—धन्य है कुन्तीनन्दन महाराज

युधिष्ठिर! क्योंकि तुम भी उनका वध करवाना नहीं चाहते और उन्हें जीवित ही पकड़वाना चाहते हो। हे पुरुषसिंह! क्या कारण है जो तुम युधिष्ठिर का वध करवाना नहीं चाहते? मेरे आगे तुमने उसके वध की कामना प्रकट नहीं की। इससे मुझे निश्चय ही जान पड़ता है कि, धर्मराज युधिष्ठिर का शत्रु कोई नहीं है। तुमने उनके जीवित रखने की जो इच्छा प्रकट की है, इससे मुझे जान पड़ता है कि, तुम अपने कुल की रक्षा करने के प्रेमी हो। अथवा तुम इस समय रण में पाण्डवों को जीत कर, युधिष्ठिर को उनका राज्य सौंप, उनके साथ सौभ्रातृभाव स्थापित करना चाहते हो। अतएव धन्य हैं राजा युधिष्ठिर! निश्चय ही उनका जन्म बड़े शुभ मुहूर्त में हुआ है क्योंकि जब तुम भी उनके ऊपर प्रीति रखते हो, तब वे यथार्थ में अजातशत्रु ही हैं।

हे महाराज! जब द्रोणाचार्य ने यह कहा; तब दुर्योधन के हृद्गत भाव अकस्मात् निकल पड़े। बृहस्पति के समान बुद्धिमान जन भी अपना अभिप्राय गुप्त नहीं रख सकते। इस पर दुर्योधन ने प्रसन्न हो कर कहा—हे आचार्य! युधिष्ठिर के मारे जाने पर मेरी जीत नहीं होगी। क्योंकि युधिष्ठिर मारे भी गये, तो अर्जुन निस्सन्देह हम सब को नष्ट कर डालेगा। युद्ध में तो देवता भी पाण्डवों को नहीं मार सकते। अतः उन लोगों में से जो कोई जीवित रहेगा वही हम लोगों को नष्ट कर डालेगा; किन्तु जब सत्यप्रतिज्ञ युधिष्ठिर को पकड़ कर आप मेरे निकट ले आवेंगे, तब मैं वनगमन का दाँव लगा, फिर जुए में उन्हें हरा दूँगा। तब अन्य पाण्डव उनके अनुगामी हो वन में चले जाँयगे। तब बहुत दिनों के लिये मेरा विजय हो जायगा। यही कारण है कि, मैं युधिष्ठिर की जान लेना नहीं चाहता। विषयों के मर्म को जानने वाले बुद्धिमान् द्रोणाचार्य ने, दुर्योधन की इस कुटिलनीति को जान लेने पर दुर्योधन को शिक्षायुक्त यह वर दिया।

द्रोणाचार्य बोले—यदि पराक्रमी अर्जुन युद्ध में पाण्डवश्रेष्ठ युधिष्ठिर

की रक्षा न करें, तो तुम युधिष्ठिर को अपने वश में आया हुआ ही समझो। इन्द्रादि देवता और असुर गण भी युद्धक्षेत्र में अर्जुन के सामने पड़ आगे नहीं बढ़ सकते। अतएव मैं अर्जुन को तो रणक्षेत्र में पराजित नहीं कर सकता। यद्यपि वह मेरा शिष्य है तथापि वह मेरी अपेक्षा तरुण है। वह सब प्रकार के युद्धों की विधि जानता है। वह अस्त्र शस्त्रों के प्रयोग में तो मुझसे भी बढ़ चढ़ कर है। उसने इन्द्र और रुद्र से भाँति भाँति के अस्त्र शस्त्र प्राप्त किये हैं। तिस पर वह तुम्हारे ऊपर कुपित है। अतः युद्ध में अर्जुन को परास्त करना मेरे मान की बात नहीं है। यदि तुम किसी तरह अर्जुन को रणक्षेत्र से दूर ले जा सको तो तुम धर्मराज पर विजय प्राप्त कर सकते हो। हे पुरुषर्षभ! धर्मराज को पकड़ लेने ही से तुम्हारी जीत होगी और उनको मार डालने से तुम किसी प्रकार नहीं जीत पाओगे। मेरे कथनानुसार कार्य करने ही से युधिष्ठिर जीवित पकड़े जा सकते हैं। युद्धक्षेत्र से अर्जुन के बाहिर रहने पर, यदि राजा युधिष्ठिर मेरे सामने एक मुहूर्त भर भी ठहरे रहे तो मैं सत्यप्रतिज्ञ युधिष्ठिर को जीवित पकड़ तुम्हारे हवाले कर दूँगा। इसमें कुछ भी सन्देह मत करना। किन्तु अर्जुन के रहते, मनुष्य की तो बिसात ही क्या है, इन्द्रादि देवता और बड़े बड़े असुर भी युधिष्ठिर का युद्ध में बाल बाँका नहीं कर सकते।

सञ्जय ने कहा—हे राजन्! जब द्रोणाचार्य ने इस प्रकार की शर्त लगा, युधिष्ठिर को जीवित पकड़ने की प्रतिज्ञा की तब आपके मूर्ख पुत्रों ने युधिष्ठिर को पकड़ा हुआ ही समझ लिया। आपका पुत्र दुर्योधन यह जानता था कि द्रोणाचार्य का पाण्डवों पर अनुराग है। अतः उसने द्रोण की इस प्रतिज्ञा की घोषणा अपनी सेना में इसलिये करवा दी कि जिससे द्रोणाचार्य अपनी प्रतिज्ञा पर अटल बने रहें।

तेरहवाँ अध्याय

युधिष्ठिर और अर्जुन की बातचीत

सञ्जय ने कहा—हे धृतराष्ट्र! द्रोणाचार्य ने युधिष्ठिर को पकड़ने की प्रतिज्ञा की है—यह समाचार प्रकाशित होते ही कौरवों की समस्त सेना शङ्ख बजा धनुषों को टंकारती हुई सिंहनाद करने लगी। हे भारत! तदनन्तर धर्मराज युधिष्ठिर को भी अपने विश्वस्त दूतों से द्रोण की इस प्रतिज्ञा का वृत्तान्त अवगत हो गया। इस पर युधिष्ठिर ने अपने भाइयों और अपने पक्ष के समस्त राजाओं को अपने पास बुला कर, उनके सामने अर्जुन से कहा—हे पुरुषसिंह! तुम द्रोणाचार्य की आज की प्रतिज्ञा का वृत्तान्त सुन ही चुके होगे। अतः तुम इसके लिये ऐसा प्रबन्ध करो कि, द्रोण की प्रतिज्ञा सत्य न होने पावे। हे शत्रुनाशन! द्रोणाचार्य की प्रतिज्ञा बहाने से भरी हुई है। वह बहाना द्रोण ने तुम्हारे ऊपर रख दिया है। अतः आज तुम मेरे रथ के आगे रह कर, शत्रुसैन्य से युद्ध करो; जिससे द्रोणाचार्य के द्वारा दुर्योधन का मनोरथ पूरा न होने पावे।

अर्जुन ने कहा—हे राजन्! जिस प्रकार आचार्यद्रोण का वध मैं नहीं कर सकता; उसी प्रकार मैं आपको नहीं छोड़ सकता। हे राजन्! ऐसा करने में मुझे भले ही प्राण ही क्यों न गँवाने पड़ें; मैं आचार्य के विरुद्ध कभी न होऊँगा। जो दुर्योधन आपको पकड़वाना चाहता है, उसकी यह कामना भी किसी प्रकार पूरी न होने पावेगी। भले ही नक्षत्रों सहित आकाश नीचे आ पड़े और भले ही पृथिवी के टुकड़े टुकड़े हो जाँय, मैं जब तक जीवित हूँ, तब तक द्रोणाचार्य आपको नहीं पकड़ सकते। भले ही इन्द्र भी उनको सहायता प्रदान करें अथवा देवताओं सहित विष्णु ही क्यों न द्रोणाचार्य को सहायता दें; किन्तु द्रोण आपको नहीं पकड़ सकते। हे राजेन्द्र! मेरे जीवित रहते ही समस्त शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ द्रोणाचार्य से भयभीत होना, तुम्हें उचित नहीं। हे राजन्! मैं एक बात

और भी आपसे कहता हूँ। तुम उसे सुनो। मैं जो प्रतिज्ञा करता हूँ वह कभी अन्यथा नहीं होती। मुझे स्मरण नहीं कि, आज तक मैं कभी मिथ्या बोला होऊँ, अपने कथन का पालन मैंने न किया हो और मैं युद्ध में कभी पराजित हुआ होऊँ।

सञ्जय बोले—हे महाराज! अनन्तर महात्मा पाण्डवों के शिविरों में शङ्ख, भेरी, मृदङ्ग, नगाड़े आदि बाजों के साथ, वीरों के धनुषों का टंकार और सिंहनाद सुनायी पड़ने लगा। महातेजस्वी पाण्डवों के शङ्ख आदि बाजों के शब्द सुन कर, आपकी सेना में भी युद्ध के बाजे बजने लगे। हे भारत! अनन्तर दोनों ओर की सेनाओं के पुरुष युद्ध करने की इच्छा से रणक्षेत्र में जा खड़े हुए, तब पाण्डव कौरव और द्रोणाचार्य तथा पाञ्चाल योद्धाओं का रोमाञ्चकारी महाभयानक युद्ध होने लगा। सृञ्जय गण अनेक प्रयत्न कर के भी द्रोणाचार्य से रक्षित कुरुसेना को पराजित न कर सके और तुम्हारे पुत्र लोग तथा समस्त पराक्रमी योद्धा भी अर्जुन से रक्षित पाण्डवों की सेना को युद्ध से विचलित न कर सके। इसी प्रकार द्रोणाचार्य और अर्जुन से रक्षित दोनों ओर की सेनाएँ मानों रात के समय फूले हुए वन के वृक्षों के समान क्षण भर निश्चल भाव से खड़ी रहीं। हे राजन्! तदनन्तर स्वर्णरथ पर सूर्य के समान विराजमान द्रोणाचार्य, पाण्डवों की सेना को अपने अस्त्र शस्त्रों से पीड़ित करते हुए, रणभूमि में भ्रमण करने लगे। अकेले ही द्रोणाचार्य युद्धभूमि में अपने रथ पर चढ़े हुए, हस्तलाघव से बाणों को चलाते हुए, इस प्रकार से चारों ओर दिखायी देने लगे कि, पाण्डव और सृञ्जय लोग उनको अनेक रूपधारी समझ कर, भयग्रस्त हो गये।

हे राजन्! द्रोणाचार्य के धनुष से छूटे हुए बाण, पाण्डवों की सेना में चलते हुए से जान पड़ने लगे। मध्याह्नकालीन महाप्रचण्ड सहस्र-किरणधारी सूर्य का रूप जिस तरह सब को विकल करता है, वैसे ही द्रोणाचार्य शत्रुसैन्य के बीच दिखलायी पड़ते थे। हे भारत! जैसे दानव

लोग, युद्ध में क्रुद्ध इन्द्र की ओर नहीं देख सकते, वैसे ही पाण्डवों की सेना का कोई भी पुरुष युद्ध में प्रवृत्त द्रोण की ओर नहीं देख सका। महाप्रतापी द्रोणाचार्य बड़ी फुरती से पाण्डवों की समस्त सेना को मोहित कर, धृष्टद्युम्न की सेना के वीरों को कँपाने लगे। अपने दिव्य बाणों से समस्त दिशाओं को रुद्ध और आकाश को पूरित कर, आचार्य द्रोण धृष्टद्युम्न के सामने पहुँच कर, पाण्डवों की सेना को नष्ट करने लगे।

चौदहवाँ अध्याय

भयङ्कर युद्ध

सञ्जय ने कहा—हे राजन्! जैसे अग्नि तृणों को भस्म कर डालता है, वैसे ही द्रोणाचार्य पाण्डवों की सेना से महाविकट संग्राम कर, समस्त शूर वीरों को अपने अस्त्रों शस्त्रों से भस्म करते हुए रणक्षेत्र में विचरने लगे। समस्त सृञ्जय वीर गण, इस प्रकार पाण्डवों की सेना का संहार करते हुए और सुवर्ण के रथ पर सवार द्रोणाचार्य को देख, थरथर काँपने लगे। द्रोणाचार्य अपने विशाल धनुष के रोदे को ऐसे ज़ोर से खींच कर छोड़ते थे कि, धनुष के टंकार का शब्द वज्र के शब्द की तरह सुन पड़ता था। उनके हस्तलाघव से छूटे हुए बाण अनेक रथियों, हाथियों, घुड़सवारों और पैदल सिपाहियों का संहार करने लगे। वे वर्षाकालीन बारम्बार गर्जने वाले मेघों की तरह सिंहनाद कर और पत्थर की वृष्टि के समान शत्रु सैन्य पर बाण वृष्टि कर, वीरों को त्रस्त करने लगे। जैसे बिजली बादलों के भीतर रहती है, वैसे ही उनका सुवर्ण-भूषित धनुष, चारों ओर घूमने वाले रथ रूपी बादल के बीच बार बार दिखलायी पड़ता था। सत्यवादी, बुद्धिमान् एवं धर्मात्मा द्रोणाचार्य ने प्रलयकालीन रुद्र की तरह रणभूमि में भयङ्कर रुधिर की नदी प्रवाहित की। हे राजन्! क्रोधरूपी वेग से वह नदी युक्त थी। उसके चारों

और माँसभक्षी पक्षी घूमने लगे। वह नदी सेनारूपी वृक्षों को अपने प्रवाह के वेग से बहाने लगी। उस नदी में रुधिररूपी जल था, रथ भँवर थे, हाथी घोड़े उसके तट थे, जाकड़ी आदि पत्थर थे, माँस की उसमें कीचड़ थी और मेद, मज्जा और हड्डी उसके बालू के कण थे। उस नदी में वीरों के वस्त्र फेन जैसे दिखलायी पड़ते थे। संग्राम रूपी बादलों से युक्त, परशु प्रास आदि अस्त्र शस्त्र उस नदी में मत्स्य रूपी देख पड़ते थे। हाथी, घोड़े और मनुष्य इस नदी में जलजन्तु रूप से दिखलायी देने लगे। रथादिक जो उसमें बहे जाते थे, वे नौका जैसे जान पड़ते थे। वीरों के कटे हुए सिरों के ढेर इस नदी के तट रूप थे। तलवार आदि हथियार मीन, मकर रथ तथा हाथियों का यूथ हद रूप देख पड़ता था। बड़े बड़े रथ अनेक प्रकार के वस्त्र और रत्नों से प्रकाशित हो कर, बड़ी बड़ी नौकाओं की तरह बहे जाते थे और पृथिवी से जो दोनों सेनाओं के चलने पर धूल उड़ती थी; वह तरङ्गों की तरह जान पड़ती थी। इस रुधिर की नदी को पराक्रमी महाबली वीर लोग, अपने पराक्रम तथा रथादि वाहनों द्वारा पार करते थे। जो कायर थे, वे भयग्रस्त हो इसके पार नहीं जा सकते थे। उस नदी के रुधिर रूपी जल में सैकड़ों सहस्रों पुरुष मर मर कर गिरने लगे। काक, बगुले और गिद्ध आदि माँसभक्षी पक्षी उसके चारों ओर घूमने लगे। इस नदी के महाभयङ्कर वेग में पड़, सैकड़ों सहस्रों वीर योद्धा यमलोक को जाने लगे। भालेरूपी सर्पों से आच्छादित, प्राणि रूपी पक्षियों से सेवित, टूटे छत्रों रूपी बड़े बड़े हंसों वाली, पहिये रूपी कच्छपों वाली और बाजूबन्द रूपी नक्रों वाली, बाण रूपी बहुत सी मछलियों से युक्त, बगले, गिद्ध, गीदड़ आदि माँसभक्षी पशुपक्षियों से सेवित; हे राजन्! बलवान द्रोण के हाथ से रण में मारे गये असंख्य प्राणियों को पितृलोक पहुँचाने वाली और असंख्य शवों से व्याप्त वह नदी थी। हे राजन्! भीरुओं के भय को बढ़ाने वाली उस रुधिर की नदी को द्रोणाचार्य ने रणभूमि में बहाया। शत्रुसैन्य का तिरस्कार करने वाले महारथी द्रोणाचार्य के ऊपर युधिष्ठिरादि ने चारों ओर से

आक्रमण किया। किन्तु दृढ़ पराक्रमी आपके योद्धाओं ने उन आक्रमणकारी वीरों को चारों ओर से घेर लिया। तब तो दोनों ओर में रोमाञ्चकारी युद्ध होने लगा। महाकपटी शकुनी ने सहदेव पर आक्रमण कर, उसको, उसके सारथी, उसकी ध्वजा और उसके रथ को बाणों से वेध डाला। माद्रीसुत सहदेव ने विशेष रोष प्रदर्शित न कर, उसके धनुष, सारथि, ध्वजा को खण्ड खण्ड कर, साठ बाण शकुनि के शरीर में मारे। तब शकुनि हाथ में गदा ले, रथ से कूद पड़ा। हे राजन्! शकुनि ने गदा के प्रहार से सहदेव के सारथी को रथ से नीचे गिरा दिया। तब तो वे रथहीन दोनों महारथी गदाओं से युद्ध करने लगे। उस समय जान पड़ता था कि, दो शिखरधारी भूधर खड़े हैं। द्रोण ने द्रुपद के दस बाण मारे। फिर द्रुपद ने द्रोण के अनेक बाण मारे। तब द्रोण ने द्रुपद के उससे भी अधिक बाण मारे। भीमसेन ने विविंशति के बीस बड़े पैने बाण मारे। किन्तु बड़ा आश्चर्य तो यह देख पड़ा कि, उन बाणों की चोट से विविंशति काँपा तक नहीं। हे राजन्! विविंशति ने एकाएकी बाणों से भीमसेन को घोड़े, रथ और धनुष से हीन कर दिया। यह देख कर सैन्यकों ने विविंशति की सराहना की। भीम अपने शत्रु की इस सराहना को न सह सके और उन्होंने विविंशति के समस्त शिक्षित घोड़ों को अपनी गदा के प्रहार से मार डाला।

हे राजन्! तब महाबली विविंशति ढाल तलवार ले रथ से कूदा और जैसे एक मतवाला हाथी दूसरे मतवाले हाथी को मार डालने के लिये लपके, वैसे ही वह भीमसेन की ओर झपटा। वीर शल्य ने भी अपने प्यारे भाँजे नकुल को हँसते हँसते, मानों प्रीति और क्रोध से युक्त हो बाणों से वेध डाला। तब प्रतापी नकुल ने शल्य के छत्र, धनुष, रथ के घोड़े, ध्वजा और धनुष को काट सारथी को मार डाला और फिर अपना शङ्ख बजाया। धृष्टकेतु ने कृपाचार्य के छोड़े हुए अनेक प्रकार के बाणों को काट कर, सत्तर बाणों से कृपाचार्य को वेधा और तीन बाणों से उनके ध्वजा

चिह्न को काट गिराया। विप्रवर कृपाचार्य ने भी क्रोध में भरे धृष्टकेतु को बाणवृष्टि कर निवारण किया और बाणों की मार से उसे घायल किया। सात्यकि ने कृतवर्मा की छाती में बाण मारे। फिर देखते हुए अन्य सत्तर बाणों से उन्हें घायल किया। भोजराज ने बड़ी फुर्ती से सत्तर बाण मार सात्यकि को घायल किया। किन्तु उन बाणों का प्रहार होने पर भी सात्यकि वैसे ही अटल अचल भाव से खड़ा रहा; जैसे वेगवान् वायु के झोंके लगने पर भी पर्वत अचल रहता है। द्रोणाचार्य ने सुशर्मा के मर्मस्थानों में बड़ी पीड़ा पहुँचायी। तब सुशर्मा ने भी सेनापति की हँसली में तोमर मारा। महाबली मत्स्यदेशवासियों को साथ ले द्रुपदराज ने कर्ण के ऊपर आक्रमण किया। उस समय विस्मयोत्पादक युद्ध हुआ। कर्ण ने नयी हुई गाँठों वाले बाण मार बड़े पुरुषार्थ के साथ विराट्राज की सेना को रोक, दारुण कर्म किया। राजा द्रुपद भगदत्त से भिड़ गये। इन दोनों का युद्ध भी विस्मय-कारी हुआ। पुरुषश्रेष्ठ भगदत्त ने नतपर्वों वाले बाणों से सारथि, ध्वजा और रथ सहित राजा द्रुपद को वेधा। तब द्रुपद ने क्रोध में भर, शीघ्रता से महारथी भगदत्त की छाती में नतपर्व बाण मारा। उधर अस्त्रविद्या में चतुर एवं संसार के समस्त योद्धाओं में प्रसिद्ध सोमदत्त का पुत्र शिखण्डी समस्त प्राणियों को त्रस्त करने वाला युद्ध करने लगा।

हे राजन्! बलवान् भूरिश्रवा ने युद्ध में महारथी धृष्टद्युम्न को बाणजाल से ढक दिया। तब क्रोध में भर द्रुपदपुत्र शिखण्डी ने नब्बे बाणों से सोमदत्त के पुत्र को कँपा दिया। आपस में एक दूसरे को जीतना चाहने वाले भयङ्कर पराक्रमी दोनों राक्षस घटोत्कच और अलम्बुष अद्भुत युद्ध करने लगे। वे दोनों योद्धा अनेक प्रकार की मायाएँ रच युद्ध करने वाले और बड़े अहङ्कारी थे। वे दोनों अतीव आश्चर्य उपजाते हुए अन्तर्धान हो कर, युद्ध करने लगे। जैसे देवासुर संग्राम में बल और महाबली इन्द्र लड़े थे, वैसे ही चेकितान ने अनुविन्द के साथ भयङ्कर युद्ध किया। जैसे पहले हिरण्याक्ष और विष्णु का युद्ध हुआ था, वैसे ही लक्ष्मण और क्षत्र-

देव का भारी युद्ध होने लगा। पौरवराज, विधिपूर्वक सज्जित रथ पर सवार हो और गर्जते हुए अभिमन्यु की ओर दौड़ा। युद्धाभिलाषी एवं महाबली पौरव को बड़ी फुर्ती से अपनी ओर आते देख, शत्रुतापन अभिमन्यु ने उसके साथ बड़ा विकट युद्ध किया। तदनन्तर पौरव ने अभिमन्यु को शर-वृष्टि कर ढक दिया। तब सुभद्रानन्दन अभिमन्यु ने उसकी ध्वजा, उसका धनुष और उसका छत्र काट कर भूमि पर गिरा दिया। अभिमन्यु ने सात पैने बाण मार कर, पौरव को विद्ध कर के पाँच बाण मार पौरव के सारथि और रथ के घोड़ों को वेध डाला। तदनन्तर अपने सैनिकों को हर्षित करने के लिये अभिमन्यु ने सिंहनाद कर पौरव का वध करने के लिये एक भयङ्कर बाण हाथ में लिया। हृदिकनन्दन कृतवर्मा ने उस भयानक बाण को देख, दो बाण चला अभिमन्यु के उस बाण को तथा उनके धनुष को काट डाला। तब शत्रुनाशन अभिमन्यु ने धनुष बाण के कट जाने पर ढाल तलवार उठा ली। अनेक फुल्लियों वाली ढाल और तलवार हाथ में ले, तलवार को घुमाते हुए अभिमन्यु ने अपना हस्तलाघव और पराक्रम प्रदर्शित किया।

हे राजन्! उस समय अभिमन्यु की झनझनाती, घूमती और लपलपाती तलवार और ढाल दोनों एकाकार सी दिखलायी देती थीं। अभिमन्यु गरजा और उछल कर अचानक पौरव के रथ के जुए पर जा पहुँचा। फिर झट लपक कर अभिमन्यु ने पौरव के सिर के बाल पकड़ लिये और लात मार उसके सारथी को नीचे गिरा दिया। फिर तलवार के एक ही हाथ से रथ की ध्वजा काट डाली। जैसे गरुड़ जी समुद्र को खलभला देते हैं, वैसे ही समस्त सैन्य दल को खलभला अभिमन्यु ने सर्प की तरह पौरव को घसीटा। जिस प्रकार मूर्छित बैल को सिंह पटक देता है, उसी प्रकार अभिमन्यु ने समस्त राजाओं के सामने पौरव की चोटी पकड़ उसे पटक दिया। अनाथ की तरह पौरव का अभिमन्यु द्वारा घसीटना जयद्रथ से न सहा गया। वह मयूरपङ्खों से आच्छादित और सैकड़ों घुँघरू लगी हुई ढाल और तलवार ले,

गर्जना करता हुआ रथ के नीचे कूद पड़ा। अपनी ओर जयद्रथ को आते देख, अभिमन्यु ने पौरव को तो छोड़ दिया और रथ से वह वैसे ही झपटा जैसे बाज झपटता है। इतने में शत्रुओं ने उसके ऊपर चारों ओर से प्रास पट्टिश और तलवार आदि की वर्षा की। अभिमन्यु ढाल से उन सब को रोक, तलवार से उनको काट काट कर भूमि पर फेंकने लगा। महाबली अभिमन्यु ने इस प्रकार सैन्य दल को निज भुजबल का परिचय दे, ढाल तलवार का कौशल दिखलाया; जैसे हाथी पर सिंह लपके वैसे ही अभिमन्यु अपने पिता के महाशत्रु जयद्रथ पर लपका। दन्त-नख-रूपी आयुधों वाले बाघ और केसरी जिस प्रकार परस्पर युद्ध करते हैं; वैसे ही वे दोनों योद्धा हर्षित हो एक दूसरे पर तलवार के प्रहार करने लगे। तलवार ढाल के चलाने और रोकने और प्रहार करने में दोनों में से एक भी कम न था। उन लोगों का तलवार चलाना, रोकना—बाहर भीतर एक सा दिखलायी पड़ता था। वे दोनों महात्मा वीर, पक्षधारी पर्वत की तरह रणभूमि में गति विशेष से बाहर और भीतर के मार्गों में युद्ध करते हुए दिखलायी देते लगे। यशस्वी अभिमन्यु जब तलवार चला रहे थे; तब जयद्रथ ने अपनी तलवार से अभिमन्यु की ढाल पर प्रहार किया। किन्तु जयद्रथ के खड्ग के दो टुकड़े हो गये। तलवार टूटी देख जयद्रथ दौड़ कर छः पग पर खड़े रथ पर जा चढ़ा। यह देख अभिमन्यु भी अपने रथ पर सवार हो गये। तब रथ पर सवार अभिमन्यु ने क्षत्रियों को चारों ओर से घेर लिया। यह देख महाबली अर्जुनपुत्र अभिमन्यु, जयद्रथ की ओर देख और उसकी ढाल तथा तलवार को काट सिंहनाद करने लगे। जैसे प्रचण्ड सूर्य समस्त प्राणियों को उत्तप्त कर, भस्म करता है, वैसे शत्रुनाशन वीर अभिमन्यु, जयद्रथ को परास्त कर, उनकी सेना को अपने बाणों से दग्ध करने लगे। तब शल्य ने अभिमन्यु की ओर जलती हुई अग्निशिखा की तरह चमचमाती लोहे की एक शक्ति चलायी। जैसे गरुड़ जी उड़ते हुए सर्प को झपट कर पकड़ लेते हैं; वैसे ही अर्जुनपुत्र अभिमन्यु ने कूद कर, उस भयङ्कर

शक्ति को हाथ से पकड़ लिया और म्यान से तलवार खींच ली। अभिमन्यु की फुर्ती और बल को देख, समस्त राजाओं ने सिंहनाद किया। शत्रुनाशी अभिमन्यु ने वैडूर्यभूषित उसी शक्ति को पूरा बल लगा शल्य पर फेंका। बिना केंचली के सर्प की तरह उस शक्ति ने रथ में पहुँच, शल्य के सारथी को मार, उसको रथ पर से नीचे फेंक दिया। यह देख राजा विराट, द्रुपद, धृष्टकेतु, युधिष्ठिर, सात्यकि, पाँच कैकय भाई, धृष्टद्युम्न, भीमसेन, शिखण्डी, नकुल, सहदेव और द्रौपदी के पाँचों पुत्रों ने साधु साधु के चीत्कार से आकाश को व्याप्त कर दिया। फिर युद्ध में कभी पीठ न दिखाने वाले अभिमन्यु को हर्षित और उत्साहित करते हुए उन्होंने सिंहनाद किया और धनुष के टंकार शब्द किये। इस पर आपके पुत्र शत्रु की उन गर्जनाओं को शत्रु के विजय रूप मान कर सह न सके। परन्तु हे महाराज! जैसे पर्वत पर मेघ, जल की वर्षा करते हैं; वैसे ही समस्त कौरवों ने एकत्र हो, उसके ऊपर चारों ओर से बाण बरसाने आरम्भ किये। शत्रुहन्ता शल्य कौरवों का प्रिय करने के लिये, तथा अपने सारथि का बदला चुकाने के लिये, क्रोध में भर अभिमन्यु से लड़ने को उनके सामने गया।

पन्द्रहवाँ अध्याय

शल्य और भीम की मुठभेड़

राजा धृतराष्ट्र ने कहा—हे सञ्जय! तुम्हारे मुख से विचित्र युद्धों का वृत्तान्त सुन, मुझे नेत्रवान होने की इच्छा हो रही है। देवासुर संग्राम की तरह, लोग कुरु-पाण्डवों के इस युद्ध का गान भी सदा किया करेंगे। इस तुमुल समर का हाल सुनते सुनते मेरा मन नहीं अघाता। अतः तुम मुझे शल्य और अभिमन्यु के युद्ध का वृत्तान्त फिर सुनाओ।

सञ्जय ने कहा—हे राजन्! अपने सारथी को मरा हुआ देख, शल्य बड़ा क्रुद्ध हुआ। उसने एक बड़ी भयङ्कर लोहे की गदा उठा ली और वह

रथ से कूद, अभिमन्यु की ओर दौड़ा। शल्य को प्रज्वलित कालाग्नि अथवा दण्डधारी यमराज के समान अभिमन्यु की ओर आते देख, भीमसेन ने अपनी गदा उठा ली और वे शल्य की ओर लपके। अभिमन्यु ने भी वज्र के समान दृढ़ गदा ले ली। यद्यपि भीमसेन ने अभिमन्यु को निवारण किया, तो भी अभिमन्यु ने क्रोध में भर शल्य को ललकारा। प्रतापी भीमसेन ने अभिमन्यु को युद्ध में रोका और स्वयं अचल भाव से वे शल्य के सामने खड़े हो गये। जैसे शार्दूल गज के सम्मुख होता है, वैसे ही पराक्रमी शल्य भीमसेन के सामने उपस्थित हुए। इतने में सहस्रों भेरियों, शंखों के साथ वीरों के सिंहनाद का शब्द सुन पड़ा। तब उभय सेनाओं के सैकड़ों वीर उन दोनों को युद्ध के लिये उपस्थित देख, धन्य धन्य कह उन दोनों की प्रशंसा करने लगे। मद्रराज्य शल्य को छोड़ अन्य कोई पुरुष युद्धक्षेत्र में भीमसेन के वेग को नहीं सम्हार सकता और भीमसेन को छोड़ अन्य कोई भी पुरुष इस जगत में शल्य के साथ गदायुद्ध करने का साहस नहीं कर सकता।

भीमसेन ने जब सुवर्णभूषित महाभयङ्कर गदा घुमायी; तब वह प्रज्वलित हो, उपस्थित जनों को हर्षित करने लगी। उधर महात्मा शल्य भी बिजली की तरह अपनी महाघोर गदा ले कर, जब चारों ओर घुमाता हुआ, चक्कर काटने लगा, तब उसकी वह गदा अत्यन्त शोभित होने लगी। शल्य और भीमसेन दोनों वीरपुरुष गदा रूपी शृङ्गों को खड़े कर गर्जना करने वाले साँड़ों की तरह मण्डलाकार गति से चारों ओर घूमने लगे। मण्डलाकार गति में और गदा घुमाने में उन दोनों महाबलियों में कोई भी किसी से कम न था। शल्य की महाभयङ्कर गदा की चोट से भीमसेन की प्रचण्ड गदा वैसे ही काँपने लगी, जैसे वायु के झोंके से दीपक-शिखा। किन्तु भीमसेन की गदा के प्रहार से शल्य की गदा टूट गयी और वह ऐसी जान पड़ी जैसे वर्षाकालीन सन्ध्या काल को पटबीजनों से युक्त वृक्ष सुशोभित जान पड़ता है।

हे राजन्! मद्रराज शल्य की चलायी हुई गदा मानों रणभूमि में अग्नि की वर्षा करती हुई आकाश में चमकने लगती थी। किन्तु भीमसेन के हाथ से छूटी हुई महाभयङ्कर गदा शल्य के सामने गिर कर, उनकी सेना के सम्पूर्ण योद्धाओं को भयभीत करने लगी। गदा युद्ध करने वाले योद्धाओं में श्रेष्ठ, उन दोनों पुरुषसिंहों की भयङ्कर गदा आपस में मिल कर, मानों लंबी साँस छोड़ने वाली दो नागिनियों की भाँति रगड़ खा कर, आग पैदा करने लगी। जिस प्रकार दो बलशाद व्याघ्र नख से और दो मतवाले हाथी अपने दाँतों से आपस में युद्ध करते हैं; वैसे ही वे दोनों महाबलवान गदाधारी योद्धा युद्ध करते हुए समरक्षेत्र में भ्रमण करने लगे। थोड़ी ही देर बाद गदा के प्रहार से लोहूलुहान हुए वे दोनों महाबली पुष्पित टेसू के पेड़ों की तरह दिखलायी पड़ने लगे। उन दोनों पुरुषसिंहों की गदाओं के टकराने का शब्द इन्द्र के वज्र की तरह समस्त दिशाओं में सुन पड़ता था। शल्य ने भीम के दहिने बाएं हो कई एक गदा प्रहार किये; किन्तु भीम घायल होने पर भी पहाड़ की तरह अटल भाव से खड़े रहे। शल्य भी भीम के गदाप्रहार से घायल तो हुआ, किन्तु वज्राहत पहाड़ की तरह अचल भाव से स्थिर रहा। गदा ऊपर की ओर घुमाते हुए वे कावा काट कर, एक दूसरे से जा भिड़े। अन्त में दोनों वीर घायल हो और वेग में भरे हुए, दो इन्द्रध्वजाओं की तरह एक साथ भूमि पर गिर पड़े।

हे महाराज! उस समय शल्य, गदा की चोट से अचेत हो, ऊर्ध्व श्वास लेने लगा। वह विह्वल हो सर्प की तरह तड़फने लगा। यह देख महारथी कृतवर्मा उसके पास गया और उसे अपने रथ में डाल, तुरन्त ही रणभूमि से बाहर चला गया। महाबाहु भीमसेन भी मदमत्त की तरह थोड़ी देर के लिये विह्वल हो गया; परन्तु क्षण भर ही में फिर उठ खड़ा हुआ। खड़े होते ही भीम ने सब के सामने गदा उठा ली। मद्रराज को रणक्षेत्र से भागा हुआ देख, आपके हाथी, घोड़े, सवार तथा पैदल थरथराने लगे। आपके सैनिक विजयी पाण्डवों की मार से पीड़ित और भयभीत हो पवन

द्वारा छिन्न भिन्न किये हुए बादलों की तरह चारों दिशाओं को भागने लगे। हे राजन्! रण में तुम्हारे पुत्रों को जीत कर, पाण्डवों के महारथी प्रदीप्त अग्नि की तरह दिखलाई पड़ने लगे। हर्षित हो उन्होंने उच्च स्वर से सिंह-नाद किया और शङ्ख, नरसिंहे, मृदङ्ग तथा नगाड़े बजाये।

सोलहवाँ अध्याय

कौरव-सेना में घबड़ाहट

सञ्जय ने कहा—आपकी बड़ी भारी सेना को इस प्रकार पलायमान होते देख, अकेले वृषसेन ने उसे अस्त्रबल से रोका। युद्ध में वृषसेन के छोड़े हुए बाण, मनुष्यों, हाथियों, रथों और घोड़ों को छिन्न भिन्न करते हुए दसों दिशाओं में घूमने लगे। हे महाराज! जैसे ग्रीष्म ऋतु में सूर्य की किरणें निकलें, वैसे ही उसके धनुष से बाण निकल रहे थे। उसकी बाण-वृष्टि से पीड़ित हो, पवन से उखाड़े हुए पेड़ों की तरह बहुत से आदमी गिरने लगे। हे राजन्! वृषसेन ने समरक्षेत्र में सैकड़ों हज़ारों घुड़सवारों रथियों और हाथियों का चूरा कर डाला। इस प्रकार वृषसेन को निर्भीक हो अकेले विचरते देख, उसे पाण्डव पक्षीय राजाओं ने चारों ओर से घेरा। नकुलपुत्र शतानीक ने वृषसेन के सामने आ और मर्मभेदी दस बाण मार उसे घायल कर डाला। परन्तु कर्णपुत्र वृषसेन ने उसके धनुष को काट कर ध्वजा को भी काट डाला। उसकी रक्षा करने की इच्छा से द्रौपदी के पाँचों पुत्र झपट आये और उन्होंने शीघ्रता के साथ कर्णपुत्र को बाणों के जाल से ढक दिया। यह देख द्रोण आदि रथी गरजते हुए उनकी ओर दौड़े और द्रौपदी के पाँचों पुत्रों को बाणों से वैसे ही ढक दिया, जैसे मेघ वर्षा से पर्वत को ढक देता है। तब पुत्रों की रक्षा करने के लिये, पाण्डवों, कैकयों, मत्स्यों तथा सृञ्जयों ने उनको घेर लिया। इस समय आपके योद्धाओं में और

पाण्डवों में देवासुर युद्ध की तरह रोमाञ्चकारी युद्ध होने लगा। इस प्रकार एक दूसरे का अनिष्ट करने वाले, क्रुद्ध कौरव और पाण्डव आपस में एक दूसरे को घूरते हुए लड़ने लगे। अमिततेजस्वी और क्रुद्ध उन योद्धाओं के शरीर आकाश में युद्ध करते हुए उड़ने वाले सर्पों और गरुड़ की तरह देख पड़ते थे। उस समय रणभूमि भी—भीष्म, कर्ण, कृपाचार्य, द्रोणाचार्य, अश्वत्थामा धृष्टद्युम्न और सात्यकि के कारण वैसी ही जान पड़ती थी, जैसे उदय होते हुए सूर्य जान पड़ते हैं। महाबली कौरवों और पाण्डवों का, महाबली देव-असुर-युद्ध की तरह तुमुल संग्राम होने लगा। तदनन्तर ज्वार भाटे से युक्त समुद्र की तरह शब्दायमान पाण्डवों की सेना आपकी सेना के योद्धाओं को मारने लगी। तब आपके महारथी इधर उधर भागने लगे। शत्रुओं द्वारा अत्यन्त पीड़ित हो, पलायमान सेना को देख, द्रोणाचार्य ने कहा—अरे शूरों! अब समर छोड़ मत भागो, मत भागो। तदनन्तर लाल घोड़ों वाले रथ में बैठे हुए द्रोणाचार्य क्रोध में भर, चार दाँतों वाले हाथी की तरह पाण्डवों की सेना में घुस कर, युधिष्ठिर के ऊपर दौड़े। युधिष्ठिर ने गिद्ध के परों से युक्त बाणों से आचार्य द्रोण को घायल किया। तब आचार्य द्रोण ने युधिष्ठिर का धनुष काट डाला और फिर बड़ी फुर्ती से युधिष्ठिर पर वे लपके। उस समय युधिष्ठिर के रथ के पहियों की रक्षा करने को नियुक्त और पाञ्चालों के यश की वृद्धि करने वाले राजकुमार ने द्रोण को आगे बढ़ने से वैसे ही रोका जैसे तट आगे बढ़ते हुए समुद्र को रोक देता है। कुमार द्वारा द्रोणाचार्य की गति को रुद्ध देख, पाण्डव-सेना के समस्त योद्धा धन्य है! धन्य है! कहते हुए, सिंहनाद करने लगे। फिर कुमार ने रोष में भर, बाण मार द्रोण की छाती घायल की और सिंहनाद किया। द्रोणाचार्य ने भी श्रेष्ठव्रतधारी, वेदविद्या तथा अस्त्रविद्या विशारद युधिष्ठिर के रथ के पहियों के रक्षक कुमार को बाणों से पीड़ित करना आरम्भ कर दिया। द्विज-श्रेष्ठ द्रोण सेना के बीच में आ कर, समस्त दिशाओं में घूम फिर कर आपकी सेना की रक्षा करने लगे। वे युधिष्ठिर को पकड़ने के लिये मुख्य मुख्य योद्धाओं

की ओर लपकते थे। उन्होंने शिखण्डी के बारह, उत्तमौजा के बीस, नकुल के पाँच, सहदेव के सात, युधिष्ठिर के बारह, द्रौपदी के पुत्रों के तीन तीन, सात्यकि के पाँच और मत्स्यराज के दस बाण मार कर उन्हें घायल किया।

हे राजन्! युगन्धर ने पवन-विलोड़ित-महासागर की तरह क्षुब्ध हो, महारथी द्रोणाचार्य का आगे बढ़ना रोक दिया। तब द्रोणाचार्य ने नतपर्व बाणों से युधिष्ठिर को घायल कर, युगन्धर के भाला मारा, जिसकी चोट से वह रथ के नीचे गिर पड़ा। तदनन्तर युधिष्ठिर को चाहने वाले विराट, द्रुपद, कैकय, सात्यकि, शिवि, पाञ्चाल, व्याघ्रदत्त और बलवान सिंहसेन ने तथा अन्य बहुत वीरों ने मारे बाणों के द्रोणाचार्य का मार्ग अविरुद्ध कर दिया। पाञ्चाल देश वासी व्याघ्रदत्त ने पचास पैने बाण मार कर, द्रोणाचार्य को घायल किया, यह देख लोग चिल्लाने लगे। सिंहसेन भी बाणों से आचार्य द्रोण को बेध कर, महारथियों को डराता हुआ, एक साथ हर्षित हो हँसने लगा। तब तो महाबलवान विस्फारित नेत्र द्रोणाचार्य तालियाँ बजा और धनुष की डोरी को तान, उसका पीछा करने लगे। बलवान् द्रोणाचार्य ने सिंहसेन और व्याघ्रदत्त के कुण्डल भूषित मस्तक काट कर भूमि पर गिरा दिये। फिर पाण्डवों के अन्य महारथियों को बाणजाल से रोक कर, द्रोणाचार्य युधिष्ठिर के रथ के सामने, सर्वनाशक काल की तरह आ खड़े हुए। हे राजन्! उस समय युधिष्ठिर की सेना में राजा मारे गये राजा मारे गये—कह कर, बड़ा भारी कोलाहल मचा। उस समय द्रोणाचार्य जी, युधिष्ठिर के रथ के सामने खड़े हुए थे। द्रोणाचार्य के ऐसे पराक्रम को देख, सब सैनिक कहने लगे कि, आज दुर्योधन निस्सन्देह कृतार्थ होगा। युद्ध में इसी क्षण द्रोण, युधिष्ठिर को पकड़ कर, दुर्योधन के निकट लिये आते हैं। जिस समय इस तरह आपकी सेना के लोग कह रहे थे, हे राजन्! उस समय कुन्तीनन्दन महारथी अर्जुन अपने रथघोष से समरभूमि को प्रतिध्वनित करते हुए बड़े वेग के साथ वहाँ आ पहुँचे। रुधिर रूपी जल, रथ

रूपी भँवर, शूरों की अस्थियों से भरी हुई, प्रेत रूपी किनारे को तोड़ने वाली, बाण समूह रूपी भागों से परिपूर्ण, सुन्दर रूपी नक्रों से भरी हुई रणनदी को पार कर, अर्जुन, कौरवों को खदेड़ने लगे। अर्जुन शत्रु सैन्य को अचेत कर और बाणजाल से द्रोण की अधीनस्थ सेना को ढक, द्रोण के सिर पर आ धमके। उस समय अर्जुन धनुष पर रख बाणों को सहसा ऐसी फुर्ती से चला रहे थे कि, देखने वाले दंग थे। हे राजन्! दिशाएँ, अन्तरिक्ष, आकाश, पृथिवी ये सब बाणों से छा जाने के कारण नहीं देख पड़ते थे। किन्तु वह स्थान उस समय बाणमय हो रहा था। जब अर्जुन के बाणों से घोर अन्धकार छा गया, तब वहाँ कुछ भी न सूझ पड़ता था। इतने में सूर्य अस्त हुए और आकाश में धूल छा गयी। उस अँधियारे में शत्रु मित्र की परख नहीं हो सकती थी। उस समय द्रोण और दुर्योधन ने अपनी सेना के योद्धाओं को युद्ध बंद कर देने की आज्ञा दी। शत्रु सैन्य को त्रस्त और युद्ध करने में अनिच्छुक देख, अर्जुन अपनी सेना को धीरे धीरे सैन्य शिविर की ओर ले गये। उस समय अत्यन्त हर्षित पाण्डव, सृञ्जय और पाञ्चाल वीर गण पार्थ की मनोहर वाणी से वैसे ही स्तुति करने लगे, जैसे ऋषि गण सूर्य की स्तुति करते हैं। शत्रुओं को हरा और हर्षित हो, अर्जुन, श्रीकृष्ण के साथ, अपनी समस्त सेना के पीछे पीछे अपने सैन्य शिविर में गये। उस समय इन्द्रनील, पद्मराग, सुवर्ण, हीरे, मूँगे तथा स्फटिकों से सुशोभित रथ में बैठे हुए अर्जुन, वैसे ही शोभायमान जान पड़ते थे, जैसे नक्षत्रों से युक्त आकाश में चन्द्रमा शोभायमान जान पड़ता है।

द्रोणाभिषेक पर्व समाप्त

अथ संशप्तकवध पर्व

[बारहवाँ दिन]

सत्रहवाँ अध्याय

त्रिगर्तों की प्रतिज्ञा

सञ्जय बोले—हे प्रजानाथ! युद्ध से निवृत्त होने पर दोनों सेनाएँ यथानियम अपने अपने शिविरों में जा पहुँचीं। तदनन्तर आचार्य द्रोण दुर्योधन के पास गये और उसे देख तथा अत्यन्त लज्जित हो, यह बोले—मैंने पहले ही कहा था कि, युद्धभूमि में अर्जुन के रहते देवता लोग भी युधिष्ठिर को नहीं पकड़ सकते। आप लोगों के अनेक यत्न करते रहने पर भी तथा आप सब लोगों के सामने ही अर्जुन ने जो कार्य किया, वह आप लोग अपनी आँखों से देख चुके हैं। इससे श्रीकृष्ण और पाण्डव समर में अजेय हैं—मेरे इस कथन में तिल भर भी सन्देह न करना चाहिये। हे राजन्! यदि किसी युक्ति से श्वेतवाहन अर्जुन को युधिष्ठिर के निकट से हटा सको, तो राजा युधिष्ठिर पकड़े जा सकते हैं। हे भारत! यदि कोई बलवान पुरुष युद्ध के लिये अर्जुन को ललकार कर स्थानान्तर में ले जाय, तो यह जानी हुई बात है कि, अर्जुन बिना उसे परास्त किये कभी हटेंगे नहीं। जब अर्जुन उधर युद्ध में फंसेंगे, तब इधर मैं पाण्डवों की समस्त सेना को भेद कर, धृष्टद्युम्न के सामने ही युधिष्ठिर को पकड़ कर ले आऊँगा। लड़ाई आरम्भ होने पर अपने निकट अर्जुन को न देख, यदि युधिष्ठिर समरभूमि से भाग न गया, तो तुम उसे पकड़ा हुआ ही समझो। मैं युधिष्ठिर को मय उसके अनुचरवर्ग के पकड़ कर तुम्हें सौंप दूँगा। युधिष्ठिर को जीवित पकड़ लेना विजय से भी बढ़ कर काम है।

सञ्जय बोले—हे राजन्! द्रोणाचार्य के इन वचनों को सुन कर, अपने भाइयों सहित त्रिगर्तराज ने कहा। हे राजन्! गाण्डीवधारी अर्जुन ने कितने ही बार हम लोगों के साथ शत्रुता का व्यवहार किया है। हम

निरपराधियों पर अर्जुन ने अत्याचार किये हैं। उसके उन सब अत्याचारों को स्मरण कर, हम लोग क्रोधाग्नि में भस्म हो रहे हैं। रात को हम लोगों को अच्छी तरह नींद भी नहीं पड़ती। यह हम लोगों का सौभाग्य है कि, हथियार बाँधे अर्जुन हमारे सामने देख पड़ा है। जिस कार्य को करने की हमारे मन में चिरकाल से अभिलाषा थी, उस कार्य को आज हम सुसम्पन्न करेंगे। हम लोग अर्जुन को युद्ध के लिये ललकार कर समरक्षेत्र के बाहिर ले जाँयगे। फिर वहाँ उसका वध करेंगे। इससे तुम्हारा तो प्रिय कार्य होगा और हम लोगों का यश बढ़ेगा। आज पृथिवी या तो अर्जुन से रहित होगी अथवा त्रिगर्तवान से यह शून्य हो जायगी। हम लोगों ने तुम्हारे समीप यह सत्य प्रतिज्ञा की है। यह किसी भी दशा में अन्यथा नहीं हो सकती।

सञ्जय बोले—हे राजन्! सत्यरथ, सत्यवर्मा, सत्यव्रत, सन्तोष और सत्यकर्मा—ये पाँचों भाई शपथ खा, दस हज़ार रथों सहित युद्ध करने को तत्पर हुए और मालव, तुण्डिकेर देशीय वीर गण तीस सहस्र रथों के साथ युद्ध करने को उद्यत हुए। त्रिगर्त देशीय प्रस्थलाधीश्वर पुरुषसिंह सुशर्मा, ने दस सहस्र रथ और मावेल्लक, ललित मद्रदेशीय तथा अपने समस्त भाइयों के साथ युद्ध के लिये प्रस्थान किया। तदनन्तर मुख्य मुख्य शूरवीरों में से दस हज़ार छटा छटा रथी, शपथ करने को उठे। इस प्रकार उन वीरों ने शकुन के लिये अपने शरीरों को मला, स्नान किये और शुद्ध हो कर, कुश ले और वस्त्र पहिन अग्निदेव का पूजन किया। तदनन्तर नयी मुञ्जमेखला धारण की। उस पर नये वस्त्र पहिन कवच धारण किया। तदनन्तर सैकड़ों सहस्रों मुहरें ब्राह्मणों को दक्षिणा में दीं। यज्ञ करने वाले, पुत्रवान् पवित्र लोकों में जाने के अधिकारी, कृतकृत्य और लड़ाई में शरीर को तृणवत् भी न मानने वाले, विजय तथा यश के अभिलाषी वे वीर योद्धा, उन लोकों को युद्ध द्वारा प्राप्त करना चाहते थे, जो ब्रह्मचर्य व्रतधारी वेदाध्ययनपरायण और बड़ी बड़ी दक्षिणाओं वाले यज्ञ करने वाले पुरुषों को प्राप्त होते हैं।

त्रिगर्त देश के वीरों ने ब्राह्मणों को भोजन करा तृप्त किया और मोहरें, वस्त्र और गौएँ दक्षिणा में दीं। फिर एक दूसरे से आपस में मन भर के बातचीत की। तदनन्तर केसरिया कपड़े पहिन उन लोगों ने व्रतयज्ञ धारण किया। उन्होंने प्रज्वलित अग्नि के सामने खड़े हो उच्चस्वर से सब को सुनाते हुए यह प्रतिज्ञा की कि, यदि आज हम अर्जुन को बिना मारे लौटें अथवा उसके द्वारा पीड़ा से त्रस्त हो समरभूमि से भागें; तो हमें उस लोक में वास प्राप्त हो जो व्रतभङ्ग करने वाले को प्राप्त होता है अथवा जो लोक ब्रह्मघातियों, शराबियों गुरुपत्नीगामियों, ब्राह्मण का धन छीनने वालों, राजा के पिण्ड को लुप्त करने वालों, शरणागत को त्यागने वालों, याचकों पर प्रहार करने वालों, आग लगाने वालों और ब्राह्मणों के साथ द्रोह करने वालों, श्राद्ध के दिन मैथुन करने वालों, अपनी जाति को छिपाने वालों, धरोहर को हड़प जाने वालों, वेद का उलटा सीधा अर्थ लगाने वालों, नपुंसकों से युद्ध करने वालों, नीचों का अनुसरण करने वालों, नास्तिकों, अग्निहोत्र त्यागने वालों तथा पापी माता पिता को त्यागने वालों को प्राप्त होते हैं। यदि आज हम युद्ध में महादुष्कर कर्म कर विजय पावें तो हमें निश्चय ही पवित्र लोकों में वास मिले।

हे राजन्! इस प्रकार कह कर, वे अर्जुन के निकट गये और उन्हें युद्ध के लिये ललकार और उनसे लड़ने के लिये वे दक्षिण दिशा की ओर चले गये। शत्रुपुरञ्जय अर्जुन ने उन नरव्याघ्रों के बुलाने पर धर्मराज से शीघ्रतापूर्वक कहा—हे राजन्! मेरा यह व्रत है कि, युद्ध के लिये किसी के द्वारा ललकारे जाने पर, मैं पीछे पैर नहीं रखता। संशप्तक मुझे ललकार रहे हैं। देखिये, भाइयों सहित सुशर्मा मुझे लड़ने के लिये बुला रहा है। अतः मुझे आज्ञा दीजिये कि, मैं सेना सहित उसका नाश करूँ। हे पुरुषर्षभ! उनकी युद्ध के लिये यह ललकार—मैं नहीं सह सकता। राजन्! आप सत्य मानें कि, मैं युद्ध में शत्रुओं का नाश कर डालूँगा।

युधिष्ठिर ने कहा—हे तात! तुम द्रोण का आज का कार्यक्रम जानते,

ही हो, अतः जिस प्रकार उनका कार्यक्रम असत्य सिद्ध हो, उसी प्रकार तुम्हें कार्य करना चाहिये। द्रोण बड़े बलवान हैं, शूर हैं, अस्त्रविद्या के पारदर्शी हैं, परिश्रम को वे तुच्छ समझते हैं। हे महारथी! उन्होंने आज मुझे पकड़ने की प्रतिज्ञा की है।

अर्जुन ने कहा— हे राजन्! आज सत्यजित् युद्ध में आपकी रक्षा करेगा। सेनापरिचालन का भार जब तक सत्यजित् के हाथ में रहेगा; तब तक द्रोणाचार्य का मनोरथ पूर्ण न होगा। हे प्रभो! पुरुषसिंह सत्यजित् के मारे जाने पर, भले ही हमारी ओर के समस्त योद्धा आपको घेरे खड़े रहें—तो भी आप युद्धक्षेत्र में उपस्थित मत रहना। सञ्जय ने कहा—हे राजन्! तदनन्तर धर्मराज ने अर्जुन को हृदय से लगाया और प्रेमपूर्वक बार बार उनकी ओर देखा। तदनन्तर आशीर्वाद दे, जाने की आज्ञा दी। तदनन्तर जैसे भूखा सिंह मृगों के ऊपर दौड़ता है। वैसे ही बलवान् अर्जुन अपने भाइयों के पास से त्रिगर्तों के ऊपर झपटे।

अर्जुन के त्रिगर्तों से लड़ने के लिये, चले जाने पर दुर्योधन की सेना आनन्द में भर गयी और क्रोध में भर कर, धर्मराज को पकड़ने का यत्न करने लगी। तदनन्तर दोनों ओर की सेनाएं एक दूसरे से वैसे ही टकरायीं जैसे सावन भादों की भयङ्कर रूप धारिणी गङ्गा और यमुना आपस में (प्रयाग में) टकराती हैं।

अठारहवाँ अध्याय

अर्जुन और त्रिगर्तों का युद्ध

सञ्जय ने कहा—हे राजन्! तदनन्तर संशप्तक वीर, समतल भूमि में अर्द्धचन्द्राकार व्यूह बना, परमहर्ष के साथ युद्ध करने को खड़े हुए। वे समस्त पुरुषसिंह अर्जुन को आते देख, सिंहनाद करने लगे। उन पराक्रमी शूरों के

सिंहनाद से सब दिशाएँ और आकाश ही नहीं—प्रत्युत समस्त स्थान व्याप्त हो गये। अतः उसकी प्रतिध्वनि तक सुनाई नहीं पड़ी।

अर्जुन उनको हर्षित देख, हँस कर श्रीकृष्ण जी से बोले—हे कृष्ण! देखो त्रिगर्तराज अपने भाइयों सहित युद्धभूमि में अपने प्राण गँवाने को आये हैं। इस समय इन्हें रोना चाहिये था—सो ये हर्षित हो रहे हैं। अथवा सचमुच यह समय इनके लिये हर्ष का है। क्योंकि जिन लोकों में अधम जीव नहीं जा सकते, उन उत्तम लोकों में ये लोग (युद्ध में मारे जाने के कारण) जायँगे। अर्जुन, श्रीकृष्ण से यह कह, रणक्षेत्र में त्रिगर्तों की व्यूह रचना कर खड़ी हुई सेना के निकट गये और अपना देवदत्त नामक शङ्ख बजाया। उस शङ्ख के नाद से समस्त दिशाएं व्याप्त हो गयीं। उस महाभयङ्कर शब्द को सुन, संशप्तक वीर अचेत की तरह युद्धभूमि में जहाँ के तहाँ खड़े रहे। उस सेना के समस्त वाहन घबड़ा कर, कान चिपटा, पूँछ और गर्दन सकोड़ मलमूत्र त्यागने लगे, तदनन्तर वे समस्त योद्धा सावधान हुए और अपने वाहनों को यथानियम स्थिर कर, एक साथ कङ्कपत्र युक्त बाण अर्जुन पर छोड़ने लगे। अर्जुन ने अपना विक्रम प्रकट कर के, शत्रुओं के चलाये हज़ारों बाणों को अपने पन्द्रह बाणों से काट गिराया। यह देख शत्रुपक्षीय प्रत्येक वीर ने दस दस बाणों से अर्जुन को विद्ध किया। इसके जवाब में अर्जुन ने उन योद्धाओं को तीन तीन बाण मार उन सब को घायल कर दिया। इस पर संशप्तकों ने पाँच पाँच बाण चला, अर्जुन को पुनः घायल किया। तब अर्जुन ने दो दो बाण चला पुनः उनको घायल किया। जैसे दैव जल की वृष्टि कर तालाबों को भर देता है, वैसे ही उन वीरों ने बाणवृष्टि से श्रीकृष्ण और अर्जुन को पुनः परिपूरित कर दिया। जैसे वन में भौंरों का दल पुष्पित वृक्षों पर एकबारगी ही गिरता है, वैसे ही सहस्रों बाण अर्जुन के ऊपर गिरने लगे। अनन्तर सुबाहु ने अर्जुन के रत्नों से विभूषित सुन्दर किरीट को तीन बाणों से विद्ध किया। तब सुवर्ण-दण्ड-धारी बाणों से युक्त अर्जुन के किरीट की बड़ी शोभा हुई। इतने में अर्जुन ने

भल्लास्त्र से सुबाहु के अङ्गुलित्राण को काट दिया और फिर बाणों की वृष्टि कर, उन्हें छिपा दिया। तदनन्तर सुशर्मा सुरथ, सुधर्मा, सुधन्वा, और सुबाहु इन पाँचों महाबलवान् योद्धाओं ने दस दस बाणों से पुनः अर्जुन को विद्ध किया। कपिध्वज अर्जुन ने पृथक् रूप से उन पाँचों वीरों को अपने बाणों से विद्ध कर के, उनके रथ की सुवर्ण-भूषित ध्वजाओं को काट काट कर भूमि पर गिरा दिया।

फिर अर्जुन ने सुधन्वा के धनुष को काट, तदनन्तर पैना बाण छोड़ मुकुट सहित उसका सिर काट कर पृथिवी पर गिरा दिया। बलवान् वीर सुधन्वा के मारे जाने पर, उसके अनुयायी योद्धा भयभीत हो दुर्योधन की सेना की ओर भागने लगे। जैसे सूर्य अपनी किरणों से अन्धकार का नाश कर डालते हैं, वैसे ही इन्द्रतनय अर्जुन रोष में भर, पैने बाणों से शत्रु की बड़ी सेना का नाश करने लगे। तदनन्तर अर्जुन के क्रुद्ध होने पर वह सम्पूर्ण सेना तितर बितर हो कर, चारों ओर भाग खड़ी हुई। सेना को इधर उधर भागते देख, त्रिगर्त्तराज के अनुयायी शूरवीर योद्धा लोग बहुत डर गये। वे सब अर्जुन के तीक्ष्ण बाणों से अत्यन्त विकल हो, डरे हुए मृगों की तरह मुग्ध हो गये। अनन्तर त्रिगर्त्तराज क्रुद्ध हो कर, भागते हुए महारथी वीरों से बोले—हे शूर-वीर-महारथी पुरुषों! तुम लोग युद्ध छोड़ क्यों भागे जा रहे हो? तुम ज़रा भी मत डरो। तुम दृढ़ वीर हो और समस्त सेना के सामने कठोर प्रतिज्ञा कर चुके हो। अब तुम दुर्योधन की सेना में जा क्या कहोगे।? ऐसा कर्म करने से श्रेष्ठ पुरुषों के बीच अवश्य ही हम लोगों की निन्दा होगी और लोग हमारा उपहास करेंगे। अतः बचे हुए योद्धा लोगों को साथ ले, लड़ने के लिये लौट आओ। हे राजन्! जब उन लोगों ने त्रिगर्त्तराज के ये वचन सुने; तब एक दूसरे को हर्षित एवं उत्साहित करने के लिये वे बारंबार सिंहनाद करने लगे और अपने अपने शङ्ख बजाने लगे। तदनन्तर नारायणी और गोपाली सेना सहित संशप्तक योद्धाओं ने मौत ही

को युद्ध से अपना पिण्ड छुड़ाने का एकमात्र उपाय समझा, अतः वे लौट कर पुनः युद्ध करने लगे।

उन्नीसवाँ अध्याय

अर्जुन और संशप्तकों की लड़ाई

संशप्तकों को लौटते देख अर्जुन ने श्रीकृष्ण से कहा—हे हृषीकेश! संशप्तकों की ओर घोड़ों को बढ़ाइये। क्योंकि मैं समझता हूँ कि, ये लोग जीते जी रणक्षेत्र को न छोड़ेंगे। आज आप मेरे अस्त्रबल, भुजबल और धनुष बाणों के प्रयोग को देखिये। मैं इनको आज वैसे ही नष्ट कर डालूँगा, जैसे प्रलय के समय रुद्र प्राणियों का संहार करते हैं। तदनन्तर श्रीकृष्ण ने मुसक्या कर, अर्जुन का अभिनन्दन करते हुए कहा—अर्जुन! तेरा मङ्गल हो। यह कह श्रीकृष्ण रथ को हाँक वहाँ ले गये जहाँ अर्जुन ने रथ ले चलने को कहा था। उस समय श्वेत घोड़ों से सुशोभित आकाशचारी दिव्य विमान की तरह, अर्जुन का श्वेत घोड़ों से जुता हुआ रथ रण में शोभायमान हो रहा था। हे राजन्! पूर्वकाल में जैसे देवासुर संग्राम में इन्द्र का रथ आगे पीछे हटता था वैसे ही अर्जुन का रथ रणभूमि में मण्डलाकार घूम रहा था। तदनन्तर अनेक आयुधों को हाथ में ले, रोष में भरे और बाणों की वृष्टि करते हुए नारायणी सेना वालों ने चारों ओर से अर्जुन को घेरा। हे भरतसत्तम! उन्होंने क्षण भर में श्रीकृष्ण सहित अर्जुन को बाणों से ढक दिया। इस पर अर्जुन बहुत कुपित हुए और उनकी त्योरी चढ़ गयी। उन्होंने देवदत्त शङ्ख बजाया। फिर गाण्डीव धनुष को हाथ में ले शत्रु समुदाय का संहार करने वाले विश्वकर्मा नामक अस्त्र को त्रिगर्तों की सेना के ऊपर फेंका। उस अस्त्र से देखते ही देखते वासुदेव और अर्जुन के सहस्रों भिन्न भिन्न रूप प्रकट हुए। त्रिगर्त योद्धा लोग, श्रीकृष्ण और अर्जुन के अनेक रूपों को देख मुग्ध हो गये। यहाँ तक कि, वे आपस में एक दूसरे को श्रीकृष्ण

और अर्जुन समझ, यह कहते हुए कि, "यह अर्जुन है" "यह यदुवंशी है" "यह पाण्डुपुत्र है" आपस ही में लड़ कर मरे। उस समय कुरुक्षेत्र में घायल योद्धा, पुष्पित लोध वृक्ष की तरह जान पड़ते थे। अर्जुन का चलाया अस्त्र शत्रुपक्ष द्वारा चलाये हुए सैकड़ों हज़ारों अस्त्रों को भस्म करता हुआ शत्रुपक्षीय वीरों को यमालय ले गया। तब तो अर्जुन ने हँस कर, ललित्थ, मावेल्लक, मालव और त्रिगर्त्त योद्धाओं को भी बाणों से पीड़ित करना आरम्भ किया। अर्जुन की मार से पीड़ित, काल द्वारा आमंत्रित वे क्षत्रिय भी अर्जुन के ऊपर अनेक बाणजाल पूरने लगे। उस बाण-वृष्टि से ढक जाने पर, वहाँ अर्जुन, श्रीकृष्ण और उनका रथ अदृश्य हो गये थे। जब उनके वैरी अर्जुन और श्रीकृष्ण बाण समूह से ढक गये, तब तो त्रिगर्त्त बड़े प्रसन्न हुए और कहने लगे—श्रीकृष्ण सहित अर्जुन मारे गये। यह कह और आनन्द में भर वे वस्त्र उछालने लगे।

हे राजन्! वे वीर सहस्रों भेरी और मृदङ्गों को बजाने लगे और सिंह-नाद करने लगे। तब परिश्रम के कारण पसीने से तराबोर खिन्नमनस्क श्रीकृष्ण ने अर्जुन को सम्बोधन कर, उनसे कहा—हे अर्जुन! तुम कहाँ हो? तुम मुझे दिखलायी नहीं पड़ते। हे शत्रुनाशन! तुम जीवित तो हो? श्रीकृष्ण के इन वचनों को सुन, अर्जुन ने तुरन्त वायव्यास्त्र का प्रयोग कर शत्रुओं के बाणजाल को तितर बितर कर दिया। उस समय पवन देव हाथियों, घोड़ों और रथों सहित त्रिगर्त्तों को सूखे पत्तों के ढेर की तरह उड़ा ले गये। हे राजन्! उस समय वायु से उड़े हुए त्रिगर्त्त लोग, वृक्षों से उड़े हुए पक्षियों की तरह बड़े सुहावने मालूम पड़ते थे। उनको इस प्रकार विकल कर, अर्जुन ने बड़ी फुर्ती के साथ बाण छोड़ कर, सहस्रों और सैकड़ों त्रिगर्त्तों को मार डाला। उन्होंने भल्लों से उनके सिर काट डाले। बाणों के द्वारा अर्जुन ने आयुधों सहित उनके हाथों को तथा हाथी की सूँड़ की तरह उनकी जंघाओं को काट कर भूमि पर गिरा दिया। अर्जुन ने शत्रुओं के हाथ, पैर, पसली और नेत्र आदि शरीरावयवों को काट कर उनको विकल

कर दिया। गन्धर्व नगरों की तरह, उनके विशेष चातुर्य से बनाये गये रथों के धुरों को अर्जुन ने बाणों के प्रहार से तोड़ डाला। देखते देखते त्रिगर्त्त के समस्त हाथी, घोड़े मार डाले और रथों को चकनाचूर कर डाला। सारांश यह कि, त्रिगर्त्त अब वाहनहीन हो गये। रणभूमि में इधर उधर पड़े हुए टूटे रथ और उनकी टूटी ध्वजाएँ, वन में टूट कर गिरे हुए तालवृक्षों जैसी जान पड़ती थीं। हाथी और उन पर सवार योद्धा, पताकाएँ, अङ्कुश और ध्वजाएँ भी अर्जुन के बाणप्रहार से वैसे ही गिर रही थीं, जैसे इन्द्र के वज्र के प्रहार से वृक्षों सहित पर्वत टूट टूट कर गिरते हैं। अर्जुन के बाणप्रहार से चँवर, मुकुट, कवच और घुड़सवारों सहित वे घोड़े जिनकी आँतें और आँखें निकल पड़ी थीं—पृथिवी पर गिरने लगे। पैदल सिपाहियों की तलवारों और बघनखों के टुकड़े टुकड़े हो गये थे। शरीरों पर के कवच कट गये थे और योद्धा बाणों की चोट से मर कर भूमि पर गिरे पड़े थे। अर्जुन के मारे हुए, मर कर भूमि पर गिरे हुए, गिरते हुए, चारों ओर घूमते और चिल्लाते हुए योद्धाओं से समरभूमि का दृश्य बड़ा भयानक देख पड़ता था। उड़ती हुई धूल रक्त की वृष्टि से दब गयी थी और सैकड़ों मनुष्यों के धड़ों से वहाँ की पृथिवी पटी पड़ी थी। अतः उस पर चलना कठिन था। प्रलय-काल उपस्थित होने पर जैसे शिव की क्रीड़ा बीभत्स और रौद्ररसपूर्ण होती है वैसे ही इस समय अर्जुन की यह युद्धक्रीड़ा बीभत्स और रौद्ररस से परिपूर्ण थी। अर्जुन द्वारा मारे गये त्रिगर्त्त वीर और उनके घोड़े, हाथी विकल हो रहे थे और अर्जुन की ओर दौड़ते हुए मर कर यमराज के अतिथि बनते थे। हे भरतश्रेष्ठ! रण में मारे गये और प्रेतरूप पड़े हुए महारथियों से आच्छादित रणभूमि बड़ी अच्छी मालूम पड़ती थी। इस प्रकार अर्जुन क्रोध में भर कर, त्रिगर्त्तों को मार रहे थे। यह देख द्रोणाचार्य अपनी सेना का व्यूह रच कर, राजा युधिष्ठिर के ऊपर टूटे। इतने ही में युधिष्ठिर की रक्षा के लिये नियुक्त योद्धागण अपनी ओर की सेना का व्यूह बना, द्रोण का सामना करने को तैयार हो गये और दोनों ओर से घोर युद्ध होने लगा।

बीसवाँ अध्याय

व्यूहरचना और घोर युद्ध

संजय ने कहा—हे राजेन्द्र ! महारथी द्रोणाचार्य ने वह रात बिता दी और अगले दिन दुर्योधन से बहुत देर तक बातचीत की। फिर अर्जुन के साथ संशप्तकों के युद्ध की योजना बतलायी। जिससे अर्जुन को संशप्तकों का वध करने के लिये प्रधान रणक्षेत्र से दूर जाना पड़ा। हे भरतश्रेष्ठ ! इस सुअवसर पर द्रोणाचार्य ने गरुड़व्यूह रचा, युधिष्ठिर को पकड़ने की इच्छा से पाण्डवों पर चढ़ाई की। द्रोणाचार्य के गरुड़व्यूह को देख धर्मराज ने अपनी सेना से मण्डलार्ध व्यूह रचा। उधर गरुड़व्यूह के मुख पर द्रोणाचार्य और मस्तक पर अपने छोटे भाइयों और अनुयायियों के साथ दुर्योधन खड़े हुए। उस व्यूह के नेत्र स्थानों पर कृतवर्मा बाण छोड़ने वालों में श्रेष्ठ कृपाचार्य खड़े थे। भूतशर्मा, क्षेमशर्मा, वीर्यवान करकाक्ष, कलिङ्ग योद्धा, सिंहलदेशीय लोग, प्राच्यशूर और आभीरक, दशेरक, शक, यवन, काम्बोज, हंसपद, शूरसेन, दरद और कैकयदेशीय योद्धा लोग हाथी, घोड़े और रथों से युक्त, गरुड़रूपी व्यूह की गरदन पर थे। भूरिश्रवा, शल्य, सोमदत्त और बाह्लिक आदि बड़े एक बली राजा अक्षौहिणी सेना के साथ उसके दाहिने पक्ष के स्थान पर स्थित थे। अवन्तिराज विन्द और अनुविन्द और काम्बोजराज सुदक्षिण, द्रोणपुत्र अश्वत्थामा को आगे कर, बाम पक्ष पर खड़े थे। कलिङ्ग, अम्बष्ठ, मागध, पौण्ड्र, मद्रक, गान्धार, शकुन, प्राच्य, पर्वतीय और वसातिदेशीय योद्धा लोग गरुड़व्यूह के पृष्ठ स्थान पर स्थित थे। सूर्यपुत्र कर्ण अपने बन्धु बान्धव, पुत्र तथा अन्य नाना देशीय राजाओं सहित उस व्यूह के पुच्छदेश पर स्थित थे।

हे राजन् ! भीमरथ, सम्पाति, ऋषभ, जय, भूमिञ्जय, वृष, क्राथ और महा बलवान् निषधराज इत्यादि समस्त योद्धा लोग, ब्रह्मलोक जाने की कामना से गरुड़व्यूह के वक्षस्थल देश पर स्थित हुए। हाथियों, घोड़ों, रथों

और पैदल सिपाहियों से बनाया हुआ द्रोणाचार्य का गरुड़व्यूह मानों पवन के वेग से उत्थित सामुद्रिक तरङ्गों की तरह नृत्य करता हुआ सा दिखलाई पड़ता था। वर्षाकाल में जैसे चारों ओर से उमड़ते हुए बादल आकाश में गरजते हैं, वैसे ही इस व्यूह के समस्त योद्धा सिंहनाद करते हुए चलने लगे। हे राजन्! प्राग्ज्योतिष के राजा भगदत्त उस व्यूह के मध्यभाग में भली भाँति सुसज्जित एक हाथी के ऊपर बैठे हुए उदय होते हुए सूर्य की तरह प्रकाशित हो रहे थे। कार्तिक मास के चन्द्रमा की तरह सफेद छाता उनके मस्तक पर तना हुआ था। श्यामवर्ण का उनका मदमत्त हाथी, बादल की घटा से युक्त एक विशाल पर्वत की तरह दिखलाई पड़ता था। वह भाँति भाँति के अस्त्रों शस्त्रों और नाना भाँति के आभूषणों को धारण करने वाले पर्वत प्रदेशीय वीरों के सहित युद्ध के निमित्त पाण्डवों की ओर इस तरह चले जैसे देवताओं के सहित इन्द्र चलते हैं।

तदनन्तर धर्मराज युधिष्ठिर शत्रुसैन्य के उस अलौकिक और अजेय व्यूह को देख, पारावत-वर्ण के समान रथ पर सवार हो धृष्टद्युम्न से बोले— हे सेनापति धृष्टद्युम्न! तुम ऐसा प्रबन्ध करो, जिससे आज यह ब्राह्मण मुझे पकड़ न पावे।

धृष्टद्युम्न ने कहा—राजन्! यदि द्रोणाचार्य ने आपको पकड़ने का उद्योग किया भी, तो भी वे अपने उद्योग में सफल न हो सकेंगे। मैं आज उन्हें, उनके अनुयायियों सहित, रणभूमि में रोकूँगा। मेरे जीवित रहते आपको कुछ भी भय नहीं है और द्रोणाचार्य मुझको रणभूमि में कदापि पराजित न कर सकेंगे।

सञ्जय बोले—पारावत के रंग के समान घोड़ों से युक्त रथ पर सवार द्रुपदनन्दन धृष्टद्युम्न यह कह और बाण फेंकते हुए, द्रोणाचार्य की ओर दौड़े। द्रोणाचार्य, धृष्टद्युम्न को आते देख और अनिष्ट की आशङ्का कर, खिन्न हो गये। यह देख कर, आपके पुत्र शत्रुनाशन दुर्मुख ने आचार्य द्रोण को प्रसन्न करने के लिये, धृष्टद्युम्न का आगे बढ़ना रोक दिया।

तब धृष्टद्युम्न और दुर्मुख में भयङ्कर तुमुल युद्ध होने लगा। धृष्टद्युम्न ने बड़ी फुर्ती से बाणजाल से दुर्मुख को ढक, फिर बाणों की बाढ़ से द्रोणाचार्य को रोका। यह देख दुर्मुख ने धृष्टद्युम्न को बाणों से बेध डाला। तब धृष्टद्युम्न और दुर्मुख को लड़ते देख, द्रोणाचार्य, विविध प्रकार के बाणों से पाण्डव सैन्य को भस्म करने लगे। जैसे वायु के प्रबल वेग से बादल आकाश में चारों ओर तितर बितर हो जाते हैं, वैसे ही युधिष्ठिर की सम्पूर्ण सेना द्रोणाचार्य के बाणों से इधर उधर तितर बितर होने लगी। एक मुहूर्त्त तक युद्ध साधारण ढंग से होता रहा। तत्पश्चात् योद्धागण रणोन्मत्त हो, युद्ध की मर्यादा को छोड़, युद्ध करने लगे। वे लोग अपने बिराने के विवेक को त्याग, और मुग्ध हो लड़ने लगे। उस समय का युद्ध केवल अनुमान और नाम के ऊपर ही चलने लगा। ऐसे समय शूरों के छत्र, कण्ठ के हार, तथा अन्यान्य आभूषण सूर्य की किरणों की तरह दमक रहे थे। हाथियों, घोड़ों और रथों की पताकाएँ, बकराजि अलंकृत मेघों की तरह शोभित होने लगीं। उस समय क्रोध में भरे हुए पैदल सैनिक, पैदल सैनिकों से; अश्वारोही सैनिक, अश्वारोही सैनिकों से; गजपति योद्धा, गजपति योद्धाओं से और रथी, रथियों से भिड़ कर, एक दूसरे का वध करते हुए युद्ध करने लगे।

क्षण भर के भीतर उत्तम ध्वजाओं से युक्त हाथियों का आपस में महाघोर संग्राम आरम्भ हुआ। वे सब हाथी आपस में एक दूसरे की सूँड़ों को अपनी सूँड़ों में दबा अपनी ओर खींचने लगे—फिर उन हाथियों के दाँतों की टक्कर से सधूम अग्नि उत्पन्न हो गया। जिन हाथियों के ऊपर ध्वजाएँ थीं, और जिनके दाँतों की टक्कर से अग्नि निकल रहा था, वे हाथी आकाशस्थित बिजली युक्त बादलों जैसे देख पड़ते थे। एक हाथी दूसरे हाथी को उठा कर फेंक देता था। कोई बड़े ज़ोर से चिंघार रहे थे और कोई कोई भूमि पर गिरे पड़े थे। इसलिये रणक्षेत्र वैसा ही जान पड़ता था, जैसे शरदऋतु में बादलों से आच्छादित गगनमण्डल, हाथियों के ऊपर

बाणों और तोमरों की वर्षा होने लगी। तब वे सब हाथी उन अस्त्र शस्त्रों से पीड़ित हो, प्रलय कालीन बादलों की तरह गरजने लगे। तोमर और बाणों की चोट से व्याकुल हाथियों के बीच कितने ही हाथी अत्यन्त पीड़ित हो भय से विह्वल हो गये। कितने ही अत्यन्त विकल हो, ज़ोर से चिंघारने लगे। कितने ही हाथी, दूसरे हाथियों के दाँतों की ठोकरों से पीड़ित हो, उत्पाती बादलों की तरह बड़े ज़ोर से चिंघारने लगे। मुख्य मुख्य बलवान हाथी जब अन्य हाथियों को अपने दाँतों की टक्कर से पीड़ित करते, तब वे समस्त पीड़ित हाथी, तीक्ष्ण अङ्कुशों से गोदे जाने पर बलवान हाथियों के शरीरों में दाँतों की टक्कर लगा देते थे। उधर महावतों ने आपस में एक दूसरे के ऊपर बाणों और तोमरों से प्रहार किये। कितने ही महावत अङ्कुशों और शस्त्रों से रहित हो भूमि पर गिर पड़े। कितने ही हाथी महावतों के न रहने से चिंघार मारते हुए अन्य हाथियों के दाँतों और योद्धाओं के अस्त्रों से पीड़ित हो, भूमि पर लोट गये। कितने ही योद्धा हाथियों की पीठों पर मर कर लोट पोट हो गये। कितने ही गजपति योद्धाओं के अस्त्र शस्त्र हाथों से छूट पड़े। अनन्तर कितने ही मतवाले हाथी अपने सवारों सहित इधर उधर दौड़ने लगे; कितने ही हाथी तोमर, ऋष्टि और परशु आदि अस्त्र की चोट से मर कर, पृथिवी पर गिर पड़े। उनके पर्वत के समान शरीरों के इधर उधर गिरने से पृथिवी काँपने लगी।

गजपति योद्धा और ध्वजायुक्त मृत हाथियों की लाशों से पूरित समस्त रणक्षेत्र, मानों पर्वत समूह से युक्त हो, अत्यन्त शोभायमान जान पड़ने लगे। रथियों ने अपने अस्त्रों से हाथियों के महावतों को जब बेध डाला; तब अस्त्रों सहित उनके अङ्कुश हाथों से छूट भूमि पर गिरने लगे। साथ ही वे स्वयं भी नीचे आ पड़े। कितने ही हाथी बाणों की पीड़ा से क्रौञ्च पक्षी की तरह घोर चिंघार करते, अपनी तथा शत्रु की सेना को अपने पैरों से रूँधते हुए, मर मर कर पृथिवी पर गिरने लगे। उस समय रणभूमि, घोड़ों, हाथियों और योद्धाओं की लाशों से आच्छादित हो माँस और रुधिर

से परिपूर्ण हो गयी। अनेक हाथी अपने दोनों दाँतों और सूँड़ों से बड़े बड़े रथों को उनमें बैठे रथियों सहित उठा उठा कर फेंकने लगे। इससे कितने ही रथों के पहिये चर चर हो गये और कितने ही रथ ध्वजाओं सहित टुकड़े टुकड़े हो गिर पड़े। कितने ही रथ रथियों से, कितने ही घोड़े और हाथी सवारों से हीन और भयभीत हो इधर उधर भागने लगे। इस महाघोर युद्ध में बेटा बाप का और बाप बेटे का वध करने लगे। इस महाभयङ्कर संग्राम में कहाँ क्या हो रहा है—इसका किसी को भी ज्ञान न था। लड़ने वाले वीरों की दाढ़ियाँ और मूँछें के बाल रक्त और माँस लगने से लाल लाल हो रहे थे। जैसे वन में आग लगने पर बड़े बड़े वृक्ष अग्नि के तेज से प्रकाशित होते हैं, वैसे ही मुकुट, वस्त्र और रथ की पताकाएँ रुधिर से सनी हुई होने से रक्तवर्ण देख पड़ती थीं। रथों और मनुष्यों के दल के दल पृथिवी पर गिरने लगे। जो अचमरे सिपाही रणक्षेत्र में पड़े हुए थे, उनके शरीर रथों के पहियों से कट कट कर टुकड़े टुकड़े हो गये थे। गज समूह रूपी वेगवान्, मृत मनुष्यों की लाशों का समूह रूप सिवार वाला और रथ समूह रूप भँवरों वाला, सैन्यरूपी महासागर दिखलायी पड़ता था। योद्धा रूपी व्यापारी गज अश्व रूपी सम्पदा प्राप्त करने की अभिलाषा से वाहन रूपी नौका पर सवार हो, डूबते हुए भी उस सैन्य रूपी महाभयङ्कर सागर में क्षुब्ध न हुए। बाणों की वर्षा से योद्धाओं की चिन्हानी नष्ट हो गयीं। इससे शत्रु मित्र की पहचान न रह गयी। उस महाभयङ्कर समर में आचार्य द्रोण, पाण्डवों की समस्त सेना को अपने अस्त्रों से मोहित कर, युधिष्ठिर को पकड़ने की कामना से उनकी ओर लपके।

———

इक्कीसवाँ अध्याय

द्रोण का रणकौशल

सञ्जय बोले—राजा युधिष्ठिर, द्रोण को निकट आया हुआ देख, निर्भय हो बाणों से उनका सामना करने लगे। अनन्तर जैसे महाबली सिंह हाथियों के यूथपतियों को पकड़ने के लिये उद्यत होता है; वैसे ही जब द्रोणाचार्य युधिष्ठिर को पकड़ने के लिये उनकी ओर बढ़े; तब पाण्डवों की सेना में बड़ा कोलाहल हुआ। सत्यपराक्रमी सत्यजित्, द्रोण को धर्मराज को पकड़ने के लिये उनकी ओर आते देख, वेगपूर्वक द्रोणाचार्य की ओर दौड़े। महाबली द्रोणाचार्य और सत्यजित् का वैसा ही संग्राम हुआ, जैसा इन्द्र और बलि का हुआ था। तदनन्तर महाबली सत्यपराक्रमी सत्यजित् ने अपना अस्त्रकौशल दिखला, अस्त्र की तेज़ नोंक से द्रोण को घायल कर डाला और सर्प विष तुल्य भयङ्कर और काल जैसे भयानक पैने पाँच बाण मार कर, द्रोण के सारथि को मूर्छित कर डाला। तदनन्तर उसने दस बाणों से द्रोण के घोड़े घायल किये। फिर रोष में भर दस दस बाण उसने द्रोण के दोनों पार्श्वरक्षकों के मारे। फिर शत्रुसैन्य के सामने मण्डलाकार घूम द्रोण के रथ की ध्वजा भी काट डाली। उसकी ऐसी रण-कुशलता को देख, द्रोण ने समझा कि, अब वह मरा ही चाहता है। द्रोण ने मर्मभेदी दस बाण छोड़ उसे घायल कर डाला और उसका धनुष काट डाला। तब सत्यजित् ने झट दूसरा धनुष ले लिया और कङ्क पत्र युक्त तीस बाणों से पुनः द्रोण को विद्ध किया। इस प्रकार सत्यजित् द्वारा द्रोण को बेकाम होते देख, पाञ्चाल वृक ने भी सौ बाण छोड़ द्रोणाचार्य को पीड़ित किया। युद्ध में द्रोणाचार्य को बाणों से ढका हुआ देख, पाण्डव हर्षित हो कपड़े उछालने और हर्षध्वनि करने लगे।

हे राजन्! वृक ने अत्यन्त क्रुद्ध हो, द्रोण की छाती में सात बाण मारे। वृक का यह एक विस्मयोत्पादक सा कार्य था। महारथी द्रोण जब वृक

प्रकार बाणों से ढक गये, तब उन्होंने क्रुद्ध हो नेत्र फाड़ पराक्रम प्रदर्शित करना प्रारम्भ किया। द्रोणाचार्य ने सत्यजित् और वृक के धनुष को काट डाला और छः बाणों से घोड़े और सारथी सहित वृक को मार डाला। परन्तु सत्यजित् ने वेगवान दूसरे धनुष को ले कर द्रोणाचार्य को और उनके घोड़े, सारथी तथा ध्वजा को भी बेध डाला। द्रोणाचार्य उस पाञ्चाल से पीड़ित होने पर मारे क्रोध के जल उठे और उसे मारने के लिये बड़ी फुर्ती से बाण छोड़ने लगे। द्रोण ने एक ही बार सहस्रों बाणों की वर्षा कर, सत्यजित् के रथ, घोड़े, ध्वजा, धनुष और अस्त्रों शस्त्रों सहित उसे छिपा दिया। द्रोणाचार्य ने सत्यजित् के कई धनुषों को काटा, किन्तु परमास्त्रवित्, आचार्य द्रोण के साथ सत्यजित् लड़ते ही रहे। सत्यजित् को तिस पर भी युद्ध करते देख, द्रोण ने एक अर्द्धचन्द्राकार बाण से सत्यजित् का सिर काट डाला। जब महापराक्रमी विशालवपु पाञ्चाल योद्धा सत्यजित् मारा गया, तब धर्मराज युधिष्ठिर, आचार्य द्रोण से भयभीत हो, रथ को तेज़ हँकवा रणभूमि से भागे। यह देख पाञ्चाल, केकय, चेदी, मत्स्य, करूष और कोशल देशीय योद्धाओं ने हर्षित हो कर, महाराज युधिष्ठिर की रक्षा करने के लिये द्रोणाचार्य पर आक्रमण किया। जैसे अग्नि रुई को भस्म करती है, वैसे ही शत्रुनाशन द्रोणाचार्य, राजा युधिष्ठिर को पकड़ने के लिये उन सब योद्धाओं को अपने अस्त्रों से भस्म करने लगे।

मत्स्यराज विराट् के छोटे भाई शतानीक, उस समय द्रोणाचार्य को अपने पक्ष की सम्पूर्ण सेना को भस्म करते देख, उनकी ओर झपटे। उन्होंने शिला पर पैने किये हुए छः बाणों से द्रोण को विद्ध किया। उन्हें उन बाणों से घायल कर, शतानीक ने सिंहनाद किया। द्रोणाचार्य ने उसी समय, क्षुराख से उनके कुण्डलों से भूषित सिर को काट डाला। द्रोण के ऐसे पराक्रम को देख, मत्स्यदेशवासी योद्धा रणक्षेत्र त्याग भाग खड़े हुए। मत्स्यदेशीय योद्धाओं को जीत कर, द्रोण ने बारंबार चेदी, करूष, कैकय पाञ्चाल, सृञ्जय और पाण्डव सेना के योद्धाओं को पराजित किया। जिस

प्रकार अग्नि जङ्गल को जला कर भस्म करे, उसी प्रकार क्रोध में भरे द्रोणाचार्य को, शत्रुपक्ष की सेना को भस्म करते देख, सृञ्जय काँप उठे। जिस समय द्रोणाचार्य उत्तम धनुष हाथ में ले बड़ी फुर्ती से शत्रुवध करने लगे; उस समय उनके धनुष का टङ्कार शब्द चारों ओर सुन पड़ने लगा। द्रोणाचार्य के हस्तलाघव से छूटे हुए बाणों से घोड़े, हाथी, रथी और पैदल सैनिक पीड़ित हो, मर मर कर भूमि पर गिरने लगे। जैसे हेमन्त ऋतु के अन्त में बार बार गरजते हुए प्रचण्ड वायु के झकोरों से चालित मेघ कभी कभी ओले बरसाया करते हैं, वैसे ही द्रोणाचार्य भी बारम्बार बाणों की मार से शत्रु सैन्य को भयभीत कर, सिंहनाद करने लगे। अपने सुहृद मित्रों और अनुयायी वीरों को अभय कर उन्हें आनन्दित करते हुए, बलवान् द्रोण, रणभूमि में चारों ओर घूमने लगे, उस समय उनका सुवर्णमण्डित धनुष, मानों बादलों से युक्त बिजली की तरह समस्त दिशाओं में प्रकाशित होने लगा।

हे भारत! जिस समय रथ पर चढ़ कर वे रणभूमि में वेगपूर्वक चारों ओर भ्रमण करने लगे, उस समय उनके रथ की ध्वजा पर स्थित, अत्यन्त सुशोभित चित्रित वेदी, हिमालय पर्वत के शृङ्ग जैसी जान पड़ती थी। जैसे समस्त देवताओं में पूज्यतम भगवान् श्रीविष्णु दानवों का नाश करते हैं, वैसे ही प्रबल पराक्रमी द्रोण, पाण्डवों की सेना के शूरवीर योद्धाओं को अपने शस्त्र बल से परास्त करने लगे। सत्यवादी बुद्धिमान् महाबली और सत्यपराक्रमी द्रोणाचार्य ने मानों प्रलयकालीन रुद्र की निर्मित, प्राणियों का संहार करने वाली उस रणभूमि में रक्त की अत्यन्त भयावनी सरिता बहा दी। उस नदी में कवचादि तथा टूटी हुई ध्वजाओं सहित भग्न रथ नौकाओं जैसे जान पड़ते थे। मरे हुए योद्धाओं, हाथियों और घोड़ों की लाशें मगरों घड़ियालों जैसी जान पड़ती थीं। तलवार आदि अस्त्र उस नदी में मछलियों जैसे जान पड़ते थे। वीरों की हड्डियाँ उसमें कंकड़ और बालू जैसी जान पड़ती थीं। भेरी, नगाड़े आदि बाजे, कच्छप जैसे जान पड़ते थे। बड़े बड़े

रथ उस नदी में नौका की तरह बढ़े चले जाते थे। वीरों के केश सिवार, बाण समूह प्रवाह, धनुष स्रोत और वीरों की कटी हुई भुजाएँ सर्प जैसी जान पड़ती थीं। मनुष्यों के सिर उस नदी में पत्थर रूपी और शक्ति आदि अस्त्र शस्त्र, मत्स्य विशेष जैसे जान पड़ते थे। छत्र, मुकुट और वस्त्र आदि सामग्री फेन जैसी देख पड़ती थीं। अस्त्र शस्त्र ही उसमें बालू जैसे जान पड़ते थे। हाथियों की लाशें छुद्र ग्राह जैसी तथा रथों और हाथियों पर लगी हुई ध्वजाएँ नदी तटवर्ती वृक्षों जैसी जान पड़ती थीं। घुड़सवारों के समूह उस नदी में कुम्भीरों की तरह बोध होते थे। महाभयङ्कर मृत पुरुषों और वाहनों के पाँव से युक्त वीरों का संहार करने वाली और यमलोक तक प्रवाहित होने वाली उस दुर्गम नदी में क्षत्रिय लोग डूबने लगे। राक्षस, कुत्ते और सियार आदि माँसभक्षी भयङ्कर जन्तु, वहाँ इधर उधर घूम रहे थे। पाण्डव पक्षी राजागण, महारथी द्रोण को, यमराज की तरह अपनी सेना को भस्म करते देख, क्रोध में भर उनकी ओर लपके। जैसे सूर्य अपनी तीक्ष्ण किरणों से प्राणियों को तपा कर भस्म करते हैं, वैसे ही आचार्य द्रोण ने अपने अस्त्रों की वृष्टि से पाण्डवों की सेना के वीरों को व्याकुल कर डाला। तदनन्तर जब पाण्डवों के पक्ष वाले योद्धाओं ने मिल कर द्रोण को चारों ओर से घेर लिया, तब हे राजन्! आपकी ओर के राजा गण हथियार लिये हुए द्रोणाचार्य के निकट जा पहुँचे और शत्रुओं को रोकने लगे। शिखण्डी ने पाँच, उत्तमौजा ने तीन, क्षत्रदेव ने सात, सात्यकि ने सौ, युधामन्यु ने आठ, युधिष्ठिर ने बारह, धृष्टद्युम्न ने दस और चेकितान ने तीन बाणों से द्रोणाचार्य पर प्रहार किया। तब आचार्य द्रोण ने रथ सैन्य का अतिक्रम कर, दृढसेन को मार डाला। फिर उन्होंने धर्मराज के निकट पहुँच, निर्भय हो नौ बाणों से क्षेम को मार डाला। क्षेम निर्जीव हो रथ से लुढ़क नीचे गिर पड़ा। तदनन्तर आचार्य सैन्यमध्य में पहुँचे। चारों ओर घूम फिर कर, वे अपनी ओर के योद्धाओं की रक्षा करने लगे। परन्तु वे स्वयं किसी के भी रक्षाधीन नहीं हुए। उन्होंने बारह बाण शिखण्डी के और बीस

उत्तमौजा के मारे, जिनकी चोट से वे दोनों घायल हो गये। इतने में एक भल्ल बाण से द्रोणाचार्य ने वसुदान का वध कर डाला। तदनन्तर क्षेमधर्मा के अस्सी, सुदक्षिण के छब्बीस और क्षत्रदेव के भल्ल बाण का प्रहार कर, उसे रथ के नीचे गिरा दिया। फिर चौसठ बाण युधामन्यु के और तीस बाण सात्यकि के मार वे युधिष्ठिर की ओर लपके। नृपश्रेष्ठ युधिष्ठिर अपनी ओर द्रोण को आते देख, अपने रथ के शीघ्रगामी घोड़ों को भगा, रणक्षेत्र से भागे। उस समय पाञ्चाल राजकुमार ने द्रोणाचार्य के ऊपर आक्रमण किया। द्रोणाचार्य ने घोड़े, सारथी और धनुष सहित राजकुमार को विद्ध किया। पाञ्चाल राजकुमार अपने रथ से वैसे ही गिरे, जैसे आकाश से नक्षत्र नीचे गिरता है। पाञ्चालों के यश को बढ़ाने वाले उस राजकुमार के मारे जाने पर, "द्रोण को मारो; द्रोण को मारो"—कह कर, सेना में बड़ा कोलाहल हुआ। महाबलवान् द्रोणाचार्य ने क्रुद्ध हो, पाञ्चाल, मत्स्य, केकय, सृञ्जय और पाण्डवों की सेना के शूरवीरों को मारे बाणों के विकल कर डाला। कुरुसेना से घिरे हुए आचार्य्य द्रोण ने सात्यकि, वृद्धक्षेमसुत, चित्रसेनपुत्र, सेनाबिन्दु, सुवर्च्चा और दूसरे नाना देशों से आये हुए अनेक राजाओं को युद्ध में पराजित किया। हे महाराज! आपकी सेना के सम्पूर्ण योद्धा युद्ध में विजयी हो, चारों ओर से शत्रु सैन्य पर आक्रमण कर, शत्रुओं का बध करने लगे। हे राजन्! उस समय पाञ्चाल, मत्स्य और केकय देशीय राजा लोग द्रोणाचार्य के बाणों से पीड़ित हो, वैसे ही थरथराने लगे; जैसे इन्द्र के वज्र से पीड़ित हो, दानव लोग थरथर कंपित होते हैं।

बाइसवाँ अध्याय

दुर्योधन का हर्ष

धृतराष्ट्र ने कहा—हे सञ्जय! उस युद्ध में जब पाण्डव और पाञ्चाल सेना के वीर, द्रोणाचार्य की मार से पीड़ित हो भागने लगे, तब वे कौन से

यशस्वी पुरुष, सत्पुरुषों से सेवित श्रेष्ठबुद्धि का सहारा ले, खड़े थ? सम्पूर्ण सेना के भाग जाने पर भी जो लोग लड़ते हैं, वे ही शूर और श्रेष्ठ स्वभाव वाले योद्धा कहलाते हैं। कैसे आश्चर्य का विषय है कि, जम्हुआई लेते हुए व्याघ्र की तरह युद्धक्षेत्र में खड़े हुए, संग्रामक्षेत्र में प्राण त्यागने को उद्यत, महाधनुर्धर एवं शत्रुओं को भयभीत करने वाले, पुरुषसिंह द्रोणाचार्य को देख, उनसे युद्ध करने वाला क्या कोई भी वीर पुरुष पाण्डवों की सेना में न था? हे सञ्जय! बतलाओ कौन कौन शूरवीर योद्धाओं ने रणभूमि स्थित द्रोणाचार्य का सामना किया था?

सञ्जय ने कहा— हे राजन्! जैसे समुद्र की प्रबल तरङ्गों से नौका विचलित होती है; वैसे ही पाञ्चाल, पाण्डव, मत्स्य, चेदी, सृञ्जय और केकय देशीय वीरों को द्रोणाचार्य के धनुष से छूटे हुए अस्त्रों से पीड़ित हो पलायन करते देख; रथी, घुड़सवार, गजपति और पैदल सिपाहियों सहित कौरवों ने सिंहनाद किया। बाजों के शब्दों से परिपूर्ण सेना के बीच में खड़े, बन्धु बान्धव सहित राजा दुर्योधन, पाण्डवों की सेना को इस प्रकार से विकल देख, हर्षित हो, हँसते हँसते कर्ण से बोला—हे कर्ण! देखो, जैसे वन में हिरनों के झुंड सिंह को देख भयभीत हो जाते हैं; वैसे ही पाञ्चाल योद्धा, द्रोणाचार्य के बाणों से पीड़ित हो युद्धभूमि से भागे जाते हैं। मैं तो समझता हूँ, ये लोग फिर युद्ध न करें। जैसे प्रचण्ड वायु के वेग से वृक्षों के समूह टूट पड़ते हैं, वैसे ही आचार्य द्रोण के पैने शस्त्रों से विकल हो, शत्रुयोद्धा युद्धभूमि से भागे जाते हैं। आचार्य द्रोण के स्वर्ण-पंख-युक्त बाणों के प्रहार से अत्यन्त विकल हो, समस्त योद्धा, समरक्षेत्र छाड़ इधर उधर भाग गये। देखो! द्रोणाचार्य और वीर कौरवों के बीच में पड़, शत्रुसैन्य के योद्धा कैसे चक्कर लगा रहे हैं। आचार्य द्रोण के पैने बाण, भ्रमरों के झुंड की तरह उन योद्धाओं के ऊपर गिरते हुए देख पड़ते हैं। इसी लिये ये लोग, भाग रहे हैं और एक दूसरे का धक्का लगने से इधर उधर गिरते हुए दिखलायी पड़ते हैं।

हे कर्ण! देखो, वह महाक्रोधी भीम अन्य पाण्डवों और सृञ्जयों को

सेना के शूरवीर योद्धाओं में फँस गया है। यह देख मुझे बड़ी प्रसन्नता होती है। मुझे यह निश्चय जान पड़ता है कि, मूर्ख भीम आज जगत को द्रोणमय देख कर, राज्य और जीवन की आशा से हाथ धो बैठा है।

कर्ण ने कहा—हे पुरुषसिंह! महाबाहु भीम जीवित रहते, कदापि युद्ध से न हटेगा और इन सम्पूर्ण योद्धाओं के सिंहनाद को भी न सह सकेगा। मैं समझता हूँ समस्त पाण्डव बलवान् एवं युद्धदुर्मद हैं। साथ ही वे शूर और कृतास्त्र हैं। अतः वे युद्ध छोड़ कभी न भागेंगे। विशेष कर वे लोग विष, अग्नि और जुए के खेल तथा वनवास के क्लेशों को स्मरण कर, कदापि रण-क्षेत्र से न भागेंगे। महाबाहु परम तेजस्वी कुन्तीनन्दन भीम युद्ध में प्रवृत्त हो, हम लोगों के मुख्य मुख्य महारथी वीरों का संहार करेगा। तलवार धनुष, शक्ति, घोड़े, हाथी, मनुष्य, रथ और लोहमय दण्ड से वह हमारी सेना का संहार करेगा। सात्यकि प्रभृति महारथी योद्धा और पाञ्चाल, केकय, मत्स्य एवं पाण्डव सेना के मुख्य मुख्य शूरवीर पुरुषसिंह भी भीमसेन का साथ देंगे और भीम की आज्ञा से आपकी सेना का नाश करना आरम्भ करेंगे मेघ जैसे सूर्य की रक्षा करते हैं, वैसे ही वे वीर लोग भीम की रक्षा करेंगे। और चारों ओर से द्रोण पर टूट पड़ेंगे। यदि हमने व्रतधारी द्रोण की रक्षा न की तो मरने की इच्छा रखने वाले पतंगे जैसे दीपक पर टूटते हैं वैसे ही वे चारों ओर से द्रोण पर टूट पड़ेंगे और उन्हें बहुत दुःखी करेंगे। पाण्डव पक्षीय योद्धा वास्तव में शस्त्रनिपुण और प्रतिपक्षियों को रोकने में समर्थ हैं। मैं यह भी स्वीकार करता हूँ कि, इस समय द्रोण पर युद्ध का बड़ा भारी भार आ पड़ा है। जैसे मदमत्त हाथी को भेड़िये फाड़ डालते हैं वैसे ही पाण्डव, सदाचारी द्रोण को कहीं मार न डालें। अतः ऐसा समय उपस्थित होने के पूर्व ही हम लोगों को उनके निकट पहुँच जाना चाहिये।

सञ्जय बोले—हे धृतराष्ट्र! राजा दुर्योधन कर्ण के इन वचनों को सुन, भाइयों को साथ ले, बड़ी फुर्ती के साथ द्रोणाचार्य के निकट जाने को उद्यत हुआ। वहाँ पर अनेक वर्णों के घोड़ों पर सवार, द्रोणाचार्य के वध करने को

इच्छा रखने वाले तथा युद्ध में प्रवृत्त हुए पाण्डवों की सेना के शूरवीरों का महाघोर शब्द सुनायी देने लगा।

तेइसवाँ अध्याय

योद्धाओं के रथादि का वर्णन

राजा धृतराष्ट्र ने कहा—हे सञ्जय! क्रोध में भरे भीम आदि जो समस्त शूरवीर योद्धा द्रोण पर चढ़ आये थे, उन समस्त शूरवीरों के रथ के चिन्हों का वर्णन तुम मुझे सुनाओ।

सञ्जय बोले—रीछ जैसे रंग के घोड़ों वाले रथ पर बैठे हुए भीमसेन को सवार देख, रुपहले रंग के घोड़ों के रथ पर सवार शूर सात्यकि भी द्रोणाचार्य की ओर लौटा। क्रोध में भरा हुआ पराक्रमी युधामन्यु चातक पक्षी के समान रंगवाले घोड़ों से युक्त रथ पर सवार हो, द्रोणाचार्य के रथ की ओर दौड़ा। पाञ्चाल राजपुत्र धृष्टद्युम्न सुवर्णभूषित पारावत के रंग जैसे घोड़ों से युक्त रथ पर सवार हो, युद्ध में प्रवृत्त हुआ। पराक्रमी क्षत्रधर्मा अपने पिता की सहायता के लिये सुनहले रंग के घोड़ों से युक्त रथ पर सवार हो, लड़ाई के लिये निकला। शिखण्डीनन्दन क्षत्रदेव पद्मपत्र जैसे रंगवाले घोड़ों से युक्त रथ पर सवार था। काम्बोज देशीय एवं हरी झूलें ओढ़े हुए घोड़ों से युक्त रथ पर सवार हो नकुल आपकी सेना की ओर दौड़ा। मेघवर्ण जैसे घोड़ों से युक्त रथ पर सवार हो, क्रुद्ध उत्तमौजा द्रोणाचार्य की ओर झपटा। तीतर पक्षी के समान रंगवाले और शीघ्रगामी घोड़े, उस घोर युद्ध में शस्त्रधारी सहदेव के रथ को ले कर द्रोणाचार्य की ओर चले। वायु के समान वेग वाले, भयावह और काली पूँछ तथा हाथी दाँत के समान रूप वाले घोड़े, पुरुषसिंह युधिष्ठिर के रथ को ले रणभूमि में गये। समस्त सेना के शूरवीर योद्धा वायु जैसे वेगवान् घोड़ों पर सवार हो, महाराज युधिष्ठिर के रथ के पीछे हो लिये। सुवर्णभूषित कवच पहिन, राजा द्रुपद उस सारी सेना के साथ, धर्मराज के पीछे

पीछे चलने लगे। महाधनुर्धर राजा द्रुपद युद्धभूमि में सब प्रकार के शब्दों को सुन कर भी न [illegible] मस्तक पर चिह्न विशेष से युक्त उत्तम घोड़ों से युक्त रथ पर सवार हो लड़ने के लिये कौरव सेना की ओर चले। राजा विराट समस्त महारथी वीरों के साथ उनके अनुगामी हुए। केकय, शिखण्डी और धृष्टद्युम्न [illegible] अपनी सेना सहित मत्स्यराज विराट का अनुगमन करने लगे। [illegible] के घोड़े विराट के रथ की शोभा बढ़ा रहे थे। हल्दी के रंग [illegible] रंग के घोड़े विराटपुत्र शङ्ख के रथ में जुते हुए थे। केकयराज पाँचों भाइयों के रथों के घोड़ों का रंग वीरबधूटी जैसा लाल था। वे पाँचों भाई सुवर्ण जैसे दमक रहे थे और उनके रथों पर लाल रंग की ध्वजाएँ फहरा रही थीं। सुवर्ण की मालाएँ तथा कवच पहिने हुए तथा युद्धविद्या-विशारद वे पाँचों भाई कुरुसैन्य पर वैसे ही बाण वर्षा करते हुए गमन करने लगे, जैसे बादल आकाश से जलवृष्टि करते हैं। तुम्बुरु के दिये हुए और कच्चे पात्र के रंग जैसे घोड़ों से युक्त रथ पर सवार हो, शिखण्डी रणस्थल में गया। पाञ्चालों के बारह सहस्र महारथी इस युद्ध में आये थे। इनमें से [illegible] सहस्र शिखण्डी के पीछे पीछे चलते थे। पुरुषसिंह शिशुपाल-नन्दन धृष्टकेतु [illegible] करते हुए मृगों जैसी चौकड़ी मारने वाले घोड़ों से युक्त रथ पर सवार हो, कुरुसैन्य की ओर चला। अत्यन्त बलवान् चेदिराज धृष्टकेतु काम्बोज देशीय खाकी रंग के घोड़ों से युक्त रथ पर सवार हो, कौरवों की सेना की ओर दौड़े। पियाल के धुए जैसे रंगवाले शीघ्रगामी घोड़ों से युक्त रथ पर सवार हो, केकयराज सुकुमार बृहत्क्षत्र आगे बढ़े। मल्लिकाक्षोचन पद्मवर्ण वाले वाह्लिक देश के सुन्दर अलङ्कारों से भूषित घोड़े शिखण्डी-नन्दन क्षत्रदेव को रथ सहित लेकर, युद्धभूमि की ओर चल दिये। हे राजेन्द्र! श्याम ग्रीवा वाले और मन तथा वायु के समान शीघ्रगामी घोड़े, प्रतिविन्ध्य के रथ में जोते गये थे। पीले रंग के सुवर्ण भूषणों से भूषित घोड़े सेनाबिन्दु के रथ में जुते हुए थे। क्रौञ्चपक्षी जैसे रंगवाले घोड़े महारथी काशिराज के पुत्र के रथ में जोते गये थे। माषपुष्प के रंग

जैसे घोड़े अर्जुन के पुत्र सुतसोम के रथ में जुते हुए थे। अर्जुन को ये घोड़े सोम से मिले थे। सहस्र सोम की तरह सौम्य अर्जुन का पुत्र कौरवों के उदयेन्दु (इन्द्रप्रस्थ) में सोमलता की कुञ्ज में उत्पन्न हुआ था। इसीसे उसका नाम सुतसोम रखा गया था। शालपुष्प वर्ण के घोड़े नकुलपुत्र शतानीक के रथ में जुते हुए थे। पुरुषसिंह द्रौपदी-नन्दन श्रुतकर्मा के रथ में मोर की ग्रीवा जैसे रंग वाले उत्तम एवं सुवर्णभूषित वस्त्रालङ्कारों से सज्जित घोड़े जुते हुए थे। प्रशंसनीय नकुलपुत्र शतानीक साल के फूल जैसे तथा तरुण सूर्य जैसे लालरंग के घोड़ों से युक्त रथ पर सवार हो, समरक्षेत्र में आया था। (भीमसेन से उत्पन्न) द्रौपदी का पुत्र पुरुषव्याघ्र श्रुतकर्मा सुवर्ण की रासों वाले मोर के कण्ठ जैसे रंग के घोड़ों से युक्त रथ पर सवार हो, समरक्षेत्र में आया था। पपीहा के परों जैसे रंग वाले घोड़े शास्त्रों के निधिरूप द्रौपदी-नन्दन श्रुतकीर्ति के रथ को अर्जुन की तरह युद्धभूमि में ले आ रहे थे। समर में श्रीकृष्ण और अर्जुन से भी बढ़ कर पराक्रमी अभिमन्यु को पीले रंग के घोड़े, रथ सहित, द्रोणाचार्य की ओर ले जाने लगे। जो अपनी सेना को छोड़ पाण्डवों की सेना में आ मिला था, वह आपका पुत्र युयुत्सु, महाकाय घोड़ों से युक्त रथ पर सवार हो, रणभूमि में आया था। पियाल की तरह पीले और काले रंग के घोड़े, जो गहनों से भूषित थे, वेगवान् वृद्धक्षेम के पुत्र को रथ सहित युद्धक्षेत्र में ले गये। श्याम वर्ण के पैरों वाले और सारथि के इशारे पर चलने वाले घोड़े कुमार सौचित्त के रथ में जुते हुए थे। जिनकी पीठ पर कलाबत्तू के वस्त्र पड़े हुए, और पीले रंग की सुवर्ण माला धारण किये हुए घोड़े, श्रेणिमान् को रथ सहित ले कर, रणभूमि में उपस्थित हुए। लाल रंग के घोड़े, अस्त्रविद्या, धनुर्वेद और ब्राह्मवेद के जानने वाले सत्यधृति के रथ को ले, रणक्षेत्र में उपस्थित हुए। जिस पाञ्चाल देशीय सेनापति धृष्टद्युम्न ने द्रोणवध का बीड़ा उठाया था; उस धृष्टद्युम्न के रथ में पारावत रंग के घोड़े जुते हुए थे।

जब धृष्टद्युम्न द्रोणाचार्य की ओर चले, तब सत्यधृति, सौचित्ति श्रेणि-

भूमि पर गिर पड़ा, तब प्रद्युम्न ने शत्रुनाशकारी एक और बाण धनुष पर चढ़ाया।

[नोट—अठारहवें अध्याय के श्लोक १३-१४ में स्वयं प्रद्युम्न ने कहा है कि, रण में घायल पड़े हुए को जो मारता हो, उसे समझना चाहिये वह वृष्णिवंश ही में उत्पन्न नहीं हुआ। किन्तु इस समय प्रद्युम्न अपने कथन के सर्वथा विपरीत कार्य करते हैं।]

वृष्णि और यादववंश के समस्त राजागण इस बाण का बड़ा आदर करते थे। वह बाण विषधर सर्प की तरह फुंसकारता और अग्नि की तरह धधक रहा था। उस बाण के रोदे पर प्रद्युम्न के चढ़ाते ही आकाश में हाहाकार मच गया। उसी समय इन्द्र, कुबेर आदि समस्त देवगण ने नारद जी तथा मन के समान वेगवान् पवन के भेजा। वे दोनों प्रद्युम्न के निकट जा कहने लगे—हे वीर! तू इस राजा शाल्व का वध किसी प्रकार भी न कर सकेगा। क्योंकि रण में इसकी मृत्यु तेरे हाथ से नहीं है और यह बाण जिस पर छोड़ा जाता है वह मरे बिना नहीं रहता। हे महाबली प्रद्युम्न! विधाता ने शाल्व का मारा जाना देवकीनन्दन श्रीकृष्ण के हाथ से निर्दिष्ट कर रखा है। यह बात झूठी न पड़े—अतः तू अपने इस अमोघ बाण को उतार ले। यह सुन कर, प्रद्युम्न के बड़ा सन्तोष हुआ और उन्होंने अपने श्रेष्ठ धनुष से उस बाण को उतार कर तरकस में रख लिया। हे राजन्! तदनन्तर राजा शाल्व, प्रद्युम्न के बाण की मार से खिन्न हो रहा था। उसके मन में भी बड़ी ग्लानि हो रही थी। अतः वह सचेत होते ही खड़ा हो, सेना सहित भाग गया। यद्यपि वह बड़ा क्रूर था, तो भी वृष्णिवंशीय प्रद्युम्न ने उसे अच्छे प्रकार पीड़ित किया। इसीसे वह द्वारकापुरी के छोड़ और सौभ विमान में बैठ, उसी समय आकाश में चला गया।

बड़े घोड़ों से युक्त रथ पर सवार हो तेजि रणभूमि में पहुँचे। एक ही रंग की ध्वजा, कवच, धनुष और सफ़ेद घोड़ों वाला राजा शुक्ला युद्ध करने के लिये चला आ रहा था। प्रचण्ड तेज वाले, समुद्रसेन के पुत्र चन्द्रसेन के रथ को समुद्रोत्पन्न चन्द्रवर्ण के घोड़े लिये जा रहे थे। नील कमल जैसे वर्ण वाले, सुवर्ण के आभूषणों से विभूषित, नाना प्रकार की चित्र विचित्र मालाओं वाले घोड़ों से युक्त रथ पर सवार हो शिवि के पुत्र चित्ररथ ने युद्ध में प्रवेश किया। युद्धदुर्मद रथसेन, मटर के फूलों की तरह वर्ण वाले, लाल और श्वेत ग्रीवा वाले श्रेष्ठ घोड़ों से युक्त रथ पर बैठ, लड़ने को आया था। जो सब लोगों से बढ़ कर शूर प्रसिद्ध था, उस पटच्चर नामक असुर को मारने वाले, समुद्रतट-वर्ती-देशाधिपति के रथ को शुक जैसे रंगवाले घोड़े रणभूमि में ले कर आये। टेसू के फूल जैसे रंग वाले उत्तम अश्व अद्भुत प्रकार के कवच, ध्वजा, आयुध तथा माला को धारण करने वाले चित्रायुध को ले कर चले। जिसकी ध्वजा, कवच, धनुष, तथा घोड़े आदि सब ही नीले रंग के थे, वह राजा नील भी लड़ने को रवाना हुआ। राजा चित्र, नाना प्रकार के पैदल तथा रत्नजटित रथ, धनुष, हाथी, घोड़े और तरह तरह की ध्वजाएँ, पताकाएँ सजा युद्ध के लिये निकला। आसमानी रंग के श्रेष्ठ घोड़ों से युक्त रथ पर सवार हो, रोचमान का पुत्र हेमवर्ण लड़ने को चला। युद्ध-विद्या विशारद दण्डकेतु के रथ को मुर्गी के अंडे जैसे रंग के वे घोड़े जिनकी पीठ और अण्डकोश सेंदों की तरह चमकदार थे, खींच रहे थे। जिसके पिता श्रीकृष्ण के हाथ से मारे गये तथा जिसके कपाट टूटे और जिसके बन्धु बान्धव भागे थे, जिसने इसी कारणवश भीष्म, बलराम, द्रोणाचार्य और कृपाचार्य से अस्त्रविद्या सीख कर, रुक्मि, कर्ण, अर्जुन और श्रीकृष्ण के समान हो कर, द्वारकापुरी को नष्ट करने तथा सम्पूर्ण पृथिवी को जीतने की इच्छा की थी, जो अपने बुद्धिमान, हितैषी सुहृदों द्वारा मना किये जाने पर भी श्रीकृष्ण के साथ शत्रुता त्याग कर, अपने राज्य का शासन करते हैं, वे ही ऐश्वर्य और पराक्रम से युक्त पाण्ड्यराज

सागरध्वज वैडूर्यमणि और चन्द्रकिरण की तरह प्रकाशित, घोड़ों से युक्त रथ पर सवार हो, अपना दिव्य धनुष तान कर, द्रोणाचार्य की ओर दौड़े। अडूसे के वर्णवाले घोड़ों से युक्त रथों पर सवार हो, चौदह सहस्र महारथी पाण्ड्यराज के पीछे पीछे चलते थे। विविध रूपों, आकृतियों और मुखों वाले घोड़े, रथियों के मण्डल में ध्वजारूपी घटोत्कच को साथ ले कर चल रहे थे। भरतवंशी सब राजाओं के मन को उल्लङ्घन कर और समस्त अभीष्ट वस्तुओं को त्याग कर, जो भक्तिपूर्वक युधिष्ठिर की सहायता के लिये उनकी ओर चला गया था, उस महापराक्रमी रक्तनेत्र महाबाहु बृहन्त को ले कर, बड़े शरीरों वाले घोड़े, लंबी ध्वजा से युक्त सुवर्णमय रथ सहित, युद्धभूमि की ओर चले। सुवर्ण के समान रूप वाले उत्तम घोड़ों से युक्त रथों पर सवार हो धर्मराज के पृष्ठरक्षक शूरवीर योद्धा लोग लड़ने के लिये शत्रुसैन्य की ओर चले। देवरूपी दूसरे कितने ही प्रभद्रक योद्धा अनेक वर्णों के उत्तम घोड़ों से युक्त रथों पर सवार हो, युद्ध करने के लिये द्रोणाचार्य की ओर दौड़े।

हे राजेन्द्र! भीमसेन सहित वे सब सुवर्ण ध्वजा से युक्त, प्रभद्रक योद्धा लोग ऐसे शोभित हुए, जैसे इन्द्र के सहित सम्पूर्ण देवता शोभायमान होते हैं। सेनापति धृष्टद्युम्न सम्पूर्ण सेना को अतिक्रम कर के सब शूरवीरों के सहित प्रकाशित होने लगे। परन्तु द्रोणाचार्य इन सब शूरवीरों को अतिक्रम कर के अत्यन्त ही प्रकाशित हुए। द्रोणाचार्य की ध्वजा और सुवर्ण-मय कमण्डलु बड़े शोभायमान हुए देख पड़ते थे। भीमसेन की वैडूर्यमणि और सुवर्ण भूषित सिंहचिन्ह से चिन्हित ध्वजा भी चमचमा रही थी। कुरुश्रेष्ठ महातेजस्वी युधिष्ठिर की ग्रहों के चित्रों तथा सुवर्णमय चन्द्रमा के चिन्ह से युक्त उत्तम ध्वजा बड़ी सुन्दर जान पड़ती थी। महाराज युधिष्ठिर की ध्वजा पर नन्द, उपनन्द नामक दो दिव्य मृदङ्ग थे। ये बिना बजाये ही अपने आप यंत्र द्वारा मधुर स्वर से बजते हुए समस्त शूरवीरों को हर्षित करते थे। नकुल के रथ पर, सुवर्णमयदण्ड से युक्त अत्युच एवं शरभचिन्ह से युक्त भयङ्कर ध्वजा देख पड़ती थी। सहदेव के रथ पर घण्टा और पताका विशिष्ट

एवं शत्रुओं के शोक को बढ़ाने वाली स्वर्णभूषित हंसचिन्ह से युक्त उत्तम ध्वजा दिखलायी देती थी। पाँचों द्रौपदी पुत्रों के रथों की ध्वजाओं पर, धर्म, वायु, इन्द्र और उभय अश्विनीकुमारों की प्रतिमाएँ देख पड़ती थीं। अभिमन्यु के रथ की ध्वजा पर उज्वल तपाये हुए सुवर्ण के समान हिरण्यमय शार्ङ्ग पक्षी की मूर्ति थी। घटोत्कच के रथ पर, गिद्धपक्षी के चिन्ह से युक्त ध्वजा फहरा रही थी। पूर्वकाल में रावण के घोड़े जैसे कामगामी थे, वैसे घटोत्कच के घोड़े भी इच्छानुकूल चलने वाले थे।

हे राजन्! धर्मराज युधिष्ठिर के पास माहेन्द्र और भीमसेन के पास वायव्य नामक धनुष थे। पूर्वकाल में ब्रह्मा ने त्रिलोकी की रक्षा के लिये जिस आयुध को रचा था, वह दिव्य, अजर और अमर आयुध अर्जुन के पास था। नकुल के लिये वैष्णव नामक धनुष और सहदेव के लिये अश्विनी-कुमार का बनाया हुआ धनुष था। घटोत्कच के पास पौलस्त्य नामक धनुष था। द्रौपदी के पाँचों पुत्रों के पास यथाक्रम रौद्र, आग्नेय, कौबेर, याम्य और गिरीश नामक धनुष थे। रोहिणीसुत बलदेव जी ने जिस रौद्र और श्रेष्ठ धनुष को प्राप्त किया था, वह उन्होंने प्रसन्न हो अभिमन्यु को दे दिया था। इस प्रकार शूरवीरों के रथों पर, फहराती हुई ध्वजाएँ, शत्रुओं के मनों में शोक उत्पन्न कर रही थीं। हे महाराज! इसी प्रकार बहुत सी ध्वजाएं तथा शूरों से युक्त द्रोणाचार्य की सेना परदे पर चित्रित चित्र सी दिखलायी पड़ती थी। इस समय हे राजेन्द्र! द्रोणाचार्य पर आक्रमण कर, आने वाले वीर राजाओं के गोत्र और नाम वैसे ही सुनायी पड़ते थे, जैसे स्वयम्वर में सुन पड़ते हैं।

चौबीसवाँ अध्याय

दैव का प्राबल्य

धृतराष्ट्र बोले—हे सञ्जय! भीमसेन आदि जो सम्पूर्ण योद्धा युद्ध में शामिल हुए थे, वे सब देवताओं की सेना को भी पीड़ित कर सकते हैं। पुरुष प्रारब्ध ही के वश में हो कर, कार्य करने में प्रवृत्त होता है और प्रारब्ध ही से नाना प्रकार के पुरुषार्थ किया करता है। जो युधिष्ठिर बहुत दिनों तक जटाधारी हो कर, वन वन में भ्रमण करते थे और सब से छिप कर अपना समय व्यतीत करते थे, वे ही इस समय दैव के संयोग से युद्ध के लिये बड़ी भारी सेना संग्रह कर रणभूमि में उपस्थित हुए। तब मेरे पुत्रों के लिये इससे बढ़ कर, और कौन सा अशुभ कर्म हो सकेगा। मनुष्य निश्चय ही प्रारब्ध के अनुसार जन्म लेता है। क्योंकि वह स्वयं जिस वस्तु की इच्छा नहीं करता, वह वस्तु प्रारब्ध उसे निश्चय ही दिला देता है। देखो; युधिष्ठिर जुए के खेल में हार कर, वनवासी हुए थे और अब वे फिर प्रारब्ध ही से सहाय सम्पन्न हुए हैं। पहले दुर्योधन ने मुझसे कहा था—हे तात! इस समय केकयराज, काशिराज और समस्त योद्धाओं के साथ कोशलराज मेरी ओर हैं। चेदि देशीय शूरवीर और वंग देशीय सम्पूर्ण योद्धा मेरे पक्ष में हैं। पृथिवी के जितने लोग तथा राजा मेरे पक्ष में हैं, उतने पाण्डवों के पक्ष में नहीं हैं। हे सूत! आज उसी सेना में रह कर, जब आचार्य द्रोण रणक्षेत्र में धृष्टद्युम्न के हाथ से मारे गये; तब भाग्य को छोड़ और क्या कहा जा सकता है। अतः प्रारब्ध ही बलवान है। नहीं तो, समस्त राजाओं के बीच रहने वाले, युद्धकार्य में अभिनन्दनीय, सर्वअस्त्रज्ञ द्रोणाचार्य की मृत्यु की सम्भावना ही क्या थी? मैं भीष्म और द्रोणाचार्य की मृत्यु का वृत्तान्त सुन के अत्यन्त ही सन्तापित और महामोह से मुग्ध हो गया हूँ। अब मुझे जीवित रहने की इच्छा नहीं है।

हे तात ! मुझे पुत्रस्नेह के वश देख, विदुर ने मुझसे जो वचन कहे थे, वे मेरे और दुर्योधन के विषय में ठीक होते देख पड़ते हैं। यदि कहीं मैंने विदुर का कहना मान, दुर्योधन को त्याग दिया होता और अन्य पुत्रों की रक्षा की होती, तो यह महाअनिष्टकर काण्ड आज क्यों उपस्थित होता। ऐसा करने से मेरे अन्य समस्त पुत्र तो जीवित रहते। जो मनुष्य धर्म को त्याग देता है और धन की इच्छा करता है, वह लोक परलोक दोनों से वञ्चित हो, क्षुद्रभाव को प्राप्त होता है। हे सञ्जय ! इस समय मेरे प्रधान पुरुषों का नाश होने से मेरे राष्ट्र के समस्त पुरुष हतोत्साह हो रहे हैं। अतः मुझे अब किसी भी शूरवीर के जीवित बचने की आशा नहीं है। जिन क्षमावान वीर एवं धर्मात्मा भीष्म और द्रोण से हम सदा अपनी आजीविका चलाते थे, वे अब परलोक को चले गये, तब अब जो योद्धा बच गये हैं, वे अब कैसे जीवित रह सकते हैं। हे सञ्जय ! तुम फिर मुझसे साफ साफ कहो कि, युद्ध में किन किन शूरवीरों ने युद्ध किया था और कौन कौन से योद्धा रणभूमि में मारे गये थे तथा रण छोड़ भागने वाले अधम पुरुष कौन कौन थे ? रथियों में श्रेष्ठ अर्जुन ने इस महायुद्ध में जो कार्य किये हों, वे सब तुम मुझे सुनाओ। मैं अर्जुन और भीम से बहुत डरता हूँ। हे सञ्जय ! पाण्डवों के युद्ध में प्रवृत्त होने पर मेरी सेना में वीरों का जो लगातार विनाश होता है, इसका कारण क्या है ? यह भी तुम मुझे बतलाओ। हे तात ! पाण्डव जब युद्ध के लिये रणभूमि में उपस्थित हुए थे, तब तुम लोगों के मन में क्या क्या विचार उठे थे ? मेरे किस किस योद्धा ने पाण्डवों के कौन कौन से योद्धाओं को रोका था ?

पचीसवाँ अध्याय

द्वन्द्व-युद्ध

सञ्जय बोले—हे राजन् ! जब पाण्डवों ने अपनी समस्त सेना सहित आचार्य द्रोण पर आक्रमण किया; तब मेघमण्डल में छिपे हुए सूर्य की तरह द्रोण को अस्त्रों शस्त्रों से ढका देख, हम लोग बहुत भयत्रस्त हुए। पाण्डव-वाहिनी के कूच करने पर जो धूल उड़ी, उससे हे राजन् ! आप की सेना ढक गयी। उस समय हम लोगों को कुछ भी नहीं देख पड़ता था। अतः हमने जाना कि, द्रोणाचार्य मारे गये। महाधनुर्धर शूरों के न करने योग्य कर्म को करने के लिये उद्यत उन शूरों को देख, दुर्योधन ने उनसे ये वचन कहे—हे क्षत्रियों ! आप लोग अपनी शक्ति, अपने उत्साह और अवसर के अनुसार, पाण्डव वीरों को रोको। तदनन्तर आपके पुत्र दुर्मर्षण ने भीमसेन को अपने सामने देख और द्रोणाचार्य की प्राणरक्षा करने के लिये, यमराज की तरह क्रुद्ध हो, भीम पर बाणों की वृष्टि की और उन्हें बाणों से ढक दिया। भीम ने भी बाणवृष्टि से दुर्मर्षण को पीड़ित किया। इस प्रकार दोनों ओर से घोर युद्ध होने लगा। आपकी सेना के समस्त राजा लोग, राज्य और प्राण की आशा त्याग कर और दुर्योधन की आज्ञा से, शत्रुओं की ओर भागे। कृतवर्मा ने द्रोणाचार्य के सम्मुख आये हुए सात्यकि को निवारण किया। सात्यकि ने भी क्रुद्ध हो कर और बाणों की वर्षा कर, कृतवर्मा का सामना किया। जैसे एक मतवाला हाथी, दूसरे मतवाले हाथी पर आक्रमण करता है, वैसे ही कृतवर्मा ने सात्यकि पर आक्रमण कर, उसे घायल किया। महाधनुर्धर क्षत्रवर्मा, द्रोण के ऊपर चढ़ा आ रहा था; उसे उग्रधन्वा सिन्धुराज जयद्रथ ने तीक्ष्ण बाण मार कर रोका। क्रुद्ध क्षत्रवर्मा ने सिन्धुराज के धनुष और ध्वजा को काट कर, दस बाणों से उसके मर्मस्थानों को वेध दिया। मानों हाथ ही में था, इस प्रकार फुर्ती से दूसरा धनुष ले, सिन्धुराज ने लोहे के बाणों से क्षत्रवर्मा को वेधना

आरम्भ किया। पाण्डवों की ओर से लड़ने वाले नरव्याघ्र वीर युयुत्सु को बड़ी सावधानी से सुबाहु ने द्रोणाचार्य के निकट जाने से रोका। अपने धनुष पर बाण चढ़ा, बाण चलाते हुए सुबाहु की परिघ समान दोनों भुजाओं को युयुत्सु ने काले तथा पीले रंग के दो क्षुरप्र नामक बाणों से काट डाला। इतने में पाण्डवश्रेष्ठ धर्मात्मा युधिष्ठिर ने द्रोण पर आक्रमण किया; किन्तु, जैसे समुद्र का तट, समुद्र को आगे बढ़ने से रोकता है, वैसे ही मद्रराज ने युधिष्ठिर को आगे बढ़ने से रोका। धर्मराज ने अनेक मर्मभेदी बाण जब मद्रराज के मारे, तब मद्रराज ने भी उनके चौंसठ बाण मार कर, सिंहनाद किया। तब धर्मराज ने दो क्षुरप्र बाणों से मद्रराज के रथ की ध्वजा और उनका धनुष काट गिराया। यह देख सैनिकों में बड़ा कोलाहल मचा। सेना सहित द्रोण की ओर बढ़ते हुए राजा द्रुपद को राजा बाल्हीक ने बाणवृष्टि कर तथा निज सैन्य की सहायता से रोक दिया। जिस प्रकार दो गज-यूथ-पति आपस में भिड़ जाते हैं, उसी प्रकार, उन दोनों वृद्ध राजाओं में घोर युद्ध होने लगा। पूर्वकाल में जैसे इन्द्र और अग्नि ने बलि पर आक्रमण किया था, वैसे ही सेना सहित अवन्तिराज विन्द और अनुविन्द, तथा मत्स्यराज विराट उनकी सेना पर बाण बरसाने लगे। इससे मत्स्य देशी सेना के साथ, कैकय देशी सेना का, देवता और असुरों जैसा युद्ध होने लगा। उभय सेनाओं के रथी, गजपति, घुड़सवार और पैदल चलने वाले वीर योद्धा भय त्याग युद्ध करने लगे। बाणजाल फैलाते हुए नकुलनन्दन शतानीक को द्रोण के पास जाने से सेनापति भूतकर्मा ने रोका। तब नकुल-नन्दन शतानीक ने तीन भल्ल बाणों से भूतकर्मा की दोनों भुजाएँ और उसका सिर काट डाला। विविंशति ने पराक्रमी सुतसोम को द्रोण की ओर जाते देख, उन्हें अपने अस्त्रों से रोका। तब पराक्रमी सुतसोम ने क्रुद्ध हो कर, शीघ्रता से उसे घायल कर, उसे आगे न बढ़ने दिया। भीम ने लोहमय छः बाणों से घोड़े और सारथि सहित साल्व को यमपुरी भेज दिया। हे राजन्! चित्रसेन-पुत्र मोर के रंग के घोड़ों से युक्त रथ पर चढ़, तुम्हारे पुत्र कृतवर्मा

को निवारण करने लगे। आपस में एक दूसरे के वध करने की कामना रखते हुए ये आपके दोनों पुत्र अपने अपने पिताओं का प्रिय करने की इच्छा से घोर युद्ध करने लगे। अश्वत्थामा ने युद्धक्षेत्र में प्रतिविन्ध्य को देख, अपने पिता द्रोणाचार्य की मानरक्षा के लिये उसका सामना किया। प्रतिविन्ध्य पिता की मानरक्षा के निमित्त, युद्धस्थित एवं सिंह-लाङ्गूल चिन्हित ध्वजा से युक्त रथ पर सवार अश्वत्थामा को बाणों से घायल करने लगा।

हे राजेन्द्र! जैसे किसान खेत में बीज बोते हैं, वैसे ही द्रौपदी-पुत्रों ने बाणवृष्टि से अश्वत्थामा को छिपा दिया। दुःशासन के पुत्र ने द्रौपदी के गर्भ से उत्पन्न अर्जुनपुत्र श्रुतकीर्ति को द्रोणाचार्य पर झपटते देख, उसे बाणों से रोका। श्रीकृष्ण के समान पराक्रमी द्रौपदीपुत्र श्रुतकीर्ति ने तीन भल्ल बाणों से दुःशासनपुत्र के रथ, घोड़े, धनुष और सारथी को काट कर गिरा दिया और वह द्रोणाचार्य की ओर बढ़ा। हे राजन्! जो दोनों सेनाओं के बीच बड़ा पराक्रमी माना जाता था और जिसने पटचर नामक राक्षस को मारा था, उस समुद्राधिप को, लक्ष्मण ने रोक लिया। पटचर को मारने वाला समुद्राधिप, लक्ष्मण के धनुष, उसकी ध्वजा को काट और उस पर बाणवृष्टि कर बड़ा सुशोभित हो रहा था। रण में बढ़ते हुए द्रुपदपुत्र तरुण शिखण्डी को महाबुद्धिमान् तरुण विकर्ण ने रोका। यज्ञसेन के पुत्र शिखण्डी ने विकर्ण को बाणजाल से ढक दिया। किन्तु आपके बलवान् पुत्र ने उस बाणजाल को काट कर, अपूर्व शोभा प्राप्त की। जो शूरवीर उत्तमौजा युद्ध में द्रोण के सामने बढ़ता चला जाता था, उसे आगे जा अंगद ने बाणवृष्टि से रोक दिया। उन दोनों की वह तुमुल मारकाट समस्त सैनिकों और उन दोनों पुरुषसिंहों का भी हर्ष बढ़ाने वाली हुई। महाधनुर्धर बलवान् दुर्मुख ने वत्सदन्त बाण से द्रोण की ओर जाते हुए वीर पुरुजित् को रोक दिया। तदनन्तर पुरुजित् ने दुर्मुख की भौहों के मध्य भाग में एक बाण तान कर मारा। अतः उसका मुख सनाल कमल जैसा जान पड़ने लगा। कर्ण ने लाल ध्वजा वाले पाँचों केकय भ्राताओं को, जो द्रोण की ओर

बढ़ना चाहते थे, रोक दिया। इससे उन पाँचों ने अति क्रुद्ध हो, बाणवृष्टि कर, कर्ण के ढक दिया। तब कर्ण भी उन पर वारंवार बाणों की वर्षा करने लगा। आपस में इन लोगों में इतनी बाणों की फिकायी हुई कि, रथों, सारथियों और घोड़ों सहित वे पाँचों भाई और कर्ण ढक गये। आपके दुर्जय, विजय और जय नामक तीन पुत्रों ने नील, काश्यपु और जयत्सेन नाम वाले राजाओं के बढ़ने से रोका। सिंहों, व्याघ्रों और चीतों का जैसे रीछों, भैंसों और बैलों से युद्ध होता है, वैसे ही उन छःहों का युद्ध हो रहा था। दर्शक बड़े चाव से इस लड़ाई को देख रहे थे। द्रोण की ओर बढ़ते हुए सात्यकि को क्षेमधूर्ति और बृहद् नामक भाइयों ने पैने बाणों से घायल कर दिया। जैसे वन में सिंह और दो मदमत्त गजों का युद्ध होता है, वैसे ही सात्यकि तथा क्षेमधूर्ति एवं बृहद् में विस्मयोत्पादक युद्ध हुआ। क्रोध में भर बाण चलाते हुए चेदिराज ने उस अम्बष्ठ को रोका, जिसने अकेले ही द्रोण के साथ लड़ने की प्रतिज्ञा की थी। यह देख अम्बष्ठ ने हड्डियों को तोड़ने वाली शलाका से चेदिराज को वेधा। उस समय चेदिराज धनुष बाण छोड़, रथ के नीचे कूद पड़ा। क्रोधमूर्ति, वृष्णिवंशी, वृद्धक्षेम के पुत्र को, महानुभाव शरद्वान् के पुत्र कृपाचार्य ने छोटे छोटे तीर मार कर रोका। अद्भुत रीति से युद्ध करने वाले, इन कृप और वृष्णियों को जिन लोगों ने लड़ते देखा, वे युद्ध में ऐसे तन्मय हो गये कि, उन्हें किसी दूसरी बात का ध्यान ही न रहा। द्रोण की ओर बढ़ते हुए आलस्यरहित राजा मणिमान को द्रोण के यश को बढ़ाने वाले सोमदत्त के पुत्र ने रोका। तब राजा मणिमान् ने सोमदत्त-नन्दन के धनुष, उसकी ध्वजा, उसके सारथि और उसको काट, उसे रथ के नीचे गिरा दिया। यज्ञस्तम्भ के चिह्न से चिह्नित ध्वजा वाले सोमदत्त-नन्दन ने, फुर्ती के साथ रथ से कूद कर, बड़ी पैनी तलवार से, घोड़े, सारथि और ध्वजा सहित मणिमान को काट गिराया। फिर स्वयं ही अपने रथ पर सवार हो, तथा दूसरा धनुष ले, स्वयं ही घोड़ों को हाँकता हुआ, वह पाण्डवों की सेना का संहार करने लगा। असुरों पर आक्रमण करने वाले इन्द्र की तरह

दुर्जय पाण्ड्य को शक्तिशाली वृषसेन ने बाण वर्षा, आगे बढ़ने से रोका। तदनन्तर द्रोण का नाश करने की कामना से घटोत्कच हमारे सैन्य पर गदा, परिघ, तलवार, मूसल, मुगदर, चक्र, भिन्दिपाल, फरसे, पट्टिश, शूल, पत्थर, अग्नि, जल, भस्म, मट्टी, तिनके तथा वृक्षों से प्रहार करता, पीड़ा पहुँचाता, मर्मस्थलों को बींधता, मसलता, सेना को नष्ट करता, भगाता तथा डराता हुआ, आगे को बढ़ने लगा। तब उस राक्षस को राक्षस अलंबुस ही विविध आयुधों और अन्य युद्धोपयोगी सामग्री से मारने लगा। उन दोनों राक्षसाधिपतियों का घोर युद्ध वैसे ही हुआ, जैसे शम्बरासुर के साथ इन्द्र का घोर युद्ध हुआ था।

हे राजन्! आपका मङ्गल हो। इस प्रकार आपकी और पाण्डवों की सेना के रथियों, हाथीसवारों तथा घुड़सवारों के सैकड़ों युद्ध हुए। द्रोण को मारने और बचाने के लिये जैसा इन दोनों सेनाओं में युद्ध हुआ, वैसा युद्ध पहले मैंने कभी न देखा था और न सुना ही था। हे राजन्! कहीं घोर, कहीं विस्मयकारी और कहीं रौद्ररसपूर्ण असंख्य युद्ध वहाँ दिखलायी पड़ते थे।

छब्बीसवाँ अध्याय

राजा भगदत्त के हाथी का पराक्रम

धृतराष्ट्र बोले—हे सञ्जय! जब पाण्डव इस प्रकार पृथक् कर युद्ध करने को उद्यत हुए और हमारे सैनिक भी यथाविभाग लड़ने को खड़े हो गये, तब वेगवान् कौरवों और पाण्डवों में कैसी लड़ाई हुई? अर्जुन के साथ संशप्तकों की लड़ाई कैसी हुई थी?

सञ्जय ने कहा—जब दोनों सेना के योद्धा लोग, इस प्रकार से व्यवस्था के अनुसार लड़ने लगे, तब आपके पुत्र राजा दुर्योधन ने गजसैन्य को साथ

से भीमसेन पर आक्रमण किया। जैसे एक मतवाला गज, दूसरे गज के अथवा एक साँड़ दूसरे साँड़ के सामने होता है, वैसे ही युद्धपटु, बाहुवीर्य से युक्त पराक्रमी भीमसेन राजा दुर्योधन के सम्मुख आया देख, गजसैन्य के ऊपर झपटा और बड़ी फुर्ती से, उस गजसैन्य को तितर बितर करने लगा। एवं जैसे कितने ही मदमत्त गज, भीमसेन के बाणों के प्रहार से विकल और मदरहित हो, रणक्षेत्र से भाग खड़े हुए। जैसे प्रबल पवन मेघ-मण्डल को छिन्न भिन्न कर डालता है, वैसे ही पवननन्दन भीमसेन ने उस गजसेना को छिन्न भिन्न कर दिया। जैसे सूर्य के उदय होने पर सूर्य, किरणों से शोभायमान होता है; वैसे ही भीमसेन के बाणों से समस्त गज व्यथित, घृणित तथा पीड़ित हो, शोभित होने लगे। राजा दुर्योधन, भीम-सेन को इस प्रकार, अपने गजसैन्य को तितर बितर करते देख, क्रुद्ध हुए और पैने बाणों से भीम को घायल करने लगे। लाल लाल नेत्र कर भीम ने दुर्योधन का वध करने की कामना से उन पर चोखे तीर चला, उन्हें घायल किया। राजा दुर्योधन भीमसेन के तीरों से विद्ध हो, प्रज्वलित सूर्यरश्मि की तरह, चमचमाते बाणों से भीम पर प्रहार करने लगे। पाण्डुनन्दन भीमसेन ने, क्रोध में भर, तुरन्त एक भल्ल से दुर्योधन के रथ की मणिमय गजचिह्न से चिह्नित ध्वजा को काट कर गिरा दिया। तदनन्तर दूसरे बाण से दुर्योधन का धनुष भी काट डाला।

हे राजन्! हाथी पर सवार राजा अङ्ग ने भीमसेन की मार से दुर्योधन को पीड़ित देख, भीम को क्षुब्ध करने की इच्छा से अपना हाथी उनकी ओर बढ़वाया। मेघगर्जन की तरह चिंघारते हुए राजा अङ्ग के गजराज को आते देख, भीमसेन ने उसके पेट में कितने ही पैने तीर मारे, जिसके प्रहार से वह गज, वज्र की चोट से टूटे हुए पर्वत की तरह, निर्जीव हो भूमि पर गिर पड़ा। गजराज के गिरते ही म्लेच्छराज अङ्ग, उसके ऊपर से जब नीचे कूद रहा था, तब भीमसेन ने बड़ी फुर्ती से एक भल्ल बाण से उसका सिर काट डाला। जब अङ्ग मारा गया, तब उसके साथ की सारी सेना, युद्धभूमि

ओर भागी। हाथी, घोड़े और घोड़ों से युक्त रथ, पैदल सिपाहियों को रूँधते हुए रणभूमि में दौड़ने लगे।

इस प्रकार जब सारी सेना रणभूमि में भागती हुई चारों ओर दौड़ रही थी, तब राजा भगदत्त अपने गजराज पर चढ़ कर, भीमसेन की ओर दौड़े। जिस हाथी के बल से देवताओं के राजा इन्द्र ने दैत्य दानवों को युद्ध में परास्त किया था। राजा भगदत्त ने उसी वंश में उत्पन्न हो, महाबली गजराज पर सवार हो, भीमसेन पर आक्रमण किया। उस महाबली विशाल गज ने अपने दोनों पांव और सूंड उठा भीमसेन के ऊपर आक्रमण किया। उसने लाल नेत्र कर, भीमसेन के बल को मथ कर, घोड़ों सहित उनके रथ को चूर चूर कर दिया। *अञ्जलिका वेध का ज्ञाता भीमसेन भी पैदल दौड़ कर, उस हाथी के शरीर से लिपट गया। उसके नीचे पहुँच कर, भीमसेन ने गज के पेट में मुक्के मारना आरम्भ किया। अपने को मारना चाहने वाले उस हाथी को वह मानों खेल खिलाने लगा। दस हज़ार हाथियों की तरह बल रखने वाला वह हाथी, भीमसेन को काल के हवाले करने के लिये कुँभार के चाक की तरह घुमाने लगा। इतने ही में भीमसेन उस हाथी के नीचे से निकल, उस गज के सामने आ गया। तब हाथी उसके पीछे दौड़, उसको सूँड में लपेट कर, घुटनों से मसलने लगा। गज ने भीमसेन की गर्दन को सूँड में लपेट कर उसे मार डालना चाहा, किन्तु भीमसेन चक्कर लगा सूँड से छूट गया और तुरन्त ही दूसरी बार हाथी के शरीर के नीचे घुस गया और अपनी सेना से उसके समान ही एक बली गज के आगमन की प्रतीक्षा करने लगा। तदनन्तर गज से छूट भीमसेन बड़े वेग से भागा। यह देख, सारी

---

*हाथी के पेट में एक स्थान ऐसा होता है जिसमें मुक्के मारने से हाथी के गुदगुदी होती है। यह गुदगुदी हाथी को अच्छी लगती है। इससे जब हाथी महावत के मारने पर भी आगे नहीं बढ़ता। इसीको अञ्जलिका वेध विद्या कहते हैं और भीमसेन इसे जानते थे।

सेना में बड़ा कोलाहल हुआ। लोग कहने लगे—हरे! हरे! भीम को हाथी ने मार डाला। पाण्डवों की सेना, हाथी से डर कर वहाँ आ पहुँची, जहाँ भीमसेन खड़े थे। उधर भीम का मारा जाना सुन, युधिष्ठिर, पाञ्चाल-राज तथा अन्य नरेशों ने भगदत्त को चारों ओर से घेर कर, उसके ऊपर सैकड़ों सहस्रों बाण छोड़े। किन्तु पर्वतेश्वर भगदत्त ने उस बाणवृष्टि को अपने अस्त्रों से निष्फल किया और हाथी को अङ्कुश से गोद उसे शत्रु-सैन्य पर लपकाया। हाथी के आक्रमण से पाण्डवों की सेना पीड़ित हुई। इस युद्ध में हाथी के द्वारा किया हुआ भगदत्त का यह युद्ध विस्मयकारी था। हे राजन्! दशार्णराज ने एक शीघ्रगामी मदोन्मत्त गज पर सवार हो, भगदत्त पर आक्रमण किया। उन दोनों गजों का युद्ध पूर्व समय के पक्षधारी और वृक्षों वाले दो पर्वतों की तरह हो रहा था। तदनन्तर भगदत्त के हाथी ने पीछे हट दशार्णराज के हाथी को अपनी ओर खींच और उसकी दाहिनी कोख चीर, उसे भूमि पर गिरा दिया। इतने में भगदत्त ने सूर्य की तरह चमकीले सात भालों से गज से आसनच्युत अपने शत्रु दशार्णराज को मार डाला। इसी बीच युधिष्ठिर ने अपनी विशाल रथवाहिनी से भगदत्त को चारों ओर से घेर उसे भालों से चलनी बना डाला। उस समय रथवाहिनी से घिरा हुआ गजारूढ़ भगदत्त पर्वतस्थ वन में धधकती हुई आग जैसा देख पड़ता था। भगदत्त के हाथी ने चारों ओर खड़े भयङ्कर धनुषधारियों के मण्डल को, जो बराबर बाण छोड़ रहे थे, चारों ओर से चक्कर देना आरम्भ किया। फिर भगदत्त ने अपने हाथी को हरा कर, सहसा युयुधान के रथ के ऊपर दौड़ाया। हाथी ने युयुधान का रथ उठा बड़े ज़ोर से फैंक दिया, किन्तु युयुधान रथ को हाथी द्वारा पकड़े जाते देखते ही रथ से कूद कर भाग गया था। इसलिये युयुधान बच गया। उसका सारथि और रथ दूर जा पड़ा। कुछ देर बाद सारथि ने सिन्धुदेश में उत्पन्न अपने घोड़ों को शान्त किया। घोड़े उठ कर खड़े हुए। घोड़ों का भय दूर कर और उन्हें पुनः रथ में जोत, सारथि सात्यकि के पास रथ लिये हुए पहुँचा। इतने में वह हाथी भी कुछ देर सुस्ता

और रथमण्डल से निकल, उसके बाहिर घूमने तथा अन्य राजाओं को उठा उठा कर फेंकने लगा। उस शीघ्रगामी हाथी से भयभीत राजाओं ने उस गज को एक सहस्र हाथियों के समान जाना। भगदत्त उस गज पर सवार हो शत्रुओं को वैसे ही मर्द रहा था, जैसे इन्द्र अपने वैरी दानवों को खदेड़ते हैं। पाञ्चालों की सैन्य में हाथी तथा घोड़े भयङ्कर शब्द करने लगे। जब भगदत्त इस प्रकार पाण्डवों को सता रहा था; तब भीमसेन क्रोध में भर पुनः भगदत्त के सामने गये। वेग पूर्वक भीम को आते देख, भगदत्त के हाथी ने उनके रथ के घोड़ों पर अपनी सूँड़ लपकायी। इससे भीमसेन के रथ के घोड़े भड़क कर, रथ को खींच कर बहुत दूर ले गये। तदनन्तर कुन्तीपुत्र रुचिपर्वा ने भगदत्त पर बड़ी तेज़ी से आक्रमण किया, रथ पर सवार काल जैसे रुचिपर्वा ने बाणों की झड़ी लगा दी। तदनन्तर सुन्दर अवयवों से सम्पन्न पर्वतेश्वर भगदत्त ने नतपर्व वाले तीरों से उसे यमसदन पहुँचा दिया। उस वीर के गिर जाने पर, मेघ जैसे जलधाराओं से पर्वत को उत्पीड़ित करते हैं, वैसे ही अभिमन्यु, द्रौपदी के पुत्र, चेकितान, धृष्टकेतु, युयुत्सु आदि सब योद्धा उस हाथी को मारने के लिये भयङ्कर सिंह गर्जन करते हुए, उस पर असंख्य तीर बरसाने लगे। तब भगदत्त ने पार्ष्णि, अङ्कुश और अँगूठा मार कर, हाथी को आगे बढ़ाया। तब हाथी अपनी सूँड उठा और नेत्र तथा कान चिपका शत्रुओं के सामने जा डटा। उसने पैरों से घोड़ों को दबा, सात्यकि के सारथी को मार डाला। हे राजन्! युयुत्सु रथ से कूद कर भाग गया। तब उस गज को मारने के लिये पाण्डवों के पक्ष के योद्धाओं ने भयङ्कर गर्जन कर, हाथी पर बाण वृष्टि की। यह देख आपके पुत्र ने क्रुद्ध हो, अभिमन्यु पर आक्रमण किया। इस समय हाथी पर बैठ, शत्रुओं पर बाणवृष्टि करता हुआ, राजा भगदत्त किरणों को विस्तारित करते हुए सूर्य की तरह जान पड़ता था। अभिमन्यु ने बारह, सात्यकि ने दस और द्रौपदी के पुत्र तथा धृष्टकेतु ने तीन तीन बाण मार कर, उसे बेध डाला। महापरिश्रम से छोड़े हुए बाणों से बिंधा हुआ उसका गज, सूर्य

की किरणों से छाये हुए महामेघ की तरह शोभायमान हो रहा था। शत्रुओं के तीरों से पीड़ित और महावत की चतुरता तथा परिश्रम से बढ़ाया हुआ वह हाथी शत्रुओं को सूँड़ से पकड़ पकड़ दहिनी ओर फेंकने लगा। जैसे ग्वाला अपनी लाठी से घेर कर सब गौओं को एकत्र कर देता है, वैसे ही भगदत्त ने भी हाथी की सहायता से समस्त सेना को बारंबार घेर कर, एक स्थान पर जमा किया और उसे चारों ओर से घेर लिया। हाथी से भयत्रस्त हो भागते हुए पाण्डवों के सैनिकों का शब्द बाज पक्षी से खदेड़े हुए और काँव काँव कर भागे हुए कौओं जैसा हो रहा था। हे राजन्! बड़े अङ्कुश से गोदा हुआ वह गज, शत्रुओं को वैसे ही भयत्रस्त कर रहा था, जैसे पूर्व कालीन सपक्ष पर्वत अथवा पोता-रूढ़ यात्रियों को खलभलाता हुआ समुद्र भयत्रस्त करता है। इस युद्ध में भयभीत हो भागते हुए हाथियों, घोड़ों, रथियों और राजाओं के चीत्कार शब्द ने भयानक रूप धारण किया और वह पृथिवी, आकाश, स्वर्ग, दिशाओं और उपदिशाओं में व्याप्त हो गया। राजा भगदत्त ने अपने हाथी द्वारा शत्रुसैन्य का वैसे ही विध्वंस किया जैसा पूर्वकाल में देवताओं की सुरक्षित सेना का विरोचन ने नाश किया था। उस समय पवन प्रचण्ड वेग से चल रहा था। अतः धूल से आकाश और सैनिक छिप गये थे। भगदत्त का अद्वितीय हाथी चारों ओर दौड़ता हुआ लोगों को ऐसा जान पड़ता था, मानों हाथियों की धाँग दौड़ती हो।

सत्ताइसवाँ अध्याय

संशप्तकों की अर्जुन से मुठभेड़

सञ्जय बोले—हे धृतराष्ट्र! तुमने मुझसे अर्जुन के युद्ध का जो वृत्तान्त पूँछा, अब मैं उसीका वर्णन करता हूँ। ध्यान से सुनो। जब राजा भगदत्त

इस प्रकार लड़ रहा था, तब समरभूमि में बड़ी धूल उड़ी। उस समय भगदत्त का गजराज बड़े ज़ोर से चिंघार रहा था। उस धूल का उड़ना देख और हाथी का चिंघारना सुन, अर्जुन ने श्रीकृष्ण से कहा—हे मधुसूदन! जान पड़ता है, राजा भगदत्त अपने महाबली गजराज पर सवार हो, मेरे पक्ष के योद्धाओं पर अत्याचार कर रहा है। उसीके गजराज के चिंघारने का यह शब्द सुन पड़ रहा है। मैं गजराज पर सवार राजा भगदत्त को, युद्ध में इन्द्र से कम नहीं समझता। धराधाम पर गजारूढ़ हो युद्ध करने में, राजा भगदत्त अद्वितीय है। उसका हाथी भी सर्वश्रेष्ठ है। उस हाथी के जोड़ का दूसरा हाथी इस धराधाम पर नहीं है। वह गजराज सब शस्त्रों की मार तथा अग्निस्पर्श भी सह सकता है और बड़ा पराक्रमी होने से थकता भी नहीं। यदि चाहें तो वह गज अकेला ही आज समस्त पाण्डव पक्ष की सेना का संहार कर सकता है। हम दोनों को छोड़ उस गजराज का सामना और कोई नहीं कर सकता। अतः भगदत्त जहाँ लड़ रहा है वहाँ तुम मेरे रथ को फुर्ती के साथ ले चलो। अवस्था और बल के अभिमान में चूर भगदत्त को आज मैं इन्द्र का प्रिय अतिथि बना स्वर्ग में भेजूँगा।

अर्जुन के कथनानुसार श्रीकृष्ण ने अपना रथ उस ओर मोड़ दिया, जिस ओर भगदत्त पाण्डवों की सेना तितर बितर कर रहा था। अर्जुन को दूसरी ओर जाते देख, चौदह हज़ार संशप्तक योद्धा अपनी अनुगत सम्पूर्ण सेना सहित, उनके पीछे हो लिये और लड़ने के लिये ललकारने लगे। इन चौदह हज़ार संशप्तक योद्धाओं में दस सहस्र त्रिगर्त देशीय, महारथी और चार सहस्र यादव योद्धा थे। हे राजेन्द्र! उधर राजा भगदत्त पाण्डवों की सेना को नष्ट करता हुआ दिखलायी पड़ता था और इधर संशप्तक योद्धा अर्जुन को लड़ने के लिये ललकार रहे थे। इससे अर्जुन चिन्तित हो सोचने लगे कि, लौट कर संशप्तकों से मैं लड़ूँ अथवा धर्मराज के निकट पहुँच भगदत्त का वध करूँ? इन दोनों में कौन सा कार्य आवश्यक है। इस

प्रकार के विचार में पड़ अर्जुन का मन द्विविधा में पड़ गया। अन्त में अर्जुन ने सोच विचार कर यह निश्चय किया कि, इस समय संशप्तक योद्धाओं से लड़ना ही ठीक है। महारथियों में श्रेष्ठ कपिध्वज अर्जुन हज़ारों संशप्तक योद्धाओं का संहार करने के लिये लौटे और उनसे भिड़ गये। दुर्योधन और कर्ण ने अर्जुन का वध करने की आज यही व्यवस्था कर रखी थी कि, एक ओर तो संशप्तक अर्जुन को युद्ध में अटका रखें और दूसरी ओर भगदत्त पाण्डवों की सेना पर अपना महाबली गजराज चला, उपद्रव करे। एक ही समय में दो कार्य उपस्थित होने पर, अर्जुन द्विविधा में पड़ जायगा। तब अर्जुन का मार डालना कठिन न होगा। किन्तु द्विविधा में पड़ने पर भी अर्जुन ने अपने शत्रुओं की व्यवस्था उलट डाली। संशप्तक योद्धाओं में से मुख्य मुख्य योद्धाओं का वध कर, अर्जुन ने दुर्योधन और कर्ण के विचार को धूल में मिला दिया।

हे राजन्! संशप्तक योद्धा एक एक बार एक एक लाख बाण अर्जुन पर छोड़ने लगे। तब तो बाणजाल के नीचे घोड़ों, सारथि और रथ सहित अर्जुन छिप गये। श्रीकृष्ण का शरीर पसीने से तराबोर हो गया और वे मोहित हो गये। तब अर्जुन ने उस बाणजाल को ब्रह्मास्त्र से नष्ट कर डाला। धनुष, बाण, रोदा और तनुत्राण सहित सैकड़ों वीर योद्धा, घोड़ों, रथों, ध्वजाओं और सारथियों सहित अर्जुन के महास्त्र से मर कर पृथिवी पर गिरने लगे। वृक्षों सहित पर्वत-शिखरों तथा मेघों की तरह सुसज्जित हाथियों के समूह अपने सवारों सहित अर्जुन के बाणों के प्रहार से मर मर कर पृथिवी पर गिरने लगे। अर्जुन के बाणों से ध्वजाएँ, कवच और सवारों सहित बढ़िया घोड़े मर कर, पृथिवी पर गिर गये। शूरवीर पुरुषों के प्रास, तलवार, परिघ, मूसल और मुग्दर आदि अस्त्रों सहित भुजाएँ कट कट कर, भूमि पर गिरती हुई दिखलायी देने लगीं। हे भारत! कितने ही महारथी शूरवीरों के सूर्य चन्द्र तुल्य चमचमाते सिर, अर्जुन के पैने बाणों से कट कर पृथिवी पर गिर रहे थे। जब रोषान्वित हो अर्जुन ने

शत्रुओं का नाश करना आरम्भ किया, तब समस्त सेना के योद्धा नाना भांति के बाणों के समूह से पूर्ण हो कर शोभित होने लगे। जैसे मतवाला हाथी कमल के वन को उजाड़ता हुआ चारों ओर भ्रमण करता है, वैसे ही अर्जुन सम्पूर्ण सेना के पुरुषों को अपने अस्त्रों से पीड़ित करने लगे। सब देखने वाले लोग धन्य धन्य कह अर्जुन की प्रशंसा करने लगे। यदुकुल-शिरोमणि श्रीकृष्णचन्द्र, इन्द्र के समान अर्जुन के इस आश्चर्यकारी कर्म को देख, विस्मित हुए और बोले—हे अर्जुन! आज युद्ध में जैसा पुरुषार्थ प्रदर्शित तुमने किया है; वैसा पुरुषार्थ तो इन्द्र, यम, कुबेर भी नहीं दिखला सकते। मैंने सैकड़ों सहस्रों संशप्तक वीरों को तुम्हारे बाणों से लगातार मर मर कर भूमि पर लोट पोट होते देखा है।

हे राजन्! मरते मरते जो संशप्तक योद्धा वहाँ बच गये थे, अर्जुन ने बड़ी फुर्ती से उनका भी वध कर डाला और श्रीकृष्ण से कहा—अब तुम मेरा रथ हाँक कर भगदत्त की ओर ले चलो।

अट्ठाइसवाँ अध्याय

भगदत्त और अर्जुन की लड़ाई

सञ्जय ने कहा—हे धृतराष्ट्र! आगे जाने के लिये इच्छुक अर्जुन के मन के समान वेगवान् एवं जरी के काम की झूलों से आच्छादित घोड़ों को श्रीकृष्ण ने बड़ी शीघ्रता से द्रोण की सेना की ओर हाँका। इस प्रकार कुरु-श्रेष्ठ अर्जुन, द्रोण से पीड़ित अपने भाइयों की सहायता के लिये जाने लगे। यह देख सुशर्मा अपने भाइयों को साथ ले, अर्जुन के पीछे दौड़ा। अजितों को जय करने वाले और श्वेत घोड़ों से युक्त रथ पर सवार अर्जुन ने श्रीकृष्ण से कहा—हे अच्युत! देखिये, यह सुशर्मा अपने भाइयों सहित मुझे लड़ने के लिये बुला रहा है। हमारी सेना उत्तर की ओर भागी जा रही

है और इन संशप्तकों ने मेरे मन को दुविधा में डाल दिया है। अब मेरे सामने इस समय यह प्रश्न उपस्थित है कि, मैं इन संशप्तकों को मारूँ या शत्रु से पीड़ित अपने भाईबन्दों की रक्षा करूँ। अतः मेरे मन में जो उलट पलट हो रही है वह तुम जानते ही हो। अब तुम्हीं बतलाओ, कौन सा काम करने से मेरा कल्याण होगा।

श्रीकृष्ण ने यह सुन कर, रथ को उस ओर घुमा दिया जिस ओर त्रिगर्तपति सुशर्मा लड़ने के लिये अर्जुन को बुला रहा था। अर्जुन ने सात बाण चला सुशर्मा को घायल किया। फिर दो क्षुरप्र बाण से उसका धनुष और उसके रथ की ध्वजा काट कर गिरा दी। फिर त्रिगर्ताधिपति के भाई को घोड़े और सारथि सहित छः बाण मार उसे यमपुर भेज दिया। तदनन्तर सुशर्मा ने निशाना बाँध, सर्प जैसी लोहे की शक्ति अर्जुन पर और तोमर श्रीकृष्ण के ऊपर फेंका। अर्जुन ने तीन बाण मार शक्ति को और तीन बाण मार तोमर को खण्ड खण्ड कर डाला। फिर बाण प्रहार से सुशर्मा को अचेत कर अर्जुन पीछे को लौटे। उस समय महावृष्टि करने वाले इन्द्र की तरह बाणवृष्टि करने वाले अर्जुन के सामने, हे राजन्! आपकी सेना का कोई भी वीर खड़ा न रह सका। जैसे अग्नि घास फूँस को जला कर भस्म कर डालता है, वैसे ही अर्जुन बाणवृष्टि से समस्त महारथियों को मारते हुए चले जाते थे। जैसे मनुष्य अग्नि के स्पर्श को नहीं सहन कर सकते वैसे ही बुद्धिमान् कुन्तीपुत्र अर्जुन के वेग को कोई भी नहीं सह सकता था। हे राजन्! अर्जुन बाणवृष्टि से सेनाओं को आच्छादित करते हुए गरुड़ की तरह राजा भगदत्त पर झपटे। मित्रों के आनन्द और शत्रुओं के शोक को बढ़ाने वाले अर्जुन अपने गाण्डीव धनुष को तान क्षत्रियों का नाश करने के लिये भगदत्त की ओर चले। हे राजेन्द्र! जैसे नाव चट्टान से टक्कर खा चूर चूर हो जाती है, वैसे ही अर्जुन के बाणों से आपकी सेना छिन्न भिन्न हो गयी। तब आपकी ओर के दस हज़ार वीर योद्धा दृढ़ निश्चय कर और प्राणों को हथेली पर रख, अर्जुन के

सामने गये। धैर्यवान् अर्जुन उनको अपने सामने देख न तो घबड़ाये और न भयभीत ही हुए। वे पैने बाणों से उन समस्त योद्धाओं को निवारण करने लगे। जैसे मदमाता साठ वर्ष की उम्र वाला बलवान् हाथी कमलवन को रौंधता है, वैसे ही अर्जुन क्रोध में भर, शत्रुसैन्य का नाश करने लगे। जब इस प्रकार कुरुसैन्य का नाश होने लगा; तब राजा भगदत्त अपने उस महाबली हाथी पर चढ़ कर सहसा अर्जुन के सामने उपस्थित हुए। पुरुषसिंह अर्जुन ने रथ ही से उस बलवान् गजराज को रोका। अर्जुन के साथ वह गजराज लड़ने लगा। अर्जुन और भगदत्त दोनों महावीर योद्धा सुसज्जित रथ और हाथी पर सवार हो समरभूमि में युद्ध करते हुए चारों ओर भ्रमण करने लगे। मेघ तुल्य गजराज पर सवार भगदत्त, मेघवाहन इन्द्रतुल्य अर्जुन के ऊपर बाणवृष्टि करने लगे। इन्द्रपुत्र अर्जुन बराबर अपने बाणों से भगदत्त के बाणों को बीच ही में काट कर गिरा देते थे। राजा भगदत्त ने अर्जुन की बाणवृष्टि को निवारण कर, अपने तीरों से श्रीकृष्ण और अर्जुन को घायल किया। तदनन्तर उन दोनों को रथ सहित बाणजाल से ढक, अर्जुन का वध करने के लिये भगदत्त ने अपना हाथी उस ओर बढ़ाया। रोष में भरे गजराज को यमराज की तरह अपनी ओर आते देख, श्रीकृष्ण ने बड़ी फुर्ती से रथ बांयी ओर मोड़ दिया। तब अपनी दहिनी ओर स्थित गजराज को मय राजा भगदत्त के मार डालने का अर्जुन को सुअवसर प्राप्त होने पर भी उन्होंने क्षत्रियधर्म को याद कर, ऐसा न किया।

हे राजन्! भगदत्त के गजराज ने अनेक हाथियों, घोड़ों, और रथियों को यमलोक भेज दिया। यह देख अर्जुन बहुत क्रुद्ध हुए।

उनतीसवाँ अध्याय

भगदत्त का विनाश

राजा धृतराष्ट्र कहने लगे—हे सञ्जय! अर्जुन ने क्रुद्ध हो, राजा भगदत्त से किस प्रकार युद्ध किया और पराक्रमी भगदत्त ने भी अर्जुन के साथ किस प्रकार संग्राम किया था? यह सब हाल तुम मुझे विस्तार पूर्वक सुनाओ।

सञ्जय ने कहा—जब श्रीकृष्ण और अर्जुन राजा भगदत्त के साथ युद्ध करने लगे, तब समस्त शूरवीर योद्धाओं ने उन्हें काल के कराल गाल में पड़ा हुआ समझ लिया। हे भारत! राजा भगदत्त गजराज पर चढ़, रथ पर सवार श्रीकृष्ण और अर्जुन के ऊपर अविराम बाणवृष्टि करने लगा और उसने धनुष के रोदे को कान तक तान सान पर रखे हुए लोहे के पैने बाणों को छोड़, श्रीकृष्ण को घायल किया। भगदत्त के छोड़े हुए तीर श्रीकृष्ण के शरीर को भेद कर भूमि पर गिरे। तब अर्जुन राजा भगदत्त का धनुष और कवच अपने पैने बाणों से काट कर, प्रसन्नता पूर्वक उनके साथ लड़ने लगे। राजा भगदत्त ने सूर्यरश्मियों की तरह चमचमाते चौदह तोमर अर्जुन के ऊपर छोड़े। किन्तु अर्जुन ने अपने बाणों से उन चौदहों तोमरों के तीन तीन खण्ड कर उन्हें भूमि पर गिरा दिया। तदनन्तर अर्जुन ने बाणों से भगदत्त के हाथी का कवच काट गिराया। कवच कटते ही उस हाथी का शरीर सारे बाणों के चलनी हो गया और मेघरहित जलधार से युक्त पर्वत की तरह, उसके शरीर से लोहू बहने लगा। फिर प्रतापी भगदत्त ने सोने की मूँठ की एक लोहमयी शक्ति चलायी। अर्जुन ने बड़ी फुर्ती से बीच ही में बाणों से काट कर उसे भूमि पर गिरा दिया। फिर उसकी ध्वजा और छत्र को काट, हँस कर दस बाणों से भगदत्त को घायल किया।

हे राजेन्द्र! भगदत्त ने अर्जुन के कङ्कपत्रयुक्त बाणों से बिद्ध हो, अर्जुन को लक्ष्य कर उनके ऊपर कई एक तोमर फेंके और सिंहनाद किया। उन तोमरों से अर्जुन का किरीट छिप गया। तब किरीट को सुधारते हुए अर्जुन

ने भगदत्त से कहा—अब तुम इस दुनिया को एक बार भली भाँति देख लो। क्योंकि फिर तुम इसे न देख सकोगे। यह सुन भगदत्त ने एक प्रचण्ड धनुष हाथ में ले श्रीकृष्ण और अर्जुन पर बाणवृष्टि की। इतने में अर्जुन ने बाणों से भगदत्त के हाथ का धनुष और तरकस काट डाले। तदनन्तर पैने बाणों से अर्जुन ने भगदत्त के मर्मस्थल वेध डाले। तब भगदत्त ने मर्म-स्थानों के विद्ध होने के कारण अत्यन्त पीड़ित हो, वैष्णवास्त्र के मंत्र से अङ्कुश को अभिमंत्रित कर, अर्जुन की छाती को लक्ष्य कर उसे फेंका। तब श्रीकृष्ण ने अर्जुन के सामने हो उस अङ्कुश को अपनी छाती पर रोप लिया। वह वैष्णवास्त्र श्रीकृष्ण की छाती पर गिरा। सुगन्धित पुष्पों से महकती हुई सूर्य अथवा चन्द्रमा की तरह कान्तिमती तथा अग्नि की तरह लाल रंग के पत्तों से सुशोभित वैजयन्ती माला की तरह वह शोभा देने लगा। अलसी के पुष्प की तरह श्याम रंग वाले श्रीकृष्ण भी पवन से हिलते हुए कमल पत्तों से युक्त माला से अतीव शोभायमान हो रहे थे। किन्तु यह सब होते हुए भी अर्जुन को यह देख बड़ा कष्ट हुआ। वे दुःखित हो श्रीकृष्ण से बोले—हे पुण्डरीकाक्ष! तुमने तो यह प्रतिज्ञा की थी कि, तुम मेरे सारथी बन केवल रथ हाँकोगे और युद्ध नहीं करोगे। किन्तु मैं देखता हूँ, इस समय तुम, अपनी उस प्रतिज्ञा की रक्षा नहीं कर रहे हो। यदि मैं विपत्ति में फँस गया होता, अथवा शत्रु का वार रोकने में असमर्थ होता, तो आपका ऐसा करना ठीक भी था; परन्तु मेरे रहते तुम्हें ऐसा कर्म करना उचित नहीं था। यह, तो तुम जानते ही हो मैं धनुष बाण ले, समस्त देवताओं और असुरों सहित, समूची पृथिवी को जीत सकता हूँ।

अर्जुन के इन अर्थ भरे वचनों को सुन, श्रीकृष्ण ने कहा—हे अनघ! हे अर्जुन! मैं तुम्हें एक गुप्त एवं पुरातन इतिहास सुनाता हूँ। उसे सुनो। मेरी चार सनातन मूर्तियाँ हैं। मैं प्राणियों की रक्षा के लिये, निज आत्मा को चार भागों में बाँट, चार मूर्तियों से प्राणियों की भलाई किया करता हूँ। मेरी एक मूर्ति मर्त्यलोक में तपस्या करती है, दूसरी मूर्ति जगत् के सत्, असत्

कार्यों को देखती है। तीसरी मूर्त्ति मर्त्यलोक में रह कर्म करती है और चौथी मूर्त्ति एक सहस्र वर्षों तक शयन किया करती है। जब एक हज़ार वर्ष पूरे होने पर मेरी वह मूर्त्ति जागती है, तब वही मूर्त्ति वरदान पाने योग्य व्यक्तियों को वर देती है। एक बार उसी चौथी मूर्त्ति के जागने के समय पृथिवी देवी ने अपने पुत्र नरकासुर के लिये जो वर माँगा था, वह मैं तुम्हें सुनाता हूँ।

पृथिवी बोली—मेरा पुत्र वैष्णवास्त्र से युक्त होवे, जिससे क्या देवता और क्या असुर कोई भी उसका वध न कर सकें। अतः आप मुझे यह वर दें। मैंने पृथिवी देवी की प्रार्थना स्वीकार कर उसी समय नरकासुर को अपना अमोघ परम वैष्णवास्त्र उसे दे दिया। साथ ही पृथिवी से यह भी कह दिया कि, हे पृथिवी! मैंने अपना वैष्णवास्त्र तुम्हारे पुत्र की रक्षा के लिये उसे दिया है। यह अस्त्र अमोघ है। इसके प्रताप से तुम्हारे पुत्र को कोई भी युद्ध में न मार सकेगा। तुम्हारा पुत्र सदैव इस अस्त्र से रक्षित हो अपने शत्रुओं को पीड़ित किया करेगा और इस अस्त्र के प्रभाव से तुम्हारे पुत्र की गणना महापराक्रमी पुरुषों में होगी। अपना मनोरथ पूरा हुआ जान मेरे यह वचन सुन पृथिवी, वहाँ से चली गयी। इस अस्त्र के प्रभाव से नरकासुर भी महापराक्रमी प्रसिद्ध हुआ और उसने इस अस्त्र से अपने समस्त शत्रुओं को युद्ध में पीड़ित किया था। हे पुरुषर्षभ! वही मेरा अस्त्र नरकासुर से भगदत्त को मिल गया! रुद्र, इन्द्र आदि देवगण भी इस अस्त्र से अवध्य नहीं हैं। इसी लिये तुम्हारी रक्षा करने के लिये मैंने इस अस्त्र को अपनी छाती पर झेला है। हे अर्जुन! इस समय यह राजा भगदत्त वैष्णवास्त्र से रहित हो गया है। अतः पूर्वकाल में मैंने जैसे नरकासुर का वध किया था, वैसे ही तुम अब दुराधर्ष देवद्वेषी भगदत्त का वध करो। जब श्रीकृष्ण ने अर्जुन से यह कहा, तब अर्जुन ने एक साथ ही पैने बाणों से भगदत्त को ढाँप दिया। तदनन्तर उदार एवं शान्त मन अर्जुन ने हाथी के पैने गण्डस्थलों के बीच में बाण मारा।

हे नरनाथ! जैसे सर्प बिल के भीतर प्रवेश करता है, अथवा जैसे वज्र के प्रहार से पर्वत टूटता है, वैसे ही अर्जुन के धनुष से छूटा हुआ तीर भगदत्त के गज के शरीर में घुस गया। उस समय भगदत्त ने उसे बारंबार उत्तेजित करना चाहा, किन्तु हाथी ने उसकी बात उसी तरह न मानी, जिस तरह दरिद्र पति की बात उसकी पत्नी नहीं मानती। भगदत्त का हाथी सूँड़ सकोड़ और महाभयङ्कर आर्त्तनाद करके मर गया। तदनन्तर अर्जुन ने अपने तीक्ष्ण और अर्द्धचन्द्र बाण से राजा भगदत्त के हृदय में प्रहार किया। उस बाण के लगते ही राजा भगदत्त मूर्छित हो गया। उसके हाथ से धनुष बाण छूट पड़े। जैसे कमल-नाल के उखाड़ने से कमल के मृणाल से उसके पत्ते अलग हो जाते हैं, वैसे ही भगदत्त के सिर से उत्तम मुकुट, अलग हो भूमि पर गिर पड़ा। जैसे भली भाँति फला हुआ कर्णिकार का सुन्दर वृक्ष, पवन के झकोरे से टूट कर पर्वतशृङ्ग पर गिर पड़ता है; वैसे ही सुवर्ण-माला-विभूषित राजा भगदत्त उस पर्वत की तरह उच्च हाथी से पृथिवी पर आ गिरा। जैसे प्रचण्ड पवन पेड़ों को उखाड़ कर फेंक देता है, वैसे ही इन्द्रसूनु अर्जुन ने इन्द्रसखा एवं महापराक्रमी राजा भगदत्त को मार कर, आपकी सेना के अन्यान्य शूरवीरों का वध करना आरम्भ किया।

तीसवाँ अध्याय

वृषक और अचल का अर्जुन द्वारा वध

सञ्जय ने कहा—हे राजन्! अर्जुन ने इन्द्र के प्रिय मित्र महातेजस्वी राजा भगदत्त का युद्ध में वध कर के उनकी परिक्रमा की। अनन्तर गान्धारराज के शत्रुनाशन वृषक और अचल नामक दो पुत्र अर्जुन को बाणों से घायल करने लगे। वे दोनों मिल कर अर्जुन के आगे और पीछे स्थित हो कर, बाणप्रहार से उन्हें अत्यन्त पीड़ित करने लगे। अर्जुन

ने अपने चोखे बाणों से सुबलपुत्र वृषक के रथ के घोड़ों को, उसके सारथी को, उसके छत्र और ध्वजा को काट डाला और विविध प्रकार के अस्त्र शस्त्रों को चला, उनके अनुयायी गान्धार योद्धाओं को अत्यन्त पीड़ित किया। तदनन्तर महासुत्र वृषक, घोड़ों से रहित रथ से उतर कर, अपने भाई के रथ पर जा चढ़े और दूसरा दृढ़ धनुष ग्रहण किया। इसी बीच में अर्जुन ने पाँच सौ गान्धार वीरों का वध कर के उन्हें यमपुरी को भेज दिया। तदनन्तर वृषक और अचल दोनों भाई अपने बाणों की वर्षा करके अर्जुन को वारंवार विद्ध करने लगे। जैसे वृत्रासुर और बलासुर ने मिल कर, इन्द्र के ऊपर अपने शस्त्रों से प्रहार किया था; वैसे ही तुम्हारे साले शकुनि के पुत्र दोनों बलवान् भाई वृषक और अचल बार बार अपने तीक्ष्ण बाणों को चला कर, अर्जुन के ऊपर प्रहार करने लगे। जैसे ग्रीष्म और वर्षा ऋतुएँ धूप और वर्षा से समस्त प्राणियों को क्लेश देती हैं, वैसे ही लक्ष्य को वेधने वाले, उन दोनों गान्धारराज के पुत्रों ने अर्जुन को अपने तीक्ष्ण बाणों से पीड़ित करना आरम्भ किया। हे राजन्! अर्जुन ने एक महाभयङ्कर बाण चला कर, एक ही रथ में स्थित पुरुषसिंह वृषक और अचल दोनों भाइयों को मार डाला। उन दोनों का रूप और पराक्रम समान था। वे दोनों महाबली भाई मर कर, रथ से नीचे गिर पड़े। इन दोनों शूरवीरों के शरीर उस युद्धभूमि में सब ओर अपने पवित्र यश को विस्तार करके अन्त में पृथिवी पर गिर पड़े। हे राजेन्द्र! तुम्हारे पुत्रों ने युद्ध से पीछे न हटने वाले अपने दोनों मातुलेयों को अर्जुन के बाणों से मरा हुआ देख कर, क्रोधपूर्वक सव्यसाची अर्जुन के ऊपर बाणों को फेंकना आरम्भ किया। अनन्तर सैकड़ों माया और विद्याओं के जानने वाले शकुनि ने अपने पुत्रों का मारा जाना देख, श्रीकृष्ण और अर्जुन को मोहित करने के लिये माया उत्पन्न की। शकुनी की माया के द्वारा सैकड़ों शक्तियाँ, शतघ्नियाँ, गदाएँ, परिघ, शूल, मुग्दर, पट्टिश, ऋष्टि, मूसल, परशु, क्षुरप्र, क्षुरम, नालीक, वत्सदन्त, चक्र, विशिख, प्रास और अन्य प्रकार के सैकड़ों तथा सहस्रों अस्त्र, चारों

ओर से अर्जुन के ऊपर गिरने लगे। तदनन्तर ऊँट, रासभ, भैंसे, व्याघ्र, सिंह, चीते, भेड़िये, वानर आदि पशु और गिद्ध, कौवे आदि पक्षी तथा नाना प्रकार के मांसभक्षी राक्षस, भूख से विकल हो, अर्जुन की ओर लपके। तब दिव्यास्त्रों के प्रयोगों के ज्ञाता पराक्रमी कुन्तीनन्दन अर्जुन ने दिव्यास्त्रों का प्रयोग कर, उस माया को नष्ट कर डाला। माया से उत्पन्न वे सब जीव उन बाणों से पीड़ित हो और महाभयङ्कर शब्द करते हुए प्राण त्यागने लगे। फिर अर्जुन के रथ में अन्धकार प्रकट हुआ और उसी अन्धकार से नाना प्रकार के कटुवचन सुन पड़ने लगे। तब अर्जुन ने महाज्योति अस्त्र का प्रयोग कर उस अन्धकार को नष्ट किया। अन्धकार के दूर होने पर, महाजलवृष्टि होने लगी। अर्जुन ने उस जलवृष्टि को दूर करने के लिये आदित्यास्त्र का प्रयोग किया। उस अस्त्र से सारा जल सूख गया। शकुनि ने इसी प्रकार अनेक मायाएँ रचीं, किन्तु अर्जुन ने हँसते हँसते उन सब को नष्ट कर डाला। सारी मायाओं के नष्ट होने पर अर्जुन के बाणों की मार से अत्यन्त पीड़ित हो शकुनि साधारण मनुष्य की तरह, शीघ्रगामी घोड़ों से युक्त रथ पर सवार हो, अर्जुन के सामने से भाग गया। अनन्तर अर्जुन शत्रु को अपना हस्तलाघव दिखलाते हुए, कुरुसेना के ऊपर बाणवृष्टि करने लगे। हे भारत! जैसे मार्ग में पर्वत के आ पड़ने से गङ्गा दो धारों में विभक्त होती है, वैसे ही आपकी सेना अर्जुन के बाणों से पीड़ित हो, दो भागों में बँट गयी। अन्त में अर्जुन के बाणों से शूरवीर योद्धा विकल हो, द्रोणाचार्य और दुर्योधन के निकट गये। उन लोगों के इधर उधर दौड़ने से जो धूल उड़ी, उससे अर्जुन का रथ ढक गया। केवल गाण्डीव धनुष की टंकार का शब्द मात्र सुन पड़ता था। वह शब्द दुन्दुभी आदि मारू बाजों के शब्द को अतिक्रम कर, आकाश में व्याप्त हो गया। तदनन्तर दक्षिण दिशा में, युद्धकला में कुशल योद्धाओं का अर्जुन के साथ महायुद्ध होने लगा और मैं उस समय द्रोणाचार्य के पीछे चला गया था। वहाँ, हे राजन्! मैंने देखा कि, युधिष्ठिर की सेना के योद्धा, शत्रुओं को चारों ओर से मार रहे थे। हे

भरतवंशी राजन्! जैसे समय पा कर पवन, बादलों को तितर बितर कर देता है, वैसे ही अर्जुन ने अवसर पा, आपकी सेनाओं को तितर बितर कर डाला। अर्जुन, इन्द्र की तरह बाणवृष्टि कर, आगे को बढ़ा, परन्तु बड़े बड़े धनुषधारी नरव्याघ्रों में से, उसे कोई नहीं रोक सका। अर्जुन की मार से, अत्यन्त घबड़ाये हुए आपके सैनिक इधर उधर दौड़ कर, अपने ही सैनिकों को मारने लगे। इसी समय अर्जुन ने कङ्कपत्र की पूँछ वाले बाण मारने आरम्भ किये। वे तीर टीड़ी दल की तरह दसों दिशाओं में फैल कर शत्रुओं के शरीरों को छेदते हुए, उनके ऊपर पटापट पड़ने लगे।

हे राजन्! वे बाण घोड़ों, रथियों, हाथियों और पैदलों को भेद कर, भूमि में वैसे ही घुस गये, जैसे बाँबी में साँप घुसते हैं।

अर्जुन ने हाथियों, घोड़ों और पैदल सिपाहियों पर एक बाण को छोड़ दूसरा बाण नहीं छोड़ा। वे एक ही बाण से छिन्न भिन्न हो कर, निर्जीव हो, पृथिवी पर गिर पड़े। बाणों के प्रहार से मरे हुए, मनुष्यों हाथियों और घोड़ों से तथा उन्हें खाने के लिये आये हुए गीदड़ों और कुत्तों की टोलियों के शब्द से, युद्धभूमि का दृश्य बड़ा विचित्र जान पड़ता था। वह समय ऐसा था कि, पिता अपने पुत्र को, मित्र अपने मित्र को, त्याग रहा था। अर्जुन के बाणों की मार से पीड़ित लोग आत्मरक्षा ही के लिये व्यग्र हो रहे थे। उन्हें अपनी सवारियों तक का ध्यान न रह गया था।

इकतीसवाँ अध्याय

अश्वत्थामा के हाथ से नील का वध

धृतराष्ट्र ने पूँछा—हे सञ्जय! जब पाण्डुपुत्र अर्जुन ने मेरी सेना में भगदड़ डाल दी और तुम लोग भी भयभीत हो भागने लगे और उनको कहीं भी आश्रय न मिला; तब वे बड़ी कठिनता से किस प्रकार रोके गये—यह मुझे तुम बतलाओ।

सञ्जय ने कहा—हे राजन्! यद्यपि आपकी सेना में भगदड़ पड़ गयी, तथापि आपके पुत्र के हितैषी और संसार में अपने यश की रक्षा करने वाले शूर, अपने यश को फैलाने के लिये द्रोण के पीछे पीछे गये और समस्त योद्धा अपने हथियार उठा, उस घोर युद्ध में निर्भीक हो, श्रावोचित पराक्रम प्रदर्शित करने लगे। राजा युधिष्ठिर जब रणभूमि में आये, तब महाबली भीम, सात्यकि और धृष्टद्युम्न की भूल का लाभ उठा, कौरव पक्ष के वीर उनके ऊपर टूट पड़े। तुरन्त ही रथ में क्रूर स्वभाव पाञ्चाल—द्रोण को मारो, द्रोण को मारो—कहते हुए अपने योद्धाओं को उत्तेजित करने लगे। आपके पुत्र ने अपनी ओर के योद्धाओं से कहा—द्रोण को बचाओ। सुतरां एक पक्ष वाले कहते थे द्रोण को मारो और दूसरे पक्ष वाले कह रहे थे कि, द्रोण को बचाओ। इस प्रकार द्रोण के लिये कौरवों और पाण्डवों में युद्ध होने लगा। जब द्रोणाचार्य पाञ्चाल महारथियों पर टूटते, तब धृष्टद्युम्न आगे बढ़ उनका सामना करता था। युद्ध की भीषणता उत्तरोत्तर बढ़ती जाती थी। शूरवीर योद्धा भयङ्कर हुंकारें मारते हुए अपनी अपनी श्रेणियों से निकल वीरों से लड़ रहे थे। उस समय पाण्डव, शत्रुओं से कम्पायमान न हो, अपने पूर्वकालीन कष्टों को याद कर, शत्रुसैन्य को कँपाने लगे। यद्यपि पाण्डव लजीले थे; तथापि झेले हुए दुःखों को याद कर, क्रोध में भर जाने के कारण द्रोण को मारने के लिये वे प्राणपण से युद्ध कर रहे थे। प्राणों का दाँव लगा कर, लड़ने वाले उन योद्धाओं के भिड़ने का शब्द, पत्थर और लोहे के टकराने के शब्द जैसा हो रहा था। बड़े बड़े बूढ़ों को भी इस बात की याद नहीं आती थी कि, इसके पूर्व कभी ऐसा घोर संग्राम उन्होंने देखा या सुना था। द्रोण का वध करने के लिये होते हुए इस युद्ध में योद्धाओं के इधर उधर घूमने के बोझ से पृथिवी डगमगाने लगी। चारों ओर घूमती हुई सेना का भयङ्कर शब्द आकाश तक पहुँच, युधिष्ठिर की सेना में प्रतिध्वनित हो उठा। द्रोणाचार्य ने लौट कर अपने पैने बाणों से पाण्डवों की सेना छिन्न भिन्न कर डाली। अद्भुत

पराक्रमी द्रोण के द्वारा इस प्रकार सेना के नष्ट होने पर, सेनापति धृष्टद्युम्न, उनके सामने गया और उनको घेर लिया। पाञ्चाल देशी धृष्टद्युम्न और द्रोण का वह युद्ध विस्मयोत्पादक था। मुझे दृढ़ विश्वास है कि इस युद्ध की उपमा नहीं दी जा सकती। जैसे आग, फूँस को भस्म कर डालती है, वैसे ही राजा नील अपने पैने बाणों से कौरव सेना को भस्म करने लगा। महाप्रतापी अश्वत्थामा, राजा नील के इस कार्य को देख, हँस कर उनसे बोला—हे नील! तुम्हें अपने बाहुबल से अनेक योद्धाओं को भस्म करने की क्या आवश्यकता है? तुम केवल मुझीसे लड़ो। तुम क्रोध में भर मेरे ही ऊपर अपने पैने बाण छोड़ो। यह सुन, कमल पुष्प जैसे रङ्ग वाले, कमल-नयन एवं प्रसन्नवदन अश्वत्थामा पर राजा नील ने अपने पैने बाण छोड़े। तब उसके बाणों से घायल हो अश्वत्थामा ने तीन बाण चला नील के रथ की ध्वजा, उसका धनुष और छत्र काट डाले। तब नील एक चोखी तल-वार और बढ़िया ढाल ले रथ से पक्षी की तरह झपटा और उसने अश्वत्थामा का सिर काटना चाहा। किन्तु अश्वत्थामा ने हँसते हँसते एक बाण चला खड्गधारी, नील का सिर काट कर भूमि पर गिरा दिया। पूर्णचन्द्रमा के समान मुख, कमलपुष्प जैसे नेत्र और विशालवपु राजा नील मर कर पृथिवी पर गिर पड़ा। नील के मारे जाने से पाण्डवों की सेना शोकान्वित और भयत्रस्त हो गयी।

हे राजेन्द्र! उस समय पाण्डवों के समस्त महारथी योद्धा सोचने लगे, कि अर्जुन का इस समय युद्ध दक्षिण दिशा में, बचे हुए संशप्तकों और नारायणी सेना के साथ हो रहा है। वे क्यों कर यहाँ आ, हम लोगों को इस शत्रु से बचावेंगे।

———

बत्तीसवाँ अध्याय

विकट लड़ाई

सञ्जय ने कहा—भीमसेन से अपनी सेना का नाश न देखा गया। उसने गुरु द्रोण के साठ और कर्ण के दस बाण मार कर, उन दोनों को घायल कर डाला। तब भीम का वध करने की इच्छा से द्रोण ने सीधे जाने वाले पैने बाणों से तुरन्त भीम के मर्मस्थलों को वेध डाला। भीमसेन का पराजय चाहने वाले द्रोणाचार्य ने छब्बीस, कर्ण ने बारह और अश्वत्थामा ने सात बाण मार भीम को घायल किया। महाबली भीमसेन ने भी उन सब को घायल किया। भीम ने द्रोणाचार्य को पाँच सौ, कर्ण को दस, दुर्योधन को बारह और अश्वत्थामा को आठ बाणों से घायल किया। युद्ध करते समय सिंहनाद् करता हुआ भीम, अपनी जान पर खेल, शत्रु लोगों की ओर लपका। यह देख युधिष्ठिर ने अपने पक्ष के राजाओं को भीमसेन की रक्षा के लिये भेजा। महापराक्रमी भीमसेन आदि रथियों ने, महाधनुर्धारी द्रोणादि से रक्षित शत्रुसैन्य का संहार करने के लिये उस पर आक्रमण किया। द्रोण इस आक्रमण से ज़रा भी विचलित न हुए और मद में भर कर युद्ध करने वाले समस्त योद्धा उन अतिबली महारथी योद्धाओं के सामने डट गये। पाण्डव भी मृत्युभय को साधारण भय मान, आपके योद्धाओं के ऊपर टूट पड़े। सुतरां अश्वारोही अश्वारोहियों से और रथी रथियों से भिड़ गये। शक्ति और तलवारों की मार आपस में होने लगी। फर से फड़कने लगे। उस समय चोखी तलवारों से भी युद्ध होने लगा। इसका परिणाम बड़ा भयङ्कर हुआ। हाथियों में भी महाघोर युद्ध हुआ। उस समय कोई हाथी पर से और कोई रथ पर से औंधा हो कर गिर रहा था। हे राजन्! उस समय उस समय कोई बाणों से घायल हो, रथ पर से गिर रहा था। उस समय कपाटे में आ कर गिरे हुए एक कवचहीन पुरुष की छाती पर पैर रख कर, हाथी ने उसके सिर को कुचल डाला। अन्य हाथी भूमि पर गिरे हुए

योद्धाओं को कुचल रहे थे। बहुत से हाथियों के दाँतों में नरों की आँतें उलझी हुई थीं। वे सैकड़ों मनुष्यों को रौंदते हुए रण में घूमने लगे। लोहे के कवच पहिने हुए बहुत से हाथी अन्य हाथियों, घोड़ों और मनुष्यों को नलों की तरह कुचलने लगे। अनेक लज्जालु राजा काल के वश में हो, बड़े दुःख के साथ गिद्धों के पंखों वाली सेज पर अनन्त निद्रा में सो रहे। रथों पर सवार हो तथा एक दूसरे का सामना कर, पिता, पुत्र का और पुत्र पिता का वध करने लगे। कितने ही रथों की ध्वजाएँ टूटीं। कितनों ही के पहिये और छतरियाँ टूट टूट कर गिर पड़ीं। कितने ही अश्व सवारों से रहित हो समरक्षेत्र में घूमने लगे। कितने ही शूरवीरों की भुजाएँ तलवारों सहित कट कर, पृथिवी पर गिर पड़ीं और कितनों के मुकुट कुण्डलों सहित सिर, कट कट कर पृथिवी पर लुढ़कने लगे। कितने ही बलवान हाथी रथों को सूँड़ से उठा कर, दूर फेंक देते थे, जिससे वे रथ चकनाचूर हो जाते थे। कितने ही हाथी रथियों के बाणों से पीड़ित हो, तथा घुड़सवार और गज-पतियों के अस्त्रों से मर कर भूमि पर गिर गये। इस महाविकट, मर्यादा रहित संग्राम में कितने ही पुरुष हा तात! हा पुत्र! हा मित्र! तुम कहाँ हो? यहीं रहो, कहाँ भागे जाते हो? प्रहार करो, मारो—आदि वचन कहते हुए हँसते, रोते, चिल्लाते और सिंहनाद करते हुए दिखलायी पड़ते थे। मनुष्य, हाथी और मरे हुए घोड़ों के रुधिर से समरभूमि की धूल दब गयी थी और कायरों का चित्त विकल होने लगा। कितने ही रथी योद्धा अपने रथ का पहिया शत्रु के रथ में भिड़ा शत्रुओं से युद्ध करने लगे और कितने ही योद्धा अवकाश पा कर, गदा से आपस में एक दूसरे का सिर तोड़ने लगे। बहुत से वीर आपस में एक दूसरे के सिर के बालों को खींच रहे थे। बहुत से विकल सैनिक मुक्का मुक्की कर रहे थे। उस निराधार समरभूमि में, आधार खोजी कितने ही वीर, शत्रुओं को दाँतों से काटते और नाख़ूनों से नोंचते थे। कितने ही वीर शत्रु के खड्ग, धनुष, अङ्कुश या बाण लिये हुए [illegible] खड़े थे। वहाँ बहुत से वीर युद्ध करने के लिये शत्रुओं को बुला रहे थे

कृपाचार्य और सञ्जय भी क्षमा ही की प्रशंसा करेंगे। सोमदत्त, युयुत्सु, द्रोणपुत्र अश्वत्थामा और हमारे पितामह वेदव्यास जी भी सदैव क्षमा ही को सराहते हैं। अतएव ये सब राजागण नित्य धृतराष्ट्र को क्षमा ही का उपदेश देंगे। तब राजा धृतराष्ट्र शान्त धारण कर, हमारा राज्य हमें लौटा देंगे। मैं तो यही समझता हूँ। किन्तु यदि वे लोभ में फँस, हमारा राज्य हमें न लौटा देंगे, तो उनका नाश होगा। यह समय भरतवंशियों के नाश होने के लिये उपस्थित हुआ है। इसे मैं पहले ही से जानता था। दुर्योधन में क्षमा न होने ही से वह राज्य करने योग्य नहीं है; किन्तु मैं राज्य करने योग्य हूँ, इसीसे मुझे क्षमा प्राप्त हुई है। क्षमा और दया—ये दोनों ही—सनातन धर्म और ज्ञानवानों के लिये सदाचरणीय हैं, अतएव मैं तो इन दोनों का यथार्थरीत्या पालन अवश्य ही करूँगा।

तीसवाँ अध्याय

ईश्वर की विषमता

द्रौपदी बोली—हे युधिष्ठिर! मैं उस धाता (ईश्वर) और विधाता (दैव) को प्रणाम करती हूँ, जिन्होंने आपके मन में यह मोह उत्पन्न कर दिया है। इसीसे आपकी बुद्धि पिता, पितामहादि के अनुष्ठेय कर्त्तव्य में भी उलटी हो गयी है। विधाता, प्राणियों को उनके पूर्व कर्मानुसार, सुख और दुःख भुगाता है। क्योंकि कर्म नित्य है। अतः उनसे छुटकारा चाहना व्यर्थ है। इस जगत में जो अति धर्मभीरु है, अति दयालु है, अति क्षमावान् है, अति सीधा है और जो लोकापवाद से (आवश्यकता से अधिक) डरता है, उसे राजलक्ष्मी की प्राप्ति कभी नहीं होती। हे राजन्! आपमें तथा आपके इन समस्त महाबली भाइयों में वे सब गुण हैं और ये दुःख भोगने योग्य नहीं हैं। तिस पर भी

अर्जुन वहाँ जा पहुँचे जहाँ पर द्रोणाचार्य पाण्डवों का संहार कर रहे थे। कौरवरूपी प्रलय में सूर्य समान अर्जुन संशप्तकों का नाश कर, अनेक बाणों के ओघ वाली और बड़े बड़े भँवरों वाली रक्त की धाराओं को पार कर, हम सब को दिखलायी पड़ा। मैंने सूर्य के समान तेजस्वी, यशस्वी, अर्जुन की कपिध्वजा को देखा। अर्जुन प्रलयकालीन सूर्य की तरह प्रकाशित हो, अपने अस्त्रों के प्रताप से संशप्तक सेना रूपी समुद्र को सुखा कर, पुनः कौरववाहिनी के सामने आ, समस्त सेना को अपने शस्त्रों से पीड़ित करने लगे। जैसे प्रलयकाल के समय धूमकेतु उदय हो, समस्त प्राणियों को भस्म कर डालता है, वैसे ही अर्जुन अपने अस्त्रों से समस्त कौरव सेना को भस्म करने लगे। हाथी, गजपति, घुड़सवार और पैदल चलने वाले योद्धा केश खोले अर्जुन के अस्त्रों के प्रहार से मर कर भूमि पर लोट गये। अर्जुन के बाण-प्रहार से पीड़ित हो लोग आर्त्तनाद करने लगे, कोई रोने लगे और कितने ही योद्धा निर्जीव हो भूमि पर लोट गये। जो गिर कर उठ सके, वे समर-भूमि को पीठ दिखा कर भाग गये। उस समय योद्धाओं के व्रत को स्मरण कर, अर्जुन ने उनको नहीं मारा; किन्तु उन्हें भाग जाने दिया। टूटे हुए रथों वाले और भागते हुए कौरवों ने कर्ण की दुहाई दी और वे हाय हाय करने लगे। शरणागत कौरवों की इस रोदनध्वनि को सुन कर, कर्ण ने डरो मत कह कर, उनको धीरज बँधाया। तदनन्तर वह अर्जुन की ओर बढ़ा। समस्त भरतवंशी राजाओं को हर्षित करने वाले, महारथी और बड़े अस्त्रवेत्ता कर्ण ने जलता हुआ आग्नेयास्त्र अर्जुन के मारा; परन्तु अर्जुन ने चमचमाते धनुष को धारण करने वाले और महातेजस्वी कर्ण के चमचमाते बाणों को काट डाला। कर्ण ने भी अर्जुन के चमचमाते पैने बाणों तथा अस्त्रों को रोक दिया और सिंहगर्जन कर, शत्रु के बाण मारे। धृष्टद्युम्न, भीम और सात्यकि ने भी सीधे जाने वाले तीन तीन बाण मार कर, कर्ण को वेध डाला। कर्ण ने अर्जुन की बाणवृष्टि को अपनी बाणवृष्टि से रोका और उन तीनों के धनुष काट डाले। धनुषों के कट जाने से वे तीनों शूर

यज्ञ और यज्ञकर्म नित्य हुआ करते थे। आपने उक्त धर्मों को, चोरों के बसने योग्य इस निर्जन वन में बसने पर भी, नहीं छोड़ा है। आपने अश्वमेध, राजसूय, पुण्डरीक, गोमेध आदि विपुल दक्षिणा वाले यज्ञ किये हैं। तो भी हे राजन्! जुए में आपका घोर पराजय हुआ और आपकी बुद्धि विपरीत हो गयी। इसीसे आप अपना राज्य एवं धन तथा अपने भाई और सुख तक को जुए में गँवा बैठे। यद्यपि आप सरल, मृदु, उदार, लज्जाशील और सत्यवादी हैं, तथापि आपको जुआ खेलने की बुद्धि कैसे उपजी? आपके इस दुःख तथा ऐसी आपत्ति को देख कर, मेरा मन तो अत्यन्त खिन्न और मोहित हुआ जाता है। इस सम्बन्ध में एक पुराना इतिहास मुझे याद आ गया है। उससे यह बात प्रमाणित होती है कि, जीव, ईश्वरपरतंत्र है, स्वतंत्र नहीं है। सर्वनियन्ता परमात्मा ही प्राणियों के पूर्वजन्मकृत कर्मरूपी बीज के अनुरूप, सुख दुःख अथवा प्रिय अप्रिय पदार्थों को देते हैं। हे नरवीर! जैसे लकड़ी की पुतली, घुमाने के सूत्र के अधीन रह कर सावधानतापूर्वक अपने अङ्ग प्रत्यङ्गों को मटकाती है, वैसे ही यह सारी प्रजा भी ईश्वररूपी सूत्र से परिचालित हो सांसारिक समस्त व्यवहार करती है। हे भारत! वही परमात्मा, आकाश की तरह समस्त जीवों में व्याप्त रह कर, उनके द्वारा किये जाने वाले उनके शुभा-शुभ कर्मों का साक्षी रहता है। जीव स्वतंत्र नहीं है। किन्तु डोरी में बँधे हुए पक्षी की तरह सदा परतंत्र है। जीव स्ववश अथवा परवश नहीं है, किन्तु वह सर्वथा ईश्वर के अधीन है। सूत में पिरोई हुई मणियों की तरह अथवा नथे हुए बैल के समान जीव ईश्वर के अधीन है। मनुष्य कभी भी स्वतंत्र नहीं है। जीव कालरूपी ईश्वर के वश में रहता है। जीव स्वकर्मानुसार ईश्वर की प्रेरणा से स्वर्ग अथवा नरक में वैसे ही पड़ता है; जैसे नदी के किनारे पर उगा हुआ पेड़ नदी में गिर कर जिधर जल जाता है, उधर ही वह चला जाता है। सांसारिक समस्त जीव ईश्वर के वश में उसी प्रकार रहते हैं, जिस प्रकार तृण के अग्रभाग वायु के वश में

राज्य को बढ़ाने वाला निर्भीक पुरुषों का युद्ध महापुरुषों से हुआ। इस युद्ध में बहुत से हाथी सवार तथा हाथी, घोड़े और घुड़सवार तथा और रथी एवं पैदल योद्धा नष्ट किये गये। अनेक योद्धाओं की जीभें कट गयीं; आँखें फूट गयीं, और दाँत टूट गये। अनेक योद्धा कवचों और आभूषणों से रहित हो गये और निर्जीव हो भूमि पर गिर पड़े। विविध भाँति की युद्ध सामग्री से सम्पन्न तथा भाँति भाँति के शस्त्रों से युक्त योद्धाओं ने जिन योद्धाओं को मार कर गिरा दिया था, वे ज़मीन पर पड़े हुए बड़े भयानक देख पड़ते थे। कितने ही लोग तो हाथियों और घोड़ों से कुचल गये थे और कितने ही रथों के पहियों से दब कर मर गये थे। कुत्तों, गीधों और राक्षसों का आनन्द बढ़ाने वाले इस दारुण युद्ध के समय महाबली योद्धा क्रुद्ध हो, बरजोरी आपस में एक दूसरे को उत्पीड़ित कर रण में घूमने लगे।

हे राजन्! इतने ही में जब सूर्य अस्ताचलगामी होने को हुए; तब उभय पक्षों की परिश्रान्त और क्षत विक्षत सेनाएँ युद्ध बंद कर, अपनी अपनी छावनियों की ओर चली गयीं।

संशप्तकपर्व समाप्त हुआ

[अभिमन्यु-वध पर्व]

तेरहवाँ दिन

तेतीसवाँ अध्याय

अभिमन्यु वध का संक्षिप्त वृत्तान्त

सञ्जय बोले—हे राजेन्द्र! महातेजस्वी अर्जुन के अस्त्रों से पीड़ित हो कर, जब हम लोग युद्ध में हार गये और युधिष्ठिर के सुरक्षित होने से; द्रोण का सङ्कल्प पूरा न हो पाया, तब आपकी ओर के समस्त योद्धा अस्त्र-धारी शत्रुपक्षीय योद्धाओं से अत्यन्त पीड़ित हो, ध्वजाओं और कवचों से

रहित हो गये। चारों ओर अन्धकार छाते देख, द्रोण के आदेशानुसार लड़ाई बंद की गयी। तदनन्तर बहुत से पुरुष अर्जुन के रणकौशल की तथा अर्जुन पर श्रीकृष्ण की प्रीति की सराहना करते हुए जाने लगे। उसे सुन अपनी ओर के योद्धा शापग्रस्त जैसे हो गये। उनके मुखों पर उदासी छा गयी और उनके मुख से बोली नहीं निकलती थी। छावनियों में पहुँच, और थकावट दूर कर चुकने बाद, वाक्यविशारद दुर्योधन ने शत्रुओं की बढ़ती से दुःखी हो और क्रुद्ध हो समस्त सैनिकों के सामने द्रोणाचार्य से कहा—हे द्विजसत्तम! हम सचमुच आपके शत्रु हैं। क्योंकि यदि ऐसा न होता तो युधिष्ठिर के आपकी पकड़ के भीतर आ जाने पर भी आप उन्हें क्यों छोड़ देते! यदि आप युद्ध में सामने पड़े हुए शत्रु को पकड़ना चाहें तो पाण्डव देवताओं की सहायता से भी उसकी रक्षा नहीं कर सकते। आपने प्रसन्न हो मुझे यह वर दिया था कि, आप युधिष्ठिर को पकड़ लेंगे; किन्तु आप अपने वचन का पालन न कर सके। जो महात्मा पुरुष होते हैं, वे भक्त की आशा को भङ्ग नहीं करते। दुर्योधन के ये वचन सुन, द्रोण का मन खिन्न हो गया और वे लज्जित हो कहने लगे। राजन्! मैं तेरे हित-साधन का सदा उद्योग किया करता हूँ। मुझे तू अन्यथाचारी मत समझ। अर्जुन जिसका रक्षक हो, उसको मनुष्य तो क्या, देवता, असुर, यक्ष, राक्षस, सर्प और गन्धर्वादि कोई भी नहीं जीत सकता। जहाँ पर जगत्कर्त्ता श्रीकृष्ण और अर्जुन सेना की रक्षा करते हैं; वहाँ पर देवादिदेव महादेव को छोड़ और किसकी मजाल है, जो वहाँ निज पराक्रम को प्रकट कर सके। हे तात! मैं सत्य कहता हूँ कि, आज मैं एक बड़े महारथी का वध करूँगा। आज मैं एक ऐसी व्यूह रचना करूँगा कि, उसे देवता भी भङ्ग नहीं कर सकते। किन्तु आप लोग किसी बहाने से अर्जुन को मुख्य रणक्षेत्र से हटा कर अन्यत्र ले जाना। क्योंकि अर्जुन के रहते हम लोगों की एक न चल पावेगी वह मनुष्य द्वारा चलाये जाने वाले समस्त अस्त्र शस्त्रों को जानने वाला है।

हे राजन् ! अब द्रोणाचार्य ने यह कहा—तब संशप्तकों ने अर्जुन को पुनर्वार समरक्षेत्र के दक्षिण भाग में लड़ने के लिये बुलाया। अर्जुन और संशप्तकों का ऐसा घोर युद्ध हुआ कि, पहले वैसा कभी नहीं हुआ था। जैसे शरदृतु में मध्याह्न के समय भगवान् सूर्य अत्यन्त प्रचण्ड हो समस्त प्राणियों को अपने ताप से उत्तप्त कर भस्म कर डालते हैं, वैसे ही द्रोणाचार्य का प्रचण्ड चक्रव्यूह शत्रुओं को सन्तप्त करने लगा। उस दुर्भेद्य चक्रव्यूह को अभिमन्यु ने अपने चाचा राजा युधिष्ठिर के कहने पर, छिन्न भिन्न कर डाला। हे राजन्! उस समय अभिमन्यु ने जब हज़ारों वीरों का वध कर, बड़ा दुष्कर कर्म किया ; तब द्रोण, अश्वत्थामा, कृप, कर्ण, भोज और शल्य नामक छः वीरों ने मिल कर, अभिमन्यु को घेरा और दुःशासन के पुत्र ने उसे पकड़ लिया। हे परन्तप राजन्! वहाँ अभिमन्यु ने लड़ते लड़ते अपने प्राण त्याग दिये। इससे हम बड़े प्रसन्न हुए और पाण्डव शोक में डूब गये। हे राजन्! अभिमन्यु के मारे जाने पर, हम लोग अपनी सेना को विश्रामार्थ छावनी में ले गये।

धृतराष्ट्र बोले—हे सञ्जय ! पुरुषों में सिंह के समान अर्जुन-नन्दन अभिमन्यु का, जो अभी तरुण भी नहीं हो पाया था और बालक ही था, मारा जाना सुन, मेरी छाती फटी जाती है। हा! धर्मशास्त्र बनाने वाले ने क्षात्रधर्म को महादारुण बताया है। उसी धर्म के वशवर्ती हो राज्यकामुक शूर योद्धाओं ने बालक के ऊपर शस्त्र चलाया। हे सञ्जय! अभिमन्यु अत्यन्त ही सुखी बालक था। वह निर्भीक योद्धाओं की तरह जब रणक्षेत्र में घूम रहा था, तब बहुत से योद्धाओं ने मिल कर किस प्रकार से उसका वध किया? महातेजस्वी उस बालक ने किस प्रकार रथसेना को भेद कर, युद्ध की इच्छा से रणभूमि में क्रीड़ा की थी? इसका पूरा पूरा हाल तुम मुझे सुनाओ।

सञ्जय बोले—हे राजेन्द्र ! अभिमन्यु के वध का वृत्तान्त विस्तार पूर्वक मैं आपको सुनाता हूँ। आप ध्यान दे कर सुनिये। जिस प्रकार बहुत से

अपने आँखों से देख ही रही है। हे द्रौपदी! वेदवर्णित विषयों का प्रत्यक्ष अनुभव करने वाले देवताओं के तुल्य ये ऋषिगण, सदैव से धर्म ही को मुख्य कर्त्तव्य बतलाते चले आते हैं। अतः हे रानी! तुझे मूर्खता में फँसे अपने मन में ईश्वर की निन्दा को स्थान नहीं देना चाहिये। धर्म पर सन्देह करने वाला मूर्ख जन, दूसरों के दिये हुए प्रमाणों को नहीं मानता; किन्तु अपने ही प्रमाणों पर केवल बड़ा अभिमान ही नहीं करता, किन्तु वह धर्म का अपमान भी करता है। साथ ही वह समस्त तत्त्वों का निश्चय करने वाले श्रेष्ठ जनों को विक्षिप्त समझता है। ऐसा मनुष्य इन्द्रियों में प्रेमोत्पन्न करने वाली वस्तुओं ही को, जो संसार में प्रत्यक्ष देख पड़ती हैं, सच्चा समझ बैठता है। किन्तु इन्द्रियों द्वारा न जानने योग्य धर्मादि (सूक्ष्म) विषयों में सदैव अनभिज्ञ बना रहता है। अर्थात् उसको सांसारिक विषयों ही में सुख जान पड़ता है, किन्तु जो ज्ञानगम्य वस्तु विशेष हैं, वे उसे मिथ्या जान पड़ती हैं। धर्म पर सन्देह करने वाले ऐसे मनुष्य के लिये कोई प्रायश्चित्त विधान भी नहीं। कृपण एवं पापिष्ठ नास्तिक जन, अनेक विषयों को सोचा विचारा करता है। किन्तु धर्मानुष्ठान से मिलने वाले स्वर्गादि उत्तम लोकों की प्राप्ति उसे नहीं होती। जो आदमी काम और लोभ में फँस, वेदादि शास्त्रों को प्रमाण नहीं मानता तथा वेदों और अन्य शास्त्रों के अर्थ की निन्दा करता है, वह आदमी मरने के पीछे नरक में डाला जाता है और जो किसी प्रकार का भी सन्देह किये बिना ही, धर्म को सर्वोत्तम मानता है और धर्म-कार्यों के करने में मन लगाता है, उसकी अन्त में मोक्ष होती है। किन्तु जो आदमी शास्त्रमर्यादा का भङ्ग कर, काम करता है और आर्ष प्रमाणों की अवहेलना कर, धर्म पर नहीं चलता, उस आदमी को सहस्रों जन्मों तक सुख की प्राप्ति नहीं होती। अतएव हे द्रौपदी! सर्वदर्शी और सर्वज्ञ ऋषियों ने जिस धर्म का उपदेश दिया है तथा जो शिष्टों का शिष्टाचार रहा है, उस सनातन धर्म पर तू सन्देह मत कर। हे द्रौपदी! समुद्र पार जाने वाले व्यापारी को जिस प्रकार नाव ही उस पार पहुँचा सकती है, वसी

सञ्जय बोले—हे राजन् ! मैं आपको आपके बन्धु बान्धवों के नाश होने का सम्पूर्ण वृत्तान्त सुनाता हूँ । आप शोक न करें और मन लगा कर मेरी बातें सुनें । हे राजेन्द्र ! अब द्रोणाचार्य ने चक्रव्यूह की रचना की और उसमें यथास्थान पराक्रमी राजा लोग तथा राजपुत्र नियत किये गये, तब उस चक्रव्यूह में कौरव पक्ष के समस्त राजे और राजपुत्र उपस्थित थे । सोने की ध्वजा से युक्त, लाल कपड़े पहिने, लाल पताका धारण करने वाले और सोने की मालाएँ पहिनने वाले, चन्दनचर्चित शरीर, पुष्पमालाओं से भूषित योद्धा प्रतिज्ञा कर और लड़ने के लिये उत्सुक हो, एक साथ अभिमन्यु की ओर झपके । इनमें आपकी सेना के दस हज़ार धनुर्धर थे और इन सब के आगे आपका पौत्र लक्ष्मण था । वे बड़े विकट योद्धा थे और उनको सहायता भी पर्याप्त प्राप्त थी ।

हे राजेन्द्र ! राजा दुर्योधन उस व्यूह के मध्य महारथी कर्ण कृपाचार्य और दुःशासन के साथ, सेना सहित ऐसे शोभायमान जान पड़ते थे, जैसे देवताओं के बीच इन्द्र । उनकी दोनों ओर सफेद चँवर डुलाये जा रहे थे और मस्तक पर सफेद छाता तना हुआ था । उस सेना के बीच राजा दुर्योधन सूर्य की तरह प्रकाशित होते थे । उस व्यूह के मुखस्थल पर सेनापति द्रोणाचार्य और पराक्रमी सिन्धुराज जयद्रथ, सुमेरु पर्वत की तरह स्थित थे । देवताओं के तुल्य आपके तीस पुत्र अश्वत्थामा को आगे कर सिन्धुराज जयद्रथ की दहिनी ओर खड़े हुए थे । गान्धारराज मायावी शकुनि, शल्य और भूरिश्रवा जयद्रथ की बाईं ओर थे । इस युद्ध से छुटकारा दिलाने वाले एक मात्र मृत्युदेव हैं—यह विचार कर, आपकी और शत्रुओं की सेनाओं के वीरों से रोमाञ्चकारी युद्ध होने लगा ।

पैंतीसवाँ अध्याय

चक्रव्यूह भङ्ग करने के लिये अभिमन्यु की प्रतिज्ञा

सञ्जय बोले—भीमसेन को आगे कर पाण्डवों ने द्रोणाचार्य से रक्षित एवं व्यूहरूप कौरवों की सेना पर आक्रमण किया। सात्यकि, चेकितान, धृष्टद्युम्न, कुन्तिभोज, द्रुपद, अर्जुन-पुत्र क्षत्रधर्मा, बृहत्क्षत्र, चेदिराज, धृष्टकेतु, नकुल, सहदेव, घटोत्कच, युधामन्यु, अपराजित शिखण्डी, महाबली उत्तमौजा, महारथी विराट, द्रौपदी के पाँचों पुत्र और शिशुपालपुत्र आदि पराक्रमी राजा लोग, हज़ारों युद्ध-विद्या-विशारद एवं अस्त्र-शस्त्र-प्रहार-कुशल योद्धाओं के साथ ले द्रोणाचार्य की ओर झपटे। पराक्रमी द्रोणाचार्य भी अपना प्रचण्ड धनुष चढ़ा कर, बाणों की वर्षा करके उन सम्पूर्ण राजाओं को युद्ध से निवारण करने लगे। जैसे जल का प्रचण्ड प्रवाह अभेद्य पर्वत के अथवा समुद्र का प्रबल वेग सम्पन्न प्रवाह तट के आगे नहीं जाता, वैसे ही वे सम्पूर्ण राजा लोग, द्रोणाचार्य के समीप पहुँच कर आगे न जा सके। हे राजेन्द्र! पाण्डव और सञ्जय द्रोणाचार्य के बाणों से पीड़ित हो, उनके सामने खड़े रह न सके। उस समय मैंने द्रोणाचार्य का यह अतुल पराक्रम देखा कि, पाञ्चाल योद्धा सृञ्जयों के सहित मिल कर भी, उनके सामने खड़े न रह सके।

धर्मराज युधिष्ठिर उस समरभूमि में, युद्ध के लिये उपस्थित हुए एवं अत्यन्त क्रुद्ध द्रोणाचार्य को देख कर, उनको निवारण करने के विषय में विविध प्रकार की चिन्ताओं से चिन्तित हुए। जब उन्होंने देखा कि, श्रीकृष्ण और अर्जुन के समान पराक्रमी अभिमन्यु को छोड़, द्रोणाचार्य को अन्य कोई नहीं रोक सकता, तब उन्होंने इस असह्य तथा अत्यन्त दारुण युद्ध का भार अभिमन्यु को सौंपा। वे, शत्रुनाशन एवं पराक्रमी अभिमन्यु से बोले—हे वत्स! हम लोगों को, चक्रव्यूह का भेद करना मालूम नहीं। अतएव तुम ऐसा उपाय सोचो, जिससे लौट कर अर्जुन हम लोगों की निन्दा न

करो। हे तात! अर्जुन, श्रीकृष्ण, प्रद्युम्न और तुम्हें छोड़ अन्य कोई भी हमारे पक्ष का नामी योद्धा इस चक्रव्यूह को नहीं भेद सकता। हे वत्स! तुम अपने पितृकुल एवं मातृकुल तथा इन समस्त योद्धाओं के मनोरथ को पूरा करो। तुम अविलम्ब शस्त्र उठा द्रोणाचार्य की सेना का संहार करो। ऐसा होने पर ही संशप्तक युद्ध से निवृत्त हो अर्जुन, हम लोगों की निन्दा न करेंगे। अभिमन्यु ने कहा—मैं अपने चाचाओं की जीत के लिये दृढ़ और अति भयङ्कर द्रोण की सेना में घुसूँगा। मुझे पिता जी ने चक्रव्यूह का तोड़ना सिखलाया है, परन्तु उससे बाहिर निकलने का उपाय नहीं बतलाया। अतः यदि मैं किसी प्रकार के सङ्कट में फँस गया तो मेरे लिये निकलना कठिन होगा।

यह सुन युधिष्ठिर ने कहा—हे वत्स! तुम इस सैन्यव्यूह को भङ्ग कर उसमें घुसने के लिये हमें मार्ग दिखा दो। जिस मार्ग से तुम उसमें घुसोगे, उसीसे हम लोग भी तुम्हारे पीछे पीछे चलेंगे। हे वत्स! तुम युद्ध में अर्जुन के समान हो। अतः हम तुम्हारे अनुगामी बन, तुम्हारी रक्षा करेंगे और शत्रुओं से युद्ध करेंगे।

भीमसेन बोले—मैं, धृष्टद्युम्न सात्यकि, पञ्चाल केकय, मत्स्य और प्रभद्रक योद्धा तुम्हारे पीछे पीछे चलेंगे। तुम व्यूह को भङ्ग करते हुए जिस रास्ते से जाओगे, हम लोग उसी मार्ग से शत्रुपक्ष के मुख्य मुख्य योद्धाओं का संहार कर, वहाँ की समस्त सेना को मार डालेंगे।

अभिमन्यु ने कहा—जैसे पतंगे धधकती हुई आग में घुसते हैं, वैसे ही आज मैं क्रुद्ध हो, इस दुर्भेद्य शत्रु सैन्यव्यूह में प्रवेश करूँगा। आज मैं पितृ और मातृ वंश के हितकर और पिता तथा मामा के प्रीतिवर्धक कर्म को करूँगा। यद्यपि मैं बालक हूँ; तथापि आज सम्पूर्ण प्राणी मेरे अस्त्रों शस्त्रों के प्रहार से झुण्ड के झुण्ड शत्रु सैनिकों को मर कर भूमि पर गिरते हुए देखेंगे। आज के युद्ध में यदि मुझसे बच कर कोई जीता बच जाय, तो मैं अपने पिता अर्जुन और माता सुभद्रा का जना हुआ ही नहीं हूँ। यदि आज मैं

अकेले ही रथ पर सवार हो सम्पूर्ण क्षत्रिय वीरों को समरक्षेत्र से तितर बितर न करूँ तो मैं अर्जुन का पुत्र ही नहीं हूँ।

धर्मराज कहने लगे—हे सुभद्रानन्दन ! तुम साध्य, रुद्र, वायु, वसु, अग्नि, आदित्य के समान पराक्रम से युक्त, महाधनुर्धर, महाबली, पुरुष-सिंहों से रक्षित, दुर्गम द्रोणसेना के व्यूह को भेद करने के लिये उत्साह दिखला रहे हो—अतः तुम्हारे बल की वृद्धि हो।

सञ्जय बोले—हे राजन् ! युधिष्ठिर के इन वचनों को सुन कर, अभिमन्यु ने अपने सारथी से कहा—हे सुमित्र ! तुम मेरा रथ हाँक कर द्रोणाचार्य के सन्मुख ले चलो !

छब्बीसवाँ अध्याय

अभिमन्यु का चक्रव्यूह में प्रवेश

सञ्जय ने कहा—हे राजन् ! अभिमन्यु ने बुद्धिमान् राजा युधिष्ठिर के वचन को सुन कर—बढ़ाओ बढ़ाओ—कह कर सारथि को द्रोणाचार्य की सेना के निकट रथ ले चलने की आज्ञा दी। उस समय सारथि ने अभिमन्यु से कहा—हे राजकुमार ! तुम्हारे चाचाओं ने तुम्हारे ऊपर बड़ा प्रचण्ड एवं गुरु भार रखा है। किन्तु अपने पराक्रम का विचार कर, असाध्य कर्म के सिद्ध करने में तुम्हारा सामर्थ्य है कि नहीं, तुम्हें अपनी बुद्धि से भली भाँति सोच विचार कर, इस युद्ध में प्रवृत्त होना चाहिये। द्रोणाचार्य अखिल शस्त्रविद्या के ज्ञाता हैं और युद्ध करने में कभी श्रान्त नहीं होते। तुम युद्धविद्या के ज्ञाता तो हो; किन्तु तुम बड़ी सुकुमारता से पाले पोसे गये हो।

यह सुन अभिमन्यु ने अपने सारथि से कहा—हे सारथि ! मैं समस्त देवताओं सहित ऐरावतारूढ़ इन्द्र से भी लड़ सकता हूँ। मैं द्रोणाचार्य

तथा अन्य समस्त क्षत्रियों से ज़रा भी नहीं डरता। हे सूत! यह सम्पूर्ण कुरुसेना मेरे सोलह भाग का एक भाग भी नहीं हो सकती। विश्व विजयी मामा श्रीकृष्ण और पिता अर्जुन के संग युद्ध करने में भी मुझे कुछ भय नहीं होता।

अभिमन्यु ने सारथि की बात न मानी और सारथि को द्रोणाचार्य की सेना के निकट शीघ्र रथ ले चलने की आज्ञा दी। इस पर सारथि प्रसन्न तो न हुआ। किन्तु आज्ञा का पालन करते हुए उसने तीन वर्ष की उम्र के और सोने के साज से सजे हुए घोड़ों से युक्त रथ को द्रोणाचार्य से रक्षित कौरव-सेना की ओर हाँका। हे राजेन्द्र! महावेगमान् एवं पराक्रमी घोड़े, सुमित्र नामक सारथी के चलाने पर, द्रोणाचार्य के रथ की ओर दौड़े। तब द्रोणाचार्यादि समस्त कौरवगण अभिमन्यु को अपनी ओर आते देख, उसके सामने हुए। पाण्डव अभिमन्यु के पीछे पीछे जा रहे थे। जैसे सिंह का किशोर शावक, हाथियों के दल पर आक्रमण करता है, वैसे ही सुवर्णभूषित कवच और सुन्दर ध्वजा से युक्त महाबली अभिमन्यु ने द्रोणाचार्यादि महारथियों पर आक्रमण किया। अभिमन्यु को व्यूह में घुसते देख कौरव योद्धा प्रसन्न हुए और युद्ध करने लगे। जैसे गङ्गा और समुद्र का सङ्गम होने पर मुहूर्त भर के लिये उस स्थल में जल ही जल देख पड़ता है, वैसे ही उस समय दोनों सेनाओं का समागम हुआ। दोनों ओर से भयङ्कर शस्त्रवृष्टि होने लगी। द्रोणाचार्य की आँखों के सामने अभिमन्यु ने उनका बनाया चक्रव्यूह भङ्ग कर डाला और वह उनकी सेना में घुस गया। गजरथि, घुड़सवार, रथी और पैदल सेना के योद्धा, अभिमन्यु को आगे बढ़ते देख और उसे घेर, उसके ऊपर अनेक शस्त्रों का प्रहार करने लगे। वे योद्धा, मारू बाजे बजवा, स्वयं उत्कट गर्जन कर तथा धनुषों की टंकारें कर, सिंहनाद करते हुए अभिमन्यु को पुकार पुकार कर कहने लगे—खड़ा रह! खड़ा रह, जाता कहाँ है। वहीं खड़ा रह। सामने आकर लड़। मैं यहाँ हूँ। मैं यहाँ हूँ। मैं यहाँ खड़ा हूँ। इस प्रकार के वचन

बार बार गरजते हुए, हाथियों की चिंघार, घोड़ों की हिनहिनाहट और रथों की घरघराहट सहित समस्त योद्धा अभिमन्यु की ओर दौड़े। युद्ध विद्या के जानने वाले महाबली अभिमन्यु, उनको अपनी ओर आते देख, उन पर बाणवृष्टि कर एवं मर्मभेदी बाणों से विद्ध कर, पृथिवी पर गिराने लगे। जैसे पतंगे, धधकती आग में गिरते हैं, वैसे ही वे सब योद्धा अभिमन्यु के शस्त्रप्रहारों से पीड़ित हो कर भी, आगे ही बढ़ते चले गये। जैसे यज्ञ की वेदी कुशों से ढक जाती है, वैसे ही अभिमन्यु ने उन सब के हाथ, सिर, पाँव आदि अङ्ग अपने बाणों से काट कर समरक्षेत्र की भूमि को ढक दिया। मृतकों के शरीरों से वहाँ की भूमि छिप गयी। अभिमन्यु तलवारों, ढालों, अङ्कुशों, घोड़ों की बागडोरों, तोमरों, फरसों, गदाओं, प्रासों, ऋष्टियों, पट्टिशों, भिन्दिपालों, परिघों, शक्तियों, ध्वजाओं, कोड़ों, मुद्गरों, पाशों, पत्थरों आदि को धारण करने वाले योद्धाओं तथा कवच और अङ्गुलित्राण धारी चन्दनचर्चित वीरों की उत्तम भुजाओं को काट काट कर गिराने लगे।

हे राजन्! जैसे गरुड़ द्वारा काटे हुए पञ्चमुखी सर्पों के ढेर से पृथिवी शोभायमान होती है, वैसे ही रुधिर पूरित काँपती हुई उन वीरों की कटी हुई भुजाओं से संग्रामभूमि सुशोभित होने लगी। महापराक्रमी अभिमन्यु ने उत्तम नासिका, मुख, उत्तम केशपाश और उत्तम कुण्डलों सहित वीरों के सिर तथा मुकुट, छत्र शोभित, कमलनाल से युक्त, कमल पुष्पों के समान चमकती हुई मणियों और सुवर्ण युक्त रत्नों से भूषित, सूर्य और चन्द्रमा के समान प्रकाशमान, हितकारी और प्रियवादी, पवित्र, चन्दन आदि सुगन्धित वस्तुओं से युक्त शत्रुसेना के बहुतेरे शूरवीरों के सिरों को पैनों शस्त्रों से काट कर, समरक्षेत्र को भर दिया।

हे राजन्! उस समय मैंने देखा कि, अर्जुननन्दन अभिमन्यु ने अपने अनेक भीषण बाणों से, चारों ओर विविध प्रकार के कल्पित गन्धर्वनगरों के समान सहस्रों रथों की ध्वजाएं, धुरी, चक्के, रथ के ऊपर तथा नीचे के

हिस्सों को काट कर, उन रथों के रथियों को नष्ट कर डाला। दण्ड, ध्वजा और पताकाओं सहित अभिमन्यु ने कितने ही रथों के टुकड़े टुकड़े कर डाले। उन रथों के अग्र प्रदेश और कूबर टूटे पड़े थे। पहियों के टुकड़े टुकड़े हो गये थे। रथों की कुलरियों, गद्दों और लकड़ियों के टुकड़े टुकड़े हो गये थे। रथों के हज़ारों योद्धा बाण से मारे गये थे। शत्रु की गजसेना में, गजसवार और उनकी पताकाएं, अङ्कुश, ध्वजा, वर्म, हौदे, गले के कण्ठे, झीनपोश, घण्टे, सूँड़, दाँत और पाँव, छतरी और उनके पीछे चलने वाले रक्षकों को, अभिमन्यु ने तेज़ बाणों से नष्ट भ्रष्ट कर डाला। वनवासी, पर्वतीय, काम्बोज और बाल्हीक देश स्थित, उत्तम कर्ण और सुन्दर नेत्रों से युक्त, वायु के समान वेगगामी, उत्तम उत्तम अनेक अश्वों का अभिमन्यु ने वध किया। उसने शक्ति, ऋष्टि और प्रास आदि शस्त्रों को धारण करने वाले अत्यन्त शिक्षित शूरवीर घुड़सवार भी मारे। कितने ही घोड़ों की जिह्वाएं और कितनों ही के नेत्र निकल पड़े। कितने ही घोड़ों के पेट फट गये और वे अपने सवारों सहित निर्जीव हो, भूमि पर गिर पड़े। कितने ही घोड़ों के चँवरों सहित झीनपोश कट कुट कर भूमि पर गिर पड़े। कितने ही घोड़ों के कवच कट गये। कितने ही वायुवेगी घोड़े पंखियों और सवारों से रहित हो गये। अभिमन्यु के बाणों के प्रहार से पीड़ित और घायल हो, वे मलमूत्र परित्याग करने लगे। वे समस्त घोड़े लोहू लुहान हो, अभिमन्यु के बाणों से मर कर, पृथिवी पर गिर पड़े। जैसे महातेजस्वी महात्मा विष्णु ने अकेले ही पूर्वकाल में अत्यन्त क्लिष्ट कर्मों को किया, अर्थात् दैत्यों का नाश किया था, वैसे ही अभिमन्यु आपकी सेना को तीन भागों में विभक्त कर, उसका नाश करने लगा। जैसे महातेजस्वी देवों के देव महादेव ने महाभयानक असुरों की सेना का नाश किया था, वैसे ही अभिमन्यु ने युद्धभूमि में अत्यन्त कठिन कर्म कर के, आपकी समस्त पैदल सेना का संहार किया। जैसे पूर्वकाल में देवताओं के सेनापति स्वामिकार्तिकेय ने असुरसेना को विनष्ट किया था, वैसे ही अभिमन्यु ने कौरवों की समस्त सेना को, जो वहाँ लड़ने को उपस्थित

हुई थी, उसने पैने बाणों की मार से पीड़ित कर दिया। उस सेना के सारे वीर, आपकी ओर के पराक्रमी योद्धा, तथा आपके सम्पूर्ण पुत्रों के छक्के छूट गये। वे बगलें झाँकने लगे। उन सब शूरों का मुख सूखने लगा और शरीर से पसीना निकलने लगा तथा उनके रोंगटे खड़े हो गये। अनन्तर वे समस्त योद्धा अपनी जान ले कर युद्धभूमि से भागने लगे। वे सब लोग अपने मृत एवं घायल पिता, पुत्र, भाई और दूसरे सम्बन्धियों को संग्रामभूमि में छोड़ कर, उनके नामों एवं गोत्रों को सुन, आपस में एक दूसरे को ललकारने लगे। किन्तु वे अपने घोड़ों और हाथियों को तेज़ी के साथ हाँक, रण से भाग खड़े हुए।

सैंतीसवाँ अध्याय

अभिमन्यु की वीरता

सञ्जय ने कहा—हे राजन्! अभिमन्यु द्वारा अपनी सेना को तितर बितर हुई देख कर, दुर्योधन बड़ा क्रुद्ध हुआ और उससे लड़ने को स्वयं आगे बढ़ा। दुर्योधन को अभिमन्यु से लड़ने के लिये आगे जाते देख, द्रोणाचार्य ने योद्धाओं को सम्बोधन कर कहा—तुम लोग दुर्योधन की रक्षा करो। क्योंकि अभिमन्यु हमारे सामने ही पहले अनेक योद्धाओं को अपना लक्ष्य बना नष्ट कर चुका है। अतः तुम लोग निर्भय हो, दुर्योधन के पीछे जाओ और दुर्योधन की रक्षा करो। आचार्य द्रोण के ये वचन सुन, विजयाभिलाषी आपके सगे सम्बन्धी और आपके पुत्र, दुर्योधन की रक्षा करने के लिये उसके चारों ओर हो लिये। इतने में द्रोण, अश्वत्थामा, कृपाचार्य, कर्ण, सुबलपुत्र, कृतवर्मा, बृहद्बल, मद्रराज, भूरिश्रवा, पौरव, शल, और वृषसेन ने अभिमन्यु पर बाण-वृष्टि करनी आरम्भ की। इन सब ने अभिमन्यु को मूर्छित कर, दुर्योधन को

बचा लिया। मुख में आये हुए ग्रास की तरह दुर्योधन का बच कर निकल जाना, अभिमन्यु को बहुत बुरा मालूम पड़ा। अभिमन्यु ने घोर बाणवृष्टि कर, उन महारथियों को उनके रथों सहित भगा कर सिंहनाद किया। माँसाभिलाषी सिंहतुल्य अभिमन्यु के सिंहनाद को आचार्य द्रोण आदि सहन न कर सके, वे अति क्रुद्ध हुए।

हे राजन्! वे अभिमन्यु को चारों ओर से घेर कर, अनेक चिन्हों से चिन्हित बाण जाल उसके ऊपर छोड़ने लगे। किन्तु आपके पौत्र अभिमन्यु ने अपने पैने बाणों से उस बाणजाल को काट कर टुकड़े टुकड़े कर, केवल व्यर्थ ही नहीं कर दिया, किन्तु उन महारथियों को घायल भी कर डाला। उसका यह करतब बड़ा आश्चर्यकारी था। अभिमन्यु के सर्पों जैसे भयङ्कर बाणों से घायल हो, उन लोगों ने अभिमन्यु का वध करने के लिये उसे चारों ओर से घेर लिया। हे राजन्! उस समय आपकी सेना वैसे ही उफन पड़ी, जैसे समुद्र उफनता है। उस समय अभिमन्यु ने उस उफनती हुई सेना को अपने बाणों से वैसे ही रोका जैसे तट उमड़ते हुए सागर को रोक लेता है। किन्तु न तो आपकी ओर के योद्धाओं ने और न अभिमन्यु ने ही पीछे पैर रखा। उस युद्ध में दुःसह ने अभिमन्यु के नौ, दुःशासन ने बारह, कृपाचार्य ने तीन, द्रोण ने सर्पों की तरह भयानक सत्रह, विविंशति ने सत्तर, कृतवर्मा ने सात, बृहद्बल ने आठ, अश्वत्थामा ने सात, भूरिश्रवा ने तीन, शल्य ने शीघ्रगामी छः, शकुनि ने दो और दुर्योधन ने तीन बाण मारे। किन्तु प्रतापी अभिमन्यु ने अपने धनुष को हाथ में ले चारों ओर घूम फिर कर, उन सब के बाणों को तीन तीन बाणों से काट कर भूमि पर गिरा दिया। उस समय हाथ में धनुष ले चारों ओर घूमता हुआ अभिमन्यु नाचता सा जान पड़ता था। आपके पुत्र उसको भयत्रस्त करना चाहते थे, अतः उसने आपके पुत्रों को अपनी अस्त्रशिक्षा का आश्चर्यकारी परिचय दिया। सारथि के इशारे पर वायु अथवा गरुड़ की तरह वेग से चलने वाले घोड़ों से युक्त रथ पर सवार, अश्मक देश का राजा,

अभिमन्यु के निकट पहुँचा और अभिमन्यु को रोकने के लिये दस बाण मार उससे बोला—अरे खड़ा रह! खड़ा रह!! खड़ा रह!!! किन्तु अभिमन्यु ने हँसते हँसते दस बाण मार, उसके घोड़े, सारथी, ध्वजा, तथा उसकी दोनों भुजाएं, उसका धनुष और सिर काट कर भूमि पर गिरा दिये। अभिमन्यु द्वारा वीर अश्मक के मारे जाने से, समस्त कौरव सेना घबड़ा गयी और भागना ही चाहती थी कि, इतने में क्रोध में भर कर्ण, कृप, द्रोण, अश्वत्थामा, शकुनि, शल, शल्य, भूरिश्रवा, क्राथ, सोमदत्त, विविंशति, वृषसेन, सुषेण, कुण्डभेदी, प्रतर्दन, वृन्दारक, ललित्थ, प्रबाहु, दीर्घलोचन और दुर्योधन ने एक साथ अभिमन्यु के ऊपर बाणों की वर्षा करनी आरम्भ की। इन महाधनुर्धरों के छोड़े जाने वाले बाणों से अभिमन्यु बहुत घायल हो गया। तब उसने कवच को फोड़ शरीर को फोड़ने वाला एक बाण कर्ण के मारा। वह बाण कर्ण के कवच और शरीर को फोड़ कर बड़े वेग से पृथिवी में वैसे ही घुस गया जैसे सर्प बाँबी में घुसता है। इस बाण के लगने से कर्ण बहुत पीड़ित हुआ। यहाँ तक कि जैसे भूडोल के समय पृथिवी काँपे, वैसे ही वह काँपने लगा। अभिमन्यु ने जैसे कर्ण को क्षुब्ध किया वैसे ही उसने क्रोध में भर, तीन बाण मार, सुषेण, दीर्घलोचन और कुण्डभेदी को घायल किया। तब कर्ण ने पचीस, अश्वत्थामा ने बीस और कृतवर्मा ने सात नाराच बाण अभिमन्यु के मारे। उस समय अभिमन्यु के सारे शरीर में बाण बिंधे हुए थे। इन्द्र के पुत्र का पुत्र अभिमन्यु क्रुद्ध हो, उस समय पाशधारी यमराज की तरह देख पड़ता था। महाबाहु अभिमन्यु ने निकटस्थ शल्य को बाणों से ढक दिया और आपकी सेना को भयत्रस्त करने के लिये घोर सिंहगर्जना की। अस्त्रवेत्ता अभिमन्यु के छोड़े जाने वाले बाणों से भिदा हुआ शल्य, रथ का डंडा पकड़ कर बैठ गया और वह अचेत हो गया। प्रथितयशा अभिमन्यु ने जब शल्य को मूर्छित कर दिया, तब यह देख, द्रोणाचार्य के विद्यमान रहते ही समस्त कौरवसेना तितर बितर हो भागने लगी। सुवर्णपुंख बाणों से शल्य बिंध गया था। उसकी यह दशा

देख, सिंह से त्रस्त मृगों की तरह कौरवसेना रणक्षेत्र छोड़ भागने लगी। उस समय पितर, देवगण, चारण, सिद्ध, यक्ष तथा मनुष्य सब के सब, अभिमन्यु के इस अलौकिक पराक्रम को देख, उसकी प्रशंसा कर, उसके प्रति सम्मान प्रदर्शित करने लगे। उस समय अभिमन्यु घी की आहुति डालने से प्रदीप्त अग्नि की तरह अत्यधिक प्रकाशित हुआ।

अड़तीसवाँ अध्याय

कौरवों की घबड़ाहट

धृतराष्ट्र ने पूछा—हे सञ्जय! जब अभिमन्यु ने हमारे पक्ष के महाधनुर्धरों को सीधे जाने वाले बाणों से नाश करना आरम्भ किया; तब कौरवों में से किस किस ने उसे रोका?

सञ्जय ने कहा—हे राजन्! आचार्य द्रोण से रक्षित रथ सैन्य को नष्ट करने के लिये अभिमन्यु ने जो पराक्रम प्रदर्शित किया, अब मैं आपको उसका वर्णन सुनाता हूँ। जब शल्य के छोटे भाई ने सुना कि, उसके बड़े भाई को अभिमन्यु ने बाण मार कर निकम्मा कर डाला है, तब वह क्रोध में भर बाणवृष्टि करता हुआ अभिमन्यु की ओर दौड़ा। उसने दस बाण मार अभिमन्यु को उसके सारथि और घोड़ों सहित घायल कर कहा—अभिमन्यु खड़ा रह! खड़ा रह! यह सुनते ही फुर्तीले अभिमन्यु ने बाण मार शल्य के छोटे भाई का सिर, गर्दन, हाथ, पैर, धनुष, घोड़े, छत्र, ध्वजा, सारथि, जुआँ, बैठक, पहिये, धुरी, भाथा, धनुष, कोश, बाण, ध्वजा, पहियों के रक्षक और रथ की अन्य समस्त सामग्री ऐसी सफाई से काट डाली कि, ऐसा करते उसे कोई देख तक न पाया। तदनन्तर अभिमन्यु के द्वारा वह निर्जीव हो भूमि पर वैसे ही गिरा, जैसे वायु के झोंके से पर्वत टूट कर गिरता है। उसके गिरते ही उसके अनुयायी भयभीत हो वहाँ से भाग गये।

का अन्त होता है, तब वह उसी प्रकार मर जाता है, जिस प्रकार जल में मनमाना विहार करने वाला मच्छ, जल के सूखते ही मर जाता है। अतएव जो चतुर जन होता है, वह धर्म और अर्थ के उपार्जन में कभी असावधानी नहीं करता। धर्म और अर्थ से कामनाएं वैसे ही उत्पन्न होती हैं, जैसे अरणी काठ से अग्नि। अवश्य ही धर्म से अर्थ उत्पन्न होता है और धर्म से धन उपार्जन किया जा सकता है। इसीसे नीति में धर्म को अर्थ का और अर्थ को धर्म का कारण कहा है। धर्म और अर्थ का वैसा ही परस्पर सम्बन्ध है, जैसा कि मेघों का और समुद्र का। पुष्पों की माला, चन्दन आदि वस्तुओं को छूने से और सुवर्ण के मिलने से जो प्रसन्नता मन में उत्पन्न होती है, उसीका नाम काम है। किन्तु काम निराकार होने के कारण उसका शरीर देखने में नहीं आता। हे राजन्! धनार्थी जन बड़ा धर्म सम्पादन करना चाहता है और जो कामार्थी हैं, वह धन पाने के लिये इच्छा करता है। किन्तु इसकी इच्छा केवल धनप्राप्ति के लिये ही होती है, यह अन्य किसी वस्तु की चाहना नहीं करता। जिस प्रकार धर्म से अर्थ की और अर्थ से धर्म की सिद्धि होती है, वैसे काम से अन्य किसी काम की सिद्धि नहीं होती। जैसे काठ के जल जाने पर भस्म तो हो जाती है; परन्तु उस भस्म से और कोई काम नहीं हो सकता; वैसे ही कामी पुरुष यदि पण्डित हो भी, तो कामी होने के कारण, वह धर्म और अर्थ उपार्जन नहीं कर सकता। इसी प्रकार जीवों की हिंसाविशेष करना भी अधर्म है, जैसे कि बहेलिया लोग सब प्रकार के पक्षियों को मारा करते हैं। इस संसार में काम और लोभ के कारण, धर्म के स्वरूप को न देख सकने वाला जन, क्या इस लोक और क्या परलोक—सर्वत्र ही सब प्राणियों का वध्य (शिकार) होता है और मरने पर उसे नरकयातना भी भोगनी पड़ती है।

हे राजन्! यह बात तो आप भली भाँति जानते ही हैं कि, कोई काम बिना द्रव्य के नहीं होता। यह भी आप जानते हैं कि, अर्थ की प्रकृति और विकृति अर्थात् उसके त्याग और भोगादि का रूप कैसा है।

ने द्रोण के सामने ही उनकी रथसेना पर, क्षुरप्र, वत्सदन्त, विपाठ, नाराच, अर्धचन्द्राकार, भल्ल और अञ्जलिक आदि विविध प्रकार के बाण छोड़े। उनके प्रहार से द्रोण की रथसेना समरक्षेत्र छोड़ भाग गयी।

उन्तालीसवाँ अध्याय

अभिमन्यु और दुःशासन की मुठभेड़

धृतराष्ट्र बोले—हे सञ्जय! सुभद्रानन्दन अभिमन्यु द्वारा अपनी सेना के भगाये जाने का वृत्तान्त सुन, मेरा चित्त भयभीत भी होता है और साथ ही सन्तुष्ट भी। अतएव हे सञ्जय! मुझे अभिमन्यु का वह पराक्रम, जो उसने कौरवों को वैसे ही दिखाया था जैसे कार्तिकेय ने असुरों को, मुझे विस्तार पूर्वक सुनाओ।

सञ्जय ने कहा—हे धृतराष्ट्र! अकेले अभिमन्यु ने अनेक महारथियों से युद्ध किया था। उस दारुण युद्ध का वृत्तान्त मैं आपको सुनाता हूँ। रथस्थ एवं उत्साही अभिमन्यु ने आपकी ओर की रथसैन्य पर बाणवृष्टि करनी आरम्भ कर दी। अभिमन्यु ने चक्र की तरह चारों ओर घूम कर, द्रोण, कृप, कर्ण, शल्य, अश्वत्थामा, भोज, बृहद्बल, दुर्योधन, सोमदत्त, महाबली शकुनि तथा और भी राजाओं, राजकुमारों तथा सैनिकों के ऊपर बाणवृष्टि की। हे राजन्! उस समय प्रतापी एवं तेजस्वी अभिमन्यु दिव्यास्त्रों के प्रयोग से शत्रुओं का वध करता हुआ, रणभूमि में जिधर देखो उधर ही देख पड़ता था। अमित पराक्रमी सुभद्रानन्दन के ऐसे चरित को देख कर, आपकी सेना के दल के दल थर्रा उठे। प्रतापी और बुद्धिमान् द्रोण के नेत्र रणपण्डित अभिमन्यु को देख, प्रफुल्लित हो गये। वे दुर्योधन के मर्मस्थलों को भेदते हुए से कृपाचार्य से कहने लगे—पाण्डवों का प्रसिद्ध तरुणकुमार अभिमन्यु अपने समस्त मित्रों, युधिष्ठिर, नकुल, सहदेव, भीमसेन, समस्त बन्धुबान्धवों तथा अन्य मध्यस्थ मित्रों को आनन्द देता हुआ हमारी सेना

की ओर बढ़ता चला आ रहा है। मैं तो समझता हूँ कि, युद्ध में इसकी टक्कर का और कोई धनुर्धर है नहीं। यदि यह चाहे तो इस सेना का सर्वनाश कर सकता है। किन्तु न मालूम यह ऐसा क्यों नहीं करता। द्रोण के ऐसे प्रीतिपूर्ण वाक्यों को सुन, आपके पुत्र दुर्योधन को अभिमन्यु पर बड़ा क्रोध उत्पन्न हुआ और द्रोण की ओर आश्चर्य भरी दृष्टि से देख वह बोला। साथ ही उसने कर्ण, राजा बाह्लीक, मद्रराज तथा अन्य महारथियों को भी सम्बोधन कर कहा—समस्त मूर्धाभिषिक्त राजाओं के आचार्य यह द्रोण अर्जुन के मूढ़ पुत्र अभिमन्यु का वध करना नहीं चाहते और कहते हैं कि यदि यह आततायी बन जाय तो युद्ध में काल भी इसके सामने नहीं टिक सकता। फिर मनुष्य की तो बिसात ही क्या है? किन्तु अभिमन्यु अर्जुन का पुत्र है और अर्जुन द्रोणाचार्य का शिष्य है। इसीसे आचार्य द्रोण अभिमन्यु की रक्षा करते हैं। क्योंकि जो धर्मात्मा होते हैं, उन्हें अपने शिष्य, पुत्र और उनकी सन्तति पर स्नेह होता ही है। अतएव द्रोण अभिमन्यु की रक्षा करते हैं। किन्तु अहङ्कारी मूढ़ अभिमन्यु का इससे उत्तरोत्तर उत्साह बढ़ता जा रहा है। अतः तुम लोग शीघ्र इसका वध करो। जब राजा दुर्योधन ने यह आज्ञा दी, तब द्रोणाचार्य के देखते देखते वे योद्धा क्रोध में भर अभिमन्यु की ओर दौड़े।

हे कुरुशार्दूल! दुर्योधन की बात सुन दुःशासन ने उससे कहा—हे राजन्! मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि, समस्त पाञ्चालों और पाण्डवों के सामने ही मैं अभिमन्यु का वध करूँगा। जैसे राहु चन्द्रमा को निगल जाता है, वैसे ही मैं अभिमन्यु को निगल जाऊँगा। यह कह दुःशासन ने पुनः उच्च स्वर से कुरुराज से कहा—अभिमन्यु का मेरे हाथ से मारा जाना सुन, अर्जुन और श्रीकृष्ण निश्चय ही मर्त्यलोक छोड़ प्रेतलोक में पहुँच जाँयगे। उन दोनों को मरा हुआ सुन, पाण्डु के क्षेत्रज नपुंसक पुत्र भी अपने नाते रिश्तेदारों सहित अपने आप मृत्यु को प्राप्त हो जाँयगे। अतः इस अकेले एक शत्रु के मारे जाने पर, तुम अपने समस्त शत्रुओं को मरा समझना।

अतः हे राजन् ! तुम मेरी मङ्गल कामना करो । मैं अभी तुम्हारे शत्रुओं का वध करता हूँ ।

सञ्जय ने कहा—हे राजन् ! आपका पुत्र दुःशासन यह कह कर बड़े ज़ोर से गरजा और क्रोध में भर बाण बरसाता हुआ, अभिमन्यु की ओर दौड़ा। क्रुद्ध दुःशासन को अपनी ओर आते देख, शत्रुनाशी अभिमन्यु ने छब्बीस बाण मारे। मदमस्त हाथी की तरह दुःशासन भी क्रोध में भर गया और वह अभिमन्यु से भिड़ गया। अभिमन्यु भी उससे लड़ने गये। रथशिक्षा में दुःशासन और अभिमन्यु दोनों ही निपुण थे, अतः वे दोनों रथों से दहिनी बाईं ओर अद्भुत रीति से मण्डलाकार घूम घूम कर लड़ने लगे। उस समय समस्त योद्धा लवणसागर के महाभयानक शब्द की तरह, वीरों के सिंहनाद और धनुषों की टंकार के शब्दों के साथ ढोल, नगाड़े, मृदङ्ग, झाँझ आदि बाजे बजाने लगे।

चालीसवाँ अध्याय

दुःशासन और कर्ण की हार

सञ्जय ने कहा—हे राजन् ! बाणों से घायल शरीर बुद्धिमान अभिमन्यु, सामने खड़े हुए अपने वैरी दुःशासन से हँस कर बोला—यह बड़ी अच्छी बात है कि, आज रणक्षेत्र में मैं अपने सामने, अभिमानी, शूर, क्रूरकर्मा, क्षात्रधर्म-त्यागी और पिशुन तुझे, खड़ा देख रहा हूँ। महाराज धृतराष्ट्र के सामने तूने भरी सभा में कठोर वचन कह, महाराज धर्मराज को कष्ट पहुँचाया था। इतना ही क्यों, तूने कपटी शकुनी के कपट-द्यूत का सहारा ले और विजय से पागल बन, भीमसेन को भी बड़े बड़े कटु एवं असम्बद्ध वचन सुनाये थे। उनको सुन, उनका क्रोध भड़क उठा था। वह

उन्हींके कोप का तथा परस्वापहरण का परिणाम है कि, आज तू मरने के लिये मुझसे लड़ने आया है। लोभ, अज्ञान, द्रोह, और साहस के कारण उस धनुषधारी मेरे बड़ों के राज्य को युद्ध में हड़प जाने के कारण तथा उन महाबलियों को कुपित करने के कारण, तुझे आज यह दिन देखना पड़ा था। ऐ दुर्मते! तुझे अपने महाभयङ्कर पापों का महाभयानक फल आज अवश्य प्राप्त होगा। मैं समस्त सैनिकों के सामने बाणप्रहार द्वारा तुझे तेरे किये का फल चखाऊँगा। मैं आज अपने पिता के कोप का बदला तुझसे लूँगा। हे कुरुपुत्र! आज मैं कुपिता द्रौपदी और उसके वैर का बदला लेने को उत्सुक अपने पिता तथा पितृव्य भीमसेन के ऋण से समरक्षेत्र में उऋण हो जाऊँगा। यदि तू रण छोड़ भाग न गया, तो तू आज मेरे सामने से जीता जागता न जा सकेगा। यह कह, शत्रुनाशकारी महाबली अभिमन्यु ने दुःशासन का वध करने के लिये, कालाग्नि और कालवायु जैसा तेजस्वी एक महाबाण तान कर, दुःशासन की छाती को लक्ष्य कर छोड़ा। उस बाण ने दुःशासन की हँसली की हड्डी तोड़ दी और वह पुंख सहित पृथिवी में वैसे ही घुस गया, जैसे सर्प बाँबी में घुस जाता है। तदनन्तर अभिमन्यु ने धनुष के रोदे को कान तक तान अग्नि तुल्य चमचमाते पचीस बाण दुःशासन के मारे। उनसे दुःशासन का शरीर चलनी हो गया और वह हाय हाय कर रथ के खटोले में गिर पड़ा। जब दुःशासन इस प्रकार अभिमन्यु के बाणप्रहार से पीड़ित हो, मूर्छित हो गया, तब सारथि रथ को भगा, रणक्षेत्र से उसे दूर ले गया। यह देख पाण्डव, द्रौपदी के पाँचों पुत्र, विराट, पाञ्चाल और केकय योद्धा सिंहनाद करने लगे। पाण्डव पक्षीय सैनिक हर्षित हो, विविध प्रकार के बाजे बजाने लगे और प्रसन्न हो, अभिमन्यु के पराक्रम को निहारने लगे। बड़े अभिमानी एक शत्रु को पराजित हुआ देख, धर्म, पवन, इन्द्र और अश्विनीकुमारों की प्रतिमाओं से चिन्हित ध्वजाओं से युक्त रथों पर सवार, युधिष्ठिरादि पाण्डव, महारथी द्रौपदी के पुत्र, सात्यकि, चेकितान, धृष्टद्युम्न, शिखण्डी, केकय, धृष्टकेतु, मत्स्य,

पाञ्चाल और सृञ्जय, अत्यन्त हर्षित हो, द्रोण की सेना को नष्ट कर डालने के लिये बड़ी फुर्ती के साथ, आगे बढ़े। तब आपके योद्धाओं के साथ उनका युद्ध होने लगा। युद्ध के समय कभी पीठ न दिखाने वाले विजयाभिलाषी वीरों में भयङ्कर युद्ध होने लगा। तब दुर्योधन ने राधेय कर्ण से कहा—रण में शत्रु-संहारकारी एवं प्रचण्ड सूर्य की तरह देख पड़ने वाले अभिमन्यु ने, देखो शूर दुःशासन को परास्त कर दिया है। दुर्योधन यह कह ही रहा था कि, इतने में पञ्चोत्कट सिंहों की तरह क्रुद्ध पाण्डव अभिमन्यु की रक्षा के लिये, आगे बढ़े। यह देख, आपके पुत्र का हितैषी कर्ण, क्रुद्ध हो, दुरासद अभिमन्यु के ऊपर पैने बाण बरसाने लगा। वह अभिमन्यु का तिरस्कार कर, उसके सैनिकों को घायल करने लगा। तब द्रोण को पकड़ने के अभिलाषी उदार-मना अभिमन्यु ने कर्ण के तिहत्तर बाण मारे। फिर वह द्रोण की ओर बढ़ा। उस समय द्रोण की ओर बढ़ते हुए और रथों की पङ्क्तियों को नष्ट करते हुए इन्द्रपौत्र अभिमन्यु को, शत्रु पक्षीय कोई भी रथी निवारण न कर सका। तदनन्तर विजयाभिलाषी समस्त धनुर्धरों में मानी, अस्त्रज्ञों में श्रेष्ठ एवं परशुराम के शिष्य प्रतापी कर्ण ने सैकड़ों शस्त्रों से दुर्धर्ष शत्रु अभिमन्यु को घायल किया। साथ ही दिव्यास्त्रों का भी प्रयोग कर उसको पीड़ित किया; किन्तु देवताओं के समान अभिमन्यु, कर्ण की अस्त्रवर्षा से पीड़ित हो, घबड़ाया नहीं; प्रत्युत शान पर पैनाये हुए, पत्रों वाले तेज भल्ल बाणों से शूरों के धनुषों को काट, धनुष्मण्डल से छूटे हुए विषधर सर्पों की तरह, भयानक बाणों से कर्ण को घायल कर डाला। फिर मुसक्याते हुए अभिमन्यु ने कर्ण के छत्र, ध्वजा, सारथि और घोड़ों को भी बड़ी फुर्ती से नष्ट भ्रष्ट और घायल कर डाला। बदले में कर्ण ने भी नतपर्व बाण उस पर छोड़े, जिन्हें अभिमन्यु ने क्षुब्ध हुए बिना ही सहन कर लिया। फिर एक मुहूर्त्त में शूर अभिमन्यु ने एक ही बाण से कर्ण की ध्वजा और धनुष को काट डाला। तब कर्ण को सङ्कट में फँसा देख, कर्ण के छोटे भाई ने एक दृढ़ धनुष हाथ में ले, अभिमन्यु पर आक्रमण किया। यह देख पाण्डव और

उनके पक्ष के लोग, हर्षित हो सिंहनाद करने लगे और बाजे बजा अभिमन्यु की प्रशंसा करने लगे।

इकतालीसवाँ अध्याय

कर्ण के भ्राता का मारा जाना

सञ्जय ने कहा—हे धृतराष्ट्र! कर्ण का छोटा भाई तर्जन गर्जन करता और धनुष को टंकोरता उन दोनों महाबलियों (अभिमन्यु और कर्ण) के रथों के बीच जा खड़ा हुआ। फिर मन्द मुसक्यान करते हुए उसने बड़ी फुर्ती के साथ, दस बाण चला, दुर्धर्ष अभिमन्यु के रथ की ध्वजा और छत्र को काट, सारथि और घोड़ों सहित अभिमन्यु को घायल किया। अपने पिता और पितामह के समान अमानुषिक कर्म करने वाले अभिमन्यु को घायल हुआ देख, आपके पुत्र प्रसन्न होने लगे। यह देख मंद मुसक्याते हुए अभिमन्यु ने धनुष तान एक बाण चला कर, कर्ण के छोटे भाई का सिर काट कर गिरा दिया। उसका कटा हुआ सिर रथ पर से वैसे ही भूमि पर गिर पड़ा, जैसे वायु के झोंके से कनेर का पेड़ पहाड़ से नीचे गिर पड़ता है। अपने भाई के मारे जाने का कर्ण को बड़ा खेद हुआ। इसी बीच में गिद्ध के परों से युक्त बाण मार अभिमन्यु ने कर्ण को पीछे हटा दिया। तदनन्तर वह अन्य महारथियों पर बड़ी फुर्ती से टूट पड़ा। फिर प्रचण्ड प्रतापी महारथी अभिमन्यु ने क्रुद्ध हो रथों, घोड़ों और हाथियों से भरी पूरी शत्रुसेना का संहार करना आरम्भ किया। अभिमन्यु के बाणप्रहार से पीड़ित हो कर, कर्ण तेज़ चलने वाले घोड़ों पर सवार हो भाग गया। इतने में द्रोण का रचा व्यूह भी भङ्ग हो गया।

हे राजन्! उस समय आकाश अभिमन्यु के चलाये बाणों से वैसे ही आच्छादित हो गया, जैसे वह बादलों अथवा टीड़ियों के दलों से आच्छादित हो जाता है। बाणों को छोड़, वहाँ और कुछ भी नहीं देख पड़ता था। जिस समय

अभिमन्यु पैने बाणों से आपकी सेना का संहार कर रहा था, उस समय जयद्रथ को छोड़ वहाँ और कोई भी खड़ा न रह सका। उस समय शङ्ख ध्वनि करता हुआ, अभिमन्यु आपकी सेना में घुस गया। अभिमन्यु सूखे वन में प्रज्वलित अग्नि की तरह अपने प्रचण्ड वेग से अपने शत्रुओं को भस्म करता हुआ सेना में भ्रमण करने लगा। उसने द्रोण की, चक्रव्यूह बना कर खड़ी हुई सेना में घुस, पैने बाणों से रथियों, अश्वारोहियों तथा हाथी-सवारों और पैदल योद्धाओं का विनाश कर, रुण्डों से समरभूमि ढक दी। उस समय बहुत से योद्धा अभिमन्यु के बाणों से विकल हो, जीवन की रक्षा के लिये भाग खड़े हुए। उस समय उन्हें अपने पराये का विवेक न रह गया। अतः वे सामने आये अपने पक्ष के योद्धाओं ही को मार दिया करते थे। अभिमन्यु के विपाठ नामक पैने एवं भयङ्कर कर्मकारी बाण, रथियों और घुड़सवारों को नष्ट कर, बड़ी फुर्ती से पृथिवी में घुस जाते थे। रणक्षेत्र में चमड़े के दस्तानों से युक्त आयुधों और बाजूबन्दों से भूषित कटे हुए हाथ ही हाथ देख पड़ते थे। समरक्षेत्र में जिधर देखो उधर हज़ारों मालाओं सहित सिर, शरीर, बाण, धनुष, तलवारें, तथा मुकुट पड़े हुए थे। रथों के टूटे हुए धुरे, पहिये और जुएँ तथा शक्ति, धनुष, खड्ग, बड़ी बड़ी ध्वजाएँ, ढालें, बाण तथा मृत राजा गण और बड़े बड़े हाथी उस समरभूमि में इतने पड़े थे कि, वहाँ चलने के लिये मार्ग न रह गया था। उस समय भीरुओं को भयभीत करने वाला उन राजपुत्रों के डकराने का भयङ्कर शब्द हो रहा था जो आपस में लड़ कट कर मारे जा रहे थे।

हे राजन्! उस भयङ्कर शब्द से दिशाएँ प्रतिध्वनित हो रही थीं। अभिमन्यु बीन बीन कर उत्तम घोड़ों, रथों और हाथियों को मारता हुआ, भागती हुई सेना के पीछे पड़ा हुआ था। चक्रव्यूह में घूम कर, बरजोरी शत्रुओं को नष्ट करता हुआ अभिमन्यु, फूँस में लगी आग की तरह, जान पड़ता था। समरभूमि के कोने कोने में अभिमन्यु चक्कर लगा रहा था, किन्तु धूल छा जाने से हम उसे देख न पाते थे। क्षण भर बाद ही हाथियों, घोड़ों

और पैदलों का संहार करता हुआ और शत्रुमण्डली को सन्तप्त करता हुआ अभिमन्यु हमें मध्याह्न कालीन सूर्य की तरह पुनः दिखलायी पड़ा। इन्द्र-नन्दन का पुत्र बलवान अभिमन्यु उस समय आपके पक्ष के राजाओं की सेना के बीच इन्द्र की तरह शोभायमान हुआ।

बयालीसवाँ अध्याय

जयद्रथ को शिव जी से वरप्राप्ति

धृतराष्ट्र बोले—हे सञ्जय! अत्यन्त सुखी, निज भुजबल से मतवाला, युद्धविद्या-विशारद, वीर और युद्ध के समय शरीर को कुछ भी न गिनने वाला बालक अभिमन्यु, जिस समय त्रिवर्षीय उत्तम घोड़ों से युक्त रथ पर सवार हो हमारी सेना के चक्रव्यूह को भङ्ग कर, उसमें घुसा; उस समय पाण्डवों की सेना में कौन कौन बली वीर योद्धा उसके पीछे पीछे कौरवों की सेना में गये थे?

सञ्जय ने कहा—हे राजन्! युधिष्ठिर, भीमसेन, शिखण्डी, सात्यकि, नकुल, सहदेव, धृष्टद्युम्न, विराट, द्रुपद, केकय, धृष्टकेतु और क्रोध में भरे मत्स्यदेशीय योद्धा, जो अभिमन्यु के चाचा ताऊ आदि थे, अपनी सेना का व्यूह बना, उसके पीछे चले जा रहे थे। उन आक्रमणकारियों को देख आपकी सेना के शूरवीरों ने मुँह फेर लिया और भाग खड़े हुए। आपके पुत्र की विशाल वाहिनी को भागते देख, आपके जामाता सिन्धुराज के पुत्र जयद्रथ ने अपने पक्ष की भागती हुई सेना का पलायन रोकने के लिये, शत्रु-पक्ष के उन आक्रमणकारियों को रोका, जो अभिमन्यु की रक्षा के लिये उसके पीछे लगे चले आ रहे थे। वह वार्धक्षत्र का पुत्र एवं उग्र धनुर्धर और वज्रपात प्रहारी अमोघ दिव्यास्त्रों का प्रयोग करता हुआ शत्रुसैन्य के सामने वैसे ही आ डटा, जैसे चौराहे पर हाथी डट जाता है।

धृतराष्ट्र बोले—हे सञ्जय ! मेरी समझ में जयद्रथ को बड़ा कठिन कार्य करना पड़ा। क्योंकि उसने अकेले ही इन क्रुद्ध पाण्डवों को समरक्षेत्र में रोका, जो अपने भतीजे की रक्षा करने के लिये उसके पीछे आ रहे थे। इससे जान पड़ता है, सिन्धुराज बड़ा बलवान् और शूर है। अतः तुम मुझे उसीके अद्भुत बल पराक्रममय युद्ध का वृत्तान्त सुनाओ। जयद्रथ ने ऐसा कौन सा तप, यज्ञ, होम अथवा दान किया था, जिसके प्रभाव से उसने अकेले ही पाण्डवों की गति रोक दी और उन्हें आगे न बढ़ने दिया।

सञ्जय बोले—हे राजन् ! जिस समय जयद्रथ, द्रौपदी को ले भागा था और भीम ने उसे परास्त किया था, उस समय जयद्रथ के मन में बड़ी ग्लानि उत्पन्न हुई और उसने वरप्राप्ति के लिये बड़ा कठोर तप किया। उसने तप करने के पूर्व इन्द्रियों को उनके प्रिय विषयों से हटा कर, तप किया था। भूख, प्यास तथा घाम ओस सही थी। इससे उसका शरीर दुर्बल हो गया था और उसके शरीर में नसें ही नसें रह गयी थीं। वह सनातन ब्रह्म के नाम का जप करता हुआ शिव का आराधन करने लगा। अन्त में भक्तवत्सल शिव उस पर प्रसन्न हुए। स्वप्न में शिव जी ने उससे कहा—हे जयद्रथ ! मैं तेरे ऊपर प्रसन्न हूँ। बतला तू क्या चाहता है ? जो चाहता हो, वह वर माँग। तब विनीतात्मा सिन्धुराज जयद्रथ ने हाथ जोड़ शिव जी को प्रणाम किया और कहा—रण में मैं अकेला ही रथ में बैठ, घोर पराक्रमी समस्त पाण्डवों को उनकी सेना सहित भगा दूँ। मुझे आप यह वर दें।

जब जयद्रथ ने इस प्रकार कहा, तब शिव जी ने कहा—हे जयद्रथ ! मैं तुझे वर देता हूँ कि, तेरी अभिलाषा पूरी होगी; किन्तु अर्जुन को तू नहीं जीत पावेगा। तू युद्ध में केवल पाण्डु के चार पुत्रों ही को पीछे हटा सकेगा। महादेव जी के इन वचनों को सुन, जयद्रथ ने कहा—बहुत अच्छा। इसके बाद शिव जी अन्तर्धान हो गये।

अतः जयद्रथ ने उसी वर के प्रभाव से अकेले ही पाण्डवों की सेना को पीछे हटा दिया था। जयद्रथ के धनुष की प्रत्यञ्चा के टंकार शब्द से शत्रुपक्ष के वीर योद्धा भयभीत हो गये और आपके सैनिक परम प्रसन्न हुए। हे राजन्! जयद्रथ के पराक्रम को देख, आपके सैनिकों का उत्साह बढ़ा और वे सिंहनाद करते हुए पाण्डवों की सेना पर टूट पड़े।

तेंतालीसवाँ अध्याय

जयद्रथ द्वारा पाण्डवों का निवारण

सञ्जय ने कहा—हे राजन्! आपने सिन्धुराज के पराक्रम का जो वृत्तान्त मुझसे पूँछा था, वह सब मैं आपको सुनाता हूँ। आप ध्यान से सुनें। सिन्धुराज का रथ गन्धर्व नगर की तरह रमणीय और अत्यन्त सुसज्जित था। सारथि के वश में रहने वाले वायु के समान वेगगामी सिन्धु-देशीय उत्तम घोड़े रथ सहित जयद्रथ को ले पाण्डवों के सामने गये। उसके रथ पर वाराह के चिन्ह वाली रुपहली ध्वजा फहरा रही थी। जयद्रथ के ऊपर सफेद छाता तना हुआ था और सफेद पताकाएँ फहरा रही थीं। उस पर सफेद चवँर डुलाये जा रहे थे। इस प्रकार जयद्रथ उस रथ पर सवार, आकाश में उदय होते हुए चन्द्रमा की तरह शोभायमान हो रहा था। उसका लोहमय कवच, मोतियों, हीरों, अन्य मणियों तथा सुवर्ण से जटित हो, नक्षत्रादि से युक्त आकाश की तरह सुन्दर जान पड़ता था। जयद्रथ ने अपने विशाल धनुष पर टंकार दी और बहुत से बाण मार कर, उन स्थानों को पुनः योद्धाओं से भर दिया; जिन स्थानों को अभिमन्यु ने अपने बाणों से ख़ाली कर डाला था। उसने सात्यकि के तीन, भीम के आठ, धृष्टद्युम्न के साठ और विराट के दस बाण मारे। फिर द्रुपद को पाँच से, शिखण्डी को सात से, केकयों को पचीस से, द्रौपदी के पुत्रों को तीन

तीन से और युधिष्ठिर को साठ पैने बाणों से पीड़ित किया। अन्य योद्धाओं को भी उसने बाणवृष्टि कर पीड़ित किया। यह उसका कार्य बड़ा आश्चर्यप्रद था।

इतने में प्रतापी धर्मराज युधिष्ठिर ने हँसते हँसते यह कह कर कि, मैं अभी तेरे बाणों को काट गिराता हूँ, अपने पैने बाणों से जयद्रथ के धनुष को काट डाला। तब पलभर में जयद्रथ ने दूसरा धनुष ले युधिष्ठिर के दस और अन्य वीरों के तीन तीन बाण मारे। उसके हाथ की सफ़ाई देख, भीम ने तीन भल्ल बाणों से उसके रथ की ध्वजा, उसका धनुष और छत्र काट कर भूमि पर गिरा दिया। तब उस बलवान् ने तीसरा धनुष ले उस पर डोरी चढ़ायी और भीमसेन के रथ की ध्वजा, उनका धनुष काट कर उनके रथ के घोड़ों को भी गिरा दिया। जब धनुष कट गया और रथ के घोड़े मारे गये, तब भीमसेन रथ से कूद पड़े और झपट कर सात्यकि के रथ पर वैसे ही चढ़ गये, जैसे छलांग मार कर सिंह पर्वतशिखर पर चढ़ जाता है। आपके सैनिक जयद्रथ के अद्भुत और ऐसे कर्म को देख, जिसका सहसा विश्वास होना कठिन है—उसकी प्रशंसा करने लगे। अस्त्रों के प्रयोग से अकेले जयद्रथ ने पाण्डवों को आगे बढ़ने न दिया। उसके इस कार्य की सब ने प्रशंसा की। इतने में सुभद्रानन्दन अभिमन्यु ने उत्तर की ओर खड़े हाथीसवारों को मार कर, पाण्डवों के आने के लिये मार्ग खोल दिया; किन्तु जयद्रथ ने उधर जा कर वह भी मार्ग बन्द कर दिया। उस समय मत्स्य, पाञ्चाल, केकय और पाण्डवों ने बहुत चाहा कि, वे जयद्रथ को हटा दें, पर वे ऐसा न कर सके। शत्रुपक्ष के जो जो वीर द्रोण की सैन्य को भङ्ग करते थे, उसी उसी वीर को जयद्रथ वरदान के प्रभाव से हटा दिया करता था।

चौवालीसवाँ अध्याय

वसाती का मारा जाना

सञ्जय ने कहा—हे राजेन्द्र! जब विजयाभिलाषी पाण्डवों को जयद्रथ ने रोक दिया, तब आपके योद्धाओं ने शत्रुओं के साथ घोर संग्राम किया। सत्यप्रतिज्ञ एवं दुराधर्ष अभिमन्यु चक्रव्यूह में घुस सेना को वैसे ही मथने लगा, जैसे कोई तेजस्वी नक्र समुद्र को उथल पुथल कर डालता है। जब शत्रुनाशकारी अभिमन्यु अपने बाणों से शत्रुसैन्य को विकल करने लगे, तब आपके मुख्य मुख्य महारथियों ने उस पर मिल कर एक साथ आक्रमण किया। उस समय दोनों ओर से महाघोर समर हुआ। आपके रथियों ने अभिमन्यु को अपने रथों के घेरे में घेर लिया। उस समय अभिमन्यु ने वृष-सेन के सारथि का वध कर, उसका धनुष काट डाला। बली वृषसेन ने अभि मन्यु के घोड़ों को सीधे जाने वाले बाणों से घायल कर डाला। अतः वायु के समान वेगवान उसके घोड़े भड़क गये और भागने लगे। अचानक इस सङ्कट को आया हुआ देख, अभिमन्यु का सारथि उसके रथ को रणक्षेत्र से दूर ले गया। यह देख शत्रु पचीस महारथी प्रसन्न हुए और कहने लगे—बहुत अच्छा, बहुत अच्छा। यह सुन और क्रुद्ध हो सिंह की तरह अभिमन्यु बाणप्रहार करता हुआ, शत्रुसेना के निकट जा पहुँचा। तब वसाती ने उस पर आक्रमण किया। उसने सुवर्ण पुंखों से भूषित सौ बाण अभिमन्यु के ऊपर छोड़े और बोला—यदि युद्ध में मैं जीवित रहा तो तू मेरे आगे से जीता न जा सकेगा। लोहमय कवच धारण किये हुए वसाती के हृदय में, अभि मन्यु ने दूरगामी एक बाण मारा। उसके लगते ही वसाती निर्जीव हो भूमि पर गिर पड़ा। उसका मारा जाना देख, बड़े बड़े क्षत्रिय राजा लोग क्रुद्ध हुए और हे राजन्! आपके पौत्र को मार डालने की इच्छा से, उन लोगों ने उसे चारों ओर से घेरा। वे लोग विविध भाँति के धनुषों के रोदों को टंकोरने लगे। उनका और अभिमन्यु का घोर युद्ध हुआ। अभिमन्यु ने क्रोध

में भर कर उनके हाथों, धनुषों पुष्पमाला विभूषित और कुण्डलों से युक्त सिरों को खटाखट काट काट कर गिराना आरम्भ किया। उस समय चमड़े के दस्ताने, खड्ग, पट्टिश, फरसे और सुवर्ण के भूषणों से भूषित कटी हुई सैकड़ों भुजाएँ, समरभूमि में देख पड़ने लगीं। पुष्पहार, आभूषण, वस्त्र, लम्बी भुजाएँ, कवच, ढालें, मुकुट, छत्र, चँवर, रथों के गड्ढे, ईषा, दण्ड, धुरे, टूटे हुए पहिये, अनेक जुए, अनुकर्ष, झंडे, सारथी, घोड़े, रथ, हाथी, मृत क्षत्रिय तथा भिन्न भिन्न देशों के मरे हुए राजाओं से आच्छादित समरभूमि वहाँ भयङ्कर देख पड़ने लगी। अभिमन्यु क्रोध में भरा चारों ओर घूम रहा था। उस समय उसका शरीर दिखलायी ही नहीं पड़ता था। उस समय केवल उसका धनुष बाण और सुवर्ण के आभूषण देख पड़ते थे। बाणप्रहार से शत्रुओं का संहार करते हुए अभिमन्यु के टङ्कोरते हुए धनुष को वैसे ही कोई नहीं देख सकता था, जैसे सूर्य को कोई नहीं देख सकता।

पैंतालीसवाँ अध्याय

दुर्योधन का रणक्षेत्र से भागना

सञ्जय ने कहा—हे धृतराष्ट्र! जैसे समय प्राप्त होने पर कालदेव सब का संहार कर डालते हैं, वैसे ही अवसर हाथ आते ही अभिमन्यु भी शूर वीरों के प्राण हर लिया करता था। इन्द्र तुल्य पराक्रमी इन्द्रनन्दन का पुत्र महाबली अभिमन्यु शत्रुसैन्य को विलोड़ रहा था। चक्रव्यूह के प्रथम द्वार में घुस, परशुराम तुल्य पराक्रमी अभिमन्यु ने सत्यश्रवा को पकड़ वैसे ही झकझोरा जैसे सिंह, हिरन को पकड़ झकझोरता है। सत्यश्रवा के पकड़े जाने पर उसे छुड़ाने के लिये बड़े बड़े महारथी हथियार ले अभिमन्यु की ओर दौड़े। वे लोग यह कहते हुए कि मैं मारूँगा, मैं मारूँगा, अभिमन्यु को मारने के लिये उसके निकट जा पहुँचे। उस समय जैसे कोई बड़ा मत्स्य छोटी छोटी मछली मत्-

सिंहों को पकड़ ले, वैसे ही अभिमन्यु ने भागते हुए उन राजाओं के सैनिकों को पैने बाण चला नष्ट कर डाला; जैसे नदियाँ समुद्र में पहुँच, फिर आगे बढ़ती हुई नहीं देख पड़तीं, वैसे ही युद्ध में कभी पीछे न हटने वाले जो शूरवीर योद्धा अभिमन्यु के समीप पहुँचे, वे उसके सामने से बच कर फिर आगे पीछे न हट सके अर्थात् मारे गये। उस सैन्य रूपी महासागर में वे समस्त योद्धा मानों भयङ्कर नक्र द्वारा पकड़ लिये गये और पवन के झोंकों से डगमगाती हुई नाव की तरह काँपने लगे।

तदनन्तर मद्रराज के पुत्र बलवान् रुक्मरथ ने वहाँ जा और उनको ढाँढ़स बँधाते हुए, उनसे कहा—हे शूरों! तुम लोग भयभीत क्यों होते हो? मेरे रहते यह कुछ भी नहीं कर सकता। निस्सन्देह मैं इसका वध करूँगा। यह कह महाबली रुक्मरथ ने सुसज्जित रथ पर सवार हो, अभिमन्यु पर आक्रमण किया। उसने अभिमन्यु की छाती में दहिनी और बाईं भुजाओं में तीन तीन बाण मार सिंहनाद किया। तब अभिमन्यु ने धनुष और दोनों भुजाओं सहित उसके सुन्दर सिर को बाणों से काट, पृथिवी पर गिरा दिया। अभिमन्यु का वध करने की कामना करने वाले शल्यपुत्र रुक्मरथ के मारे जाने पर, उसके अनुयायी वीरों ने, जो शस्त्रविद्या में निपुण थे, अपने दृढ़ धनुषों को तान तान कर इतने बाण छोड़े कि, अभिमन्यु बाणों से ढक गया। इन लोगों के बाणों से अभिमन्यु को आच्छादित देख, राजा दुर्योधन को बड़ा हर्ष प्राप्त हुआ। उसने अपने मन में समझ लिया कि इस बार अभिमन्यु निश्चय ही मारा जायगा। उन राजपूतों ने निमेष मात्र में विविध प्रकार के सुवर्ण डंडी वाले तीन तीन बाण छोड़, अर्जुन-नन्दन अभिमन्यु को छिपा दिया। हे राजन्! अभिमन्यु और उसका सारथि तथा रथ के घोड़े और ध्वजा सहित उसका रथ, बाणों के नीचे छिप सा गया। अङ्कुश के प्रहार से क्रुद्ध मतवाले हाथी की तरह क्रोध में भर, अभिमन्यु ने गान्धर्वास्त्र और रथ की दुर्लक्ष्य गति का कौशल दिखलाया। उससे समस्त शत्रु समूह मोहित हो गया। चक्र की तरह समरभूमि में घूमता

हुआ अभिमन्यु हस्तलाघव प्रदर्शित करता हुआ सैकड़ों सहस्रों अभिमन्यु के रूप में देख पड़ने लगा। शत्रुनाशन अभिमन्यु रथ की गति और अस्त्र-मयी माया के बल, सैकड़ों सहस्रों वीर योद्धाओं को मोहित करता हुआ उनका संहार करने लगा। उसके पैने बाणों से असंख्य वीरपुरुष परलोक सिधार गये और उनके निर्जीव शरीर समरक्षेत्र में पड़े हुए देख उसने चोखे तीरों से उन लोगों के धनुषों, घोड़ों, सारथियों, ध्वजाओं, चन्दन चर्चित भुजाओं तथा सुन्दर सिरों को काट काट कर पृथिवी पर ढेर लगा दिया। पाँच वर्ष के फलदार आम्र वृक्षों से युक्त बाग उजड़ने पर जैसा देख पड़ता है, वैसे ही वे सौ राजपुत्र अभिमन्यु के बाण प्रहार से मर कर पृथिवी पर पड़े हुए देख पड़ते थे। सुकुमार और सुख में पले हुए उन क्रुद्धसर्प के समान क्रोध में भरे हुए राजपुत्रों को अभिमन्यु के हाथ से मरा हुआ देख, दुर्योधन भयभीत हुआ। उसकी सेना के रथी, गजपति और अश्वारोही सैनिक पैदल सेना को रूँधते कुचलते रणक्षेत्र से भागने लगे। अपनी ओर के योद्धाओं को भागते देख, दुर्योधन क्रोध में भर अभिमन्यु की ओर दौड़ा। क्षणभर तक उन दोनों पुरुषसिंहों का बड़ा विकट युद्ध हुआ। अन्त में, हे राजन्! आपका पुत्र दुर्योधन अभिमन्यु के बाणों से पीड़ित हो, समर-भूमि छोड़ कर भागा।

छियालीसवाँ अध्याय

लक्ष्मण तथा क्राथनन्दन का वध

धृतराष्ट्र ने कहा—हे सूत! तुमने कहा कि, अकेले महाबली अभिमन्यु ने असंख्य वीरों के साथ युद्ध किया और उसमें उसीकी जीत हुई। मुझे तो अभिमन्यु के ऐसे अद्भुत पराक्रमी होने पर विश्वास नहीं होता। किन्तु साथ ही जो धर्मपथ पर चलते हैं, उनके सम्बन्ध में ऐसा होना कोई आश्चर्य

की बात भी नहीं है। जब दुर्योधन युद्ध छोड़ भाग गया और सैकड़ों राज-पुत्र मार डाले गये, तब मेरे पक्ष के महारथियों ने अभिमन्यु का वध करने के लिये क्या किया?

सञ्जय ने कहा—हे राजन्! आपके पक्ष के समस्त योद्धा तनक्षीण, मनमलीन, चञ्चलचित्त, पसीने से तर और शत्रु को जीतने में उत्साह रहित हो, मृत भाई बन्धु, पिता, पुत्र तथा अन्य सम्बन्धियों को समरक्षेत्र में छोड़, अपने अपने रथों, घोड़ों और हाथियों पर सवार हो, शीघ्र शीघ्र रणक्षेत्र से भागने लगे। उनको इस प्रकार उत्साह रहित देख, द्रोण, अश्वत्थामा, बृहद्बल, कृपाचार्य, दुर्योधन, कर्ण, कृतवर्मा और शकुनि ने क्रुद्ध हो अजेय अभिमन्यु पर आक्रमण किया। किन्तु हे राजन्! आपके पौत्र अभिमन्यु ने उन्हें कितनी ही बार भगाया। अकेला लक्ष्मण, जो बाल्यावस्था ही से बड़े लाड़ प्यार से पाला पोसा गया था और जो अभिमानी होने के कारण निर्भीक था, अभिमन्यु के सामने जा डटा। उसके पीछे पुत्रस्नेहवश दुर्योधन को भी जा कर खड़ा होना पड़ा। दुर्योधन को देख अन्य महारथी भी उसकी सहायता को जा पहुँचे। जैसे मेघ जलवृष्टि कर पर्वत को तर कर देता है, वैसे ही समस्त महारथी अभिमन्यु ही के ऊपर बाणवृष्टि करने लगे। किन्तु चतुर्दिकगामी पवन जैसे मेघों को छितरा देता है; वैसे ही अकेले अभिमन्यु ने उन सब को तितर बितर कर दिया। उस समय दुर्धर्ष एवं प्रियदर्शन आपका पौत्र लक्ष्मण धनुष ताने दुर्योधन के निकट खड़ा था। उस कुबेर-नन्दन की तरह सुन्दर एवं सुख में पले हुए लक्ष्मण के सामने अभिमन्यु वैसे ही झपटा, जैसे मतवाले हाथी के ऊपर मतवाला हाथी झपटता है। शत्रुनाशन अभिमन्यु ने बड़े बड़े पैने बाण लक्ष्मण की भुजाओं में मारे। उस समय लकड़ी से पीटे गये सर्प की तरह क्रोध में भरा हुआ आपका पौत्र अभिमन्यु आपके पौत्र लक्ष्मण से बोला—इस संसार में तुझे अब जो कुछ देखना हो सो भली भाँति देख ले। क्योंकि मैं तुझे तेरे सगों के सामने ही अभी यम-लोक भेजता हूँ। यह कह शत्रुनाशकारी महाबाहु सुभद्रा-नन्दन अभिमन्यु

से, केंचुली रहित सर्प की तरह, भयङ्कर बाण धनुष पर रखा। उस बाण के छूटते ही लक्ष्मण का सुन्दर नासिका भौं और केशों से युक्त मस्तक मुकुट सहित कट कर दूर जा पड़ा। लक्ष्मण का वध देख, लोग हाहाकार करने लगे। प्रिय पुत्र को मरा देख, क्रोधित दुर्योधन भी अरे अभिमन्यु को मार डालो, अरे अभिमन्यु को मार डालो, पुकारता हुआ, अपने पक्ष के योद्धाओं को उत्तेजित करने लगा। तब द्रोण, अश्वत्थामा, कृपाचार्य, कर्ण, बृहद्बल और हार्दिक्य कृतवर्मा नामक छः महारथियों ने अभिमन्यु को घेरा। किन्तु अपने तेज बाणों से इन सब को हटा, अभिमन्यु ने जयद्रथ की सेना पर आक्रमण किया। यह देख वीर्यवान् क्राथपुत्र कलिङ्ग और निषादों ने गजों की सेना से अभिमन्यु का रास्ता रोका और बड़ा भयङ्कर युद्ध किया। किन्तु अर्जुननन्दन ने उस घोर गजसेना को वैसे ही तहस नहस कर डाला, जैसे नित्य चलने वाला पवन आकाशचारी बादलों के खण्ड खण्ड कर डालता है। तब क्राथ ने बाणों की अभिमन्यु पर वृष्टि की। इतने में भागे हुए द्रोणादि महारथी भी अपने अपने विशाल धनुषों को टंकोरते हुए फिर अभिमन्यु पर टूट पड़े। तिस पर भी अभिमन्यु ने उन सब को पुनः खदेड़ कर, क्राथपुत्र को पीड़ित किया। उसका वध करने की इच्छा से, अभिमन्यु ने उस पर असंख्य बाणवृष्टि कर, उसके धनुष, बाण और बाजूबंद सहित दोनों भुजाएं, तथा मुकुट सहित उसका सिर, छत्र, ध्वजा, सारथि घोड़े तथा रथ को छिन्नभिन्न कर, भूमि पर गिरा दिया। क्राथपुत्र मारा गया। कुलीन, कीर्तिशाली, शास्त्रज्ञ एवं महाबली क्राथपुत्र के मारे जाने पर बहुत से वीर पीठ दिखा, रणक्षेत्र से भाग खड़े हुए।

सैंतालीसवाँ अध्याय

बृहद्बल का वध

धृतराष्ट्र ने कहा—हे सञ्जय! त्रिवर्षीय, सुन्दर, बलवान, आकाश से कूदते हुए से जाते हुए घोड़ों से युक्त रथ पर सवार, युद्ध में अपराजित, अभिमन्यु के चक्रव्यूह में घुस जाने पर, किन किन वीरों ने उसे रोका था?

सञ्जय बोले—जब पाण्डुनन्दन अर्जुन का पुत्र अभिमन्यु चक्रव्यूह में घुस तेज बाणों से समस्त राजाओं को विमुख करने लगा; तब आपके पक्ष के द्रोण, अश्वत्थामा, कृपाचार्य, बृहद्बल और हार्दिक्य, कृतवर्मा नामक छः महारथियों ने उसे घेरा। जयद्रथ पर बड़े भारी उत्तरदायित्व को देख, हे राजन्! आपकी सेना ने युधिष्ठिर पर आक्रमण किया। अन्य महाबली योद्धा अपने ताड़ वृक्ष के समान अखंड धनुषों पर टंकार दे, वीर अभिमन्यु के ऊपर बाणवृष्टि करने लगे। युद्ध की समस्त कलाओं में निपुण, शत्रुपक्ष के समस्त महाधनुर्धर वीरों को कुचलने वाले अभिमन्यु ने, स्तब्ध कर दिया। उसने कान तक रोदे को खींच पचास बाण द्रोण के, बीस बृहद्बल के, अस्सी कृतवर्मा के, साठ कृपाचार्य के और सुवर्ण पुंख युक्त एवं बड़े वेगवान दस बाण अश्वत्थामा के मार, इन सब को घायल कर डाला। अर्जुननन्दन अभिमन्यु ने शत्रुओं के मध्य खड़े कर्ण के कान को पैने कर्णि नामक बाण से घायल किया। उसने कृप के घोड़ों, पार्श्वरक्षकों और सारथी को गिरा कर, कृपाचार्य की छाती में दस बाण मारे। फिर हे राजन्! बलवान अभिमन्यु ने, आपके पुत्रों की आँखों के सामने ही कौरव-कीर्ति-वर्द्धक वीरवर वृन्दारक को यमलोक पठा दिया। शत्रुओं के चुने चुने योद्धाओं को निर्भीक हो, संहार करते हुए अभिमन्यु के अश्वत्थामा ने क्षुद्रक नामक पचीस बाण मारे। तब अभिमन्यु ने भी आपके पुत्रों की आँखों के सामने ही अश्वत्थामा को पैने बाणों से वेध डाला। अश्वत्थामा ने चमचमाते साठ तेज़ बाण अभिमन्यु के

मारे। किन्तु इतने बाणों का प्रहार कर के भी वह मैनाक पर्वत की तरह अचल अभिमन्यु को कँपा न सका। महाबली एवं महातेजस्वी अभिमन्यु ने सुवर्ण-पुंख युक्त और सीधे जाने वाले निहत्तर बाण अश्वत्थामा के मारे। पुत्रवत्सल आचार्य द्रोण ने अभिमन्यु पर सौ बाण छोड़े और पिता की रक्षा करने के लिये उत्सुक अश्वत्थामा ने भी अभिमन्यु के साठ बाण और मारे। इसी प्रकार कर्ण ने बाईस, कृतवर्मा ने बीस, बृहद्बल ने पचास और कृप ने दस भल्ल बाण अभिमन्यु के मारे। इस प्रकार चारों ओर से होती हुई बाणों की वर्षा के बीच खड़े अभिमन्यु ने उन सब महारथियों के दस दस बाण मार उनको घायल किया। तदनन्तर कोसल देश के राजा ने अभिमन्यु के हृदय में कर्णि नामक, एक बाण मारा। इस पर अभिमन्यु ने उसकी ध्वजा तथा धनुष को काट उसके रथ के घोड़े और सारथी को मार डाला। तब रथहीन कोसलराज ढाल तलवार ले, अभिमन्यु का मुकुट सहित सिर काटने को उद्यत हुए। इतने में अभिमन्यु ने बाण प्रहार कर, कोसलेश्वर के राजकुमार बृहद्बल की छाती चीर डाली। बृहद्बल निर्जीव हो भूमि पर लोटपोट हो गया। तदनन्तर गालियाँ बकने वाले दस हज़ार धनुधर बड़े बड़े राजाओं का अभिमन्यु ने वध किया। इस प्रकार हे राजन्! बृहद्बल को मार कर और आपके योद्धाओं को बाण रूपी वृष्टि से रोक कर, अभिमन्यु रणप्राङ्गण में भ्रमण करने लगा।

अड़तालीसवाँ अध्याय

कर्णव्याज की रचना

सञ्जय ने कहा—हे धृतराष्ट्र! अभिमन्यु ने पुनः कर्णि बाण से कर्ण के कान को घायल किया। फिर पचास बाण मार, उसे अत्यन्त क्रुद्ध कर दिया। तब राधेय कर्ण ने अभिमन्यु के सारे शरीर में बाण ही बाण गड़ा

दिये। इनसे अभिमन्यु की बड़ी शोभा हुई। इस पर अभिमन्यु ने भी कुपित हो सारे बाणों के कर्ण के शरीर को क्षत विक्षत कर डाला। रक्त में नहाये हुए कर्ण की शोभा उस समय देखते ही बन आती थी। कर्ण का शरीर पुष्पित टेसू के वृक्ष जैसा शोभायमान जान पड़ता था। इसी बीच में अभिमन्यु ने सांधे जाने वाले छः बाणों से मगधराज के राजकुमार अश्वकेतु को उसके रथ के घोड़ों तथा सारथि सहित मार कर भूमि पर लिटा दिया। फिर गजचिन्ह से चिह्नित ध्वजा वाले मार्तिकावतक देश के राजा भोज को क्षुरप्र बाण से मार कर, अभिमन्यु ने सिंह गर्जन किया। यह देख दुःशासन के पुत्र ने बड़ी फुर्ती से चार बाण मार अभिमन्यु के चारों घोड़ों को घायल कर, एक बाण से उसके सारथि को घायल किया। फिर दस बाण मार उसने अभिमन्यु को घायल किया। अभिमन्यु ने सात बाण मार दुःशासन के पुत्र को घायल किया। फिर क्रोध में भर और लाल लाल नेत्र कर और उच्च स्वर से अभिमन्यु ने उससे कहा—अरे ओ! तेरा बाप तो कापुरुषों की तरह युद्ध से भाग गया। तू अब लड़ने आया है! यह बड़े सौभाग्य की बात है। परन्तु स्मरण रख अब तू जीता जागता जाने नहीं पावेगा। यह कह उसने बड़ी तेज़ धार वाले तीन बाण दुःशासन के पुत्र पर छोड़े; किन्तु अश्वत्थामा ने सामने आ तीन बाण मार उन तीनों को काट डाला। तब अभिमन्यु ने अश्वत्थामा के रथ की ध्वजा को काट शल्य के तीन बाण मारे। तब हे राजन्! शल्य ने निर्भय हो, अभिमन्यु की छाती में गिद्ध के परों से युक्त नौ बाण मारे। यह बड़े आश्चर्य का दृश्य था। अभिमन्यु ने उसके रथ की ध्वजा काटी और उसके दोनों पार्श्वरक्षकों तथा सारथि को मार कर, उसे भी लोहमय बाणों से घायल किया। शल्य झट कूद कर दूसरे रथ पर चढ़ गया। तदनन्तर अभिमन्यु ने शत्रुञ्जय, चन्द्रकेतु, मेघवेग, सुवर्चा और सूर्यभास नामक पाँच वीरों को मार, शकुनि को घायल किया। शकुनि ने तीन बाण से अभिमन्यु को घायल कर, दुर्योधन से कहा—इसे सब मिल कर शीघ्र नष्ट कर डालो। यदि ऐसा न किया और

इससे हम लोग अलग अलग लड़े तो यह एक एक कर हम सब को समाप्त कर डालेगा। फिर वैकर्त्तन कर्ण ने द्रोण से कहा—यह तो पहले ही से हम सब को चूर किये डालता है। इसे मारने का उपाय आप शीघ्र बतलावें। यह सुन महारथी द्रोण ने उन सब से कहा—क्या तुममें कोई एक भी ऐसा है, जो इसे मारने का एक क्षण का भी अवसर देखता हो। पुरुषसिंह अभिमन्यु चारों ओर घूम रहा है। ज़रा इसकी फुर्ती को तो देखो। यह इतनी फुर्ती से बाण छोड़ रहा है कि, इसका धनुष मण्डलाकार ही देख पड़ता है। यह है कहाँ, यह भी तो नहीं देख पड़ता। यह शत्रुनाशक सुभद्रानन्दन मेरे प्राणों को पीड़ित कर रहा है। यद्यपि मैं इसकी वीरता से घबड़ा गया हूँ, तथापि साथ ही मैं इसके हस्तलाघव और युद्धनैपुण्य को देख, इस पर अति-प्रसन्न हूँ। अभिमन्यु ने अपना पराक्रम दिखा मुझे अत्यन्त हर्षित किया है। क्रुद्ध होने पर भी हमारे पक्ष के महारथी इसका एक भी छिद्र नहीं देख पाते। देखो न, यह युद्ध में चारों ओर बड़े बड़े अस्त्रों को चला रहा है। मुझे तो अर्जुन में और इसमें कुछ भी अन्तर नहीं जान पड़ता। यह सुन अभिमन्यु के बाणों से घायल कर्ण ने पुनः द्रोण से कहा—मैं अभिमन्यु के बाणों से पीड़ित हो युद्धभूमि में नहीं ठहर सकता। किन्तु यहाँ से चला जाना भी मुझे उचित नहीं जान पड़ता। इसीसे मैं यहाँ खड़ा हूँ। इस तेजस्वी बालक के परम दारुण एवं अग्नि के समान स्पर्श करने वाले बाण, मेरे हृदय को पीड़ा पहुँचा रहे हैं। यह सुन मन्द मन्द मुसक्या कर द्रोण ने कर्ण से कहा—कर्ण! अभिमन्यु का कवच अभेद्य है और यह तेजस्वी बालक बड़ा पराक्रमी है। मैंने इसके पिता को कवच धारण करने की जो विद्या सिखलायी थी, उस विद्या को परपुरञ्जय इस कुमार ने भली भाँति सीखा है। अतः हे कर्ण! यदि तुम लोग रणभूमि में खड़े रह सको और इसके धनुष का रोदा काट कर, घोड़ों सहित सारथि तथा पृष्ठरक्षकों का वध कर सको, तो करो। फिर इसे रथहीन कर, इस पर अस्त्रों शस्त्रों का प्रहार करो। जब तक इसके हाथ में धनुष बाण है, तब तक देवता और

दर्शन करने की इच्छा से एवं उनके अनुग्रह से अपना मनोरथ सिद्ध करने के उद्देश्य से, धनुष और सोने की मूँठ की तलवार ले, काम्यक वन छोड़, उत्तर की ओर गये। हे राजन्! सब वीरों में अद्वितीय महारथी और दृढ़ चित्त वाले कुरुवंशी अर्जुन, हिमालय के शिखर पर चढ़े और तप करने का निश्चय कर, बड़ी शीघ्रता से चल और उस पर्वत को लाँघ, अकेले एक कण्टकाकीर्ण भयावह वन में पहुँचे। उस वन में तरह तरह के फल फूल लगे हुए थे। अनेक जातियों के पक्षी किलोलें कर रहे थे। तरह तरह के मृगजातीय पशु इधर उधर घूम रहे थे। उस वन में बहुत से सिद्ध और चारणों के भी स्थान बने हुए थे। उस विर्जन वन में जब अर्जुन आगे बढ़े, तब आकाश में शङ्ख और ढोल बजे। आकाश से फूलों की वृष्टि हुई और आकाश घनघोर घटाओं से ढक गया। इतने में अर्जुन भी उस वन के विषम स्थानों को पार कर, हिमालय पर्वत के पीछे और महागिरि के निकट वाले एक स्थान पर जा पहुँचे और वहाँ ही ठहर गये। वहाँ पर फूले हुए वृक्ष लगे हुए थे और पक्षी मधुर बोलियां बोल कर कलरव कर रहे थे। बड़ी बड़ी नदियाँ चक्कर खाती हुई वहाँ बह रही थीं। उनका जल वैदूर्यमणि की तरह स्वच्छ था और उनमें भँवर पड़ रहे थे। इन नदियों के तटों पर हंस और कारण्डव पक्षी उच्च स्वर से बोल रहे थे। सारस, पुंस्कोकिल, क्रौंच और मयूर मधुर ध्वनि कर रहे थे। अर्जुन उस रमणीक वन और शीतल एवं स्वच्छ जल से पूर्ण नदियों को देख प्रसन्न हुए। फिर उसी मनोरम स्थान पर जम गये। उन्होंने चर्म का बना कपड़ा पहिना, मृगछाला बिछायी और कमण्डलु में जल भर कर रखा। फिर वे उग्र तप करने में प्रवृत्त हुए। वृक्षों से जो सूखे पत्ते और पके फल टूट कर गिर पड़ते थे, उन्हींको वे खा लिया करते थे। सो भी नित्य नहीं—तीसरे दिन। प्रथम मास में आहार का यह क्रम था—दूसरे मास में तीसरे दिन के बदले छठवें दिन वे फल और पत्र खाने लगे। प्रथम दो मास इस प्रकार रह, तीसरे मास में अर्जुन ने पन्द्रहवें दिन भोजन किये। चतुर्थ मास में

उनचासवाँ अध्याय

अभिमन्यु-वध

सञ्जय ने कहा—श्रीकृष्ण की बहिन सुभद्रा का अतिरथी पुत्र अभिमन्यु विष्णु-आयुध को लिये हुए अपर चक्रपाणि श्रीकृष्ण की तरह शोभायमान जान पड़ता था। उस समय अभिमन्यु के सिर के बाल खुल जाने से उड़ रहे थे। उसके उठे हुए हाथ में चक्र था और उस समय उसकी देह ऐसी तमतमा रही थी कि, देवता भी उसकी ओर नहीं देख सकते थे। उसका ऐसा रूप देख, वहाँ उपस्थित राजा लोग घबड़ा गये। किन्तु पीछे से उन लोगों ने बाणों के प्रहार से अभिमन्यु के चक्र के टूँक टूँक कर डाले। धनुष, तलवार, रथ और चक्र के टुकड़े टुकड़े हो जाने पर अभिमन्यु ने एक बड़ी भारी गदा उठायी और उसे तान कर अश्वत्थामा के मारे। किन्तु अश्वत्थामा रथ से कूद और तीन पग पीछे हट, गदा का वार बचा गया। किन्तु उस गदा के प्रहार से उसके रथ के घोड़े, सारथी और पार्श्वरक्षक न बचे और वे मारे गये। शरीर में बिंधे हुए बाणों सहित अभिमन्यु सेई की तरह जान पड़ता था। तदनन्तर अभिमन्यु ने सुबल के पुत्र कालिकेय को तथा उसके अनुयायी सतहत्तर गान्धारों का गदा से वध किया। फिर अभिमन्यु ने दस बसातीय महारथियों को सात केकय महारथियों को और दस हाथियों को जान से मार डाला। तदनन्तर अभिमन्यु ने गदा के प्रहार से दुःशासन के पुत्र के रथ को और घोड़ों को मार डाला। इस पर दुःशासन-पुत्र बड़ा कुपित हुआ और वह भी गदा ले अभिमन्यु पर झपटा और बोला—खड़ा रह! खड़ा रह!! वे दोनों वीर एक दूसरे को मारने की अभिलाषा से गदाएँ उठा वैसे ही लड़ने लगे, जैसे पूर्वकाल में शिव जी और अन्धकासुर लड़े थे। वे दोनों एक दूसरे को गदाओं के अग्र भाग से मार कर, धराशायी हो गये। जैसे इन्द्र की ध्वजा गिरे, वैसे ही वे दोनों गिर पड़े। किन्तु कुरु-कुल-कीर्ति-वर्द्धन दुःशासनपुत्र सहसा उठ खड़ा हुआ और उठ

पर अभिमन्यु के सिर में लग कर गदा मारी। युद्ध करते करते परिश्रान्त और भीषण गदा प्रहार से अभिमन्यु विकल हो मूर्छित हो गया। हे राजन्! इस प्रकार छः पृथक महारथियों ने मिल कर अकेले अभिमन्यु को मारा। वनैला हाथी कमलिनियों को नष्ट करने के बाद जैसे व्याधों के हाथ से मारा जा कर, शोभायमान होता है, वैसे ही समस्त कौरवसेना का संहार करने के अनन्तर, योद्धाओं के द्वारा मारा गया अभिमन्यु रणभूमि में पड़ा हुआ सुशोभित हो रहा था। ग्रीष्म ऋतु में वन को जलाने वाले दावानल की तरह शत्रुसैन्य का संहार कर घिरे हुए अभिमन्यु को आपके महारथियों ने घेर लिया। राहुग्रस्त चन्द्र और सूखे हुए सागर की तरह देख पड़ते हुए पूर्णचन्द्रानन और अलकों से आच्छादित नेत्रों वाले अभिमन्यु को घेर कर आपके योद्धा सिंह की तरह बारंबार दहाड़ने लगे।

हे राजन्! उस समय आपके योद्धा बहुत प्रसन्न हुए, किन्तु अपर पक्ष के वीरों के नेत्रों से बरबस आँसू टपक पड़े। अन्तरिक्ष-स्थित समस्त प्राणी अभिमन्यु को आकाश से पतित चन्द्र के समान भूमि पर पड़ा हुआ देख, उच्च स्वर से बोले—द्रोणाचार्यादि छः महारथियों ने अकेले बालक को मार कर पृथिवी में गिराया है। इसे हम धर्मकार्य नहीं मानते। महाराज! जैसे तारों के सहित आकाश, पूर्णचन्द्र के उदय होने पर शोभित होता है; वैसे ही महावीर अभिमन्यु के मर कर पृथिवी पर गिरने से रणभूमि प्रकाशमय होने लगी। सुवर्ण पुंख बाणों से, रक्त के प्रवाहों से, वीरों के कुण्डलों से युक्त मस्तकों से, विचित्र मालाओं से, पताकाओं से, शूलों से, फटे हुए बढ़िया वस्त्रों से, मृत घोड़ों, हाथियों तथा उनके चमचमाते आभूषणों से, केंचुल रहित सर्प की तरह तेज धार की नंगी तलवारों से तथा विविध आकार के टूटे हुए धनुषों, शक्तियों, प्रासों आदि विविध अस्त्रों से ढकी हुई रणभूमि शोभा पाने लगी। अभिमन्यु के हाथ से मरे हुए, अधमरे और घायल घोड़ों और घुड़सवारों से रणभूमि ऊबड़ खाबड़ सी देख पड़ती थी। अभिमन्यु के बाणों से मरे हुए पर्वताकार हाथी, उनके अंकुश, महावतों, कवचों

पताकाओं से, मृत सारथियों से, मृत योद्धाओं से तथा क्षुब्ध सरोवरों की तरह क्षुब्ध हाथियों का नाश करने वाले महारथियों से तथा विविध प्रकार के भूषणों से अलङ्कृत मृत पैदल सिपाहियों के समूहों से भयङ्कर रूप धारिणी युद्धभूमि भीरुओं के हृदय को दहलाये देती थी। चन्द्र एवं सूर्य जैसी कान्ति वाले अभिमन्यु को निर्जीव हो भूमि पर पड़ा देख, आपके पक्ष के योद्धा परम हर्षित और पाण्डव परम खिन्न हुए। जो अभी पूर्ण युवावस्था में भी नहीं पहुँचा था, उस बालक अभिमन्यु के मारे जाने पर, युधिष्ठिर के सामने ही उनकी सेना भाग खड़ी हुई। अपनी सेना को पलायन करते देख, अजातशत्रु युधिष्ठिर उन वीरों से कहने लगे—रण में मरने का अवसर आने पर भी अभिमन्यु ने पीठ न दिखायी। अतः वह स्वर्ग सिधारा। हे वीरो! तुम भयभीत मत हो। धैर्य धारण करो। हम शत्रुओं को निश्चय ही हरावेंगे। महातेजस्वी धर्मराज ने पुनः उन दुःखित योद्धाओं के दुःख को दूर करते हुए उनसे पुनः यह कहा—हे शूरो! अभिमन्यु प्रथम रणभूमि में सर्प के समान अपने शत्रु राजपुत्रों का वध कर, पीछे स्वयं भी स्वर्ग सिधारा है। अभिमन्यु ने अर्जुन और श्रीकृष्ण की तरह पराक्रम प्रदर्शित कर, दस हज़ार योद्धाओं का तथा महारथी, कोशलराज का वध कर, स्वर्ग की यात्रा की है। अभिमन्यु सहस्रों रथियों घोड़ों, सिपाहियों और हाथियों को मार कर भी तृप्त नहीं हुआ। अतः पुण्य कर्म करने वाला अभिमन्यु पुण्य द्वारा प्राप्त होने वाले पुण्यवानों के अक्षय लोकों में सिधारा है। अतः इसके लिये तुमको शोक करना उचित नहीं।

पचासवाँ अध्याय

समरक्षेत्र का विवरण

सञ्जय कहने लगे—हे राजन्! हम लोग उस श्रेष्ठ महारथी का वध कर, शत्रुओं के बाणों से पीड़ित तथा क्षत विक्षत हो, सायङ्काल होने पर

अपने सैन्य शिविर की ओर चले जाते समय मार्ग में हमने देखा कि, हमारे शत्रु उदास मन और अचेत से हो धीरे धीरे अपने शिविर की ओर जा रहे हैं। सूर्यदेव कमलाकार मुकुट रूप से हो, अस्ताचलगामी हो रहे हैं। अशुभ सूचक स्यारों का शब्द हो रहा है। इससे जान पड़ा कि, दिन रात्रि की अद्भुत सन्धिरूपी सन्ध्या आ उपस्थित हुई है। सूर्यदेव ने मानों बढ़िया खड्ग, शक्ति, ऋष्टि, ढाल, कवच और आभूषणों के प्रकाश की निन्दा करते हुए आकाश तथा पृथिवी को एक समान कर, अपने प्रिय शरीर सहित अग्नि में प्रवेश किया। वज्रप्रहार से पतित मेघ समूह तथा पर्वतशृङ्ग जैसी वैजयन्ती माला, अङ्कुश, वर्म तथा महावतों के सहित मृत गज समूहों से रणाङ्गण परिपूर्ण हो महाभयानक रूप धारण किये हुए था। कितने ही विशाल रथ, घोड़े, सारथी और रथियों से रहित हो रणभूमि में इधर उधर पड़े हुए थे। कितने ही भग्न रथों के नीचे अनेक पैदल सिपाही दब कर मरे हुए पड़े थे।

हे राजेन्द्र! शत्रु से विनष्ट किया हुआ नगर जैसे जनशून्य देख पड़ता है, वैसे ही घोड़ों, सारथियों और रथियों से शून्य होने पर, युद्धभूमि सूनी दिखलायी पड़ती थी। कितने ही उत्तम घोड़े अपने सवारों सहित मरे हुए पड़े थे। कितने ही घोड़ों की आँखें, कितनों ही के दाँत, कितनों ही के नेत्र बाहिर निकल पड़े थे। कितने ही घोड़ों और उनके सवारों के कवच और आभूषण शस्त्रों से कट कर इधर उधर पड़े हुए थे। इसी प्रकार जगह जगह मृत घोड़ों और योद्धाओं के शवों से रणभूमि की भयङ्करता बढ़ गयी थी। उत्तम वस्त्र पहिने हुए और मणिजटित शय्या पर सोने योग्य, अनेक पराक्रमी राजा अनाथ की तरह समरभूमि में भूमि पर पड़े अनन्त निद्रा में निमग्न थे। काक, बगुले, सियार, कुत्ते, भेड़िये और रक्त पीने वाले पशु पक्षी, माँस खा कर रुधिर पान कर रहे थे। भूत, प्रेत, पिशाच, अत्यन्त हर्षित हो शवों को चीर चीर कर माँस, मज्जा, खाते और लोहू पी रहे थे। उनमें से बहुत से लाशों को इधर उधर खींचते हुए भाग रहे थे। अनेक

राक्षस अट्टहास करते हुए लाशों में चुभे हुए बाणों को खींच रहे थे। उस समरभूमि में वैतरणी नदी की तरह शूरों के रुधिर रूपी जल से पूर्ण महाभयङ्कर नदी बहती हुई देख पड़ती थी। उस नदी में रथ, नौका की तरह बहे जाते थे। उस नदी के बीच हाथियों की लोथें पर्वत जैसी जान पड़ती थीं। मनुष्यों के कटे हुए सिर पत्थर के टुकड़े जैसे जान पड़ते थे। कीचड़ की जगह उसमें माँस था। भग्न कवच तथा शस्त्र शस्त्र ही उस नदी में फेन युक्त मालाओं जैसे जान पड़ते थे। मरे तथा अधमरे और सिसकते हुए योद्धा उस नदी में बहे से जा रहे थे। प्राणियों को भयभीत करने वाले भूत, प्रेत, पिशाच, राक्षस महाभयङ्कर बोलियाँ बोलते हुए माँस खाते और लोहू पी रहे थे। सियार, कौवे, गीध आदि पक्षी उस रुधिर रूपिणी नदी के तटों पर, लाशों के माँस खींच खींच कर खाते और रुधिर पीते बड़े आनन्दित होते हुए से जान पड़ते थे। समरभूमि में इधर उधर सैकड़ों कबन्ध, शस्त्र उठाये हुए दौड़ते तथा नाचते कूदते फिर रहे थे।

हे राजन्! इस प्रकार सैनिक लोग यमराज के राष्ट्र की वृद्धि करने वाली उस भयङ्कर रणभूमि को देखते हुए धीरे धीरे वहाँ से दूर चले गये। उन लोगों ने लौटते समय, इन्द्र तुल्य पराक्रमी अभिमन्यु को पृथिवी में मृत हो पड़ा हुआ देखा। अभिमन्यु के आभूषण और उसका कवच आदि टूट कर और खुल कर उसके निकट ही पृथिवी पर पड़े हुए थे। मृत राजकुमार अभिमन्यु का मृत शरीर उस समरभूमि में वैसा ही देख पड़ता था; जैसा वेदी पर स्थापित आहुति रहित उज्ज्वल अग्नि देख पड़ता है।

इक्यावनवाँ अध्याय

युधिष्ठिर का अभिमन्यु के लिये विलाप

सञ्जय बोले—हे धृतराष्ट्र! उस महापराक्रमी और महारथी अभिमन्यु के मारे जाने पर समस्त योद्धा अपने अपने रथों को छोड़ नीचे उतर पड़े

और धनुषों को नीचे रख, धर्मराज को घेर उनके निकट बैठ गये। तद्-नन्तर महाराज युधिष्ठिर, अपने महावीर भतीजे अभिमन्यु के मारे जाने से शोकान्वित हो, रोने लगे। वे विलाप करते हुए कहने लगे—हा! जैसे सिंह, गौओं में घुसे, वैसे ही अभिमन्यु ने मुझे प्रसन्न करने के लिये निर्भीक हो द्रोणरचित चक्रव्यूह में प्रवेश किया था। उसके अस्त्रप्रयोग के प्रभाव से बड़े बड़े युद्धदुर्मद महारथी, एवं विविध शूरवीर योद्धाओं को रण छोड़, जान ले कर भाग जाना पड़ा था। उस पराक्रमी वीर अभिमन्यु ने हमारे परम शत्रु दुःशासन को बाणों से पीड़ित किया और अन्त में उसे पीठ दिखानी पड़ी। जिस अभिमन्यु ने महासागर जैसी द्रोण की सेना को तितर बितर कर दिया, वही अभिमन्यु अन्त में दुःशासन के पुत्र की गदा के प्रहार से मर कर सूर्यलोक को सिधार गया। अब मैं अर्जुन और यशस्विनी सुभद्रा के सामने कैसे जाऊँगा? हा! अब वे दोनों अपने प्रिय पुत्र अभि-मन्यु को न देख सकेंगे। हाय! अभिमन्यु वध के अत्यन्त अप्रिय संवाद को मैं श्रीकृष्ण और अर्जुन को क्योंकर सुनाऊँगा? मैंने अपने स्वार्थ के लिये ही श्रीकृष्ण, अर्जुन और सुभद्रा के जी को दुःख पहुँचाने वाला यह अप्रिय कार्य किया है। लालची पुरुष की दृष्टि दोष की ओर नहीं जाती। मनुष्य मोह के वशवर्ती हो कर ही लोभ में फँसता है। धनाभिलाषी जैसे पर्वत-शृङ्ग पर चढ़ता है और गिरने की कल्पना तक उसके मन में उत्पन्न नहीं होती, वैसे ही मैंने भी इस प्रकार की महाविपत्ति की आशङ्का भी नहीं की थी। विविध स्वादिष्ट भोज्य पदार्थ, बढ़िया वाहन, उत्तम सेजें और बहुमूल्य आभूषण देकर जिसका मुझे अभिनन्दन करना चाहिये था, हाय उसीको मैंने लड़ने के लिये अपने सब के आगे भेजा। अभी उसकी उमर ही क्या थी। वह सोलह वर्षों का तो था ही। अतः वह युद्धविद्या में पूर्ण परिपक्व नहीं होपाया था। तिस पर भी उसका अकेले शत्रुओं के बीच जाना—कैसे शुभप्रद हो सकता था? हाय! आज मैं भी क्रुद्ध अर्जुन की दारुण दृष्टि से भस्म हो, अभिमन्यु की तरह भूमि पर शयन करूँगा। जो लोभरहित,

बुद्धिमान्, लज्जाशील, क्षमावान्, बलवान्, दृढ़ धनुर्धर, मानी, धीर, सब का प्रिय, सत्यपराक्रमी, तेजस्वी और जो पवित्र कर्मा है ; पण्डितगण जिसके कार्यों की सदा प्रशंसा किया करते हैं, जिसने निवात कवच और कालकेय दानवों का वध किया था, जिसने पल भर में हिरण्यपुरवासी इन्द्र के शत्रु पौलोम को उसके अनुचर वर्ग सहित मार कर गिरा दिया था, जो अभयकामी शत्रुओं को भी अभय प्रदान करने वाला है ; हा ! आज हम उसी अर्जुन के प्यारे पुत्र अभिमन्यु की भी युद्ध में रक्षा न कर सके। अभिमन्यु मारा अवश्य गया है, किन्तु दुर्योधन के दल के योद्धाओं के सामने बड़ा भय उपस्थित है। क्योंकि वे निश्चय पूर्वक जानते हैं कि, पुत्र के वध से कुपित हो अर्जुन, कौरवों का नाश किये बिना न मानेगा। नीच दुर्योधन अपने क्षुद्र सहायकों का नाश देख आतुर और दुःखी हो निश्चय ही अपने प्राण त्याग देगा। इन्द्रपौत्र एवं महातेजस्वी अभिमन्यु का वध देख, अब मुझे अपनी जीत अच्छी नहीं लगती। मुझे अमरत्व और देवताओं का सहवास भी अच्छा नहीं लगता।

तेरहवें दिन की रात

बावनवाँ अध्याय

अकम्पन का वृत्तान्त

सञ्जय बोले—हे धृतराष्ट्र ! जिस समय कुन्तीनन्दन युधिष्ठिर इस तरह विलाप कर रहे थे, उसी समय महर्षि कृष्णद्वैपायन वेदव्यास जी वहाँ आ पहुँचे। युधिष्ठिर ने उनका यथायोग्य पूजन किया और जब वे बैठ गये तब अपने भतीजे की मृत्यु से सन्तप्त युधिष्ठिर ने व्यास जी से कहा—हे ब्रह्मन् ! सुभद्रानन्दन अभिमन्यु शत्रुपक्ष के महाधनुर्धरों से युद्ध कर रहा था। उसे छः पापी महारथियों ने मिल कर घेरा और मार डाला। यद्यपि अभिमन्यु बड़ा बलवान् और रणकुशल था; तथापि

था तो बालक ही। अतः वह आगा पीछा बिना विचारे ही लड़ता रहा। मैंने उससे चक्रव्यूह में घुसने के लिये मार्ग करने को कहा था। सो उसने उस व्यूह का एक भाग भंग कर द्वार बना भी दिया। वह आगे आगे उसमें घुसता चला गया। हम लोग उसके पीछे पीछे घुसने लगे, किन्तु जयद्रथ ने हमें भीतर न जाने दिया। योद्धाओं का धर्म है कि, वे बराबर वाले से लड़ें, किन्तु कौरव पक्ष के अधर्मी महारथियों ने विषम युद्ध किया। इस बात का मुझे बड़ा दुःख है। मेरे नेत्रों में मारे दुःख के बार बार आँसू भर आते हैं और बहुत कुछ सोचने विचारने पर भी मेरे मन को शान्ति प्राप्त नहीं होती।

सञ्जय ने कहा—हे राजन्! शोक से विकल हो विलाप करते हुए युधिष्ठिर से भगवान् वेदव्यास जी बोले—हे महाप्राज्ञ! हे सर्वशास्त्र विशारद! हे भरतर्षभ! हे युधिष्ठिर! तुम जैसे पुरुष को तो आपत्ति पड़ने पर मोहित न होना चाहिये। पुरुषश्रेष्ठ अभिमन्यु रण में बहुत अधिक शत्रुओं को मार कर, बड़े बड़े महाबलियों जैसा काम कर के स्वर्ग सिधारा है। हे युधिष्ठिर! मृत्यु को तो कोई भी अतिक्रम नहीं कर सकता। मृत्यु के वश में तो क्या देवता, क्या दानव और क्या गन्धर्व सभी हैं। मृत्यु सब का नाश करती है।

महाराज युधिष्ठिर ने कहा—ये सब महाबली एवं पराक्रमी राजा लोग रणक्षेत्र में मरे हुए पड़े सो रहे हैं; इनमें से कोई दस सहस्र हाथियों के समान बलवान् और कितने ही वायु के समान वेगवान और पराक्रमी थे; यद्यपि वे सब अपने जैसे बलवान् एवं पराक्रमी मनुष्य के हाथों ही से मारे जा कर भूशायी हुए हैं; तथापि मैं नहीं समझता कि, इनको संग्राम में मारने वाला कोई मनुष्य हो सकता है। जिन योद्धाओं के मन में विजयाभिलाष था, वे बड़े बुद्धिमान् योद्धा आयु क्षीण होने पर ही मरे हैं। इनके लिये यदि कहा जाय कि, ये मर गये तो ऐसा कहना ठीक है। कितने ही राजकुमार जो बड़े शूरवीर थे, वे क्रोध में भर, शत्रुओं के साथ लड़े और

अन्त में शत्रुओं के वश में हो तथा अभिमान शून्य और चेष्टा रहित हो मृत्यु द्वारा ग्रसे गये। यहाँ पर मुझे यह संशय उत्पन्न होता है कि "मृत" संज्ञा किस कारण से होती है? मृत्यु है क्या वस्तु? उसकी उत्पत्ति कहाँ से है? मृत्यु प्राणियों का संहार कैसे करती है? वह लोगों को किस प्रकार इस लोक से अपरलोक में ले जाती है? हे देव समान पितामह! आप इन सब प्रश्नों का यथार्थ उत्तर दे मेरा सन्देह निवृत्त कीजिये। युधिष्ठिर के इन प्रश्नों को सुन भगवान् वेदव्यास उनको धैर्य बँधा यह वचन बोले, हे राजन्! पूर्वकाल में देवर्षि नारद जी ने राजा अकम्पन को जो वृत्तान्त सुनाया था, पण्डित लोग ऐसे प्रसङ्ग में इसी पुरातन इतिहास का उदाहरण रूप से वर्णन किया करते हैं। हे राजेन्द्र! इस लोक में राजा अकम्पन को भी असह्य पुत्रशोक प्राप्त हुआ था। इस उपाख्यान में मृत्यु की उत्पत्ति की जो कथा आती है, मैं उसीको वर्णन करता हूँ। तुम ध्यान दे कर सुनो।

हे तात! मैं उस पुरातन इतिहास को विस्तार पूर्वक कहता हूँ। उसे सुन कर तुम स्नेह रूपी बन्धन से छूट कर इस दुःख से मुक्त हो सकोगे। यह उपाख्यान दुःख-शोक-नाशक, आयु का बढ़ाने वाला और कल्याणप्रद है। हे महाराज! इस अतिप्रिय, पवित्र एवं मनोहर उपाख्यान का पारायण करने से वेदाध्ययन के तुल्य पुण्यफल प्राप्त होता है। राज्य, आयु और पुत्र की कामना वाले राजाओं को तो इसे नित्य ही प्रातः काल सुनना चाहिये।

सत्ययुग में अकम्पन नामक एक राजा थे। वे रणक्षेत्र में शत्रुओं के हाथ पड़ गये। उनका हरि नामक एक राजकुमार था। वह हरि, बल तथा पराक्रम में नारायण के समान था। श्रीमान् हरि शस्त्रविद्या में बड़ा प्रवीण और रण में इन्द्र के समान बलवान् था। जब वह शत्रुओं से घेर लिया गया, तब उसने बहुत से योद्धाओं और हाथियों पर सहस्रों बाण छोड़े थे। शत्रुनाशन हरि, समरभूमि में अति कठिन कर्मों को कर अन्त में शत्रुओं द्वारा मार डाला गया। जब राजा अकम्पन उसका श्राद्धादि कर्म कर चुके और अशौच से विमुक्त हुए; तब वे रात दिन उसके शोक में घुलने लगे। उनका वह

शोक किसी प्रकार भी दूर न हो सका। अन्त में उन्हें पुत्रशोक से विकल देख, देवर्षि नारद उनके निकट गये। राजा अकम्पन ने देवर्षि नारद को देख उनका यथोचित पूजन किया। जब नारद जी सुख से आसन पर बैठ गये तब राजा अकम्पन ने उनके सामने पुत्रशोक का सम्पूर्ण वृत्तान्त वर्णन किया। शत्रुओं के साथ युद्ध का होना, शत्रुओं का विजय पाना, युद्ध में अपने पुत्र हरि का शत्रुओं द्वारा मारा जाना आदि जो कुछ वृत्तान्त था, वह सब अकम्पन ने देवर्षि नारद को विस्तार पूर्वक कह सुनाया। अन्त में अकम्पन ने कहा—हे देवर्षि! मेरा पुत्र महाबलवान था। पराक्रम में वह इन्द्र और विष्णु के समान था। उस मेरे पुत्र को अनेक शत्रुओं ने मिल कर मारा था। हे महामुने! मृत्यु क्या पदार्थ है? मृत्यु का बल, पराक्रम और पुरुषार्थ किस प्रकार का है? हे ऋषिश्रेष्ठ! मैं आपसे यह विषय सविस्तार सुनना चाहता हूँ।

राजा अकम्पन के इन वचनों को सुन, वरद नारद मुनि ने पुत्रशोक नाशकारी यह बड़ा उपाख्यान उनको सुनाया।

नारद जी ने कहा—हे पृथिवीनाथ! मैंने एक उपाख्यान विस्तारपूर्वक सुना है। उसीको मैं तुम्हें सुनाता हूँ। तुम ध्यान दे कर उसे सुनो। परम-तेजस्वी लोकपितामह ब्रह्मा जी ने जगत् की उत्पत्ति के समय समस्त प्रजाजनों की सृष्टि की। पीछे जब उन्होंने देखा कि, यह संसार धीरे धीरे प्रजाओं से भरा जाता है, तब उन्हें प्रजाजनों की संख्या कम करने की चिन्ता उत्पन्न हुई। हे राजन्! बहुत सोचने विचारने पर भी ब्रह्मा जी प्राणियों की संख्या कम करने का कोई उपाय न निकाल सके। तब उनके शरीर में क्रोध उत्पन्न हुआ। उस क्रोध से आकाश में अग्नि प्रकट हुई। वह अग्नि सम्पूर्ण जगत् का नाश करने की इच्छा से सब दिशाओं में तथा सर्वत्र व्याप्त हो गया। इसका परिणाम यह हुआ कि, वह अग्नि स्वर्ग, मर्त्य और आकाशवासी समस्त प्राणियों को अपनी प्रचण्ड ज्वाला से विकल करता हुआ, उन्हें भस्म करने लगा। चर अचर—समस्त जीव ब्रह्मा के क्रोधानल से भस्म होने

हुए बहुत डरे। तब जटाधारी एवं भूत-प्रेत और पिशाचों के प्रभु, देवदेव महादेव ब्रह्मा जी के शरण में उपस्थित हुए। महादेव जी जब सब प्राणियों के हितार्थ ब्रह्मा जी के निकट उपस्थित हुए, तब जाज्वल्यमान अग्नि के समान तेजसम्पन्न ब्रह्मा जी उनसे बोले—हे वत्स! हे शिव! तुम अपनी इच्छा से उत्पन्न हुए हो। तुम वर के उपयुक्त पात्र हो। अतः तुम जो चाहते हो; सो निस्संकोच भाव से मेरे सामने कहो। मैं तुम्हारा अभीष्ट पूरा करूँगा।

तिरपनवाँ अध्याय

मृत्यु की उत्पत्ति

महादेव जी बोले—हे विधाता! आपने प्रजोत्पत्ति के लिये उद्योग किया था। यह उसीका फल है कि, विविध प्रकार के प्राणी उत्पन्न हुए हैं और क्रमशः उनकी सख्या बढ़ती जा रही है। इस समय उन्हीं समस्त प्राणियों को आपके क्रोधानल में भस्म होते देख, मेरे मन में उनके ऊपर दया उत्पन्न हुई है। हे भगवन्! हे प्रभो! अतः आप प्रसन्न हों।

ब्रह्मा जी बोले—हे शिव! मैं नहीं चाहता कि, मैं प्रजाओं का नाश करूँ। अतः तुम जो चाहते हो, वही होगा। किन्तु जो क्रोध उत्पन्न हुआ है, उससे पृथिवी का हित ही होगा। यह भूदेवी उन बढ़े हुए प्रजाजनों के भार से पीड़ित हो, उनके नाश के लिये, मुझसे अनुरोध कर रही है। अतः मैंने इन असंख्य प्रजा जनों के नाश का उपाय ढूँढ निकालने को बहुत सोचा विचारा, किन्तु मैं कोई उपाय निर्णीत न कर सका, तब मेरे शरीर से यह क्रोधानल उत्पन्न हुआ है।

महादेव जी बोले—हे ब्रह्मन्! हे सृष्टिकर्त्ता! आप मेरे ऊपर प्रसन्न हों। आप अपने इस क्रोधानल को शान्त करें, जिससे सारा जगत नाश होने

से पच जाय। हे भगवन्! आपके अनुग्रह से यह जगत् भूत, भविष्यत् और वर्तमान तीनों कालों में स्थित रहे, यह अग्नि आपके क्रोध से उत्पन्न हुआ है। यह केवल, चेतनों ही को नहीं किन्तु पहाड़, वृक्ष, सरोवर, नदी, शस्य आदि समस्त अचेतन पदार्थों को भी भस्म कर नष्ट किये डालता है। हे प्रभो! आप जगत् पर कृपा करें और प्रसन्न हों। आपसे मेरी यही प्रार्थना है। हे देवों के देव! यह जगत् नाशशील है। यह तो अवश्य ही नष्ट होगा ही, किन्तु आपके क्रोधानल से तो यह अभी नष्ट हुआ चाहता है। अतः आप अपना क्रोध शान्त कीजिये। हे देव! आप ऐसा करें जिससे अग्नि का यह प्रचण्ड तेज आप ही के शरीर में लय को प्राप्त हो जाय। आप समस्त प्राणियों पर कृपादृष्टि कीजिये, जिससे सब प्राणियों की रक्षा हो। अब आप उन सब की रक्षा के लिये ही कोई विधान कीजिये। आप ऐसा करें जिससे यह समस्त प्रजा, उत्पादक शक्ति से रहित हो कर, नष्ट न होने पावे। हे लोकनाथ! आपने जगत् के संहार का कार्य तो मुझे सौंपा है। फिर इस समय वह कार्य आप स्वयं कर रहे हैं। आप मेरे ऊपर प्रसन्न हों। मेरी आपसे पुनः प्रार्थना है कि, इस स्थावर जंगमात्मक संसार का आप नाश न करें।

देवर्षि नारद जी कहने लगे—हे राजन्! महादेव जी के समस्त प्रजा के पक्ष में ये हितकर वचन सुन, ब्रह्मा जी ने अपने तेज को समेट कर अपने शरीर में लय कर लिया। ब्रह्मा जी ने उस अग्नि को शान्त कर, जगत् की सृष्टि और संहार का सम्पूर्ण वृत्तान्त बतलाया। ब्रह्मा जी ने जिस समय उस प्रचण्ड अग्नि का समस्त तेज निज शरीर में लीन किया, उस समय उनके लोमकूप से एक कन्या प्रकट हुई। हे राजन्! उसके शरीर का रङ्ग लाल, पीला और नीला था। उसकी जीभ, मुख और आँखें लाली थीं। वह सुवर्ण के आभूषणों से भूषित थी। वह ब्रह्मा जी के लोमकूप से प्रकट हो, महादेव जी और पितामह ब्रह्मा को देख हँसी और उनकी दहिनी ओर बैठ गयी। हे राजन्! उस समय ब्रह्मा जी ने उसे मृत्यु कह कर,

सम्बोधन किया और उससे कहा—तुम संहार करने की इच्छा से, मेरे क्रोध द्वारा उत्पन्न हुई हो। अतः तुम मेरे आदेशानुसार इन स्थावर जङ्गमात्मक सम्पूर्ण जगत् के प्राणियों के नाश का कार्य अपने हाथ में लो। ऐसा कार्य करने से तुम्हारा कल्याण होगा।

वह कमलनयनी एवं मृत्यु नाम्नी कन्या ब्रह्मा के इस आदेश को सुन, बड़ी भारी चिन्ता में पड़ गयी और सिसक सिसक कर रोने लगी। ब्रह्मा जी ने उसके आँसुओं को अपने हाथों में ले लिया और सब प्राणियों के हितार्थ उससे बोले।

चौवनवाँ अध्याय

मृत्युदेवी और प्रजापति का कथोपकथन

नारद जी बोले—हे राजन्! वह अबला, अपने कष्ट को अपने मन ही में दबा कर और लता की तरह झुक और हाथ जोड़ ब्रह्मा जी से बोली—हे महाबुद्धिमान्! आपने मुझ जैसी (क्रूर) स्त्री को क्यों उत्पन्न किया। मैं जानबूझ कर किस तरह ऐसे क्रूर और अहित कर्म को कर सकूँगी। मैं तो अधर्म से बहुत डरती हूँ। हे प्रभो! मेरे ऊपर आप कृपा करें। हे देव! यदि मनुष्यों के प्रिय पुत्र, मित्र, भाई, माता, पिता और पतियों का मैं नाश करूँगी, तो वे अन्तःकरण से मुझे अकोसेंगे। अतः मैं डरती हूँ। दुःखी हो जब लोग रुदन करेंगे, तब उस समय का स्मरण आते ही, मेरे शरीर के रोंगटे खड़े हो जाते हैं। हे भगवन्! मैं आपके शरण होती हूँ। आप इस पाप से मेरी रक्षा करें। हे महादेव! मैं प्राणियों को यमालय नहीं पहुँचाऊँगी। हे पितामह! मैं विनय पूर्वक सीस झुकाती हूँ और हाथ जोड़ कर आपसे प्रार्थना करती हूँ। हे प्रजाओं के स्वामी! मैं आप के अनुग्रह से तपस्या करना चाहती हूँ। हे प्रभो! आप मुझे वर दें।

आपके आदेशानुसार मैं धेनुकाश्रम में आ कर, आपकी आराधना करती हुई घोर तप करूँगी। हे देव ! मैं विलाप करते हुए प्राणियों के प्रिय प्राणों को हरण न कर सकूँगी। आप मुझे इस अधर्म से बचावें।

ब्रह्मा जी बोले—हे मृत्यु ! मैंने तो तेरी रचना इसी अभिप्राय से की है कि, तुमसे प्रजा का नाश करवाऊँ। अतः तू जा कर प्रजा का नाश कर और इसके लिये कुछ भी आगा पीछा मत कर। मैं जैसा कहता हूँ, वैसा ही होगा, अन्यथा नहीं हो सकता। मैं कहता हूँ कि, मेरे कथनानुसार संहार कार्य करने पर भी तू निन्दा की पात्री न बनेगी।

नारद जी बोले—जब ब्रह्मा जी ने यह कहा, तब उनकी ओर मुख कर और हाथ जोड़े बैठी हुई मृत्यु देवी प्रसन्न हो गयी। तो भी उसने मन से यह न चाहा कि, वह प्रजा का संहार कार्य अपने हाथ में ले। अतः वह कुछ न बोली और चुप रही। इससे ब्रह्मा जी उस पर प्रसन्न हुए। ब्रह्मा जी समस्त प्राणियों की ओर देख कर हँसे। तब समस्त प्राणी उनको प्रसन्न जान पूर्ववत् शान्त हो स्थित हुए। उन अपराजित ब्रह्मा का कोप शान्त होने पर, उस मृत्यु नाम्नी कन्या ने वहाँ से प्रस्थान किया। वह संहार कार्य न कर, तुरन्त धेनुकाश्रम में पहुँची। फिर प्रजाओं की हित कामना से अपने मन को इन्द्रियों के विषयों से निवृत्त कर, एक पाँव से खड़ी हो वह इक्कीस पद्म वर्षों तक महाघोर तप करती रही। फिर दूसरे पैर से वह तेईस पद्म वर्षों तक खड़ा रह कर कठोर तप करती रही। तदनन्तर दस सहस्र पद्म वर्षों तक वनों में वह मृगों के साथ घूमा फिरा की। फिर पाप रहित हो वह जलपूर्ण पवित्र नदी में खड़ी रह, आठ सहस्र वर्षों तक तप करती रही। फिर यथानियम वह कौशिकी में गयी और वहाँ पवन एवं जलपान कर व्रत पूर्वक रही। फिर उस पवित्रकर्मा कन्या ने पञ्चगङ्गा और वेतस तीर्थ में जा विविध प्रकार के तप किये। यहाँ तक कि, उसने अपना शरीर तप करते करते सुखा डाला। फिर वह गङ्गा और प्रधान तीर्थ महामेरु पर आ, प्राणायाम करती हुई निश्चेष्ट हो बन रही। वहाँ से

वह फिर उस पुण्यस्थान में गयी जहाँ पूर्वकाल में देवताओं ने तप किया था। वह हिमालय पर्वत के शृङ्ग पर जा कर, निखर्व वर्षों पर्यन्त पैर के अँगूठे पर खड़ी रही। तदनन्तर पुष्कर, गोकर्ण, नैमिषारण्य और मलय तीर्थ में जा, इच्छित नियम का अनुष्ठान करती हुई वह अपने शरीर को सुखाने लगी। वह अन्य देवताओं का आसरा छोड़ ब्रह्मा की अनन्य भक्त बन गयी। उसने नियमानुसार तपश्चर्या कर ब्रह्मा जी को प्रसन्न किया। अन्त में जगत्कर्ता ब्रह्मा जी उस पर प्रसन्न हुए और शान्त मन से वे उस स्त्री से बोले—हे मृत्यु देवी! तू इस प्रकार कठोर तप क्यों करती है? इसके उत्तर में मृत्यु देवी ने कहा—हे देव! मैं यह वर चाहती हूँ कि, मैं शान्तिमयी प्रजा को रुलाने वाला उनका संहार कार्य न करूँ। मैं अधर्म से डरती हूँ। अतः तप करती हूँ। हे महाभाग! आप मुझ भयभीत को अभय प्रदान कीजिये। हे देव! मैं निरपराध होने पर भी पीड़ित हो रही हूँ। आप मेरी रक्षा करें।

यह सुन भूत, भविष्यत् और वर्तमान के जानने वाले ब्रह्मा जी ने उससे कहा—हे मृत्यु! प्रजा का नाश करने पर भी तू पापभागिनी न होगी। हे कल्याणि! मेरा कथन अन्यथा नहीं होता। तू चारों प्रकार की प्रजा का नाश कर। सनातन धर्म तुझे सब प्रकार से पवित्र करेगा। लोकपाल, यम और व्याधियाँ तेरी सहायक होंगी। मैं तथा अन्य देवता फिर भी तुझे वर देंगे। ऐसा होने पर तू पाप से शून्य हो कर विख्यात होगी।

हे राजन्! जब ब्रह्मा जी ने यह कहा; तब वह मृत्यु देवी, ब्रह्मा जी को सीस नवा और हाथ जोड़ कर, पुनः बोली—हे प्रभो! यदि यह कार्य ऐसा है कि, बिना मेरे अन्य किसी से हो ही नहीं सकता, तो मैं आपकी आज्ञा शिरोधार्य करती हूँ। किन्तु अब मैं जो कहती हूँ, उसे आप सुनें। लोभ, असूया, ईर्ष्या, द्वेष, मोह, निर्लज्जता और आपस में कठोर वचनों का प्रयोग—ये सब मनुष्यों के शरीरों को नष्ट किया करें—हे देव! आप मुझे यह वर दें।

ब्रह्मा जी बोले—हे मृत्यो ! तथास्तु ऐसा ही होगा। अब तू प्रजा का भली भाँति संहार कर। हे शुभे ! प्रजा का संहार करने से तुझे पाप न लगेगा और न मैं तेरे लिये किसी प्रकार का अशुभ चिन्तन करूँगा। तेरे जो अश्रु मेरे हाथ में आये थे, वे व्याधि बन कर, प्राणियों के शरीरों को नष्ट करेंगे। तू मत डर, तुझे पाप न लगेगा तुझे अधर्म न होगा, बल्कि तू ही प्राणियों के लिये धर्म स्वरूप और उनको धर्म पर चलाने वाली बनेगी। जा तू सब के प्राणों को हर। तू कामना और क्रोध को त्याग कर, समस्त प्राणियों के प्राणों को हर। ऐसा करने से तुझे अनन्त धर्म का लाभ होगा। अधर्म तो, स्वयं ही पापियों को नष्ट करेगा। तू स्वयं अपने आत्मा को पवित्र कर। मनुष्य मिथ्या बोल बोल कर स्वयं अपने आत्मा को पाप में पटकते हैं। अतः तू समुत्पन्न क्रोध और काम को त्याग कर अन्तकाल में प्राणियों के प्राण हरना।

नारद जी बोले—हे राजन् ! ब्रह्मा जी के उपदेश से, शाप से त्रस्त उस स्त्री ने कहा—बहुत अच्छा मैं ऐसा ही करूँगी। तभी से यह स्त्री काम और क्रोध को त्याग अन्त समय में प्राणियों के प्राण हरती है और स्वयं निष्पाप रहती है। मृत्यु जीवितों को मारती है, और जीवित प्राणियों ही को मृत्यु से उत्पन्न होने वाली व्याधियाँ लगा करती हैं। व्याधि नाम रोग का है, जिससे प्राणियों को क्लेश मिलता है। समस्त प्राणी कर्मभोग पूरा कर और आयु पूरी होने पर, मरते हैं। अतः हे राजन् ! तुम व्यर्थ शोक मत करो।

हे राजसिंह ! प्राणियों के मरण के बाद, जैसे उनकी इन्द्रियाँ, अपनी वृत्तियों के साथ परलोक में जाती हैं और वहाँ कर्मफल भोग कर, पुनः इस लोक में आती हैं, वैसे ही प्राणी भी मरने के बाद, परलोक में जाते हैं और वहाँ से उन वृत्तियों सहित पुनः इस लोक में आते हैं। मनुष्य ही नहीं—बल्कि इन्द्रादि देवता भी मनुष्यों की तरह परलोक में, जाते हैं और कर्मफल भोगने के लिये पुनः मर्त्यलोक में जन्म लेते हैं। महाबली, भयङ्कर

शब्द करने वाला, अनन्त तेजयुक्त, सर्वत्रगामी एवं असाधारण पवन, भयानक उग्र रूप धर कर, प्राणियों के शरीर को नष्ट करता है। उसकी भी कभी गति प्रत्यागति नहीं होती। हे राजन्! समस्त देवता भी मर्त्यकोटि के हैं। अतः तुम अपने पुत्र के लिये शोक मत करो। तुम्हारा पुत्र नित्य रमणीय वीरों के लोक में गया है और वहाँ आनन्द से है। वह इस लोक के दुःखों से छूट, पुण्यात्माओं के साथ, वहाँ रहता है। ब्रह्मा ने स्वयं ही मृत्यु को प्रजा का संहार करने के लिये उत्पन्न किया है। अतः जब अन्तकाल उपस्थित होता है तब देवरचित मृत्यु प्राणियों के प्राण हरा करती है। अनेक प्राणी पाप कर्म कर अपने नाश का कारण स्वयं बन जाते हैं। दण्ड-धारी यम उनको नष्ट नहीं करते। ब्रह्मारचित मृत्यु ही प्राणियों का नाश करती है। यह जान कर जो धीर पुरुष होते हैं, वे मरे हुओं के लिये शोक नहीं करते। हे राजन्! इस प्रकार मृत्यु को ब्रह्मा की रची हुई जान कर, तुम मृत पुत्र के शोक को तुरन्त त्याग दो।

व्यास जी बोले—नारद जी के इस अर्थयुक्त उपदेश को सुन, राजा अकम्पन ने उनसे कहा—हे भगवन्! हे ऋषिसत्तम! मेरा शोक जाता रहा। अब मैं प्रसन्न हूँ। हे भगवन्! आपसे इस आख्यान को सुन, मैं कृतार्थ हो गया। मैं आपको प्रणाम करता हूँ। जब इस प्रकार उस राजा ने कहा, तब अपार ज्ञानवान् ऋषिप्रवर देवर्षि नारद जी नन्दनवन की ओर चल दिये।

हे राजन्! इस इतिहास को सुनने, सुनाने से पुण्य, यश, स्वर्ग धन और आयु की प्राप्ति होती है। हे राजन्! इस सार्थक आख्यान के सुनने से क्षात्र धर्म का ज्ञान प्राप्त हो कर शूरवीरों को परमगति मिलती है। समस्त धनुर्धारियों के सामने महारथी महावीर्यवान् अभिमन्यु शत्रुओं का विनाश कर, स्वर्ग में गया है। महारथी एवं महाधनुर्धर अभिमन्यु रण में लड़ता लड़ता, तलवार, गदा, शक्ति और धनुष से मारा गया है। पाप रहित एवं चन्द्रवंशी वह राजकुमार पुनः चन्द्रमा ही में लीन हो गया है। अतः हे

पाण्डुनन्दन ! तुम आश्वासन दो, पुनः शस्त्रादि को धारण कर और अपने भाइयों के साथ शत्रुओं से लड़ने के लिये अविलम्ब तैयार हो जाओ।

पचपनवाँ अध्याय

राजा मरुत का उपाख्यान

संजय बोले—हे धृतराष्ट्र ! युधिष्ठिर ने व्यासदेव से मृत्यु की उत्पत्ति तथा उसके कर्मों को सुन कर, उन्हें प्रणाम कर, प्रसन्न किया। फिर वे यह बोले—हे भगवन् ! इन्द्र तुल्य पराक्रमी, पुण्यकर्मा, महात्मा, सत्यवादी प्राचीन कालीन राजर्षियों ने जो जो कर्म किये हों, उन कर्मों को आप पुनः मुझसे सविस्तर और ज्यों के त्यों कहें, जिससे मुझे आनन्द मिले और साथ ही मुझे आप यह सुनावें कि, किन किन पुण्यवान् महात्मा राजर्षियों ने कितनी कितनी दक्षिणाएँ दी थीं।

व्यास जी बोले—राजा शैव्य थे, जिनके पुत्र का नाम सृञ्जय था। उनके पर्वत और नारद दो ऋषि मित्र थे। वे दोनों ऋषि उससे मिलने के लिये, उसके घर पर गये। सृञ्जय ने यथाविधि उनका सत्कार कर, उनकी अभ्यर्थना की। इससे वे दोनों बहुत प्रसन्न हुए और सानन्द उसके यहाँ टिके रहे। एक दिन राजा उन दोनों के साथ बैठे हुए थे कि, उनकी हँसमुख और सुन्दरी कन्या अपने पिता के निकट आयी। जब उस राजकुमारी ने सृञ्जय को प्रणाम किया और उसके सामने खड़ी हो गयी, तब सृञ्जय ने उसको आशीर्वाद दिया। पर्वत ने हँस कर पूँछा—यह चञ्चल कटाक्ष वाली सर्वलक्षणों से युक्त कन्या किसकी है? क्या यह सूर्य की प्रभा है? अथवा अग्निशिखा है? अथवा यह श्री, ह्री, कीर्ति, धृति, पुष्टि, सिद्धि या चन्द्र-प्रभा है? उत्तर में देवर्षि पर्वत से राजा सृञ्जय ने कहा—भगवन् ! यह मेरी कन्या है। वरअभिलाषिणी हो, यह मेरे निकट आयी है। नारद जी बोले—

राजन्! यदि तुम उत्तम कल्याण चाहते हो, तो इस कन्या का विवाह मेरे साथ कर दो। यह सुन सृञ्जय प्रसन्न हुए और नारद जी से बोले—मैं इसका विवाह तुम्हारे साथ कर दूँगा। इस पर पर्वत ने क्रोध में भर नारद जी से कहा—वाह! मैंने तो अपने मन में इसे पहले ही अपने लिये वर लिया था। तिस पर भी तुम मेरी वरी हुई कन्या को वरने के लिये उद्यत हो। यह तो एक प्रकार से तुम मेरा अपमान कर रहे हो। अतः तुम अपनी इच्छानुसार स्वर्ग में न जा सकोगे। जब पर्वत ने यह कहा—तब नारद जी बोले—विवाह के सात लक्षण होते हैं, उनमें प्रथम तो वर को यह ज्ञान होना कि—मेरी यह भार्या है, फिर वर का यह कहना कि—यह मेरी भार्या है। तदनन्तर कन्यादाता का बुद्धिपूर्वक (समझ बूझ कर) कन्यादान करना, फिर लोकाचार के अनुसार कन्यादाता और कन्याग्रहीता द्वारा शास्त्रोक्त विधि से परस्पर वर वधू का मिलाप। तदनन्तर कन्यादाता का जल और कुश ले कन्या का दान। कन्या के साथ वर का पाणिग्रहण और विवाह सम्बन्धी मंत्रों का उच्चारण। जब यह सात बातें हो जाती हैं, तब विवाह का होना माना जाता है। इतना ही नहीं, प्रत्युत जब तक सप्तपदी नहीं होती, तब तक उक्त सातों बातों के होने पर भी कन्या किसी की भार्या नहीं मानी जा सकती। अतः भार्या रूप से इस कन्या पर तुम्हारा अधिकार नहीं है। तिस पर भी अकारण तुमने मुझे शाप दिया है। अतः मैं भी तुम्हें शाप देता हूँ कि, तुम भी मेरे बिना स्वर्ग में न जा सकोगे। इस प्रकार वे दोनों ऋषि आपस में एक दूसरे को शाप दे उसी स्थान में वास करने लगे। पुत्रकामी राजा सृञ्जय ने भी शुद्ध भाव से अपनी शक्ति के अनुसार खान, पान और वस्त्रादि से उन ऋषियों की सेवा करनी आरम्भ कर दी। राजा सृञ्जय के पुत्र सन्तान होने की कामना रखने वाले वेद-वेदाङ्ग-पारग, तपस्वी एवं स्वाध्याय-निरत राजा सृञ्जय की राजधानी के ब्राह्मणों ने एक दिन हर्षित हो, नारद जी से कहा—भगवन्! राजा सृञ्जय को उसकी इच्छानुसार एक पुत्र दीजिये। इस पर नारद जी ने उन ब्राह्मणों से कहा—"तथास्तु।"

फिर नारद जी ने राजा से कहा—हे राजन्! ब्राह्मणों की तुम्हारे ऊपर कृपा है और वे चाहते हैं कि, तुम्हें पुत्र प्राप्त हो। हे राजन्! तुम्हारा मङ्गल हो। तुम इच्छित वर मुझसे माँग लो।

यह सुन राजा ने हाथ जोड़ कर नारद जी से कहा—सर्वगुणसम्पन्न, यशस्वी, कीर्तिमान और शत्रुओं का नाश करने वाला एक पुत्र आप मुझे दें। मैं आपसे यह वर माँगता हूँ। नारद जी ने वर दिया और समय पा कर राजा को एक पुत्र प्राप्त हुआ। उस लड़के का नाम सुवर्णष्ठीवी रखा गया। साथ ही राजा के अपार धन की वृद्धि होने लगी। तब राजा ने इच्छानुसार घर, परकोटे, दुर्ग और ब्राह्मणों के घर भी सुवर्ण ही के बनवा दिये। उस राजा की सेजें, सिंहासन, थालियाँ, लोटे तथा अन्य बरतन आदि जो सामान थे, वे सब सुवर्ण के बन गये। उधर जब चोरों को यह बात मालूम हुई, तब वे राजा का धन चुराने को उद्यत हुए। उनमें से किसी ने यह भी कहा कि, चलो हम लोग राजपुत्र ही को चुरा लावें। क्योंकि सुवर्ण का भाण्डार तो वही है। हमें तो उसीको हथियाने का उद्योग करना चाहिये। तदनन्तर लोभ में फँस, वे चोर राजभवन में घुस गये और बरजोरी सुवर्णष्ठीवी को पकड़ कर, जंगल में ले गये। असली बात को न जानने वाले उन मूर्ख चोरों ने राजकुमार को मार काट डाला। किन्तु इससे उन्हें तिल भर भी सोना प्राप्त न हुआ। इस प्रकार राजकुमार के मारे जाने पर राजा सृञ्जय का धन कम होने लगा। दुष्टकर्मा वे मूर्ख चोर भी आपस में लड़ झगड़ कर, कट मरे। वे क्रूरकर्मा चोर असम्भाव्य नामक घोर नरक में डाले गये। वर से प्राप्त राजकुमार को मरा हुआ देख, धर्मात्मा राजा सृञ्जय अत्यन्त विकल हुआ और करुणोत्पादक विलाप करने लगा। उसका विलाप करना सुन, देवर्षि नारद उसके निकट गये।

व्यास जी बोले—हे युधिष्ठिर! दुःख से विकल और संज्ञाहीन हो विलाप करते हुए राजा सृञ्जय से नारद जी ने उस समय जो जो बातें

कही थीं, उसको तुम ध्यान से सुनो। नारद जी ने कहा—हे सञ्जय ! तुम्हारे घर में इस अंशवादी पुरुष रहते हैं। फिर पर भी तुम कामना से तृप्त न हो क्यों अपनी आन गँवाते हो ? हे सञ्जय ! महातेजस्वी पुण्यवान् राजा मरुत का मरण भी सुना है। सम्वर्त ने बृहस्पति से ईर्ष्या कर, मरुत को यज्ञ कराया था। अनेक यज्ञ करने के इच्छुक राजर्षि मरुत को शङ्कर ने हिमालय के उत्तम सुवर्ण का एक शृङ्ग दिया था। उसके यज्ञ-मण्डप में बृहस्पति सहित समस्त इन्द्रादि देवता बैठे थे। उसका यज्ञ-मण्डप सोने से बनाया गया था। वहाँ पर अन्नार्थी ब्राह्मणों, क्षत्रियों और वैश्यों को मनमाना पवित्र और स्वादिष्ट भोजन मिला करता था। उसके समस्त यज्ञों में वेदपारग ब्राह्मणों को दूध, दही, घी शहद और स्वादिष्ट भक्ष्य, भोज्य तथा इच्छानुसार वस्त्र और आभूषण दिये जाते थे। अविक्षित के पुत्र राजर्षि मरुत के यज्ञ में पवनदेव भोजन परोसते थे। विश्वेदेव उसके सभासद् हुए थे। राजा मरुत के राज्य में यथेष्ट वृष्टि होती थी। अतः अन्न भी खूब उपजता था। यज्ञों में बहुत से बलिदान दे, ब्रह्मचर्य पालन पूर्वक वेदाध्ययन कर तथा सब प्रकार के दान दे कर, राजा मरुत सुखमय जीवन बिताता था। वह देवता, ऋषि और पितरों को यज्ञ, स्वाध्याय और श्राद्ध द्वारा तृप्त किया करता था। उसने ब्राह्मणों को तथा अन्य लोगों को भी अनेक बिस्तर, आसन, पानपात्र और सुवर्ण के ढेर के ढेर दिये थे। उसके पास जो अपार धन था, वह उसने ब्राह्मणों के इच्छानुसार उनको दे डाला था। देवराज इन्द्र भी उसके शुभचिन्तक हो गये थे। वह प्रजा को भी परम सुख से रखता था। उसने श्रद्धा पूर्वक पुण्यभाज् लोकों को जीता था। उसने प्रजा, मंत्री, स्त्री, पुत्र तथा बन्धुओं के साथ, तरुण रह कर एक सहस्र वर्षों तक राज्य किया था हे सञ्जय ! वह महाप्रतापी राजा धर्म, ज्ञान, वैराग्य एवं ऐश्वर्य में तुमसे और तुम्हारे पुत्र से बहुत बढ़ा चढ़ा था। तिस पर भी वह मरण को प्राप्त हुआ। अतः उससे कम योग्यता-वाले तथा यज्ञ न करने वाले और चतुरता रहित पुत्र के लिये हे सञ्जय !

चित्रसेन के साथ, अर्जुन का परिचय करवा मैत्री करवा दी। अर्जुन उनके साथ रात दिन रहने लगे। यद्यपि चित्रसेन गन्धर्व, अर्जुन को बारंबार गाना, बजाना और नाचना सिखाता था, तो भी दुःशासन और शकुनी को मारने की आतुरता से और जुए के कारण उत्पन्न दुर्दशा का स्मरण कर, अर्जुन के चित्त की अशान्ति बढ़ जाती थी। यह होने पर भी कभी कभी अर्जुन सद्भाव से अतुलित आनन्दानुभव कर, चित्रसेन से नाचना गाना सीखते थे। शत्रुहन्ता अर्जुन चित्रसेन से शिक्षा पा कर, गाने नाचने और बजाने की कलाओं में प्रवीण हो गये। अब उनको अपने भाइयों की और माता कुन्ती की याद आने से, उनका मन मलिन रहने लगा।

पैंतालीसवाँ अध्याय

उर्वशी और चित्रसेन का कथोपकथन

वैशम्पायन जी बोले—हे जनमेजय! एक दिन एकान्त में देवेन्द्र ने चित्रसेन गन्धर्व को बुला कर कहा कि, मैंने देखा है कि, अर्जुन की आँख उर्वशी अप्सरा से लगी हुई थी। अतः तुम उर्वशी के पास जा कर, मेरा उससे यह संदेसा कह देना कि, वह अर्जुन के पास चली जाय। मेरी आज्ञा से तुमने अस्त्रविद्या में पारंगत अर्जुन को सङ्गीतविद्या सिखला दी है। अब वह उर्वशी अर्जुन को ऐसी शिक्षा दे, जिससे वह कामशास्त्र में भी प्रवीण हो जाय। यह आज्ञा सुन, चित्रसेन ने कहा, तथास्तु अर्थात् बहुत अच्छा और फिर वह उर्वशी के निकट गया। उर्वशी ने उसका आगत स्वागत किया। तदनन्तर चित्रसेन उर्वशी के समीप बैठ मुसक्या कर बोला। हे सुन्दरी! स्वर्ग के चक्रवर्ती राजा और तेरी कृपा की चाहना रखने वाले महाराज इन्द्र ने मुझे जिस कार्य के लिये तेरे पास भेजा है वह यह है। सुन। तू जानती है कि, अर्जुन अपने स्वाभाविक अनेक गुणों, शोभा, शील, रूप, व्रतानुष्ठान और इन्द्रियसंयम के कारण क्या देवताओं और क्या मनुष्यों

वाह्लिक देश में अनेक यज्ञ कर, दक्षिणा में ब्राह्मणों को अपार धन दिया था। उसने एक दो नहीं एक सहस्र अश्वमेध, यज्ञ, सौ राजसूय यज्ञ तथा प्रचुर दक्षिणा वाले पावन क्षत्रिय यज्ञ और नित्य नैमित्तिक यज्ञ किये थे। उस धर्मात्मा राजा को भी मरना पड़ा और उसे परलोक गमन करना पड़ा।

व्यास जी बोले—हे युधिष्ठिर! नारद जी ने राजा सृञ्जय से यह उपाख्यान कह और उससे श्वित्यपुत्र कह सम्बोधन करते हुए पुनः कहा—महाप्रतापी मरुत्त राजा दान सहित वित्त, गर्व रहित ज्ञान, क्षमायुक्त पराक्रम और आसक्ति रहित भोग में, तुम्हारे पुत्र से और तुमसे भी बहुत बढ़ा चढ़ा पुण्यात्मा था। तिस पर भी उसे काल के गाल में पतित होना पड़ा। हे राजेन्द्र! तब तुम अपने उस पुत्र के लिये, जिसने यज्ञ और दान आदि कोई भी धर्मकर्म नहीं किया था—क्यों शोक करते हो?

सत्तावनवाँ अध्याय

राजा पौरव का उपाख्यान

नारद जी बोले—हे सृञ्जय! सुनते हैं, वीराग्रगण्य पौरवराज भी नहीं रहे। उन्होंने सफेद रङ्ग के एक एक हज़ार घोड़ों का सहस्रवार दान किया था, अर्थात् एक लाख घोड़े दान किये थे। उस राजर्षि के अश्वमेध यज्ञ में बड़ी बड़ी दूर के वेदपाठी इतने ब्राह्मण एकत्र हुए थे कि, उनकी गणना करना असम्भव काम था। वेदपाठी, शास्त्रज्ञ, ब्रह्मविद्याविद्, विनयी ब्राह्मणों को उस यज्ञ में उत्तमोत्तम अन्न, वस्त्र, गृह, शय्या, आसन और विविध भाँति के वाहन दे कर, उनका सम्मान किया गया था। नटों, नर्तकों, वेश्याओं और गवैयों ने नाच कर, गा कर और बाजे बजा कर समागत अतिथियों का मनोरञ्जन किया था। पौरव ने प्रत्येक यज्ञ में यथासमय ब्राह्मणों को मन खोल कर दक्षिणा दी थी। ऋत्विजों को छोड़, अन्य समा-

गत आचार्यों को भी उस राजा ने, उनकी इच्छानुसार दस सहस्र गज, दस सहस्र सुवर्ण के भूषणों से भूषित सुन्दरी स्त्रियाँ, दस हज़ार सुवर्ण की ध्वजा पताकाओं से भूषित रथ, दान में दिये थे। फिर सुवर्ण के आभूषणों से भूषित एक लच कन्याएँ, हाथियों, घोड़ों और रथों पर सवार करा, दान में दी थीं। उन्हें घर, खेत और सैकड़ों गौएँ भी दान में दी थीं। सोने की हमेलें पहिने हुए और सोने के पत्रों से मढ़े हुए सींगों वाली तथा चाँदी के पत्रों से मढ़े खुरों वाली लाखों सवत्सा गौएँ उसने मय काँसे की दुधेड़ियों के दान की थीं। इनके अतिरिक्त उसने बहुत से दासी, दास, खच्चर, ऊँट, बकरे तथा भाँति भाँति के रत्न और अन्न के पर्वत उस यज्ञ में दान किये थे। पौराणिक जन अभी उस राजा का यश गाया करते हैं। यज्ञकर्त्ता राजा अंगराज पौरव के समस्त यज्ञ शास्त्रोक्त विधि से हुए थे। वे यज्ञ शुभसूचक गुणशाली और सब की समस्त मनोकामनाओं को पूर्ण करने वाले थे।

व्यास जी बोले—हे युधिष्ठिर! नारद जी ने राजा सृञ्जय से इस प्रकार कह कर फिर कहा—हे श्वैत्यपुत्र! वे राजर्षि पौरव, दान युक्त धन में, गर्वरहित ज्ञान में, क्षमायुक्त शूरता में और आसक्ति रहित भोग में तुमसे और तुम्हारे पुत्र से श्रेष्ठतर और पुण्यवान् थे। हे सृञ्जय! वे अङ्गराज पौरव भी जब मर गये, तब यज्ञादि कर्मानुष्ठान शून्य अपने पुत्र के मरने का शोक तुम मत करो।

अट्ठावनवाँ अध्याय

राजा शिवि का उपाख्यान

नारद जी बोले—हे सृञ्जय! मैंने सुना है कि, उशीनर के पुत्र राजा शिवि को भी मृत्यु के वशवर्त्ती होना पड़ा था। राजा शिवि ने समुद्र, पर्वत, वन और द्वीपों सहित इस समस्त भूमण्डल को अपने रथघोष से प्रतिध्वनित किया था और चमड़े की तरह अपने रथचक्र से उसे लपेट लिया था।

राजा शिवि ने अपने मुख्य मुख्य शत्रुओं को जीत कर, सर्वविजित की उपाधि प्राप्त की थी। उन्होंने पूर्ण दक्षिणा प्रदान कर, विविध यज्ञों का अनुष्ठान किया था। उस लक्ष्मीवान् पराक्रमी राजा ने बहुत सा धन पा कर, ब्राह्मणों को दान दिये थे और युद्धविद्या में भी सब राजाओं ने उसका लोहा माना था। उसने निष्कण्टक इस भूमण्डल को विजय कर, अनेक अश्वमेध यज्ञों का निर्विघ्न अनुष्ठान किया था। उसने दान में सहस्र कोटि अशर्फियाँ ब्राह्मणों को दी थीं। इनके अतिरिक्त उसने हाथी, घोड़े, दास, गौ, बकरी और भेड़े भी दान में दी थीं। जलवृष्टि के समय जितने जलबिन्दु गिरते हैं, अथवा आकाश में जितने तारे देख पड़ते हैं, गङ्गा की बालू में जितने रजकण देख पड़ते हैं अथवा पर्वतों में जितने प्रस्तरखण्ड हैं अथवा सागर में जितने रत्न तथा जीवजन्तु रहते हैं, राजा शिवि ने अपने यज्ञ में उतनी ही गौएँ दान की थीं। दक्षप्रजापति को छोड़ कर अन्य किसी राजा ने भी उसके समान यज्ञ न किया न कोई कर सकता है और न कर सकेगा। उसने समस्त कामनाओं को पूर्ण करने वाले विविध भाँति के यज्ञ किये थे। उन यज्ञों में गृह, आसन, यज्ञीय पात्र, तोरण, पताका आदि सुवर्ण के बनवाये गये थे। खाने पीने के समस्त पदार्थ बड़ी पवित्रता से और स्वादिष्ट बनाये जाते थे। दही, दूध, घी के बड़े बड़े तालाब बने हुए थे जिनमें से इनकी नदियाँ बहती थीं। उत्तम अन्नों के पहाड़ जैसे ऊँचे ढेर लगे हुए थे। इस राजा के यज्ञ में सब से यही कहा जाता था कि, आइये, स्नान कीजिये, मनमाना खाइये, पीजिये। उस दानी राजा के पुण्यकर्मों से प्रसन्न हो, शिव जी ने उसे यह वर दिया था कि, तू चाहे जितना दान करना, तो भी तेरा धनागार ख़ाली न होगा। तेरी श्रद्धा, कीर्ति और सत्कर्म में प्रवृत्त बुद्धि अक्षय बनी रहेगी। तेरे कथनानुसार प्राणी मात्र तेरे ऊपर प्रीति करेंगे और तुझे उत्तम स्वर्ग मिलेगा। इन इच्छित वरों को पा कर, राजा शिवि समय आते ही परलोकवासी हो गए। हे सञ्जय! जब ऐसा राजा भी मृत्यु को प्राप्त हो गया, तब यज्ञ एवं दक्षिणा से रहित अपने पुत्र के लिये तुम शोक क्यों करते हो?

उनसठवाँ अध्याय

दशरथनन्दन श्रीराम का उपाख्यान

नारद जी बोले—हे सञ्जय ! सुनते हैं प्रजा को पुत्रवत् मानने वाले, दशरथनन्दन श्रीराम भी परलोकवासी हो गये। उन अमित पराक्रमी श्री रामचन्द्र में असंख्य गुण थे। वे दृढ़ प्रतिज्ञ श्रीराम अपने पिता के आदेशानुसार अपनी भार्या सीता और अनुज लक्ष्मण सहित चौदह वर्षों तक वन में रहे थे। उन पुरुषश्रेष्ठ ने तपस्वियों की रक्षा के लिये जनस्थानवासी चौदह हज़ार राक्षसों का अकेले ही नाश किया था। तब इनको और इनके भाई को धोखा देकर, रावण नामक राक्षस इनकी भार्या को हर कर ले गया था। इस पर श्रीरामचन्द्र क्रुद्ध हुए और पूर्व काल में जैसे देव दानवों से अवध्य एवं देवताओं तथा ब्राह्मणों को काँटे की तरह दुःखदायी अन्धकासुर को महादेव जी ने मारा था, वैसे ही सुरासुर से अवध्य तथा देवताओं और ब्राह्मणों को दुःख देने वाले तथा शत्रुओं से अजेय, रावण को श्रीराम ने मारा था। महाबाहु श्रीराम ने, प्रजाजनों पर अनुग्रह कर, जब रावण को मार डाला, तब देवताओं ने उनकी प्रशंसा की थी। उनकी कीर्ति दिगन्तव्यापिनी थी। देवता और ऋषि तक उनके प्रति सम्मान प्रदर्शित करते थे। वे एक बड़े राज्य के अधीश्वर हो कर भी समस्त प्राणियों पर दया करते थे। धर्मपूर्वक प्रजापालन के कार्य में रत श्रीरामचन्द्र ने कई बार लगातार *आरूथक कर्म करके अश्वमेध यज्ञ किया था और हवि से इन्द्र को सन्तुष्ट किया था। इसके अतिरिक्त श्रीराम ने अनेक और विविध फलप्रद यज्ञानुष्ठान कर, परमात्मा का पूजन किया था। श्रीराम ने भूख और प्यास को अपने वश में कर लिया था तथा उनके राज्य में कोई भी जन रोगी नहीं था। वे स्वयं गुणवान् थे और निज तेज से प्रदीप्त रहते थे। उनके राज्यकाल में प्राणियों के आयु,

* दक्षिणायन काल में तीन बार यूप का पूजन किया जाता है। उसीको आरूथक कर्म कहते हैं।

अपान, समान, व्यान आदि प्राणवायु रोगादि से विकार युक्त हो, क्षीण नहीं होते थे। वे अपने उत्तम गुणों से तथा तेज से प्रकाशित हो, समस्त प्राणियों के तेज को अतिक्रम कर, शोभित हुए थे। उनके राज्यकाल में कहीं भी अनर्थ होने नहीं पाते थे। उनकी प्रजा दीर्घायु होती थी। युवावस्था में कोई मरता ही न था। वेदोक्त विधियों से दिये हुए हव्य कव्य को स्वर्गस्थित देवता और पितृगण हर्षित हो, ग्रहण करते थे। तालाब खुदाना, बाग लगवाना, हवन करना आदि पुण्यकर्मों का फल देवगण देते थे। उनके राज्य काल में डाँस, मच्छड़ और विषैले सर्पों का नाश हो गया था। उनके राज्य में न तो कोई पानी में डूबता था और न अग्नि में जल कर कोई मरता था। उनके समय में अधर्मरत, लोभी, अथवा मूर्ख कोई नहीं था। चारों वर्णों के लोग बड़े शिष्ट और बुद्धिमान् थे। वे सब यज्ञानुष्ठान में सदा रत रहते थे। जनस्थान-वासी जिन राक्षसों ने स्वाहा स्वधा रूपी देव-पितृ-पूजन बंद कर दिया था, उनको नष्ट कर, उन्होंने पुनः देव-पितृ पूजन जारी करवाया था। उस समय एक एक मनुष्य के एक एक हज़ार पुत्र होते थे और उनकी आयु भी सहस्र सहस्र वर्षों की होती थी। उस समय बड़ों को छोटों के श्राद्ध नहीं करने पड़ते थे। श्यामवर्ण, रक्त-नयन, मदोन्मत्त गज की तरह पराक्रमी, आजानुबाहु और सुन्दर भुजाओं वाले, सिंह जैसे कंधों वाले तथा प्रियदर्शन श्रीराम ने ग्यारह सहस्र वर्षों तक राज्य किया था। उनकी प्रजा राम ही राम रटा करती थी। उनके राज्य में सारा जगत् सौन्दर्यमय हो गया था। अन्त में श्रीराम जी अपने तीनों भ्राताओं के अँशरूप दो दो पुत्रों के द्वारा आठ राजवंशों को इस अव-नीतल पर स्थापित कर, चारों वर्णों की प्रजा को सदेह अपने साथ ले स्वर्ग को सिधारे थे।

यह कह नारद जी बोले—हे सृञ्जय! सब प्रकार से तुम्हारे पुत्र से श्रेष्ठ और पुण्यात्मा वे श्रीराम जी भी जब न रहे, तब तुम यज्ञ एवं दक्षिणाहीन अपने पुत्र के लिये शोक क्यों करते हो?

साठवाँ अध्याय

राजा भगीरथ का उपाख्यान

नारद जी कहने लगे—हे राजन् ! सुनते हैं-राजा भगीरथ को भी यह संसार छोड़ना पड़ा। राजा भगीरथ ऐसे प्रतापी थे कि, उन्होंने श्रीगङ्गा जी के उभय तट सुवर्ण की ईंटों से चिनवा दिये थे।

[नोट—यह वर्णन करने की काव्यमयी शैली है। इसका वास्तविक अभिप्राय यह है कि, भगीरथ ने गङ्गा के उभय तट पर ऐसे नगर बसा दिये थे जो धन धान्य से भरे पूरे थे। इसी प्रकार अन्यत्र भी जहाँ इस प्रकार के वर्णन आये हैं, पढ़ने वालों को उनका इसी प्रकार का अर्थ समझ लेना चाहिये।]

राजा भगीरथ ने राजाओं और राजपुत्रों की कुछ भी परवाह न कर, सुवर्ण के आभूषणों से भूषित एक लच कन्याएँ ब्राह्मणों को दान की थीं। वे सब कन्याएँ रथों पर सवार थीं। उनके प्रत्येक रथ में चार चार घोड़े जुते हुए थे और प्रत्येक रथ के पीछे सोने की हमेलें पहिने हुए सौ सौ हाथी चलते थे। प्रत्येक हाथी के पीछे हज़ार हज़ार घोड़े थे और प्रत्येक घोड़े के पीछे सौ सौ गौएँ और प्रत्येक गौ के पीछे अगणित भेंड़े और बकरियाँ थीं।

[नोट—अब लोगों को इन वर्णनों को पढ़ देश की वर्तमान हीन आर्थिक दशा को देख, इन वर्णनों पर विश्वास होना कठिन है और वे इन्हें कवि-कल्पना-प्रसूत वर्णन समझे बिना नहीं रहेंगे; किन्तु वास्तव में प्राचीन काल में इस देश में अपार सम्पत्ति थी। अतः उस समय के राजा दान दे कर, उस सम्पत्ति का सदुपयोग करते थे और अपनी प्रजा को इस प्रकार सम्पत्तिशाली बनाया करते थे।]

राजा भगीरथ ने इस प्रकार श्रीगङ्गा जी के तट पर स्थित हो, यज्ञ-काल में दक्षिणा दी थी। उस समय उनके यज्ञ में इतने लोग एकत्र हुए थे कि, उनके भार से पीड़ित भागीरथी गङ्गा व्यथित हो पातालगामिनी'

हुई। फिर जल रूपी प्रवाह से बह कर, वे भगीरथ की गोद में आ बैठीं। जिस स्थान पर गङ्गा जी राजा भगीरथ की गोदी में आ बैठी थीं, उसका नाम उर्वशी तीर्थ पड़ा। इन्हीं गङ्गा ने राजा भगीरथ के पूर्वजों का उद्धार किया था, अतः वे उस राजा के पुत्र और पुत्रीपन को प्राप्त हुई। इसीसे सूर्य समान तेजस्वी एवं प्रियभाषी गन्धर्वों ने प्रसन्न हो कर, देवताओं, पितरों और मनुष्यों को सुनाते हुए निम्न गाथा गायी थी। समुद्रगा गङ्गा देवी ने विपुल-दक्षिणा दाता इक्ष्वाकु-कुलोत्पन्न राजा भगीरथ को पिता कह कर पुकारा था। राजा भगीरथ के यज्ञ में इन्द्रादि देवताओं ने पधार कर, यज्ञ की शोभा बढ़ायी थी और प्रसन्न हो, यज्ञभाग ग्रहण किये थे। उनके यज्ञ में किसी प्रकार का विघ्न नहीं पड़ा था। अतः उनका यज्ञ निर्विघ्न सुसम्पन्न हुआ था। जिस ब्राह्मण ने जो वस्तु माँगी, इस यज्ञ में, उसे वही वस्तु मिली। सो भी राजा ने प्रसन्नता पूर्वक दे दी। जो वस्तु जिस ब्राह्मण को प्रिय थी, वही उसे मिल जाती थी। यही कारण था कि, ब्राह्मणों के अनुग्रह से राजा भगीरथ को ब्रह्मलोक प्राप्त हुआ। सूर्य और चन्द्रमा जिस मार्ग से चला फिरा करते हैं, उस मार्ग से जाने की इच्छा, यदि किसी भूतलवासी की हो, तो उसे समस्त-विद्या-विशारद एवं परमतेजस्वी राजा भगीरथ का अनुकरण करना चाहिये।

हे सृञ्जय! जब राजा भगीरथ भी जो दान यज्ञादि में बहुत बढ़ बढ़ कर था—इस भवतल पर नहीं रहा और मर गया, तो हे श्वैत्यपुत्र! तुम यज्ञ-दक्षिणा-रहित अपने पुत्र के लिये शोक मत करो।

इकसठवाँ अध्याय

राजा दिलीप का उपाख्यान

नारद जी बोले—हे सृञ्जय! सुनते हैं इलविला का पुत्र बड़ा राजा दिलीप भी मर गया, जिसके सैकड़ों यज्ञों में लाखों करोड़ों ब्राह्मण सम्मि-

लित हुए थे। उसके यज्ञ में सम्मिलित होने वाले ब्राह्मण तत्वज्ञ, यज्ञ की विधि जानने वाले तथा सन्तानवान थे। बड़े बड़े यज्ञों का अनुष्ठान करते समय राजा दिलीप ने धन धान्य से पूर्ण यह पृथिवी ब्राह्मणों को दान में दे डाली थी। राजा दिलीप के यज्ञस्थल की सड़कें सुवर्ण की बनवायी गयी थीं। इन्द्रादि देवता राजा दिलीप को क्रीड़ा की वस्तु और उसकी यज्ञवेदी तथा यज्ञभूमि को मानों क्रीड़ा का स्थान समझ कर वहाँ (बड़े चाव से) आते थे। उसके यज्ञस्थल में पर्वत जैसे विशाल डीलडौल के सहस्र हाथी घूमा फिरा करते थे और उसका सभास्थल शुद्ध सोने का बना हुआ था और दमक रहा था। उसके यज्ञ में रसों की नदियाँ बहती थीं और अन्न के पहाड़ लगे हुए थे। उसके यज्ञस्तूपों की गुटाई इतनी थी कि वे सहस्र मनुष्य की कौलियों में समा सकते थे और वे सब सोने के थे। यज्ञस्तम्भों के चषाल और प्रचषाल सब सोने के थे और उसके यज्ञस्थल में छः हज़ार अप्सराएँ, सात प्रकार से नाचा करती थीं। विश्वावसु हर्षित हो स्वयं वीणा बजाता था। राजा दिलीप को सब लोग सत्यवादी कहा करते थे। उसके यज्ञ में रागखाण्डव (नशीली मिठाई विशेष आदि) खा कर प्रमत्त हुए लोग, बेहोश हो सड़कों पर सोया करते थे। उस राजा में एक विशेषता और थी, जो अन्य राजाओं में मिलनी असम्भव है। वह यह कि, जल में, युद्ध करने के समय उसके रथ के पहिये पानी में नहीं डूबते थे। सत्यवादी, दृढ़धन्वा, विपुल दक्षिणा देने वाले राजा दिलीप का जो लोग दर्शन मात्र कर लेते थे, वे मरने बाद स्वर्ग में जाते थे। राजा खट्वाङ्ग*के भवन में पाँच शब्द कभी बंद नहीं होते थे। अर्थात् वेदाध्ययन का स्वर, धनुष की टंकार, भोजन करो, रस पीओ, भोज्य पदार्थों को खाओ।

हे सञ्जय! दान, यज्ञ आदि धर्मकार्यों में तुम्हारे पुत्र से चढ़ बढ़ कर जब राजा दिलीप भी मर गया; तब यज्ञ करने और दक्षिणा देने से शून्य अपने पुत्र के शोक से तुम सन्तप्त मत हो।

* राजा दिलीप का अपर नाम।

बासठवाँ अध्याय

राजा मान्धाता का उपाख्यान

नारद जी बोले—सुनते हैं राजा मान्धाता भी मर गया। इस विजयी राजा ने क्या देवता, क्या मनुष्य और क्या दैत्य सब को जीत लिया था। इस राजा ने तीनों लोक अपने अधीन कर लिये थे। अश्विनीकुमारों ने मान्धाता को उसके पिता के उदर से बाहर किया था।

राजा मान्धाता के पिता का नाम युवनाश्व था। एक दिन वह शिकार खेलने बन में गया हुआ था। वहाँ उसका घोड़ा थक गया और उसे प्यास लगी। इतने में उसने कुछ दूर पर यज्ञीय धूम देखा। वह धूम को देख यज्ञस्थान में गया और वहाँ जा उसने वहाँ रखे हुए पृषदाज्य (घी दुग्ध) को पी लिया। इससे उसके उदर में गर्भ स्थापित हो गया। तब अश्विनीकुमारों ने राजा का उदर चीर कर बालक निकाला। देवताओं जैसी कान्ति वाले बालक को पिता की गोद में पड़ा देख, देवगण आपस में कहने लगे—यह बालक किसका स्तनपान करेगा। उस समय इन्द्र बोले—यह मेरा दूध पीवेगा और यह कह उन्होंने उस बालक के मुख में अपनी उंगली दे दी। इन्द्र ने दयावश कहा था "माँ धास्यति" अर्थात् मुझको पीवेगा यानी मेरा दूध पीवेगा, इसीसे उस बालक का मान्धाता नाम पड़ा। इन्द्र की उङ्गली से बालक के मुख में घी और दूध टपकने लगा। अतः वह बालक एक ही दिन में बड़ा हो गया। दूध पीते पीते वह बारह दिन में बारह वर्ष जैसा हो गया। इस वीर्यवान राजा मान्धाता ने एक ही दिन में समस्त भूमण्डल को जीता था। धर्मात्मा, धैर्यवान्, वीर, सत्यप्रतिज्ञ मानव जाति के राजा मान्धाता ने, जनमेजय, सुधन्वा, गय, पुरु, बृहद्रथ, असित तथा राजा नृग को परास्त किया था। उदयाचल से ले कर अस्ताचल तक का भूखण्ड, राजा मान्धाता के राज्य के अन्तर्गत था। राजा मान्धाता ने सौ अश्वमेध यज्ञ

भर के पकवान और सुवर्ण की खानों से युक्त, अन्य देशों की अपेक्षा उज्वल तथा चार सौ कोस लंबा मत्स्य देश ब्राह्मणों को दक्षिणा में दिया था। भिन्न भिन्न प्रकार के स्वादिष्ट भोज्य पदार्थों के पर्वताकार ढेर भी ब्राह्मणों को उसने दिये थे। लोग खाते खाते थक गये थे। किन्तु खाद्य पदार्थ नहीं निबटने में आते थे। यज्ञस्थल में जगह जगह अन्न के पर्वत देख पड़ते थे, घी के तालाब भरे थे। उन अन्न के पर्वतों के दाल भात की कीच से युक्त दही रूपी झाग वाली और गुड़ रूपी जल से पूर्ण तथा शहद और दुग्ध को बहाने वाली नदियों ने घेर रखा था। उसके यज्ञ में देवता, असुर, मनुष्य, यक्ष, गन्धर्व, सर्प और पक्षी तथा वेदपारग ब्राह्मण ऋषि सम्मिलित हुए थे। उसकी सभा में मूर्ख तो नाम मात्र के लिये भी कोई न था। धन धान्य से पूर्ण आसमुद्रान्त भूखण्ड ब्राह्मणों को अर्पण कर, वह मर गया। अपने यश को दिगन्तव्यापी कर, वह उन लोकों में गया, जिनमें पुण्यात्मा जन जाते हैं।

हे सृञ्जय! राजा मान्धाता दान सहित वित्त, अभिमान रहित दान, क्षमायुक्त पराक्रम और आसक्ति रहित भोग में अर्थात् इन चार प्रकार के श्रेष्ठ विषयों में श्रेष्ठ और बड़े पुण्यात्मा थे। वे भी जब काल के गाल में पतित हुए; तब तुम यज्ञ और दक्षिणा रहित अपने पुत्र के लिये शोक क्यों करते हो?

तिरसठवाँ अध्याय

राजा ययाति का उपाख्यान

नारद जी बोले—सुनते हैं राजा नहुष का पुत्र राजा ययाति भी पर-लोक सिधार गया। राजा ययाति ने सौ राजसूय, सौ अश्वमेध, सहस्र पुण्डरीक, सैकड़ों वाजपेय, सहस्र अतिरात्र यज्ञ, चातुर्मास्य यज्ञ तथा अग्निष्टोम

आदि विविध प्रकार के बहुत से प्रचुर दक्षिणा वाले यज्ञ किये थे। उसने इन यज्ञों में म्लेच्छों का समस्त धन छीन कर ब्राह्मणों को दे दिया था। नदियों में महापवित्र सरस्वती ने, समुद्रों ने तथा पर्वतों सहित अन्य नदियों ने भी राजा ययाति को घी दूध दिया था। देवताओं की तरह राजा ययाति ने देवासुर संग्राम के समय, देवताओं की सहायता कर के पृथिवी को विजय किया था।

तदनन्तर विविध प्रकार के यज्ञानुष्ठानों से परमात्मा की पूजा कर, पृथिवी के चार विभाग कर उन चारों विभागों को यथाक्रम, ऋत्विज, अध्वर्यु, होता और उद्गाता को बाँट दिया था। उसने शुक्राचार्य की कन्या देवयानी में तथा शर्मिष्ठा में श्रेष्ठ सन्तानें उत्पन्न किये थे और समस्त देववनों में इन्द्र की तरह उसने यथेच्छानुसार विहार किया था।

इस पर भी जब उसका मन शान्त न हुआ, तब वह निम्न गाथा गाता हुआ भार्या के साथ वो वन में चला गया। वह गाथा यह है कि पृथिवी पर जितना धन धान्य, सुवर्ण, पशु और स्त्रियाँ हैं; उन सब से एक भी मनुष्य तृप्त नहीं हो सकता। अर्थात् जितना मिलता है, उससे अधिक मिलने ही की प्रत्येक मनुष्य को चाहना होती है।

राजा ययाति इस प्रकार कामनाओं को त्याग कर और धैर्य के साथ अपने पुत्र पुरु को राजगद्दी पर स्थापित कर, वन को चल दिया था।

हे सञ्जय! तेरे पुत्र से चारों—बातों में श्रेष्ठतर और अधिक पुण्यवान् वह राजा ययाति भी जब मर गया, तब हे श्वित्यपुत्र! तू यज्ञ न करने वाले और दक्षिणा न देने वाले पुत्र के लिये शोक-सन्तप्त क्यों होता है?

चौसठवाँ अध्याय

राजा अम्बरीष की कथा

नारद जी बोले—सुनते हैं, नाभाग का पुत्र राजा अम्बरीष को भी यह संसार त्याग कर, परलोक गमन करना पड़ा। राजा अम्बरीष ऐसा वीर था कि, वह अकेला ही एक लक्ष योद्धाओं से लड़ा था। संग्राम में राजा अम्बरीष को जीतने की इच्छा से अस्त्र-विद्या-विशारद चतुर शत्रुओं ने कुवाच्य कह कर, उसको चारों ओर से घेरा था। उस समय उसने निज बल, वीर्य, हस्त-लाघव और रणकौशल एवं अस्त्रबल से शत्रुओं के छत्रों, आयुधों, ध्वजाओं और रथों के खण्ड खण्ड कर के गिरा दिये थे। इतना कर के भी वह स्वयं घायल तक नहीं हुआ था। तब उसके सब वैरी कवच उतार कर और अभय दान माँगते हुए बोले, हम आपके शरण में आये हैं। इस प्रकार राजा अम्बरीष ने उनको जीत कर, इस भूमण्डल को अपने वश में कर लिया था। हे अनघ! उसने शास्त्रोक्त विधि से शत यज्ञ कर ईश्वरपूजन किया था। उन यज्ञों में बड़े बड़े ब्राह्मण तथा अन्य पुरुष भी षट्रस भोजन कर, आनन्दित हुए थे। राजा ने उन लोगों का बड़ा सत्कार किया था। उसके यज्ञ में ब्राह्मण लोग, लड्डू, पूरी, गुलगुले, मालपुआ, दधि मिश्रित सत्तू, कालाजीरा मिले सुगन्धि और स्वादिष्ट अन्य अन्न के पकवान, दाल, सूप, रागखाण्डव, पालक आदि तथा मीठे फल मूलादि खा कर प्रसन्न हुए थे। सहस्रों पुरुष अपनी इच्छानुसार आनन्द से विविध प्रकार के उत्तम नशीले आसव और ठंडाइयाँ पी पी कर, नशे में चूर हो तथा प्रसन्न हो, नाभागनन्दन अम्बरीष की प्रशंसा कर, नाचते थे। यद्यपि मद्य खाना वे पापकर्म समझते थे, तदापि वे मादक द्रव्यों के आस्वादन के लोभ को रोक नहीं सकते थे।

राजा अम्बरीष ने अपने यज्ञों में दस प्रयुत यज्ञ कराने वाले ब्राह्मणों को दस लाख माण्डलिक राजाओं के राज्य, दक्षिणा में दिये थे। वे राजा

लोग सुवर्ण कवचधारी थे। उनके मस्तक पर श्वेत छत्र ताने जाते थे और सोने के रथों पर वे सवार होते थे। वे युद्ध की सामग्री से सम्पन्न थे तथा उनके साथ अनुचर वर्ग रहते थे। राजा अम्बरीष ने राजवंश, राजदण्ड और राजकोष सहित उन समस्त राजाओं को दक्षिणा में ब्राह्मणों को दे डाला था। उस समय महर्षियों ने अम्बरीष पर प्रसन्न हो कहा था—कि राजा अम्बरीष ने विपुल दक्षिणा वाले जैसे यज्ञ किये हैं, वैसे यज्ञ इनके पूर्व अन्य किसी ने भी नहीं किये थे और न आगे ही कोई करेगा।

व्यास मुनि बोले, नारद जी ने यह कथा कह, श्वित्यपुत्र सृञ्जय से कहा कि, जब अम्बरीष भी मर गये, जो तुम्हारे पुत्र से चारों बातों में श्रेष्ठ थे, तब तुम अपने उस पुत्र के लिये जो यज्ञ और दक्षिणा दान से रहित था, शोक क्यों करते हो?

पैंसठवाँ अध्याय

राजा शशबिन्दु का उपाख्यान

नारद जी बोले—हे सृञ्जय! वह राजा शशबिन्दु भी परलोक सिधार गया, जिसके विषय में सुना जाता है कि, उसने बहुत से यज्ञ कर, परमेश्वर का पूजन किया था?

राजा शशबिन्दु के एक लाख रानियाँ थीं और प्रत्येक रानी के एक सहस्र पुत्र थे। वे सब राजकुमार महापराक्रमी, सहस्र यज्ञ करने वाले, वेदवेदाङ्ग पारग, सुवर्ण कवचधारी, श्रेष्ठ धनुषधारी और अश्वमेध यज्ञ करने वाले थे। राजा शशबिन्दु ने अश्वमेध यज्ञ में अपने सब पुत्र दान कर, ब्राह्मणों को दे डाले थे। उन राजकुमारों में से प्रत्येक राजकुमार के साथ सौ रथ और सौ हाथी चला करते थे। प्रत्येक राजकुमार के साथ सुवर्ण के भूषणों से भूषित सौ कन्याएँ थीं और प्रत्येक कन्या के साथ सौ हाथी और प्रत्येक हाथी

के पीछे सौ रथ थे। प्रत्येक घोड़े के साथ एक सहस्र गौएँ थीं और प्रत्येक गौ के साथ पचास भेंड़ें थीं।

महाभाग शशबिन्दु ने अश्वमेध यज्ञ में इतना धन देकर भी अपने मन में समझा कि, दान कम दिया गया है। उस यज्ञ में जितने लकड़ी के यज्ञस्तूप थे, उतने ही सोने के यज्ञस्तम्भ बनवाये गये थे। यज्ञभूमि में एक एक कोस ऊँचे खाद्य और पेय पदार्थों के ढेर लगे हुए थे। यज्ञ जब हो चुका, तब उन ढेरों में से तेरह ढेर ज्यों के त्यों बच रहे थे। हृष्ट, पुष्ट, सन्तुष्ट और निरोग पुरुषों से भरी पूरी पृथिवी पर शशबिन्दु ने बहुत समय तक राज्य किया था। उनके राज्य में सदा शान्ति विराजमान रहती थी। अन्त में शशबिन्दु भी स्वर्ग को चला गया।

हे सञ्जय! जब ऐसा पुण्यात्मा राजा भी मर गया, जो तुम्हारे पुत्र से पूर्वोक्त चारों बातों में अधिक और श्रेष्ठ था, तब तुम अपने यज्ञानुष्ठान शून्य एवं दक्षिणादान से रहित पुत्र के लिये शोक मत करो।

छियासठवाँ अध्याय

राजा गय का उपाख्यान

नारद जी बोले—हे राजन! सुना है कि, अमूर्तरय का पुत्र राजा गय भी मृत्यु को प्राप्त हुआ। इसने सौ वर्ष पर्यन्त यज्ञ से बचे हुए अन्न का आहार कर, व्रत का पालन किया था। हवनशेष अन्न को खाने से अग्निदेव उस पर प्रसन्न हुए थे और उससे वर माँगने को कहा था। तब राजा गय ने यह वर माँगा था कि, मैं तप, व्रत, ब्रह्मचर्य, नियम और गुरु की सेवा से वेद के तत्त्व को जानना चाहता हूँ। मैं किसी की हत्या किये या सताये बिना ही धर्मानुसार अक्षय्य धन प्राप्त करना चाहता हूँ। मैं चाहता हूँ मुझमें सदा ब्राह्मणों को दान देने की श्रद्धा बनी रहे। मैं अपनी भार्या ही से पुत्रोत्पादन

करूँ। मैं श्रद्धा पूर्वक सदा अन्नदान किया करूँ। धर्म में सदा मेरी प्रीति बनी रहे। हे अग्ने! मैं एक वर और चाहता हूँ। वह यह कि, मेरे श्रेष्ठ कर्मों के सुसम्पन्न होने में कभी विघ्न न पड़े।

इस पर अग्निदेव बोले—अच्छा ऐसा ही होगा। यह कह अग्निदेव अन्तर्धान हो गये। राजा गय ने इस प्रकार वरदान पा कर धर्मतः शत्रुओं को जीता था। वे सौ वर्षों तक दर्शपौर्णमास से आग्रायण चातुर्मास्य आदि प्रचुर दक्षिणा वाले यज्ञों द्वारा परमात्मा की श्रद्धापूर्वक अर्चना करते रहे। राजा गय सौ वर्षों तक नित्य सवेरे उठ, एक लाख छः अयुत गौएँ, दस हज़ार घोड़े और एक लक्ष मोहरें, दान में दिया करते थे। प्रत्येक नक्षत्र में जो वस्तुएँ दान देनी चाहिये; राजा गय ने वे सब वस्तुएँ दान में दी थीं। उसने सोम तथा अंगिरा की तरह अनेक यज्ञ किये थे। उस राजा ने अश्वमेध महायज्ञ में मणियों का चूरा बिछा और सोना जड़वा कर भूमि ब्राह्मणों को दान की थी। राजा गय के यज्ञ में सुवर्ण के स्तम्भों पर रत्न जड़े हुए वस्त्र टँगे थे, जिन्हें देख सब देखने वाले हर्षित होते थे। महायज्ञ में प्रसन्न हुए ब्राह्मणों को तथा समस्त मनुष्यों को भी राजा गय ने सब कामनाएँ पूरी करने वाला श्रेष्ठ भोजन करवाया था। समुद्र, नदी, वन, द्वीप, नगर, राष्ट्र तथा आकाश और स्वर्ग में रहने वाले प्राणी गय की सम्पत्ति से सन्तुष्ट हो कहते थे, गय के यज्ञ जैसा अन्य कोई यज्ञ नहीं हुआ। यज्ञ करने वाले राजा गय ने मुक्ता और हीरों से जड़ी हुई छत्तीस योजन चौड़ी, तीस योजन लंबी और पूर्व पश्चिम की ओर चौबीस योजन लंबी सोने की बनी यज्ञवेदी ब्राह्मणों को दी थी। इसके अतिरिक्त अनेक वस्त्र और आभूषण भी दिये थे। उसने शास्त्रोक्त अनेक दक्षिणाएँ ब्राह्मणों को दी थीं। यज्ञ समाप्त होने पर, अन्न के पच्चीस ढेर बचे थे। इस यज्ञ के समय रसों की छोटी बड़ी अनेक नदियाँ बह रही थीं और वस्त्रों, आभूषणों तथा सुगन्धित पदार्थों के ढेर लग रहे थे। इन कर्मों के प्रभाव से राजा गय तीनों लोकों में प्रसिद्ध हो गया था। उसका स्मारक वट वृक्ष और पवित्र ब्रह्म सरोवर तीनों

लोकों में विख्यात हैं। हे सृञ्जय ! जब ऐसा दानी राजा भी मर गया ; तब उससे चारों बातों में कम और यज्ञानुष्ठान रहित तथा दक्षिणा दान से शून्य अपने पुत्र के लिये तुम शोक मत करो।

सरसठवाँ अध्याय

राजा रन्तिदेव का उपाख्यान

नारद जी ने कहा—सुनते हैं कि, संस्कृति का पुत्र रन्तिदेव भी मर गया। उसके यहाँ दो लाख ब्राह्मण तो रसोई बनाया करते थे।

[नोट—इस लेख से जान पड़ता है कि ब्राह्मण लोग रसोइये का काम बहुत प्राचीन काल से करते चले आते हैं।]

ये रसोइये घर पर आये हुए अतिथि ब्राह्मणों को रात दिन अमृत तुल्य स्वादिष्ट पदार्थ खिलाया करते थे। रन्तिदेव ने न्यायोपार्जित द्रव्य ब्राह्मणों को अर्पित कर दिया था और यथाविधि वेदाध्ययन किया था और अपने शत्रुओं को परास्त कर, उन्हें अपने वश में कर लिया था। शास्त्रोक्त विधि से यज्ञ करने वाले संसितव्रत राजा रन्तिदेव के पास स्वर्गगमन की इच्छा से अनेक पशु अपने आप चले आते थे।

[नोट—शास्त्रमतानुसार यज्ञ में जिन पशुओं का बलिदान दिया जाता है, वे पशुयोनि में उत्पन्न जीव पशु शरीर से छूट स्वर्ग जाते हैं।]

उनके अग्निहोत्र के शाला रूपी रसोईघर में यज्ञीय पशुओं के चर्मों का इतना ढेर था कि उससे रस की धारा से युक्त एक नदी निकली, जो चर्मण्वती के नाम से विख्यात है। रन्तिदेव ने अपने सामर्थ्य के अनुसार ब्राह्मणों को अनेक निष्क (सुवर्ण मुद्रा विशेष) दिये थे। लो सुवर्ण मुद्रा लो, ऐसा कहते हुए राजा रन्तिदेव ब्राह्मणों को लाखों निष्क नित्य देते। करोड़ों निष्क दान दे डालने पर भी वे कहते अब तो बहुत थोड़े निष्क दान किये हैं और बारबार सहस्रों ब्राह्मणों को निष्कों का

दान करते थे। उतना दान तो मनुष्य अपनी सारी ज़िन्दगानी में भी नहीं दे सकता। जब कभी रन्तिदेव को दान देने के लिये ब्राह्मण नहीं मिलता था, तब इसे वे अपने लिये घोर विपत्ति समझते थे। अतः वे दान देने में कभी कुण्ठित नहीं होते थे। प्रत्येक पक्ष में सौ वर्षों तक राजा रन्तिदेव ने सुवर्ण के आभूषणों से भूषित सौ गौ दान में दी थीं। इन गौओं के साथ सुवर्ण के आभूषणों से भूषित एक एक सहस्र बैल भी होते थे। वे ऋषियों को अग्निहोत्र तथा यज्ञोपयोगी समस्त सामान दान कर के देते थे। इसके अतिरिक्त वे ऋषियों को कमण्डलु, घड़े, थाली, लोटे, पलँग, आसन, सवारी, महल, घर, विविध प्रकार के वृक्ष, अन्न, धन आदि विविध वस्तुएँ भी दिया करते थे। इस धीमान राजा रन्तिदेव की सब वस्तुएँ सुवर्ण ही की थीं। पुराणवेत्ता लोग रन्तिदेव की अलौकिक समृद्धि को देख, उसके विषय में यह गाथा कहा करते थे—इतना धन तो हमने कुबेर के धनागार में भी नहीं देखा—फिर मनुष्यों के पास तो रन्तिदेव जितना धन हो ही कहाँ से सकता है। रन्तिदेव के भवनों को देख और विस्मित हो लोग कहते थे—इस राजा के घर तो सचमुच सब सोने ही के हैं। राजा रन्तिदेव के घर में एक रात एक अतिथि रहे थे। उनका इक्कीस सहस्र बैलों से सत्कार किया गया था। मणि खचित कुण्डलों को धारण किये हुए रसोइये चिल्ला चिल्ला कर कहते थे—आज जैसा माँस पहले कभी नहीं बना, अतः इच्छित हो तुम माँस खूब खाओ। राजा रन्तिदेव के घर में जितना सुवर्ण था, वह सब उसने यज्ञ करने पर ब्राह्मणों को दे डाला था। उसके दिये हुए हवि को देवता प्रत्यक्ष ग्रहण करते थे। इसी प्रकार पितर प्रत्यक्ष हो कव्य लेते थे। श्रेष्ठ ब्राह्मणों की समस्त कामनाएँ रन्तिदेव द्वारा पूरी होती थीं।

हे सृञ्जय! जो रन्तिदेव तुम्हारे पुत्र से चारों बातों में श्रेष्ठ था, वह रन्तिदेव भी मर गया। वह तो तुम्हारे पुत्र से पुण्यकर्मों में कहीं अधिक बढ़ा चढ़ा था, अतः तुम्हें अपने यज्ञानुष्ठान और दक्षिणा दान से रहित पुत्र के लिये शोक से सन्तप्त न होना चाहिये।

अड़सठवाँ अध्याय

राजा भरत की कथा

नारद जी बोले—हे सञ्जय! हमने सुना है कि, राजा दुष्यन्त का पुत्र राजा भरत भी तो परलोकगामी हो गया। उसने लड़कपन में वन में रहते समय ऐसे ऐसे काम किये थे, जिन्हें अन्य लोग नहीं कर सकते। वह ऐसा बलवान् था कि, नख-दाँत रूपी आयुधों वाले सफेद रङ्ग के बलवान् शेरों को पकड़ कर ध्वस्त कर डाला करता था और बाँध रखता था। अत्यन्त बलवान् व्याघ्रादि हिंस्र पशुओं को वह अनायास ही पकड़ लिया करता था। महाबली बनैले भैंसों को पकड़ कर वह घसीटा करता था। उसने सैकड़ों बलवान् मतवाले सिंह पकड़ कर मार डाले थे। वह बड़े बड़े खूँखार जीव जन्तु तथा मतवाले हाथियों के दाँतों को पकड़, उनके ऊपर सवार हो जाता था। वह ऐसा बली था कि, अपने प्राणों को सङ्कट में डाल, बड़े बड़े बलवान् चीतों और गैंड़े आदि हिंस्र पशुओं को पकड़ कर वृक्षों से बाँध कर खूब पीटता था और पीट पाट कर उन्हें छोड़ देता था। उसके ऐसे कर्मों को देख कर, वनवासी ब्राह्मणों ने उसका नाम सर्वदमन रखा था। माता उसे ऐसे कर्म करने से बहुत बरजती थी और कहती थी—हे वत्स! तू प्राणियों को मत सताया कर। इसी राजा भरत ने यमुना तट पर सौ, सरस्वती के तट पर तीन सौ और गङ्गा जी के तट पर चार सौ अश्वमेध यज्ञ किये थे। इन के अतिरिक्त उसने सहस्र अश्वमेध, सौ राजसूय महायज्ञ किये थे और उन यज्ञों में बहुत बहुत सी दक्षिणाएँ दी थीं। तदनन्तर उसने अग्निष्टोम, अतिरात्र, उक्थ्य, विश्वजित् और उत्तमोत्तम मंत्रों से रक्षित एक लक्ष वाजपेय यज्ञ किये थे। शकुन्तला के पुत्र ने इन समस्त यज्ञों में ब्राह्मणों को धन से तृप्त किया था। इस महायशस्वी भरत ने एक हज़ार पद्म के मूल्य का जाम्बूनद सुवर्ण कण्व मुनि को दिया था। उसका यज्ञस्तम्भ बहुत ऊँचा था और ठोस सुवर्ण का बनाया गया था। उसे ब्राह्मणों ने तथा इन्द्रादि

देवताओं ने खड़ा किया था। चक्रवर्ती महामना, शत्रुञ्जय और शत्रुओं से अजित राजा भरत ने सब प्रकार के मनोहर रत्नों से सुसज्जित और सुशोभित करोड़ों तथा लाखों घोड़े, हाथी, रथ, ऊँट, भेड़ें, बकरे, दास, दासी, धन, धान्य, गौ, सवत्सा दुधार गौ, ग्राम, घर, खेत तथा करोड़ों उढ़ौने और दस सहस्र अन्य वस्त्र दिये थे।

हे सञ्जय! तेरे पुत्र से चारों कर्मों में श्रेष्ठ और पुण्यात्मा राजा भरत भी जब चिरायु न हुआ, तब हे श्वित्यपुत्र! तुम यज्ञानुष्ठान विहीन, दान-शून्य अपने पुत्र के मरण के लिये दुःख क्यों करते हो?

उनहत्तरवाँ अध्याय

राजा पृथु की कथा

नारद जी बोले—हे सञ्जय! सुनते हैं, राजा वेनु का पुत्र पृथु भी, जिसका सम्राट् पद पर अभिषेक महर्षियों ने राजसूय यज्ञ में किया था, इस संसार में नहीं रहा। यह राजा सब की उपेक्षा कर, पृथिवीश्वर हुआ था। इसीसे सब ने उसका नाम पृथु रखा था। उसने सब लोगों की समस्त विघ्नों से रक्षा की थी, इसीसे वह क्षत्रिय कहला कर प्रसिद्ध हुआ था। वेणुनन्दन राजा पृथु को देख कर, प्रजाजनों ने कहा था—हम सब आप के अनुरक्त हैं; इसीसे उसका नाम राजा पड़ा था। पृथिवी ने राजा पृथु की समस्त कामनाएँ पूर्ण की थीं। अतः उसके राज्य काल में बिना जोते बोये ही पृथिवी से अन्न उत्पन्न होता था। गौएँ यथेच्छ दूध देती थीं, पुष्प के प्रत्येक दल से मधु टपकता था। यद्यपि कुश और दूब सुवर्ण के थे; तथापि वे बड़े कोमल एवं सुखस्पर्शी थे। अतः उसकी प्रजा के लोग कुश और दूब के बने हुए वस्त्र पहना करते थे और उन्हीं पर सोते भी थे। फल अमृतोपम, मीठे और स्वादिष्ट होते थे। प्रजाजन उन्हें खाते थे। उसके राज्य में भूखा कोई नहीं रहता था। मनुष्य नीरोग रहते थे और उनके समस्त मनोरथ

सफल होते थे। उनके लिये भय का कारण तो कहीं था ही नहीं। अतः वे वृक्षों के नीचे या गुफाओं में जहाँ चाहते वहाँ रहते थे। उस काल में देश या नगर विभाग नहीं था। अतः मनुष्य जहाँ चाहते वहाँ रहते थे। राजा पृथु जब जब समुद्र पर चलता, तब तब समुद्र का जल जम कर ठोस हो जाता था। पहाड़ हट कर उसे रास्ता देते थे। उसकी ध्वजा कहीं भी नहीं टूटी थी। सुखपूर्वक आसीन राजा पृथु के पास वनस्पति, पर्वत, देवता, असुर, मनुष्य, सर्प, महर्षि, राक्षस, गन्धर्व अप्सराएँ और पितरों ने आ कर, कहा था, आप ही चक्रवर्ती हैं, आप ही क्षत्रिय हैं, आप ही राजा हैं, आप ही हमारे रक्षक और पितृ स्थानीय हैं। हे महाराज! आप हमें वर दें कि, हम अन्त समय तक तृप्त और सुखी रहें।

यह सुन वेनपुत्र राजा पृथु ने कहा जैसा तुम चाहते हो वैसा ही होगा। तदनन्तर पृथु ने आजगव धनुष और अप्रतिम घोर शरों को ले पृथिवी से कहा—हे वसुन्धरे! तू तुरन्त आ कर इनके मुखों में दूध की धार छोड़। मैं प्रत्येक को उसकी पसंद का अन्न दूँगा। तेरा मङ्गल हो।

वसुन्धरा बोली—हे वीर! तुम मुझे कन्यारूप से स्वीकार करो। राजा पृथु ने कहा, तथास्तु। तदनन्तर उन समस्त लोगों ने पृथिवी को दुहना आरम्भ किया। प्रथम वनस्पति पृथिवी को दुहने को उद्यत हुए। किन्तु पृथिवी बछड़ा और दुहने वाले के बिना ज्यों की त्यों खड़ी रही। उस समय पुष्पित शाल वृक्ष बछड़ा बना और पलाश वृक्ष दुहने वाला बना। गूलर दूध का पात्र बना और तोड़ने से जो आँसुआ निकलते हैं, वही दूध हुआ। जब पर्वत पृथिवी को दुहने लगे, तब उदयाचल बछड़ा, पर्वतश्रेष्ठ सुमेरु दूध दुहने वाला, रत्न और समस्त औषधियाँ दूध हुआ। यह दूध पत्थररूपी पात्र में दुहा गया। जब इन्द्र ने पृथिवी को दुहा, तब देवता बछड़े बने और अमृत दूध हुआ। असुरों ने कच्चे पात्र में मायारूपी दूध दुहा। उस समय विरोचन बछड़ा बना। मनुष्यों ने पृथिवी से खेती का धान्यरूपी दुग्ध दुहा। उस समय स्वयम्भू मनु बछड़े बने और पृथु

दोग्धा बने। सर्पों ने तुम्बी रूपी पात्र में पृथिवी में से विषरूप दुग्ध दुहा। उसमें धृतराष्ट्र नामक सर्प दोग्धा था और तक्षक नाग बछड़ा बना था। श्रेष्ठकर्मा सप्तर्षियों ने ब्रह्मज्ञान रूपी दुग्ध दुहा। उस समय बृहस्पति दोग्धा, छन्दपात्र और सोमराट् बछड़ा बने थे। फिर विद्याधरों ने कुबेर को दोग्धा, वृषभध्वज को वत्स बना कर, कच्चेपात्र में अन्तर्धानरूपी दुग्ध दुहा। गन्धर्वों और अप्सराओं ने कमलरूपी पात्र में पवित्रगन्ध रूपी दुग्ध दुहा। उस समय चित्ररथ बछड़ा और प्रभु त्रिश्वरुचि दोग्धा बने। पितृगण ने चाँदी के पात्र में सूर्य को वत्स और यम को दोग्धा बना कर, पृथिवी से स्वधा रूपी दूध दुहा। इस प्रकार इन लोगों ने अपनी इच्छानुसार पृथिवी से दुग्ध दुहा था और अब भी वे उन वत्सों और उन पात्रों में नित्य दुग्ध दुहा करते हैं और आगे भी दुहते रहेंगे।

राजा वेन के प्रतापी पुत्र राजा पृथु ने इस प्रकार पृथिवी को दुह कर और विविध प्रकार के यज्ञ कर, प्राणियों की ईप्सित मनोकामनाएँ पूर्ण कर, उन सब को सन्तुष्ट किया था। इस राजा ने अपने राज्य की जो जो वस्तुएँ थीं, वे सब सुवर्ण से भूषित कर अश्वमेध यज्ञ में ब्राह्मणों को दान में दे डाली थीं। उसने साठ हज़ार छः सौ सोने के हाथी बनवा कर, दान में ब्राह्मणों को दिये थे। उसने सम्पूर्ण पृथिवी को भी सुवर्ण से भूषित करा और मणिरत्नों से जड़वा कर, ब्राह्मणों को दे डाला था।

हे सञ्जय! तुम्हारे पुत्र से चारों विषयों में अधिक और पुण्यात्मा राजा पृथु भी जब मर गया; तब हे श्वित्यपुत्र! तुम दान, यज्ञ आदि से हीन अपने पुत्र के शोक से सन्तप्त क्यों होते हो?

सत्तरवाँ अध्याय

परशुराम जी का उपाख्यान

नारद जी बोले—हे सञ्जय! शूरों से वन्द्य जमदग्नि ऋषि के पुत्र, महातपस्वी, बड़े यशस्वी एवं महाबली परशुराम भी काल के कराल गाल में पतित होंगे। परशुराम जी ने अशान्ति को दूर कर, पृथिवी पर शान्ति फैला, सत्ययुग के धर्म स्थापित किये और अनुपम लक्ष्मी प्राप्त कर के भी उनके मन में विकार अर्थात् लोभ मोहादि उत्पन्न न हुए। जब क्षत्रियों ने उनके प्रिय पिता का वध कर डाला और उनकी कामधेनु वे हर कर ले गये; तब उन्होंने शत्रुओं से कुछ भी न कह, अपने अजेय शत्रु कार्तवीर्य को मार डाला। उन्होंने हाथ में धनुष बाण ले, मरणोन्मुख छः लाख चालीस हज़ार, शत्रुओं का नाश किया था। इस युद्ध में परशुराम जी ने चौदह हज़ार, ब्राह्मणद्वेषी राजाओं को वध और बहुतेरों को पकड़ा भी था और दन्तकूर देश के राजा का वध कर डाला था। इस युद्ध में परशुराम जी ने एक हज़ार क्षत्रियों के सिर मूसल से कुचल कर उन्हें यमलोक भेजा था। एक हज़ार क्षत्रिय खड्गप्रहार से मारे थे; एक हज़ार राजाओं को पेड़ों पर लटका फाँसी लगा कर और एक हज़ार को जल में डुबो कर मारा था। एक हज़ार राजाओं के दाँत तोड़ कर, उनके नाक कान काट डाले थे। सात हज़ार को विषैले धुए से दम घोंट कर मारा था। इनके अतिरिक्त जो बचे, उन्हें रस्सी से बाँध और उनके सिर कुचल कर, मारा था। गुणवती नगरी से उत्तर की ओर, खाण्डव वन से दक्षिण की ओर पहाड़ के अन्तिम भाग में जो युद्ध हुआ था, उसमें परशुराम ने दस हज़ार हैहय वंशी क्षत्रियों का वध किया था। पितृवध से क्रुद्ध परशुराम के हाथ से मारे गये हाथियों, घोड़ों तथा रथों सहित सैकड़ों वीर वहाँ पड़े हुए थे। उन्होंने दस हज़ार क्षत्रियों के प्रलापों को न सह कर और कुपित हो, उनके सिर फरसे से काट डाले थे। जब काश्मीर आदि देशों के क्षत्रियों ने ब्राह्मणों पर अत्याचार किये और उन्हें बहुत सताया तब उन

ब्राह्मणों ने परशुराम की दुहाई दी और रो कर पुकारे कि हे भृगुनन्दन ! हे परशुराम ! आप शीघ्र हम लोगों की रक्षा करने को आइये। तब प्रबल प्रतापी परशुराम ने काश्मीर, दरद, कुन्ति, क्षुद्रक, मालव, अङ्ग, वङ्ग, कलिङ्ग, विदेह, ताम्रलिप्तक, रक्षोवाह, वीतिहोत्र, त्रिगर्त, मार्तिकावत, शिवि तथा अन्य देशों के सैकड़ों हज़ारों ही नहीं; बल्कि असंख्य क्षत्रियों को अपने तेज़ बाणों से मार डाला था। भृगुनन्दन परशुराम ने इन्द्रगोप कीट के समान क्षत्रियों के लाल रक्त से सरोवरों को भर दिया था और अठारहों द्वीपों को अपने वश में कर लिया था। तदनन्तर उन्होंने सौ बड़े बड़े महापावन यज्ञ किये। उनमें ब्राह्मणों को बड़ी बड़ी दक्षिणाएं दी थीं। इन्हीं यज्ञों में महर्षि कश्यप को उत्तम प्रकार से सुवर्ण की बनी, सैकड़ों सहस्रों मणियों से खचित, सैकड़ों ध्वजाओं पताकाओं से शोभित, रत्नजटित नालाओं से युक्त, बत्तीस हाथ ऊँची वेदी सहित तथा पशुओं से परिपूर्ण यह वसुन्धरा परशुराम जी ने दान में दी थी। परशुराम जी ने अश्वमेध यज्ञ कर, उसमें सुवर्ण के भूषणों से भूषित, एक लाख हाथी तथा चोरों का नाश कर, शिष्ट जनों से परिपूर्ण यह पृथिवी कश्यप जी को अर्पण कर दी थी। महाबलवान परशुराम ने इक्कीस बार पृथिवी को क्षत्रिय शून्य कर के, सौ यज्ञ किये थे और उन यज्ञों में कश्यप तथा ब्राह्मणों को सात द्वीप वाली पृथिवी दान में दी थी। उस समय मरीचि के पुत्र कश्यप ने परशुराम से कहा था कि, तुम मेरी आज्ञा से यह पृथिवी त्याग कर चले जाओ।

कश्यप जी के इस वचन को सुन और ब्राह्मणों की आज्ञा को शिरोधार्य कर, महायोद्धा परशुराम समुद्र पार कर और बाणों से मार्ग बना कर, उस पर होते हुए, महेन्द्र पर्वत पर चले गये और वहीं रहने लगे। अब भी वे उसी पर्वत पर रहते हैं।

नारद जी बोले—हे सृञ्जय ! गुणों की खान, भृगुवंशियों की कीर्ति को बढ़ाने वाले, महायशस्वी, महाकान्तिवान् परशुराम जी जो तुमसे और तुम्हारे पुत्र से वैभव, शूरता, ज्ञान और भोग में अत्यधिक पुण्यवान्

हैं, मर जाँयगे; तब हे श्वित्यपुत्र! तुम यज्ञानुष्ठान रहित तथा दान आदि कर्मों से शून्य अपने पुत्र के लिये वृथा ही शोक करते हो। हे राजश्रेष्ठ सञ्जय! ये सब राजा लोग हर प्रकार तुमसे श्रेष्ठ थे, किन्तु तिस पर भी वे काल के गाल में पतित हुए बिना न रहे। वे ही क्यों आगे और जो राजागण उत्पन्न होंगे, वे भी अवश्य ही मरण को प्राप्त होंगे, क्योंकि जो जन्मा है वह अवश्य मरेगा। अतः तुम अपने एक साधारण पुत्र के लिये शोक मत करो।

इकहत्तरवाँ अध्याय

सञ्जय के मृत राजकुमार का पुनः जीवित होना

व्यास जी बोले—हे युधिष्ठिर! आयु बढ़ाने वाले एवं पावन चरित्र इन सोलह राजाओं के उपाख्यानों को सुन कर, राजा सञ्जय कुछ भी न बोला, चुपचाप बैठा रहा। उसे चुपचाप बैठा देख, देवर्षि नारद जी बोले—हे महाद्युते! मैंने तुम्हें जो उपाख्यान सुनाये, उनको सुन तुम्हारे चित्त पर उनका कुछ प्रभाव पड़ा कि नहीं अथवा, श्राद्ध में वृषलीपति ब्राह्मण को भोजन कराने से जैसे वह श्राद्ध व्यर्थ जाता है, वैसे ही इतनी देर का मेरा सारा परिश्रम भी व्यर्थ ही गया।

नारद जी के इस वचन को सुन, सञ्जय ने हाथ जोड़ कर कहा—हे ब्रह्मन्! यज्ञ करने वाले, प्रचुर दक्षिणाएं देने वाले पुरातन उन राजर्षियों के उत्तम एवं धनधान्यप्रद उपाख्यानों को श्रवण करने से मेरा शोक वैसे ही नष्ट हो गया, जैसे सूर्य का उदय होने पर अन्धकार नष्ट हो जाता है। मैं अब पापरहित और क्लेशशून्य हो गया हूँ। बतलाइये मेरे लिये अब आपकी क्या आज्ञा है?

नारद जी ने कहा—यह बड़े सौभाग्य की बात है कि, तुम्हारा शोक नष्ट हो गया। अब तुम जो चाहो सो वर माँगो। स्मरण रहे हमारा वरदान मिथ्या नहीं होता।

सृञ्जय बोला—आप मुझ पर प्रसन्न हैं, मैं इतने ही से बड़ा हर्षित हूँ। क्योंकि आप जिस पर प्रसन्न हों उसे इस संसार में कोई भी पदार्थ दुर्लभ नहीं है।

नारद जी बोले—चोरों ने व्यर्थ ही तेरे पुत्र को पशु की तरह मार डाला। वह नरक में बड़ा दुःख पा रहा है। अतः मैं उसे नरक से निकाल, फिर तुझे प्रदान करता हूँ।

व्यास जी बोले—हे युधिष्ठिर! नारद जी के यह कहते ही, कुबेरपुत्र की तरह राजा सृञ्जय का अलौकिक कान्ति वाला पुत्र अपने पिता के सामने आ खड़ा हुआ। राजा सृञ्जय अपने मृत पुत्र को पुनः पा कर बड़ा प्रसन्न हुआ। तदनन्तर उसने बड़ी बड़ी दक्षिणाओं वाले पुण्यदायक यज्ञ किये। हे युधिष्ठिर! राजा सृञ्जय का पुत्र अकृतार्थ, यज्ञ दक्षिणा रहित तथा भयातुर था। वह युद्धभूमि में नहीं मारा गया था। इसीसे वह पुनः जीवित किया जा सका। किन्तु तुम्हारा भतीजा अभिमन्यु शूरवीर और कृतार्थ था और वीरता प्रकट कर उसने अपने अस्त्रों शस्त्रों से हज़ारों वीरों का संहार किया था। तदनन्तर वह लड़ता हुआ समरभूमि में युद्ध में मारा गया है। तुम्हारा भतीजा उन अक्षय्य लोकों में गया है, जिनमें लोग ब्रह्मचर्य पूर्वक वेदाध्ययन कर के और शास्त्रोक्त विधि से यज्ञ कर के जाते हैं। विद्वान लोग पुण्य कर्म इसी लिये किया करते हैं कि, मरने के बाद उन्हें स्वर्ग की प्राप्ति हो। फिर स्वर्गस्थित कोई भी पुरुष इस मर्त्यलोक में आने की कदापि इच्छा भी नहीं करता। रण में मारे जाने के कारण अर्जुन का पुत्र अभिमन्यु स्वर्ग में पहुँच गया है। अतः उसे अब पुनः इस लोक में लाना सहज काम नहीं है। कोई नित्य अप्राप्य वस्तु उद्योग करने ही से प्राप्त नहीं होती। योगी जन ध्यान धारणा करते करते

परब्रह्म का दर्शन पा कर जिस गति को पाते हैं और श्रेष्ठ यज्ञ करने वाले पुरुषों को जो गति प्राप्त होती है, तपस्वी अपने तप से जिस गति को पाते हैं, उसी उत्तम गति को तुम्हारे भतीजे ने पाया है। तुम्हारे वीर भतीजे अभिमन्यु ने आत्मधर्मानुसार उत्पन्न हो, अन्त समय में वीरों के धर्मानुसार युद्ध में मारे जा कर, पुनः चन्द्र सम्बन्धी स्वाभाविक शरीर प्राप्त किया है। वह अनुपम सदन पा कर, चन्द्रमा की तरह, स्वर्गलोक में जा बैठा है। अतः उनके लिये शोक करना ठीक नहीं।

हे युधिष्ठिर! तुम यह समझ कर धैर्य धारण करो और पुनः शत्रुओं से जा कर युद्ध करो। इन लोगों के निकट तो जीवित पुरुष ही शोक करने के योग्य हैं—स्वर्ग में गये हुए नहीं। हे राजन्! शोक करने से शोक उत्तरोत्तर बढ़ता ही है। अतः जो बुद्धिमान् जन होते हैं, वे शोक चिन्ता तथा हर्ष विषाद को त्याग कर, अपने कल्याण के लिये प्रयत्न करते हैं। शोक तो कोई चीज़ ही नहीं है, बल्कि शोक का विचार करना ही शोक है। हे विद्वन्! यह सब समझ बूझ कर, तुम लड़ने के लिये तैयार हो जाओ। युद्ध के लिये तैयारी करो—शोक मत करो। तुम मृत्यु की उत्पत्ति, उसकी उग्र तपस्या और उसकी समस्त प्राणियों पर समान दृष्टि होने की कथा सुन ही चुके हो। मृत्यु के लिये (छोटे बड़े—अमीर गरीब) सब समान हैं। फिर ऐश्वर्य भी स्थायी नहीं यह भी चञ्चल है। यह तुम सृञ्जय के पुत्र के वृत्तान्त से समझ ही गये होगे। नारद जी द्वारा वह पुनः जीवित किया गया, यह भी तुम सुन ही चुके हो। अतः हे राजन्! तुम शोक मत करो। अब मैं जाता हूँ।

यह कहते ही वेदव्यास जी वहीं अन्तर्धान हो गये। हे राजेन्द्र! मेघ-वर्ण के समान शरीर वाले, धीमान् वेदव्यास जी ने जब युधिष्ठिर को ढाँढस बँधा वहाँ से गमन किया; तब राजा युधिष्ठिर, इन्द्र तुल्य तेजस्वी, न्यायो-पार्जित वित्त से युक्त पुरातन राजसिंहों के अनुष्ठित यज्ञकार्यों के वृत्तान्त को स्मरण कर, मन ही मन उनकी प्रशंसा करते हुए, शोकरहित हो गये।

कुछ ही देर बाद वे पुनः इस बात की चिन्ता में मग्न हो गये कि, मैं अर्जुन से क्या कहूँगा।

अभिमन्युवध पर्वसमाप्त

अथ प्रतिज्ञापर्व

बहत्तरवाँ अध्याय

अर्जुन का शोक

सञ्जय बोले—हे भरतर्षभ ! उस महाभयङ्कर युद्ध में प्राणियों का संहार होने पर, उस दिन युद्ध बंद कर, सब योद्धा निवृत्त हुए। सूर्यास्त होने पर सन्ध्याकाल उपस्थित हुआ। सारी सेना रणभूमि छोड़ अपनी अपनी छावनियों में लौट कर आ गयी। उस समय कपिध्वज अर्जुन भी दिव्यास्त्रों से संशप्तकों के समूह का संहार कर, अपने जयशील रथ पर सवार हो, अपने सैन्य शिविर की ओर लौटे। रास्ते में अर्जुन ने नेत्रों में आँसू भर श्रीकृष्ण से कहा—हे केशव ! न मालूम आज मेरा हृदय क्यों धड़क रहा है। मेरा बोल बंद सा हुआ जाता है। अशुभ सूचक वामभुजा फड़क रही है। मेरे शरीर में जलन सी हो रही है। मेरे मन में बार बार यह आशङ्का उठती है कि, आज कोई अनिष्ट हुआ है। पृथिवी और दिशाओं में होते हुए अशुभ-सूचक उत्पात मेरी आशंका को पुष्ट कर रहे हैं। ये समस्त अशुभसूचक उत्पात किसी घोर अनर्थ के सूचक हैं। नहीं मालूम भाइयों सहित मेरे ज्येष्ठ भ्राता युधिष्ठिर और उनके मंत्री सकुशल हैं कि नहीं ?

श्रीकृष्ण जी बोले—निस्सन्देह तुम्हारे भाई मंत्रियों सहित सकुशल होंगे। तुम शोक मत करो। मुझे तो किसी अन्य प्रकार के अनिष्ट होने का भान होता है।

सञ्जय ने कहा—हे धृतराष्ट्र ! तदनन्तर वे दोनों वीर सन्ध्योपासन कर रथ में बैठ और युद्ध सम्बन्धी विषयों पर परस्पर वार्त्तालाप करते हुए अपने

शिविर के निकट आ पहुँचे। उस समय अर्जुन को शिविर में उदासी छायी हुई देख पड़ी। यह देख और घबड़ा कर, अर्जुन ने श्रीकृष्ण से कहा—हे कृष्ण! नहीं मालूम आज क्या है, जो न तो मङ्गलसूचक तुरहियाँ बज रही हैं और न दुन्दुभियों के साथ शङ्खध्वनि सुनायी पड़ती है। न वीरों की करताल के साथ वीणा की मधुर ध्वनि ही सुनायी पड़ती है। न आज छावनी में कहीं वन्दीजन स्तुति गर्भित माङ्गलिक गान ही कर रहे हैं। योद्धा मुझे देख नीचा सिर कर लेते हैं। वे मुझसे वैसे बातचीत नहीं करते, जैसे पहले किया करते थे। हे माधव! मुझे अपने भाइयों की ओर से बड़ी चिन्ता है। अपने पक्ष के योद्धाओं का रंग ढंग देख मेरा मन कहता है कि, आज कुशल नहीं है। हे अच्युत! हे मानद! राजा पाञ्चाल और राजा विराट् तथा मेरी सेना के अन्य सब योद्धा तो सकुशल हैं? मैं जब रणक्षेत्र से लौट कर आता था, तब सुभद्रानन्दन अभिमन्यु मुसक्याता हुआ अपने भाइयों सहित मेरे पास आया करता था, वह भी आज मेरे सामने नहीं आया।

सञ्जय ने कहा—हे धृतराष्ट्र! यह कहते कहते वे दोनों अपने डेरे में पहुँच गये और उन दोनों ने शेष पाण्डवों की बुरी दशा देखी। अपने भाइयों और पुत्रों की दशा देख अर्जुन घबड़ा गया और वहाँ अभिमन्यु को न देख यह कहने लगा—हैं! आज तुम लोगों के चेहरे फीके क्यों पड़े हुए हैं? अभिमन्यु कहाँ है? आज तुम लोग मुझसे प्रीतिपूर्वक बातचीत क्यों नहीं करते? मैंने सुना है कि, आज द्रोणाचार्य ने चक्रव्यूह की रचना की थी। उस व्यूह को बालक अभिमन्यु को छोड़, तुममें से और कोई भी भग नहीं कर सकता था। मैंने चक्रव्यूह में प्रवेश करना तो उसे सिखला दिया था, किन्तु चक्रव्यूह को भंग कर उससे निकलना कैसे चाहिये—यह मैंने उसे नहीं बतलाया था। सो क्या तुम लोगों ने उस बालक को शत्रुसैन्य में भेज दिया? वह महाधनुर्धर एवं वीर, वैरियों का संहार कर और, चक्रव्यूह को भङ्ग कर, कहीं शत्रुओं के हाथ पड़, मारा तो नहीं गया? रक्तनेत्र, महाभुज, पहाड़ी सिंह और श्रीकृष्ण के समान

पराक्रमी अभिमन्यु, बतलाओ तो—कहीं युद्ध में मारा तो नहीं गया? बोलो बोलो—वह सुकुमार, महाधनुर्धर, इन्द्र का पौत्र और मेरा प्यारा अभिमन्यु क्या रण में मारा गया? सुभद्रा का दुलारा लाल द्रौपदी श्रीकृष्ण और अपनी दादी कुन्ती का भी बड़ा लाड़ला था। काल से मोहित किसने उसको मारा है? तुम्हें उसका नाम तो बतलाओ। वह पराक्रम, शस्त्राभ्यास और कीर्ति में श्रीकृष्ण की टक्कर का था। वह मारा गया तो कैसे? यदि मैं श्रीकृष्ण के दुलारे और रणवीर अपने लाड़ले अभिमन्यु को न देख पाया, तो मैं अभी अपनी जान दे दूँगा। कोमल और घुँघराले बालों वाले, मृगशावक जैसे नेत्रों वाले, नागराज जैसे पराक्रमी, सिंह शावक जैसे उभड़ते हुए, सदा हँसमुख, चतुर, सदैव गुरुजनों का आज्ञाकारी, बालक हो कर भी अतुलपराक्रमी, मधुरभाषी, निष्कपट, महान् उत्साही, महाभुज, कमलनयन, अपने प्रति प्रीति करने वालों के साथ प्रीति रखने वाला, सरल हृदय, नीचों के कुसंग से दूर रहने वाला, किये हुए को मानने वाला, ज्ञानी, अस्त्र-विद्या-विशारद, युद्ध में कभी पीछे पग न रखने वाला, और युद्ध में जा सदा प्रसन्न रहने वाला शत्रुओं को सदा भयदायी, निज जनों का प्यारा, भलाई करने को सदा उद्यत, चाचाओं का विजयाभिलाषी, युद्ध में प्रथम शस्त्र प्रहार न करने वाला एवं महारथी अभिमन्यु को यदि मैं न देख पाया तो मैं निश्चय ही अपने प्राण दे दूँगा। युद्ध में मुझसे बढ़ चढ़ कर, तरुण, सुजबल से सम्पन्न, मेरे प्रद्युम्न और श्रीकृष्ण के दुलारे, सुन्दर नासिका, सुन्दर ललाट, सुन्दर नेत्र, भौं और ओंठों वाले अपने पुत्र अभिमन्यु को यदि मैं न देख पाया, तो मैं निश्चय ही मर जाऊँगा। ऐसे सर्वलक्षणसम्पन्न पुत्र को देखे बिना, मेरा हृदय क्यों कर शान्त हो सकता है? वीणा के स्वर के समान सुखदायी एवं रमणीय तथा कोयल की कूक की तरह पञ्चम स्वर से बोलने वाले पुत्र अभिमन्यु की वाणी सुने बिना मुझे शान्ति मिल ही नहीं सकती। उसका जैसा अनूठा रूप था; वैसा तो देवताओं का भी नहीं होता। उस वीर को देखे बिना, मैं शान्त नहीं हो

सकता। यधिष्ठिर जिस में पढ़ और पिता, चाचा आदि गुरुजनों का सम्पूर्णतः आज्ञाकारी, अपने पुत्र अभिमन्यु को यदि मैं आज न देखूँगा, तो मेरा हृदय क्यों कर शान्त होगा? सुकुमार होने पर भी बड़ा वीर अभिमन्यु, जो सदा बहुमूल्य सेज पर सोता था; आज क्या अनाथ की तरह धूल पर लोट रहा है? जिसकी परिचर्या में अनेक स्त्रियाँ रहा करती थीं, वह आज शस्त्रविछिन्न हो, रणभूमि पर पड़ा है और स्यारिनें क्या उसकी परिचर्या कर रही हैं। जिस अभिमन्यु को सूत, मागध, वंदीजन जगाया करते थे, आज उसे हिंस्र जन्तु भयङ्कर चीत्कार कर जगाते होंगे। जो मुख छत्रछाया में रहने योग्य है, उसे रणभूमि की धूल अवश्य ही मलिन कर रही होगी। हे पुत्र! मैं तो तुझे देखते कभी तृप्त ही नहीं होता था। मुझ अभागे के ऐसे उत्तम पुत्र को काल जबर्दस्ती क्यों लिये जाता है? अब श्रेष्ठकर्मा पुरुषों की आश्रय स्थल यमराज की सभा, तुम्हारे तेज से अति मनोहर और शोभामयी हो गयी है। तुम जैसे निर्भीक और प्रिय अतिथि को पा कर, यम, वरुण, इन्द्र और कुबेर भी तुम्हारा सत्कार करेंगे।

हे राजन्! जल में नौका टूट जाने पर जैसे व्यापारी विकल हो विलाप करते हैं, वैसे ही बार बार विलाप करते हुए अर्जुन ने युधिष्ठिर से पूँछा—हे कुरुनन्दन! क्या अभिमन्यु महारथियों के साथ युद्ध कर के सैन्य का नाश करता हुआ युद्धभूमि से स्वर्गलोक को चला गया? मुझे यह निश्चय जान पड़ता है कि, जब उस नरव्याघ्र के साथ बहुत से शूरवीर योद्धाओं ने एकत्र हो युद्ध किया होगा, तब उस सहायहीन ने मेरा स्मरण अवश्य किया होगा। मेरा अनुमान है कि, आचार्य द्रोण, कर्ण और कृपाचार्य आदि निर्दयी योद्धाओं ने जब विविध तीक्ष्ण अस्त्रों से अभिमन्यु को पीड़ित किया होगा, उस समय अचेत की तरह उसने मुझे इस प्रकार स्मरण अवश्य किया होगा कि, यदि इस समय मेरे पिता यहाँ होते तो मेरी रक्षा करते। यह कह और विलाप कर, वह उन निर्दयी पुरुषों के शस्त्रों से मर कर पृथिवी में गिरा होगा। नहीं! नहीं! वह मेरा पुत्र और श्रीकृष्ण का भाँजा

और सुभद्रा की कोख से उत्पन्न अभिमन्यु कभी ऐसे दीन वचन नहीं कह सकता। मेरा हृदय निश्चय ही बड़ा कठोर एवं पत्थर का है, जो विशालभुजा और कमल नैनों वाले अपने पुत्र को देखे बिना फट नहीं जाता। उन महा-निर्दयी महाधनुर्धरों ने मेरे पुत्र और श्रीकृष्ण के भाँजे पर किस प्रकार मर्म भेदी बाण छोड़े थे। पहले जब मैं शत्रुओं का वध कर शिविर में आता था, तब वह निर्भीक मेरा पुत्र मुझे हर्षित किया करता था। वह आज मेरे सम्मुख क्यों नहीं आता? वह निश्चय ही रुधिर से पूर्ण शरीर से युक्त हो, सूर्य तुल्य अपने तेज से पृथिवी को शोभित करता हुआ रणभूमि में शयन कर रहा है। मुझे सुभद्रा के लिये बड़ा दुःख है। वह युद्ध में अपराजित अपने पुत्र का मारा जाना सुन, दुःखी हो निस्सन्देह अपने प्राण त्याग देगी। सुभद्रा और द्रौपदी अभिमन्यु को न देख, मुझसे क्या कहेंगी? मैं उन दुःखार्त्ताओं से क्या कहूँगा? पुत्रवधू को मैं क्या कह कर समझाऊँगा। मेरा हृदय तो पत्थर का है। इसीसे पुत्रवधू को विलाप करते देख, मेरा हृदय टुकड़े टुकड़े नहीं होगा। धृतराष्ट्र के अभिमानयुक्त सिंहनाद को मैंने सुना था और युयुत्सु ने उन वीरों का जो अपमान किया था, वह श्रीकृष्ण ने सुना था। युयुत्सु ने उच्चस्वर से यह कह कर, उन वीरों का तिरस्कार किया था, अरे अधर्मियों! तुम अर्जुन को परास्त न कर के एक बालक का वध कर, क्या गरज रहे हो? इसके बाद तुम पाण्डवों का पराक्रम देखोगे। इस समय रणभूमि में श्रीकृष्ण और अर्जुन का अप्रिय कर और उनके शोक को बढ़ा कर, तुम लोग प्रसन्न हो, क्या गरज रहे हो? तुम अपने इस पाप-कर्म का फल शीघ्र ही पावोगे। तुमने जो यह अधर्म कर्म किया है, इसका फल तुम्हें शीघ्र चाखना पड़ेगा। वैश्यापुत्र युयुत्सु क्रोध में भर और दुःखी हो, उन योद्धाओं की निन्दा करता हुआ और अस्त्र शस्त्र रख, समरभूमि से चल दिया था। हे कृष्ण! तुमने उसी समय मुझसे यह बात क्यों नहीं कही? यदि मुझे यह बात मालूम हो गयी होती, तो मैं उसी समय उन निर्दयी क्रूर महारथियों को बाणों से जला कर, भस्म कर डालता।

सञ्जय बोले—महाराज! अर्जुन को पुत्रशोक से आर्त्त और दुःखी हो रोते देख, श्रीकृष्णचन्द्र ने कहा—पार्थ ऐसा मत करो। फिर अर्जुन का हाथ पकड़ श्रीकृष्ण ने कहा—एक दिन मरना तो सब ही को है, फिर युद्ध ही जिनकी जीविका है तथा रण से मुँह न मोड़ना ही जिनका धर्म है, उन वीर क्षत्रियों की तो यही गति है। हे बुद्धिमानों में श्रेष्ठ! शास्त्रों ने रण में पीठ न दिखा कर, युद्ध करने वाले वीरों के लिये यही गति निर्दिष्ट की है। रण में पीठ न दिखाने वाले वीरों की मौत तो रण ही में होती है। अभिमन्यु निश्चय ही पवित्र लोकों में गया है। हे मानद! सब वीरों की यह परम अभिलाषा रहती है कि, वे रणभूमि में शत्रु के सामने मरें। अभिमन्यु महाबली राजपुत्रों को मार कर वीरों की ईप्सित गति को प्राप्त हुआ है। अतः हे पुरुषसिंह! तुम शोक त्याग दो। यह महात्माओं का बाँधा चिरकालीन नियम है कि, क्षत्रिय रण ही में मारे जाते हैं। हे भरतसत्तम! तुम को शोकान्वित देख, तुम्हारे ये भाई तथा राजा बहुत उदास हो रहे हैं। तुम इन्हें ढाँढ़स बँधाओ। क्योंकि ज्ञातव्य विषय को तुम जान चुके हो। अतः तुम्हें शोक न करना चाहिये। अद्भुतकर्मा श्रीकृष्ण के इस प्रकार समझाने पर, अर्जुन ने शोक-रुद्ध कण्ठ से अपने भाइयों से कहा—लंबी भुजा वाला, पुष्ट कंधों वाला और कमल नेत्र अभिमन्यु किस प्रकार मारा गया—इसका हाल मैं आद्यन्त सुनना चाहता हूँ। तुम देखना, मैं अपने पुत्र के वैरियों को हाथियों, घोड़ों, रथों और पैदल सिपाहियों सहित मार डालूँगा। तुम सब अस्त्रकुशल हो। तुम सब लोगों के हाथों में अस्त्र शस्त्र रहते और तुम्हारे समरभूमि में खड़े रहने पर अभिमन्यु तो वज्रधारी इन्द्र के साथ भी युद्ध करता, तो भी क्या मारा जा सकता था? मैं यदि अपने भाइयों और पाञ्चालों को अपने पुत्र की रक्षा करने में असमर्थ समझता, तो मैं स्वयं उसकी रक्षा करता। तुम लोग जब रथों पर सवार हो बाण वर्षा रहे थे, तब वैरियों ने तुमको परास्त कर किस प्रकार अभिमन्यु का वध किया? हा! जब तुम लोगों के सामने ही अभिमन्यु मारा

गया, तब मुझे निश्चय जान पड़ता है कि, तुम लोग पुरुषार्थहीन हो और तुममें कुछ भी पराक्रम नहीं है। तुम लोगों की निन्दा करना व्यर्थ है, मुझे तो अपनी ही निन्दा करनी चाहिये। क्योंकि तुम लोग तो भीरु, कादर, और अत्यन्त निर्बल हो। यह तो मेरी सरासर भूल थी कि, मैंने तुम लोगों पर युद्ध का भार छोड़, प्रस्थान किया था। जब तुम लोगों से रणक्षेत्र में मेरे पुत्र ही की रक्षा न हो सकी; तब तुम्हारे ये सब अस्त्र, शस्त्र, कवच दिखावा मात्र हैं। तुम लोग तो सभा ही में डींगे हाँकना जानते हो।

प्रचण्ड गाण्डीव धनुष और खड्गधारी अर्जुन ने जब खड़े हो ऐसे वचन कहे, तब उनकी ओर देखने का साहस तक किसी में न हुआ। अर्जुन पुत्र शोक से विकल हो बारंबार लंबी साँसे लेते हुए यमराज की तरह कुपित जान पड़ते थे। उस समय उनके साथ श्रीकृष्ण और युधिष्ठिर को छोड़ और कोई बातचीत न कर सका। क्योंकि श्रीकृष्ण और युधिष्ठिर-दोनों ही उनके मानसिक भाव को जानते थे और साथ ही अर्जुन भी इन दोनों को बहुत मानते थे और सम्मान करते थे, अन्त में पुत्रशोक से अत्यन्त सम्मोहित और क्रुद्ध होने के कारण रक्तनयन अर्जुन से युधिष्ठिर ने अभिमन्यु वध का समस्त वृत्तान्त कहना आरम्भ किया।

तिहत्तरवाँ अध्याय

अर्जुन का प्रण

राजा युधिष्ठिर बोले—हे अर्जुन! जब तुम संशप्तकों का वध करने के लिये यहाँ से चले गये, तब आचार्य द्रोण ने मुझे पकड़ने का बड़ा भारी उद्योग किया। जब वे अपनी सेना का व्यूह बना समरभूमि में उपस्थित हुए, तब हम लोगों ने भी अपनी रथसैन्य का व्यूह बना उनका सामना किया और उनको चारों ओर से रोक दिया। मेरे रथी उन्हें रोक रहे थे और साथ ही मेरी रक्षा भी कर रहे थे। तिस पर भी द्रोण पैने बाणों से पीड़ित करते

हुए हमारी सेना की ओर बढ़ते ही चले आते थे। द्रोण के बाणों की मार से पीड़ित हमारे योद्धा द्रोण की सेना की ओर आँख उठा कर भी न देख सके। फिर उनकी सैन्य के नष्ट करना तो बात ही और थी। हे भाई! उस समय अद्वितीय वीर अभिमन्यु से हम सब ने कहा—हे वत्स! द्रोणाचार्य के व्यूह को तू तोड़ डाल। हमारे कहने से वह पराक्रमी बालक सिंह की तरह अकेला ही इस कठिन भार को उठाने के लिये तैयार हो गया। वह पराक्रमी बालक तुम्हारे सिखाये अस्त्रों से शत्रुसैन्य के व्यूह को भङ्ग कर वैसे ही उसमें घुस गया, जैसे समुद्र में गरुड़ घुस जाते हैं। वह जिस मार्ग से शत्रुसैन्य के व्यूह में घुसा, हम लोगों ने भी उसके अनुगामी बन, उसी मार्ग से व्यूह में घुसना चाहा। किन्तु सिन्धुराज का पुत्र क्षुद्राभिलाषी जयद्रथ ने भगवान शिव के वरदान के प्रभाव से, हम सब को निवारण किया। अतः हम हज़ार चेष्टा कर के भी व्यूह के भीतर न जा सके। अनन्तर द्रोण, कृप, कर्ण, अश्वत्थामा, कोशलराज बृहद्बल और कृतवर्मा—इन छः महारथियों ने अभिमन्यु पर आक्रमण किया। वे चारों ओर से अभिमन्यु को घेर और पैने पैने बाण छोड़, उसे पीड़ित करने लगे। तिस पर भी वह हिम्मत न हारा और उनसे युद्ध करता रहा। अन्त में उन लोगों ने मिल कर, उस को रथहीन कर दिया। जब वह इस प्रकार समस्त अस्त्र शस्त्रों से रहित हो गया; तब दुःशासन पुत्र ने उस बालक को मार डाला। उस परम-तेजस्वी अभिमन्यु ने सहस्रों मनुष्यों, रथियों, गजपतियों और अश्वारोहियों का संहार किया। उसने आठ सहस्र रथी, नौ सौ हाथी, दो हज़ार राजपुत्र और अगणित पैदल योद्धा धराशायी किये। राजा बृहद्बल को यमालय भेज, अन्त में वह स्वयं भी यमपुरी सिधार गया। वह पुरुषसिंह जो इस प्रकार वीरगति को प्राप्त हुआ है—सो इसके लिये हमारा शोक चरम सीमा को पहुँचा हुआ है।

धर्मराज के मुख से पुत्र के मारे जाने का यह वृत्तान्त सुन, अर्जुन हा पुत्र! हा पुत्र! कहते और लंबी लंबी साँसें लेते, दुःखी हो भूमि पर गिर पड़े।

अत्यन्त कातर और मूर्छित हो अर्जुन को भूमि पर गिरते देख, वहाँ पर खड़े समस्त योद्धाओं ने उन्हें थाम लिया और इकटक उनकी ओर निहारने लगे। थोड़ी देर बाद अर्जुन सचेत हुए, उस समय मारे क्रोध के वे थर थर काँप रहे थे। वे लँबी साँसे लेते हुए और आँखों में आँसू भर उन्मत्त की तरह इधर उधर देखते हुए यह बोले—मैं तुम लोगों के सामने आज यह सत्य सत्य प्रण करता हूँ कि, कल मैं जयद्रथ का वध करूँगा। यदि वह कल डर कर धृतराष्ट्र पुत्रों को छोड़ भाग न गया अथवा देवकीनन्दन श्रीकृष्ण की अथवा महाराज युधिष्ठिर की शरण में न आया, तो कल मैं निश्चय ही उसका वध करूँगा। यदि उसकी रक्षा करने को स्वयं आचार्य द्रोण अथवा कृपाचार्य आगे बढ़े, तो मैं उन्हें भी पैने बाणों से आच्छादित कर दूँगा। हे पुरुषश्रेष्ठों! हे राजसिंहों! यदि कल मैं अपने इस प्रण को पूरा न कर सका तो मैं उन उत्तम लोकों को प्राप्त न करूँ, जो शूरवीरों को प्राप्त होते हैं। यदि मैं कल जयद्रथ का वध न करूँ, तो मैं उन्हीं निकृष्ट लोकों में जाऊँ, जिनमें मातृहन्ता, पितृहन्ता गुरुपत्नी के साथ खोटा काम करने वाले, चुगुल, साधुजनों के साथ दुष्टता करने वाले, निन्दक, विश्वासघातक, ब्रह्महत्यारे, गोघाती, घी, दूध, मधु, तथा उत्तम अन्न एवं शाक और माँसादि देवता और ब्राह्मणों को अर्पण बिना किये खा लेते हैं। कल यदि मैं जयद्रथ का वध न कर सकूँ तो, मुझे वे ही लोक प्राप्त हों, जो वेदपाठी प्रशंसनीय उत्तम ब्राह्मणों, बड़े बूढ़ों, साधुजनों तथा पूज्य लोगों का अपमान करने वालों को प्राप्त होते हैं। पैर से गौ और अग्नि को छूने वालों और जल में थूकने वालों तथा मलमूत्र त्यागने वालों की जो गति होती है, वही गति मेरी भी हो, यदि मैं जयद्रथ का कल वध न कर सकूँ। नंगे हो कर स्नान करने वालों, अतिथियों को विमुख लौटाने वालों, कपट व्यवहार करने वालों, झूठ बोलने वालों, दूसरों को ठगने वालों, आत्महत्या करने वालों, दूसरों पर मिथ्या दोषारोपण करने वालों और अपने आश्रित नौकर, स्त्री, पुत्र को दिये बिना स्वयं मिष्टान्न खाने वाले, क्षुद्र पुरुषों की जो गति होती है, वही गति मेरी भी हो। यदि कल मैं

जयद्रथ को न मारूँ तो मेरी वही गति हो, जो अपने हितैषी आश्रित साधु पुरुष का पालन न करने वाले की, उपकारी की निन्दा करने वाले की, नृशंस पुरुष की, सत्पात्र पड़ोसी को श्राद्ध में भोजन न करा अयोग्य तथा शूद्र या रजस्वला के पति को भोजन कराने वाले की, मद्यपी की, मर्यादा तोड़ने वाले की, कृतघ्नी की और पोषक की निन्दा करने वाले की होती है। यदि मैं कल जयद्रथ को न मार पाऊँ तो मेरी वही गति हो, जो वाम हाथ से और गोद में रख खाने वाले की, ढाक के पत्तों पर बैठने वालों की, आबनूस की लकड़ी की दतौन करने वालों की, धर्म त्यागियों की, उषाकाल में सोने वालों की, शीत से डर कर, स्नानादि न करने वालों की और रणभीरुओं की, वेदध्वनि वर्जित और एक कुएँ वाले ग्राम में छः मास लगातार रहने वालों की, शास्त्र-निन्दकों की, दिवा मैथुन करने वालों की, दिन में सोने वालों की, घरों में आग लगाने वालों की, विष देने वालों की, अग्नि तथा अतिथि का सत्कार न करने वालों की, गौओं को जल पीने से निवारण करने वालों की, रजस्वला स्त्री से समागम करने वालों की, कन्या विक्रय करने वालों की, जहाँ तहाँ यज्ञ कराने वालों की, नौकरी करने वाले ब्राह्मणों की, मुख में मैथुन करने वालों की तथा दान देने की प्रतिज्ञा कर, पीछे मुकर जाने वालों की होती है। यदि मैं आज की रात के बाद कल जयद्रथ को बाण से न मारूँ, तो मुझे वही गति मिले, जो इन पापियों को मिलती है, जिनको मैं अभी गिना चुका हूँ अथवा जिनका गिनाना मुझसे छूट गया है।

तुम लोग मेरी दूसरी प्रतिज्ञा भी सुनो—यदि कल जयद्रथ न मर पाया और सूर्यास्त हो गया तो मैं दहकते हुए अग्नि में कूद कर भस्म हो जाऊँगा। देवता, असुर, मनुष्य, पक्षी, सर्प, पितर, राक्षस, ब्रह्मर्षि, देवर्षि तथा इस चराचर जगत में, इनसे भी बढ़ कर यदि कोई मेरे शत्रु की रक्षा करना चाहेगा; तो वह भी मेरे शत्रु को न बचा सकेगा। जयद्रथ यदि पाताल में जाय, तालाब में घुस जाय, आकाश में उड़ जाय, स्वर्ग में चला जाय या राक्षसों के नगर

में भाग जाय, तब भी मैं कल प्रातः काल अभिमन्यु के वैरी जयद्रथ का मस्तक धड़ से अलग करूँगा।

अर्जुन यह कह धनुष को दहिने बाएँ घुमाता हुआ उस पर टंकार देने लगा। उसके धनुष का वह टंकार शब्द सब शब्दों को दबा कर, आकाश में जा प्रतिध्वनित हुआ। अर्जुन की प्रतिज्ञा को सुन, श्रीकृष्ण ने अपना पाञ्चजन्य और क्रुद्ध अर्जुन ने अपना देवदत्त शंख बजाया। पाञ्चजन्य शंख की ध्वनि ने प्रलयकाल के समान आकाश, पाताल, दिशाओं तथा दिक्पालों को दहला दिया। महाबली अर्जुन के प्रतिज्ञा करने पर विविध बाजे बजने लगे और पाण्डवों ने सिंहनाद किया।

चौहत्तरवाँ अध्याय

सञ्जय बोले—हे धृतराष्ट्र! विजयाभिलाषी पाण्डवों की इस ध्वनि को सुन, पाण्डवों की सेना में घूमने वाले कौरवों के गुप्तचरों द्वारा जयद्रथ ने जब अर्जुन की प्रतिज्ञा का वृत्तान्त सुना, तब उसका मन अगाध शोक सागर में निमग्न हो गया। वह शोक से विकल हो और सोचता हुआ, वहाँ गया जहाँ कौरव पक्ष के सब लोग एकत्र थे। वहाँ जा वह बुरी तरह धाड़ मार कर रोने लगा। अर्जुन की प्रतिज्ञा से भयभीत जयद्रथ ने शर्माते शर्माते कहा—अर्जुन नीच बुद्धि पाण्डु के क्षेत्र में कामी इन्द्र के वीर्य से उत्पन्न हुआ है। यह केवल मुझीको यमालय भेजना चाहता है। हे क्षत्रियश्रेष्ठ राजसिंहो! आपका भला हो। आपकी क्या सम्मति है? क्या मैं अपनी जान ले कर अभी अपने घर चला जाऊँ अथवा आप सब वीरपुरुष अर्जुन के विरुद्ध अस्त्र शस्त्र ग्रहण कर, मेरी रक्षा कर, मुझे अभय करोगे? आचार्य-द्रोण, राजा दुर्योधन, कृपाचार्य, कर्ण, मद्रराज शल्य, वाह्लिक, दुःशासन आदि तो यमराज के हाथ से भी मनुष्य को बचा सकते हैं। सो क्या आप सब

मुझे उस अकेले अर्जुन के हाथ से न बचा सकेंगे? पाण्डवों के हर्षनाद ने मुझे अत्यन्त भयभीत कर दिया है। मुमुर्षु मनुष्य की तरह मेरा शरीर थरथरा रहा है। गाण्डीव-धनुष-धारी अर्जुन ने अवश्य ही मेरे वध की प्रतिज्ञा की है, नहीं तो इस शोक के समय पाण्डव हर्षनाद क्यों करते? देवताओं असुरों, गन्धर्वों और राक्षसों में भी यह सामर्थ्य नहीं कि, वे अर्जुन की प्रतिज्ञा को अन्यथा कर दें। तब आप मनुष्यों के राजा हो कर क्या कर सकोगे? अतः आपका भला हो! आप सब तो मुझे घर जाने की आज्ञा दें। मैं इस तरह छिप कर जाऊँगा कि, पाण्डवों को मेरा जाना मालूम भी न होने पावेगा।

इस प्रकार विलाप करते हुए तथा भयभीत जयद्रथ से दुर्योधन ने कहा—हे पुरुषश्रेष्ठ! तुम मत डरो। तुम इन शूर क्षत्रियों के मध्य रहना। उस समय भला किसकी मजाल है जो तुम्हें मार सके। मैं स्वयं, सूर्यपुत्र कर्ण, चित्रसेन, विविंशति, भूरिश्रवा, शल्य, शल, दुर्धर्ष वृषसेन, पुरुमित्र, जय, भोज, युद्धनिपुण काम्भोज, राजा सुदक्षिण, सत्यव्रत, महाबाहु विकर्ण, दुर्मुख, प्रसिद्ध दुःशासन, सुबाहु, आयुध उठाये हुए कलिङ्गराज, उज्जैन के विन्द, अनुविन्द द्रोण, अश्वत्थामा, शकुनि तथा अनेक अन्य देशों के राजा लोग, अपनी अपनी सेनाओं सहित तुम्हें बीच में कर चलेंगे। अतः तुम चिन्तित मत हो। हे अमित पराक्रमी! फिर तुम भी तो स्वयं बड़े शूरवीर हो और रथियों में श्रेष्ठ हो। ऐसे हो कर भी तुम पाण्डवों से डरते क्यों हो, हे जयद्रथ! मेरी ग्यारह अक्षौहिणी सेनाएं तुम्हारी रक्षा करेंगी और तुम्हारे लिये लड़ेंगी। अतएव हे जयद्रथ! तुम मत डरो और अपने मन का भय निकाल डालो।

सञ्जय ने कहा—हे धृतराष्ट्र! जब आपके पुत्र ने जयद्रथ को इस प्रकार ढाँढस बँधाया, तब वह रात ही में दुर्योधन के साथ द्रोणाचार्य के पास गया। हे राजन्! वह द्रोण के चरण स्पर्श कर, उनके निकट बैठ गया और विनम्र भाव से उसने पूँछा—हे भगवन्! आप यह बतलावें कि दूर का

लक्ष्य बेंधने में, फुर्ती से बाण चलाने में अर्जुन और मुझमें कौन श्रेष्ठ है? हे आचार्य! हम दोनों में अस्त्रविद्या में अधिक निपुण कौन है? मैं यह जानना चाहता हूँ। आप ठीक ठीक बतलावें।

द्रोण ने कहा—हे तात! गुरु ने समान रूप से तुमको अध्ययन कराया है, किन्तु योगसाधन और वनवास के दुःखों को सहने के कारण अर्जुन में तुमसे सामर्थ्य अधिक है। तो भी तुम अर्जुन से डरो मत, क्योंकि मैं निश्चय ही तेरी रक्षा करूँगा। मेरे भुजबल से रक्षित का, देवता भी बाल बाँका नहीं कर सकते। मैं ऐसे व्यूहों को रचूँगा कि, उनमें अर्जुन घुस ही न सकेगा। अतएव हे महारथी! तुम डरो मत और अपने बापदादों का अनुसरण कर, क्षात्रधर्म का पालन करो। तुमने वेदाध्ययन किया है और तुम अग्निहोत्र करते हो। तुमने यज्ञ भी बहुत से किये हैं। अतः तुम मौत से क्यों डरते हो? यदि तुम मारे भी गये तो तुम उन अत्युत्तम दिव्य लोकों में जाओगे जो भाग्यहीन मनुष्यों को मिलना दुर्लभ है। ऐसे मरने के अवसर तो क्षत्रियों को बड़े भाग्य से मिलते हैं। हे सिन्धुराज! ये कौरव, पाण्डव, वृष्णि तथा अन्य समस्त जन, मैं और मेरा पुत्र—सब ही नाशवान् हैं। बलवान काल, धीरे धीरे हम सब को कवलित कर लेगा और हम अपने अपने कर्मों को साथ ले परलोक को जाँयगे। जो लोक तपस्वियों को तप द्वारा प्राप्त होते हैं, उन्हें वीर क्षत्रिय क्षात्र धर्म का पालन करने से ही प्राप्त कर लेते हैं।

जब आचार्य द्रोण ने जयद्रथ को इस प्रकार समझाया, तब उसके मन से अर्जुन का भय दूर हुआ और उसने युद्ध करना निश्चय किया। हे राजन्! उस समय आपकी सेना में भी हर्षध्वनि होने लगी और सिंहनाद के साथ साथ नगाड़े बजाये गये।

साठवाँ अध्याय

नल की जुए में हार

बृहदश्व बोले—हे युधिष्ठिर ! पवित्र कीर्ति वाला राजा नल, जब इस प्रकार मूढ़ चित्त हो, उन्मत्त की तरह जुआ खेलने लगा, तब सावधानचित्त दमयन्ती को केवल शोक ही ने नहीं, किन्तु भय ने भी व्याकुल किया। राजा नल का यह खोटा कर्म उसकी चिन्ता बढ़ाने का कारण हुआ। जब दमयन्ती ने देखा कि, राजा सर्वस्व जुए में हार गया, तब मन ही मन घोर अनर्थ की आशङ्का कर; राजा की हितैषिणी दमयन्ती ने अपनी धाय और दासी का काम करने वाली उस बृहत्सेना को बुलाया, जो उसका हित चाहने वाली, चतुर और मधुरभाषिणी थी। जब वह आयी, तब दमयन्ती ने उससे कहा—

हे बृहत्सेना ! तू महाराज की आज्ञा से मन्त्रियों के पास जा और उनको यहाँ बुला ला। उनको बतला देना कि, कितना धन (जुए में) गया और कितना अभी रहा है। सब मंत्री राजा नल की आज्ञा सुनते ही यह कहते हुए कि, हमारा बड़ा भाग्य जो हम बुलाये गये, प्रजा सहित सब राजा नल के राजभवन में दुबारा गये। उस समय दमयन्ती ने फिर राजा नल से कहा कि, महाराज ! पुरवासी दूसरी बार फिर आये हैं, किन्तु नल ने कुछ न सुना। इससे दमयन्ती को बड़ा दुःख हुआ और वह राजभवन में चली गयी और नल के विपरीत जुए का रुख देख और उसे सब धन हारते देख, दमयन्ती ने पुनः बृहत्सेना को बुलाया और उससे कहा—हे धात्री ! अब की बार तू जा कर राजा की आज्ञा सुना, वार्ष्णेय नामक सारथी को बुला ला। उससे कहना एक बड़ा ज़रूरी काम है। बृहत्सेना ने यह सुन, नौकरों के द्वारा, नल की आज्ञा जतला कर, उस सारथि को बुलवा लिया। तब पवित्र यश वाली और देश,काल को जानने वाली दमयन्ती ने मधुर वाक्यों से समझा कर, सारथि से समयानुकूल बातें कहीं। वह बोली—हे सारथी ! तुझे मालूम है कि, राजा का तेरे ऊपर कितना प्रेम है। अब इस,

मार डाले। अथवा हे कुरुनन्दन! तुम यदि मेरी इस समय रक्षा न कर सको तो तुम मुझे जाने की आज्ञा दो। मैं अपने घर को चला जाऊँ। जब जयद्रथ ने ऐसा कहा, तब दुर्योधन खिन्न हो गया और उसे कुछ भी उत्तर न दिया और नीची गर्दन कर सोचने लगा, जयद्रथ ने दुर्योधन को खिन्न देख कर, अपने हित के लिये दुर्योधन से नम्रभाव से कहा—मुझे तुम्हारी सेना में ऐसा कोई वीर्यवान नहीं देख पड़ता, जो महायुद्ध में अपने अस्त्रों से अर्जुन के अस्त्रों को रोक सके। श्रीकृष्ण की सहायता प्राप्त और गाण्डीव धनुष को टंकोरते हुए अर्जुन का सामना, मनुष्य तो क्या—इन्द्र भी नहीं कर सकते। सुना है, अर्जुन ने पूर्वकाल में पाँव प्यादे ही शिव जी से युद्ध किया था। इन्द्र की प्रेरणा से अर्जुन ने अकेले ही रथ पर सवार हो, हिरण्यपुरवासी हज़ारों राक्षसों का वध किया था। मेरा यह विश्वास है कि अर्जुन, धीमान् श्रीकृष्ण की सहायता से त्रिलोकी का संहार कर सकता है। अतः तुम मुझे घर जाने की आज्ञा दो या अश्वत्थामा सहित आचार्य द्रोण से मेरी रक्षा का मुझे वचन दिलाओ अथवा तुमने जो कुछ मेरे विषय में निश्चय किया हो सो बतलाओ।

हे अर्जुन! जब जयद्रथ ने यह कहा; तब दुर्योधन स्वयं आचार्य द्रोण के निकट गया और उनसे बड़ी अनुनय विनय कर, ज्यों त्यों कर जयद्रथ का आचार्य द्वारा समाधान करवा उसे घर जाने से रोक लिया। साथ ही आचार्य द्रोण ने जयद्रथ की रक्षा के लिये रथ सजा तथा अन्य उपायों को काम में लाने का निश्चय कर लिया है। कल की लड़ाई में कर्ण, भूरिश्रवा, अश्वत्थामा, दुर्जय, वृषसेन, कृपाचार्य और मद्रराज शल्य—ये छः महारथी सेना के अग्रभाग में रहेंगे। द्रोणाचार्य ने एक सैन्यव्यूह की रचना की है। उसका अगला भाग शकटाकार है और पिछला आधा भाग कमलाकार। उसका मध्य भाग कमल की कली जैसा है। उसी पद्मकर्णिका के बीच राजा जयद्रथ खड़ा जायगा। उस कर्णिका के बीच और एक सूचीव्यूह की रचना की गयी है, इसी सूची व्यूह के बीच युद्धदुर्मद जयद्रथ,

उन समस्त महारथियों से रक्षित हो स्थित रहेगा। वे छः महारथी धनुर्विद्या में, अस्त्रविद्या में, बल वीर्य में और कुलीनता में परमश्रेष्ठ हैं। इनके प्रहार को सहन करना कठिन है। ये बड़े दृढ़ हैं, इन छः महारथियों को परास्त किये बिना जयद्रथ तक पहुँचना असम्भव है। हे पुरुषव्याघ्र! तुम इन छओं महारथियों में से पृथक पृथक प्रत्येक के बल वीर्य एवं पराक्रम का विचार करो। एक साथ ही इन सब को परास्त करना असम्भव है। अतः अपने हितसाधन के लिये यह आवश्यक है कि, हम अपने राजनीतिज्ञ मंत्रियों और सुहृदों से कार्य को सिद्ध करने के विषय में सलाह करें।

छिहत्तरवाँ अध्याय

अर्जुन का दृढ़ अध्यवसाय

अर्जुन बोले—हे कृष्ण! जिन छः महारथियों को तुमने बड़ा बली समझा है, उन सब का सम्मिलित बल भी मेरे आधे बल के भी बराबर नहीं है। हे मधुसूदन! तुम देखोगे कि मैं, जयद्रथ-वधाभिलाषी इन सब महारथियों के अस्त्रों को अपने अस्त्रों से किस प्रकार नष्ट करता हूँ। मैं द्रोण की आँखों के सामने ही सेना सहित एवं विलाप करते हुए जयद्रथ का सिर काट कर पृथिवी पर गिरा दूँगा। हे मधुसूदन! इन छः महारथियों की तो बिसात ही क्या है, यदि साध्य देवता, रुद्र, वसु, अश्विनीकुमार, इन्द्र, वायु, असुर, पितर, गन्धर्व, गरुड़, विश्वेदेवा, समुद्र, पृथिवी, स्वर्ग, आकाश, दिशाएँ, दिक्पाल, ग्रामवासी, वनवासी और स्थावर जङ्गमात्मक यह समूचा जगत् भी जयद्रथ के सहायक एवं रक्षक बन कर कल के युद्ध में आवें, तो भी तुम्हारे सामने सत्य सत्य अपने आयुधों की शपथ खा कर कहता हूँ कि, तुम देखना, मैं कल जयद्रथ का सिर अपने अस्त्रों से काट कर फेंक दूँगा। हे केशव! दुर्मति एवं पापिष्ठ जयद्रथ के रक्षक आचार्य द्रोण

के ऊपर ही मैं सब से पहले आक्रमण करूँगा। दुर्योधन समझे बैठा है कि, इस युद्धद्यूत में वह आचार्य द्रोण द्वारा विजय प्राप्त कर लेगा। अतः पहले मैं द्रोण की सेना के अगले भाग को भंग कर जयद्रथ को पकड़ूँगा। हे कृष्ण! कल तुम मेरे पैने बाणों से बड़े बड़े शत्रुपक्ष के धनुर्धरों को वैसे ही विदीर्ण हुआ देखोगे, जैसे इन्द्र के वज्र से पर्वतशिखर विदीर्ण होते हैं। मेरे पैने बाणों से गिरे हुए हाथियों, घोड़ों और योद्धाओं के शरीरों से लोहू की धारें बहेंगी। मन और वायु के समान वेग वाले गाण्डीव धनुष से छूटे हुए मेरे बाण हज़ारों हाथियों, घोड़ों और मनुष्यों के शरीरों को निर्जीव कर डालेंगे। कल के युद्ध में मनुष्य देखेंगे कि, मुझे यम, कुबेर, इन्द्र और शिव से कैसे कैसे विकराल अस्त्र मिले हैं। मैं सिन्धुराज के रक्षकों के समस्त अस्त्रों को ब्रह्मास्त्र से काट दूँगा। तुम देखना। तुम कल समरभूमि को राजाओं के कटे हुए सिरों से आच्छादित देखोगे। कल मैं शत्रुओं का संहार कर, माँसभोजी राक्षसों को अघा दूँगा। शत्रुओं को भागना पड़ेगा। मैं मित्रों को कल हर्षित करूँगा, और जयद्रथ का वध करूँगा। रिश्तेदारी का तिल भर भी विचार न करने वाला घोर अपराधी, क्षुद्र, पापमय देश में उत्पन्न जयद्रथ, मेरे द्वारा मारा जा कर, अपने सम्बन्धियों को रुलावेगा। हे कृष्ण! तुम कल सब के हिस्से का दूध पीने वाले और अन्न खा जाने वाले पापी जयद्रथ को उसके साथियों सहित मेरे हाथ से मरा हुआ देखोगे। कल मैं ऐसा पराक्रम दिखलाऊँगा कि, जिसे देख कर, दुर्योधन यह समझ जायगा कि, अर्जुन की टक्कर का धनुषधारी और कोई नहीं है। हे पुरुषोत्तम! गाण्डीव जैसा धनुष, मुझ जैसा योद्धा और तुम्हारा जैसा सारथी होते हुए, मैं किसे नहीं जीत सकता। हे केशव! तुम्हारे अनुग्रह से युद्ध में मुझे कोई वस्तु दुर्लभ नहीं है। तुम जब यह स्वयं जानते हो कि, अर्जुन महासामर्थ्यवान् है, तब भी तुम मेरा अपमान क्यों करते हो? हे ज[illegible]! जैसे चन्द्रमा में कलङ्क और समुद्र में जल अचल है, वैसे ही तुम मेरी प्रतिज्ञा को भी अटल जानो। हे श्रीकृष्ण! तुम मेरे अस्त्रों

समस्त दुःखों की स्त्री के समान कोई दवा नहीं है। इसे आप सत्य जानिये।

अपनी रानी की इस उक्ति को सुन, राजा नल बोले—हे दमयन्ती! तुम्हारा कहना ठीक है। दुःखी मनुष्य की दवा उसका मित्र और सहधर्मिणी को छोड़ और कोई नहीं है। हे भीरु! मैं नहीं चाहता कि, मैं तुझे त्यागूँ। मैं अपने शरीर को भले ही त्याग दूँ, पर तुझे कभी न छोड़ूँगा।

दमयन्ती ने कहा—हे महाराज! यदि आप मुझे छोड़ना नहीं चाहते, तो फिर विदर्भदेश का मार्ग मुझे क्यों बार बार दिखलाते हैं? हे महीपते! मैं आपके शरण हूँ। आप मुझे न त्यागें। आपका मन कुछ फिर सा गया है, इसीसे मुझे सन्देह होता है कि, आप कहीं मुझे त्याग न दें। हे नरोत्तम! हे देवोपम! आप मुझे बारंबार रास्ता दिखलाते हैं। अतः मेरा शोक बढ़ता जाता है। हे राजन्! यदि आपकी यह इच्छा हो कि, मैं अपने स्वजनों के पास चली जाऊँ, तो आइये आप और मैं साथ ही साथ विदर्भ देश में चलें। हे राजन्! वहाँ विदर्भराज आपका सत्कार करेंगे और आप वहाँ सुखपूर्वक रहना।

बासठवाँ अध्याय

दमयन्ती का परित्याग

नल कहने लगे—हे देवी! यह मैं मानता हूँ कि, तेरे पिता का राज्य मेरा ही है, परन्तु इस दशा में मैं वहाँ नहीं जा सकता। क्योंकि एक बार जहाँ मैं बड़ी धूमधाम से जा चुका हूँ और तुझे प्रसन्न कर चुका हूँ, वहाँ मैं इस दीन-हीन-दशा में कैसे जाऊँ? मेरे वहाँ जाने से तेरी चिन्ता ही बढ़ेगी।

पशुओं का मलमूत्र निकल पड़ा। वे बुरी तरह चिल्लाने लगे। इन सब लोमहर्षणकारी दारुण अशुभ सूचक उत्पातों को देखा, हे राजन्! आपके पक्ष के समस्त योद्धा, अर्जुन की प्रतिज्ञा की बात को याद कर, उदास हो गये।

महाबाहु इन्द्रनन्दन अर्जुन ने श्री कृष्ण से कहा—हे कृष्ण! तुम जा कर सुभद्रा और पुत्रवधू उत्तरा को तो ढाँढस बँधाओ। हे प्रभो! समयानुसार वचन कह कर, सुभद्रा, पुत्रवधू उत्तरा और उनकी सेवा करने वाली परिचारिकाओं को समझा कर, उनका शोक दूर करो।

यह सुन, श्रीकृष्ण मन ही मन दुःखित होते हुए अर्जुन की छावनी में गये और पुत्रशोक से कातर, अपनी बहिन सुभद्रा को ढाँढस बँधाने लगे। श्रीकृष्ण ने कहा—हे बहिन! तुम पुत्र के लिये शोक मत करो और अपनी बहू को भी धीरज धराओ। काल ने समस्त प्राणियों और विशेष कर, क्षत्रिय वीर पुरुषों के लिये ऐसी ही गति का विधान किया है। पिता के समान पराक्रमी तुम्हारे महारथी पुत्र के भाग्य में ऐसी ही मृत्यु लिखी थी। अतः उसके लिये तुम दुःखी मत हो। तुम्हारे पुत्र ने क्षात्रधर्मानुसार अनेक शूरवीरों को यमालय भेज, अन्त में वीर पुरुषों की ईप्सित वीरगति प्राप्त की है। वह उन श्रेष्ठ तथा अक्षय्य लोकों में गया है, जो पुण्यात्मा पुरुषों को प्राप्त होते हैं। तप, ब्रह्मचर्य और ज्ञान से साधुजन जिस गति को पाते हैं, तुम्हारे पुत्र को वही गति प्राप्त हुई है। हे भद्रे! तुम वीरमाता, वीरपत्नी, वीरकन्या और वीर-बन्धु-बान्धवों से युक्त हो, अतः परम गति को प्राप्त अपने पुत्र के लिये तुम शोक मत करो। हे! वरारोहे! यह रात बीतते ही क्षुद्राभिलाषी, शिशुघाती एवं पापिष्ठ जयद्रथ अपने इष्ट मित्रों और बन्धु बान्धवों सहित अपने किये का फल चखेगा। यदि वह इन्द्रपुरी में भी चला जाय, तो भी अर्जुन के बाणों से जीता न बच पावेगा। कल तुम सुन लेना कि, अर्जुन के बाण से उसका सिर कट गया। तुम अब शोक त्यागो और रोना बंद करो। हम तथा अन्य शूर वीर पुरुष जो गति पाने की कामना किया करते हैं, वह गति अपने बल और पराक्रम

से अभिमन्यु ने प्राप्त की है। अत्यन्त पराक्रमी एवं महाबली तुम्हारा पुत्र अभिमन्यु स्वर्ग में गया है। उसके लिये तुम्हें शोक न करना चाहिये। महापराक्रमी, महारथी एवं महावीर अभिमन्यु पितृ-मातृ-कुल का अनुगामी हो, हज़ारों वीरों को धराशायी कर, तब स्वर्गलोक को सिधारा है। हे भद्रे! हे सुभद्रे! तुम स्वयं शोक त्यागो और बहू को धीरज धराओ। कल तुम बड़ा सुखदायी संवाद सुनोगी। अर्जुन की प्रतिज्ञा अवश्य सत्य होगी। क्योंकि तुम्हारे पति जो काम करना चाहते हैं, वह कभी विफल नहीं होता। कल प्रातःकाल होने पर, यदि मनुष्य, सर्प, पिशाच, देवता, राक्षस भी समरभूमि में जयद्रथ की रक्षा करने आवें, तो भी वह जीवित नहीं बच सकता। वह अपने रक्षकों सहित निश्चय ही यमालय जायगा।

अठहत्तरवाँ अध्याय

सुभद्रा का शोकप्रकाश

सञ्जय ने कहा—हे धृतराष्ट्र! महात्मा केशव के इन वचनों को सुन, पुत्रशोक से कातर, दुखियारी सुभद्रा के शोक का बाँध टूट गया। वह करुणाजनक स्वर से विलाप कर कहने लगी—बेटा! तू तो अपने पिता जैसा पराक्रमी था तो भी तू मुझ अभागिन का पुत्र युद्ध में क्यों कर मारा गया। हे वत्स! तेरे श्याम वर्ण सुन्दर दाँत और सुन्दर नेत्रों से युक्त प्रसन्न मुख को रणभूमि की धूल से आच्छादित देख, मुझसे धैर्य धारण क्यों कर किया जायगा? बेटा! तेरा मुख, तेरी गर्दन तेरी भुजाएँ और तेरे कँधे कैसे मनोहर थे। तेरा वक्षःस्थल कैसा विशाल और सुन्दर था। तेरा उदर कैसा सुडौल और शोभायमान था। तू बालक हो कर भी एक विख्यात शूरवीर योद्धा था। युद्ध में तू कभी पीछे पग नहीं रखता था। इस समय सब प्राणी तुझे मरा हुआ पृथिवी पर पड़ा देख रहे हैं। हे पुत्र! तू तो कोमल गद्दों पर सोने वाला था—सो शर्कों

से विंध कर तू पृथिवी पर कैसे पड़ा सोता होगा? हा! जिस महावीर की परिचर्या उत्तम स्त्रियाँ किया करती थीं, उसकी आज रणभूमि में स्यारिनें सेवा करती होंगी। सूत, मागध और वंदीजन जिसका स्तुतिगान किया करते थे, आज भयानक राक्षस गर्ज गर्ज कर उसकी उपासना करते होंगे। पाण्डवों, वीर वृष्णियों और वीर पाञ्चालों जैसे रक्षकों के होते हुए भी तुझे अनाथ की तरह किसने मार डाला? हे निर्दोष वत्स! मैं तो तुझे देखते देखते कभी तृप्त ही नहीं होती थी, सो मैं अभागिन अब तुझे कैसे देखूँगी। तुझे देखने को मैं अवश्य यममन्दिर में आती हूँ। विशाल नेत्र, घुँघराले बाल, मधुर वर्ण, सुन्दर निर्दोष तेरे मुख को हे बेटा! फिर मैं कब देखूँगी। धिक्कार है भीमसेन के बल को! धिक्कार है तेरे पिता के धनुर्धरपने को! धिक्कार है वृष्णियों और पाञ्चालों के बल को! धिक्कार है केकयों, चेदियों, मत्स्यों और सृञ्जयों को! ये सब रणभूमि में विद्यमान रहते भी तुझे न बचा सके। हाय! अभिमन्यु को देखे बिना मुझे यह संसार सूना देख पड़ता है। यह पृथिवी तेरे बिना मुझे कान्तिहीन सी जान पड़ती है। भैया कृष्ण! अभिमन्यु को देखे बिना मेरे नेत्र शोक से विकल हो रहे हैं।

हे बेटा! श्रीकृष्ण के भाँजे और अर्जुन के प्रिय पुत्र अतिरथी तुझ वीर को मैं पृथिवी पर पड़ा क्यों कर देखूँगी। हे बेटा! तू प्यासा होगा। आ! यहाँ आ!! तुझे देखने को लालायित अपनी अभागी माँ की गोद में बैठ, इन स्तनों के दूध को आ कर पान कर हे वीर पुत्र! स्वप्न के धन की तरह तू तो मुझे धोखा दे अदृश्य हो गया। ठीक है, मानव जीवन की बिसात ही क्या है! पानी के बुद्बुद की तरह उसे बिलाते देर ही क्या लगती है! बिना वत्स की गौ की तरह विरहशोक से कातर, तेरी इस युवती पत्नी को मैं क्या कह कर समझाऊँ! अरे बेटा! तेरी अभागिनी माता तुझे देखने को आतुर थी; उसे छोड़ तू कुसमय में क्यों चला गया। सच है, काल की गति को विद्वान् भी नहीं जान पाते। जब कृष्ण जैसे तेरे रक्षक थे, तब भी तू अनाथ की तरह मारा गया! हे पुत्र! यज्ञानुष्ठानशील, आत्मज्ञानी ब्राह्मण, ब्रह्मचारी, पुण्यतीर्थ

सेवा, कृतज्ञ, उदार, गुरुसेवापरायण और सहस्रों की दक्षिणा देने वालों को जो गति प्राप्त होती है, वही गति तुझे भी प्राप्त हुई है। संग्राम में कभी पीठ न दिखाने वाले के शत्रुओं वीरों को मार कर मरने वालों को जो गति प्राप्त होती है, तुझे वही गति प्राप्त हो। हे वत्स! तुझे वही गति प्राप्त हो, जो गति सहस्रों गोदान देने वालों, यज्ञ का फल देने वालों, गृहोपयोगी सामग्री सहित गृहदान करने वालों, शरणागत ब्राह्मणों को धनागार सौंप देने वालों और संन्यासियों को प्राप्त होती है। हे वत्स! जो गति ब्रह्मचारी व्रतधारी मुनियों को तथा पतिव्रता स्त्रियों को प्राप्त होती है, वही गति तुझे प्राप्त हो। सदाचारी राजाओं को तथा चारों आश्रमों के धर्म को पुण्यमय सुकृत्यों के द्वारा पालन करने से जो गति प्राप्त होती है, दीनों पर दया करने वाले, परनिन्दा से विरत पुरुषों को जो गति प्राप्त होती है, हे पुत्र! वही गति तुझे प्राप्त हो। धर्मशील, व्रती, गुरु-सेवा परायण और अतिथि को विमुख न लौटाने वालों को जो गति प्राप्त होती है, वही गति हे पुत्र! तुझे भी प्राप्त हो। आपत्ति में और सङ्कटों में पड़ने के कारण जो शोकाग्नि से दग्ध होने पर भी अपने आत्मा को धीरज धराते हैं, उनको जो गति प्राप्त होती है, वही गति तुझे भी प्राप्त हो। जो गति मातृ-पितृ-सेवा-परायण तथा एक पत्नी व्रत-धारियों को प्राप्त होती है, वही गति हे बेटा! तुझे भी प्राप्त हो। परस्त्री से खोटा काम न करने वालों तथा निज भार्या से भी ऋतुकाल ही में समागम करने वालों को जो गति प्राप्त होती है—हे बेटा! तुझे वही गति प्राप्त हो। मत्सरतारहित, सब को समान दृष्टि से देखने वालों, क्षमावानों और मर्मभेदी वचन न कहने वालों को जो गति प्राप्त होती है, वही गति हे पुत्र! तुझे भी प्राप्त हो। मद्य, माँस, मिथ्या तथा मद एवं अभिमान से दूर रहने वालों तथा दूसरों को न सताने वाले लोगों को जो गति प्राप्त होती है, हे बेटा! वही गति तुझे भी प्राप्त हो। लज्जालुओं, सकल शास्त्र-पारङ्गतों, ज्ञानवान् और जितेन्द्रियों और साधुपुरुषों को जो गति प्राप्त होती है—हे पुत्र! तुझे वही गति प्राप्त हो। शोक से कातर सुभद्रा, इस प्रकार विलाप कर ही रही थी

कि इतने में विराटनन्दनी उत्तरा और द्रौपदी भी वहाँ आ पहुँची। वे तीनों रुदन करती हुई पागलिनी की तरह विलाप करती करती अचेत हो भूमि पर गिर पड़ीं। यह देख श्रीकृष्ण बहुत दुःखी हुए और जल छिड़क तथा अन्य शीतोपचार कर उन्होंने तीनों को सचेत किया। फिर मूर्छित सी और मर्मान्तक पीड़ा से विकल तथा रुदन करती हुई अपनी बहिन सुभद्रा से श्रीकृष्ण ने कहा—हे सुभद्रा! तू अब शोक मत कर। हे पाञ्चाली! तू उत्तरा को धीरज धरा। क्षत्रियश्रेष्ठ अभिमन्यु को शुभगति प्राप्त हुई है। हे वरानने! मेरी तो यह कामना है कि, हमारे कुल में अन्य जो मनुष्य हैं, वे भी यशस्वी अभिमन्यु जैसी गति को प्राप्त हों। तुम्हारे एकाकी महारथी पुत्र ने जैसा अलौकिक पुरुषार्थ समरभूमि में दिखलाया है, वैसा ही अलौकिक पुरुषार्थ मेरे सब मित्र और मैं स्वयं दिखलाऊँ।

इस प्रकार अपनी बहिन सुभद्रा, द्रौपदी तथा उत्तरा को धीरज धरा श्रीकृष्ण, अर्जुन के पास लौट आये।

हे राजन्! तदनन्तर श्रीकृष्ण ने, अर्जुन, उनके भाइयों तथा अन्य समस्त राजाओं से समानुरूप बातचीत कर, अर्जुन के तंबू में प्रवेश किया और अन्य राजा भी अपने अपने डेरों में चले गये।

उनासीवाँ अध्याय

श्रीकृष्ण-दारुक-संवाद

सञ्जय बोले—हे धृतराष्ट्र! तदनन्तर पुण्डरीकाक्ष श्रीकृष्ण अर्जुन के तंबू में गये। वहाँ उन्होंने आचमन कर, एक चबूतरे पर, पन्नों की तरह हरे रंग के कुशे बिछा कर, बिस्तर लगाये। फिर उसके चारों ओर उत्तम उत्तम अस्त्रों शस्त्रों को उस शय्या की रक्षा के लिये रख दिया। फिर माङ्गलिक गन्ध माल्य अक्षतों से उसे अलङ्कृत किया। इतने में अर्जुन भी

आचमन करके पवित्र हो गये। तदनन्तर विनीत स्वभाव वाले सेवकों ने महादेव जी को अर्पण करने को रक्खा हुआ बलि ला कर दिया। अर्जुन ने हर्षित हो, गन्धपुष्पादि से श्रीकृष्ण का पूजन कर, रात्रि में दी जाने वाली बलि शिव को दी। तब श्रीकृष्ण ने मुसक्या कर पार्थ से कहा—हे पार्थ! तेरा मङ्गल हो। अब तू शयन कर। मैं तेरे कल्याण के लिये अब जाता हूँ। यह कह श्रीकृष्ण बाहिर आये और अर्जुन के तंबू की रक्षा के लिये शस्त्रधारी पहरे दारों को खड़ा कर, श्रीकृष्ण दारुक को साथ ले अपने तबू में चले गये। वहाँ आ मन ही मन अनेक विषयों पर सोचते विचारते वे सेज पर जा सो रहे। तदनन्तर कुछ देर सो चुकने के बाद राजराजेश्वर अर्जुन के प्रिय मित्र, यदुवंशियों और पाण्डवों के यश को बढ़ाने वाले, भगवान् श्रीकृष्ण योग का अवलम्बन कर, अर्जुन के तेज की वृद्धि और उसके दुःखों को दूर करने के लिये उपयोगी कार्यों का अनुष्ठान करने में प्रवृत्त हुए।

हे राजन्! उस रात को पाण्डवों की छावनी में किसी को भी नींद न पड़ी। सब ने जाग कर ही वह रात बितायी। उन लोगों को यही चिन्ता थी कि, पुत्रशोक से सन्तप्त अर्जुन ने जयद्रथ के वध की प्रतिज्ञा सहसा कर तो ली है, किन्तु वह अब उसे पूरी कैसे करता है। क्योंकि अर्जुन ने बड़ी कठिन प्रतिज्ञा की है और उधर जयद्रथ भी ऐसा वैसा वीर नहीं है। अतः वे लोग ईश्वर से प्रार्थना करते थे कि, हे परमात्मा! ऐसा हो कि अर्जुन अपनी प्रतिज्ञा से उत्तीर्ण हो। जयद्रथ के सहायक बड़े बलवान् हैं और शत्रुपक्ष की सेना भी विशाल है। उधर दुर्योधन ने भी जयद्रथ को यह बतला दिया है कि, यदि अर्जुन अपना प्रण न निभा सका, तो वह धधकती आग में गिर भस्म हो जायगा। अर्जुन अपनी प्रतिज्ञा का अन्यथा होना कभी सह नहीं सकेगा। अतः यदि कहीं अर्जुन न रहे, तो धर्मराज युधिष्ठिर कैसे जीवित रहेंगे। क्योंकि धर्मराज के विजय का मुख्य आधार तो अर्जुन ही है। अतः यदि हमारे कुछ भी सुकृत अवशेष हों,

यदि हमने दान दिये हों और हवन किया हो तो उन समस्त पुण्यों के फल से सव्यसाची अर्जुन अपने शत्रुओं को परास्त करें।

हे राजन्! अर्जुन की विजयकामना करते करते उन लोगों ने सारी रात दुःख में काट डाली। आधी रात होने पर अर्जुन की प्रतिज्ञा का स्मरण कर, श्रीकृष्ण, दारुक से बोले! पुत्रवध से क्रुद्ध अर्जुन का प्रण है कि, कल सूर्यास्त होने के पूर्व मैं जयद्रथ का वध करूँगा। हे दारुक! अर्जुन की यह प्रतिज्ञा दुर्योधन को विदित हो गयी है। वह कल इसका उद्योग करेगा कि अर्जुन, सिन्धुराज जयद्रथ को न मार पावे। उसकी समस्त सेनाएँ जयद्रथ की रक्षा करेंगी। अस्त्र-विद्या-विशारद आचार्य द्रोण अपने पुत्र अश्वत्थामा सहित जयद्रथ की रक्षा करने को उद्यत रहेंगे। दैत्यों दानवों के गर्व को खर्व करने वाले इन्द्र भी, द्रोण से सुरक्षित पुरुष को नहीं मार सकता। अन्य की तो बात ही क्या है? किन्तु मुझे कल ऐसा प्रबन्ध करना है, जिससे सूर्यास्त होने के पूर्व अर्जुन के हाथ से जयद्रथ मारा जाय। क्योंकि हे दारुक! मुझे अर्जुन जितना प्रिय है, उतने प्रिय मुझे अपनी स्त्री, मित्र, जाति वाले और बन्धु बान्धव भी नहीं हैं। मैं अर्जुन-हीन इस लोक में क्षण भर भी नहीं रह सकता। ऐसा होगा भी नहीं। मैं कल अर्जुन के लिये हाथियों, रथों और घोड़ों सहित कौरवों की समस्त सेना को कर्ण तथा दुर्योधन सहित पराजित कर, उनका संहार करूँगा। हे दारुक! कल इन तीनों लोकों के प्राणी मेरे बल वीर्य और पराक्रम को देखेंगे। कल हजारों राजे और सैकड़ों राजपुत्र घोड़ों, हाथियों और रथों सहित भाग जाँयगे। तुम देखना कल मैं पाण्डवों के लिये क्रुद्ध हो युद्धक्षेत्र में शत्रुसैन्य को चक्र से हटा कर, शत्रुओं का कैसे वध करता हूँ। कल, गन्धर्व, देवता, पिशाच, सूर्य, राक्षस तथा अन्य जीवधारी यह जान लेंगे, कि, मैं अर्जुन का मित्र हूँ और जो अर्जुन के वैरी हैं, वे मेरे भी वैरी हैं और जो अर्जुन के मित्र हैं, वे मेरे भी हैं।

इस प्रकार के वचन कह, श्रीकृष्ण ने दारुक से पुनः कहा—हे दारुक!

मलिन, आधी धोती लपेटे हुए, अकेली, अनाथिनी, विलाप करती, रोती और टोली से बिछुड़ी हुई हिरनी की तरह बिना कोई साथी रखने वाली की खबर आप क्यों नहीं लेते हैं। हे महाराज! इस घोर वन में मैं सती दमयन्ती अकेली भटक रही हूँ, और तुम्हें बुलाती हूँ तो भी तुम उत्तर क्यों नहीं देते? हे नरोत्तम! तुम चतुर और शीलवान् हो; तुम्हारे सब अङ्ग सुन्दर हैं। ऐसे आप मुझे आज इस पहाड़ पर ढूँढ़ने से भी नहीं देख पड़ते। हे नैषधराज! सिंहों और व्याघ्रों से सेवित इस घोर वन में, मैं किससे पूँछूँ कि, आप कहाँ सो रहे हैं या बैठे हैं या खड़े हैं। हाय मैं दुखियारी अब कहाँ जाऊँ? क्या करूँ, कौन आपका पता बतलावे? हाय मैं यह किससे पूछूँ कि, इस सघन वन में जाते हुए नल से कहीं तुम्हारी भेंट हुई थी और क्या तुमने उनको देखा था। हा मुझको ऐसी मधुर वाणी आ कर कौन सुनावे कि, हे दमयन्ती! जिस कमलनेत्र एवं शत्रुञ्जय नल को तू ढूँढ़ रही है, वह यह है। मैं तो अब इस वनराज शार्दूल के पास जाती हूँ. जिसके चार गोड़ हैं, जिसके बड़े बड़े ओठ हैं, और जो मेरे सामने चला आ रहा है। मैं निःशङ्क हो इससे कहूँगी कि, आप मृगों के राजा और इस वन के स्वामी हैं। मैं विदर्भराज दुहिता दमयन्ती हूँ, और शत्रुनाशकारी निषधाधिपति राजा नल की रानी हूँ। यदि आपने राजा नल को कहीं देखा हो तो मुझ अकेली दुखियारी, शोकाकुल और पति को खोजने वाली के मन को उनका संवाद सुना, शान्त कीजिये। हे वनराज! यदि आप मुझे नल का पता नहीं बताते, तो आप मुझे खा डालिये। जिससे मैं इस दुःख से छुटकारा तो पा जाऊँ। हाय! यह वनराज सिंह भी मेरे विलाप को सुन, मुझे धैर्य नहीं देता है। अब मैं इस नदी के पास जा कर पूँछूँ, जिसका पानी स्वादिष्ट है और जो समुद्र में जा कर गिरती है। अथवा मैं इस पहाड़ से राजा नल का पता पूँछूँ, जो चमचमाते, ऊँचे और मनोरम शिखरों वाला है, जो अनेक प्रकार की धातुओं और पत्थरों से जड़ा हुआ है, जो वन की ध्वजा की तरह ऊँचा खड़ा है,

गये। उस समय स्वप्न में अर्जुन ने देखा कि, गरुड़ध्वज श्रीकृष्ण उनके पास आये हुए हैं। सोते जागते जब कभी श्रीकृष्ण, अर्जुन के निकट आते, तब अर्जुन उनके प्रति सम्मान प्रकट करने के लिये उठ कर खड़े हो जाते थे। अतः स्वप्नावस्था में भी उन्होंने उठ कर श्रीकृष्ण को आसन दिया और स्वयं खड़े रहे। परम तेजस्वी आसीन श्रीकृष्ण ने अर्जुन के विचार को जान सामने खड़े अर्जुन से कहा—हे पार्थ! तुम खेद मत करो, काल दुर्जेय है। काल प्राणियों को अवश्यम्भावी कार्य में लगा देता है। हे मनुजश्रेष्ठ! तुम क्यों शोकान्वित हो रहे हो। शोक का कारण तो बतलाओ। हे विद्वद्वर! तुमको तो शोक नहीं करना चाहिये, क्योंकि शोक ही तो कार्य-विनाश का मूल है। हे धनञ्जय! तुम्हें जो कुछ करना हो, उसे करो। जो लोग केवल शोक ही शोक करते हैं और उद्योग नहीं करते, उनका वह शोक घोर शत्रु हो जाता है। शोकान्वित पुरुष अपने शत्रुओं की आनन्द-वृद्धि का हेतु होता है, अपने बन्धुओं को दुर्बल करता है और स्वयं क्षीण हो जाता है। अत तुमको शोक न करना चाहिये।

जब श्रीकृष्ण ने इस प्रकार समझाया, तब अपराजित एवं धीमान् अर्जुन ने कहा – हे केशव! मैंने जयद्रथ का वध करने की बड़ी कठिन प्रतिज्ञा की है। उधर धृतराष्ट्र के पुत्र मेरी प्रतिज्ञा को भङ्ग करने के लिये जयद्रथ को सब सेना के पीछे रखेंगे और शत्रुपक्ष के सब महारथी उसकी रक्षा करेंगे। हे कृष्ण! ग्यारह अक्षौहिणी सेना में जो वीर मरने से बच गये हैं, उन सब महारथी वीरों से सुरक्षित जयद्रथ, कैसे मुझे देख पड़ेगा। ऐसी दशा में मैं अपनी प्रतिज्ञा कैसे पूर्ण कर सकूँगा और मुझ जैसा पुरुष प्रतिज्ञा-भङ्ग होने पर जीवित कैसे रह सकता है? अतः मुझे अपनी कठिन प्रतिज्ञा के पूर्ण होने पर सन्देह हो रहा है। विशेष कर आज कल सूर्य जल्दी अस्त होते हैं, इससे मुझे और भी कठिनाई देख पड़ती है।

अर्जुन के शोक के कारण को सुन, गरुड़ध्वज श्रीकृष्ण ने आचमन किया और वे पूर्व की ओर मुख कर के बैठ गये, परम तेजस्वी एवं कृतकृत्य पुण्डरीकाक्ष

श्रीकृष्ण ने अर्जुन की हितकामना के लिये और जयद्रथ का वध करवाने के लिये, अर्जुन से कहा—हे पार्थ ! पाशुपत नामक एक प्राचीन और उत्तम अस्त्र है। उस अस्त्र से शिव जी ने युद्ध में समस्त दैत्यों का संहार किया था। यदि उस अस्त्र का ज्ञान तुम्हें हो जाय, तो निश्चय ही तुम कल जयद्रथ का वध कर आओगे, यदि उस अस्त्र को तुम न जानते हो तो मन ही मन शिव जी का ध्यान करो। हे धनञ्जय ! तुम महादेव जी का ध्यान करते हुए चुपचाप बैठ जाओ, शिव जी प्रसन्न हो, तुम्हें वह अस्त्र दे देंगे। श्रीकृष्ण के इन वचनों को सुन अर्जुन आचमन कर भूमि पर बैठ गये और मन को एकाग्र कर शिव जी का ध्यान करने लगे। शुभ ब्राह्ममुहूर्त काल में ध्यानमग्न अर्जुन ने देखा कि, वे श्रीकृष्ण सहित आकाश में उड़ रहे हैं। फिर उन्होंने देखा कि, वे सिद्धों और चारणों से सेवित मणिमान् तथा हिमाचल की तलैटी में पहुँचे। आकाश में उड़ते समय श्रीकृष्ण ने अर्जुन का दक्षिण हाथ पकड़ रखा था। श्रीकृष्ण और अर्जुन पवन की तरह तेज़ी के साथ उड़ते चले जा रहे थे। अर्जुन अद्भुत दृश्यों को देखते हुए उत्तर दिशा में पहुँचे और उन्होंने श्वेतपर्वत देखा। वहाँ से आगे बढ़े तो उन्हें कुबेर के विहारस्थल में कमलों से युक्त सरोवर देख पड़ा। तदनन्तर उन्होंने अगाध जल पूर्ण, पुष्पों और फलों वाले वृक्षों से उभय तट भूषित, स्फटिक जैसे उज्ज्वल पत्थरों से युक्त, सिंह, व्याघ्र, मृग तथा पक्षियों से सेवित, पवित्र आश्रमों से युक्त, गङ्गा जी को देखा, फिर किन्नरों के गान से प्रतिध्वनित, सुवर्ण और चाँदी के शृङ्गों वाले, विविध वनस्पतियों से प्रकाश, पुष्पभाराक्रान्त, मन्दार के वृक्षों से शोभित, मन्दराचल को देखा। फिर वे चिकने और अञ्जन के ढेर की तरह काल पर्वत को उन्होंने देखा। तदनन्तर उन दोनों ने ब्रह्मतुङ्ग नामक पर्वत तथा अनेक नदियाँ और देश देखे। वहाँ से आगे जाने पर उन्होंने शतशृङ्ग पर्वत को, शर्याति नामक वन को, अश्वशिरा ऋषि और आथर्वण नामक मुनि के पवित्र आश्रमों को देखा। वहाँ से वे वृषदंश नामक पर्वत और उसके आगे अप्सराओं तथा किन्नरों से सेवित महामन्दर नामक पर्वत पर गये। वहाँ उन

दोनों ने सुन्दर झरनों वाली सुवर्ण तथा अन्य धातुओं से शोभित, चन्द्र किरणों से प्रकाशमान, तथा नगर रूपी मालाओं से शोभित पृथिवी देवी को देखा। फिर विस्मयोत्पादक समुद्रों, अनेक खानों, आकाश, स्वर्ग और पृथिवी को देखते हुए अर्जुन, श्रीकृष्ण सहित छूटे हुए बाण की तरह वेग के साथ चले गये। फिर अर्जुन ने ग्रह, नक्षत्र, चन्द्रमा, सूर्य और अग्नि तुल्य चमकते हुए एक पर्वत को देखा। उस पर्वत के अग्रभाग पर अर्जुन ने शिव जी को देखा। अर्जुन ने सदा तपस्या में रत, सहस्रों सूर्य जैसी कान्ति से युक्त, शूल और जटाधारी, गौरवर्ण, वल्कल तथा मृगछाला पहिनने वाले, सहस्रों नेत्र होने के कारण विचित्र अङ्गों वाले, एवं महाबली शिव जी को देखा। उनके पास पृथिवी देवी और भूत गण विराज रहे थे। वे भूतगण बाजा बजा कर गान गा रहे थे। वे हँसते थे, नाचते थे, इधर उधर घूम कर मण्डलाकार नृत्य करते थे। शिव जी के शरीर पर दिव्य चन्दन का लेप हो रहा था। ब्रह्मज्ञानी ऋषि दिव्यस्तुतियों से उनका स्तव कर रहे थे। समस्त प्राणियों के रक्षक वृषभध्वज शिव का दर्शन कर, श्रीकृष्ण और अर्जुन ने उन्हें प्रणाम किया। फिर मनोयोग पूर्वक उनकी स्तुति की। वे बोले—हे शिव! तुम जगत् के आदि कारण हो। तुम विश्वकर्मा, अजन्मा, ईशान, अच्युत, मन से परे, कारणमूर्ति, आकाशमूर्ति, वायुमूर्ति तथा तेज के भाण्डार हो। तुम मेघों के बनाने वाले और पृथिवी की प्रकृति रूप हो। तुम देवताओं, दानवों, यक्षों और मनुष्यों के साधन रूप हो। तुम योगियों के परमधाम, ब्रह्मवेत्ताओं के ब्रह्मतत्व का भाण्डार प्रत्यक्ष दिखाने वाले, चराचर संसार के रचयिता और संहार करने वाले हो। तुम्हारा क्रोध काल के समान है। इन्द्र की तरह तुम ऐश्वर्यवान हो। सूर्य की तरह तेजस्वी और प्रतापादि गुणों के उत्पत्ति स्थान हो। श्रीकृष्ण ने इस प्रकार श्रीकृष्ण की स्तुति कर, उन्हें प्रणाम किया। अर्जुन ने भी शिव को समस्त प्राणियों का आदि कारण एवं भूत, भविष्यद् और वर्तमान का उत्पादक समझ, शिव जी को प्रणाम किया। समस्त देवताओं के स्वामी महादेव उन दोनों महात्माओं अर्थात् नर नारा-

पण को अपने निकट आये हुए देख प्रसन्न हुए और हँस कर उनसे बोले—हे पुरुषश्रेष्ठ! तुम भले आये। तुम लोग अपनी थकावट दूर कर खड़े हो जाओ। तुम्हारा जो मनोरथ हो उसे शीघ्र बतलाओ। तुम जिस काम के लिये आये हो, तुम्हारा वह काम मैं पूरा कर दूँगा। तुम कल्याण करने वाला वर अपने लिये माँगो। मैं तुम्हें तुम्हारी मनोकामना पूर्ण करने वाला वर दूँगा।

शिव जी के इन वचनों को सुन, महाबुद्धिमान् श्रीकृष्ण और अर्जुन ने हाथ जोड़ और विनयपूर्वक स्तुति वाक्यों से उनकी स्तुति की। वे बोले—हे प्रभो! तुम भव, सर्वात्मा और वरदान देने वाले पशुपति, नित्य, उग्र, और कपर्दी हो। हम तुम्हें प्रणाम करते हैं। तुम महादेव, भीम, त्र्यम्बक, शान्त, ईशान, भग नाम देव के नाशक और अन्धकासुर के संहारकर्त्ता हो। अतः तुम्हें प्रणाम है। तुम कुमार, तुम कुमार कार्त्तिकेय के पिता, नीलग्रीव, वेधा, पिनाकी, हविदान करने योग्य, पात्र, सत्य, और सर्वदा विभु हो। अतः तुम्हें प्रणाम है। तुम विशेष रूप से लोहित वर्ण, धूम्र रूप, अपराजित, नीलचूड़, त्रिशूलधारी, और दिव्यनेत्रों वाले हो। अतः हम लोग तुमको प्रणाम करते हैं। तुम हर्त्ता, गोप्ता, त्रिनेत्र, व्याधि रूप, वसुरेता, अचिन्त्य, अम्बिकापति और समस्त देवताओं के देव हो। अतः तुम्हें नमस्कार है। तुम वृषभध्वज, पिङ्ग, जटाधारी, जल के मध्य तप करने वाले, ब्रह्मण्य और अजित हो। अतः हम लोग तुम्हें प्रणाम करते हैं। तुम विश्वात्मा, विश्व स्रष्टा हो और संसार में व्याप्त हो, तुम स्थित हो। अतः हम तुमको नमस्कार करते हैं। तुम सब के सेव्य और सम्पूर्ण प्राणी तुम्हारे सेवक हैं। अतः तुम्हें बारंबार प्रणाम है। हे शिव! तुम वेदमुख हो। तुम सब प्राणियों के ईश्वर हो, तुम वाचस्पति और प्रजापति हो। अतः हम तुमको प्रणाम करते हैं। तुम जगत् के नियन्ता और महतत्वों के नियन्ता और सहस्रशिरा हो। तुम्हारे क्रोध से सहस्रों जीवों का संहार होता है। तुम सहस्र-

नेत्र और सहस्र चरण वाले हो; अतः हम लोग तुम्हें नमस्कार करते हैं। हे प्रभो! तुम असंख्य कर्मों वाले हिरण्यकवच तथा सुवर्ण कवच-धारी भक्तों पर सदा कृपा करने वाले हो, अतः हम दोनों की प्रार्थना सिद्ध हो।

सञ्जय ने कहा—इस प्रकार अर्जुन और श्रीकृष्ण ने अस्त्र पाने के लिये आशुतोष महादेव जी की स्तुति कर, उनको प्रसन्न कर लिया।

इक्यासीवाँ अध्याय

अर्जुन को पाशुपतास्त्र की प्राप्ति

सञ्जय ने कहा—हे धृतराष्ट्र! तदनन्तर प्रसन्न हो और हर्षोत्फुल्ल नेत्र वाले अर्जुन ने हाथ जोड़ कर तेजोनिधान भगवान् शिव की ओर देखा। नित्य नियम के अनुसार दिया हुआ उस रात का शिव जी का बलिदान, जो श्रीकृष्ण जी को चढ़ा दिया था, अर्जुन ने उसे, शिव जी के निकट पड़ा देखा। तदनन्तर अर्जुन ने श्रीकृष्ण और शिव की मानसिक पूजा कर महादेव जी से कहा—मैं आपसे दिव्यास्त्र प्राप्त करना चाहता हूँ। अर्जुन के शस्त्र पाने के लिये प्रार्थना को सुन कर, श्रीमहादेव जी ने मुसक्या कर श्रीकृष्ण और अर्जुन से कहा—हे नरश्रेष्ठो! तुम भले पधारे। तुम जिस मनोरथ के लिये आये हो—उसको मैं जान गया हूँ और तुम्हारी अभिलषित वस्तु मैं तुम्हें दूँगा। हे शत्रुओं का नाश करने वालो! निकट ही अमृत से पूर्ण एक दिव्य सरोवर है। मैं उसमें दिव्य धनुष और बाण रख आया हूँ। उस धनुष तथा बाण से मैंने समस्त देवशत्रुओं का नाश किया था। हे अर्जुन! हे कृष्ण! बाण सहित उस श्रेष्ठ धनुष को तुम सरोवर से निकाल लाओ। श्रीकृष्ण और अर्जुन बहुत अच्छा कह कर श्रीशिव जी के गणों के साथ, उस दिव्य सरोवर की ओर गये। शिव जी के बतलाये हुए उस सूर्य

के समान तेजस्वी उस सरोवर पर पहुँच कर श्रीकृष्ण और अर्जुन ने जल के भीतर एक भयानक सर्प देखा। उस सर्प के पास एक और सर्प देखा जो अपने मुख से अग्नि की ज्वालाएँ उगल रहा था। उस सर्प के एक हज़ार फन थे। यह देख, श्रीकृष्ण और अर्जुन हाथ जोड़ शिव जी को प्रणाम कर, उन सर्पों के निकट गये। वेदज्ञ वे दोनों सर्प एकाग्र मन कर, रुद्र के माहात्म्य का वर्णन करने लगे। तब वे दोनों सर्प अपने सर्प रूप को त्याग कर, शत्रुनाशकारी धनुष और बाण के रूप में देख पड़े। इस चमत्कार को देख श्रीकृष्ण और अर्जुन प्रसन्न हुए और धनुष बाण ला कर, महादेव जी को अर्पण किया। तदनन्तर शिव जी के पास से नीललोहित रंग का एक ब्रह्मचारी उठा। उसके नेत्र पीले थे। वह मूर्तिमान् तप सा था और महाबली था। उस ब्रह्मचारी ने वीरासन बाँध, वह धनुष और बाण ले लिया और उस श्रेष्ठ धनुष पर बाण रख, उसे विधिवत् खींचा। उस समय अचिन्त्य पराक्रमी अर्जुन उस धनुष के रोदे, धनुष की मुठिया और उस ब्रह्मचारी की बैठक को ध्यान से देखते रहे। साथ ही उस समय शिव जी ने जो मंत्र पढ़ा, उसे भी अर्जुन ने याद कर लिया। तदनन्तर उस बली ब्रह्मचारी ने बाण को धनुष पर चढ़ा, उसी सरोवर में फेंक दिया और पीछे उस धनुष को भी उसी सरोवर में फेंक दिया। अर्जुन ने समझा, शिव जी मेरे ऊपर प्रसन्न हैं। मेधावी अर्जुन ने शिव जी के उस वर को स्मरण किया, जो उन्होंने हिमालय के वन में दर्शन दे कर अर्जुन को दिया था। अब अर्जुन ने वही वर माँगा। भगवान् शिव ने अर्जुन का अभिप्राय जान लिया और उन्हें अपना घोर पाशुपतास्त्र दे दिया। उस समय मारे हर्ष के अर्जुन के रोंगटे खड़े हो गये और उन्होंने अपने को कृतकृत्य माना। महाघोर असुरों का नाश करने वाले इन्द्र और विष्णु ने जिस प्रकार महादेव जी के परामर्श से जम्भासुर के वध के लिये गमन किया था, उसी प्रकार श्रीकृष्ण और अर्जुन महादेव की वंदना कर और हर्षित हो अपने शिविर में आ उपस्थित हुए। यह सब कार्य स्वप्न ही में हुआ।

[नोट—अर्जुन और श्रीकृष्ण की कैलास यात्रा का यह प्रसङ्ग साफ़ साफ़ प्रक्षिप्त जान पड़ता है। क्योंकि वनपर्व के ४० वें अध्याय में अर्जुन को श्रीशिव जी से पाशुपतास्त्र की प्राप्ति हो चुकी है। देखो वनपर्व अ० ४०; श्लोक १२—२०। फिर वनपर्व के अ० १६७ के ५१ वें श्लोक में अर्जुन ने स्वयं श्रीशिव जी से पाशुपतास्त्र की प्राप्ति का वर्णन किया है।]

चौदहवें दिन का प्रभातकाल

बयासीवाँ अध्याय

युधिष्ठिर का नित्य कर्म

सञ्जय ने कहा — हे राजन्! श्रीकृष्ण और दारुक बातें कर रहे थे कि, इतने ही में रात व्यतीत हो गयी और सवेरा हो गया। धर्मराज युधिष्ठिर भी जागे। उस समय *पाणिस्वनिक, †मागध, ‡मधुपर्किक, §वैतालिक, और ||सूत—पुरुषश्रेष्ठ युधिष्ठिर की स्तुति करने लगे। गायक और नर्तक राग रागिनियों से मिश्रित सङ्गीत, मधुर कण्ठ से गाने लगे। इन स्तुतियों और गानों में कुरुवंश की स्तुति थी। अच्छी तरह अभ्यास किये हुए बजैया (साज़िंदा) मृदंग, झाँझ, भेरी, तबला, पटह, दुन्दुभि बजाने लगे। शङ्ख बजाने वाले शङ्ख की महाध्वनि करने लगे। मेघगर्जन की तरह वह शब्द आकाश में गूँज उठा। उसे सुन राजेन्द्र युधिष्ठिर जाग पड़े। महाराज

---

* तालों से ताल देते हुए गाने वाले 'पाणिस्वनिक' कहलाते हैं।

† वंशावलीकीर्तन करने वाले।

‡ मधुपर्क पान के समय स्तुति पाठ करने वाले।

§ प्रभातकाल उपस्थित होने पर राजा को जगाने के लिये स्तुतिपाठ करने वाले।

|| सूत = पुराणवक्ता।

युधिष्ठिर बहुमूल्य सेज पर सुख से पड़े हुए थे। वे उठे और आवश्यक कृत्यों से निश्चिन्त होने के लिये स्नानागार की ओर गये। वहाँ स्नानादि कर, सफ़ेद कपड़े पहिने हुए एक सौ आठ युवक खड़े थे और धर्मराज की प्रतीक्षा कर रहे थे। वे सुवर्ण के घड़ों में जल भरे हुए महाराज युधिष्ठिर के सामने गये। युधिष्ठिर एक छोटा वस्त्र पहिन कर एक पीढ़े पर बैठ गये। तब मंत्रों से अभिमन्त्रित तथा चन्दादि सुगन्ध द्रव्यों से युक्त जल से उन्होंने स्नान किये। चतुर एवं बलवान पुरुषों ने सर्वौषधि का उबटन कर उनका शरीर मला और शरीर का मैल छुड़ाया। फिर सुगन्धित जल से उन लोगों ने धर्मराज को स्नान कराये। फिर बालों का जल सोखने के लिये हंस जैसी सफ़ेद रंग की पगड़ी धीरे धीरे उनके सिर पर बाँधी। तदनन्तर धर्मराज अंगों पर हरिचन्दन लगा, माला पहिन, उत्तम वस्त्र धारण कर, पूर्व की ओर मुख कर बैठ गये और सन्ध्योपासन आदि नित्य कर्मों का अनुष्ठान करके, मन्त्र जपने लगे, सज्जनोचित मार्गारूढ़ युधिष्ठिर, विनम्र हो, प्रज्वलित अग्नि के निकट पहुँचे। समिधा तथा मंत्रों से पवित्र हुई आहुतियों को अग्नि में डाल अग्नि का पूजन किया। फिर वे अग्निहोत्रशाला के बाहर आये।

तदनन्तर महाराज युधिष्ठिर उस स्थान के अपर भाग में गये। वहाँ पर जा, उन्होंने देखा कि, वहाँ वेदवेत्ता, जितेन्द्रिय, वेदपाठी, अवभृथ-स्नान करने वाले, सहस्रों सेवकों वाले और सूर्योपासक एक सहस्र आठ वृद्ध ब्राह्मण उपस्थित हैं। धर्मराज ने उन ब्राह्मणों से अक्षत, पुष्प, मधु, घी तथा अन्य माङ्गलिक, बढ़िया फलों के द्वारा स्वस्तिवाचन करा कर, प्रत्येक ब्राह्मण को एक एक सुवर्णनिष्क दिया और सुसज्जित सौ घोड़े, कपड़े, कई एक सोने के सींगों और चाँदी के खुरों वाली सवत्सा कपिला गायें तथा इच्छानुकूल दक्षिणा ब्राह्मणों को दे कर, उनकी परिक्रमा की। तदनन्तर उन्होंने स्वस्तिक कटोरे, अर्घ्य से भरे सुवर्णपात्र, मालाएँ, जल-पूर्णकलश, प्रदीप्त अग्नि, तण्डुलयुक्त पात्र, बिजौरे नीबू, गोरोचन,

आभूषणों से सजी हुई कन्याएँ, दही, घी, मधु, जल और शुभपक्षी तथा अन्य मांगलिक वस्तुएँ के दर्शन किये और उनका स्पर्श किया। फिर वे बाहर की ड्योढ़ी पर गये। वहाँ नौकरों ने मोती और मणियों का जड़ाऊ सुन्दर पीढ़ा लाकर उनके सामने रखा। उस पर महाराज युधिष्ठिर बैठ गये। तब सेवकों ने उन्हें वस्त्र और आभूषण धारण कराये। जब कुन्तीनन्दन युधिष्ठिर मोती आदि रत्नों के जड़ाऊ आभूषण धारण कर उस सिंहासन पर बैठे; तब उनका रूप तथा उनकी सुन्दरता शत्रुओं के शोक को बढ़ाने लगी। सेवक लोग सोने की डंडी के चँवर, जो चन्द्रकिरण की तरह सफेद रंग के थे। उनके समीप खड़े हो, उनके ऊपर डुलाने लगे। उस समय वे बिजलियों से युक्त मेघों की तरह शोभायमान हुए। उस समय सूत मागध उनकी स्तुति और वन्दीजन उनकी वन्दना करने लगे। गन्धर्वों की तरह गायक लोग उनके स्तुतिसूचक गीत गाने लगे। तदनन्तर मुहूर्त्त भर के बाद, हाथियों के चिंघारने का, रथों की घरघराहट का, घोड़ों के हिनहिनाने का और उनके टापों का शब्द चारों ओर सुनायी पड़ने लगा। हाथियों के चलने पर, उनके हौदों से लटकते हुए घंटों का शब्द सुनायी पड़ा। मनुष्यों के पैरों के धप धप शब्द से भूमि थरथरा उठी। तदनन्तर कुण्डल, कवच और खड्गधारी एक युवा द्वारपाल ने भरी सभा में आकर, दोनों घुटने टेक, ज़मीन चूमी और इस प्रकार धर्मराज को प्रणाम कर, उसने कहा—महाराज! हृषीकेश श्रीकृष्ण जी पधारे हैं। धर्मराज ने उन्हें सभा में लाने की उसे आज्ञा दी। श्रीकृष्ण के अन्दर आने पर धर्मराज ने उनसे कुशल पूँछी और फिर बैठने का एक उत्तम आसन दे अर्घ्यादि प्रदान कर यथाविधि उनका पूजन किया।

तिरासीवाँ अध्याय

युधिष्ठिर और श्रीकृष्ण की बातचीत

सञ्जय ने कहा—हे धृतराष्ट्र! कुन्तीनन्दन युधिष्ठिर परम हर्षित हो देवकीनन्दन श्रीकृष्ण की प्रशंसा कर के कहने लगे—हे मधुसूदन! तुमने आज की रात सुख से तो व्यतीत की। हे अच्युत! तुम सब विषयों में सतर्क तो हो?

तदनन्तर श्रीकृष्ण ने भी इस प्रकार युधिष्ठिर से प्रश्न किये। इतने में द्वारपाल ने आकर सूचना दी कि, समस्त राजा लोग और मन्त्रीगण आये हैं। इस पर युधिष्ठिर ने उन सब को भीतर लाने की उसे आज्ञा दी। वे सब भी तुरन्त भीतर आ गये। उन आगन्तुकों में विराट्, भीमसेन, धृष्टद्युम्न, सात्यकि, चेदिराज, धृष्टकेतु, महारथी द्रुपद, शिखण्डी, नकुल, सहदेव, चेकितान, केकय, कौरव, युयुत्सु, पाञ्चाल, उत्तमौजा, युधामन्यु, सुबाहु, द्रौपदी के पाँचों पुत्र, तथा अन्य अनेक राजगण थे। वे सब उत्तम आसनों में बैठ गये। तब उन सब को सुना कर, युधिष्ठिर ने श्रीकृष्ण को सम्बोधन कर मधुर वाणी से कहा—हे कृष्ण! जैसे देवगण केवल सहस्राक्ष इन्द्र के आसरे रहते हैं. वैसे ही हम लोग उसी प्रकार से तुम्हारे सहारे रह विजय एवं परम सुख प्राप्त करने की अभिलाषा करते हैं। तुम्हें हमारे राज्यनाश, शत्रुविद्रोह, तथा अन्य समस्त प्रकार के कष्टों का हाल अवगत है। हे सर्वेश्वर! हे मधुसूदन! हे भक्तवत्सल! हम सब का सुख तुम्हारे ही हाथ है। तुम्हीं हमारे सब बातों के उपाय स्वरूप हो। हे वार्ष्णेय! तुम ऐसा करो कि, मेरी प्रीति तुममें सदा बनी रहे और अर्जुन की प्रतिज्ञा सत्य हो। तुम दुःख रूपी समुद्र से हमें उद्धार करो। हे माधव! हम इस दुःखसागर के पार जाना चाहते हैं। अतः तुम हमारा उद्धार करो। हे माधव! इस समुद्र के पार होने में तुम हमारी नौका बनो। हे कृष्ण! युद्ध में सारथि बलवान् हो कर, जैसा काम कर सकता है, वैसा काम

शत्रुवध के लिये उद्यत रथी भी नहीं कर सकता। हे जनार्दन! तुम जैसे वृष्णियों को सब आपत्तियों से बचाते हो, वैसे ही इस दुःख से तुम हमारी रक्षा करो। हे शङ्ख-चक्र-गदाधारी! तुम कौरव रूपी अगाध सागर में नौका-हीन एवं डूबते हुए पाण्डवों की नौका बन कर उन्हें बचाओ, हे देव! हे देवेश! हे संहारकारिन्! हे विष्णो! हे जिष्णो! हे हरे! हे कृष्ण! हे वैकुण्ठपते! हे पुरुषोत्तम! हम तुम्हें नमस्कार करते हैं। नारद जी तुमको पुराणपुरुष, ऋषिश्रेष्ठ, वरद, शार्ङ्गधनुर्धर और श्रेष्ठदेव बतलाते हैं। अतः हे माधव! तुम उनके वचन को सत्य करो।

जब धर्मराज युधिष्ठिर ने ये वचन कहे, तब वाग्विदाम्वर और मेघ तुल्य गम्भीर स्वर वाले श्रीकृष्ण ने युधिष्ठिर से कहा—हे धर्मराज! अर्जुन की टक्कर का धनुर्धर, किसी लोक और देवताओं में भी कोई नहीं है। अर्जुन तो वीर्यवान्, अस्त्रविद्या का ज्ञाता, पराक्रमी, महाबली, युद्ध में चतुर, और मनुष्यों में परम तेजस्वी है। तरुण साँड़ की तरह कंधों वाला, सिंह जैसी गति वाला, महाबलवान अर्जुन, तुम्हारे शत्रुओं का संहार करेगा। मैं ऐसी रचना रचूँगा कि, कुन्तीनन्दन अर्जुन, धृतराष्ट्र के पुत्रों की सेना को वैसे ही नष्ट कर डाले, जैसे अग्नि घास फूस को जला कर भस्म कर डालता है। अभिमन्यु को मारने वाले, पापी, नीच जयद्रथ को अर्जुन आज ही अपने तीक्ष्ण बाणों से यमलोक भेज देंगे। आज जयद्रथ के माँस को गीध, बाज, स्यार तथा अन्य माँसभक्षी प्राणी खाँयगे। यदि आज इन्द्रादि समस्त देवता भी जयद्रथ के रक्षक बन कर आवें, तो भी वह न बचेगा और निश्चय ही आज वह यमालय जायगा। हे राजन्! अर्जुन आज जयद्रथ का काम पूरा कर के ही तुम्हारे निकट आवेगा। तुम्हें निस्सन्देह राज्य और ऐश्वर्य की प्राप्ति होगी, अतः तुम चिन्ता और शोक को परित्याग करो।

चौरासीवाँ अध्याय

अर्जुन की युद्धयात्रा

संजय ने कहा—हे धृतराष्ट्र ! इतने ही में अर्जुन भी अपने बड़े भाई महाराज युधिष्ठिर तथा अपने मित्रों से मिलने के लिये वहाँ आये। महाराज के प्रणाम कर, वे उनके सामने खड़े हो गये। तब धर्मराज ने उठ कर अर्जुन को बड़ी प्रीति के साथ गले लगाया, उनका मस्तक सूँघा और फिर हृदय से लगा उनको अनेक आशीर्वाद दे, मुसक्या कर उनसे कहने लगे—हे अर्जुन ! तुम्हारे मुख की कान्ति देख मुझे विश्वास हो गया है कि, युद्ध में तुम्हारी जीत होगी। श्रीकृष्ण जी तुम्हारे ऊपर प्रसन्न हैं।

यह सुन अर्जुन बोले—महाराज ! श्रीकृष्ण के अनुग्रह से, मुझे आज रात में एक बड़ा विस्मयोत्पादक दृश्य स्वप्न में देख पड़ा है। आपका मङ्गल हो। तदनन्तर अर्जुन ने अपने सगे नातेदारों का धीरज धराने के लिये स्वप्न का सारा वृत्तान्त कह सुनाया। उसे सुन सब लोगों को बड़ा विस्मय हुआ। सबने माथा टेक, शिव जी को प्रणाम किया। फिर वे कहने लगे—बहुत अच्छा, बहुत अच्छा। तदनन्तर धर्मराज की आज्ञा से वे सब लोग तुरन्त लड़ने को तैयार हो गये और अस्त्र शस्त्र बाँध समर क्षेत्र की ओर प्रस्थानित हुए।

युयुधान, श्रीकृष्ण और अर्जुन धर्मराज को प्रणाम कर, उनके डेरे से रवाना हुए। दुर्धर्ष वीर सात्यकि और श्रीकृष्ण एक रथ पर सवार हो, अर्जुन के खेमे की ओर गये। वहाँ पहुँच श्रीकृष्ण ने अर्जुन का कपिध्वज रथ तैयार किया। मेघ गर्जन जैसा शब्द करने वाला और उत्तम सुवर्ण जैसी चमक वाला, वह उत्तम रथ, प्रातःकालीन सूर्य की तरह शोभायमान जान पड़ता था। श्रीकृष्ण ने युद्ध की सब आवश्यक तैयारियाँ कीं। इतने में नित्य कर्म से निश्चिन्त हो अर्जुन भी आगये। उस समय अर्जुन के माथे पर मुकुट, शरीर पर सुवर्ण का कवच और हाथ में धनुष बाण थे। तुरन्त ही

युद्धोपस्कर से युक्त श्रीकृष्ण ने ले जा कर अर्जुन के सामने खड़ा किया। अर्जुन ने उस रथ की परिक्रमा की। उस समय तप-विद्या-अवस्था में वृद्ध, जितेन्द्रिय एवं कर्मनिष्ठ ब्राह्मणों ने अर्जुन को विजयाशीर्वाद दिये और उनकी प्रशंसा कर उन्हें उत्साहित किया। उनके आशीर्वाद अर्जुन ने शिरोधार्य किये। फिर विजयप्रद सांग्रामिक मन्त्रों से अभिमन्त्रित किये हुए रथ पर वे वैसे ही चढ़े जैसे उदायचल पर सूर्य। सुवर्ण कवचधारी, सुवर्ण के दिव्य रथ पर सवार अर्जुन, उस समय वैसे ही शोभायमान हुए जैसे विमल रश्मि वाले सूर्य मेरु पर्वत पर शोभित होते हैं। शर्याति के यज्ञ में सम्मिलित होने को आते हुए इन्द्र के आगे जैसे दोनों अश्विनीकुमार बैठे थे, वैसे ही श्रीकृष्ण और युयुधान, अर्जुन के सामने बैठे। उस समय श्रीकृष्ण ने घोड़ों की रासें वैसे ही थामीं, जैसे वृत्रासुर का वध करने के लिये जाते हुए इन्द्र के घोड़ों की रासें मातलि ने थामी थीं। तिमिरनाशक चन्द्र जैसे बुध और शुक्र के साथ रथ पर बैठता है, तारकामय संग्राम में जैसे इन्द्र, मित्र और वरुण सहित रथ पर सवार हुए थे, वैसे ही रथियों में श्रेष्ठ, जयद्रथ को मारने के लिये, शत्रु समूह-नाशक अर्जुन भी श्रीकृष्ण और युयुधान के साथ उस उत्तम रथ पर सवार हो युद्ध करने को रवाना हुए। अर्जुन की युद्धयात्रा के समय मागधों ने माङ्गलिक बाजे बजाये, शुभ स्तोत्रों के पाठ किये और शूर अर्जुन की प्रशंसा की। मागधों के विजय सूचक आशीर्वादों की तथा पुण्याहवाचन की ध्वनि, बाजों के शब्द के साथ मिल, पाण्डवों को हर्षित करने लगी। जिस समय अर्जुन ने यात्रा की उस समय सुगन्धित पवित्र पवन बहने लगा, इससे अर्जुन हर्षित हुए और उनके शत्रु सूख गये। उस समय पाण्डवों के विजय-सूचक विविध प्रकार के शुभ शकुन हुए और हे राजन्! आपके पुत्रों के पराजय-सूचक आपकी ओर अपशकुन हुए। अर्जुन शुभ शकुनों को देख, सात्यकी से बोले—हे शिनिपुङ्गव! हे युयुधान! इन शुभ शकुनों के देखने से तो साफ प्रकट होता है कि, आज के युद्ध में निश्चय ही मेरा विजय होगा। अतः जहाँ

पर जयद्रथ हो, वहीं तुम मेरे रथ को हाँक कर ले चलो। क्योंकि यमालय जाने के लिये जयद्रथ खड़ा खड़ा मेरी प्रतीक्षा कर रहा होगा। जयद्रथ का वध और धर्मराज की रक्षा-मेरे लिये ये दोनों ही कार्य परमावश्यक है। अतः तुम तो धर्मराज की रक्षा करो। क्योंकि मेरी ही तरह तुम भी उनकी रक्षा कर सकते हो। मुझे तो इस जगत् में तुम्हें परास्त करने वाला कोई देख नहीं पड़ता। तुम बल, पराक्रम में श्रीकृष्ण के समान हो। तुम्हें तो देवराज इन्द्र भी नहीं जीत सकते। मुझे तुम्हारे और प्रद्युम्न पर पूर्ण विश्वास है। अतः हे नरश्रेष्ठ! युधिष्ठिर की ओर से निश्चिन्त हो कर ही मैं जयद्रथ का वध कर पाऊँगा। हे सात्यकि! मेरी तुम बिल्कुल चिन्ता मत करना। तुम युधिष्ठिर की रक्षा ही में सर्वतोभाव से संलग्न रहना। जहाँ महाबाहु श्रीकृष्ण और मैं हूँ, वहाँ किसी भी प्रकार की आपत्ति की आशङ्का तो करनी ही न चाहिये। वहाँ तो विजय अवश्यम्भावी है।

जब अर्जुन ने इस प्रकार कहा—तब शत्रुनाशक सात्यकि-बहुत अच्छा कह कर, युधिष्ठिर के निकट चला गया।

प्रतिज्ञापर्व समाप्त

अथ जयद्रथ वध पर्व

चौदहवाँ दिन

पचासीवाँ अध्याय

धृतराष्ट्र की व्यग्रता

धृतराष्ट्र बोले—हे सञ्जय! अभिमन्यु वध से सन्तप्त और शोक-निमग्न पाण्डवों ने अगले दिन क्या किया? मेरे पुत्र की ओर से उस दिन पाण्डवों से कौन कौन लड़े? कौरवों को तो अर्जुन का बल पराक्रम भली भाँति विदित था। तो भी वे अर्जुन को छेड़ कर, निर्भय कैसे रहे? मुझे

अब यह वृत्तान्त सुनाओ। पुत्र शोक से सन्तप्त एवं भय और मृत्यु की तरह क्रुद्ध, नरव्याघ्र अर्जुन को आते देख, मेरे पुत्र उसके सामने कैसे टिक सके होंगे? कपिध्वज और धनुष को टंकारते हुए, पुत्रशोकातुर अर्जुन को देख, मेरे पुत्रों ने क्या किया? हे सञ्जय! उस युद्ध में दुर्योधन का क्या हाल था? क्योंकि मुझे तो आज हर्षनाद सुन नहीं पड़ता, केवल शोक-ध्वनि ही सुनायी पड़ रही है। आज के पूर्व जयद्रथ के शिविर में जैसे मनोहर एवं सुखद शब्द सुनायी पड़ते थे, वैसे तो आज सुन नहीं पड़ते। मेरे पुत्रों के शिविर में सूतों, मागधों और नर्तकों के दल के दल नित्य ही स्तुतिगान किया करते थे। आज उनके स्तुतिगान की ध्वनि तो सुनायी नहीं पड़ती। दीनजनों की याचना के शब्द जो मुझे सदा सुन पड़ते थे, वे भी तो आज नहीं सुन पड़ते। हे सञ्जय! मैं बैठा बैठा, सत्यपराक्रमी सोमदत्त के शिविर में, उसकी प्रशंसा के गीत सुना करता था, किन्तु उनके बदले आज मुझ अभागे को तो आर्त्तनाद के शब्द सुन पड़ते हैं। हा! मुझे अपने पुत्रों के शिविर भी आज उत्साहहीन से जान पड़ते हैं। विविंशति, दुर्मुख, चित्रसेन, विकर्ण और मेरे अन्य पुत्रों के शिविरों में भी पूर्व जैसी हर्षध्वनि नहीं हो रही है। ब्राह्मण, क्षत्रिय, और वैश्य जाति के शिष्यगण, जिनकी सेवा शुश्रूषा किया करते हैं, जो प्रसिद्ध महाधनुर्धर हैं, जो मेरे पुत्रों के कथनानुसार कार्य किया करते हैं, जो वितण्डावाद, वाद, सम्भाषण, विविध प्रकार के वाद्यों की ध्वनि में तथा मधुर सङ्गीत में सदा अनुरक्त रहते हैं और जिनकी सेवा में कौरव, पाण्डव एवं सात्वतवंशी राजागण उपस्थित रहा करते हैं; हे सञ्जय! उन अश्वत्थामा के शिविर से भी तो पहले जैसी हर्षध्वनि नहीं सुन पड़ती। महाधनुर्धर अश्वत्थामा की सेवा में जो गवैया और नचैया रहा करते थे, आज उनके गाने नाचने का भी शब्द तो नहीं सुन पड़ता। विन्द और अनुविन्द के शिविर में तथा केकयों के शिविरों में सन्ध्या समय, नित्य नाचना गाना हुआ करता था, उनके गाने नाचने का शब्द भी नहीं सुन पड़ता। श्रुतनिधि सोमदत्त के शिविर में वेदध्वनि करने वालों की वेदध्वनि

भी नहीं सुनायी पड़ी। द्रोण के शिविर में सदा रोदों की टङ्कार, वेदध्वनि, तोमरों एवं तलवारों की झङ्कार, और रथों की घरघराहट सुनायी पड़ती थी। आज द्रोण के शिविर में भी सन्नाटा है। विविध देशवासियों के विविध प्रकार के गीत भी आज नहीं सुन पड़ते। जब उपप्लव्य में सन्धि कराने को श्रीकृष्ण आये थे—तब मैंने मूढ़ दुर्योधन से कहा था कि बेटा! श्रीकृष्ण के कथनानुसार तू पाण्डवों से सन्धि कर ले। सन्धि करने का यह अच्छा अवसर है। इसे तू हाथ से मत निकाल और मेरे कथन का तिरस्कार मत कर। तेरी भलाई ही के लिये श्रीकृष्ण सन्धि कराने आये हैं। यदि इस समय तूने सन्धि न की तो युद्ध में तू पाण्डवों से जीत न सकेगा। उस समय श्रीकृष्ण ने बहुप्रकार अनुनय विनय कर दुर्योधन को बहुत समझाया, किन्तु हठी दुर्योधन ने उनकी बात न मानी। मेरी सलाह न मान, दुर्योधन ने दुःशासन और कर्ण की सलाह मानी। क्योंकि उसके सिर पर तो काल खेल रहा है। मैं तो हे सञ्जय! उसी समय जान गया था कि घोर संहार होने वाला है। फिर जब दुर्योधन जुआ खेलने को उद्यत हुआ, तब भी मैंने उस कुकृत्य को रोकना चाहा। विदुर ने भी रोकने का बहुत कुछ प्रयत्न किया। भीष्म और जयद्रथ ने भी इस काम में अपनी असम्मति प्रकट की, शल्य, भूरिश्रवा, पुरुमित्र, जय, अश्वत्थामा, कृपाचार्य और द्रोण ने भी जुए को बुरा बतलाया। किन्तु किसी की कुछ भी न चली। यदि मेरे पुत्र दुर्योधन ने इन लोगों का कहना तब मान लिया होता, तो वह चिरकाल तक अपने मित्रों, सुहृदों और भाई बिरादरी वालों के साथ सुखमय जीवन बिताता।

हे सञ्जय! दुर्योधन को समझाते समय मैंने उससे यह भी कहा था कि, पाण्डव सरल स्वभाव के हैं। मधुरभाषी हैं, वे जाति बिरादरी वालों से कभी कटुवचन नहीं कहते। वे कुलीन, मान्य एवं बुद्धिमान हैं। वे कभी दुःखी नहीं रह सकते। वे तो सदा सुखी रहेंगे। क्योंकि इस लोक में धर्मात्मा को सर्वत्र सुख ही सुख मिलता है और मरने पर भी उनको अक्षय्य

होता है। ऐसे ऐसे लोग बिना प्रयास प्रीति करते हैं, पाण्डवों में इतनी शक्ति है कि, वे आसमुद्रान्त धरामण्डल को हस्तगत कर, उस पर शासन कर सकते हैं। आसमुद्रान्त यह धरामण्डल उनकी पैतृक सम्पत्ति है। यदि पाण्डव राज्य से वञ्चित भी कर दिये गये, तो भी वे धर्म का परित्याग न करेंगे। फिर मेरे ऐसे अनेक सगे सम्बन्धी हैं, जिनका कहना पाण्डव कभी टाल नहीं सकते। शल्य, सोमदत्त, महात्मा भीष्म, द्रोण, विकर्ण, बाल्हीक, कृप तथा अन्य भरतवंशी महात्मा वृद्ध लोग, तुम्हारे हित के लिये पाण्डवों से जो कुछ कहेंगे, वे बातें पाण्डवों को निश्चय ही मान्य होंगी। अतः बेटा! तू सन्धि कर ले। इन लोगों के कहने के विरुद्ध चलने वाला पाण्डवों में कौन है? फिर हे वत्स! यह श्रीकृष्ण किसी दशा में भी धर्म को नहीं त्याग सकते और वे सब के सब श्रीकृष्ण के अनुयायी हैं। इन सब की बात दूर रही, यदि मैं ही उन वीरों से न्याय की कोई बात कहूँ, तो वे उसे कभी अमान्य नहीं ठहरावेंगे। क्योंकि पाण्डव धर्मात्मा हैं।

हे सूत! इस प्रकार अनुनय विनय कर, मैंने दुर्योधन को बहुत कुछ ऊँच नीच समझाया परन्तु उसके मन पर मेरी एक बात न चढ़ी। अतः मैं समझता हूँ कि, समय ही हमलोगों के विपरीत है। सञ्जय! मैंने दुर्योधन से यह भी कहा था कि, जिस ओर भीम, अर्जुन, वृष्णिवीर सात्यकि, उत्तमौजा, दुर्जययुधामन्यु, दुर्धर्ष धृष्टद्युम्न, अपराजित शिखण्डी, अश्मक, केकय, सोमक-नन्दन क्षत्रधर्मा चेदिराज, चेकितान, काशिराज के पुत्र विभु, द्रौपदी के पाँचों पुत्र, विराट, महारथी द्रुपद, पुरुषसिंह नकुल और सहदेव होंगे और मधुसूदन श्रीकृष्ण जिनके मन्त्री होंगे उस पक्ष से जीतना तो जहाँ तहाँ, उस पक्ष से जीवित बच आने का भी पूर्ण सन्देह है इन लोगों से दिव्यास्त्रों की टक्कर कौन ले सकता है। हाँ दुर्योधन, कर्ण, सुबल पुत्र शकुनि और चौथे दुःशासन को छोड़, कौरव सेना में पाँचवाँ वीर तो मुझे कोई देख नहीं पड़ता। जिनकी ओर श्रीकृष्ण हाथ में घोड़ों की रासें ले कर, रथ पर सारथी का काम करते हैं। जिनकी ओर अर्जुन जैसा शस्त्रधारी योद्धा है,

उनकी पराजय कैसी? यह कह मैंने दुर्योधन के सामने बहुत सिर मारा परन्तु दुर्योधन ने मेरी एक न सुनी।

हे सञ्जय! तुम कहते हो नरव्याघ्र भीष्म और द्रोण* मारे गये। अतः दीर्घदर्शी विदुर की भविष्यद्वाणी ठीक होती देख पड़ती है। क्योंकि अर्जुन और सात्यकि द्वारा किये गये, अपनी सेना का तिरस्कार देख, मैं कह सकता हूँ कि, मेरे पुत्र शोक में डूबे होंगे। हाय! रथों को योद्धाओं से रीते देख, मेरे पुत्र रो रहे होंगे। ग्रीष्मऋतु की सूखी घास को जला डालने वाली आग की तरह, अर्जुन मेरे पक्ष की सेना को भस्म कर रहा होगा। हे सञ्जय! तुम वृत्तान्त वर्णन करने में पटु हो, अतः मुझे समस्त वृत्तान्त सुनाओ। हे तात! जब तुम अभिमन्यु का वध कर और अर्जुन के प्रति घोर अपराध कर, सन्ध्या होने पर, शिविर में आ गये थे, तब तुम्हारे मन में क्या ऊहापोह हुआ था? मुझे इस बात का निश्चय है कि, मेरे पुत्र, अर्जुन को भड़का कर, उसका सामना कदापि नहीं कर सकेंगे। अर्जुन के पुत्र को मार, दुर्योधन, कर्ण, दुःशासन एवं शकुनि ने जो प्रतीकार सोचे और किये वे भी मुझसे कहो। मेरे मूढ़ पुत्र के दोष से, हे सञ्जय! संग्राम में एकत्र मेरे समस्त पुत्रों ने क्या क्या किया? लोभी, दुर्बुद्धि, क्रोधातुर, राज्यकामुक एवं मदोन्मत्त दुर्योधन ने जो भले बुरे कर्म किये हों—वे सब तुम मुझे सुनाओ।

छियासीवाँ अध्याय

सञ्जय का धृतराष्ट्र पर आक्षेप

सञ्जय ने कहा—हे धृतराष्ट्र! मेरी तो सारी घटना प्रत्यक्ष देखी हुई है, अतः मैं आपको उसका पूरा पूरा वृत्तान्त सुनाऊँगा। आप स्थिर हो कर

* धृतराष्ट्र ने यह बात मन की व्यग्रता के कारण कही है। क्योंकि अभी तक द्रोणाचार्य नहीं मारे गये—वे अभी जीवित हैं।

सुनिये। इस विषय में आपने भी तो महाअर्थनीति का ज्ञान किया है। हे राजन्! आपका विलाप करना अथवा पश्चात्ताप करना ठीक वैसा ही निरर्थक है, जैसा जल सूख जाने पर पुल बाँधना। हे भरतश्रेष्ठ! अब आप शोक न करें। काल की अद्भुत गति को पलटने की किसी में सामर्थ्य नहीं है। जान पड़ता है आपके पूर्वजन्मों के कर्मों का यह विपाक है। अतः आप शोक न करें। यदि आप पहिले ही से जुआ न होने देते, तो यह दुःख का दिन, आज आपको क्यों देखना पड़ता? फिर युद्ध की तैयारी होने पर भी यदि आपने अपने क्रुद्ध पुत्रों को रोका होता, तो यह आपत्ति आप पर क्यों पड़ती? यदि आपने पहिले ही कौरवों को आज्ञा दी होती, कि मर्यादा का अतिक्रम करने वाला दुर्योधन बन्दी बनाया जाय तो, न तो आपको यह दुःख भोगना पड़ता और न पाण्डवों, पाञ्चालों, वृष्णियों तथा अन्य राजाओं को आपकी बुद्धि की विषमता का यह कटु अनुभव होता। यदि आपने पितृधर्म का पालन धर्मतः किया होता और अपने पुत्र को ठीक रास्ते पर चलाया होता; तो आप पर यह सङ्कट कभी न पड़ता। आप परम बुद्धिमान हैं तो क्या हुआ, किन्तु आपने तो धर्म को जलाञ्जलि दे—दुर्योधन और कर्ण ही का कहना माना। इसीसे हे राजन्! आपका यह विलाप केवल लोभवश है और विष मिश्रित मधु जैसा है। अच्युत श्रीकृष्ण पहिले आपका जितना सम्मान करते थे, उतना मान वे न तो भीष्म का और न युधिष्ठिर ही का करते थे। किन्तु जब से जनार्दन श्रीकृष्ण को यह बात भली भाँति मालूम हो गयी कि, आप राजधर्म से च्युत हो गये हैं, तब से उनके मन में आपके प्रति सम्मान की मात्रा बहुत कम हो गयी है। आपके पुत्रों ने जब पाण्डवों के प्रति अपशब्दों का प्रयोग किया, तब आपने अपने पुत्रों की उपेक्षा की, उनको डाँटा डपटा नहीं। क्योंकि आपको तो अपने पुत्र को राज दिलाने का लालच घेरे हुए था। यह अब उस लालच ही का तो फल है। अतः आप शोक क्यों करते हैं? हे अनघ! आपका अपने पुत्रों को न रोकना और बेलगाम बना देना ही आज आपके पूर्वजों के अधिकृत राज्य के नाश का कारण हुआ

सामने अपने भाई के मित्र सुदेव को देख, दमयन्ती फूट फूट कर रोने लगी। तब सुनन्दा, जो उस समय दमयन्ती के निकट ही खड़ी थी, दमयन्ती को एकान्त में सुदेव से बातचीत करते और रोते देख, दुःखी हुई और बबड़ा उठी और अपनी जननी से जा कर बोली—मेरी दासी एक ब्राह्मण से मिली और उसके साथ बातचीत करते करते फूट फूट कर रो रही है। अतः यदि आप उचित समझें तो उससे सारा हाल पूछें। यह सुन कर, चेदि-देशाधिपति की माता, तुरन्त अन्तःपुर के बाहिर आ, वहाँ गयीं, जहाँ दमयन्ती उस सुदेव ब्राह्मण के निकट खड़ी थी। राजमाता ने सुदेव को अपने पास बुला, उससे पूँछा कि, यह किसकी स्त्री है? किसकी पुत्री है? और इस स्त्री का बिछोह अपने पति और सम्बन्धियों से कैसे हुआ? हे ब्राह्मण! इस अवस्था को प्राप्त इस स्त्री को तुमने कैसे पहचाना? मैं अपने इन प्रश्नों के सविस्तर उत्तर तुम्हारे मुख से सुनना चाहती हूँ।

हे युधिष्ठिर! राजमाता के इस प्रकार पूँछने पर, सुदेव ब्राह्मण शान्त हो साथ बैठ गया और दमयन्ती का सारा वृत्तान्त राजमाता को ज्यों का त्यों कह सुनाया।

उनहत्तरवाँ अध्याय

दमयन्ती अपने पिता के घर में

सुदेव बोले—हे राजमाता! विदर्भ देश में भीम नामक राजा राज्य करता है। वह धर्मात्मा और बड़ा तेजस्वी है। यह कल्याणी उसी राजा की बेटी है और दमयन्ती इसका नाम है। नैषध देश के राजा वीरसेन के नल नामी यशस्वी, बुद्धिमान् पुत्र की यह भार्या है। नल अपने भाई से जुए में अपना सर्वस्व हार गया। तब उसने दमयन्ती को साथ ले, चुपचाप बन की राह पकड़ी। राजा नल और दमयन्ती को ढूँढ़ने के लिये सैकड़ों

सत्तालीसवाँ अध्याय

शकटव्यूह तथा पद्मसूची व्यूह

सञ्जय ने कहा—हे राजन्! अब रात बीत गयी और सवेरा हुआ; तब आचार्य द्रोण ने अपनी सेना का व्यूह बनाया। हे राजन्! क्रोध में भरे, असहनशील, परस्पर वध करने की अभिलाषा रखने वाले, सिंह गरजना करते हुए शूरवीरों के विचित्र विचित्र शब्द सुन पड़ने लगे। उस समय कोई तो धनुष को तान कर और कोई रोदे को सीधा कर, ज़ोर से चिल्लाने लगा और कहने लगा—वह अर्जुन कहाँ है? उस समय कितने ही शूरवीर योद्धा सुन्दर मूँठों वाली, तेज़धार की और चमचमाती तलवारें घुमाने लगे। हज़ारों वीर युद्धाभिलाषी हो अभ्यास के अनुसार, तलवार के हाथ और धनुष के पैंतरे दिखाने लगे। उस समय बहुत से योद्धा घुंघरू बँधी, चन्दन-चर्चित, सुवर्ण से मढ़ी और हीरे आदि रत्नों की जड़ाऊ गदाओं को उठा पूँछने लगे—पाण्डव कहाँ है? बल और मतवाले अनेक भुजबल सम्पन्न योद्धा, इन्द्रध्वजा की तरह परिघों को ऊपर उठाये चलने लगे। दूसरे योद्धाओं ने विविध प्रकार के आयुध उठाये, वे सब रङ्ग बिरङ्गे फूलों की मालाएँ पहिने हुए तथा स्थान स्थान पर दलबंदी करके खड़े हुए थे। अपने शत्रुओं की ओर के योद्धाओं को युद्ध के लिये ललकारते हुए वे कह रहे थे—अरे वह अर्जुन कहाँ है? वह श्रीकृष्ण कहाँ हैं? वह घमण्डी भीम कहाँ है? तुम्हारे नातेदार कहाँ हैं? रणभूमि में इस प्रकार पाण्डवों की बुलाहट हो रही थी। उस समय द्रोणाचार्य अपने घुड़सवार रिसाले को शङ्ख बजा, चक्र-शकट-व्यूह के आकार में खड़ा करते हुए इधर उधर घूम रहे थे। जब युद्ध में हर्ष बढ़ाने वाली समस्त सेनाएँ यथास्थान स्थित हो गयीं; तब हे राजन्! द्रोणाचार्य ने जयद्रथ से कहा—सौमदत्ति, महारथी कर्ण, अश्वत्थामा, शल्य, वृषसेन तथा कृपाचार्य को साथ ले, एक लाख घोड़ों, साठ हज़ार रथों, चौदह हज़ार मतवाले हाथियों तथा इक्कीस हज़ार कवचधारी पैदल सिपाहियों को साथ

लो—तू यहाँ से मेरे पीछे छः कोस की दूरी पर जा खड़ा हो। वहाँ रहने पर इन्द्रादि देवता भी तुझे नहीं हरा सकते। फिर पाण्डव तो हैं ही किस खेत की मूली। हे सिन्धुराज! तुम धीरज धरो और डरो मत। यह सुन जयद्रथ गान्धारदेशवासी महारथियों तथा कवचधारी और प्रासधारी होशियार घुड़सवारों के रिसालों को साथ ले, अपने निर्दिष्ट स्थान की ओर चला गया। हे राजेन्द्र! जयद्रथ के सब घोड़े सुवर्ण के आभूषणों से तथा कलगियों से सजे हुए थे। वे ऐसे सिखाये गये थे कि जब वे चलते थे, तब उनकी टापों से चलने का आहट तक नहीं सुन पड़ता था। जयद्रथ के निज के ऐसे दस हज़ार घुड़सवार थे। ये घुड़सवार ज़रा सा इशारा पाते ही पीछे आगे हट बढ़ सकते थे।

हे राजन्! आपका पुत्र दुर्मर्षण सब सेना के आगे लड़ने के लिये खड़ा था। उसके साथ, मतवाले, भयानक तथा बड़े बड़े भयङ्कर कर्म करने वाले और कवच पहिने हुए पन्द्रह सौ हाथी थे, जिन पर बड़े चतुर महावत बैठे हुए थे। जयद्रथ की रक्षा करने को आपके दो और पुत्र अर्थात् दुःशासन और विकर्ण अपनी अधीनस्थ सेना के आगे खड़े थे। द्रोणाचार्य का बनाया चक्र-शकट-व्यूह चौबीस कोस लंबा था और उसके पिछले भाग का फैलाव, दस कोस का था। उस अभेद्य पद्माकार चक्र-शकट-व्यूह के पिछले हिस्से के मध्य में सुई की तरह छिपा हुआ, एक सूचीव्यूह और था। द्रोणाचार्य प्रधान व्यूह के अगले भाग में थे। महाधनुर्धर कृतवर्मा पद्मगर्भ में बने हुए सूचीव्यूह पर खड़ा था। उसके पीछे काम्बोज और जलसंध खड़े थे। उनके पीछे कर्ण और दुर्योधन खड़े थे। रण में कभी पीठ न दिखाने वाले एक लाख योद्धा शकटव्यूह के मुख की रक्षा पर नियुक्त थे। इन योद्धाओं के पिछाड़ी और सूचीव्यूह के निकट राजा जयद्रथ बड़ी भारी सेना के बीच खड़ा था। सेना के आगे द्रोण और उनके पीछे कृतवर्मा खड़े हो, जयद्रथ की रक्षा कर रहे थे।

द्रोणाचार्य सफेद कवच, सफेद वस्त्र और सफेद ही पगड़ी धारण किये

हुए थे। उनकी छाती बड़ी चौड़ी थी और वे धनुष की डोरी को टंकोरते हुए, क्रुद्ध काल की तरह शकटव्यूह के मुख पर ही खड़े थे। उनके रथ में लाल रंग के घोड़े नधे थे और उनके रथ की ध्वजा कृष्णमृग के चिन्ह से चिन्हित थी। द्रोणाचार्य को देख देख कर, कौरव मारे हर्ष के फूल रहे थे। सिद्धपुरुष और चारण क्षुब्ध महासागर जैसी और द्रोणाचार्य द्वारा व्यूहाकार में खड़ी की गयी कौरवों की सेना को देख, आश्चर्यचकित हो रहे थे। उसे देख लोगों ने समझा कि, यह व्यूह तो पर्वतों, वनों और बहुत से स्थानों से युक्त समूची पृथिवी को ग्रास कर लेगा। द्रोणाचार्य के रचे उस शकटव्यूह को देख, राजा दुर्योधन को बड़ी प्रसन्नता हुई।

अठासीवाँ अध्याय

समरभूमि में अर्जुन का आगमन

सञ्जय ने कहा—हे राजन्! जब सेना व्यूह बना खड़ी हो गयी, तब मारू बाजे बजने लगे और सैनिक सिंहनाद करने लगे। सैनिकों का तर्जन गर्जन, बाजों की ध्वनि और शंखों के बजने पर लोमहर्षण नाद हुआ। राजालोग शत्रु पर प्रहार करने को उद्यत हुए।

उधर जब रुद्र मुहूर्त उपस्थित हुआ, तब सव्यसाची अर्जुन रणक्षेत्र में आये। उस समय अर्जुन के रथ के पास सहस्रों बगले और कौवे मड़राने लगे। इधर हमारी सेना की ओर मृग तथा अशुभ-सूचक स्यारिनें दहिनी तरफ भयङ्कर चीत्कार करने लगीं। आपकी सेना में कड़कड़ाती और चमकती सहस्रों उल्काएँ आकाश से गिरीं। पृथिवी काँपने लगी। चारों ओर भय छा गया। भयानक वज्रपात जैसा शब्द करता हुआ, रूखा पवन कंकड़ियों की वृष्टि सा करता हुआ, चलने लगा। अर्जुन के समरभूमि में आते ही, हे राजन्! आपकी सेना में यह सब अशुभसूचक उत्पात होने

लगे। नकुलपुत्र शतानीक और द्रुपदपुत्र धृष्टद्युम्न ने पाण्डवों का सैन्यव्यूह रचा था। आपका पुत्र दुर्मर्षण एक हज़ार रथ, सौ हाथी, तीन सौ घोड़े और और दस हज़ार पैदल सेना को ले और पाँच सौ धनुष भूमि को घेर, सब के आगे खड़ा हुआ और बोला—आज मैं सन्तप्त, युद्धदुर्मद एवं गाण्डीव धनुषधारी अर्जुन को बढ़ने से वैसे ही रोकूँगा, जैसे तट, समुद्र को रोके रहते हैं। जैसे पत्थर से पत्थर टकराता है, वैसे ही मैं क्रुद्ध अर्जुन के साथ लड़ूँगा। तुम लोग सब देखना। हे युयुत्सु योद्धाओं! तुम अभी खड़े रहो। मैं अपने मान और यश को बढ़ाता हुआ, अकेला ही पाण्डवों के समस्त योद्धाओं से अभी लड़ता हूँ।

हे धृतराष्ट्र! यह कह महामति एवं महाधनुर्धर दुर्मर्षण, बड़े बड़े धनुर्धरों से घिरा हुआ, रण के मुहाने पर खड़ा हुआ। इतने ही में अर्जुन आये। वे उस समय पाशधारी वरुण, वज्रधारी इन्द्र, दण्डधारी यम और त्रिशूलधारी शिव की तरह भयानक देख पड़ते थे। यह वे ही अर्जुन हैं, जिन्होंने निवातकवच नामक अगणित दैत्यों का अकेले ही संहार किया था। वे ही यमरूपी, समरविजयी एवं पराक्रमी अर्जुन जयद्रथ वधरूपी प्रतिज्ञा को पूर्ण करने के लिये, क्रोध, अमर्ष, बल और पराक्रम रूपी हुआ प्रचण्डरूप धारण करने वाली प्रलयकालीन धधकती हुई आग की तरह पुनः संसार को भस्म कर डालने के लिये, मानों समरभूमि में आये हैं। नारायण के अनुगामी अर्जुन उस समय सफेद वस्त्र पहिने हुए थे। उनके गले में सफेद फूलों की मालाएँ पड़ी हुई थीं। उनका कवच भी सफेद ही रंग का था। उनके सिर पर सोने का किरीट मुकुट था। कानों में कुण्डल थे। कमर में पैनी तलवार लटक रही थी। वे चमचमाते रथ पर सवार थे। गाण्डीव धनुष को घुमाते हुए अर्जुन उस समय उस रणक्षेत्र में उदयकालीन सूर्य की तरह प्रकाशित होने लगे। बाण की दूरी पर अपना रथ रुकवा, प्रतापी अर्जुन ने अपना देवदत्त शङ्ख बजाया। हे राजन्! उस समय श्रीकृष्ण ने भी बड़े ज़ोर से अपना पाञ्चजन्य शङ्ख बजाया। इन दोनों की

शङ्खध्वनि से, हे राजन्! आपकी सेना के समस्त सैनिकों के रोंगटे खड़े हो गये, उनके शरीर थरथराने लगे—वे लोग मूर्छित से हो गये। जैसे वज्रपात होने पर समस्त प्राणी विकल हो जाते हैं, वैसे ही उन दोनों की शङ्खध्वनि से आपके सैनिक काँपने लगे। हाथी घोड़ों के मल मूत्र निकल पड़े। इस प्रकार हाथी घोड़ों सहित आपकी सेना के छक्के छूट गये। आपके सैनिकों में बहुत से तो भयभीत हो, मूर्छित हो गये थे। तदनन्तर आपकी सेना को डराने के लिये, अर्जुन की ध्वजा में स्थित कपि ने मुँह फाड़ कर सिंहनाद किया। इधर आपकी सेना में सैनिकों को उत्साहित करने वाले शङ्ख, भेरी, मृदङ्ग और नगाड़े पुनः बजने लगे। सैनिक भुजदण्डों पर ताल देने लगे, सिंहनाद करने लगे और आपके योद्धा, शत्रुपक्षी योद्धाओं को लड़ने के लिये ललकारने लगे। भीरुओं को भयभीत करने वाले उस तुमुल शब्द के होने पर अर्जुन ने हर्षित हो श्रीकृष्ण से कहा।

नवासीवाँ अध्याय

कौरवों की गजसेना का नाश

अर्जुन बोले—हे श्रीकृष्ण! जिधर दुर्मर्षण खड़ा है, मेरा रथ उसी ओर आप ले चलें। जिससे मैं उसकी गजसेना को नष्ट कर, शत्रुसेना में प्रवेश करूँ। सञ्जय ने कहा—हे राजन्! जब अर्जुन ने यह कहा; तब श्रीकृष्ण ने तुरन्त अर्जुन का रथ हाँक वहाँ पहुँचाया, जहाँ दुर्मर्षण खड़ा था। युद्ध आरम्भ हुआ। देखते देखते, हाथी, रथी और पैदल सैनिक मर मर कर गिरने लगे। जैसे मेघ पर्वतों पर जलवृष्टि करते हैं, वैसे ही अर्जुन शत्रुओं पर बाणवृष्टि कर रहे थे। आपके समस्त रथियों ने भी अपना अपना हस्तलाघव दिखलाते हुए श्रीकृष्ण और अर्जुन के ऊपर बाणों की वृष्टि की। जब शत्रुओं ने अर्जुन को बाणवृष्टि करने से रोका, तब अर्जुन ने रथियों के सिर को धड़ से काट काट कर गिराना आरम्भ किया। थोड़ी ही देर में कटे हुए

पगड़ीधारी मुँड़ों से समरभूमि आच्छादित हो गयी। इन मुंडों में किसी मुण्ड की आँखें निकली हुई थीं, कोई दाँतों से ओंठों को चबा रहा था। रणभूमि में पड़े योद्धाओं के कटे हुए मुण्ड, छिन्न भिन्न हुए सफेद कमल के फूलों की तरह जान पड़ते थे। योद्धाओं के सुवर्ण कवच घायल होने के कारण रक्त से लाल हो गये थे। अतः वे ऐसे जान पड़ते थे, जैसे बिजली से युक्त मेघ। हे राजन्! उस समय कट कट कर गिरते हुए मुंडों का ऐसा शब्द हो रहा था, जैसा पके हुए फलों के गिरने का होता है। किसी किसी योद्धा का धड़ उसके धनुष पर टिका हुआ खड़ा था और कोई कबन्ध म्यान से तलवार खींच, ऊँची भुजा किये खड़ा था। विजयाभिलाषी वीर लोग, अर्जुन को देख, ऐसे आवेश में भर गये थे कि, उन्हें समरक्षेत्र में पड़े कटे हुए सिरों का ढेर भी नहीं देख पड़ता था। कटे हुए घोड़ों के सिरों, हाथियों की सूँड़ों तथा सैनिकों के सिरों तथा हाथों से समरभूमि परिपूर्ण हो गयी।

हे राजन्! उस समय आपकी सेना के पुरुष क्षुब्ध हो कर कहने लगे—यही अर्जुन है। अरे अर्जुन यहाँ कैसे आगया? यही अर्जुन है। जिधर देखते उधर ही उन्हें अर्जुन दिखलायी पड़ते थे। उनके लिये सारा जगत् अर्जुनमय हो गया था। वे लोग यहाँ तक मुग्ध हो गये कि उन लोगों ने आपस ही में मारकाट शुरू कर दी। कितने ही घायल हो हो कर मूर्छित हो गये। कितने ही चोट से विकल हो, चीत्कार करते हुए भूमि पर लोटने लगे और हाय बप्पा! हाय मैया! कह कर पुकारने लगे। भिन्दिपालों, भालों, शक्तियों, ऋष्टियों, फरसों को पकड़े हुए और बाजूबंद आदि आभूषणों से भूषित भुजाएँ, जो परिघ जैसी मोटी थीं, कट कर, वेग से ऊपर को उछलती थीं और एक दूसरे से लिपट, टेढ़ी मेढ़ी हो नीचे गिर पड़ती थीं। अर्जुन के सामने जो योद्धा पड़ता था, वह जीता नहीं बच पाता था। प्रहार करने में अर्जुन तिल भर भी चूक नहीं करते थे, अर्जुन के बाण चलाने की फुर्ती को देख शत्रुपक्ष के योद्धा बड़ा आश्चर्य करते थे। अर्जुन के बाणप्रहार से हाथी, महावत, घुड़सवार तथा

रथी और सारथी कट कट कर मर रहे थे। सामने आये हुए, सामने खड़े हुए किसी भी योद्धा को अर्जुन अछूता नहीं छोड़ते थे। सब का संहार करते वे चले जाते थे। जैसे सूर्य के प्रकाश से अन्धकार नष्ट होता है, वैसे ही अर्जुन के कङ्कपत्र वाले बाणों से गजसेना नष्ट हो गयी। उस समय मर कर यहाँ तहाँ गिरे हुए हाथियों से, हे राजन्! आपकी सेना वैसी ही प्रतीत होती थी, जैसी प्रलय के समय पर्वतों से आच्छादित पृथिवी। मध्याह्न कालीन सूर्य को देखना जैसे महा दुस्तर कार्य है, वैसे ही क्रुद्ध अर्जुन की ओर देखना, आपके योद्धाओं के लिये महादुस्ह कार्य था। अन्त में आपके पुत्र का मरने से बची हुई सेना डर कर भागी। प्रचण्ड पवन के वेग से छिन्न भिन्न बादलों की तरह छिन्न भिन्न हुई आपकी सेना अर्जुन की ओर फिर कर देख तक न सकी। अर्जुन की मार से त्रस्त आपके घुड़-सवार और रथी घोड़ों को कोड़ों से पीट पीट कर सरपट भगाते हुए, रणक्षेत्र से भाग गये। अन्य जो योद्धा थे, वे अर्जुन के बाणों के प्रहार से विक्षिप्त से हो गये थे। उनमें लड़ने का अब उत्साह ही नहीं रह गया था। वे बहुत घबड़ाए हुए थे। वे चाबुक, अंकुश और शूलों से हाथियों को मार मार कर भगाने लगे, किन्तु सीधे न जा, वे भाग कर भी अर्जुन ही की ओर भागे।

नब्बे का अध्याय

दुःशासन की हार

धृतराष्ट्र ने कहा—हे सञ्जय! किरीटी अर्जुन द्वारा सेना के अग्रभाग का जब संहार किया गया और सेना में हलचल मची, तब हमारी ओर के कौन वीर पुरुष अर्जुन के सामने लड़ने को गये थे? कौन कौन से वीर पुरुषों ने अपने निश्चय को त्याग और चारों ओर से निर्भय दुर्ग की तरह शकट-व्यूह में घुस, द्रोणाचार्य का सहारा पकड़ा था।

कृपण एवं पापी ने उस दुखियारी पतिप्रेमपरायणा, दमयन्ती का जो अब पतिवरन करना चाहती है, त्याग दिया। मैंने यह बड़ी ही निष्ठुरता का काम किया। इस संसार में स्त्रियों का तो चञ्चल स्वभाव प्रसिद्ध ही है, किन्तु मुझसे भी बड़ा सङ्गीन अपराध बन पड़ा है। मैं उसके निकट नहीं विदेश में हूँ। सम्भव है इससे मेरे ऊपर उसका प्रेम कम हो गया हो। कदाचित् इसीसे वह ऐसा करती हो। चीथकटिवाली दमयन्ती हताश हो मेरे वियोगजन्य शोक में मग्न हो गयी है। किन्तु वह सती है और विशेष कर, वह सन्तानवती है। अतः वह ऐसा गर्हित काम कभी नहीं करेगी। इसमें क्या सत्य है और क्या असत्य, इसका निश्चय तो वहाँ जाने पर हो सकेगा। अतः यह जानने के लिये मुझे महाराज ऋतुपर्ण की कामना पूरी करनी चाहिये।

इस प्रकार अपने मन में निश्चय कर, उदास बाहुक ने हाथ जोड़ कर राजा ऋतुपर्ण से कहा—हे राजन्! मैं आपकी इच्छा के अनुसार एकही दिन में आपको विदर्भ पहुँचा दूँगा।

हे युधिष्ठिर! यह कह बाहुक ने राजा ऋतुपर्ण की आज्ञा से अश्वशाला में जा, घोड़ों की परीक्षा लेनी आरम्भ की। इस बीच में राजा ऋतुपर्ण ने जल्दी मचानी आरम्भ की। तब घोड़ों की परीक्षा में व्यस्त बाहुक ने बारम्बार देख कर, जो घोड़े देखने में तो लटे दुबले थे, किन्तु इतनी दूर की यात्रा करने के लिये समर्थ थे, पसंद किये। वे घोड़े पानीदार थे, बलवान् थे, अच्छी जाति के थे, बड़े सीधे थे, उनमें उत्तम लक्षण विद्यमान् थे। उनके नथुने उभड़े हुए और होठ बड़े बड़े थे। वे घोड़े दसों भौंरियों से शुभ थे, सिंधुदेश में वे उत्पन्न हुए थे और पवन की तरह तेज़ उनकी चाल थी। लटे घोड़ों को इतनी लम्बी यात्रा के लिये, बाहुक को छाँटते देख, राजा ऋतुपर्ण क्रुद्ध हुआ और बाहुक से बोला। बाहुक! तुझे यह उचित नहीं कि, तू मुझे धोखा दे। ये अल्पपराक्रमी घोड़े मुझे क्योंकर वहाँ पहुँचा सकेंगे। क्योंकि समय थोड़ा है और रास्ता लंबा है। इस पर बाहुक ने उत्तर दिया—हे महाराज! इक

की तरह चिंघारने लगे। अपने नतपर्व भल्ल बाणों से अर्जुन ने गजों पर सवार सैनिकों के सिर भी काट काट कर गिरा दिये। जब कुण्डलों से भूषित कटे हुए मुण्ड भूमि पर गिरते तब जान पड़ता था मानों अर्जुन कमल पुष्पों की पुष्पाञ्जलि चढ़ा रहा हो। उस समय कितने ही कवचहीन हुए योद्धा, बाणों के प्रहार से पीड़ित और लोहू से लथपथ हो इधर उधर दौड़ते हुए हाथियों की पीठों पर चिपटे हुए ऐसे जान पड़ते थे, मानों वे किसी यंत्र द्वारा वहाँ जकड़ दिये गये हों। अर्जुन के एक एक चोखे बाण से दो दो तीन तीन हाथी मर कर गिर रहे थे। बाणों के प्रहार से क्षत विक्षत हाथी, मुख से लोहू उगलते हुए, वृक्षयुक्त पर्वत की तरह रणभूमि में गिर रहे थे। अर्जुन ने नतपर्व बाणों से रथियों के धनुषों को, धनुषों की डोरियों को, रथों के धुरों को तथा रथदण्डों को टुकड़े टुकड़े कर डाला था। उस समय अर्जुन ऐसी तेज़ी से बाणवृष्टि कर रहे थे कि, देखने वालों को यह नहीं जान पड़ता था कि, वे कब बाण तरकस से निकालते, कब धनुष पर रखते और कब रोदा खींच कर बाण छोड़ते हैं। उनका गाण्डीव धनुष मण्डलाकार, नाचता हुआ सा देख पड़ता था। इस युद्ध में हे राजन्! आपकी सेना के बहुत से हाथी बाणों के प्रहार से घायल हो रुधिर उगलते हुए ज़मीन पर गिर पड़े। रणभूमि में उस समय असंख्यों धड़ ही धड़ खड़े हुए देख पड़ते थे। बाण, चमड़े के दस्ताने, खड्ग, बाजूबंद तथा अन्य सुवर्ण भूषणों से भूषित अगणित भुजाएँ कट कर वहाँ पड़ी हुई थीं। इस युद्ध में, रथ के कटे हुए खटोलों, रथों की ईषाओं, दण्डों, रथ की छतरियों, रथ के टूटे हुए पहियों, धुरों, जुओं, ढालों, तलवारों, पुष्पमालाओं, आभूषणों, वस्त्रों, बड़ी बड़ी ध्वजाओं, मृत हाथियों, मृत घोड़ों तथा मृत क्षत्रियों की लाशों से समरभूमि का दृश्य बड़ा ही भयङ्कर हो गया था। अन्त में अर्जुन के बाणप्रहार से नष्ट होती हुई सेना अपने सेनापति दुःशासन के साथ भागी। अर्जुन के बाणों से पीड़ित अपनी सेना सहित दुःशासन, जान बचाने के लिये, द्रोण के निकट शकटव्यूह में घुस गया।

इक्यानवे का अध्याय

अर्जुन और द्रोण की लड़ाई

सञ्जय बोले—हे धृतराष्ट्र ! महारथी अर्जुन ने जब दुःशासन की सेना को तहस नहस कर डाला, तब वे जयद्रथ का वध करने के लिये, द्रोण की सेना की ओर मुड़े। सैन्यव्यूह के मुख पर खड़े द्रोण के निकट पहुँच, और श्रीकृष्ण के परामर्शानुसार, अर्जुन ने हाथ जोड़ कर, द्रोण से कहा—हे ब्रह्मन् ! आप मेरे मङ्गल और कल्याण के लिये मुझे आशीर्वाद दीजिये। मैं आपकी कृपा से इस दुर्भेद्य सैन्यव्यूह में प्रवेश करना चाहता हूँ। आप मेरे पितृस्थानीय हैं। आप मेरे लिये धर्मराज और श्रीकृष्ण के समान हैं। यह बात मैं दिखावट के लिये नहीं, किन्तु सत्य ही सत्य कहता हूँ। हे गुरुदेव ! जिस प्रकार अश्वत्थामा की रक्षा करना आपका कर्तव्य है, उसी प्रकार मेरी रक्षा करना भी आपका कर्तव्य है। हे मनुजसत्तम ! आपकी कृपा से मैं सिन्धुराज का वध करना चाहता हूँ। क्योंकि मैं उसका वध करने की प्रतिज्ञा कर चुका हूँ। अतएव हे प्रभो ! आप मेरी प्रतिज्ञा की रक्षा करें।

सञ्जय ने कहा—हे धृतराष्ट्र ! जब अर्जुन ने इस प्रकार कहा—तब द्रोणाचार्य ने मुसक्या कर, उत्तर दिया, अर्जुन ! तू मुझे जीते बिना जयद्रथ का वध नहीं कर सकता। यह कह द्रोणाचार्य ने अर्जुन को उनके रथ, घोड़ों, ध्वजा और सारथि सहित बाणजाल से ढक दिया। तब अर्जुन ने सामने से बाण मार मार कर, द्रोण के बाण पीछे हटा दिये। फिर वे द्रोण पर बड़े बड़े भयङ्कर अस्त्रों का प्रहार करने लगे। क्षात्र धर्म के अनुरोध से अर्जुन ने द्रोण की सम्मानरक्षा के लिये, उनके चरणों में नौ बाण मार, उन्हें बारंबार घायल किया। द्रोण ने अर्जुन के बाण अपने बाणों से काटे और विषाग्नि तुल्य चमचमाते बाणों से श्रीकृष्ण और अर्जुन को बिद्ध कर डाला। अर्जुन ने द्रोण के धनुष को अपने बाणों से काटना चाहा, पर

अर्जुन तो द्रोण का धनुष न काट सके, किन्तु द्रोण ने अर्जुन के धनुष की प्रत्यञ्चा काट डाली और उनके सारथि और घोड़ों को घायल किया तथा ध्वजा भी बेध डाली। फिर हँसते हुए द्रोणाचार्य ने अपने बाणों से अर्जुन को ढक दिया। इतने में अर्जुन ने अपने धनुष पर दूसरा रोदा चढ़ा लिया और फिर जितनी देर में एक बाण तरकस से निकाल कर धनुष पर रख छोड़ा जाय, उतने समय में तर ऊपर छः सौ बाण द्रोण के मारे। फिर सात सौ, फिर एक हज़ार, फिर दस दस हज़ार बाण अर्जुन धनुष पर रख, द्रोणाचार्य पर फेंकने लगे। अर्जुन के धनुष से छूटे हुए बाण द्रोणाचार्य की सेना का नाश करने लगे। विचित्र योद्धा एवं पराक्रमी अर्जुन के धनुष से छूटे हुए बाणों से विद्ध हो कर, पैदल सिपाही, घोड़ा हाथी मर मर कर भूमि पर गिरने लगे। रथी लोग अर्जुन के बाणों के प्रहार से पीड़ित हो, अस्त्रों के कट जाने पर, सारथि और रथ के घोड़ों से हीन हो, पैने बाणों की मार से अपने श्रत्य रथों से गिर गिर कर भूशायी होने लगे। वज्राहत पर्वत के शिखर, जैसे चूर चूर हो ज़मीन पर गिरते हैं, जैसे मेघ पवन के वेग से छितरा जाते हैं, जैसे विशाल भवन अग्नि में जल, भूमि पर ढह पड़ता है, वैसे ही अर्जुन के बाणों से घायल हाथी भूमि पर धड़ाम धड़ाम गिरने लगे। अर्जुन के बाणों के प्रहार से सैकड़ों घोड़े मर कर पृथिवी पर वैसे ही गिरे; जैसे हिमालय पर्वत पर जलधारा के वेग से हंसों के गिरोह पर्वत पर गिरते हुए देख पड़ते हैं। उस समय प्रलय कालीन सूर्य रश्मियों की तरह अर्जुन के तीक्ष्ण बाणों के प्रहार से, जल के विस्मयोत्पादक ओघ की तरह, हाथी, घोड़े, रथ और पैदलों के समूह मर मर कर गिरने लगे। अर्जुन रूपी सूर्य अपने बाणरूपी रश्मियों से कौरवों को उत्तप्त कर रहे थे। इतने में जैसे मेघ सूर्य को ढक ले, वैसे ही द्रोणाचार्य ने बाणवृष्टि कर, अर्जुन के बाण ढक दिये। तदनन्तर द्रोण ने शत्रुओं का संहार करने वाला एक भयङ्कर बाण, रोदे को कान तक खींच कर, अर्जुन की छाती में मारा, जिसके लगने से अर्जुन के समस्त अङ्ग विह्वल हो गये और वे भूचाल में

हिलने वाले पर्वत की तरह डगमगाये, किन्तु फिर सम्हल गये और सम्हल कर द्रोणाचार्य को बाणों से बींध डाला। तब द्रोण ने श्रीकृष्ण को पाँच तथा अर्जुन को तिहत्तर बाणों से घायल किया और तीन बाण मार अर्जुन के रथ की ध्वजा तोड़ दी। अपने शिष्य को विशेषता देते हुए द्रोण ने पल भर में अर्जुन को बाणजाल से छिपा दिया। हे राजन्! उस समय, मुझे द्रोण का मण्डलाकार धनुष और पाण्डवसेना की ओर जाते हुए उनके बाण ही देख पड़ते थे। कङ्कपंख युक्त द्रोण के बाण अर्जुन, और श्रीकृष्ण पर पड़ रहे थे। द्रोण और अर्जुन के इस विकट युद्ध को देख तथा जयद्रथ के वध का गौरव समझ, महाबुद्धिमान् श्रीकृष्ण ने अर्जुन से कहा—ऐसा न हो कि सारा दिन यहीं पूरा हो जाय। द्रोण को छोड़ हमें आगे बढ़ना चाहिये। हमें अभी बहुत काम करने हैं। इस पर अर्जुन ने कहा—कृष्ण! तुम जैसा उचित समझो वैसा करो। तदनन्तर अर्जुन ने द्रोण की परिक्रमा की और बाण चलाते हुए अर्जुन दूसरी ओर जाने लगे। तब द्रोणाचार्य ने कहा—अर्जुन! तू तो शत्रुओं को हराये बिना, रण से लौटता नहीं-फिर इस समय इस प्रकार क्यों भागता है? इस पर अर्जुन ने कहा—आप मेरे शत्रु नहीं हैं; प्रत्युत आप मेरे गुरु हैं और मैं आपका शिष्य अथवा धर्मपुत्र हूँ। इस संसार में आपको कोई नहीं जीत सकता।

सञ्जय ने कहा—हे धृतराष्ट्र! इस प्रकार कहते हुए अर्जुन, जयद्रथ का वध करने के लिये, तुरन्त आपकी सेना की ओर बढ़े। जब वे आपकी सेना में घुसे, तब अर्जुन के रथ के चक्ररक्षक पाञ्चाल देशी युधामन्यु और उत्तमौजा भी अर्जुन के पीछे पीछे उस व्यूह में घुस गये। कृतवर्मा, सात्वत, काम्बोज तथा श्रुतायुध ने अर्जुन को शकट-व्यूह में घुसने से रोकने का बड़ा प्रयत्न किया। इन लोगों के अधीन दस हज़ार रथी थे। अभीषाह, शूरसेन, शिवि, वसाति, मावेल्लक, ललित्थ, केकय, मद्रक, नारायण, गोपाल और काम्बोज के राजों ने, जो बड़े वीर माने जाते थे, किन्तु जिन्हें कर्ण पहले जीत चुका था, द्रोणाचार्य को आगे कर, अर्जुन पर चढ़ाई की। वे लोग

पुत्रशोक से सन्तप्त, क्रुद्ध, काल जैसे भयङ्कर तुमुल युद्ध में प्राण त्यागने को उद्यत, विविध प्रकार के युद्ध करने वाले, यूथप गज की तरह सैन्य में प्रवेश करने वाले, धनुषधारी एवं पराक्रमी अर्जुन को घेर कर, उन्हें सेना के भीतर घुसने से रोकने का प्रयत्न करने लगे। उस समय विजयाभिलाषी आमने सामने खड़े वीर योद्धाओं से अर्जुन लड़ने लगे। जैसे उमड़ता हुआ रोग औषधोपचार से रोका जाता है, वैसे ही जयद्रथ का वध करने को आगे बढ़ते हुए अर्जुन को; वे सब लोग एकत्र हो रोकने लगे।

बानवे का अध्याय

श्रुतायुध और सुदक्षिण का मारा जाना

सञ्जय ने कहा—हे धृतराष्ट्र! जब आपकी ओर के उन रथियों ने महाबली एवं परम पराक्रमी अर्जुन का मार्ग रोका, तब कुछ ही देर बाद उनकी सहायता के लिये शीघ्रता पूर्वक द्रोणाचार्य आ पहुँचे। जैसे रोग शरीर को पीड़ित करते हैं, अथवा सूर्य की किरणें जगत को सन्तप्त करती हैं, वैसे ही अर्जुन भी अपने तीक्ष्ण बाणों से कौरवों की सेना को सन्तप्त करने लगे। उनके बाणप्रहार से घोड़े घायल हुए, रथ टूटे, गजारूढ़ योद्धा हाथियों सहित मर कर गिरने लगे। छत्रों के टुकड़े टुकड़े कर दिये गये। रथों के पहिये तोड़ दिये गये। सेना के योद्धा घायल हो—चारों ओर भागने लगे। इस प्रकार तुमुल युद्ध हुआ। उस समय जिधर देखो उधर मार काट देख पड़ती थी। हे राजन्! अपने रास्ते को रोकने वाले शत्रुवीरों को अर्जुन ने अपने बाणों की मार से कँपा दिया। श्वेत अश्वों वाले एवं सत्यप्रतिज्ञ अर्जुन जयद्रथ-वध की निज प्रतिज्ञा को पूर्ण करने के लिये, लाल घोड़ों से युक्त रथ पर सवार द्रोण की ओर घूमे। द्रोण ने अपने महाधनुर्धर शिष्य अर्जुन के मर्मभेदी पच्चीस बाण मारे। शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ अर्जुन ने उनके बाणों को रोकने के लिये बाण चला, द्रोणाचार्य पर आक्रमण किया। महामना द्रोण ने तब ब्रह्मास्त्र

चला अर्जुन के सत्पर्व प्रबल बाणों के टुकड़े टुकड़े कर डाले। इस युद्ध में द्रोणाचार्य की यह विशेषता थी कि, इन वृद्ध को युवक अर्जुन एक बाण से भी घायल न कर पाये। सहस्रों जलधारों से बरसने वाले मेघ की तरह द्रोण रूपी मेघ ने अर्जुन रूपी पर्वत पर बाण वृष्टि करनी आरम्भ की। तब अर्जुन ने ब्रह्मास्त्र का प्रयोग कर, उस बाणवृष्टि को रोक दिया। फिर वे बाणों को बाणों से नष्ट करने लगे। द्रोण ने पचीस बाण मार अर्जुन को पीड़ित किया और सत्तर बाण श्रीकृष्ण की छाती में तथा दोनों भुजाओं में मारे। तब तो हँसते हुए अर्जुन ने द्रोणाचार्य के बाणों को रोकना आरम्भ किया। प्रलयकालीन अग्नि की तरह भड़के हुए दुर्धर्ष द्रोण के बाणों से पीड़ित हो, श्रीकृष्ण और अर्जुन ने द्रोण को छोड़, भोजराज कृतवर्मा की सेना पर चढ़ाई की और उसकी सेना को किरीटी अर्जुन ने नष्ट करना आरम्भ किया। मैनाक पर्वत की तरह मध्य में खड़े द्रोण को छोड़, अर्जुन कृतवर्मा और काम्बोजकुमार सुदक्षिण पर झपटे। तब नरव्याघ्र कृतवर्मा ने सावधान हो दुर्धर्ष अर्जुन के दस बाण मारे। हे राजन्! अर्जुन ने सात्वतवंशी कृतवर्मा को एक सौ तीन बाणों से विद्ध कर, उसे मोहित सा कर दिया। कृतवर्मा ने हँस कर श्रीकृष्ण और अर्जुन के इक्कीस इक्कीस बाण मारे। तब अर्जुन ने क्रुद्ध हो उसके धनुष को काट कर, क्रुद्ध सर्प एवं अग्निशिखा जैसे तिहत्तर बाणों से उसे विद्ध किया। हे राजन्! महारथी कृतवर्मा ने बड़ी फुर्ती से दूसरा धनुष ले पाँच बाण मार अर्जुन की छाती घायल की। तब अर्जुन ने उसकी छाती में नौ बाण मारे। अर्जुन को कृतवर्मा के रथ के पीछे पड़ा देख, श्रीकृष्ण ने विचारा कि इस प्रकार समय नष्ट करना तो उचित नहीं। यह विचार श्रीकृष्ण ने अर्जुन से कहा—अर्जुन! तुम कृतवर्मा पर दया मत दिखाओ। नातेदारी पर ध्यान न दे, तुम तुरन्त उसे नष्ट करो। तब अर्जुन ने कृतवर्मा को बाणों से मूर्छित कर, रथ दौड़ा कर काम्बोज सेना में प्रवेश किया। यह देख कृतवर्मा बड़ा क्रुद्ध हुआ और वह अर्जुन के रथ के पीछे आते हुए अर्जुन के रथरक्षक पाञ्चालराज के दोनों

कुमारों से भिड़ गया। कृतवर्मा ने युधामन्यु को तीन और उत्तमौजा को चार तेज़ बाणों से विद्ध किया। तब उन दोनों ने भी दस दस बाण चला कृतवर्मा को विद्ध किया और तीन बाण छोड़ उसके रथ की ध्वजा काट डाली। इस पर कृतवर्मा अत्यन्त क्रुद्ध हुआ और दूसरा धनुष उठा उसने उन दोनों राजकुमारों के धनुषों को काट, उन पर बाणवृष्टि करनी आरम्भ की। तब उन दोनों ने भी दूसरे धनुष ले उसे मारना आरम्भ किया। इस अवसर से लाभ उठा अर्जुन शत्रु की सेना में घुस गये और वे दोनों कृत-वर्मा द्वारा रोक लिये जाने से सेना में न घुस सके। किन्तु घुसने का प्रयत्न करने में उन दोनों ने कोई बात उठा न रखी। अर्जुन ने सेना में घुसने की हड़बड़ी में पास आये हुए कृतवर्मा को जान से न मारा। अर्जुन को इस प्रकार अग्रसर होते देख राजा श्रुतायुध बड़ा क्रुद्ध हुआ और वह अर्जुन का सामना करने को आगे बढ़ा। उसने तीन अर्जुन के और सत्तर बाण श्रीकृष्ण के मारे। तब श्रुतायुध ने अर्जुन के रथ की ध्वजा पर क्षुरप्र बाण छोड़े; तब अर्जुन ने उसके नतपर्व नब्बे बाण वैसे ही मारे, जैसे तीखे भाले हाथी के मारे जाते हैं। अर्जुन का यह प्रहार श्रुतायुध से न सहा गया। उसने अर्जुन के सत्तर बाण मारे। तब अर्जुन ने उसके धनुष और भाथे को काट डाला। फिर क्रुद्ध हो उन्होंने नतपर्व सात बाण उसकी छाती में मारे। तब दूसरा धनुष उठा श्रुतायुध ने भी अर्जुन के हाथों और छाती में नौ बाण मारे। तब अर्जुन ने उस पर बाणवृष्टि की और उसके रथ के घोड़ों तथा सारथि को मार डाला। फिर श्रुतायुध के सत्तर बाण मारे। तब श्रुतायुध गदा ले रथ से कूद पड़ा और अर्जुन की ओर दौड़ा।

वीर राजा श्रुतायुध वरुण का पुत्र था। शीतलजल वाहिनी पर्णाशा उसकी जननी थी। उस समय उसकी माता पर्णाशा ने पुत्रस्नेहवश वरुण से कहा—मेरा पुत्र शत्रु से अवध्य हो। आप मुझे यह वर दें। वरुण ने प्रसन्न हो कहा तथास्तु, यह अस्त्र तू ले। इस अस्त्र से तेरा पुत्र संसार में अवध्य होगा। किन्तु हे सुभगे! मनुष्य को मर्त्यलोक में अमरत्व प्राप्त

नहीं हो सकता। मर्त्यलोक में जो जन्मा है, उसे मरना अवश्य पड़ेगा। किन्तु इस अस्त्र के प्रभाव से तेरा पुत्र दुर्धर्ष अवश्य हो जायगा। इसका तिरस्कार कोई न कर सकेगा। इस अस्त्र के प्रभाव से तेरी मानसिक चिन्ता दूर हो—यह कह कर वरुण ने मंत्रों से अभिमंत्रित कर, उसे एक गदा दी। उस गदा को प्राप्त कर श्रुतायुध सब मनुष्यों से अजेय हो गया था। किन्तु साथ ही वरुण ने यह भी कह दिया था कि, यदि यह गदायुद्ध न करने वाले पर चलायी गयी, तो वह तेरे पुत्र ही का नाश कर देगी।

हे राजन्! वरुण की वह गदा अकारण प्रहार करने वाले का नाश करने वाली थी। परन्तु मरणोन्मुख श्रुतायुध वरुण की इस बात को भूल गया और उस वीरघातिनी गदा को उसने श्रीकृष्ण जी पर फेंका। श्रीकृष्ण ने उस गदा का प्रहार अपने दृढ़ वक्षःस्थल पर सहा और वायु के आघात से जैसे विन्ध्यगिरि अटल अचल बना रहे, वैसे ही वे भी उस गदा के प्रहार को सह अटल बने रहे। किन्तु दुष्ट जन को प्रयुक्त कृत्य उस प्रयोगकर्त्ता ही का नाश करता है। वैसे ही उस गदा ने लौट कर क्रुद्ध श्रुतायुध को मार डाला। फिर वह गदा भूमि पर गिर पड़ी। श्रुतायुध को अपनी ही गदा से मरा हुआ देख कौरव सेना में हाहाकार हुआ। हे धृतराष्ट्र! श्रीकृष्ण तो युद्ध नहीं कर रहे थे। अतः उन पर श्रुतायुध की चलायी गदा ने श्रुतायुध ही को मार डाला। वरुण के कथनानुसार ही हुआ और समस्त धनुषधारियों के सामने ही वह मर कर गिर पड़ा। पर्णाशा का पुत्र श्रुतायुध को पृथिवी पर पड़े पड़े वैसी ही शोभा हुई, जैसी शोभा आंधय से भूमि पर गिरे हुए शाखा प्रशाखाओं से युक्त किसी विशाल वृक्ष की होती है। श्रुतायुध को मरा देख, कौरव सेना के सेनापति और सैनिक भागने लगे। तब काम्बोज राजा के शूर राजकुमार सुदक्षिण ने शीघ्रगामी घोड़ों से युक्त रथ पर सवार हो, अर्जुन पर आक्रमण किया। अर्जुन ने उसके सात बाण मारे, जो उसके शरीर को चीरते हुए पृथिवी में

घुस गये। तब सुदक्षिण ने कङ्कपुंख युक्त बाण अर्जुन के मारे और उन्हें घायल किया। फिर उसने तीन बाण श्रीकृष्ण के और पाँच बाण अर्जुन के मार, दोनों को घायल किया। तब अर्जुन ने उसकी ध्वजा को काट, उसका धनुष भी काट डाला। अर्जुन ने बड़े तेज़ तीन भल्ल बाण मार सुदक्षिण को घायल किया। सुदक्षिण ने तीन बाण मार अर्जुन को घायल किया और सिंहनाद किया। फिर क्रुद्ध हो लोहे की एक साँग अर्जुन पर फेंकी। वह शक्ति चिनगारियाँ उगलती हुई उल्का की तरह अर्जुन के शरीर से टकरा भूमि पर गिर पड़ी। उस शक्तिप्रहार से अर्जुन कुछ देर के लिये अचेत हो गये। जब अर्जुन सचेत हुए; तब ओठ चाबते हुए दम लेकर उन्होंने चौदह कङ्क पुंख युक्त बाण मार, सुदक्षिण की ध्वजा और धनुष काट डाले और उसके सारथि को यमलोक भेज दिया। फिर अनेक बाण मार उसके रथ के टुकड़े टुकड़े कर दिये। फिर एक चौड़े फल का बाण मार सुदक्षिण की छाती चीर डाली। उस बाण के लगने से उसका कवच टूट गया, अँग कट कुट गये, सिर का मुकुट और भुजाओं के बाजूबंद खसक पड़े। यंत्रयुक्त ध्वजा की तरह अथवा पर्वतशिखर पर जमे हुए शाखा प्रशाखाओं से युक्त कनेर के पेड़ की तरह सुदक्षिण, अर्जुन के सन्मुख धड़ाम से पृथिवी पर गिर पड़ा। सुन्दर सुकोमल शय्या पर सोने वाला राजकुमार पृथिवी पर (अनन्त निद्रा में) सो गया। राजकुमार सुदक्षिण बहुमूल्य आभूषणों से सज्जित था। उसके हाथ में धनुष था। अतः वह पृथिवी पर पड़ा हुआ शिखरयुक्त पर्वत की तरह जान पड़ता था। अर्जुन ने उसे कर्णी नामक बाण मार कर सदा के लिये पृथिवी पर सुला दिया था। प्राणहीन सुदक्षिण निर्जीव होकर भी श्रीहीन नहीं हुआ था। उधर श्रुतायुध और सुदक्षिण को मरा देख, हे राजन्! आपकी सेनाएँ भागने लगीं।

तिरानबे का अध्याय

अम्बष्ठ-वध

सञ्जय बोला—हे धृतराष्ट्र! सुदक्षिण एवं श्रुतायुध के मारे जाने पर, आपके सैनिकों ने क्रोध में भर बड़े वेग के साथ अर्जुन पर आक्रमण किया। अभीषाह, शूरसेन, शिवि और वसाति ने अर्जुन पर बाणवृष्टि की। किन्तु उन छः तथा इनके साथी अन्य बहुत से योद्धाओं को अर्जुन ने मारे बाणों के विधो डाला। तब प्रथम तो वे व्याघ्र से त्रस्त मृगों की तरह भागे, किन्तु कुछ दूर भागने के बाद पुनः रुक गये और उन लोगों ने चारों ओर से अर्जुन को घेर लिया; किन्तु जैसे जैसे वे पास आये, वैसे ही वैसे अर्जुन ने उनके सिरों और भुजाओं को काट डाला। उस समय कटे हुए सिरों और भुजाओं से रणभूमि आच्छादित हो गयी। वहाँ पर गीध और कौए इतने मँडराने कि बादल जैसी वहाँ छाया हो गयी। यह देख, हे राजन्! आपके पक्ष के श्रुतायु और अच्युतायु नामक योद्धाओं ने क्रुद्ध हो, अर्जुन का सामना किया। बलवान्, ईर्षालु, शूर, कुलीन और बाहुबलशाली वे दोनों वीर अर्जुन के दाँए, बाँए बाणवृष्टि करने लगे। हे राजन्! वे दोनों वीर तो थे, पर थे बड़े हठधर्मी। वे यशप्रयासी थे और आपके पुत्र को प्रसन्न करने के लिये अर्जुन का वध करना चाहते थे। जैसे दो महामेघ तालाब को जल से लबालब भर दें, वैसे ही उन दोनों ने क्रोध में भर, नतपर्व सहस्रों बाणों से अर्जुन को ढक दिया। फिर श्रुतायु ने क्रोध में भर, बड़ा पैना तोमर अर्जुन के मार उन्हें मूर्छित कर दिया। अर्जुन को मूर्छित देख, श्रीकृष्ण घबड़ाये। इसी बीच में महावीर अच्युतायु ने अर्जुन के ऊपर एक पैना त्रिशूल फेंका। त्रिशूल का प्रहार अर्जुन के लिये घाव पर निमक छिड़कने जैसा हुआ। घाव गहरा लगने के कारण रथ का डंडा पकड़ वे बैठ गये। हे राजन्! उस समय अर्जुन को मरा हुआ जान, आपकी सेना ने बड़ा सिंहनाद किया। इधर श्रीकृष्ण, अर्जुन को अचेत देख

बहुत विकल हुए और मधुर वचन कह कर अर्जुन को सचेत करने लगे। इस बीच में कौरवपक्षीय वीर, अर्जुन और श्रीकृष्ण को लक्ष्य बना उन पर बाणवृष्टि करते रहे। उन दोनों ने महारथी अर्जुन और श्रीकृष्ण को रथ, घोड़ों, ध्वजा और पताका सहित बाणों से ढक दिया। यह एक आश्चर्य जैसी बात थी। तदनन्तर यमालय से लौटे हुए पुरुष की तरह अर्जुन धीरे धीरे सचेत हुए। उस समय अर्जुन ने अपने रथ को बाणों से आच्छादित तथा अपने उन दोनों शत्रुओं को प्रज्वलित अग्नि की तरह अपने सामने खड़ा देखा। यह देख अर्जुन ने ऐन्द्रास्त्र का प्रयोग किया। ऐन्द्रास्त्र के प्रयोग करते ही, उससे नतपर्व सहस्रों बाण निकल पड़े। वे बाण श्रुतायु और अच्युतायु के बाणों को नष्ट करते हुए उन दोनों पर भी प्रहार करने लगे। उन दोनों के बाण अर्जुन के बाणों से कट कर आकाश में उड़ने लगे। अर्जुन ने अपने बाणों के प्रहार से उन दोनों शत्रुओं के बाणों को शान्त किया और आस पास खड़े हुए अन्य महारथियों से युद्ध किया। सब लोगों के देखते ही देखते श्रुतायु और अच्युतायु के सिर और भुजाएँ कट कर, अंधड़ से उखड़े वृक्ष की तरह पृथिवी पर जा गिरीं। उन दोनों को मरा देख लोगों को वैसा ही आश्चर्य हुआ, जैसा किसी को समुद्र के सूख जाने पर हो। फिर अर्जुन उन दोनों के पचास अनुयायी रथियों का वध करते हुए तथा अन्य श्रेष्ठ वीरों का संहार करते हुए कौरवों की सेना के मध्य भाग में जा पहुँचे। अपने पिताओं का वध देख श्रुतायु और अच्युतायु के पुत्र, नियुतायु और दीर्घायु ने क्रोध में भर अर्जुन पर आक्रमण किया। किन्तु अर्जुन ने क्रुद्ध हो कुछ ही क्षणों में नतपर्व बाणों से उन दोनों को भी यमपुरी भेज दिया। कमल के सरोवर को जैसे हाथी रौंदे, वैसे ही कौरवों की सेना को अर्जुन कुचलने लगे। उस समय शत्रुपक्षीय कोई भी क्षत्रिय योद्धा उनको न रोक सका। किन्तु कुछ ही देर बाद अंगदेशी राजाओं ने सहस्रों गजसेना से अर्जुन को घेरा। दूसरी ओर से दुर्योधन की आज्ञा से पूर्व दक्षिण तथा कलिङ्ग देश

के राजाओं ने अपने विशाल काय गजों पर सवार हो, अर्जुन पर आक्रमण किया। महापराक्रमी अर्जुन ने अपने बाणों से उन राजाओं के सिरों और सुन्दर भुजाओं को काट डाला। उन कटे मूँडों और बाजूबंदों से युक्त भुजाओं से आच्छादित रणभूमि सर्प और सुवर्ण की शिलाओं से आच्छादित जैसी जान पड़ने लगी। जिस समय वीरों के सिर और भुजाएँ बाणों से कट कट कर नीचे गिरती थीं, उस समय जान पड़ता था, मानों पक्षी वृक्षों से उड़ उड़ कर पृथिवी पर बैठ रहे हैं। घायल सहस्रों हाथियों के शरीर से लोहू टपकता हुआ ऐसा जान पड़ता था, मानों पर्वतों से गेरू मिट्टी का सोता बह रहा हो। उस युद्ध में गजों पर सवार अनेक म्लेच्छ भी अर्जुन के बाणों से मर कर भूमि पर गिरे थे। उन मरे हुए म्लेच्छों की आकृतियाँ बड़ी भयङ्कर जान पड़ती थीं। विविध प्रकार के बाणों से विद्ध और विविध वेशभूषाधारी मरे हुए वीरों के अङ्ग प्रत्यङ्ग रक्त से सने हुए विचित्र शोभा दे रहे थे। अर्जुन के बाण प्रहार से बहुत से हाथी लोहू उगलने लगे थे। बहुत से चिंघार मारते हुए अपने सवारों सहित पृथिवी पर लोट पोट हो गये थे और बहुत से हाथी बाणप्रहारों को न सह कर और भयभीत हो, रणक्षेत्र से भाग रहे थे। बहुत से हाथी भयभीत हो अपने सवारों और महावतों ही को मार रहे थे। तीक्ष्ण विष की तरह भयङ्कर हाथी आपस ही में जूझ रहे थे। आसुरी माया के जानने वाले, घोररूप, घोरचक्षु, काक जैसे काले कलूटे, लम्पट (ऐयाश) और झगड़ालू यवन, पारद, शक, बाल्हीक, मतवाले हाथियों की तरह पराक्रमी द्रविड़, वसिष्ठ की गाय से उत्पन्न और काल जैसा प्रहार करने वाले दरवीभिसार, दरद और सहस्रों पुण्ड्र, म्लेच्छ आये और अर्जुन से भिड़ गये। वे अगणित थे। इनकी गणना, नहीं हो सकती थी। वे रणकुशल सब म्लेच्छ अर्जुन पर बाणवृष्टि करने लगे। अर्जुन ने जवाब में इतने बाण उन पर छोड़े कि, आकाश में वे टीड़ी दल की तरह देख पड़ने लगे। अर्जुन ने उन सब को बाणजाल से ढक दिया और अस्त्रों के द्वारा उन सिरघुटे, अधमुँडे, जुल्फों वाले और डाढ़ी वाले म्लेच्छों

का संहार कर डाला। फिर पार्वत्य वीरों को भी बाणों से विद्ध किया। तब पर्वत-कन्दरा-वासी योद्धा रणक्षेत्र छोड़ भागे। पैने बाणों की चोटें खा खा कर गिरे हुए, अश्वारोहियों तथा गजारोहियों का रुधिर बगले, काक और भेड़िये हर्षित हो पी रहे थे। अर्जुन ने गज, गजपति, राजपुत्र, घोड़े, घुड़-सवार, रथी, पैदल सिपाहियों के रक्त से युक्त, घोड़े-हाथी-रथ-रूपी बाँध से युक्त, बाण रूपी नौका वाली, रुधिर रूपी तरङ्गों से तरङ्गित, कटी हुई उँगलियों रूपी, छोटी छोटी मछलियों वाली, केशरूपी सिवार से युक्त और मृत हाथी रूपी द्वीपों से सम्पन्न, प्रलय कालीन एक भयङ्कर सरिता प्रवाहित कर दी थी, उस नदी में बहुत सा लोहू, हाथियों की लोथों से टकराता हुआ, बहा चला जाता था। जैसे वर्षा काल में जल की बाढ़ से ज़मीन का ऊबड़खाबड़पन नष्ट हो कर, वह सम देख पड़ने लगती है, वैसे ही राजपुत्रों, गजपतियों, अश्वारोहियों तथा रथियों के रुधिर से पृथिवी का ऊबड़खाबड़पन छिप गया था और वह सम देख पड़ने लगी थी। अर्जुन के हाथ से छः हज़ार वीर घुड़सवार और एक हज़ार बड़े बड़े योद्धा यमलोक सिधारे थे। इस युद्ध में अर्जुन के बाणों से सहस्रों हाथी घायल हुए थे। वे वज्र से टूटे पर्वतों की तरह पृथिवी पर गिर रहे थे। उस समय सहस्रों अश्वारोहियों, रथियों और गजों को नष्ट करते हुए अर्जुन, समरभूमि में भ्रमण कर रहे थे। मतवाला हाथी जैसे नरकुल के वन को अथवा वायु से प्रचण्ड हुआ दावा-नल, बहुवृक्षों, लताओं गुल्मों तथा सूखे काठ एवं तृणों से युक्त वन को भस्म करे, वैसे ही अर्जुन रूपी आग ने, क्रोध में भर, अस्त्ररूपी अपनी ज्वाला से, आपकी सैन्य को भस्म करना आरम्भ किया। उन्होंने अनेक रथों के रथियों को मार बहुत से रथ रथीशून्य कर दिये और लोथों से रणभूमि पाट दी। अर्जुन ने घूम घूम कर वज्र जैसे बाणों से समरभूमि को रक्त से प्लावित कर दिया। फिर आपकी सेना में घुसते हुए अर्जुन का सामना अम्बष्टराज श्रुतायु ने किया। तब अर्जुन ने श्रुतायु के घोड़ों को कङ्कपुँख युक्त बाणों से मार कर भूमि पर डाल दिया। तदनन्तर उसका

धनुष भी काट डाला। इस पर अम्बष्टराज श्रुतायु क्रोध से अन्धा हो गया और उसने गदा ले, श्रीकृष्ण और अर्जुन पर आक्रमण किया। उसने गदा-प्रहार से रथ की गति स्थगित की और गदा का एक प्रहार श्रीकृष्ण पर भी किया। श्रीकृष्ण पर गदा का प्रहार होने पर अर्जुन के क्रोध का वार पार न रहा और उन्होंने सुवर्णपुंख बाणों से अम्बष्टराज को गदा सहित वैसे ही ढक दिया, जैसे बादल सूर्य को ढक देता है। फिर अन्य बाणों से अर्जुन ने श्रुतायु की गदा के टुकड़े टुकड़े कर डाले। वह दृश्य भी एक विस्मयोत्पादक था। तब अम्बष्टराज ने दूसरी गदा ले, उससे श्रीकृष्ण और अर्जुन पर बार बार प्रहार किये। तब दो क्षुरप्र बाणों से इन्द्रध्वजा की तरह उठी हुई गदा सहित दोनों भुजाओं को अर्जुन ने काट डाला। फिर दूसरे बाण से अर्जुन ने उसका सिर भी काट कर फेंक दिया।

तब हे राजन्! यंत्रोन्मुक्त पतित इन्द्रध्वजा की तरह अम्बष्टराज श्रुतायु धड़ाम से भूमि पर गिर पड़ा। उस समय रथसेना तथा सैकड़ों हाथियों और घोड़ों की सेना से घिरे हुए अर्जुन मेघाच्छादित सूर्य की तरह जान पड़ने लगे।

चौरानवे का अध्याय

द्रोण का दुर्योधन को अभेद्य कवच प्रदान

सञ्जय ने कहा—हे धृतराष्ट्र! सिन्धुराज को मारने की इच्छा से, द्रोण की सेना को और दुस्तर भोज की सेना को हटा कर, अर्जुन सैन्यव्यूह में प्रवेश करने लगे। हे राजन्! काम्बोजकुमार सुदक्षिण और पराक्रमी श्रुतायु का अर्जुन द्वारा वध हुआ। इन दोनों के अतिरिक्त और भी बहुत सी सेना नष्ट हो गयी और जो बची उसके पैर उखड़ गये। यह देख, आपका पुत्र दुर्योधन अकेला ही रथ पर सवार हो, द्रोणाचार्य के निकट गया और हड़बड़ाता हुआ बोला—आचार्य! वह नरव्याघ्र

अर्जुन उस विशाल वाहिनी को तहस नहस कर, व्यूह के भीतर घुस गया। आप स्वयं ज़रा विचारें कि, सैन्य के इस दारुण संहारकाल में अर्जुन का वध करने के लिये हम लोगों को क्या करना चाहिये। आपका मङ्गल हो। आप ऐसा करें जिससे जयद्रथ न मारा जाय। मुझे तो आपका बड़ा भरोसा है। यह अर्जुन रूपी अग्नि, कोप रूपी प्रचण्ड पवन से धधक कर, मेरी सेना को घास फूस की तरह भस्म किये डालता है। हे परन्तप! अर्जुन ने मेरी सेना का नाश कर डाला है और वह व्यूह के भीतर घुस आया है। अतः जयद्रथ की रक्षा का भार जिन वीरों ने अपने हाथ में लिया था, वे इस समय बड़े संशय में पड़ गये हैं। हे ब्रह्मवेत्ताओं में श्रेष्ठ! मेरी ओर के राजाओं को पूर्ण विश्वास था कि, धनञ्जय कभी भी द्रोण को जीत कर, जीवित सेना में न घुस पावेगा। किन्तु हे महाकान्तिमान्! अर्जुन तो आपके सामने ही सेना में घुस आया। अतः मेरे सैनिक घबड़ा गये हैं, और मैं तो उसे नष्ट हुई सी समझ बैठा हूँ। हे ब्रह्मन्! इसका कारण मुझे मालूम है और वह यह कि, आप पाण्डवों के हितैषी हैं। इस समय मेरी बुद्धि काम नहीं देती। मैं बहुत सोचता विचारता हूँ; किन्तु मुझे कोई ऐसा उपाय नहीं सूझ पड़ता कि, जिससे यह महत् कार्य पूरा किया जाय। हे ब्रह्मन्! मैं अपने शक्त्यानुसार आपको धन देता हूँ और शक्त्यानुसार आपको प्रसन्न रखने के लिये सदा प्रयत्नवान् रहता हूँ। किन्तु आपको इसका कुछ भी विचार नहीं। हम लोग आपके चिरभक्त हैं। तब भी आपका हम लोगों में जैसा स्नेह होना चाहिये, वैसा नहीं है। प्रत्युत आप हमारे वैरी पाण्डवों को प्रसन्न रखने के लिये सदा प्रयत्नशील रहते हैं। यह कहाँ का न्याय है कि, आप हमारे आश्रित हो, हमारा अहित करने में प्रवृत्त रहते हैं। आप मधु में डूबे हुए छुरे के समान हैं। यह बात मैं इसके पूर्व नहीं जान पाया था। यदि आपने मुझे इस बात का विश्वास न दिलाया होता कि, आप पाण्डवों को रोक कर, उन्हें पकड़ लेंगे, तो मैं घर जाने को उत्सुक जयद्रथ को कभी न रोकता। आपने जब जयद्रथ की रक्षा की प्रतिज्ञा

की, तभी मैंने अपनी मूर्खतावश, सिन्धुराज को घोरज धरा, काल के गाल में डाल दिया। भले ही कोई यमराज के चंगुल में पड़ बच जाय, किन्तु अर्जुन के सामने पड़, जयद्रथ कभी जीवित नहीं रह सकता। अतएव हे रथारव! आप ऐसा करें, जिससे अर्जुन के हाथ से जयद्रथ न मारा जाय। मेरी घबराहट में कही हुई इन बातों के लिये आप मुझ पर अप्रसन्न न हों। साथ ही जयद्रथ की रक्षा का विधान करें।

द्रोणाचार्य ने कहा—हे राजन्! मैं तेरी बातें सुन, तेरे ऊपर अप्रसन्न नहीं हूँ। क्योंकि मेरे लेखे तू मेरे अश्वत्थामा के तुल्य है। किन्तु मैं कहूँगा सत्य ही बात। सुन, अर्जुन के सारथि श्रीकृष्ण बड़े पराक्रमी हैं। उनके घोड़े भी बड़े तेज हैं। अतः ज़रा सी सन्धि मिलने पर भी वे सेना में घुस जाते हैं। अर्जुन के चलाये हुए बाण रथियों के रथों के पीछे कोस कोस भर दूर जा कर गिर रहे हैं। क्या तुझे यह नहीं देख पड़ता? मैं बूढ़ा हूँ। अतः अब मुझमें इतनी फुर्ती नहीं रह गयी कि, मैं इधर उधर दौड़ सकूँ। फिर यह भी ज़रा देख, पाण्डवों की सेना, हमारे व्यूह के मुख के निकट पहुँचना ही चाहती है। मैंने क्षत्रियों के सामने प्रतिज्ञा की थी कि, समस्त धनुर्धारियों के सामने युधिष्ठिर को पकड़ूँगा। सो इस समय अर्जुन और युधिष्ठिर में बहुत दूर का फासला हो गया है। साथ ही युधिष्ठिर अपनी सेना के आगे है। अतः मैं इस मोर्चे को छोड़ अर्जुन से भिड़ने नहीं जाऊँगा, तू अपने सहायकों को ले, समान कुल और समान बल अर्जुन से जा कर लड़। डर मत। तू तो पृथिवीश्वर है। तू शूरवीर है, शत्रु को पकड़ सकता है और शत्रु के नगरों को जीत सकता है। अतः अर्जुन का सामना तू स्वयं जा कर कर।

दुर्योधन बोला—हे आचार्य! जब समस्त शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ आप ही के सामने अर्जुन आगे बढ़ गया, तब मेरे रोके वह कैसे रुक सकेगा। समरभूमि में वज्रधारी इन्द्र को भले ही कोई जीत ले, किन्तु परपुरञ्जय अर्जुन को जीत लेना असम्भव है। जिसने युद्ध में हृदिकनन्दन भोज और आप जैसे देवता को भी जीत लिया तथा श्रुतायु, सुदक्षिण, श्रुतायुध, अच्युतायु,

अच्युतायु, एवं सहस्रों म्लेच्छ वीरों को यमालय भेज दिया, उस अग्निवत् जाज्वल्यमान, महाबली एवं अस्त्रकुशल अर्जुन का सामना मैं कैसे कर सकूँगा? क्या आप उसके साथ मेरा भिड़ जाना उचित समझते हैं? मैं सर्वथा आपका आज्ञाकारी हूँ और आपका दास हूँ। आप इस दास की लाज रखें।

द्रोण ने कहा—हे कुरुपुत्र! तू जो कुछ कह रहा है सो सब ठीक है; सचमुच अर्जुन दुराधर्ष है; किन्तु मैं ऐसा उपाय किये देता हूँ, जिससे तू उसके सामने टिक सके। तू आज श्रीकृष्ण के सामने ही अर्जुन से लड़ और सब लोग तेरा और अर्जुन का आश्चर्यप्रद तुमुल युद्ध देखें। मैं यह सुवर्ण कवच तुझे पहिनाये देता हूँ। इसके शरीर पर रहते तेरे शरीर पर किसी भी अस्त्र का असर न होगा। अर्जुन तो अर्जुन, यदि देवता, दैत्य, सर्प, राक्षस और मिल कर तीनों लोक भी तुझसे लड़ने को आवें, तो भी इस कवच को कोई भी अस्त्रधारी नहीं फोड़ सकेगा। अतः तू आज इस कवच को पहिन क्रुद्ध अर्जुन से जा कर लड़। आज वह तेरे प्रहारों को सहन न कर सकेगा।

सञ्जय ने कहा—यह कह आचार्य द्रोण ने तुरन्त ही आचमन किया और शास्त्रोक्त विधि से मंत्र पढ़, वह चमचमाता तथा अद्भुत कवच दुर्योधन को पहिना दिया। तदनन्तर हे राजन्! आपके पुत्र की विजयकामना से तथा अपनी विद्या दिखा लोगों को आश्चर्य चकित करने के लिये, द्विजश्रेष्ठ द्रोण ने इस प्रकार स्वस्तिवाचन किया।

द्रोण बोले—हे दुर्योधन! परमात्मा, ब्रह्मा और ब्राह्मण तेरा मङ्गल करें। सर्प तथा अन्य प्राणी तेरा मङ्गल करें। नहुषपुत्र ययाति, धुन्धुमार, भगीरथ आदि राजर्षि तेरा सदा मङ्गल करें। एकपाद, बहुपाद तथा पाद-शून्य जीवों से महारण में सदा तेरी रक्षा हो। हे अनघ! स्वाहा, स्वधा, शची, लक्ष्मी और अरुन्धती तेरा सदा कल्याण करें। हे राजन्! असित, देवल, विश्वामित्र, अङ्गिरा, वसिष्ठ और कश्यप तेरा मङ्गल करें। धाता,

विधाता, लोकपाल, दिशाएँ, दिक्पाल और छः मुखों वाले कार्तिकेय आज तेरा मङ्गल करें। भगवान् सूर्य, चारों दिक्पाल, पृथिवी, आकाश तथा समस्त ग्रह आज तेरी समस्त शत्रुओं से रक्षा करें। जो नागराज इस पृथिवी को अपने मस्तक पर धारण किये हुए हैं, वे नागराज शेष जी भी तेरा मङ्गल करें। हे गान्धारीनन्दन! पूर्वकाल में वृत्रासुर ने रण में हज़ारों बड़े बड़े देवताओं को परास्त कर, उनके शरीर शस्त्रों से विदीर्ण कर डाले थे। इससे समस्त देवताओं का तेज और बल नष्ट हो गया था। तब समस्त देवता उस असुर से भयत्रस्त हो, ब्रह्मा जी के शरण में पहुँचे थे। उस समय देवताओं ने ब्रह्मा जी से कहा था—हे देवसत्तम! वृत्रासुर से पीड़ित हम देवताओं को आप बचावें और उपस्थित महासङ्कट से हमें उबारें। इस पर ब्रह्मा जी ने अपने निकट बैठे हुए विष्णु तथा सामने खड़े अन्य समस्त उदास देवताओं से यह कहा था—हे देवगण! यह वृत्रासुर विश्वकर्मा के दुर्धर्ष तेज से उत्पन्न हुआ है। विश्वकर्मा ने पूर्वकाल में एक लाख वर्षों तक तप कर, महादेव जी से वरदान प्राप्त कर, वृत्रासुर को पैदा किया है। शिव जी के वर से बलवान् यह वृत्रासुर तुम सब को मारता है। मुझे ब्राह्मणों की, इन्द्र की तथा अन्य समस्त देवताओं की रक्षा करनी अभीष्ट है। अतः मैं कहता हूँ कि, तुम सब महादेव जी से जा कर मिलो। उनकी सहायता से तुम वृत्रासुर को निश्चय ही जीत लोगे। तुम सब मन्दराचल पर्वत पर जाओ। वहाँ पर तुम्हें तप के मूल रूप, दक्ष के यज्ञ को नष्ट करने वाले, पिनाकहस्त, प्राणिमात्र के प्रभु, भग देवता के नेत्रों को फोड़ने वाले, महादेवजी के दर्शन मिलेंगे। यह सुन और ब्रह्मा जी को आगे कर वे सब देवता मन्दराचल पर गये। वहाँ उन्होंने करोड़ों सूर्यों की प्रभा जैसे कान्तिमान् तेजःपुञ्ज महादेव जी को देखा। देवताओं को देखते ही शङ्कर ने कहा—आप लोग भले आये। बतलाइये आपका मैं क्या काम करूँ। मेरा दर्शन निष्फल नहीं होता। अतः आपकी कामना पूर्ण होगी। इस पर देवता बोले—वृत्रासुर ने हमारी धाक उठा दी है। अतः अब आप हमारे

रक्षक हों। हे देव! वृत्रासुर के प्रहारों से जर्जरित हमारे यह शरीर, हमारे कथन के प्रमाण हैं।

शिव जी ने कहा—मैं तुम्हारा हाल सुन चुका हूँ। तुम जिस दैत्य के बारे में कहते हो, वह तो एक बड़ी भयङ्कर कृत्या है। वह विश्वकर्मा के तेज से उत्पन्न हुई है और साधारण व्यक्ति के मान की वह है भी नहीं। किन्तु तुम समस्त देवताओं की अनुरोधरक्षा मुझे करनी ही पड़ेगी। अतः हे इन्द्र! तुम मेरे शरीर के इस कवच को ले लो, साथ ही इस मंत्र को पढ़ इसे पहन लो।

द्रोणाचार्य बोले—इस प्रकार कह, वरद शिवजी ने मंत्र और कवच इन्द्र को दिया। उस कवच से रक्षित इन्द्र ने वृत्रासुर की सेना पर आक्रमण किया। वह कवच ऐसा दृढ़ था कि, उसके जोड़ बड़े बड़े दृढ़ अस्त्रों के आघात से भी नहीं टूट सकते थे। उस कवच को पहिन कर ही इन्द्र ने वृत्रासुर का समर में वध किया था। इन्द्र ने वह मंत्र सहित कवच अङ्गिरा को दे उसके धारण करने की विधि बतलायी। अङ्गिरा ने वह विधि अपने पुत्र बृहस्पति को और बृहस्पति ने अग्निवेश्य को और अग्निवेश्य ने वह कवच सहित विधि मुझे बतलायी है। हे दुर्योधन! आज वही कवच मैं तेरे शरीर की रक्षा के लिये अभिमंत्रित कर, तुझे पहिनाता हूँ।

सञ्जय ने कहा—महाद्युति आचार्यश्रेष्ठ द्रोण ने इस प्रकार कह, द्रोण ने पुनः यह भी कहा—हे भारत! पूर्वकाल में मन्त्र पढ़, ब्रह्मा ने जैसे यह कवच विष्णु को धारण करवाया था और ब्रह्मा जी ने जैसे इसे तारकासुर के युद्ध में इन्द्र को पहिनाया था, उसी प्रकार ब्रह्मा के उपदेशानुसार, यह दिव्य कवच मैं तुझे पहनाता हूँ। यह कह द्रोण ने वह कवच विधिपूर्वक पहिना, दुर्योधन को अर्जुन से लड़ने के लिये भेज दिया।

तब तो महाबाहु दुर्योधन, सहस्रों रथियों, त्रिगर्त सैनिकों और मदमत्त वीर्यवान् सहस्रों हाथियों, एक लाख घुड़सवारों तथा अन्य महारथियों को

साथ में ले, बड़ी धूमधाम से अर्जुन के रथ की ओर वैसे ही बढ़ा, जैसे विरोचनपुत्र इन्द्रराज बलि अग्रसर हुआ था। हे भारत! जिस समय दुर्योधन आगे बढ़ा उस समय आपकी सेना में अगाध सागर के खलभलाने की तरह बड़ा कोलाहल हुआ।

पञ्चानवे का अध्याय

भयङ्कर मार काट

सञ्जय ने कहा—हे राजन्! जब अर्जुन और श्रीकृष्ण हमारे सैन्यव्यूह में घुस गये और पीछे से जब दुर्योधन ने दल बल सहित उन पर आक्रमण किया; तब पाण्डवों ने सैनिकों सहित सिंहनाद कर, बड़े वेग से द्रोणाचार्य पर चढ़ाई की। व्यूह के मुहाने पर बड़ी विकट लड़ाई हुई। उसे देख रोंगटे खड़े होते तथा बड़ा आश्चर्य होता था। मध्यान्ह काल में इस युद्ध ने जैसी भयङ्करता धारण की, वैसी भयङ्करता न तो हमने अन्य किसी युद्ध में देखी और न अपने बाप या बाबा के मुख से कभी सुनी थी। अपनी सेना का व्यूह बना धृष्टद्युम्न आदि प्रसिद्ध पाण्डव पक्ष के योद्धा, द्रोण पर बाणवृष्टि करने लगे। हम लोग इधर से द्रोण को आगे कर, धृष्टद्युम्नादि पाण्डवों के योद्धाओं पर बाण चलाने लगे। जैसे शिशिर ऋतु में हवा के ज़ोर से दो भागों में विभाजित हुआ विशाल मेघ शोभित होता है, वैसे ही इन दोनों सेनाओं की शोभा हो रही थी। वर्षाकाल में जैसे वेगवती गङ्गा, यमुना आपस में वेग से टकरा, कभी आगे बढ़तीं और कभी पीछे हटतीं हैं, वैसे ही ये दोनों सेनाएँ भी आपस में टकरा, कभी पीछे हटतीं और कभी आगे बढ़ती थीं। हाथियों, घोड़ों और रथों से युक्त यह संग्राम रूपी विशाल मेघ आकाश में गरज रहा था। विविध प्रकार के शस्त्र रूपी पवन चल रहे थे। गदा रूपी बिजलियाँ चमक रही थीं। द्रोण रूपी पवन से विचलित महासेना रूपी मेघ, बाण रूपी सहस्रों धाराओं से, पाण्डव सैन्य रूपी धधकते हुए

आदि पर गिर रहा था। ग्रीष्म ऋतु के अन्त में समुद्र में घुस, उसको विलोड़ित करने वाले झंझावात की तरह ब्राह्मणश्रेष्ठ द्रोण, पाण्डवों की सेना को विलोड़ित करने लगे। जैसे अत्यन्त प्रबल जल का वेग पुल को तोड़ता है, वैसे ही पाण्डव, कुरुसेना के व्यूह को तोड़ते हुए, द्रोणाचार्य पर आक्रमण करने लगे और जैसे पर्वत, बहती हुई जलराशि को रोके, वैसे ही द्रोण, क्रुद्ध पाण्डवों और पाञ्चालों तथा केकय देशी योद्धाओं को रोकने लगे। अन्य शूर बलवान राजा चारों ओर से आक्रमण कर, पाञ्चालों को हटाने लगे। तदनन्तर शत्रुसेना को छिन्न भिन्न करने के लिये पाण्डवों सहित नरव्याघ्र धृष्टद्युम्न ने रण में बारम्बार द्रोण पर प्रहार किये। जैसे द्रोणाचार्य, धृष्टद्युम्न पर बाणवृष्टि करते थे, वैसेही धृष्टद्युम्न भी उन पर बाण वृष्टि करते थे। चमचमाती तलवारों, शक्तियों, भालों और ऋष्टियों से युक्त प्रभञ्जन रूपी बिजली को कड़कड़ाते और धनुष टंकार रूपी मेघ गर्जन करते हुए धृष्टद्युम्न ने अन्त में कौरवसेना के अनेक महारथियों और घुड़सवारों का नाश कर, चारों ओर से बाण रूपी ओलों की वृष्टि कर, कौरवसैन्य को रणभूमि से भगा दिया। द्रोणाचार्य पाण्डवों के जिस सैन्य दल पर बाण प्रहार करते, धृष्टद्युम्न झट वहाँ पहुँच बाण प्रहार से द्रोण को हटा देते थे। द्रोणाचार्य के बहुत सावधानता-पूर्वक युद्ध करने पर भी धृष्टद्युम्न ने द्रोण की अधीनस्थ सेना के तीन टुकड़े कर दिये। कितने ही योद्धा पाण्डवों की सेना की मार को न सह कर भोजराज की सेना में जा मिले। कितने ही जलसन्ध की सेना में चले गये और कितने ही द्रोण के साथ ही बने रहे। द्रोणाचार्य तो अपनी सेना को जोड़ बटोर कर एकत्र करते थे और धृष्टद्युम्न उनकी सेना का संहार करते चले जाते थे। जैसे जंगल में बिना पशुपाल के हिंस्रजन्तु उसके पशुओं को मार डालते हैं, वैसे ही पराक्रमी पाण्डव और सृञ्जय, रक्षकहीन कौरव सैन्य का वध करते जाते थे। लोगों ने तो समझ लिया कि, इस घोर युद्ध में धृष्टद्युम्न के प्रहार से मुग्ध योद्धाओं को कालदेव निगलते चले जा रहे हैं। जिस प्रकार दुष्काल, रोगों और चोरों

के उत्पात से बुरे राजा का राज्य उजड़ जाता है, वैसे ही कौरवों की सेना भी पाण्डवों के भय से उजड़ गयी। सूर्य की किरणों और हथियारों की चमक तथा उड़ती हुई धूल से लड़ने वालों की आँखें मुँद गयीं।

जब धृष्टद्युम्न के प्रचण्ड आक्रमण से द्रोण की सेना के तीन टुकड़े हो गये, तब द्रोण ने क्रोध में भर पाञ्चालों को बाणों से विद्ध करना आरम्भ किया। उस समय द्रोण का रूप प्रदीप्त कालाग्नि जैसा जान पड़ता था। महारथी द्रोण, एक एक बाण से कितने ही रथियों, हाथियों, घोड़ों और पैदलों को विद्ध कर देते थे। पाण्डवों की सेना में ऐसा एक भी वीर न था, जो द्रोण के बाणप्रहार को सह सके। फल यह हुआ कि, धृष्टद्युम्न की सेना, द्रोण के बाण रूपी सूर्य के ताप से उत्तप्त हो इधर उधर घूमने लगी। उधर धृष्टद्युम्न द्वारा पलायित आपकी सेना भी चारों ओर से वैसे ही उत्तप्त हो उठी, जैसे सूखा वन अग्नि लगने पर चारों ओर से उत्तप्त हो उठता है। द्रोण और धृष्टद्युम्न के बाणों से उत्पीड़ित दोनों पक्षों के सैनिक, अपने प्राणों की परवाह न कर, पूरा बल लगा—एक दूसरे से भिड़ गये। उस समय दोनों सेनाओं में से एक भी वीर डर कर न भागा। महारथी विकर्ण, विविंशति और चित्रसेन ने भीमसेन को घेरा। आपके उक्त तीनों पुत्रों के पृष्ठरक्षक थे अवन्ति के विन्द, अनुविन्द और वीर्यवान क्षेमधूर्ति। महारथी एवं तेजस्वी कुलकानन्दन वाल्हीकराज अपनी सेना और मंत्रियों सहित, द्रौपदी के पाँचों पुत्रों के सामने आ डटे। शिविकानन्दन राजा गोवासन ने एक हजार योद्धाओं को साथ ले काशिराज अभिभू के पुत्र पराक्रान्त का सामना किया। मद्रदेशाधिपति राजा शल्य ने प्रज्वलित अग्निवत् कुन्तीनन्दन युधिष्ठिर को चारों ओर से घेर लिया। क्रोधी दुःशासन ने अपनी सेना को दूर रख, क्रोध में भर, अकेले ही सात्यकि पर चढ़ाई की। मैं अपना कवच पहिन और चार सौ महाधनुर्धरों को साथ ले, चेकितान के सामने गया। शकुनि ने धनुर्धर, शक्तिधर ने तलवार-धारी सात सौ गांधारी योद्धाओं को साथ ले, माद्रीपुत्र नकुल और सह-

देव को छोड़ कर तथा महाधनुर्धर अवन्तिराज विन्द तथा अनुविन्द ने प्राणपण से विराट और मत्स्यराज को घेरा। राजा बाह्लीक ने महापराक्रमी एवं अजेय यज्ञसेनसुत शिखण्डी पर आक्रमण किया। अवन्ति देश के राजा ने सौवीर सेना तथा प्रभद्रक वीरों को साथ ले, क्रुद्ध धृष्टद्युम्न को रोका। अलायुध ने घटोत्कच का सामना किया। महारथी कुन्तिभोज ने एक विशाल सेना को साथ ले राक्षसराज अलायुध पर आक्रमण किया और उसे घेर लिया।

हे राजन्! सिंधुदेश का राजा जयद्रथ सब के पीछे था और कृपाचार्य आदि महारथी उसकी रक्षा के लिये नियुक्त थे। जयद्रथ के दोनों ओर दो चक्ररक्षक खड़े थे। एक था अश्वत्थामा जो दाहिनी ओर था और बाईं ओर कर्ण खड़ा था। सोमदत्तनन्दन भी अग्रसर कर्ण, कृपाचार्य, वृषसेन, शल और दुर्जय शल्य आदि बड़े बड़े नीतिवान् महाधनुर्धर एवं युद्धकुशल योद्धा जयद्रथ के पृष्ठरक्षक थे। इस प्रकार जयद्रथ चारों ओर से सुरक्षित किया गया था।

छियानबे का अध्याय

द्वन्द्वयुद्धों का परिणाम

सञ्जय ने कहा—अब मैं कौरवों और पाण्डवों के आश्चर्यजनक युद्ध का वर्णन करता हूँ। सुनिये। पाण्डवों ने व्यूह के सामने खड़े हुए द्रोणाचार्य के आगे जा और उनकी सेना का नाश करने की इच्छा से, उनसे युद्ध किया। महायशस्वी द्रोण ने भी अपने व्यूह की रक्षा करने में कोई बात उठा न रखी। वे अपने सैनिकों को साथ ले खूब लड़े। आप के पुत्र के हितैषी उज्जैन के विन्द और अनुविन्द ने कुपित हो राजा विराट के दस बाण मारे। तब इन दोनों भाइयों से विराट ने भी खूब युद्ध किया। जैसे सिंह दो मतवाले महारथियों से लड़े, वैसे ही उनमें युद्ध

हुआ। इस लड़ाई में लोहू की धारें बहीं। महाबली द्रुपदनन्दन ने, कुपित बाल्हीकराज को ऐसे भयङ्कर बाणों से घायल किया, जो हड्डियों को तोड़ देने वाले और मर्मस्थलों को विद्ध करने वाले थे। तब बाल्हीकराज ने भी क्रोध में भर नौ नतपर्व एवं सुवर्णपुंख बाण धृष्टद्युम्न के मारे। इस घोर युद्ध में लोग बाणों और बरछियों की मार से विकल थे। उन्हें देख डरपोंक बड़े भयभीत हो रहे थे और शूरवीर प्रसन्न हो रहे थे। बाणों से समस्त दिशाएं आच्छादित हो गयी थीं—अतः वहाँ कुछ भी नहीं देख पड़ता था। शिविपुत्र राजा गोवासन अपनी सेना सहित महारथी काश्यपुत्र से वैसे ही जूझ रहे थे, जैसे एक हाथी दूसरे हाथी से जूझे। क्रोध में भर कर राजा बाल्हीक, द्रौपदी के महारथी पाँचों पुत्रों से युद्ध करता हुआ, वैसा ही शोभायमान हो रहा था, जैसे पाँच इन्द्रियों से जूझने वाला मन। वे पाँचों उस पर चारों ओर से वैसे ही बाणवृष्टि कर रहे थे, जैसे इन्द्रियों के विषय शरीर से लड़ा करते हैं। आपके पुत्र दुःशासन ने वृष्णिवंशी सात्यकि के नतपर्व नौ पैने बाण मारे। सत्यपराक्रमी सात्यकि को महाबली दुःशासन ने बाणप्रहार से घायल कर मूर्छित कर दिया। जब सात्यकि सचेत हुआ, तब उसने दुःशासन को दस कङ्कपुंख युक्त बाणों से विद्ध किया। दोनों ही वीर बाणप्रहार से घायल हो, रक्त में सने फूले हुए दो टेसू के वृक्षों जैसे जान पड़ते थे। राजा कुन्तिभोज के बाणों से घायल हो राक्षसराज अलम्बुष पुष्पित पलाश वृक्ष जैसा शोभायमान हो रहा था और क्रोध से मूर्छित सा हो रहा था। उसने कुन्तिभोज को बहुत से लोहे के बाणों से घायल कर, आपकी सेना के आगे, सिंहगर्जन किया। जैसे इन्द्र और जम्भासुर का युद्ध हुआ था, वैसे ही राजा कुन्तिभोज और राक्षसराज अलम्बुष का युद्ध हुआ था। नकुल और सहदेव ने पूर्व वैर को स्मरण कर, शकुनि को मारे बाणों के विकल कर डाला। इस प्रकार, हे धृतराष्ट्र! आपके कारण उत्पन्न और कर्ण द्वारा बढ़ाया हुआ यह बड़ा भारी जनसंहार हो रहा था। जिसका मूल क्रोध है, और जो आपके

पुत्रों से रक्षित है। वह अग्नि रूपी रथ, समूची पृथिवी को भस्म कर डालने को तैयार हो गया है।

पाण्डुपुत्रों ने मारे बाणों के शकुनि को रणक्षेत्र से भगा दिया। उस समय उससे कुछ भी करते धरते न बन पड़ा। उसकी उस समय सिट्टी गुम हो गयी। महारथी माद्रीनन्दनों ने शकुनि को रण छोड़ भागते देख, उस पर वैसे ही बाण वृष्टि की जैसे दो मेघ किसी पर्वत पर जल वृष्टि करते हैं। जब नतपर्व बाणों से शकुनि बहुत पीड़ित हुआ, तब वह घोड़ों को तेज़ दौड़ा, द्रोण की सेना में भाग गया। घटोत्कच ने अलायुध पर सामान्य रूप से आक्रमण किया। उन दोनों का युद्ध बड़ा विचित्र था। वैसा युद्ध पूर्वकाल में राम और रावण का हुआ था। राजा युधिष्ठिर ने मद्रराज शल्य के पहले पचास फिर सात बाण मारे। तदनन्तर उन दोनों में वैसा ही अद्भुत युद्ध हुआ जैसा पूर्वकाल में इन्द्र और शम्बरासुर में हुआ था। चित्रसेन, विविंशति और आपका पुत्र विकर्ण बड़ी भारी सेना को साथ लिये हुए भीमसेन से लड़ने लगे।

सत्तानवे का अध्याय

धृष्टद्युम्न और आचार्य द्रोण की लड़ाई

संजय ने कहा—हे धृतराष्ट्र! उस लोमहर्षण संग्राम के होने के समय, तीन भागों में बटे हुए कौरवों के ऊपर पाण्डवों ने आक्रमण किया। युद्ध में भीमसेन ने महाबाहु जलसंध पर और युधिष्ठिर ने कृतवर्मा पर आक्रमण किया था। सूर्य की तरह चमचमाते बाणों को छोड़ते हुए धृष्टद्युम्न ने द्रोणाचार्य पर आक्रमण किया था। इस पर रणकुशल फुर्तीले कौरवों और पाण्डवों का आपस में युद्ध आरम्भ हो गया और बड़ी विकट लड़ाई होने लगी। प्राणनाशकारी उस भयङ्कर युद्ध में निर्भीक हो, द्वन्द्व

युद्ध करने वाले योद्धाओं में महाबली द्रोणाचार्य और पाञ्चाल राजकुमार धृष्टद्युम्न ने जब आपस में बाणप्रहार किये; तब उनके युद्ध को देख, लोगों को बड़ा आश्चर्य हुआ। वे दोनों पुरुषसिंह रणक्षेत्र में चारों ओर, कमल वन की तरह, मनुष्यों के सिरों को काट काट कर, गिराने लगे। सैनिकों के कटे हुए वस्त्रों, टूटे फूटे भूषणों, शस्त्रों, ध्वजाओं और धनुषों के ढेर लगे हुए थे। सोने के कवचों को पहिने हुए मृत शूरवीरों की लोथें आपस में सट कर, मानों बिजली युक्त बादलों जैसे दिखलायी देती थीं। कितने ही महारथी योद्धा बड़े बड़े धनुषों से पैने बाण मार मार कर, हाथियों घोड़ों और सिपाहियों का संहार कर, उन्हें भूमि पर गिराने लगे। महारथी शूरवीरों की तलवारें, ढालें, धनुष, बाण, कवच और कटे हुए सीसों से रणभूमि परिपूर्ण हो गयी। जब इस प्रकार बहुत से शूरवीर मारे गये, तब बहुत से सिरहीन कबन्ध युद्धक्षेत्र में इधर उधर, दौड़ते हुए देख पड़े। गीध, कङ्क, बगुले, बाज, कौवे और शृगालादि माँसभक्षी जीव, उस रणभूमि में चारों ओर दिखलायी देने लगे। वे सब माँस खाते और रक्त पान करते, कटे सिरों के बाल खींचते तथा लोथों से आँतें निकालते, उन्हें इधर उधर फहोरते हुए दौड़ते तथा उड़ते दिखलायी पड़ते थे। उस समय अस्त्र शस्त्रों के चलाने में निपुण युद्धविद्याविशारद सैनिक वीर, विजयकामना से घोर युद्ध कर रहे थे। युद्ध करते हुए और घावों से रुधिर बहाते हुए योद्धा तलवार घुमाते रणक्षेत्र में चारों ओर मार काट मचाते घूम रहे थे। कोई कोई ऋष्टि, बरछी, प्रास, तोमर, त्रिशूल, पट्टिश, गदा और परिघ से युद्ध करते हुए एक दूसरे का वध करने लगे। कितने ही शूरवीर योद्धा अस्त्र शस्त्रों से रहित हो, मल्लयुद्ध करते हुए एक दूसरे का वध कर रहे थे। रथी रथी से, अश्वारोही अश्वारोही से, गजारूढ़ गजारूढ़ सैनिकों से और पैदल सिपाही पैदल सिपाही से लड़ रहे थे। अनेक मतवाले हाथी अन्य मतवाले हाथियों से उन्मत्तवत् युद्ध करते हुए मर मर कर पृथिवी पर गिर रहे थे।

हे राजन्! इस महाविकट युद्ध में धृष्टद्युम्न ने अपने रथ के घोड़ों को द्रोणाचार्य के रथ के घोड़ों से सटा दिया। उन दोनों पुरुषसिंहों के महा-वेगवान घोड़े आपस में सट जाने पर बड़े शोभायमान जान पड़े। धृष्टद्युम्न के कबूतर के रंग के घोड़े, द्रोणाचार्य के रक्तवर्ण घोड़ों से सट कर ऐसे जान पड़े, मानों बिजली से युक्त बादल हों। द्रोणाचार्य के इतने निकट पहुँच, पराक्रमी धृष्टद्युम्न ने धनुष बाण तो रख दिया और ढाल तलवार उठा ली। शत्रुनाशक वीरवर धृष्टद्युम्न, द्रोण का वध करने की इच्छा से, अपने रथ की पैंजनी पर पैर रख, द्रोणाचार्य के रथ पर चढ़ गये। सारथी के बैठने की जगह पर आ, वहाँ के दृढ़ बंधनों और घोड़ों की पीठों के पिछले भाग पर वे खड़े हो गये। यह देख कर, सब लोगों ने धृष्टद्युम्न की सराहना की। जिस समय धृष्टद्युम्न तलवार ढाल लिये द्रोण के लाल रंग वाले घोड़ों की पीठ पर पैर रखे खड़े थे, उस समय द्रोण के लिये इतना भी अवकाश न था कि, वे बाण चलावें। जैसे माँसलोलुप श्येन पक्षी, अपने शिकार पर टूटता है, वैसे ही धृष्टद्युम्न द्रोण का वध करने की इच्छा से उनके ऊपर कूद पड़े। तब द्रोणाचार्य ने सौ बाण चला, धृष्टद्युम्न की ढाल काटी और दस बाणों से उनकी तलवार काट गिरायी। फिर चौंसठ बाणों से उनके रथ के घोड़ों का वध कर, दो भल्लबाणों से रथ की ध्वजा काटी और उनके सारथि और पृष्ठरक्षकों को मार डाला। तदनन्तर द्रोण ने इन्द्र के वज्र छोड़ने की तरह, बड़ी फुर्ती के साथ प्राणनाशक एक भयङ्कर बाण अपने धनुष पर रख, धृष्टद्युम्न पर छोड़ा। उस बाण को सात्यकि ने चौदह बाण मार कर काट डाला और द्रोण के चंगुल में पड़े हुए धृष्टद्युम्न को बचाया। हे राजन्! जैसे सिंह के चंगुल में फँसा हिरन बच जाय, वैसे ही पुरुषसिंह द्रोण के चंगुल में फँसे हुए धृष्टद्युम्न को जब सात्यकि ने बचा लिया, तब धृष्टद्युम्न की रक्षा करने वाले सात्यकि और धृष्टद्युम्न के आचार्य द्रोण ने बड़ी फुर्ती के साथ छब्बीस बाण मारे। इसके बाद द्रोण ने सृञ्जयों को घेरा। तब सात्यकि ने द्रोण के वक्षःस्थल में छब्बीस बाण मारे। जब द्रोणाचार्य

और सात्यकि का युद्ध होने लगा; तब विजयाभिलाषी पाञ्चाल देशीय योद्धा, धृष्टद्युम्न को दूसरी ओर ले गये।

अट्ठानवे का अध्याय

आचार्य द्रोण और सात्यकि की लड़ाई

धृतराष्ट्र बोले—हे सञ्जय। जब वृष्णि-वंश में श्रेष्ठ सात्यकि ने द्रोणाचार्य के बाण को काट कर, धृष्टद्युम्न की प्राणरक्षा की; तब समस्त शस्त्रधारियों में उत्कृष्टतम महाधनुर्धर पुरुषव्याघ्र द्रोण ने सात्यकि के साथ क्या व्यवहार किया?

सञ्जय ने उत्तर देते हुए कहा—हे राजन्! उस समय क्रोध रूपी विष से युक्त, धनुष रूपी मुख को फैलाये हुए, तेज़ बाण रूपी दाँतों वाले, तेज़ नाराच रूपी डाढ़ों वाले, क्रोध के मारे लाल नेत्र किये हुए द्रोण रूपी महासर्प ने, लंबी लंबी साँसे लीं और रक्तवर्ण घोड़ों से युक्त रथ पर सवार द्रोण ने सात्यकि पर आक्रमण किया। उन्होंने सात्यकि पर रुक्मपुंख बाण छोड़े। उस समय उनके रथ के घोड़े रणभूमि में उड़ते हुए से और पर्वतों को भी लाँघ कर, रणभूमि में चारों ओर भ्रमण करने लगे। परपुरञ्जय एवं शत्रुनाशन युद्धदुर्मद सात्यकि ने, बाणवृष्टि करने वाले रथ की घरघराहट रूपी गर्जन, चमचमाते बाण रूपी बिजली, तथा शक्ति और तलवार रूपी वज्र से युक्त, क्रोध रूपी वायु के वेग से प्रेरित, द्रोणाचार्य रूपी मेघ को सामने आते देख, हँस कर अपने सारथि से कहा—हे सारथि, यह वीर ब्राह्मण, दुर्योधन के दुःख तथा भय का नाश करने के लिये अपने ब्राह्मणोचित कर्त्तव्य को बिसार कर, दुर्योधन का रक्षक बना चढ़ा चला आ रहा है। अतः तुम भी उत्साही पुरुष की तरह, अपने घोड़ों को तेज़ी से दौड़ा कर, अपना रथ उसके सामने ले चलो।

यह राजकुमारों के आचार्य हैं और अपने को बड़ा शूरवीर लगाते हैं। तदनन्तर वायुवेग की तरह चलने वाले घोड़ों में श्रेष्ठ सात्यकि के धौले रंग के घोड़े तुरन्त द्रोणाचार्य के रथ के सामने जा पहुँचे। तब उन दोनों में युद्ध होने लगा। सहस्रों बाण चला वे एक दूसरे को पीड़ित करने लगे। उन दोनों पुरुषश्रेष्ठों के छोड़े बाणजाल से आकाश ढक गया और दसों दिशाएँ बाणमयी हो गयीं। ग्रीष्म ऋतु बीतने पर, जैसे मेघ सब को जलधारा से आच्छादित कर देते हैं, वैसे ही वे दोनों एक दूसरे को बाणों से आच्छादित करने लगे। बाणों के चारों ओर छा जाने से अँधेरा हो गया। सूर्य न देख पड़ने लगे। वायु का चलना रुक गया। उस बाणजाल की छटा कोई भी उस अँधेरे को दूर न कर सका। दोनों शूर, समान रूप से एक दूसरे पर बाणवृष्टि कर रहे थे। दोनों ओर से निरन्तर आती हुई बाणवृष्टि के बाणों के आपस में टकराने से वैसा ही शब्द होता था, जैसा इन्द्र की छोड़ी हुई उल्काओं के टकराने से होता है। नाराचों से विद्ध अश्व, महासर्पों से डसे हुए सर्पों जैसा देख पड़ता था। युद्धविशारद उन दोनों के धनुष टंकार का शब्द पर्वतशिखर पर गिरे हुए वज्रों की कड़क जैसा जान पड़ता था। उन दोनों के रथ, सारथि और वे दोनों स्वयं भी सुवर्णपुँख बाणों से विद्ध हो, विचित्र रूप वाले देख पड़ते थे। उन दोनों के छत्र और ध्वजाएँ गिर पड़ी थीं। दोनों ही लोहू से लथपथ हो रहे थे। वे दोनों विजयाभिलाषी थे और लोहू के टपकने से वे मद चुआने वाले हाथी जैसे जान पड़ते थे। वे दोनों प्राणनाशक बाणों को छोड़ रहे थे। उस समय हाथियों की चिंघार, घोड़ों की हिनहिनाहट, शङ्ख और दुन्दुभियों की ध्वनि बंद थी। क्योंकि दोनों ओर के योद्धा, सेनापति, रथी, गजारोही, अश्वारोही और पैदल सैनिक, दोनों योद्धाओं को घेर कर, इकटक उनकी लड़ाई देख रहे थे। गजपति, अश्वारोही और रथियों की सेनाएँ व्यूहबद्ध हो कर, समरभूमि में खड़ी खड़ी उन दोनों की लड़ाई देख रही थीं। मणि, सुवर्ण, मोती और रत्नों से चित्रित सुन्दर ध्वजाएँ, विचित्र आभूषण, सुवर्णमय कवच, उत्तम वस्त्र और

शान पर रगे हुए पैने अस्त्र शस्त्र, घोड़ों पर लटकते हुए चँवर, हाथियों के गले की हमेलें और उनके दाँतों के आभूषण आदि समस्त उपस्कर सहित, युद्ध देखने वाले सैनिकों को मैंने, हेमन्तऋतु के अन्त में, बकपंक्ति से युक्त और खद्योतश्रेणी सहित, ऐरावत गज और विद्युत् युक्त मेघों की तरह देखा। ब्रह्मा, चन्द्र आदि देवता भी विमानों में बैठ—द्रोण और सात्यकि का युद्ध देख रहे थे। सिद्ध, चारण, विद्याधर और महोरग भी उन दोनों वीरों का युद्धकौशल तथा प्रहार करने की विचित्र रीति को देख, विस्मित हो रहे थे। वे दोनों महाबली वीर, अस्त्र चलाने में बड़ी फुर्ती दिखाते हुए, एक दूसरे को बाणों से विद्ध कर रहे थे। इतने में सात्यकि ने एक दृढ़ बाण मार कर, द्रोण के बाण काट डाले और द्रोण का धनुष भी काट डाला। द्रोणाचार्य ने तुरन्त दूसरे धनुष पर रोदा चढ़ा लिया, किन्तु सात्यकि ने उस धनुष को भी काट डाला। तब द्रोण ने और धनुष उठाया, सात्यकि ने उसे भी काट डाला। द्रोणाचार्य जैसे ही धनुष उठाते, वैसे ही सात्यकि उसे काट डालता था। इस प्रकार सात्यकि ने द्रोणाचार्य के सौ धनुष काटे। किन्तु द्रोण कब धनुष उठाते और सात्यकि कब उसे काट गिराता था, यह किसी को पता न चलता था। हे राजेन्द्र! सात्यकि के ऐसे अमानुषिक पराक्रम को देख, द्रोण सोचने लगे कि, जो अस्त्रबल परशुराम, कार्तवीर्य अर्जुन और पुरुषसिंह भीष्म में है, वही अस्त्रबल इस सात्यकि में भी है। द्विजोत्तम द्रोणाचार्य सात्यकि की फुर्ती को देख, मन ही मन उसकी सराहना करने लगे और उस पर बड़े प्रसन्न हुए। इन्द्रादि देवता, गन्धर्व, सिद्ध और चारण भी सात्यकि के हस्तलाघव को देख न पाते थे। वे यही समझ रहे थे कि, यह काम द्रोण ही कर रहे हैं।

तदनन्तर क्षत्रियमर्दन द्रोण ने फिर एक नया धनुष उठा उस पर बाण रखा ही था कि, सात्यकि ने झट उसके भी टुकड़े टुकड़े कर डाले और द्रोण को तीक्ष्ण बाणों से विद्ध करना आरम्भ किया। यह देख सब लोग चकित हो गये। दूसरों के लिये असाध्य सात्यकि के इस अमानुषिक रणकौशल

को देख, आपके पक्ष के युद्धविशारद योद्धा भी सात्यकि की सराहना करने लगे। इस युद्ध में द्रोण जो अस्त्र छोड़ते वही अस्त्र सात्यकि भी छोड़ता था। सम्भ्रम में पड़े शत्रुतापन आचार्य द्रोण, सात्यकि के साथ लड़ते रहे। अन्त में द्रोण ने सात्यकि का वध करने को आग्नेयास्त्र छोड़ा। तब सात्यकि ने उसे शान्त करने के वारुणास्त्र का प्रयोग किया। दोनों के हाथों में दिव्यास्त्रों के देख, लोग हाहाकार करने लगे। वारुणास्त्र और आग्नेय अस्त्रों के चलने पर आकाश में पक्षियों का उड़ना बंद हो गया। बाणों के साथ टकराये हुए दोनों दिव्यास्त्र अभी निवृत्त नहीं हुए थे कि, अपराह्न काल उपस्थित हो गया। उस समय राजा युधिष्ठिर, भीमसेन, नकुल सहदेव, विराट, केकय और धृष्टद्युम्न चारों ओर से घेर कर सात्यकि की रक्षा करने को जा पहुँचे। दूसरी ओर मत्स्य, शाल्वेय की सेना और सहस्रों राजकुमार दुःशासन की प्रधानता में शत्रुओं से घिरे हुए द्रोणाचार्य की रक्षा करने को उनके निकट जा पहुँचे।

हे राजन्! उस समय पाण्डवों और कौरवों में घमासान युद्ध होने लगा। चारों ओर धूल तथा बाणजाल से अन्धकार छा गया। सैनिकों के पैरों से उड़ी हुई धूल से कुछ भी नहीं सूझ पड़ता था। अतः दोनों ओर से निर्मर्याद युद्ध होने लगा।

निन्यानबे का अध्याय

रणभूमि में सरोवर बना अर्जुन का अपने घोड़ों को जल पिलाना

सञ्जय ने कहा—हे राजन्! जब सूर्य ढलने लगे अर्थात् अपराह्न काल उपस्थित हुए, तथा धूल से सूर्य ढक कर मंद मंद प्रकाश करने लगे; तब बहुत से योद्धा तो डर कर रणक्षेत्र से चल दिये और बहुत से विजया-

पड़ता। बल्कि विशेषतया उन मनुष्यों को ब्रह्मलोकादि अक्षय्य लोकों की प्राप्ति होती है, जो इस तीर्थ में कार्तिकी पूर्णिमा को जा कर स्नान करते हैं। जो मनुष्य प्रातः साय दोनों काल हाथ जोड़, पुष्कर का स्मरण करता है, उसका समस्त तीर्थों में स्नान हो जाता है। जिस पुरुष या ०ो ने आजन्म पापकर्म किये हैं, वह यदि पुष्कर जा स्नान करे, तो उसके समस्त पाप पुष्कर-स्नान से छूट जाते हैं। यह पुष्कर तीर्थ समस्त तीर्थों में वैसे ही आदितीर्थ है, जैसे समस्त देवताओं में विष्णुभगवान् आदिदेवता हैं। इस तीर्थ में पवित्र और सावधानी से बारह वर्ष वास करने वाला मनुष्य, समस्त यज्ञों के करने का फल प्राप्त कर लेता है। अन्त में वह पुरुष ब्रह्मलोक में जाता है। जो मनुष्य सौ वर्ष तक अग्निहोत्र करता है, वह उस के बराबर नहीं हो सकता, जो केवल एक दिन कार्तिकी पूर्णिमा को पुष्कर में वास करता है। इस तीर्थ के तीनों श्वेत शिखर, तीनों जल के झरने, आदिकाल के हैं, इसका कारण कोई नहीं जानता। पुष्कर में जाना, तप करना, दान देना और वहाँ वास करना, दुष्कर अर्थात् कठिन है। यात्री को उचित है कि, सावधानी से थोड़ा भोजन कर और नियमानुसार इन्द्रियों को जीत कर, पुष्कर में बारह रात्रि वास करे और फिर पुष्कर की प्रदक्षिणा कर, जम्बूमार्ग नामक तीर्थ में जाय। देवर्षि और पितृसेवित जम्बूमार्ग में जाने वाले की समस्त मनोकामनाएँ पूरी होती हैं और उसे अश्वमेधयज्ञ करने का फल प्राप्त होता है। जो मनुष्य पाँच रात्रि जम्बूमार्ग में रहता है उसका आत्मा पवित्र हो जाता है। उसकी फिर दुर्गति नहीं होती और उसे उत्तम सिद्धि प्राप्त होती है। वहाँ से फिर तन्दुलिकाश्रम को जाना चाहिये। वहाँ जाने से जाने वाले की दुर्गति नहीं होती और उसे ब्रह्मलोक की प्राप्ति होती है। वहाँ से अगस्त्यसर पहुँचे और वहाँ पहुँच तीन रात उपवास कर, पितरों और देवताओं का पूजन करे। हे राजन्! ऐसा करने से, करने वाला अग्निष्टोमयज्ञ का फल पाता है। जो तीन दिवस तक केवल शाक और फल खा कर निर्वाह करता है वह कुमार अवस्था पाता है।

वे अर्जुन के चौसठ, श्रीकृष्ण के सत्तर और घोड़ों के सौ बाण मारे, तब मर्मस्थलों को पहचानने वाले अर्जुन ने नतपर्व नौ बाण मार कर, उन दोनों राजकुमारों के मर्मस्थल विद्ध किये। इस पर उन दोनों राजकुमारों ने क्रोध में भर, श्रीकृष्ण सहित अर्जुन को बाणजाल से ढक दिया और सिंहनाद किया। तब दो भल्लबाण मार अर्जुन ने उन दोनों के विचित्र धनुषों को काट डाला और बड़ी फुर्ती से उनकी सोने की तरह चमचमाती ध्वजाएं भी काट डालीं। इस पर उन दोनों ने दूसरे धनुष ले अर्जुन को बाणों से पीड़ित करना आरम्भ किया। तब अर्जुन ने पुनः उनके वे दोनों धनुष भी काट डाले। साथ ही सुवर्णपुंख और पैने बाण मार बड़ी फुर्ती से अर्जुन ने उनके सारथी, घोड़ों और पार्श्वरक्षकों को मार डाला। फिर एक क्षुरप्रबाण से बड़े भाई विन्द का सिर काट कर गिरा दिया। आँधी से उखड़े हुए पेड़ की तरह विंद धड़ाम से पृथिवी पर गिर पड़ा। यह देख उसका छोटा भाई हाथ में गदा ले, अपने मृत घोड़ों के रथ से कूद पड़ा। भाई के वध को याद कर, महारथी एवं महाबली अनुविन्द गदा को घुमाता हुआ रणभूमि में नृत्य सा करने लगा। वह गदा उसने घुमा कर श्रीकृष्ण के ललाट पर मारी। किन्तु मैनाक पर्वत की तरह अटल श्रीकृष्ण पर उस गदा के प्रहार का कुछ भी फल न हुआ। इस पर अर्जुन ने छः बाण मार, अनुविन्द का सिर, उसकी दोनों भुजाएं, दोनों पैर और गला काट डाला। छिन्न भिन्न अनुविन्द पर्वतशृङ्ग की तरह पृथिवी पर गिर पड़ा। तदनन्तर उन उभय राजकुमारों की पैदल सेना ने क्रोध में भर सहस्रों बाण छोड़ते हुए अर्जुन और श्रीकृष्ण पर आक्रमण किया। किन्तु उस सेना को भी बात की बात में बाणों की मार से ठिकाने लगा—अर्जुन वैसे ही शोभित हुए जैसे ग्रीष्मऋतु में वन को भस्म कर दावानल सुशोभित होता है। बड़े बड़े कष्टों से उनकी सेना को पीछे छोड़ अर्जुन आगे बढ़े। उस समय वे मेघनिर्मुक्त सूर्य की तरह देख पड़ते थे।

हे राजन्! प्रथम तो अर्जुन को देखते ही आपके पक्ष के योद्धा बहुत

घबराये ; किन्तु अर्जुन के रथ के घोड़ों को श्रान्त और जयद्रथ को वहाँ से दूर देख उनका उत्साह बढ़ गया। अतः सिंहनाद कर, उन्होंने अर्जुन को चारों ओर से घेरा। कौरव योद्धाओं को रोषयुक्त देख और आश्चर्य में भर अर्जुन ने श्रीकृष्ण से कहा—घोड़े घायल हो पीड़ित हो रहे हैं और थके भी बहुत हैं। साथ ही जयद्रथ भी यहाँ से अभी दूर है, अतः बतलाइये, अब क्या करना ठीक है? कृष्ण! तुम बड़े बुद्धिमान हो। अतः मुझे उचित सलाह दो। आपको नेता बना कर ही पाण्डव इस रण में विजयी हो सकेंगे। कृष्ण! मेरी समझ में जो बात आयी है वह मैं तुमको बतलाता हूँ। तुम घोड़ों को खोल दो और जो बाण उनके शरीर में चुभ गये हैं, उन्हें निकाल डालो।

इसे सुन श्रीकृष्ण ने कहा - पार्थ! जो तुम्हारा विचार है, वही मेरा भी है।

अर्जुन ने कहा इतने में मैं सब सेना को रोके रखता हूँ। वे तुम्हारे पास फटकने भी न पावेंगे। तुम घोड़ों के शरीरों से बाणों को निकाल डालो।

सञ्जय बोले—हे राजन्! यह कह अर्जुन निश्चिन्त से हो, रथ से उतर पड़े और गाण्डीव धनुष तान, पर्वत की तरह अटल भाव से खड़े हो गये। उधर विजयाभिलाषी क्षत्रियों ने, अर्जुन को रथ छोड़ नीचे खड़ा देख, आपस में कहा—इसे मारने का यह अच्छा अवसर हाथ लगा है। तब वे सब कोलाहल करते अर्जुन पर टूट पड़े। रथों के दलों ने अकेले खड़े अर्जुन को चारों ओर से घेर लिया और विविध प्रकार के अस्त्रों तथा बाणों के प्रहार वे अर्जुन पर करने लगे। जैसे मेघघटाएं, सूर्य को ढक दें, वैसे ही क्रुद्ध उन योद्धाओं ने बाणवृष्टि से अर्जुन को ढक दिया। जैसे सिंह पर मतवाले हाथी लपकें, वैसे ही वे क्षत्रिय योद्धा अर्जुन के ऊपर लपके। इस समय अर्जुन के भुजबल का करतब देखने ही योग्य था। उन्होंने क्रोध में भर चारों ओर से आती हुई बहुत सी सेना को रोक दिया। अर्जुन ने उनके अस्त्रों को हटा

कर, उन सब को बहुत से बाणों से ढक दिया। आकाश में बाणों के परस्पर टकराने से, अग्नि प्रकट हुआ। घायल तथा रक्त से लथपथ घोड़े हाथी आदि तथा क्रोध में भरे शत्रुसंहारकारी एवं विजयाभिलाषी बड़े बड़े धनुर्धर लंबी लंबी सांसें लेने लगे। उन योद्धाओं के एक स्थान पर जमा हो जाने से बड़ी गर्मी उत्पन्न हो गयी। उस समय वह समरक्षेत्र दुर्लंघ्य सागर जैसा बन गया। उस सागर में बाण रूपी लहरें उठ रही थीं, ध्वजा रूपी भँवर पड रहे थे, हाथी रूपी मगर मच्छ तैर रहे थे। वह पैदल सैनिक रूपी मछलियों से परिपूर्ण था। वह शङ्खों तथा दुन्दुभियों की ध्वनि से गर्ज सा रहा था। ऐसे अपार एवं अलंघ्य रथ रूपी लहरों से लहराते हुए पगड़ी रूपी कछुवों वाले, छत्र तथा पताका रूपी फेंडों वाले, हाथियों के अंग रूप शिलाओं से भरे सागर को अर्जुन ने अपने बाणों से रोका था।

राजा धृतराष्ट्र ने पूँछा, हे सञ्जय! जब अर्जुन भूमि पर खड़ा था और श्रीकृष्ण घोड़ों को पकड़ पृथिवी पर खड़े थे—तब उस समय अर्जुन क्यों नहीं मारे गये।

सञ्जय ने कहा—हे राजन्! यद्यपि अर्जुन पृथिवी पर खड़े थे, तथापि उन्होंने रथों पर सवार उन सब राजाओं को अवैदिक वाक्य की तरह एक दम आगे बढ़ने से रोक रखा था। जैसे एक लोभ समस्त गुणों को दबा देता है, वैसे ही भूमि पर स्थित अकेले अर्जुन ने रथस्थ समस्त राजाओं को रोक रखा। तदनन्तर महाबाहु श्रीकृष्ण ने तिल भर भी घबड़ाये बिना, अर्जुन से कहा—हे पार्थ! घोड़ों को जल पीने और जल में तैरने की आवश्यकता है; किन्तु यहाँ ऐसा कोई सरोवर नहीं, जिसका यह जल पीवें और उसमें तैरें। यह सुन अर्जुन ने निश्चिन्त भाव से झट कहा—"सरोवर यह है।" यह कह अर्जुन ने अस्त्र प्रयोग से पृथिवी को फोड़ वहाँ एक सरोवर प्रकट कर दिया। वह सरोवर हंस, कारण्डव और चक्रवाकों से सेवित बहुत लंबा चौड़ा था। उसमें स्वच्छ जल भरा हुआ था। उसमें कमल के

फूल खिल रहे थे। कछुओं और मत्स्यों से वह पूर्ण अगाध सरोवर ऋषियों से सेवित था। एक क्षण में तैयार किये गये उस सरोवर को देखने नारद मुनि पधारे थे। विश्वकर्मा की तरह अद्भुतकर्मा अर्जुन ने वहाँ बाणों का एक अद्भुत भवन भी बनाया था। उस भवन के खंभे और पटाव बाणों का था। उस भवन को देख, श्रीकृष्ण हँस पड़े और धन्य धन्य कह उन्होंने अर्जुन की प्रशंसा की।

सौ का अध्याय

कौरवों का विस्मित होना

सञ्जय ने कहा—हे राजन्! जब कुन्तीनन्दन अर्जुन ने सरोवर प्रकट कर, बाणों का एक भवन बना दिया और शत्रुसैन्य को रोक रखा; तब महाकान्तिशाली श्रीकृष्ण तुरन्त रथ से उतर पड़े और घोड़ों को रथ से खोल, उनके शरीर में चुभे कङ्कपुंख युक्त बाणों को निकाल डाला। अर्जुन के उस अपूर्व कार्य को देख कर, सिद्ध, चारण और सैनिक धन्य धन्य कह, अर्जुन की सराहना करने लगे। बड़े बड़े महारथियों ने जुड़ बटुर कर अर्जुन को वहाँ से हटाने का उद्योग किया; किन्तु अर्जुन ने खड़े ही खड़े उनके समस्त प्रयत्न विफल कर दिये। सचमुच वह एक अद्भुत कार्य था। घुड़सवारों और रथियों की आक्रमणकारी सेनाओं को अर्जुन चारों ओर घूम-फिर कर पीछे हटाते ही रहे और तिल भर भी न घबड़ाये। इससे स्पष्ट है कि, वे उन समस्त योद्धाओं से बढ़ कर बलवान थे, शत्रुपक्षी राजाओं ने अर्जुन पर बाणों की वर्षा की; किन्तु उस बाणवृष्टि से इन्द्रनन्दन धर्मात्मा अर्जुन तिलमात्र भी विचलित न हुए। जैसे नदियों को समुद्र ग्रस लेता है, वैसे ही शत्रुओं के चलाये असंख्य बाणों, गदाओं और प्रासों को अर्जुन ने व्यर्थ कर डाला। अर्जुन ने अपने बाहुबल और अस्त्रबल से समस्त राजेश्वरों के अस्त्र नष्ट कर डाले।

हे राजन्! अर्जुन और श्रीकृष्ण के उस अद्भुत पराक्रम को कौरवों ने भी सराहा। अर्जुन और श्रीकृष्ण ने भरे युद्ध में घोड़े खुलवा दिये, इससे बढ़ कर आश्चर्यकारी कार्य और क्या होगा और हो सकता है? इन दोनों नरवरों ने हमारी सेना में बड़ा भारी आतङ्क उत्पन्न कर दिया। जैसे कोई पुरुष स्त्रियों के बीच निर्भीक हो खड़ा हो, वैसे ही निर्भय हो सैनिकों के बीच खड़े श्रीकृष्ण मन्द मन्द मुसक्याते हुए अर्जुन के बनाये बाणभवन में घोड़ों को ले गये और उन्हें लुटा कर उनकी थकावट मिटाई। अश्व-विद्या-कुशल श्रीकृष्ण ने समस्त योद्धाओं की आँखों के सामने घोड़ों का थकावट, सुस्ती, मुख से फैन का उगलना तथा शरीर का काँपना दूर कर दिया तथा उनको थोड़ा सा लुटा कर, जल भी पिलाया। जब घोड़े नहा कर और पानी पीकर तथा घास खा कर, फिर पूर्ववत् हरे भरे हो गये। तब उन्हें पुनः रथ में जोत लिया। तब अर्जुन रथ पर सवार हुए और वह रथ बड़ी तेज़ी के साथ आगे बढ़ने लगा। अर्जुन के घोड़ों को हरे भरे हो रथ में जुता देख, कौरवों के प्रधान सैनिक उदास हो गये।

हे राजन्! वे उखाड़े हुए विषदन्त सर्प की तरह केवल लंबी लंबी साँसे लेने लगे और पृथक् पृथक् कहने लगे—हमें धिक्कार है, हमें धिक्कार है। अर्जुन के इस लोमहर्षणकारी कर्तव्य को देख, कौरवों की समस्त सेनाएँ चारों ओर से चिल्ला चिल्ला कर कहने लगीं—अर्जुन को पकड़ो, अर्जुन को पकड़ो। फिर तुरन्त ही वे कहने लगीं—अर्जुन जितना बल हममें नहीं है। एक रथ के सहारे, परन्तप एवं कवचधारी अर्जुन और श्रीकृष्ण समस्त सेनाओं के चिल्लाते और देखते देखते, अपना पराक्रम प्रदर्शित कर तथा हमारी सेना का तिरस्कार कर, सब राजाओं के बीच से वैसे ही निकल गये जैसे बालक खिलौने का तिरस्कार किया करते हैं। जो सैनिक थे, वे इन दोनों को आगे जाते देख—बोल उठे, अरे तुम लोग इन दोनों को मार डालने का शीघ्र उद्योग करो। देखो, कृष्ण हमारा सब का तिरस्कार करता हुआ, जयद्रथ का वध करने को आगे बढ़ता ही चला जाता है।

मनुष्य को अश्वमेध यज्ञ करने का फल मिलता है और वह मनुष्य अपने कुल का उद्धारकर्त्ता होता है। यहाँ से फिर सरस्वतीसङ्गम नामक जगत्प्रसिद्ध तीर्थ में जाय। ब्रह्मादिक देवता और तपोधन ऋषि या जो कोई उस महापुण्य-दायक सरस्वतीसङ्गम नामक तीर्थ में केशव भगवान् की उपासना करता है, अथवा चैत्रमास की शुक्ला चतुर्दशी के दिन वहाँ जा, सङ्गमघाट पर स्नान करता है, उसे बहुत सा सोना मिलता है तथा समस्त पापों से मुक्त हो, वह ब्रह्मलोक में जाता है। हे राजन्! वहीं सत्रावसान नामक तीर्थ है, जहाँ ऋषियों ने अपने यज्ञ पूरे किये थे। इस तीर्थ में जाने से जाने वाले को सहस्र गोदान का फल मिलता है।

तिरासीवाँ अध्याय

तीर्थों का माहात्म्य वर्णन

पुलस्त्य जी बोले—हे राजेन्द्र! फिर कुरुक्षेत्र नामक तीर्थ स्थान में जाना चाहिये। इस तीर्थ के दर्शन मात्र से मनुष्यों के समस्त पाप दूर हो जाते हैं। जो कोई मनुष्य नित्य वाणी से कहता भर है कि, मैं कुरुक्षेत्र जाऊँगा और वहाँ ही निवास करूँगा, तो इतने ही से उसके समस्त पाप दूर हो जाते हैं। इस तीर्थ का ऐसा प्रभाव है कि, यदि इसकी धूल भी किसी पापी पर जा पड़े, तो इतने ही से उस पापी को परमगति प्राप्त होती है। इस कुरुक्षेत्र की उत्तर दिशा में दृषद्वती और दक्षिण दिशा में सरस्वती नाम की नदियाँ हैं। इनके मध्य में जो रहने वाले मनुष्य हैं, वे स्वर्ग में बसते हैं। सरस्वती के तट पर एक मास वास करे। यहाँ पर ब्रह्मा आदि देवता, ऋषि, सिद्ध, चारण, गन्धर्व, अप्सरा, यक्ष और पन्नग आया करते हैं। यहाँ बसने वाले को मरने पर ब्रह्मलोक की प्राप्ति होती है। जो आदमी कुरुक्षेत्र का मानसिक ध्यान भी करता है, उसके समस्त पाप

ऐसे विकल थे कि, उनकी हिम्मत श्रीकृष्ण और अर्जुन की ओर देखने की भी नहीं पड़ती थी।

एक सौ एक का अध्याय

कौरवों की घबड़ाहट

संजय ने कहा—धृतराष्ट्र! श्रीकृष्ण और अर्जुन को देख आपकी ओर के योद्धाओं के मारे डर के छक्के छूट गये। उनमें से कितने ही तो भाग गये और उनमें से बहुत सों ने लज्जावश और क्रोध के कारण अर्जुन का सामना भी किया। किन्तु जो लोग क्रुद्ध हो और चिरकालीन शत्रुता को स्मरण कर, अर्जुन के सामने गये, वे फिर वैसे ही लौट कर न आये जैसे समुद्र में पहुँच नदी का जल पीछे लौट कर नहीं आता। जिस प्रकार पापी नास्तिक वेद की निन्दा कर के नरक में पड़ते हैं, उसी प्रकार जो योद्धा अर्जुन के सामने से भाग गये, उन्हें पाप लगा और वे नरकगामी हुए। रथ-सैन्य के घेरे को पार कर श्रीकृष्ण और अर्जुन राहुमुक्त सूर्य चन्द्र जैसे देख पड़ते थे। सैन्य रूपी विशाल जाल को तोड़ बाहिर निकले हुए श्रीकृष्ण और अर्जुन, जाल काट कर छूटे हुए प्रसन्नचित्त मत्स्यों जैसे देख पड़ते थे। शस्त्रों की विपत्ति और दुर्भेद्य द्रोण की सेना से निकले हुए श्रीकृष्ण और अर्जुन प्रलयकालीन उदीयमान दो काल सूर्यों की तरह देख पड़ते थे और शत्रुओं को पीड़ित कर रहे थे। मगर के मुख से छूटे हुए और समुद्र को खलभलाते हुए दो मत्स्यों की तरह वे दोनों शत्रुसैन्य को खलभलाने लगे। जब वे दोनों द्रोण की सेना से घेरे गये थे, तब आप के पुत्र और आपके सैनिकों को विश्वास था कि, वे द्रोण के हाथ से न निकलने पावेंगे। किन्तु जब उन्होंने देखा कि, वे दोनों वीर द्रोण की सेना को पीछे छोड़ आगे निकल आये। तब उन लोगों ने जयद्रथ के जीवित रहने की आशा को त्याग दिया।

हे राजन्! आपके पुत्रों को विश्वास था कि, श्रीकृष्ण और अर्जुन; द्रोण और हार्दिक्य के हाथ से जीते न जाने पावेंगे और जयद्रथ मारा न जायगा। किन्तु वे दोनों ही वीर, भोज और द्रोण की दुस्तर सेना को पार कर, निकल गये और आपके पुत्र की आशा पर पानी फेर दिया। अब कौरवों को जयद्रथ के बचने की आशा न रह गयी। अर्जुन और श्रीकृष्ण जानते थे कि, छः महारथी कौरवों ने अपने बीच में जयद्रथ को छिपा रखा है और वे प्राणपण से उनकी रक्षा कर रहे हैं। इस लिये अर्जुन ने श्रीकृष्ण से कहा—जयद्रथ मुझे देख भर पड़े, फिर वह जीवित नहीं रह सकता। श्रीकृष्ण और अर्जुन आपस में इस प्रकार वार्तालाप करते हुए जयद्रथ को ढूँढ रहे थे। इतने में आपके पुत्रों ने बड़ा कोलाहल किया। उधर द्रोण की सेना को लाँघ और जयद्रथ को देख, श्रीकृष्ण और अर्जुन वैसे ही प्रसन्न हुए, जैसे मरुभूमि को पार कर, दो हाथी जल पी कर प्रसन्न होते हैं। व्याघ्र, सिंह और गजों से पूर्ण पर्वत को लाँघ, जैसे कोई व्यापारी मौत और जरा के भय से मुक्त हो जाता है, वैसे ही द्रोण की सेना को लाँघ, श्रीकृष्ण और अर्जुन ने अपने को जरा और मृत्यु से मुक्त समझा और उन्हें परम शान्ति प्राप्त हुई। उस समय उन दोनों के मुख को देख, यह बात प्रतीत होती थी कि, उन्होंने आपके सैनिकों के मन में यह विश्वास उत्पन्न कर दिया है कि, वे जयद्रथ को अवश्य ही मार डालेंगे। प्रज्वलित अग्नि और सर्प के समान आकार वाले द्रोण तथा अन्य अनेक राजाओं के हाथ से निकले हुए श्रीकृष्ण और अर्जुन चमचमाते दो सूर्यों की तरह देख पड़ते थे। अरिन्दम श्रीकृष्ण और अर्जुन समुद्र जैसी द्रोण की सेना को लाँघ कर, ऐसे प्रसन्न देख पड़ते थे; मानों वे समुद्र ही को पार कर के आये हों। द्रोण और कृतवर्मा के विशाल बाणजाल से निकल वे इन्द्र और अग्नि की तरह द्युतिमान् देख पड़ते थे। द्रोण के पैने बाणों से रक्त में डूबे और बाणों से विद्ध श्रीकृष्ण और अर्जुन कनेर के पेड़ों से पूर्ण दो पर्वतों की तरह देख पड़ते थे। वे द्रोण रूपी मगर, शक्तिरूपी

सर्प, लोहबाण रूपी उग्र नक्र, वीर क्षत्रिय रूपी सरोवर से निकले हुए थे। धोंदे के टंकार रूपी गर्जन, गदा एवं तलवार रूपी बिजली और द्रोण के अस्त्र रूप मेघ से निर्मुक्त श्रीकृष्ण और अर्जुन, अन्धकार से छूटे हुए सूर्य और चन्द्र जैसे जान पड़ते थे। लोकप्रसिद्ध महाधनुर्धर श्रीकृष्ण और अर्जुन ने जब द्रोण के अस्त्रों को निवारण कर दिया, तब मानों वे जल से पूर्ण विशाल नक्रों से युक्त, सिन्धु, शतद्रु, विपाशा, इरावती, चन्द्रभागा और वितस्ता नाम्नी छः महानदियों को दोनों हाथों से पैर कर पार हो गये हों। उनके विषय में आपकी सेना के वीरों की यह धारणा थी। निकटस्थ जयद्रथ को मारने की इच्छा से खड़े, श्रीकृष्ण और अर्जुन वैसे ही जान पड़ते थे, जैसे तालाव पर खड़े रुरु मृग को दो बाघ खड़े घूर रहे हों। श्रीकृष्ण और अर्जुन के मुख के वर्ण को देख, हे धृतराष्ट्र! आपके योद्धाओं ने समझ लिया कि, बस अब जयद्रथ के मारे जाने में देर नहीं है। रक्त-नेत्र महाबाहु श्रीकृष्ण और अर्जुन सिन्धुराज जयद्रथ को देख; अतीव हर्षित हुए और बारंबार गरजने लगे।

हे राजन्! उस समय घोड़ों की रासें थामे हुए श्रीकृष्ण और गाण्डीव धनुष को ताने हुए अर्जुन की कान्ति सूर्य और अग्नि जैसी थी। द्रोण की सेना से निकल, श्रीकृष्ण और अर्जुन अपने सामने जयद्रथ को देख, वैसे ही प्रसन्न हुए, जैसे हो श्येन पक्षी अपने सामने माँस को देख, प्रसन्न होते हैं। वे दोनों जयद्रथ को देख क्रोध में भर उस पर वैसे ही झपटे, जैसे माँसपिण्ड पर श्येन पक्षी झपटता है। जयद्रथ पर श्रीकृष्ण और अर्जुन को आक्रमण करते देख, दुर्योधन बड़ी फुर्ती से जयद्रथ की सहायता के लिये पहुँचा। अश्वपरिचालन विद्या में निपुण और द्रोण द्वारा बाँधे गये कवच से युक्त दुर्योधन, रथ में अकेला बैठा हुआ, अर्जुन से लड़ने के लिये आया। श्रीकृष्ण और अर्जुन को अतिक्रम कर, राजा दुर्योधन उनके सामने जा पहुँचा। उस समय हर्षसूचक जुझाऊ बाजे बजने लगे और शङ्खध्वनि के साथ साथ वीरों का सिंहगर्जन सुन पड़ा। अग्निवत्

प्राप्ति होती है। यहाँ से ब्रह्मावर्त्त जाना चाहिये। ब्रह्मावर्त में स्नान करने से मरने के बाद ब्रह्मलोक मिलता है। यहाँ से सुतीर्थ में जाना चाहिये। यहाँ पर देवता और पितर सदा वास करते हैं। जो इस तीर्थ में स्नान कर देव-पितृ-पूजन करता है, उसे अश्वमेध यज्ञ करने का फल और मरने पर पितृलोक मिलता है। यहाँ से सर्वोत्तम अम्बुमती नामक तीर्थ में जाना चाहिये। फिर काशीश्वर के तीर्थों में स्नान करने से समस्त रोग दूर हो जाते हैं और वह ब्रह्मलोक में पूजित होता है। यहीं मातृतीर्थ है। इसमें स्नान करने से सन्तान वृद्धि होती है और बड़ी सम्पत्ति मिलती है। शीतवन नामक तीर्थ में मन को वश में रख नियमित भोजन करे। यह एक परम दुर्लभ महातीर्थ माना गया है। जो एक बार भी इस तीर्थ का दर्शन करता है, वह पवित्र हो जाता है। इस तीर्थ में केशों को धोने से मनुष्य पवित्र हो जाता है। यहीं पर श्वाविल्लोमापह नामक तीर्थ है। तीर्थयात्री विद्वान् पण्डित को इस तीर्थ में स्नान करने से परमानन्द प्राप्त होता है। जो ब्राह्मणश्रेष्ठ इस तीर्थ में जा कर, अपने बाल मुड़वाता है और स्नान कर प्राणायामादि तप करता है, उसका मन पवित्र हो जाता है और उसकी सद्गति होती है। यहाँ से आगे दशाश्वमेधिक तीर्थ है। इसमें स्नान करने से परमपद की प्राप्ति होती है। फिर जगत्प्रसिद्ध मानुष नामक तीर्थ क्षेत्र में जाना चाहिये। यहाँ पूर्वकाल में काले मृग बाणों की चोट से पीड़ित हो, गिर पड़े थे और वे मनुष्यरूपधारी हो गये थे। अतः ब्रह्मचर्य व्रत धारण कर, जो इस तीर्थ में स्नान करता है, वह समस्त पापों से छूटता है। अन्त में वह विशुद्धात्मा स्वर्गलोक पाता है। हे राजेन्द्र! इस तीर्थ के पूर्व एक कोस के अन्तर पर आपगा नाम्नी एक प्रख्यात नदी है। यहाँ पर सिद्धपुरुषों का वास है। जो मनुष्य इस नदी के तट पर देवताओं और पितरों के उद्देश्य से साँमा नामक धान्य ब्राह्मणों को भोजन करवाता है, उसे बड़ा पुण्यफल मिलता है। यदि यहाँ इस अन्न से एक ही ब्राह्मण को भोजन करवा दिया जाय, तो भी उस भोजन कराने वाले को एक

कभी पढ़ा ही नहीं, इसीसे इसे तुम्हारा पराक्रम भी विदित नहीं है। हे अर्जुन! देवता, असुर और मनुष्यों सहित तीनों लोक, युद्ध में तुझे परास्त नहीं कर सकते। तब इस दुर्योधन की बिसात ही क्या है? हे पार्थ! जान-बूझ कर दुर्योधन तेरे रथ के सामने आया है। यह अच्छी ही बात है। जैसे पूर्वकाल में इन्द्र ने वृत्रासुर का वध किया था, वैसे ही आज तू दुर्योधन का वध कर। यद्यपि तू निर्दोष है, तथापि यह सदा तेरा बुरा ही चीता किया है। इसीने कपट कर धर्मराज को जुए में हरवाया था। तुम्हारा कुछ भी दोष न था और तुम सब इसका मान ही करते थे, तो भी इस पापिष्ठ ने तुम्हें बड़े बड़े कष्ट दिये। अतः हे पार्थ! हे अर्जुन! अब तुम उदारता धारण कर, इस कालमूर्ति दुर्योधन का वध करो। इसमें कुछ भी सोच विचार की आवश्यकता नहीं है। हे पाण्डव! इस अनार्य एवं क्रोधी ने, छलबल से तुम्हारा राज्य अपहृत कर और तुम्हें राज्य से च्युत कर, वन में भेजा तथा द्रौपदी को बड़े बड़े कष्ट दिये हैं। इन सब को स्मरण कर, तुम अपना पराक्रम दिखलाओ। यह तुम सौभाग्य की बात समझो कि, आज दुर्योधन तुम्हारे बाण का लक्ष्य बना हुआ खड़ा है। यह बालक भी अच्छा ही बना है कि, जयद्रथ-वध के लिये आरम्भ किये हुए कार्य में विघ्न स्वरूप यह आ कर खड़ा हो गया है। यह भी भाग्य ही की बात है कि, इसमें तुमसे लड़ने का साहस तो हुआ। हे अर्जुन! मुझे तो भाग्यवश, बिना प्रयत्न ही समस्त कामनाएँ सफल होती हुई देख पड़ती हैं। हे पार्थ! पूर्वकाल में इन्द्र ने जैसे जम्भासुर को मारा था, वैसे ही तुम इस कुल-कलङ्क दुर्योधन का वध करो। फिर इसकी सेना का संहार करो। इसके वध को तुम शत्रुता रूपी इस रणयज्ञ का अवभृथ स्नान (यज्ञान्त स्नान विशेष) समझो। अतएव तुम इस दुष्ट को समूल नष्ट कर डालो।

सञ्जय ने कहा—हे धृतराष्ट्र! श्रीकृष्ण के इन वचनों को सुन, अर्जुन कहने लगे—हे कृष्ण! यदि यह कार्य मुझे अवश्य करणीय है, तो तुम सब को छोड़, मेरा रथ दुर्योधन के निकट ही ले चलो। इसने हमारा राज्य

बहुत दिनों तक वेखटके भोगा है। मैं आज इससे लड़कर इसका मस्तक काटूँगा। हे माधव! इसने सुकुमारी द्रौपदी के केश खिंचवा कर, उसे जो दुःख दिया है, आज उसका बदला चुकाऊँगा।

इस प्रकार आपस में बातचीत करते श्रीकृष्ण और अर्जुन ने प्रसन्न हो, अपने रथ के सफेद रंग के घोड़े, दुर्योधन को पकड़ने के लिये उस ओर बढ़ाये, जिधर दुर्योधन था। हे राजन्! वे दोनों आपके पुत्र के बहुत निकट पहुँच गये; किन्तु ऐसी घोर विपत्ति में पड़ कर भी, हे राजन्! दुर्योधन तिल भर भी न डरा। उसने आगे बढ़ते हुए श्रीकृष्ण और अर्जुन को रोक दिया। यह देख समस्त वीर योद्धा आपके पुत्र की सराहना करने लगे। हे राजन्! उस समय आपकी समस्त सेनाएँ आपके पुत्र दुर्योधन को अर्जुन का सामना करते देख, घोर नाद करती हुई हर्षध्वनि करने लगीं। आपके सैनिकों की उस महाभयङ्कर गर्जना के समय, आपके पुत्र ने अर्जुन का तिरस्कार कर, उसका आगे बढ़ना रोक दिया। जब आपके पुत्र ने अर्जुन को आगे न बढ़ने दिया, तब अर्जुन अत्यन्त क्रुद्ध हो गया। तब दुर्योधन को भी बड़ा क्रोध चढ़ आया। उन दोनों को क्रुद्ध देख, भयङ्कर रूप धारण किये हुए अन्य समस्त राजे भी चारों ओर खड़े खड़े उनको निहारने लगे।

हे राजन्! लड़ने को उद्यत दुर्योधन, श्रीकृष्ण और अर्जुन को क्रुद्ध देख, हँसा और उन दोनों को लड़ने के लिये ललकारा। तदनन्तर जब श्रीकृष्ण और अर्जुन हर्षित हो गये और अपने शङ्ख बजाने लगे, तब उनको प्रसन्नमुख देख, समस्त योद्धाओं को दुर्योधन के जीवित रहने में सन्देह उत्पन्न हो गया। इससे अन्य राजाओं और कौरवों को बड़ा दुःख हुआ और उन्होंने समझ लिया कि दुर्योधन आज वैश्वानर अग्नि में होम डाला गया। आपके योद्धा श्रीकृष्ण और अर्जुन के प्रसन्न मुखों को देख, भय-भीत हो कहने लगे—दुर्योधन जान बूझ कर काल के गाल में गिरा है। उन सैनिकों के कोलाहल को सुन, दुर्योधन ने उनसे कहा—तुम डरो मत। मैं अभी श्रीकृष्ण और अर्जुन को ठिकाने लगाये देता हूँ। जयाभिलाषी

दुर्योधन, उन सब लोगों से इस प्रकार कह और क्रुद्ध हो अर्जुन से बोला—अरे पार्थ ! यदि तू अपने बाप पाण्डु से पैदा है, और यदि तुझे दिव्य और पार्थिव अस्त्रों की विद्या मालूम है, तो तुरन्त अपनी उस अस्त्र-विद्या का परिचय दे। तेरे पुरुषार्थ को ज़रा देखूँ तो सही। तूने युधिष्ठिर के सम्मान के लिये, लोग कहते हैं, मेरे पीठपीछे अनेक पराक्रम के करतब किये हैं। यदि यह बात सत्य है, तो आज मुझे अपना पराक्रम दिखा।

एक सौ तीन का अध्याय

दुर्योधन का रण छोड़ कर भाग जाना

सञ्जय ने कहा—हे धृतराष्ट्र ! यह कह, दुर्योधन ने तीन बाण अर्जुन के मारे और मर्मभेदी चार बाण मार अर्जुन के चारों घोड़ों को घायल किया। फिर श्रीकृष्ण की छाती में दुर्योधन ने दस बाण मारे और भल्ल बाण से उनके हाथ का चाबुक नीचे गिरा दिया।

तब अर्जुन ने सावधान हो, विचित्र पुंखों वाले पैने चौदह बाण फुर्ती के साथ दुर्योधन के मारे, किन्तु वे बाण दुर्योधन के कवच से टकरा कर भूमि पर गिर पड़े। अपने उन बाणों को व्यर्थ जाते देख, अर्जुन ने पुनः चौदह बाण मारे, किन्तु वे भी कवच से टकरा नीचे गिर गये। अर्जुन के अट्ठाइस बाणों को व्यर्थ जाते देख, श्रीकृष्ण ने अर्जुन से कहा—आज मैं यह बात देख रहा हूँ, जो मैंने इसके पूर्व कभी नहीं देखी थी। मैं देखता हूँ तुम्हारे छोड़े हुए बाण पत्थर की चट्टान से टकराने वाले बाणों की तरह निष्फल हो रहे हैं। हे भरतर्षभ ! सो तुम्हारे गाण्डीव धनुष में पूर्ववत् बल है या नहीं ? तुम्हारी मुट्ठी और भुजाओं का बल कम तो नहीं हो गया ? क्या शत्रुओं के साथ यह तुम्हारा अन्तिम युद्ध तो नहीं है ? तुम मेरे इन प्रश्नों का उत्तर दो। हे पार्थ ! युद्ध में दुर्योधन पर छोड़े हुए तेरे बाणों को निष्फल

आते हैं, मुझे बड़ा विस्मय हो रहा है। वज्रपात की तरह भयङ्कर और शत्रुओं के शरीर को तोड़ देने वाले बाण आज क्यों निकम्मे हो गये?

अर्जुन बोले—हे कृष्ण! जहाँ तक मैं समझ सका हूँ, असल बात यह है कि, आचार्य द्रोण ने अभिमंत्रित कवच इसको पहनाया है। इसीसे मेरे बाणों से इसका कवच नहीं फूटा। हे कृष्ण! इस कवच में तीनों लोक की शक्ति का समावेश है। इसे द्रोणाचार्य ही जानते हैं। उन्हीं-से मैंने भी इसे सीखा है। हे कृष्ण! इस कवच को स्वयं इन्द्र भी बाण अथवा वज्र से नहीं तोड़ सकते। फिर मैं तो चीज़ ही क्या हूँ। हे कृष्ण! यह बात तो तुम्हें भी मालूम है, फिर भी मुझसे प्रश्न कर के तुम मुझे मुग्ध क्यों करते हो? तुम तीनों लोकों के भूत, भविष्यत् और वर्तमान के जानने वाले हो। फिर तुम ऐसे प्रश्न मुझसे क्यों करते हो? हे कृष्ण! यदि द्रोण द्वारा अभिमन्त्रित कवच, दुर्योधन न पहिने होता, तो यह इस प्रकार निर्भीक हो, मेरे सामने कभी खड़ा नहीं हो सकता था। किन्तु ऐसे अवसर पर जो करना चाहिये उसे यह बिल्कुल ही नहीं जानता। यह तो केवल अभिमन्त्रित कवच पहिन स्त्री की तरह खड़ा है। हे जनार्दन! अब मैं तुमको अपने धनुष और भुजाओं का बल दिखलाता हूँ। अवश्य ही अभिमंत्रित कवच पहिन, आचार्य द्रोण ने इसकी रक्षा का विधान कर दिया है। किन्तु मैं आज इसे परास्त करूँगा। यह तेजस्वी कवच पूर्वकाल में ब्रह्मा जी ने अंगिरा ऋषि को दिया था। उनसे यह बृहस्पति को और बृहस्पति से इन्द्र को मिला था। फिर इन्द्र ने यह देवनिर्मित कवच मंत्र सहित मुझे दिया। भले ही यह कवच ब्रह्मा का बनाया हुआ हो, या अन्य किसी देवता का, किन्तु मेरे बाणों से घायल होते हुए इस दुष्ट की यह रक्षा नहीं कर सकता।

सञ्जय ने कहा—हे धृतराष्ट्र! श्रीकृष्ण से इस प्रकार कह, माननीय अर्जुन ने, उस कवच को तोड़ने वाला पैना मानवास्त्र उठाया। फिर मंत्र से अभिमंत्रित कर, उसे धनुष पर रख के छोड़ा। किन्तु अश्वत्थामा ने सब

अस्त्रों को नाश करने वाले अस्त्र को छोड़, अर्जुन के उन बाणों को काटना आरम्भ किया। अश्वत्थामा के दूर से छोड़े हुए बाणों से अपने बाण कटते देख, अर्जुन बड़े विस्मित हुए और श्रीकृष्ण से बोले—हे कृष्ण! मैं इस अस्त्र का प्रयोग दुबारा नहीं कर सकता। यदि मैं करूँ तो यह मुझे और मेरी सेना ही को नष्ट कर डाले। इधर ये दोनों तो इस प्रकार आपस में बातचीत कर रहे थे, उधर दुर्योधन ने विषैले सर्प जैसे नौ नौ बाण श्रीकृष्ण और अर्जुन के पुनः मारे। फिर वह उन दोनों पर बाणवृष्टि करने लगा। दुर्योधन की, की हुई बाणवृष्टि को देख, आपके पक्ष के योद्धाओं के आनन्द की सीमा न रही। वे बाजे बजा बजा कर, सिंहनाद करने लगे। इससे अर्जुन बड़े क्रुद्ध हुए और मारे क्रोध के ओठ चबाते हुए उन्होंने ध्यान से दुर्योधन की ओर देखा; किन्तु उन्हें उसका कोई भी अङ्ग कवच द्वारा अरक्षित न देख पड़ा। तब अर्जुन ने कालोपम कराल और तेज बाण मार दुर्योधन के घोड़ों को काट गिराया और उसके सारथी तथा पार्श्वरक्षकों को भी मार डाला। फिर वीर्यवान अर्जुन ने दुर्योधन के धनुष तथा हाथ के दस्तानों को काटा। फिर अर्जुन ने उसके रथ को खण्ड खण्ड करके, उसकी हथेलियाँ घायल कर दीं। मर्मज्ञ अर्जुन ने उसके नखों के भीतर के माँस को भी बाणों से विद्ध किया। तब तो दुर्योधन ने अत्यन्त पीड़ित हो तथा घबड़ा कर भाग जाना चाहा। दुर्योधन को पीड़ित और घोर सङ्कट में फँसा देख, बड़े बड़े धनुर्धर उसकी रक्षा करने को दौड़े। उन लोगों ने असंख्य रथों, घुड़सवारों, गजपतियों और पैदल सैनिकों द्वारा अर्जुन को घेर लिया। उस समय इन लोगों ने इतनी बाणवृष्टि की कि, न तो अर्जुन देख पड़े और न श्रीकृष्ण। यहाँ तक कि, उनका रथ भी अदृश्य हो गया। तदनन्तर अर्जुन ने उस कौरवसेना का नाश करना आरम्भ किया। उस समय सैकड़ों, हज़ारों हाथी और घोड़े मर मर कर भूमि पर गिरने लगे। अनेक योद्धा मारे गये और मारे जा रहे थे। तिस पर भी बहुत से महारथियों ने अर्जुन के रथ को घेर लिया। तब जयद्रथ के रथ से

एक कोस के अन्तर पर, अर्जुन का रथ रुक गया; तब श्रीकृष्ण ने अर्जुन से कहा—तुम तो गाण्डीव धनुष की टंकार करो, मैं अपना पाञ्चजन्य शङ्ख बजाता हूँ। अर्जुन ने अपना धनुष टंकारा और फिर बाणवृष्टि कर शत्रुओं का संहार किया। श्रीकृष्ण ने बड़े ज़ोर से अपना शङ्ख बजाया। उस समय उनके पलकों पर धूल छायी हुई थी और मुख पर पसीना आ गया था। उनके शङ्खनाद और अर्जुन के धनुष-टंकार-शब्द को सुन, क्या सबल, क्या निर्बल समस्त योद्धा धराशायी हो गये। कौरवों के शिविर से निकल उनका रथ, पवनप्रेरित मेघमण्डल की तरह साफ़ देख पड़ने लगा। अर्जुन को सहसा सामने देख, जयद्रथ के महाधनुर्धर रक्षक प्रथम तो घबड़ाये; किन्तु तुरन्त ही सावधान हो, वे पृथिवी को कँपाते हुए घोर गर्जन करने लगे। वे शङ्खध्वनि कर सिंह की तरह दहाड़ने लगे। इन्हें सिंहनाद करते देख, श्रीकृष्ण ने पाञ्चजन्य और अर्जुन ने अपना देवदत्त शङ्ख बजाये। उन दोनों की शङ्खध्वनि पर्वतों, समुद्रों, द्वीपों तथा पाताल सहित पृथिवी पर प्रतिध्वनित हुई। वह शङ्खध्वनि समस्त दिशाओं में व्याप्त हो गयी और वह कौरव और पाण्डव सेनाओं में भी सुन पड़ी। आपके रथी और महारथी आक्रमणकारी श्रीकृष्ण और अर्जुन को देख, बहुत घबड़ा उठे और हड़बड़ाने लगे। तिस पर भी आपके बलवान योद्धा कवच धारण कर, श्रीकृष्ण और अर्जुन को देख और क्रुद्ध हो उनसे लड़ने को झपटे। उस समय उनका यह साहस बड़ा विस्मयोत्पादक जान पड़ता था।

एक सौ चार का अध्याय

घमासान लड़ाई

सञ्जय कहने लगे—हे धृतराष्ट्र! आपके योद्धाओं ने एक साथ अर्जुन और श्रीकृष्ण पर आक्रमण किया और अर्जुन भी उनका नाश करने को

शीघ्रता करने लगे। भूरिश्रवा, शल, कर्ण, वृषसेन, जयद्रथ, कृप, शल्य और अश्वत्थामा—इन आठ महारथियों ने मिल कर अर्जुन पर आक्रमण किया। ये लोग सुवर्ण से चित्रित और बाघम्बर से मढ़े उत्तम रथों पर सवार थे। क्रुद्ध सर्प जैसे फुँसकारे, वैसे अपने धनुषों से ये लोग टंकार शब्द कर रहे थे। उनके धनुष की मुठियाँ सोने की थीं और वे धनुष ऐसे चमक रहे थे कि, उनकी ओर देखा नहीं जा सकता था। वे लोग प्रज्वलित अग्नि की तरह समस्त दिशाओं को प्रकाशित कर रहे थे। उन क्रुद्ध और कवचधारी महारथियों ने चलते समय मेघ की तरह गड़गड़ाहट करने वाले रथों पर सवार हो पार्थ को चारों ओर से घेर लिया और वे अर्जुन पर पैने बाण बरसाने लगे। उन लोगों के रथों में कुलूत देशी तथा भिन्न भिन्न देशों के विचित्र घोड़े जुते हुए थे, जो बड़ी फुर्ती से दौड़ रहे थे। कौरव पक्षीय चुने चुने योद्धा, आपके पुत्र को बचाने के लिये, दौड़ पड़े और अर्जुन को घेर लिया। वे पुरुषश्रेष्ठ अपने बड़े बड़े शङ्खों को बजाने लगे। उनकी शङ्खध्वनि ससागरा पृथिवी और आकाश में व्याप्त हो गयी। तब श्रीकृष्ण ने भी अपना पाञ्चजन्य और अर्जुन ने अपना देवदत्त शङ्ख बजाये। अर्जुन के देवदत्त शङ्ख की ध्वनि पृथिवी, आकाश तथा समस्त दिशाओं में व्याप्त हो गयी। श्रीकृष्ण के पाञ्चजन्य की शङ्खध्वनि समस्त शङ्खध्वनियों को दबा, आकाश और पृथिवी में व्याप्त हुई। शूरों को हर्षित और भीरुओं को भयभीत करने वाली इस शङ्खध्वनि के साथ साथ भेरी, झाँझ, नगाड़े और मृदङ्ग भी बजाये गये थे। दुर्योधन के हितेच्छु और हमारी सेना के रक्षक मुख्य मुख्य महारथी अनेक देशों के शूरवीर अधीश्वर उस शङ्खध्वनि को न सहन कर सके। उन लोगों ने अर्जुन और श्रीकृष्ण के शब्द में बाधा डालने के लिये उच्चस्वर से अपने शङ्खों को बजाया। उन लोगों के शङ्खों के शब्द को सुन, आपकी सेना के पैदल सिपाही, घुड़सवार और गजारोही सैनिक, तथा रथी—विकल एवं अस्वस्थ हो गये। वज्रपात के शब्द से जैसे आकाश प्रतिध्वनित हो जाता है, वैसे ही इन शूरों की

शङ्खध्वनि से, जो प्रलय कालीन घोर ध्वनि जैसी थी, समस्त दिशाएँ गूंज उठीं और सेनाएँ भयभीत हो गयीं।

तदनन्तर आठों महारथी और दुर्योधन ने जयद्रथ की रक्षा करने के उद्देश्य से, अर्जुन को चारों ओर से घेरा, जिससे वह आगे बढ़ने न पावे। अश्वत्थामा ने श्रीकृष्ण के तिहत्तर, अर्जुन के तीन और ध्वजा तथा घोड़ों के पाँच भल्ल बाण मारे। वासुदेव के घायल होने पर अर्जुन को बड़ा रोष उत्पन्न हुआ और उन्होंने अश्वत्थामा के छः सौ बाण मारे। फिर उन्होंने कर्ण के दस वृषसेन के तीन बाण मारे। अर्जुन ने शल्य के धनुष की मूँठ काट दी। तुरन्त ही शल्य ने दूसरा धनुष ले, अर्जुन को घायल किया। भूरिश्रवा ने तीन, वृषसेन ने सात, कर्ण ने बत्तीस, जयद्रथ ने तिहत्तर, कृपाचार्य ने दस और शल्य ने सुवर्ण पुंख युक्त पैने दस बाण मार अर्जुन को घायल किया। अश्वत्थामा ने अर्जुन के साठ और श्रीकृष्ण के बीस बाण मार, पुनः अर्जुन के पाँच बाण मारे। यह देख अर्जुन ने हँस कर और अपने हाथ की सफाई दिखला उन सब को घायल कर डाला। उन्होंने कर्ण के बारह और वृषसेन के तीन बाण मार, दोनों को घायल किया। फिर शल्य के धनुष को काट, उन्होंने दो टुकड़े कर दिये। फिर उन्होंने सौमदत्ति को तीन और शल्य को दस बाणों से विद्ध कर, अग्नि की लपट जैसे आठ चमचमाते बाणों से अश्वत्थामा को घायल किया। फिर कृपाचार्य को पचीस, जयद्रथ को सौ और अश्वत्थामा को सत्तर, बाणों से विद्ध किया। भूरिश्रवा ने क्रुद्ध हो, श्रीकृष्ण के हाथ के चाबुक के टूक टूक कर डाले। फिर अर्जुन के तिहत्तर बाण मारे। इस पर अर्जुन ने शत्रुओं के सौ बाण मार, उन्हें वैसे ही पीछे हटा दिया, जैसे क्रोध में भरा पवन, मेघों को पीछे हटा देता है।

एक सौ पाँच का अध्याय

ध्वजाओं का वृत्तान्त

धृतराष्ट्र ने पूँछा—हे सञ्जय ! विविध प्रकार की तथा अत्यन्त शोभायमान पाण्डवों तथा कौरवों की ध्वजा पताकाओं का वृत्तान्त तो तुम हमें सुनाओ।

सञ्जय ने कहा—हे राजेन्द्र ! युद्ध में सम्मिलित, वीर योद्धाओं की ध्वजाएं अनेक रूपों और आकारों की थीं। मैं अब उनका वर्णन करता हूँ। सुनिये। महारथियों के रथों में नाना प्रकार के ध्वजदण्ड थे। वे भभकते हुए अग्नि की तरह चमक रहे थे। वे ध्वजदण्ड सोने के थे और उनके ऊपर सुनहले वस्त्र और सोने के आभूषण पड़े हुए थे। उनके ऊपर रंग बिरंगी परम सुन्दर पताकाएँ फहरा रही थीं। हेमाद्रि के सुवर्ण शिखर की तरह वे शोभायमान हो रहे थे। रंग बिरंगी छोटी छोटी पताकाओं की शोभा भी निराली थी। इन्द्रधनुष जैसी रंग बिरंगी वे छोटी छोटी पताकाएँ पवन से हिल हिल कर, इस तरह फहरा रही थीं, मानों रङ्गमञ्च पर वेश्याएँ नाच रही हों। वे फहराती हुई पताकाएँ पवन से फर फर करतीं, महारथियों के रथों की शोभा बढ़ा रही थीं। सिंह जैसी पूँछ और भयङ्कर वानर की आकृति के चिन्ह से चिन्हित अर्जुन के रथ की ध्वजा रणक्षेत्र में बड़ी भयावह जान पड़ती थी। छोटी छोटी पताकाओं के बीच वानर और अर्जुन की ध्वजा आपकी सेना को त्रस्त कर रही थी। सुवर्णदण्ड वाली, इन्द्रधनुष की तरह चमकीली प्रभा वाली, पवन से इधर उधर फहराती, सिंहपुच्छ के चिह्न से चिह्नित बालसूर्य जैसी प्रभावाली और कौरवों के आनन्द को बढ़ाने वाली अश्वत्थामा की ध्वजा थी।

हे राजन् ! सुवर्णमयी एवं हाथी के चिह्न से चिह्नित कर्ण की ध्वजा आकाशव्यापिनी सी देख पड़ती थी। माला से भूषित एवं सुवर्ण की बनी कर्ण के रथ की वह ध्वजा पवन से प्रेरित हो नाचती सी जान पड़ती थी।

और रामहृद एवं मचक्रुक नामक सरोवर के बीच कुरुक्षेत्र है। यह तीर्थ समन्तपञ्चक भी कहलाता है और यह ब्रह्मा जी की उत्तरवेदी के नाम से भी प्रसिद्ध है।

चौरासीवाँ अध्याय

तीर्थावली का वर्णन

पुलस्त्य जी बोले—हे भीष्म! उक्त तीर्थों में जाने के बाद धर्मतीर्थ की यात्रा करे। यहाँ पर पूर्वकाल में धर्मराज ने बड़ा तप किया था और उन्होंने अपने नाम से इस स्थान को पुण्यस्थल बनाया। धर्मात्मा मनुष्य इस तीर्थ में स्नान कर, निश्चय ही अपनी सात पीढ़ियों को पवित्र करता है। इसके बाद ज्ञानपावन नाम का एक उत्तम तीर्थ है। यहाँ जाने से अग्निष्टोम यज्ञ करने का फल मिलता है और मरने पीछे उसे मुनियों के लोक का वास प्राप्त होता है। तदनन्तर हे राजन्! सौगन्धिक नामक वन में जाना चाहिये। इस वन में ब्रह्मादि देवता और तपोधन ऋषि, सिद्ध, चारण, गन्धर्व, किन्नर और बड़े बड़े सर्प रहते हैं। इस वन में पैर रखते ही सब पाप दूर हो जाते हैं। हे राजन्! इसके आगे प्लक्षा देवी और सरस्वती नाम्नी श्रेष्ठ नदियाँ मिलती हैं। ये दोनों नदियाँ देवी मानी गयी हैं। ये दोनों महापवित्र हैं और इनका जल झरने से झरता है। यहाँ स्नान कर, देव-पितृ-पूजन करने से, अश्वमेध नामक यज्ञ करने का फल मिलता है। यहीं पर ईशानाध्युषित नामक एक परम दुर्लभ तीर्थ है। विद्वानों ने निश्चय कर डाला है कि, यह तीर्थ झरने से छःशम्यानिपात के फाँसले

---

* शम्या नामक एक अस्त्र होता है। इसकी बनावट मुगदर जैसी होती है। इसका उपयोग यज्ञों में हुआ करता था। इसको ज़ोर से फेंकने में जितना स्थान घिरे उसे ही शम्यानिपात कहते हैं।

आकृति का चिन्ह था, उस ध्वजदण्ड से अर्जुन की वैसी ही शोभा हो रही थी, जैसी शोभा अग्नि से हिमालय की होती है।

हे राजन्! अर्जुन को मारने के लिये आपके पक्ष के शत्रुतापन महारथियों ने बड़े बड़े और चमचमाते वाण हाथों में लिये। तब आपके अन्याय से वाध्य हो, दिव्य कर्म करने वाले एवं शत्रुतापन अर्जुन ने भी अपना गाण्डीव धनुष उठाया। हे राजन्! इन सब झगड़ों का मूल कारण आपका विपरीत विचार है। आप ही के दोष से इस युद्ध में बहुत से राजा लोग मारे गये। आपके पुत्र द्वारा बुलाये गये विविध देशों के रिसालों, रथों और गजों सहित बहुत से राजे, इस युद्ध में लड़ने को आये थे। वे समस्त राजा लोग और दुर्योधन एक ओर थे और दूसरी ओर पाण्डवश्रेष्ठ अकेले अर्जुन थे। सो दोनों ओर से घोर सिंहनाद के साथ युद्ध होने लगा। इस युद्ध में अर्जुन ने परम विस्मयकारी पराक्रम प्रदर्शित किया। महाबली अर्जुन अकेले ही, उन बहुत से योद्धाओं के बीच निर्भीक हो, घूमने लगे और उनको जीतने तथा जयद्रथ का वध करने की इच्छा से वे गाण्डीव धनुष से बाणवृष्टि करने लगे। अर्जुन ने अगणित बाण छोड़ आपके योद्धाओं को आच्छादित कर दिया। इसके जवाब में जब आपकी ओर के पुरुषव्याघ्र महारथियों ने बाणवृष्टि कर, अर्जुन को ढक दिया; तब आपकी सेना के सैनिक सिंहनाद कर गर्जने लगे।

एक सौ छः का अध्याय

युधिष्ठिर का पिछाड़ी हट जाना

धृतराष्ट्र ने पूँछा—हे सञ्जय! जब अर्जुन बढ़ता हुआ सिन्धुराज की ओर चला गया, तब द्रोण के रोके हुए पाञ्चालों का, कौरवों के साथ कैसा युद्ध हुआ? यह भी मुझे सुनाओ।

सञ्जय ने उत्तर दिया—हे राजन् ! जब तीसरा पहर हो गया, तब कौरवों और पाञ्चालों में लोमहर्षण युद्ध होने लगा। आनन्द में भर कर पाञ्चालराजों ने द्रोण का वध करने की इच्छा से, बड़ा सिंहनाद किया और वे द्रोण पर बाणवृष्टि करने लगे। उस समय पाञ्चालराजों और कौरवों में देवासुर संग्राम की तरह महाभयङ्कर एवं बड़ा विलक्षण तुमुल संग्राम हुआ। पाण्डवों सहित समस्त पाञ्चालराजों ने द्रोण के रथ के निकट पहुँचने और उनके सैन्यव्यूह को भङ्ग करने के लिये, बड़े बड़े शस्त्रों को छोड़ा। रथस्थ पाञ्चाल रथी पृथिवी को दुलाते और क्रमशः अपने रथों को दौड़ाते हुए द्रोण के रथ के निकट जा पहुँचे। पहले झपाटे में केकयों का महारथी वृहत्क्षत्र इन्द्र के वज्र जैसे भीषण एवं तीक्ष्ण बाणों को छोड़ता हुआ, द्रोण के सामने जा पहुँचा। साथ ही बड़ी फुर्ती से महायशस्वी क्षेमधूर्ति अगणित बाणों को छोड़ता हुआ, उसके सामने जा डटा। चेदियों में श्रेष्ठ महाबली धृष्टकेतु भी द्रोण पर वैसे ही चढ़ दौड़ा, जैसे इन्द्र, शम्बरासुर पर दौड़े थे। मुख खोले हुए काल की तरह सहसा उसको आते देख, महाधनुर्धर वीरधन्वा उसके सामने तुरन्त आ डटा। महाराज युधिष्ठिर भी विजय की कामना से वहाँ जा खड़े हुए। किन्तु महापराक्रमी द्रोण ने उन्हें उनकी सेना सहित वहीं रोक रखा और उन्हें आगे बढ़ने नहीं दिया। क्रुद्ध हो बाण छोड़ते हुए, रथियों में श्रेष्ठ एवं नरव्याघ्र द्रौपदी के पाँचों पुत्रों को सौमदत्ति ने रोका। क्रुद्ध हो आगे बढ़ते हुए भीम को, भयङ्कर एवं भीम पराक्रमी महारथी अलम्बुष राक्षस ने रोका। तब उसमें और भीम में वैसा ही घोर युद्ध हुआ, जैसा कि पूर्वकाल में राम और रावण में हुआ था।

महाराज युधिष्ठिर ने द्रोण के समस्त मर्मस्थलों को नब्बे बाण मार कर विद्ध किया। तब युधिष्ठिर पर अप्रसन्न हुए द्रोण ने उनकी छाती में पचीस बाण मारे। फिर समस्त धनुर्धरों के सामने ही द्रोण ने पुनः पचीस बाण मार कर, युधिष्ठिर की ध्वजा काटी और उनके सारथी और उनके घोड़ों के साथ उन्हें भी घायल किया, किन्तु धर्मराज ने अपने हाथ की सफाई दिखला,

द्रोण के बाणों को अपने बाणों से दूर फेंक दिया। तब द्रोण बड़े कुपित हुए और उन्होंने युधिष्ठिर का धनुष ही काट डाला। फिर द्रोण ने अगणित बाण चला, युधिष्ठिर को बाणों से ढक दिया। यह देख, कुछ लोगों ने समझा कि, युधिष्ठिर मारे गये, कुछ ने समझा वे भाग गये। इससे युधिष्ठिर को बड़ा दुःख हुआ। उन्होंने उस कटे हुए धनुष को दूर फेंक, दूसरा चमचमाता एक दिव्य धनुष लिया। उससे उन्होंने बाण चला, द्रोण के चलाये बाणों को काट डाला। यह एक बड़ी आश्चर्यकारिणी घटना थी। तदनन्तर क्रोध से रक्तनयन युधिष्ठिर ने पर्वतों को विदीर्ण करने वाली बड़ी भयङ्कर गदा उठायी। उस गदा का डंडा सोने का था और उसमें आठ घंटियाँ लगी हुई थीं। उस गदा को घुमा बड़े ज़ोर से युधिष्ठिर ने द्रोण पर फेंका। फिर सब को भयभीत करते हुए वे बड़े ज़ोर से गरजे तथा प्रसन्न हुए। तदनन्तर धर्मराज ने जब एक बरछी हाथ में ली, तब सब प्राणी भयग्रस्त हो और एक स्वर से कहने लगे—द्रोण का मङ्गल हो। युधिष्ठिर के हाथ से छूट, केंचली से मुक्त सर्प की तरह तथा जलते हुए मुख वाली साँपिन की तरह, चमचमाती और चारों ओर प्रकाश करती हुई वह शक्ति द्रोण की ओर जाने लगी। तब अस्त्रवेत्ताओं में श्रेष्ठ द्रोण ने ब्रह्मास्त्र का प्रयोग किया। वह ब्रह्मास्त्र उस भयङ्कर शक्ति को भस्म कर, बड़ी तेज़ी से युधिष्ठिर के रथ की ओर लपका। तब युधिष्ठिर ने भी ब्रह्मास्त्र का प्रयोग कर, उस ब्रह्मास्त्र को शान्त कर दिया और पाँच बाणों से द्रोण को विद्ध कर, एक क्षुरप्र बाण से द्रोण के हाथ का धनुष काट डाला। क्षत्रियमर्दन द्रोण ने उस कटे हुए धनुष को फेंक युधिष्ठिर के ऊपर गदा फेंकी। तब क्रुद्ध युधिष्ठिर ने गदा के ऊपर गदा चलायी। वे दोनों गदाएँ आपस में टकरा गयीं और उनमें से चिनगारियाँ निकलने लगीं। अन्त में कुछ देर बाद दोनों पृथिवी पर गिर पड़ीं। तब तो द्रोण को युधिष्ठिर पर बड़ा क्रोध आया। उन्होंने पैने चार बाण मार, युधिष्ठिर के रथ के चारों घोड़ों को मार डाला और एक भल्ल बाण से उनका धनुष भी काट डाला। फिर एक दूसरे बाण से युधिष्ठिर के रथ की

भला काटी और तीन बाण मार उन्हें भी पीड़ित किया। तब शस्त्रहीन भुजाओं को ऊँची कर, युधिष्ठिर भूमि पर खड़े हो गये। तब युधिष्ठिर को शस्त्र रहित और रथहीन देख, आचार्य द्रोण ने, उनको छोड़, उनकी सेना तथा अन्य सेनापतियों को जो उनके सहायक थे, तीक्ष्ण बाण मार कर विकल किया। फिर शत्रुनाशक द्रोण, युधिष्ठिर की ओर झपटे। उस समय पाण्डव तथा अन्य लोग यह कह कर चिल्लाने लगे कि, युधिष्ठिर को द्रोण ने मार डाला। उस समय पाण्डवों की सेना में बड़ा कोलाहल मचा। इतने में घबड़ाये हुए युधिष्ठिर सहदेव के रथ पर चढ़ गये और रथ को भगा, पीछे हट गये।

एक सौ सात का अध्याय

सहदेव की वीरता

संजय ने कहा—हे महाराज! दृढ़ पराक्रमी केकयराज बृहत्क्षत्र को आक्रमण करते देख क्षेमधूर्ति ने बाण मार उसका हृदय विदीर्ण कर डाला। फिर द्रोण की सेना को तितिर बितिर कर देने की कामना से, बृहत्क्षत्र ने नतपर्व ९० बाण बड़ी फुर्ती के साथ क्षेमधूर्ति के मारे। उस पर क्रुद्ध हो क्षेमधूर्ति ने भल्ल बाण से बृहत्क्षत्र का धनुष काट डाला और नतपर्व बाणों से उसने बृहत्क्षत्र को घायल किया। बृहत्क्षत्र ने हँसते हुए दूसरा धनुष लिया और देखते देखते उसने क्षेमधूर्ति के रथ के घोड़ों और सारथि को मार डाला। फिर भल्लबाण मार क्षेमधूर्ति का, चमचमाते कुण्डलों से भूषित सिर काट कर पृथिवी पर डाल दिया। उसका घुँघराले बालों से युक्त और मुकुट से शोभित मस्तक भूमि पर गिर वैसे ही शोभा को प्राप्त हुआ, जैसी शोभा को आकाशच्युत तारा पृथिवी पर गिर कर प्राप्त होता है। क्षेमधूर्ति का वध कर, बृहत्क्षत्र को बड़ी प्रसन्नता हुई। फिर वह, हे राजन्! आपकी सेना पर टूटा।

उधर द्रोण को मारने के लिये आगे आते हुए धृष्टकेतु को महावीर वीरधन्वा ने रोका। बाणरूपी उमय डाढ़ों वाले फुर्तीले योद्धा सामने सामने हो, एक दूसरे पर अगणित अस्त्रों के प्रहार करने लगे। वे दोनों नरशार्दूल उस समय वैसे ही आपस में भिड़े हुए थे, जैसे महावन में मदमाते दो गजयूथपति आपस में भिड़ते हैं। वे दोनों वीर क्रोध में भर और एक दूसरे को मार डालने के लिये, पहाड़ी गुफा में लड़ते हुए दो क्रुद्ध सिंहों की तरह, लड़ने लगे। हे राजन्! उनकी लड़ाई विस्मयकारिणी थी और सिद्धों चारणों के देखने योग्य थी। क्रुद्ध वीरधन्वा ने अनायास भल्लबाण से धृष्टकेतु का धनुष काट डाला। तब उस भग्न धनुष को दूर फेंक, धृष्टकेतु ने लोहे की एक बड़ी भारी शक्ति उठायी और तान कर उसे वीरधन्वा के मारी। उस शक्ति के प्रहार से वीरधन्वा की छाती फट गयी और वह रथ से लुढ़क कर, भूमि पर गिर पड़ा। त्रिगर्तों के एक प्रसिद्ध वीर वीरधन्वा के मारे जाने पर पाण्डवों के योद्धा आपकी सेना को भगाने लगे।

उधर दुर्मुख ने सहदेव के ऊपर साठ बाण छोड़े। साथ ही सहदेव का तिरस्कार करते हुए उसने सिंहगर्जन की। तब क्रुद्ध हो सहदेव ने हँसते हँसते आते हुए दुर्मुख को पैने बाणों से विद्ध कर डाला। तब दुर्मुख ने भी सहदेव के नौ बाण मारे। इस पर महाबली सहदेव ने भल्ल बाणों से उसके चारों घोड़ों को मार, उसके रथ की ध्वजा काट डाली। फिर एक और पैना बाण छोड़, दुर्मुख के सारथि का चमकीले मुकुट से भूषित सिर काट डाला। फिर दुर्मुख का धनुष काट, उसको पाँच बाणों से घायल किया। हे राजन्! उस समय दुर्मुख बहुत उदास हो गया और अश्वहीन अपने रथ को छोड़ निरमित्र के रथ में जा बैठा। तब शत्रुनाशन सहदेव ने क्रोध में भर एक भल्ल बाण निरमित्र के मारा। उस बाण की चोट से त्रिगर्तराज का पुत्र निरमित्र निर्जीव हो रथ से नीचे गिरा। उस समय, हे राजन्! आपकी सेना में शोक छा गया। उसका वध कर सहदेव की वैसी ही शोभा हुई; जैसी शोभा श्रीरामचन्द्र जी की खर को मारने से हुई

थी। हे राजन्! महारथी मित्रमित्र के मारे जाने पर त्रिगर्तों की सेना में बड़ा हाहाकार मचा।

हे राजन्! इस लड़ाई में नकुल ने आपके पुत्र विकर्ण को बात की बात में जीत लिया। इस बात का लोगों को बड़ा आश्चर्य जान पड़ा।

व्याघ्रदत्त ने नतपर्व बाणों से घोड़ों और सारथि सहित सात्यकि को आच्छादित कर दिया। इस पर शिनिनन्दन सात्यकि ने हाथ की सफाई दिखा, मारे बाणों के उन बाणों को पीछे हटा दिया और अन्य बाण मार, घोड़ों, सारथि, रथ और ध्वजा सहित व्याघ्रदत्त को नष्ट कर डाला।

हे प्रभो! मगधराज के उस राजकुमार के मारे जाने पर, मगधराज के योद्धाओं ने चारों ओर से युयुधान पर आक्रमण किया। वे सब वीर युद्धदुर्मद सात्यकि के ऊपर तोमरों, बाणों, भिन्दिपालों, प्रासों, मुद्गरों, और मूसलों की वृष्टि सी करने लगे। किन्तु युद्धदुर्मद सात्यकि ने हँसते हँसते, उन सब को जीत लिया। जो मारे जाने से बचे, वे भय खा कर इधर उधर भाग गये।

मागधों को इस प्रकार खदेड़, सात्यकि ने, हे राजन्! आपकी सेना को बाण मार मार कर भगाया। उस समय हाथ में धनुष लिये हुए सात्यकि की शोभा देखते ही बन आती थी। उस समय आपकी भागती हुई सेना का एक भी वीर सात्यकि का सामना न कर सका। यह देख द्रोण ने अतीव क्रोध कर और त्योरी बदल, सत्यपराक्रमी सात्यकि पर आक्रमण किया।

एक सौ आठ का अध्याय

भीमसेन और अलम्बुष राक्षस का युद्ध

सञ्जय ने कहा—हे धृतराष्ट्र! महायशस्वी सोमदत्त के पुत्र ने महाधनुर्धर द्रौपदी के पाँचों पुत्रों में से हरेक को एक एक बार में पाँच पाँच, फिर

सात सात बाणों से विद्ध किया। हे प्रभो! सोमदत्तनन्दन के प्रहारों से वे पाचों किंकर्त्तव्य-विमूढ़ हो गये। इतने में शत्रुकर्षण नकुल के पुत्र शतानीक ने सोमदत्त के पुत्र के दो बाण मार, उसे घायल किया और सिंहनाद किया। फिर अन्य चारों द्रौपदीनन्दनों ने, सावधान हो कर, सोमदत्त के पुत्र को तीन तीन बाण मार कर, घायल किया। इस पर सोमदत्त के पुत्र ने पाँचों के एक एक बाण मार उनकी छाती में घाव कर दिये। तब वे घायल पाँचों भाई उसे चारों ओर से घेर, उस पर बाणवृष्टि करने लगे। क्रुद्ध अर्जुननन्दन ने तेज़ चार बाण मार उसके चारों घोड़ों को मार डाला। भीमसेन के पुत्र ने सोमदत्त के पुत्र का धनुष काट डाला और बड़े ज़ोर से सिंहनाद किया। फिर उसे तेज़ बाणों से विद्ध किया। युधिष्ठिर-नन्दन ने उसके रथ की ध्वजा काटी। फिर नकुलनन्दन शतानीक ने उसका सारथि मार डाला और सहदेवकुमार ने क्षुरप्र बाण मार कर, उसका सिर काट डाला। सुवर्ण के आभूषणों से भूषित प्रातः कालीन सूर्य की तरह द्युतिमान सोमदत्त के पुत्र का मस्तक रणभूमि को प्रकाशित करता हुआ रणभूमि में जा गिरा। हे राजन्! उसके कटे सिर को देख, आपके सैनिक भयभीत हो चारों ओर भाग गये।

मेघनाद ने जैसा युद्ध लक्ष्मण से किया था, वैसा ही युद्ध अलम्बुष राक्षस, भीमसेन के साथ कर रहा था। उस मनुष्य-राक्षस-युद्ध को देख, मनुष्यों को केवल विस्मय ही नहीं, किन्तु हर्ष भी हुआ। हे राजन्! ऋष्य-शृङ्ग के पुत्र उस क्रोधी अलम्बुष राक्षस ने हँस कर, नौ पैने बाण भीमसेन को मार, उन्हें घायल किया। तदनन्तर वह राक्षस बड़ा भारी गर्जन तर्जन करता हुआ अपने अनुचर राक्षसों सहित भीमसेन की ओर लपका। उस राक्षस ने नतपर्व पाँच बाण मार कर भीम को घायल किया और भीमसेन के तीन सौ रथियों का संहार कर डाला। फिर भीम के चार सौ योद्धाओं का नाश कर, उसने भीम के एक बाण मारा। उस बाणप्रहार से भीम मूर्छित हो रथ के खटोले में गिर गये। थोड़ी देर बाद जब वे सचेत हुए

तब पवननन्दन भीमसेन ने क्रुद्ध हो, एक ऐसा धनुष उठाया जो बड़ा भारी बोझ सह सकता था। फिर उसे धनुष पर रख, भीमसेन ने सारे बाणों से अलम्बुष को पीड़ित कर डाला। उस राक्षस के सारे शरीर में बाण बिंधे हुए थे। उस समय वह फूले हुए टेसू के पेड़ जैसा देख पड़ता था। जिस समय भीम उस पर बाणप्रहार कर रहे थे, उस समय अलम्बुष को भीमसेन द्वारा किये गये अपने भाई बक के वध का स्मरण हो आया। तब तो उसने बड़ा भयङ्कर रूप धारण किया और भीमसेन से कहने लगा—भीम! खड़ा रह और मेरा पराक्रम देख। अरे दुर्बुद्धे! जब तूने मेरे महाबली भाई बक का वध किया था, तब मैं वहाँ था नहीं। किन्तु उसका फल मैं तुझे आज चखाऊँगा। यह कह वह राक्षस अन्तर्धान हो गया और अदृश्य हो भीम के ऊपर बाणवृष्टि करने लगा। तब भीम ने नतपर्व बाणों से आकाश को परिपूर्ण कर दिया। भीम के बाणों के प्रहार से वह राक्षस पल भर में आकाश से अपने रथ पर आ गया। फिर रथ से पृथिवी पर उतर पड़ा और फिर नन्हा सा रूप बना, पुनः आकाश में चला गया। क्षण भर में तो वह नन्हा सा बन जाता था और क्षण ही भर में वह विशालाकार हो जाता था। फिर क्षण भर में वह ऊँचा और क्षण ही भर में नीचा हो जाता था। फिर क्षण में पतला और क्षण ही में मोटा बन मेघ की तरह गर्जने लगता था। वह बराबर गालियाँ बक रहा था। वह आकाश में जा, बाण, भाले, शूल, पट्टिश, तोमर, शतघ्नी, परिघ, भिन्दिपाल, कुठार, शिला, खड्ग और ऋष्टियों की वज्र जैसी घोर वृष्टि करने लगा। इस शस्त्रवृष्टि से पाण्डव पक्षीय सैनिक मर मर कर गिर रहे थे, इस शस्त्रवृष्टि से पाण्डवों के बहुत से हाथी और पैदल सिपाही मारे गये। अलम्बुष ने, समरभूमि में रक्तरूपी जल, रथ रूपी भँवरों, गज रूपी ग्राहों, छत्ररूपी हंसों, भुजारूपी सर्पों से युक्त और राक्षसों के समूह से सेवित रुधिर की नदी प्रवाहित कर दी। हे राजन्! उस नदी के प्रवाह में अधिकांश चेदी, पाञ्चाल और सृञ्जय बह गये। उस राक्षस के इस कृत्य को देख, पाण्डव बहुत

दुःखी हुए। साथ ही आपके पक्ष के योद्धा बाजे बजा हर्षध्वनि करने लगे। किन्तु ताली बजाने की आवाज़ सुन जैसे हाथी क्रोध में भर जाता है, वैसे ही आपके सैन्य की उस हर्षध्वनि को सुन, पवननन्दन भीमसेन उसे सहन न कर सके और उन्होंने विश्वकर्मा के अस्त्र का प्रयोग किया। उस अस्त्र का प्रयोग करते ही चारों ओर से सहस्रों बाणों की वर्षा होने लगी। तब तो आपकी सेना में भगदड़ पड़ गयी। भीमसेन के उस अस्त्र से अलम्बुष की वह सारी माया नष्ट हो गयी और वह राक्षस भी पीड़ित हुआ। जब भीमसेन ने उस राक्षस को मार मार कर विकल कर डाला, तब वह भीमसेन के सामने से भाग कर, द्रोणरक्षित सेना में जा घुसा। इस प्रकार हे राजन्! जब भीमसेन ने उस राक्षस को हरा कर भगा दिया; तब पाण्डवपक्षीय सैन्य ने हर्षनाद कर, दसों दिशाएँ प्रतिध्वनित कीं। प्रह्लाद को परास्त करने पर मरुद्गण ने जैसे इन्द्र की प्रशंसा की थी, वैसे ही हर्षित पाण्डव भी पवननन्दन महाबली भीम की सराहना करने लगे।

एक सौ नौ का अध्याय

अलम्बुष का वध

सञ्जय ने कहा—हे राजन्! जब अलम्बुष निर्भय हो द्रोणरक्षित सैन्य में विचर रहा था; तब हिडिम्बा-नन्दन घटोत्कच ने पैने बाणों से उसे घायल किया। पूर्वकाल में जैसे इन्द्र और शम्बर का मायायुद्ध हुआ था, वैसे ही युद्ध उस समय उन दोनों राक्षसों में हुआ। अलम्बुष ने क्रुद्ध हो घटोत्कच को खूब मारा। इन दोनों राक्षसों का युद्ध, हे राजन्! पूर्वकालीन रामरावण के युद्ध की टक्कर का था।

घटोत्कच ने बीस बाण मार, अलम्बुष की छाती घायल की और सिंह-नाद किया। तब अलम्बुष ने भी युद्धदुर्मद घटोत्कच को बारंबार घायल

कर, सिंहनाद कर आकाश को प्रतिध्वनित किया। वे दोनों राक्षस तरह तरह की माया रच कर युद्ध कर रहे थे। उनमें कोई भी किसी से न्यून नहीं जान पड़ता था। माया-युद्ध-विशारद वे दोनों राक्षस मायायुद्ध कर रहे थे, हे राजन्! घटोत्कच जो माया रचता था, अलम्बुष अपनी माया से उसे नष्ट कर डालता था। मायावी राक्षसेन्द्र अलम्बुष को इस प्रकार लड़ते देख, पाण्डव बहुत क्रुद्ध हुए और भीमादि पाण्डवों ने चारों ओर से उस पर आक्रमण किया। वे उसे चारों ओर से अपने रथों द्वारा घेर, उस पर वैसे ही बाणवृष्टि करने लगे, जैसे हाथी पर लुआठ बरसाये जाँय। किन्तु मायावी अलम्बुष उस अग्निमयों से वैसे ही बच कर निकल गया, जैसे हाथी वन के दावानल से निकल जाता है। फिर उसने कस कस कर इन्द्र के वज्र जैसे पचीस बाण भीम के, पाँच घटोत्कच के, तीन युधिष्ठिर के, सात सहदेव के, तिहत्तर नकुल के और पाँच पाँच बाण द्रौपदी के प्रत्येक पुत्र के मारे। फिर वह ज़ोर से दहाड़ा। तब भीम ने उसके नौ, सहदेव ने पाँच और युधिष्ठिर ने सौ बाण मार उसे घायल किया। घटोत्कच ने भी उसके पहले पचास और फिर सत्तर बाण मार उसे घायल किया और ज़ोर से गर्जना की। हे राजन्! उस गर्जन से पर्वत, वन, वृक्ष और सरोवरों सहित चारों ओर से पृथिवी काँप उठी। तिस पर भी अलम्बुष ने उनमें से प्रत्येक के पाँच पाँच बाण मारे। तदनन्तर अलम्बुष को क्रुद्ध देख घटोत्कच भी अतीव क्रुद्ध हुआ और घटोत्कच ने उसके सात बाण मारे। तब अलम्बुष ने बड़े पैने सुवर्णपुङ्ख बाण बड़ी फुर्ती से चलाने आरम्भ किये। वे बाण बड़े वेग के साथ घटोत्कच के शरीर में सनसनाते वैसे ही घुसने लगे। जैसे क्रोध से फनफनाते सर्प पर्वत की गुफा में घुस जाते हैं। उस समय क्षुब्ध पाण्डवों और घटोत्कच ने भी उस पर चारों ओर से बाणवृष्टि करनी आरम्भ की। अन्त में अलम्बुष पाण्डवों के चमचमाते बाणों से घायल हो मृतप्राय हो गया। उसे फिर कुछ भी न सूझ पड़ा। उसकी यह दशा देख, घटोत्कच ने उसका वध करना चाहा और बड़े वेग के साथ अपने रथ से घटोत्कच, अलम्बुष के रथ पर कूद

पड़ा। फिर जले हुए गिरिशृङ्ग अथवा टूटे हुए कज्जल के पर्वत की तरह उसने अलम्बुष को पकड़ लिया। जैसे गरुड़ पकड़े हुए सर्प को फटकारते हैं, वैसे ही अलम्बुष को उठा खूब घुमाया। फिर जैसे कोई जल का भरा घड़ा पत्थर पर पटके, वैसे ही अलम्बुष को घटोत्कच ने ज़मीन पर दे पटका। अलम्बुष के समस्त अंग प्रत्यङ्ग टूट कर बिखर गये। साथ ही घटोत्कच की ऐसी झड़पा-झड़पी देख, समस्त सैनिक भयभीत हो गये। टूटे हुए पर्वत की तरह अलम्बुष के शरीर को चूर चूर देख, हे राजन्! आपकी सेना में हाहाकार मच गया। पाण्डवों को बड़ा हर्ष हुआ और वे वस्त्र उड़ाने लगे और सिंह की तरह दहाड़ने लगे। जैसे दैवात् आकाश से च्युत मङ्गल के तारे को विस्मित हो देखते हैं, वैसे ही उस मृत अलम्बुष को देखने के लिये लोग कुतूहलाक्रान्त हो दौड़े। बलवान अलम्बुष का वध कर, घटोत्कच वैसे ही गर्जा, जैसे पूर्वकाल में बलासुर को मार कर इन्द्र गर्जे थे। इस महाकठिन काम को करने वाले घटोत्कच की पाण्डवों ने मुक्तकण्ठ से प्रशंसा की। पके हुए तालफल की तरह भूमि पर पटक और उस पापी को मार घटोत्कच भी बहुत प्रसन्न हुआ। उस समय पाण्डवों की सेना में हर्षसूचक शङ्खध्वनि होने लगी और लोग विविध प्रकार की हर्षध्वनि करने लगे। उसे सुन बदले में कौरव भी दहाड़े। तब उन दोनों के दहाड़ने का शब्द समस्त पृथिवी में व्याप्त हो गया।

एक सौ दस का अध्याय

युधिष्ठिर की व्याकुलता

धृतराष्ट्र ने कहा—हे सञ्जय! अब तुम मुझे यह बतलाओ कि, द्रोण ने सात्यकि को युद्ध में कैसे रोका था। क्योंकि यह सुनने के लिये मेरा कुतूहल बढ़ रहा है।

सञ्जय कहने लगे—हे राजन्! पाण्डव पक्ष के युयुधान आदि मुख्य योद्धाओं और द्रोणाचार्य के लोमहर्षणकारी युद्ध का वृत्तान्त आप सुनें।

हे राजन्! जब द्रोण को यह विदित हुआ कि, सत्यपराक्रमी सात्यकि उनकी सेना को नष्ट किये डालता है, तब वे स्वयं उसके ऊपर लपके। सहसा द्रोण को अपने ऊपर आक्रमण करते देख, सात्यकि ने द्रोण के पच्चीस बाण मारे। तब सावधान हो द्रोण ने सुवर्ण पुँख युक्त पाँच बाण सात्यकि के मारे। वे शत्रुमाँसभक्षी बाण, सात्यकि के बने दृढ़ कवच को फोड़, फुँसकारते हुए, सर्प की तरह सरसराते पृथिवी में घुस गये। इससे सात्यकि अङ्कुश से विद्ध हाथी की तरह क्रोध में भर गया। उसने अग्निस्पर्श जैसे पचास बाण मार कर द्रोण को घायल किया।

जब सात्यकि ने इतनी फुर्ती से द्रोण को घायल कर डाला; तब सात्यकि के द्रोण ने बहुत से बाण मार कर उसे घायल किया। तदनन्तर क्रोध में भर द्रोण ने नतपर्व बाण मार सात्यकि को पीड़ा दी। हे राजन्! जब द्रोण ने सात्यकि को इस तरह पीड़ित किया, तब सात्यकि किंकर्त्तव्य-विमूढ़ हो गया। उसका चेहरा उतर गया। सात्यकि की बुरी दशा देख, आपके पुत्र और योद्धा हर्षित हो सिंहनाद करने लगे। उस घोर गर्जना को सुन कर और सात्यकि को पीड़ित देख, युधिष्ठिर ने समस्त सैनिकों से कहा—सत्यपराक्रमी वृष्णिप्रवीर सात्यकि को वीर द्रोण वैसे ही ग्रास कर लेना चाहते हैं, जैसे राहु चन्द्रमा को। अतः जहाँ सात्यकि है, वहाँ तुम सब दौड़ कर पहुँच जाओ। फिर धृष्टद्युम्न से युधिष्ठिर ने कहा—हे द्रुपदपुत्र! तुम यहाँ खड़े खड़े क्या कर रहे हो? दौड़ कर द्रोण की ओर पहुँचो। क्या तुम्हें नहीं सूझता कि, द्रोण ने तुम्हें घोर सङ्कट में पटक दिया है। जैसे कोई बालक डोरे से बँधे पक्षी से खेले—वैसे ही द्रोण सात्यकि से खेल रहे हैं। तुम भीमसेनादि सब को अपने साथ ले, सात्यकि के रथ के निकट पहुँचो। मैं भी सब सेना को जोड़ बटोर कर, अपने साथ ले, वहाँ पहुँचता हूँ। तुम आज, काल के गाल में पड़े हुए सात्यकि की रक्षा करो।

हे राजन्! यह कह और समस्त सेना को साथ ले महाराज युधिष्ठिर द्रोण के ऊपर टूट पड़े। उस समय पाण्डवों और सृञ्जयों से द्रोण अकेले ही लड़ रहे थे। अतः हे राजन्! आपकी सेना में बड़ा कोलाहल मचा। वे नरव्याघ्र योद्धागण एकत्र हो, काक एवं मयूर के पत्रों से युक्त बाणों की वृष्टि करते हुए महारथी द्रोण की ओर पहुँचे। जैसे सज्जन किसी समागत अतिथि का आतिथ्य करने के लिये जल आसन आदि लेकर दौड़ते हैं, वैसे ही हँसते हुए द्रोण ने उन सब का बाणों से स्वागत किया। जैसे कोई अतिथि राजा के घर में पहुँच और सत्कारित हो हर्षित होता है, वैसे ही वे धनुर्धर भी द्रोण के बाणरूपी सत्कार से सन्तुष्ट हो गये। जैसे कोई दोपहर के सूर्य की ओर टकटकी बाँध नहीं देखता, वैसे ही उनमें से कोई भी द्रोण की ओर निगाह उठा न देख सका। सूर्य तुल्य द्रोण, किरणों के समान बाणों से उन सब को सन्तप्त करने लगे। जब उन्होंने पाण्डवों और सृञ्जयों को घायल करना आरम्भ किया; तब सृञ्जयों को कोई रक्षक न देख पड़ा और वे वैसे ही अपने जीवन से हताश हो गये, जैसे दल दल में फँसा हाथी। जैसे तपते हुए सूर्य की चारों ओर किरणें ही किरणें देख पड़ती हैं, वैसे ही द्रोण के चारों ओर बाण ही बाण देख पड़ते थे। इस युद्ध में द्रोण ने धृष्टद्युम्न के पचीस माननीय पाञ्चाल महारथियों का वध किया। इतना ही नहीं—हे राजन्! बल्कि मैंने देखा कि, द्रोण ने पाण्डवों और पाञ्चालों की सेना के मुख्य मुख्य वीरों को मारना आरम्भ किया। द्रोण सौ केकय वीरों को मार कर और सेना को चारों ओर खदेड़, मुख फाड़े हुए सिंह की तरह रणक्षेत्र में खड़े थे। द्रोण ने सहस्रों सैकड़ों पाञ्चालों, सृञ्जयों तथा केकयों को परास्त किया। वन में आग लगाने पर जैसे उस वन के रहने वाले चीखते चिल्लाते हैं; वैसे ही द्रोण के बाणों से व्यथित राजा लोग घायल हो चिल्ला रहे थे। हे राजन्! उस समय, देवता, गन्धर्व और पितर भी यही कह रहे थे कि, देखो पाञ्चालों और पाण्डवों के सैनिक वे भागे जाते हैं।

जब द्रोण युद्ध में सोमकों को मार रहे थे, तब उनके पास न तो

कोई फटक पाया और न कोई उन्हें बाणों से घायल ही कर पाया। इस प्रकार जब चुने चुने वीरों का वध हो रहा था, तब सहसा युधिष्ठिर ने पाञ्चजन्य शङ्ख की ध्वनि सुनी। यह शङ्खध्वनि उस समय की थी, जब अर्जुन का और जयद्रथ के रक्षकों का युद्ध हो रहा था। जब धृतराष्ट्रपुत्र अर्जुन के रथ की ओर जा, सिंहनाद करने लगे और गाण्डीव धनुष का टंकार शब्द न सुन पड़ा; तब पाण्डुपुत्र युधिष्ठिर बहुत उदास हुए। उन्होंने सोचा कि, अर्जुन इस समय विपत्ति में हैं। ऐसा सोच सोच युधिष्ठिर बार बार मूर्छित से होने लगे। फिर जयद्रथ के निर्विघ्न मारे जाने की कामना रखने वाले अजातशत्रु युधिष्ठिर ने आँखों में आँसू, भर गद्गद वाणी से सात्यकि से कहा—हे शिनिपुत्र! मित्रों पर आपत्ति पड़ने पर मनुष्य को जो करना चाहिये, वह प्राचीन कालीन लोग निर्दिष्ट कर गये हैं। अब वही करने का समय उपस्थित है। हे सात्यकि! हे शिनिपुङ्गव! मैं समस्त, योद्धाओं के विषय में जब विचार करता हूँ; तब मुझे तुमसे अधिक मित्र कोई नहीं देख पड़ता। मेरा तो यह सिद्धान्त है कि, जो अपने से प्रीति रखे और सदा हित करे, उसीसे सङ्कट के समय काम लेना चाहिये। हे वृष्णिनन्दन! जैसे श्रीकृष्ण का पाण्डवों पर सदा प्रेम रहता है, वैसा ही तुम्हारा भी हम पर अनुराग है। साथ ही तुम श्रीकृष्ण की तरह पराक्रमी भी हो। अतः इस समय मैं तुम्हें एक कार्य सौंपना चाहता हूँ। आशा है तुम इसे स्वीकार करोगे। क्योंकि तुमने आज तक मेरी कोई बात नहीं टाली। वह यह है कि, इस महा दुःखदायी युद्ध में तुम जा कर अपने बन्धु, मित्र और गुरु अर्जुन की सहायता करो। हे वीर! तू सत्यप्रतिज्ञ है, मित्रों का अभयदाता है और संसार में तूने अपने कर्मों से अपने को सत्यवादी सिद्ध कर दिखलाया है। हे शैनेय! मित्र के लिये जो युद्ध में अपनी जान गँवाता है और जो ब्राह्मणों को भूमिदान देता है—इन दोनों को समान फल मिलता है। हमने सुना है कि, अनेक राजा शास्त्रोक्त विधि से ब्राह्मणों को भूदान दे, स्वर्ग सिधारे हैं। अतः हे धर्मात्मन्! मैं तुमसे करबद्ध प्रार्थना

करता हूँ कि, तुम अर्जुन की सहायता करो। हे प्रभो! ऐसा करने से तुम्हें पृथिवी दान करने का पुण्यफल प्राप्त होगा। हे सात्यकि! एक श्रीकृष्ण ही हैं, जो अपने मित्रों को सदा अभयदान दिया करते हैं और मित्रों के लिये रण में प्राण दे सकते हैं। उनको छोड़, दूसरे तुम हो। तीसरा कोई नहीं है। वीर पुरुष जब यश के लिये युद्ध करता है, तब दूसरा वीरपुरुष ही उसका सहायक हो सकता है। साधारण जन से उसे सहायता नहीं मिल सकती। हे सात्यकि! इस युद्ध में सिवाय तुम्हारे अन्य से अर्जुन को सहायता नहीं मिल सकती। अर्जुन तुम्हारे सैकड़ों कार्यों की सराहना करता हुआ, मुझसे बारंबार कहता था कि, सात्यकि बड़ा फुर्तीला है, विचित्र ढंग से युद्ध करता है और बड़ा पराक्रमी है। वह बुद्धिमान है और सब अस्त्र चला सकता है। संग्राम में पीठ दिखाना तो वह जानता ही नहीं और न कभी घबड़ाता है। महाबली सात्यकि महारथी है। उसके दोनों कंधे, वक्षःस्थल, भुजाएँ तथा ठोड़ी बहुत बड़ी है। वह बड़ा बलवान और साहसी है। सात्यकि मेरा मित्र तथा शिष्य है। उसका मेरे ऊपर प्रेम है और मैं भी उस पर प्रेम रखता हूँ। वह मेरी सहायता कर कौरवों को पीस डालेगा। यदि श्रीकृष्ण बलराम, अनिरुद्ध, प्रद्युम्न, गद, सारण अथवा वृष्णियों सहित साम्ब और सात्यकि के बीच अपना सहायक चुनने को मुझसे कोई कहे, तो मैं नरव्याघ्र एवं सत्यपराक्रमी शिनिपुत्र सात्यकि ही को अपना सहायक चुनूँगा। क्योंकि उसके समान मेरा हितैषी अन्य कोई नहीं है। हे तात! तुम्हारे पीठ पीछे भरी सभा में अर्जुन ने इस प्रकार तुम्हारे गुणों का बखान कर, तुम्हारी सराहना की थी। हे वार्ष्णेय! मुझे आशा है कि तुम—मेरी, अर्जुन की, भीम की, नकुल की और सहदेव की आशाओं पर पानी न फेरोगे। जिस समय मैं तीर्थयात्रा करता हुआ, द्वारका में पहुँचा था, उस समय मैंने अपनी आँखों से अर्जुन पर तुम्हारी अपूर्व भक्ति देखी थी। हे सात्यकि! इस युद्ध में भी तुम हम लोगों की जैसी सहायता कर रहे हो, वैसी सहायता बिना सच्चा प्रेम हुए कोई किसी की नहीं कर सकता। हे

महाभुज ! हे मधु-कुलोत्पन्न सात्यकि ! तुम वश कुल में उत्पन्न हुए हो, हम लोगों पर तुम्हारा पूर्ण प्रेम है, तुम हम लोगों से मैत्री रखते हो। तुम्हारी अपने गुरु (अर्जुन) में पूर्ण भक्ति और सत्यनिष्ठा है। अतः इन सब बातों पर विचार कर तथा अपनी ओर देख, तुम्हें इस समय मित्र कर्त्तव्य का पालन करना चाहिये। तुम हमारे ऊपर कृपा कर, इस कार्य को करो। द्रोण द्वारा अभिमन्त्रित कवच धारण कर दुर्योधन अर्जुन से लड़ने गया है। अन्य प्रसिद्ध महारथी पहले ही से वहाँ विद्यमान हैं। अर्जुन के निकट शत्रुओं के शस्त्रों की बड़ी हर्षध्वनि भी सुन पड़ती है। अतः हे शैनेय ! हे मानद ! तुम्हें वहाँ बड़ी शीघ्रता पूर्वक जाना चाहिये। हम और भीमसेन अपने सैनिकों सहित यहाँ तैयार हैं। यदि द्रोण तुम्हें रोकेंगे, तो हम उनको देखलेंगे। हे सात्यकि ! तुम युद्ध में इस भागती हुई सेना को तो देखो, इस कुहराम को सुनो और इस बिखरती हुई सेना को भी देखो। हे तात ! पूर्णिमासी के लहलहाते समुद्र की तरह अर्जुन द्वारा विचलित उस दुर्योधन की सेना को देखो, देखो न, पलायन करते हुए रथों, हाथियों और घोड़ों द्वारा धूल उड़ रही है। जान पड़ता है, धारदार शस्त्रों से युद्ध करने वाले, अत्यन्त बलवान् सिन्धु और सौवीर देशों के योद्धाओं ने अर्जुन को रोक लिया है। वे सब जयद्रथ के लिये अपने प्राण हथेली पर रख कर, तैयार हैं। अतः इन सब को जीते बिना, जयद्रथ का वध करना असम्भव है। यह देखो, बाणों, शक्तियों, ध्वजाओं, पताकाओं, घोड़ों और हाथियों से ठसाठस भरी कौरवों की दुर्धर्ष सेना खड़ी है। दुन्दुभियों और शङ्खों की ध्वनि, सिंहगर्जन तथा रथों की घरघराहट का शब्द भी सुनो। इधर उधर दौड़ते हुए तथा पृथिवी को कँपाते हुए हाथियों, पैदल सैनिकों तथा अश्वारोहियों की पदध्वनि को तो सुनो। उन सब के आगे जयद्रथ की सेना है और उसके पीछे द्रोण की सेना है। यह सेना इतनी बड़ी है कि, इन्द्र को भी पीड़ित कर सकती है। सम्भव है, इस सेना के बीच में पड़, अर्जुन को अपने प्राण ही गँवा देने पड़ेंगे। यदि कहीं ऐसा हुआ, तब मेरा जीवित रहना

असम्भव है। हे अर्जुन! इस समय तेरे बारे में मैं बहुत चिन्तित हो गया हूँ। मेरे अर्जुन साँवले रंग का और अभी जवान है। उसके घुँघराले बाल हैं तथा वह दर्शनीय है। बड़ा फुर्तीला और विचित्र प्रकार से लड़ने वाला मेरा अर्जुन, सूर्य उगते ही सेना में घुसा था और अब दिन ढल रहा है। मुझे अभी तक यह भी नहीं मालूम कि, अर्जुन जीवित है या मारा गया। कौरवों की सेना समुद्र की तरह अपार है। जिस सेना का सामना देवता भी नहीं कर सकते, उस सेना में अर्जुन घुस गया है। अर्जुन सम्बन्धिनी चिन्ता के कारण मेरी बुद्धि इस समय ठीक नहीं है।

फिर क्रुद्ध द्रोणाचार्य मेरी सेना को पीड़ित करते हुए रणक्षेत्र में घूम रहे हैं। यह तुम प्रत्यक्ष ही देख रहे हो। बहुसंख्यक कार्यों में कौन काम प्रथम करना चाहिये, कौन पीछे इसका निर्णय, तुम भली भाँति कर सकते हो। क्योंकि तुम चतुर हो। मेरी समझ में तो तुम्हें प्रथम वह काम करना चाहिये, जो सुकर तथा महत्वपूर्ण हो। मेरे मतानुसार तो सब से बढ़ कर महत्वपूर्ण कृत्य अर्जुन की रक्षा करना है। मुझे श्रीकृष्ण की चिन्ता इस लिये नहीं कि, वे तो जगत्पति और दूसरों के भी रक्षक हैं। हे तात! उनसे लड़ने को, यदि तीनों लोक भी एकत्र हो कर आवें, तो भी वे अकेले ही उन सब को जीत सकते हैं। मेरी यह बात सर्वथा सत्य है। फिर उनके लिये धृतराष्ट्रनन्दन की इस तुच्छ निर्बल सेना को परास्त करना कोई बड़ी बात नहीं। किन्तु हे वार्ष्णेय! बहुत से योद्धाओं द्वारा पीड़ित होने पर अर्जुन मर सकता है। अतः इसीसे मैं खिन्न हो रहा हूँ। अर्जुन जैसे पुरुष की सहायता के लिये, मुझ जैसे पुरुष के अनुरोध करने पर तुम जैसे पुरुष को अवश्य जाना चाहिये। जिस रास्ते से अर्जुन गया है, उसी रास्ते से तुम भी चले जाओ। इन दिनों वृष्णिवीरों में दो पुरुष ही की अतिरथियों में गणना है। एक तो महाबली प्रद्युम्न और दूसरे जगत्प्रसिद्ध तुम। तुम अस्त्र-ज्ञान में नारायण तुल्य हो। तुम बल में बलराम के समान हो। तुम वीरता में अर्जुन की टक्कर के हो। हे सात्यकि! भीष्म और

तपोवन है, और गङ्गातट की भूमि सिद्धक्षेत्र है। हे राजन्! तीर्थयात्रा के इस सत्य महात्म्य को ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, सत्पुरुष, पुत्र मित्र, शिष्य और अपने सेवक वर्ग के कान में कहना चाहिये। यह तीर्थ-माहात्म्य, धनादि देने वाला, सर्वश्रेष्ठ, पुनीत करने वाला, स्वर्गप्रद, पुण्यमय, रमणीय, धर्ममय, महर्षियों द्वारा छिपाया हुआ और समस्त पापों को छुड़ाने वाला है। जो आदमी ब्राह्मणों के बीच इसे कहता है, वह पवित्र हो स्वर्गलोक पाता है। इन तीर्थों का कीर्तन स्वर्गप्रद, पुण्यमय, शत्रुनाशक, कल्याण-कारक, मेधा तथा बुद्धि का उत्पन्न करने वाला और श्रेष्ठ है। इसका नित्य श्रवण करने से अपुत्र को पुत्र, निर्धनी को धन, राजा को विजय, वैश्य को अर्थलाभ और शूद्र को मनोवाँछित फल मिलता है। ब्राह्मण यदि इसको नित्य पढ़े, तो वह विद्या में पारंगत होता है। जो पुरुष पवित्र हो इसे नित्य सुनता है, वह स्वर्गलोक पाता है और उसको अनेक पूर्वजन्मों का स्मरण हो आता है। हे भीष्म! मैंने तुमसे उन समस्त तीर्थों का माहात्म्य कहा जहाँ मनुष्य जा सकता है और जहाँ नहीं जा सकता। इनमें जो तीर्थ अगम्य हैं, उनमें मानसिक वृत्ति से जाना चाहिये। मेरे वर्णन किये हुए इन तीर्थों में साध्य, आदित्य, पवन, अश्विनीकुमार और देवसमान ऋषियों ने पुण्यप्राप्त करने की कामना से स्नान किये हैं। हे भीष्म! तुम भी आस्थावान् हो, श्रुतिस्मृति ग्रन्थों को देख और नियमानुसार समस्त इन्द्रियों को शुद्ध रख, तीर्थों में भ्रमण करो तथा पूर्वलक्षित पुण्य को बढ़ाओ। जो लोग शास्त्रों का अध्ययन करते हैं, वे ही सत्पुरुष इन तीर्थों में जाते हैं। आचारभ्रष्ट, अज्ञानी, अपवित्र, चोर और कुटिल बुद्धिवाले पुरुष, इन तीर्थों में स्नान नहीं कर सकते। तुम तो श्रेष्ठ व्रत करने वाले और धर्मार्थदर्शी हो। हे भीष्म! तुमने अपने धर्माचरण से पिता, पितामह, प्रपितामह, ब्रह्मादिक देवता और ऋषियों को तृप्त किया है। तुम्हें वसुलोक मिलेगा और संसार में तुम्हारी बड़ी कीर्ति होगी। इतनी कथा सुना कर, नारद जी बोले कि, हे राजा युधिष्ठिर! भगवान् पुलस्त्य जी

अर्जुन को सहायता देने की जो बात कही है-वह मैंने सुनी। हे राजन्! मैं आपकी बात नहीं टाल सकता। आपत्ति के समय, जो बात कहने का अधिकार आपको अर्जुन से है, वही बात आप मुझसे भी कह सकते हैं। अर्जुन के लिये अपने प्राण तक गँवा देना मैं उचित समझता हूँ। तिस पर आपका अनुरोध है। अतः मेरी ओर से इस युद्ध में तिल भर भी कमी न रहने पावेगी। हे राजेन्द्र! आपके आदेश को पा कर तो मैं देवताओं, असुरों तथा मनुष्यों सहित तीनों लोकों से भी लड़ सकता हूँ। फिर इस तुच्छ सेना को तो मैं गिनता ही क्या हूँ। आज मैं दुर्योधन की सेना में घुस कर लड़ूँगा और मैं आपसे सत्य कहता हूँ कि, मैं उसे जीतूँगा भी। हे राजन्! अस्त्र-विद्या विशारद अर्जुन के निकट सकुशल पहुँच और जयद्रथ के मारे जाने के बाद, मैं लौट कर आपके पास आऊँगा। किन्तु हे परन्तप! बुद्धिमान् श्रीकृष्ण और अर्जुन ने मुझे जो आज्ञा दे रखी है, उसे आपके सामने कह देना मुझे आवश्यक जान पड़ता है। अर्जुन ने समस्त सेना के बीच और श्रीकृष्ण के सामने बारंबार मुझसे यह कहा था—हे माधव! मैं जब तक उदार बुद्धि से जयद्रथ को मार कर न लौट आऊँ; तब तक तू सावधान रहना और युधिष्ठिर की रक्षा करना। हे महाबाहो! तेरे तथा महारथी प्रद्युम्न के ऊपर युधिष्ठिर की रक्षा का भार रख, मैं निश्चिन्त हो, जयद्रथ से लड़ने को जा सकता हूँ। कौरव पक्ष के योद्धाओं में सर्वश्रेष्ठ द्रोण तुमसे छिपे नहीं हैं। उन्होंने खूब सोच विचार कर, युधिष्ठिर को पकड़ने की प्रतिज्ञा की है। हे माधव! युद्ध के समय युधिष्ठिर को पकड़ लेने की द्रोण में सामर्थ्य भी है। अतः धर्मराज युधिष्ठिर की रक्षा का भार तुम्हें सौंप, मैं आज जयद्रथ का वध करने को जाता हूँ। हे माधव! यदि रण में द्रोणाचार्य ने बरजोरी युधिष्ठिर को न पकड़ पाया, तो मैं शीघ्र ही जयद्रथ का वध कर, तेरे पास लौटा आता हूँ। हे माधव! यदि आचार्य द्रोण ने पुरुषश्रेष्ठ युधिष्ठिर को पकड़ लिया, तो मैं जयद्रथ का वध न कर सकूँगा। साथ ही मैं तेरे ऊपर अप्रसन्न भी होऊँगा। यदि सत्यवादी पाण्डु-

पुत्र युधिष्ठिर पकड़ गये, तो मैं निश्चय ही युद्ध छोड़ वन में चला जाऊँगा। यदि द्रोण ने युधिष्ठिर को पकड़ लिया, तो अब तक का मेरा किया हुआ सब परिश्रम धूल में मिल जायगा। अतः हे माधव! तू विजय और यश प्राप्त करने तथा मेरे प्रसन्नार्थ युधिष्ठिर की रक्षा करना। द्रोणाचार्य से सर्वदा विपत्ति की आशङ्का होने ही से अर्जुन आपकी रक्षा का भार मुझे सौंप गये हैं। द्रोणाचार्य के पराक्रम का अनुभव मुझे तो नित्य ही हो रहा है। रुक्मिणीनन्दन प्रद्युम्न को छोड़ और कोई उनके सामने नहीं ठहर सकता। अर्जुन का विश्वास है कि, मुझमें द्रोण का सामना करने की शक्ति है। अतः मैं अपने गुरु की आज्ञा और आत्मा के विरुद्ध कार्य कैसे कर सकता हूँ? हे राजन्! मेरे जाते ही अभेद्य कवचधारी द्रोण तुरन्त आपको पकड़ लेंगे और आपको वैसे ही नचावेंगे जैसे बालक चिड़िया को पकड़, उसे नचाते हैं। यदि इस समय मकरध्वज धनुर्धर श्रीकृष्णनन्दन प्रद्युम्न यहाँ होते, तो मैं आपकी रक्षा का कार्य उसे सौंप सकता था। क्योंकि वह भी आपकी रक्षा, अर्जुन की तरह ही करता। किन्तु वह यहाँ नहीं है और जब मैं भी चला जाऊँगा; तब आपकी रक्षा कौन करेगा। क्या आप अपनी रक्षा का प्रबन्ध स्वयं कर सकते हैं? मेरी अनुपस्थिति में द्रोण से टक्कर लेने वाला योद्धा यहाँ कौन है? हे राजन्! आप अर्जुन की ओर से बेखटके रहें। उन्हें शत्रु से तिल बराबर भी भय नहीं है। ये जो सौवीर और सिन्धु देश के योद्धा तथा कर्ण आदि अन्य महारथी हैं, ये सब क्रुद्ध हुए अर्जुन की सोलहवीं कला के भी बराबर नहीं हैं। हे राजन्! यदि सारी पृथिवी के राक्षस, देवता, मनुष्य, दानव, किन्नर और महोरग एकत्र हो अर्जुन को मारना चाहें, तो भी ये सब अर्जुन का बाल भी बाँका नहीं कर सकते। इन बातों पर विचार कर आप अर्जुन की ओर से चिन्ता न करें। जहाँ श्रीकृष्ण और अर्जुन हैं वहाँ चिन्ता ही किस बात की है। वहाँ कोई विघ्न बाधा आ ही नहीं सकती। आप ज़रा अपने भाई अर्जुन के दैवबल, अस्त्रनैपुण्य, रोष, शस्त्रज्ञान, कृतज्ञता एवं अनुकम्पा की ओर तो ध्यान दें।

हे राजन्! आप स्मरण रखें—मेरे पीठ फेरते ही द्रोण बड़े बड़े अद्भुत अस्त्रों का प्रयोग करेंगे। आपको मालूम होना चाहिये कि, द्रोण आपको पकड़ कर, अपनी प्रतिज्ञा पूर्ण करने के लिये बड़े उतावले हो रहे हैं। अतः सर्वप्रथम आपको अपनी रक्षा का प्रयत्न करना चाहिये। यदि मैं चला गया तो फिर आपकी रक्षा कौन करेगा? आपकी रक्षा के लिये मैं किस पर विश्वास कर यहाँ से चला जाऊँ। हे राजन्! आप सच मानें—मैं आपकी रक्षा का भार किसी मातबर वीर को सौंपे बिना, यहाँ से हिलूँगा भी नहीं, मेरी इन बातों को आप भली भाँति सोच समझ लें। फिर आपको जो परम कल्याणप्रद जान पड़े, उसे करने की मुझे आज्ञा दें।

इसे सुन युधिष्ठिर बोले—हे सात्यकि! तुम्हारा कथन बिल्कुल ठीक है, किन्तु क्या करूँ अर्जुन की चिन्ता मेरे मन से दूर नहीं होती। मैं अपनी रक्षा अपने आप कर लूँगा। मैं तुम्हें आज्ञा देता हूँ कि, जहाँ अर्जुन हो वहाँ तुम शीघ्र जाओ। मैंने अपने मन में बुद्धिपुरस्सर विचार कर देखा कि, सात्यकि को अपने पास रखना ठीक है अथवा अर्जुन के निकट भेजना। अन्त में मेरी बुद्धि ने यही निर्णय किया है कि, तुम्हारा अर्जुन के निकट जाना ही उचित है। अतः अब तुम एक क्षण भी यहाँ न ठहर कर, अर्जुन के पास पहुँचो। मेरी रक्षा महाबली भीम कर लेंगे। फिर अपने भाइयों सहित धृष्टद्युम्न, अन्य महाबलवान राजागण तथा द्रौपदी के पाँचों पुत्र मेरी रक्षा के लिये यहाँ हैं। पाँचों केकय भाई, घटोत्कच राक्षस, राजा विराट और द्रुपद, महारथी शिखण्डी, बलवान धृष्टकेतु, मामा कुन्तिभोज, नकुल, सहदेव और सृञ्जयों सहित पाञ्चाल—इतने लोग तो मेरी रक्षा के लिये यहाँ हैं। यदि द्रोण और कृतवर्मा ससैन्य चढ़ आवें, तो भी वे मुझे पकड़ न सकेंगे। द्रोण के लिये तो धृष्टद्युम्न ही पर्याप्त है। वह उन्हें वैसे ही रोकेगा, जैसे तट समुद्र को रोकता है। जहाँ धृष्टद्युम्न खड़ा होगा, वहाँ शत्रु सेना को परास्त नहीं कर सकते। सात्यकि क्या तुम यह बात भूल गये कि कवच, बाण खड्ग, धनुष तथा श्रेष्ठ आभूषणों

महित धृष्टद्युम्न, आचार्य द्रोण का नाश करने ही के लिये तो उत्पन्न हुआ है। अतएव हे सात्यकि! तुम इन पर विश्वास रख और निश्चिन्त हो, अर्जुन के पास जाओ। मेरी ज़रा भी चिन्ता मत करो। धृष्टद्युम्न क्रुद्ध द्रोण को रोक लेगा।

एक सौ बारह का अध्याय

सात्यकि का शत्रुसैन्य में प्रवेश

सञ्जय ने कहा—हे धृतराष्ट्र! युधिष्ठिर के इन वचनों को सुन सात्यकि ने मन ही मन सोचा, यदि मैं धर्मराज को छोड़ जाता हूँ तो अर्जुन मेरे ऊपर अप्रसन्न होंगे। साथ ही यदि मैं अर्जुन की सहायता के लिये नहीं जाता, तो लोग मुझे डरपोंक समझेंगे और जगत् में मेरी निन्दा होगी। इस प्रकार विचार सात्यकि ने युधिष्ठिर से कहा—हे राजन्! यदि आपको निश्चय विश्वास है कि, आपकी रक्षा का समुचित प्रबन्ध हो जायगा, तो आपका मङ्गल हो, मैं आपके आदेशानुसार अर्जुन के निकट जाता हूँ। राजन्! साथ ही यह मैं आपसे सत्य सत्य कहता हूँ इस त्रिलोकी में अर्जुन से बढ़ कर प्यारा मुझे और कोई नहीं है। हे मानद! मैं आपकी आज्ञा से अर्जुन के पास जाता हूँ। आपके लिये कोई भी काम क्यों न हो मैं नाहीं नहीं कर सकता। क्योंकि अर्जुन की आज्ञा मेरे लिये शिरोधार्य है, और आपका कथन उससे भी अधिक मुझे मान्य है। हे राजपुङ्गव! श्रीकृष्ण और अर्जुन आपके हितसाधन में संलग्न हैं और आप मुझे उनके हितसाधन में संलग्न हुआ जानिये। आपके आदेशानुसार मैं इस दुर्भेद्य सैन्य को भेद कर, अर्जुन के निकट जाता हूँ। जैसे नक्र समुद्र में घुसता है वैसे ही मैं द्रोण की सेना में घुस जयद्रथ के पास पहुँचूगा। मैं वहाँ जा अर्जुन से त्रस्त जयद्रथ, अश्वत्थामा, कर्ण और कृपाचार्य से सुरक्षित खड़ा होऊँगा। हे राजन्! यह जगह यहाँ से बारह कोस की दूरी पर है। तब भी मैं अपने मन को

दृढ़ कर जयद्रथ के मारे जाने के पूर्व ही अर्जुन के निकट जा पहुँचूगा। हे राजन्! ऐसा कदाचित् ही कोई पुरुष हो जो गुरु के आदेश बिना युद्ध करे। फिर गुरु की आज्ञा होने पर मुझ जैसा पुरुष तो युद्ध किये बिना रह ही कैसे सकता है? हे राजन्! मुझे जहाँ जाना है, वह स्थान मुझे भली-भाँति मालूम है। मैं वहाँ पहुँच कर, हल, शक्ति, गदा, प्रास, ढाल, खड्ग, ऋष्टि, तोमर, बाण तथा अन्य अस्त्रों से परिपूर्ण सैन्यरूपी सागर को अपने बलबूते मथ डालूँगा। हे राजन्! आपके सामने जो हज़ारों हाथियों की सेना देख पड़ती है और जिसके हाथी अंजन जाति के होने से बड़े पराक्रमी हैं और जिनके शरीर मेघों की तरह विशाल हैं तथा जो मेघों की जलवृष्टि की तरह मद टपका रहे हैं—उन पर बैठे युद्धकुशल म्लेच्छ महावत, जब उनको आगे बढ़ाते हैं, तब वे कभी पीछे को पैर नहीं रखते। हे राजन्! ये युद्ध में जान से मारे भले ही जाँय; किन्तु हार कर पीछे हटना तो जानते ही नहीं। सामने खड़े ये हज़ारों रथी राजकुमार, जो सुवर्ण के रथों पर सवार हैं, अस्त्र चलाने तथा रथ और हाथियों पर चढ़ने में बड़े पटु हैं। ये सब धनुर्वेद के पारदर्शी हैं, मुष्टियुद्ध में चतुर हैं और गदायुद्ध की विशेषताएँ भी जानते हैं। ये लोग क्या मल्ल युद्ध, क्या खड्गयुद्ध और क्या सम्पात युद्ध—सब प्रकार के युद्धों में चतुर हैं। ये सब शिक्षित हैं; किन्तु आपस में स्पर्धा रखते हैं। समर में विजयी होने की इन सब की इच्छा है। इन्हें अस्त्रविद्या की शिक्षा कर्ण ने दी है। ये दुःशासन के सेनापतित्व में काम करते हैं। इन वीरों की प्रशंसा श्रीकृष्ण भी करते हैं। ये सब कर्ण के हितैषी और उसके आज्ञाकारी हैं। कर्ण के कहने से ये लोग अर्जुन से आज नहीं लड़े—अतः ये सब दृढ़ कवचधारी और धनुर्धर राजकुमार अभी तक ज़रा भी न तो शान्त हुए और न उद्विग्न ही हुए हैं। किन्तु दुःशासन के आदेश से ये सब मुझसे लड़ने को तैयार हैं। हे राजन्! प्रथम मैं इन्हींको नष्ट करूँगा। तदनन्तर आगे अर्जुन की ओर बढ़ूँगा। जिन सुसज्जित कवचधारी सात सौ गजों पर भील लोग सवार हैं, वे वे हैं, जिन्हें किरातराज ने अर्जुन को भेंट

में दिया था। यह उस समय दिये थे; जब अर्जुन ने एक बार सङ्कट में फँसे हुए किरातराज की प्राणरक्षा की थी। वे एक समय आपके अधीन थे; किन्तु समय के फेर से आज वे आपका सामना करने को डटे हैं। इन हाथियों के महावत युद्धदुर्मद, हस्ति-विद्या-विशारद तथा अग्निवंशी हैं। ये रण में अजेय हैं। किन्तु अर्जुन युद्ध में इन्हें परास्त कर चुके हैं। तथापि दुर्योधन के अधीनस्थ होने से ये मुझसे लड़ने को तैयार हैं। अतः मैं उन किरातों को बाणों से मार कर, जयद्रथ के वध में संलग्न अर्जुन के निकट जाऊँगा। अञ्जन-कुल-सम्भूत ये सब गज बड़े हठी एवं शिक्षित हैं। देखिये उनके गण्डस्थलों से मद चू रहा है। वे सब सुवर्ण कवचों से भूषित हैं। वे अपने लक्ष्य पर फौरन जा पहुँचते हैं। युद्ध में वे सब ऐरावत हाथी की तरह काम करते हैं। इनके ऊपर हिमालयवासी दस्युजाति के उग्र स्वभाव वाले योद्धा बैठे हैं, जो लोहे के कवच धारण किये हुए हैं। इनमें से अनेक की उत्पत्ति गौओं से और बहुत की वानरियों से और बहुत की स्त्रियों से हुई है। ये सब वर्णसङ्कर हैं। इनकी सेना दूर से वैसी ही जान पड़ती है, जैसे हिमालय के ऊपर एकत्र हुई धूमराशि। काल के वश में पड़े दुर्योधन ने इस सेना को एकत्र किया है। कृपाचार्य, सोमदत्त का पुत्र वाल्हीक, महारथी द्रोण, जयद्रथ और कर्ण को एकत्र कर तथा पाण्डवों का अपमान करता हुआ दुर्योधन, अपने को कृतार्थ मानता है। हे राजन्! भले ही वे मन के समान वेगवान हों क्यों न हों, किन्तु मेरे बाणों के आगे पड़ वे जीवित नहीं रह सकेंगे। पराये बल पर उछल कूद मचाने वाले दुर्योधन द्वारा उत्तेजित किये हुए वे सब यदि भाग न गये, तो मेरी बाणवृष्टि से पीड़ित हो, वे नाश को प्राप्त होंगे।

हे राजन्! ये जो सुवर्णध्वजधारी दिखलायी पड़ते हैं और जो बड़ी कठिनाई से पीछे हटाये जाने योग्य हैं—कदाचित् आपको मालूम हो—ये हैं काम्बोज के शूर योद्धा जो युद्धविद्या एवं धनुर्वेद के पूर्ण ज्ञाता हैं। ये आपस में मिलजुल कर रहते हैं और परस्पर हितैषी भी हैं। हे भारत! कौरव वीरों की अधीनता में रहने वाली कुछ अक्षौहिणी सेनाएँ भी मेरा

सामना करने को तैयार खड़ी हैं। देखिये, कैसी सावधानी से वे सेनाएँ मेरी ओर बढ़ती चली आ रही हैं। जैसे अग्नि तृण समूह को भस्म करे, वैसे ही मैं इन सब को जला कर नष्ट कर डालूँगा। हे राजन्! अतः आप मेरे रथ में बाणों से भरे बहुत से तरकस तथा अन्य रथोपयोगी सामग्री रखवा दें। इस युद्ध में नाना प्रकार के आयुधों की आवश्यकता पड़ेगी—अतः इन सब का रथ में रहना आवश्यक है। आचार्यों के मतानुसार इस युद्ध में निर्दिष्ट परिमाण से पचगुनी सामग्री रहनी आवश्यक है। मैं विषैले सर्पों के समान बाणों से काम्बोजों से लड़ूँगा। राजा दुर्योधन से सदैव सत्कार प्राप्त तथा उसके हितैषी एवं प्रहार करने में निपुण विषधर सर्प के समान महाक्रूर किरातों के साथ मुझे लड़ना पड़ेगा। इन्द्र के समान पराक्रमी एवं धधकती हुई आग की तरह तेजस्वी महाबलवान् शक देशीय तथा अन्य महापराक्रमी, महाभयानक युद्ध करने वाले योद्धाओं का सामना मुझे करना पड़ेगा। अतः मेरा सारथी मेरे घोड़ों को खोल घोड़ों को जल पिलावे और बारंबार पृथिवी पर लुटा कर, उनकी थकावट दूर कर ले। तदनन्तर उन्हें मेरे रथ में जोते।

सञ्जय ने कहा—हे धृतराष्ट्र! सात्यकि के कथनानुसार, युधिष्ठिर ने उसके रथ में तूणीर और युद्धोपयोगी उपस्कर रखवा दिये। साईसों ने घोड़ों को रथ से खोल, उन्हें उत्तम पीने योग्य मद्यपान करवाया। फिर सब तरह का तथा लुटा कर उन्हें स्नान कराये। फिर दाना खिला और पानी पिला तथा उत्तम आभूषणों से अलङ्कृत कर, वे शिक्षित तथा उत्तम जाति के सफेद रङ्ग वाले घोड़े रथ में जोते गये। सात्यकि के रथ में सोने के हार लटक रहे थे। उस पर सिंह की मूर्ति बनी हुई थी। मणि और मूँगों से जड़ी एक बड़ी ध्वजा उसमें लगी थी। उस पर सुवर्ण की लड़ें लटक रही थीं। सफेद बादल के समान पताकाओं से वह रथ अलङ्कृत था। सोने के मोटे दण्ड की ध्वजा वाले और बहुत से शस्त्रों से परिपूर्ण उस रथ में दारुक के अनुज और सात्यकि के प्रियमित्र सारथि ने, सात्यकि के सामने रथ ला खड़ा

किया। सात्यकि ने स्नान कर, पवित्र हो और दूब लेकर एक सहस्र स्नातक ब्राह्मणों को स्वर्ण मुद्राएँ दीं। ब्राह्मणों ने सात्यकि को आशीर्वाद दिया। तदनन्तर सात्यकि ने किरात देशीय मद्य पान किया। इससे उसके नेत्र मद-माते तथा लाल लाल हो गये और वह दुगुना तेजस्वी तथा अग्नि जैसा दुतिमान देख पड़ने लगा। तदनन्तर अत्यन्त हर्षित हो उसने माङ्गलिक दर्पण को स्पर्श कर के, उसमें अपना मुख देखा। फिर ब्राह्मणों के मुख से स्वस्ति-वाचन के वैदिक मन्त्रों को सुनता हुआ और कन्याओं की खीलों, सुगन्ध द्रव्य और पुष्पों से अभिनन्दन प्राप्त करता हुआ, वह हाथ जोड़ कर युधिष्ठिर के पास गया। उनके चरणों में सीस नवा उसने उन्हें प्रणाम किया। युधिष्ठिर ने उसका मस्तक सूँघा। तब धनुष बाण गोद में रख सात्यकि उस विशाल रथ पर सवार हो गया।

[नोट—यह सब घटना दोपहर ढल चुकने के बाद की है। उसी समय धर्मराज ने सात्यकि को तुरन्त जाने की आज्ञा दी थी। तुरन्त जाने की आज्ञा होते हुए भी सात्यकि का प्रथम तो धर्मराज को शत्रुसैन्य का प्राबल्य दिखाने में बहुत समय लगाने तथा फिर स्वीकृत कार्य की भयङ्करता दिखाने के दो उद्देश्य जान पड़ते हैं। प्रथम तो यह कि, सात्यकि को अर्जुन की आज्ञा का सर्वोपरि ख्याल था। अतः उसने वाक्छल से जान बूझ कर इस लिये विलम्ब किया कि, इस बीच में घटनाचक्र बदले और अर्जुन का समाचार आ जाय जिससे उसको युधिष्ठिर को छोड़ कर जाना न पड़े। दूसरा उद्देश्य यह भी हो सकता है कि, युधिष्ठिर के मन पर शत्रुसैन्य का प्राबल्य अङ्कित कर, उन्हींके मुख से उनकी पूर्वाज्ञा को रद करवा देना। सचमुच युधिष्ठिर सुयोग्य सेना-पति न थे। वे कल ही इसी प्रकार अल्पवयस्क अभिमन्यु को सङ्कट में डाल मरवा चुके थे। आज वही भूल वे सात्यकि को अकेले, ऐसे भारी सङ्कट के काम पर नियुक्त कर, दुहरा रहे थे। सात्यकि का उद्देश्य एक यह भी था कि, उन्हें समय रहते उनकी भूल, शत्रुप्राबल्य दिखला कर समझा दिया जाय, पर भावुक युधिष्ठिर अपने कथन का आग्रह त्यागने वाले व्यक्ति न थे।]

तुरन्त ही पवन जैसी तेज़ चाल चलने वाले हृष्ट पुष्ट अजेय सिन्धु देशी घोड़े सात्यकि के जयशील रथ को ले उड़े। भीमसेन भी युधिष्ठिर को प्रणाम कर और उनसे आशीर्वाद पा, सात्यकि के साथ हो लिये। उन दोनों शत्रुनाशकों को आपकी सेना में प्रवेश करने के लिये उत्सुक देख, द्रोणादि आपके योद्धा भी तैयार हो गये। किन्तु जब महावीर सात्यकि ने कवचादि धारण किये हुए युद्ध के लिये तैयार भीम को अपने पीछे आते देखा, तब हर्ष से पुलकित हो, सात्यकि ने उनका अभिनन्दन किया और कहा—हे वीर! आप महाराज युधिष्ठिर की रक्षा कीजिये। क्योंकि अन्य सब कार्यों से यह कार्य आपके लिये सब से बढ़ कर महत्वपूर्ण है। मैं इन काल के गाल में अटके हुए सैनिकों की श्रेणी भङ्ग कर, इसके भीतर प्रवेश करूँगा। इस समय और आगे भी राजा की रक्षा करनी परमावश्यक बात है। हे अरिन्दम! मुझे आपका पराक्रम विदित है और आपसे मेरा पराक्रम भी छिपा नहीं है। अतएव हे भीम! यदि आप मेरा प्रिय काम करना चाहते हों, तो लौट जाइये।

जब सात्यकि ने इस प्रकार कहा, तब भीमसेन ने उत्तर देते हुए उससे यह कहा—हे पुरुषोत्तम! मैं महाराज युधिष्ठिर की रक्षा करता हूँ। तुम जा कर अपना कार्य सिद्ध करो। इस पर सात्यकि ने पुनः भीमसेन से यह कहा—हे भीम! तुम शीघ्र लौट कर जाओ। तुम मेरे प्रीतिपात्र, अनुरक्त और वशवर्ती हुए हो। अर्थात् तुमने मेरी बात मान ली है। सो यह एक शुभसूचक शकुन ही हुआ है। इसके अतिरिक्त अन्य जो शुभशकुन हो रहे हैं, उनसे स्पष्ट जान पड़ता है कि, मेरा विजय निश्चय होगा और अर्जुन द्वारा पापी जयद्रथ के मारे जाने पर मैं धर्मात्मा महाराज युधिष्ठिर के दर्शन पुनः कर सकूँगा।

यह कह और भीम को वहीं छोड़, महायशस्वी सात्यकि ने आपकी सेना की ओर वैसे ही देखा, जैसे सिंह मृगसमूह की ओर निहारता है। सात्यकि को सैन्य भङ्ग कर भीतर घुसने को उद्यत देख, हे राजन्! आपकी

सेना मुग्ध हो काँपने लगी। तदनन्तर धर्मराज के आदेशानुसार अर्जुन को देखने की कामना से, सात्यकि ने सहसा आपकी सेना में प्रवेश किया।

एक सौ तेरह का अध्याय

सात्यकि और कृतवर्मा की टक्कर

सञ्जय ने कहा—हे धृतराष्ट्र! जब लड़ने के लिये सात्यकि आपकी सेना की ओर जाने लगा; तब धर्मराज अपनी सेना में हो, सात्यकि के पीछे गमन करते हुए द्रोण को रोकने के लिये रवाना हुए। उस समय वीरवर धृष्टद्युम्न ने एवं राजा वसुदान ने पाण्डवों की सेना को पुकार कर यह आज्ञा दी कि बढ़ो बढ़ो, प्रहार करो, प्रहार करो। ऐसी फुर्ती से चलो कि, युद्धदुर्मद सात्यकि सकुशल शत्रुसैन्य में घुस जाय। क्योंकि वहाँ अनेक महारथी हैं, जो सात्यकि का सामना करेंगे। यह कह, वे महारथी हमारी सेना पर टूट पड़े। हम लोगों ने भी उन पर आक्रमण किया। उस समय उस ओर जहाँ सात्यकि का रथ था बड़ा हो हल्ला मचा। हे राजन्! सात्यकि ने मारे बाणों के आपकी सेना के सैकड़ों टुकड़े कर दिये। अतः आपकी सेना विश्रृङ्खलित हो भागी। तब शिनिनन्दन सात्यकि ने सैन्यव्यूह के मुख पर खड़े हुए सात महारथियों का वध किया। उनके अतिरिक्त उसने अनेक वीर राजाओं को अपने अग्नि के समान स्पर्श वाले बाणों के प्रहार से यमलोक को भेज दिया। सात्यकि इस युद्ध में एक बाण से सौ और सौ बाणों से एक को विद्ध कर रहा था। सात्यकि ने गजारोहियों, गजों, अश्वारोहियों, अश्वों तथा सारथियों सहित रथियों का संहार वैसे ही किया, जैसे शिव जी पशुओं का संहार करते हैं। जब सात्यकि इस प्रकार बाणों की वर्षा कर रहा था, हे राजन्! तब आपकी सेना का कोई भी योद्धा उसका सामना न कर सका। दीर्घबाहु सात्यकि

ने बाणों के ऐसे प्रहार किये कि, आपके योद्धा उसे देखते ही भागने लगे। यद्यपि सात्यकि एक ही था; किन्तु अपने तेज और पराक्रम से आपके योद्धाओं को बहुरूप से दिखलायी पड़ता था अर्थात् वे लोग भाग कर जिधर जाते उधर ही उन्हें सात्यकि सामने देख पड़ता था। हे राजन्! देखते ही देखते रणभूमि भग्न जुओं, भग्नरथों, भग्नपहियों, टूटे छत्रों, टूटी ध्वजाओं तथा पताकाओं, सुवर्ण के शिरस्त्राणों, योद्धाओं की चन्दनचर्चित एवं भूषणों से भूषित भुजाओं, सर्पवत् जंघाओं तथा हाथी की कटी हुई सूँड़ों से पट गयी। बैलों जैसे बड़े बड़े नेत्रों वाले मनुष्यों के सुन्दर कुण्डल पहिने और चन्द्रमा के समान शोभायमान कट कर गिरे हुए सिरों से पृथिवी बहुत ही प्रकाशित सी होने लगी। पर्वतों के समान विशाल डीलडौल के हाथी कटे हुए पड़े थे। अतः मर कर गिरे हुए हाथियों से रणभूमि की शोभा वैसी ही हो रही थी, जैसी पृथिवी की शोभा पर्वतों से होती है। महाबाहु सात्यकि के हाथ से प्राण रहित हो पृथिवी पर पड़े हुए घोड़े सुनहली लरों की रासों तथा लगामों से और तरह तरह के कवचों से विचित्र शोभा को प्राप्त हो रहे थे। इस प्रकार सात्यकि आपके अनेक योद्धाओं का संहार करता हुआ आप की सेना में घुस गया। तदनन्तर जिस रास्ते से अर्जुन गये थे, उसी मार्ग से सात्यकि ने भी जाना चाहा। इतने में द्रोणाचार्य ने आगे आ उसे आगे न जाने दिया। किन्तु क्षुब्ध जलाशय, तट से टकरा कर, जैसे पीछे को नहीं हटता, वैसे ही रोष में भरा सात्यकि द्रोणाचार्य द्वारा मार्ग अवरुद्ध किये जाने पर भी पीछे को न हटा। महारथी सात्यकि को रोक द्रोण ने उसके पाँच मर्मभेदी बाण मार, उसे विद्ध किया। तब सात्यकि ने भी सुवर्ण पुंख और सान पर पैनाये हुए चमचमाते, कङ्क और मयूर पंखों से युक्त सात बाण द्रोण के मारे और उन्हें विद्ध किया। इस पर द्रोण ने सात्यकि के सारथि तथा घोड़ों के छः बाण मारे। यह सात्यकि को बड़ा असह्य जान पड़ा। उसने सिंहनाद कर, द्रोण के पहले दस, फिर छः और फिर आठ बाण मारे। इतने बाण मार कर, फिर सात्यकि ने दस बाण मार, द्रोणाचार्य को बाणस

कर दिया। उसने एक बाण मार कर द्रोण की ध्वजा काटी। इस पर द्रोण ने टीडियों की तरह बाणवृष्टि कर, सात्यकि को उसके रथ और ध्वजा सहित आच्छादित कर दिया। इस बाणवृष्टि से सात्यकि विचलित न हुआ और उसने भी बाणवृष्टि कर द्रोणाचार्य को ढक दिया। उस समय आचार्य द्रोण ने उच्चस्वर से सात्यकि से कहा—अरे तेरा गुरु भीरु की तरह रणभूमि से भाग गया। जब मैं उससे युद्ध कर रहा था, तब वह रण छोड़ दक्खिन की ओर भाग गया। सो हे सात्यकि! यदि तूने भी अपने गुरु का अनुसरण न किया तो आज तू जीवित न लौटेगा। उत्तर में सात्यकि ने कहा—हे ब्रह्मन्! आपका मङ्गल हो। मैं धर्मराज के आदेशानुसार अर्जुन के समीप जा रहा हूँ। अतः यदि समय व्यर्थ न जाय तो ठीक है। शिष्य का धर्म है कि, वह गुरु का अनुसरण करे। अतः जिस पथ से मेरे गुरु गये हैं, उसीसे मैं भी शीघ्रता से जाता हूँ।

सञ्जय ने कहा—हे राजन्! सात्यकि यह कह और द्रोणाचार्य को वहीं छोड़, झट आगे को चल दिया। साथ ही उसने सारथि से कहा—द्रोण मुझे रोकने के लिये यत्न करेंगे, किन्तु तू रुकना मत, रथ को आगे ही हाँकना। सामने जो सेना देख पड़ती है, यह अवन्ति देश के अधीश्वर की है। उसके पीछे जो विशाल सैन्यव्यूह है, वह दाक्षिणात्य नरेशों का है। उसके पीछे जो विशालवाहिनी खड़ी है, वह वाल्हीक देश के राजाओं की है। वाल्हीक देश के राजाओं के सन्निकट जो विशाल वाहिनी है, वह कर्ण की अधीनस्थ सेना है। देख न, ये सेनाएँ एक दूसरे से हट कर खड़ी हैं। किन्तु मुझे रोकने के समय यह परस्पर आश्रय ले, दृढ़ता से मार्ग रोक कर खड़ी होंगी और रणभूमि न छोड़ेंगी! अतः हे सारथे! तू हर्षित पुरुष की तरह रथ को सेनाओं के बीच से निकाल ले चल। जिस वाहिनी में वाल्हीक देशीय योद्धा विविध प्रकार के शस्त्रों को उठाये खड़े हैं और जहाँ पर बहुत से दाक्षिणात्य सेनापति स्थित हैं और जहाँ देश देशान्तर से आये हुए पैदल योद्धा, अश्वारोही और रथी खड़े हैं एवं जहाँ पर कर्ण की विशाल सेना

खड़ी है, उन्हीं सेनाओं के बीच से मेरा रथ हाँक कर ले चल। ब्राह्मण द्रोण को छोड़। उधर जब द्रोण ने देखा कि, सात्यकि न रुक कर आगे बढ़ा चला जाता है, तब वे अतीव क्रुद्ध हुए और अगणित बाणों को बरसाते हुए वे सात्यकि के पीछे दौड़े। किन्तु सात्यकि लौटा नहीं। वह अपने पैने बाणों से कर्ण की सेना को विद्ध करता हुआ, कौरवों के असंख्य सैनिकों के बीच जा पहुँचा। सात्यकि के वहाँ पहुँचते ही कौरवों की सेना में भगदड़ पड़ी। यह देख क्रोधी कृतवर्मा ने सात्यकि को घेर कर उस पर आक्रमण किया। तब सात्यकि ने कृतवर्मा के छः बाण मारे, फिर तुरन्त चार बाण मार, कृतवर्मा के चारों अश्व मार डाले। फिर सात्यकि ने नतपर्व सोलह बाण कृतवर्मा की छाती में मारे। हे राजन्! सात्यकि के पैने बाणों से घायल हो, कृतवर्मा क्षुब्ध हो गया और उसने धनुष को तान कर, तिरछा जाने वाला वत्सदन्त बाण सात्यकि की छाती में मारा। वह बाण सात्यकि के कवच और शरीर को फोड़, रक्त सहित भूमि में धस गया। तदनन्तर कृतवर्मा ने अनेक बाण चला, सात्यकि के धनुष और बाणों को काटा। फिर दस पैने बाण पुनः सात्यकि की छाती में मारे। इस पर सात्यकि ने शक्ति का प्रहार कर कृतवर्मा की दहिनी भुजा घायल कर डाली और एक नया धनुष उठा इतने बाण छोड़े कि, रथ सहित कृतवर्मा बाणों से ढक गया। हृदीकनन्दन कृतवर्मा को बाणों से आच्छादित कर, सात्यकि ने भल्ल बाण से कृतवर्मा के सारथि का सिर उड़ा दिया। सारथि विशाल रथ से ढुलक कर भूमि पर गिर पड़ा। सारथि के बिना घोड़े भड़के और जी तुड़ा भागे। उस समय भोजराज कृतवर्मा घबड़ाया और स्वयं उसने किसी तरह घोड़ों को अपने काबू में किया। साथ ही वह धनुष ले, खड़ा हुआ। उसके इस साहस को देख, सैनिकों ने प्रशंसा की। कुछ ही देर बाद कृतवर्मा सावधान हो गया और निर्भय हो तथा शत्रुओं को डराता हुआ वह स्वयं घोड़े भी हाँकने लगा। इतने में सात्यकि, भोजराज कृतवर्मा की सेना को पार कर गया। तब कृतवर्मा ने भीमसेन पर आक्रमण किया। उधर सात्यकि

रथ को वेग से हँकवा कर काम्बोजों की विशाल वाहिनी में घुसा, वहाँ भी बड़े बड़े योद्धाओं ने उसे रोक दिया। यद्यपि सात्यकि बड़ा पराक्रमी था, तथापि उसकी गति रुक गयी। इतने में अपनी सेना का भार कृतवर्मा को सौंप, द्रोण स्वयं लड़ने के लिये सात्यकि के पीछे दौड़े। उनको सात्यकि के पीछे जाते देख, पाण्डवों के बड़े बड़े योद्धाओं ने हर्षित हो, द्रोण को रोकना चाहा। किन्तु दूसरी ओर भीम तथा पाञ्चाल देशीय राजाओं का कृतवर्मा से युद्ध छिड़ा देख, वे उत्साहशून्य हो गये। क्योंकि कृतवर्मा ने उन सब को पीछे हटा दिया था। तो भी उन लोगों ने आगे बढ़ने का बड़ा उद्योग किया, किन्तु कृतवर्मा की बाणवृष्टि से वे एक प्रकार से अचेत से हो गये थे और बहुत देर तक परिश्रम करते करते उनके वाहन भी लस्त थे।

यह सब होते हुए भी पाण्डवों के पक्ष के वीर कृतवर्मा की सेना को परास्त करने की अभिलाषा से एवं आर्यपुरुषों की मर्यादा के लिये, मोर्चों पर डटे ही रहे—पीछे पैर न रखा।

एक सौ चौदह का अध्याय

कृतवर्मा की वीरता

धृतराष्ट्र ने पूँछा—हे सञ्जय! मेरी सेना में शूरता थी, वह समुचित रीति से संगठित थी और उसमें बड़ा बड़ा वीर थे। हमारी सेना के सैनिक सदा हमसे सत्कारित होते रहे थे—अतः उनका अनुराग भी हममें था। उसमें भीषण पराक्रम भी था। हमारी सेना में न तो अतिवृद्ध सैनिक थे और न बालक ही। न उसमें बड़े दुबले सैनिक थे और न स्थूलकाय ही, उसमें तो लंबे तड़ंगे और गठीली देहों वाले सैनिक थे। वे भी दृढ़ कवच पहिने हुए

और विविध शस्त्रों को धारण करने वाले थे तथा युद्धविद्या में कुशल थे। वे हाथी पर चढ़ने, उस पर से उतरने में, शत्रु पर आक्रमण करने में तथा खड्डे के स्थलों को बचा जाने में, शत्रु पर प्रहार करने में, शत्रु पर आक्रमण करने में तथा क्रमबद्ध हो पीछे हटने में कुशल थे। क्योंकि सैनिकों की परीक्षा ले कर और उनकी योग्यतानुसार उनका वेतन निर्द्धारित किया जाता था। तब वे भर्ती किये जाते थे। कोई भी सैनिक अनुनय विनय, किसी उपकार के बदले, अथवा बरजोरी पकड़ कर, भर्ती नहीं किया गया था। न कोई सैनिक बिना वेतन, बेगार में पकड़ कर सेना में भर्ती किया गया था। हमारी सेना में कुलीन तथा हृष्ट पुष्ट एवं सरल प्रकृति के सैनिक थे। हम उनका समय समय पर सत्कार भी करते थे। हमारी सेना में मनस्वी, यशस्वी और साहसी सैनिक थे।

हे तात! हमारी सेना में सेनापतियों के पदों पर, लोकपालों के समान पुण्यात्मा पुरुषश्रेष्ठ प्रधान पुरुष नियुक्त किये गये थे। अपने आप हमारे पक्ष में आये हुए और हमारे हितचिन्तक अनेक राजा लोग, अपने अधीनस्थ राजाओं तथा सैनिकों सहित हमारी सेना के सहायक थे। जैसे समुद्र नदियों से घिरा रहता है, वैसे ही इन राजाओं से मेरी सेना भी घिरी हुई थी। ये सब सेना पक्षरहित किन्तु पक्षियों जैसे घोड़ों, रथों और मदचूते मतवाले हाथियों से पूरित थी। हे सञ्जय! मेरी ऐसी श्रेष्ठ सेना हो कर भी जब समरभूमि में मारी जा रही है, तब इसका कारण प्रारब्ध को छोड़ और कहा ही क्या जा सकता है। अगणित योद्धाओं रूपी जल से भरी, भयङ्कर वाहनों रूपी तरङ्गों से युक्त, क्षेपणी, खड्ग, गदा, शक्ति, बाण और प्रासरूपी मत्स्यों से सम्पन्न, ध्वजाएँ, गहने और रत्नादिरूपी पत्थरों से परिपूर्ण, दौड़ते हुए अश्वरूपी पवन से कम्पित, द्रोणरूपी पाताल से गम्भीर, कृतवर्मारूपी बड़े बड़े ह्रदों वाले, जलसन्धरूपी भयङ्कर नक्रों से युक्त, कर्णरूपी चन्द्र से उदित, कौरव सैन्यरूपी महासागर को जब पाण्डवश्रेष्ठ अर्जुन और सात्यकि ने मथ डाला और वे उसके पार हो गये, तब मैं समझता हूँ कि, अब मेरी

सेना नहीं बचेगी। हे सञ्जय! जब महारथी अर्जुन और सात्यकि मेरी सेना में घुस, आगे जाने लगे और जब सिन्धुराज, गाण्डीव से छूटे बाणों के लक्ष्य बनाये गये, तब कालप्रेरित कौरवों ने क्या किया? उस अति दारुण समय में कौरवों को क्या सूझ पड़ा?

हे तात! मैं तो समझता हूँ उस समय कौरव कालग्रसित हो गये थे। यही कारण था कि, उनको जितना पराक्रम दिखलाना चाहिये था, उतना वे न दिखला सके। हे सञ्जय! मैंने अनेक महारथी योद्धाओं की परीक्षा ले कर यथोचित वेतन पर अपनी सेना में नौकर रखा था। बहुत से योद्धाओं को मधुर वचन कह कह कर सेना में भर्ती किया था। जहाँ तक मैं जानता हूँ, मेरी सेना में एक भी योद्धा ऐसा न था जिसका यथोचित सत्कार न किया गया हो, सब ही अपनी योग्यतानुसार वेतन पाते थे। किसी को न तो कम वेतन दिया जाता था और न बिना वेतन ही का कोई सैनिक था। हे सञ्जय! मैं, मेरे पुत्र और भाई बिरादरी सदा उन लोगों का यथाशक्ति दान मान और पदवी प्रदान द्वारा सम्मान बढ़ाया करते थे। तिस पर भी तू कहता है कि, सात्यकि और अर्जुन ज़रा भी घायल हुए बिना ही हमारी सेना को भेद कर निकल गये! क्या मेरी सेना का एक भी पुरुष उन्हें न रोक सका? हा! उन योद्धाओं को अर्जुन ने बात की बात में हरा दिया और सात्यकि ने उनको पीस डाला। इसे भाग्य की प्रतिकूलता के सिवाय और कह ही क्या सकते हैं? हे सञ्जय! युद्ध में जिसकी रक्षा की जाय और जो रक्षा करे, उन दोनों की गति समान होती है।

हे सञ्जय! जब अर्जुन, जयद्रथ के सामने जा खड़ा हुआ, तब मेरे मूढ़ पुत्र ने क्या किया? सात्यकि को निर्भीक हो, सेना में घुसते देख, दुर्योधन ने उस समय के लिये उपयोगी क्या काम किया? समस्त अस्त्रधारियों का तिरस्कार कर, अर्जुन और श्रीकृष्ण को सेना में प्रवेश करते देख, दुर्योधन ने समयोचित क्या कार्य किया? मैं तो समझता हूँ, दाशार्ह वंशी श्रीकृष्ण, और शिनिश्रेष्ठ सात्यकि को रथ में अर्जुन की सहायता के लिये

आया हुआ देख, दुर्योधन ने सिवाय रोने के और किया ही क्या होगा? जब अर्जुन और सात्यकि हमारी सेना को पार कर गये और कौरवपक्षीय योद्धा भाग गये, तब मेरी समझ में मेरे पुत्रों ने रोने के सिवाय और किया ही क्या होगा? मेरी समझ में—रथियों को भागते और बचे हुए रथियों को शत्रुओं से लड़ने में उत्साहशून्य हो भागने को तैयार देख, मेरे पुत्र शोकान्वित हुए होंगे। घोड़ों, हाथियों और रथों को छोड़ अपने हज़ारों वीरों को घबड़ा कर भागते देख, मेरे पुत्रों ने सिवाय रोने के और किया ही क्या होगा? अर्जुन के बाणों से विद्ध हुए महाकाय गजों को भागते, गिरते और मरे पड़े देख, मेरे पुत्रों ने शोक ही किया होगा। जब सात्यकि और अर्जुन के हाथ से असंख्य घोड़े मारे गये होंगे और बहुत से घायल हो, भागे होंगे; तब उन्हें देख मेरे पुत्र दुःखी ही हुए होंगे। जब मेरे पुत्रों ने पैदल सैनिकों को भागते हुए देखा होगा; तब वे अपनी जीत की आशा तो अवश्य ही त्याग बैठे होंगे और शोक करते होंगे। उन दोनों अजेय वीरों को बात की बात में द्रोण की सेना को अतिक्रम कर, जाते देख, मेरे पुत्र शोक करने लगे होंगे।

हे सञ्जय! श्रीकृष्ण, अर्जुन और सात्यकि के अपनी सेना में घुसने का समाचार पा, मैं किंकर्त्तव्य-विमूढ़ हो गया हूँ। अच्छा अब तुम यह बतलाओ कि, जब सात्यकि भोजराज की सेना को अतिक्रम कर, आगे बढ़ गया, तब कौरवों ने क्या किया? जब द्रोण ने पाण्डवों को आगे बढ़ने न दिया, तब उस स्थल पर कैसा युद्ध हुआ? द्रोण बड़े बलवान, अस्त्रविद्या-पारङ्गत और युद्धदुर्मद हैं और मन से अर्जुन के पक्षपाती हैं। अतः उनके सामने से अर्जुन का निकल जाना तो समझ में आ सकता है, किन्तु उनके जानी-दुश्मन पाञ्चालराज उन महाधनुर्धर द्रोण को कैसे अतिक्रम कर सके? उस समय अश्वत्थामा ने क्या किया? हे सञ्जय! यह भी मुझे बतला कि, सिन्धुराज जयद्रथ का वध करते समय अर्जुन ने किन उपायों से काम लिया था? तू युद्धवार्त्ता कहने में पटु है, अतः तू सब वृत्तान्त मुझे सुना।

सञ्जय ने कहा—हे धृतराष्ट्र! आपके ऊपर यह विपत्ति निज दोष ही से आयी है। अतः अब उसे तो आपको सहना ही पड़ेगा। साधारण जन की तरह शोक करना आपको शोभा नहीं देता। हे राजन्! पहले ही आपको आपके हितचिन्तक विदुर आदि ने समझाया था कि, आप पाण्डवों को वन में मत भेजिये। परन्तु उस समय आपने उनकी बात न सुनी। जो मनुष्य अपने हितचिन्तकों की बात सुनी अनसुनी कर देता है, उसके ऊपर घोर सङ्कट पड़े बिना नहीं रहता और उसे आपकी तरह ही पश्चात्ताप भी करना पड़ता है।

हे राजन्! पहले दाशार्हवंशी श्रीकृष्ण आपके सामने सन्धि का प्रस्ताव उपस्थित करने आये थे और उन्होंने सन्धि कर लेने के लिये आपसे अनेक प्रकार से अनुनय विनय भी की थी। किन्तु उस महायशस्वी पुरुष की प्रार्थना आपकी ओर से स्वीकृत न की गयी। हे राजन्! तदनन्तर आपकी बुद्धिहीनता, पुत्रों के प्रति पक्षपात, धर्म पर अश्रद्धा, पाण्डवों के प्रति आपका द्वेषभाव, मत्सरता और कुटिलता जान, श्रीकृष्ण इस समय इस महाघोर समर में पाण्डवों की ओर से उद्योग कर रहे हैं। आपकी दुष्ट नीति ही का यह दुष्ट परिणाम है कि, आपके बन्धु बान्धव और स्वजन नष्ट हो रहे हैं। आप अपना दोष दुर्योधन के मत्थे मत मढ़िये। आपने न तो आदि में और न मध्य ही में बुद्धिमत्ता से काम लिया। अतः अब पछताने से क्या होना जाना है। इस पराजय के आविष्कारक तो आप स्वयं ही हैं। अब जो आप कातर हो प्रलाप करते हैं, वह इस प्रकार भाव में अभाव मानने वाले बुद्धिमान पुरुष को वैसे ही शोभा नहीं देता, जैसे मुर्दे के गले में पड़ा फूलों का हार। आप तो सब प्रकार के लोकव्यवहार के जानकार हैं। अतः अब आप स्थिर हो, देवासुर-संग्राम जैसे कौरव पाण्डवों के भयङ्कर समर का विस्तृत वृत्तान्त सुनिये।

हे राजन्! सत्यपराक्रमी सात्यकि के आपकी सेना में घुस आने पर, भीमसेनादि पाण्डवों ने आपकी सेना पर आक्रमण किया था। उनको क्रुद्ध

को सहसा अपनी सेना पर आक्रमण करते देख, रथ में, एकाकी महारथी कृतवर्मा ने आगे बढ़ने से रोका। जैसे उमड़ कर आते हुए सागर को उसका तट आगे बढ़ने नहीं देता, वैसे ही कृतवर्मा ने युद्ध में पाण्डवों की सेना रोक दी। उस समय कृतवर्मा ने बड़े पुरुषार्थ एवं पराक्रम का काम किया। उसने चाहा कि, एकत्र हो सब पाण्डव उसे न दबा सकें। भीम ने तीन बाण मार कर कृतवर्मा को घायल किया और पाण्डवों को हर्षित करने के लिये शङ्ख-ध्वनि की। सहदेव ने बीस, युधिष्ठिर ने पाँच और नकुल ने सौ बाणों से कृतवर्मा को घायल कर दिया। द्रौपदी के पुत्रों ने तिहत्तर, घटोत्कच ने सात और धृष्टद्युम्न ने तीन बाण मार कर, कृतवर्मा को विद्ध किया। विराटराज और पाँचालराज द्रुपद ने कृतवर्मा के पाँच बाण मारे। शिखण्डी ने हँस कर, पाँच बाण मार, कृतवर्मा को घायल किया। फिर बीस बाण मार उसे बेध डाला। इस पर कृतवर्मा ने उन सब महारथियों के पाँच पाँच बाण मारे। उसने भीमसेन के सात बाण मार, उन्हें घायल किया और उनके रथ की ध्वजा और उनके हाथ का धनुष काट डाला। तदनन्तर महारथी कृतवर्मा ने भीमसेन के सामने जा उसकी छाती में सत्तर बाण कस कस कर मारे। इन बाणों के प्रहार से भीमसेन रथ में बैठा हुआ, भूचाल के समय डगमगाने वाले पर्वत की तरह डगमगाने लगा। भीमसेन की ऐसी दशा देख, धर्मराज आदि पाण्डव योद्धाओं ने बाणवृष्टि कर कृतवर्मा को पीड़ित कर डाला। भीमसेन को बचाने के लिये उन सब ने रथों के घेरे में कृतवर्मा को घेर लिया और वे उस पर बाण बरसाने लगे। कुछ देर बाद जब भीम सचेत हुआ, तब उसने सोने के डंडे वाली और वज्रसार लोहे के फल वाली एक बर्छी उठायी। फिर भीम ने बड़ी फुर्ती से वह शक्ति कृतवर्मा के रथ की ओर फेंकी। शीघ्रता के साथ फेंकी हुई केंचली रहित सर्प जैसी उस दारुण बर्छी को कृतवर्मा ने दो बाण मार कर, नष्ट कर डाला। वह बर्छी वैसे ही भूमि पर गिरी जैसे दसों दिशाओं को प्रकाशित करती हुई बड़ी भारी उल्का आकाश से टूट कर भूमि पर गिरती है। उस बर्छी को व्यर्थ देख, भीम बड़ा कुपित

हुआ और उसने घोर शब्द करने वाला एक बड़ा भारी धनुष हाथ में लिया और कृतवर्मा को आगे बढ़ने से रोका। फिर कृतवर्मा की छाती में भीम ने पाँच बाण तान कर मारे। सो हे राजन्! यह सब आपकी दुष्ट नीति का परिणाम था।

हे राजन्! भीमसेन की मार से कृतवर्मा के अङ्ग प्रत्यङ्ग घायल हो गये। वह पुष्पित अशोक वृक्ष की तरह समरभूमि में शोभायमान हुआ। फिर महाधनुर्धर कृतवर्मा ने क्रुद्ध हो, तीन बाण मार भीम को घायल किया। यही नहीं, कृतवर्मा ने पुनः प्रत्येक महारथी के तीन तीन बाण मार उन सब को घायल किया। इस पर उन समस्त महारथियों ने सात सात बाण मार, पुनः कृतवर्मा को घायल किया। इस बीच में कृतवर्मा ने क्षुरप्र बाण से शिखण्डी का धनुष काट डाला। तब तो क्रोध में भर शिखण्डी ने तुरन्त खड्ग और ढाल हाथ में ली। उसकी ढाल में चन्द्रमा जैसी चमचमाती सौ फुल्लियाँ जड़ी थीं और सोने का पत्र उस पर लगा था। फिर तलवार घुमा उसने कृतवर्मा के रथ पर फेंकी। वह तलवार कृतवर्मा के हाथ के धनुष को काटती पृथिवी में वैसे ही घुस गयी जैसे आकाश से गिरा हुआ उल्कापिण्ड भूमि में धस जाता है। यह सुअवसर देख, उन महारथियों ने कृतवर्मा को बड़ी फुर्ती से बाणों से विद्ध करना आरम्भ किया।

तब हे राजन्! कृतवर्मा ने टूटा धनुष फेंक दूसरा धनुष उठा लिया और प्रत्येक पाण्डव के तीन तीन और शिखण्डी के आठ बाण मार, उन्हें घायल कर डाला। उधर महायशस्वी शिखण्डी ने भी दूसरा धनुष उठा और कछुवे के नखों जैसे बाण मार, कृतवर्मा को जहाँ का तहाँ रोक दिया। इस पर कृतवर्मा बहुत चिढ़ा। जैसे वीर सिंह निज बल दिखाने को हाथी पर आक्रमण करे, वैसे ही कृतवर्मा भीष्मपितामह का नाश करने वाले, यज्ञसेन के पुत्र महारथी शिखण्डी पर झपटा। तब तो वे दोनों वीर भिड़ गये और आपस में एक दूसरे पर बाणप्रहार करने लगे। उस समय वे दोनों वीर अपने धनुषों को मण्डलाकार किये हुए और बाणों को छोड़ते हुए, ऐसे

सूर्यों जैसे जान पड़ते थे। प्रलयकालीन दो सूर्यों की तरह वे दोनों एक दूसरे को सन्तप्त कर रहे थे। कृतवर्मा ने शिखण्डी के तिहत्तर बाण मारे। इन बाणों के प्रहार से घायल हो शिखण्डी व्यथित हो रथ में निश्चेष्ट हो बैठ गया। वह मूर्छित हो गया और उसके हाथ से धनुष बाण छूट पड़े। शिखण्डी को मूर्छित देख, आपके सैनिकों ने कृतवर्मा की प्रशंसा की और हर्षित हो वे वस्त्र उछालने लगे। उधर शिखण्डी को मूर्छित देख, उसका सारथि रथ भगा, उसे रणभूमि से बाहिर ले गया। पाण्डवों ने शिखण्डी को मूर्छित देख, फिर रथों के घेरे में कृतवर्मा को कर लिया। उस समय कृतवर्मा ने बड़ा ही विस्मयोत्पादक करतब कर दिखलाया। यह सब होने पर भी वह अकेला ही समस्त पाण्डवों को ससैन्य रोके रहा। तदनन्तर महारथी कृतवर्मा ने पाण्डवों को परास्त कर, महाबली पाञ्चालों तथा सृञ्जयों एवं केकयों को परास्त किया। कृतवर्मा द्वारा घायल किये गये पाण्डव इधर उधर भागने लगे और वे दृढ़ हो रणभूमि में कहीं भी न टिक सके। भीमादि पाण्डवों को हरा कर, कृतवर्मा धूमरहित अग्नि की तरह शान्तभाव से निश्चल खड़ा था। कृतवर्मा के बाणों से पीड़ित पाण्डववीर युद्धक्षेत्र से भाग खड़े हुए।

एक सौ पन्द्रह का अध्याय

जलसन्ध-वध

सञ्जय ने कहा—हे राजन्! आपने जो वृत्तान्त मुझसे पूँछा; उसे आप मन को एकाग्र कर सुनें। महाबली कृतवर्मा ने जब पाण्डवों को हरा कर भगा दिया; तब पाण्डवों को बड़ी लज्जा मालूम पड़ी और आपके सैनिक हर्षध्वनि करने लगे। उस समय पाण्डवों की सेना अपने रक्षक को, इसी

प्रकार ढूँढ़ने लगी; जिस प्रकार अथाह सागर में डूबता हुआ पुरुष सहारा ढूँढ़ता है। उस समय उनका यदि कोई रक्षक था, तो वह सात्यकि ही था। अतः जब आपके सैनिकों ने घोर सिंहनाद किया, तब सात्यकि ने झट कृतवर्मा पर आक्रमण करने के विचार से उस ओर अपना रथ बढ़वाया। उसने क्रुद्ध हो अपने सारथि से कहा—देख, कृतवर्मा क्रुद्ध हो पाण्डवसेना का नाश कर रहा है। मैं इसे परास्त करने के बाद अर्जुन के निकट चलूँगा। हे महामति! यह सुनते ही सात्यकि के सारथि ने पल भर में रथ कृतवर्मा के सामने पहुँचा दिया।

हृदीकनन्दन कृतवर्मा ने सात्यकि को भी पैने पैने बाणों से आच्छादित करना आरम्भ किया। इस पर सात्यकि को बड़ा क्रोध चढ़ आया। उसने बड़ी फुर्ती से कृतवर्मा के एक पैना भल्ल बाण और चार साधारण बाण मारे। उनसे कृतवर्मा के घोड़े मारे गये और उसका धनुष कट गया। तदनन्तर सात्यकि ने तीक्ष्ण बाणों से कृतवर्मा के सारथि को तथा उसके पृष्ठरक्षकों को विद्ध किया। सात्यकि ने कृतवर्मा को रथहीन करके उसे पैने पैने बाणों से घायल करना आरम्भ किया। सात्यकि के बाण प्रहार से पीड़ित कृतवर्मा की सेना भागी। तब सत्यपराक्रमी सात्यकि तुरन्त ही आगे बढ़ा।

हे राजन्! वीर सात्यकि ने आपकी सेना में प्रवेश कर जो, पराक्रम प्रदर्शन किया, अब आप उसे सुनें। हे महाराज! प्रथम तो उसने द्रोण के सैन्यरूप सागर को पार किया। फिर उसने कृतवर्मा को परास्त किया। इससे वह हर्षित और उत्साहित हुआ। उसने अपने सारथि से कहा—सारथि! अब तू निडर हो धीरे धीरे रथ को हाँक। आगे पहुँच सात्यकि ने घोड़ों और गजों से युक्त आपकी सेना को देख, सारथि से कहा—हे सारथि! देख, द्रोण की सेना की बाईं ओर मेघ जैसे गजों की जो विशालवाहिनी खड़ी है, उसके आगे रुक्मरथ खड़ा है। इस विशाल गजवाहिनी को हटाने में बड़ी बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा।

ये सुवर्णध्वज महारथी त्रिगर्तदेशी राजकुमार, दुर्योधन के आदेशानुसार, अपनी जानों को हथेलियों पर रखे हुए मुझसे लड़ने को खड़े हैं। ये समस्त महाधनुर्धर बड़े बाँके योद्धा हैं। हे सारथि! देख न, ये लोग लड़ने की इच्छा से मेरी ओर मुख किये खड़े हैं। अतः तू झटपट मुझे उनके निकट पहुँचा। मैं द्रोण के सामने ही इन त्रिगर्त राजकुमारों से युद्ध करूँगा। यह सुन, सात्यकि के इच्छानुसार काम करने वाला उसका सारथि यथाक्रम रथ हाँकता हुआ आगे बढ़ा। सूर्य की तरह चमकदार सफेद रङ्ग के घोड़े, जो ध्वज युक्त रथ में जुते थे और जो सारथि के इशारे पर काम करते थे, जो वायु के समान तेज़ चलने वाले थे, तथा जिनकी प्रभा चन्द्रमा अथवा चाँदी जैसी थी—सात्यकि का रथ लिये हुए आगे बढ़े। शङ्ख जैसे सफेद घोड़ों से युक्त रथ पर सवार, सात्यकि को उन फुर्तीले निशानेबाज़ योद्धाओं ने हाथियों की सेना द्वारा चारों ओर से घेर, उस पर बाणवृष्टि करनी आरम्भ की। सात्यकि भी बाण बरसाता हुआ, उस गजसेना के ऊपर वैसे ही बाणवृष्टि करने लगा, जैसे ग्रीष्म ऋतु बीतने पर मेघ, पहाड़ों पर जलवृष्टि करते हैं। उसके छोड़े वज्र के समान स्पर्श वाले बाणों से घायल हो हाथी रणक्षेत्र से भागने लगे। थोड़ी ही देर की बाणवृष्टि से अनेक गजों के दाँत टूट गये, उनके शरीर घायल हो गये और उन घावों से बहुत सा रक्त निकल गया। अनेक हाथियों के मस्तक और गण्डस्थल फट गये। अनेक के कान, मुख और सूँड़ कट कुट गयीं। उनके ऊपर जो योद्धा और महावत बैठे थे, वे नीचे लुढ़क पड़े। उनके ऊपर जो पताकाएं थीं, वे भी नीचे गिर पड़ीं। हाथियों के मर्मस्थल विदारित हो गये। उनके घंटे टूट गये, ध्वजाओं के टुकड़े टुकड़े हो गये। हाथीसवार मारे गये। अम्बारियाँ नीचे गिर गयीं और वे की पुरा कर, इधर उधर भागने लगे। सात्यकि ने वत्सदन्त, भल्ल, अञ्जलिक, क्षुरप्र तथा अर्धचन्द्र बाणों से उस गजसेना की धज्जियाँ उड़ा दीं। उस समय मेघ की तरह गर्जन करने वाले वे हाथी, अनेक प्रकार से चीत्कार करने लगे और रक्त उगलने लगे। बहुत से हाथी चक्कर खाने लगे।

बहुत से ठोकर खा गिर पड़े और बहुत से सुख पड़ गये, अग्नि और सूर्य समान स्पर्श वाले बाणों के प्रहार से सात्यकि द्वारा घायल की गयी। उस गजसेना के हाथी चारों ओर भागने लगे। यह देख हाथी के ऊपर सवार जलसन्ध चाँदी के बने धनुष को घुमाता हुआ बड़ी सावधानी से, सात्यकि के सामने लड़ने को पहुँचा। जलसन्ध के शरीर पर सुवर्ण का कवच था, भुजाओं में वह सोने के बाजूबन्द पहिने हुए था। उसके मस्तक पर मुकुट और कानों में कुण्डल थे। कमर पर चमचमाती तलवार लटक रही थी। गले में चमचमाता सोने का हार और छाती पर सोहरों का कपड़ा पड़ा हुआ था। मस्तक पर लाल चन्दन लगा हुआ था। उस समय जलसन्ध की शोभा, बिजली युक्त मेघ जैसी हो रही थी। जैसे उमड़ते हुए समुद्र को उसका तट रोक देता है, वैसे ही सात्यकि ने सहसा सामने आते हुए मगध-राज जलसन्ध का हाथी रोक दिया और उसे आगे बढ़ने न दिया। जब जलसन्ध ने देखा कि, सात्यकि बाणों के प्रहारों से हाथी को आगे बढ़ने नहीं देता, तब वह महाबली बड़ा क्रुद्ध हुआ और उसने भारी भारी बहुत से बाण सात्यकि की छाती में मारे। सात्यकि बाण छोड़ना ही चाहता था कि, जलसन्ध ने भल्ल बाण मार उसके हाथ का धनुष काट डाला। फिर पाँच तेज़ बाण मार सात्यकि को घायल किया; किन्तु घायल होने पर भी वीरवर सात्यकि ज़रा भी विचलित न हुआ। सचमुच यह एक बड़े आश्चर्य की बात थी। सात्यकि ने बड़ी फुर्ती से दूसरा धनुष ले और "खड़ा रह खड़ा रह" कहते हुए, हँसते हँसते जलसन्ध की प्रशस्त छाती में साठ बाण मारे और क्षुरप्र बाण से उसका धनुष भी काट डाला। फिर जलसन्ध के तीन बाण मारे। हे राजन्! तब जलसन्ध ने बाण सहित उस धनुष को फेंक कर तोमर उठा, सात्यकि के मारा। वह भयानक तोमर सात्यकि की दहिनी भुजा को घायल कर फुँसकारते हुए सर्प की तरह सरसराता भूमि में घुस गया। तब सात्यकि ने तीस बाण मार कर, जलसन्ध को विद्ध किया। तब महा-वीर जलसन्ध ने एक तलवार उठायी और बैल के चमड़े की ढाल, जिसमें

सौ फुल्लियाँ जड़ी थीं, उठायी। फिर तलवार घुमा कर सात्यकि के ऊपर फेंकी। सात्यकि के धनुष को काट, वह तलवार आकाश से गिरी हुई उल्का की तरह भूमि पर गिर पड़ी। तब क्रोध में भर सात्यकि ने साल की मोटी शाखा के समान मोटा, वज्र जैसा घोर शब्द करने वाला और सारे शरीर को विदीर्ण करने वाला दूसरा धनुष उठाया। उस पर बाण रख उसने जलसन्ध के मारा। फिर दो छुरप्र बाणों से सात्यकि ने अनायास ही जलसन्ध की दोनों भुजाएँ काट डालीं। लोहे के कवचों से ढकी उसकी दोनों भुजाएँ पर्वत से गिरते हुए पाँच फनों वाले सर्पों की तरह, हाथी से नीचे गिर पड़ीं। तीसरा छुरप्र बाण छोड़ सात्यकि ने जलसन्ध का कुण्डलों से विभूषित माथा काट कर भूमि पर गिरा दिया। भुजा और मस्तक विहीन जलसन्ध के शरीर से निकले हुए रुधिर से उसका हाथी तराबोर हो गया। इस प्रकार जलसन्ध का वध कर, सात्यकि ने बाण से अंबारी का रस्सा काट, अँबारी को हाथी की पीठ से खिसका दिया। तब जलसन्ध का रक्त से तर वह गज, बाणों की मार से घबड़ा, अधबिच लटकती हुई अँबारी और अपनी सूँड़ को झकोरता हुआ भागा। सात्यकि के हाथ से जलसन्ध का मरा जाना देख, हे राजन्! आपकी सेना में हाहाकार मच गया। आपके सैनिकों की हिम्मत टूट गयी और वे मुँह मोड़ भागने की तैयारी करने लगे। हे राजन्! इतने ही में शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ द्रोण अपने शीघ्रगामी घोड़ों को दौड़ा, सात्यकि की ओर झपटे। उस समय सात्यकि उनसे लड़ने को सावधान हो गया। यह देख आपके पक्ष के बड़े बड़े महारथी द्रोण के साथ ही सात्यकि की ओर झपटे। हे राजन्! देवासुर संग्राम की तरह भयङ्कर द्रोण तथा अन्य कौरव पक्षीय महारथियों के साथ, सात्यकि का युद्ध आरम्भ हुआ।

एक सौ सोलह का अध्याय

दुर्योधन का बुरी तरह सात्यकि से हारना

कौरव १७ के योद्धा एक साथ बाणवृष्टि करते हुए सात्यकि के ऊपर चढ़ आये। तब द्रोण ने सात्यकि के सत्तर, दुर्मर्षण ने बारह और दुःसह ने आठ बाण मारे। विकर्ण ने कङ्कपुंख युक्त तीस बाण मार, सात्यकि का वक्षःस्थल और दक्षिण पार्श्व विद्ध किया। हे राजन्! दुर्मुख ने दस, दुःशासन ने आठ और चित्रसेन ने दो बाण मार कर, सात्यकि को घायल कर दिया। दुर्योधन तथा अन्य शूर महारथियों ने बड़ी भारी बाणवर्षा कर, सात्यकि को बहुत पीड़ित किया। किन्तु आपके पुत्रों द्वारा चारों ओर से आक्रान्त महारथी सात्यकि एक एक कर उन सब को सीधे जाने वाले बाणों से घायल करने लगा। उसने द्रोण के तीन, दुःसह के नौ, विकर्ण के पचीस, चित्रसेन के सात, दुर्मर्षण के बारह, विविंशति के आठ, सत्यव्रत के नौ और विजय के दस बाण मारे। फिर वह तुरन्त आपके ज्येष्ठ पुत्र दुर्योधन पर टूट पड़ा। उसने दुर्योधन को बाण मार, भली भाँति घायल किया। दुर्योधन ने भी सात्यकि पर बाण छोड़े। दोनों में घोर युद्ध होने लगा। दुर्योधन ने भी सात्यकि को ख़ूब घायल किया। उस समय रक्त से लथपथ सात्यकि रस को चुआने वाले रक्तचन्दन के वृक्ष जैसा जान पड़ने लगा। उधर सात्यकि के बाणों से घायल आपका दुर्योधन भी सुवर्ण मुकुट धारी एक उच्च यज्ञस्तम्भ की तरह जान पड़ने लगा। सात्यकि ने क्षुरप्र बाण मार, दुर्योधन का धनुष काटा। फिर उसके तन ऊपर अनेक बाण भी मारे। इसे सहन न कर, दुर्योधन ने सोने की मूठ का दृढ़ एक धनुष ले बराबर सौ बाण सात्यकि के मारे। आपके पुत्र द्वारा घायल सात्यकि अतीव क्रुद्ध हुआ। उसने आपके पुत्र को पीड़ित किया। दुर्योधन को दुःख पड़ते देख, आपके अन्य महारथी पुत्रों ने सात्यकि के ऊपर सामर्थ्यानुसार बाणवृष्टि की। तब सात्यकि ने आपके पुत्रों में से प्रत्येक के पहले पाँच

पाँच, फिर सात सात वाण मारे; किन्तु दुर्योधन के तर ऊपर आठ वाण मार उसे घायल किया। उसने दुर्योधन का धनुष भी काट डाला। फिर मणियों के बने हाथी से युक्त दुर्योधन की ध्वजा काट कर भूमि पर गिरा दी। फिर सात्यकि ने चार पैने बाण मार, दुर्योधन के रथ के चारों घोड़े भी मार डाले। फिर उसके सारथि का भी वध किया। दुर्योधन को घबड़ाया हुआ देख और इसे सुअवसर जान सात्यकि ने दुर्योधन के बहुत से मर्मभेदी बाण मारे। अब तान तान कर सात्यकि ने तड़ातड़ बाण मारने आरम्भ किये, तब तो आपका पुत्र दुर्योधन युद्ध छोड़ भागा और भाग कर झट चित्रसेन के रथ पर चढ़ गया। सात्यकि ने वहाँ भी उसका पीछा किया। जिस प्रकार राहु चन्द्रमा को ग्रसे, वैसे ही सात्यकि ने भी दुर्योधन का भी ग्रास किया। यह देख रणक्षेत्रस्थ समस्त आपके सैनिक हाहाकार करने लगे। उस कोलाहल को सुन कृतवर्मा ने अपने सारथि से सात्यकि के निकट रथ ले चलने को कहा, सारथि को ललकार कर वह बोला। अरे रथ शीघ्र हाँक, बड़ी फुर्ती से कृतवर्मा सात्यकि के निकट जा पहुँचा। कृतवर्मा को मुख फाड़े, काल की तरह अपनी ओर आते देख, सात्यकि ने अपने सारथि से कहा—देख, कृतवर्मा धनुष ताने झपटा हुआ चला आ रहा है। यह इन समस्त धनुर्धरों में श्रेष्ठ है। अतः इसीके सामने मेरा रथ हाँक, तदनुसार सात्यकि का सारथी अपने श्रेष्ठ सुसज्जित रथ के वेगवान घोड़ों को हाँक, कृतवर्मा के निकट जा पहुँचा। उन दोनों क्रुद्ध पुरुषव्याघ्रों का युद्ध, दो धधकते हुए अग्नियों की तरह अथवा वेग में भरे दो व्याघ्रों की तरह आरम्भ हुआ। कृतवर्मा ने छत्तीस बाण सात्यकि पर छोड़े और पाँच तेज़ बाण सात्यकि के सारथि पर भी छोड़े। फिर उसने चार बाण मार, सात्यकि के चारों घोड़े भी घायल किये। सुवर्णोज्ज्वल और सुवर्ण कवच एवं सुवर्ण अङ्गद धारी कृतवर्मा ने सुवर्ण के बने विशाल धनुष पर रख, सुवर्णपुङ्ख बाणों की मार से सात्यकि को आगे न बढ़ने दिया। तब अर्जुन के पास जाने को उत्कण्ठित सात्यकि ने बड़ी फुर्ती से कृतवर्मा के

लगातार अस्सी बाण मारे। इन बाणों की मार से, शत्रुसन्तापकारी दुराधर्ष कृतवर्मा, महाबली शत्रु सात्यकि के बाणप्रहार से घायल हो, भूचाल के समय डगमगाते हुए पर्वत की तरह रथ में बैठा बैठा डोलने लगा। इतने में सात्यकि ने तड़ातड़ तिरसठ बाण मार कृतवर्मा के चारों घोड़े तथा सात बाण मार उसके सारथि को बुरी तरह घायल किया। फिर सुवर्णपुंख, बड़ा चमकीला, एवं क्रुद्ध सर्प जैसा भयङ्कर एक बाण, धनुष तान कर कृतवर्मा के मारा। वह यमदण्ड जैसा भयङ्कर बाण, कृतवर्मा के सुवर्ण कवच एवं शरीर को फोड़, खून से तर भूमि में घुस गया। कृतवर्मा के शरीर से लोहू बह निकला। कृतवर्मा धनुष बाण छोड़ रथ के खटोले में, घुटनों के बल औंधा गिर पड़ा। सहस्रार्जुन की तरह बलवान एवं समुद्र की तरह अक्षोभ्य कृतवर्मा को परास्त कर, सात्यकि आगे बढ़ा। उसने खड्गधारी, शक्तिधारी तथा धनुषधारी, गजारोही, अश्वारोही और रथी योद्धाओं से युक्त विशाल कौरववाहिनी को, जिसमें क्षत्रियों ने रक्त की नदियाँ बहा दी थीं, अतिक्रम कर, समस्त योद्धाओं के देखते देखते वह, वैसे ही निकल गया, जैसे असुर सेना को अतिक्रम कर, इन्द्र निकले थे। कुछ देर बाद जब कृतवर्मा सचेत हुआ, तब वह धनुष बाण से पाण्डवों को रोकने लगा।

एक सौ सत्रह का अध्याय

सात्यकि की वीरता

सञ्जय ने कहा—हे धृतराष्ट्र! जब शिनिनन्दन सात्यकि ने हमारी सेनाओं को इस प्रकार खदेड़ दिया; तब द्रोण ने सात्यकि पर असंख्य बाण बरसाये, समस्त सेना के सामने सात्यकि और द्रोण का अब वैसा ही भयङ्कर युद्ध आरम्भ हुआ, जैसा कि असुरराज बलि और देवराज इन्द्र का हुआ था। द्रोण ने लोहे के विचित्र सर्पाकार बाण मार कर, सात्यकि का मस्तक विद्ध किया। उस समय हे राजन्! सात्यकि वैसा ही जान पड़ने लगा—जैसा

तीन ऊँचवाला पर्वत हो। उसकी दुर्बलता को जान लेने वाले द्रोण उस पर इन्द्र के वज्र की तरह टंकार शब्द करने वाले बाण बरसाने लगे। किन्तु अस्त्र-कुशल सात्यकि ने उन सब बाणों को दो दो बाणों से काट कर फेंक दिया। सात्यकि के इस प्रकार के हस्तलाघव को देख, द्रोण प्रसन्न हुए और फिर उन्होंने उसके तीस बाण मारे। सात्यकि से भी अधिक फुर्ती दिखला द्रोण ने पुनः तड़ातड़ पचास पैने बाण उसके मारे। हे राजन्! जैसे क्रुद्ध हो साँप फुँसकारते हुए अपने बिलों से निकलें, वैसे ही द्रोण के बाण उनके रथ में सरांटे हुए निकल रहे थे। इसी प्रकार रुधिर पीने वाले असंख्य बाणों से सात्यकि ने भी द्रोण का रथ पाट दिया।

हे राजन्! द्विजश्रेष्ठ द्रोण और सात्त्वतवंशी सात्यकि दोनों ही बाण छोड़ने में बड़े कुशल और फुर्तीले थे। अतः उन दोनों में कौन उत्कृष्ट था—यह कहना कठिन है। उस समय तो दोनों समान जान पड़ते थे। इतने ही में सात्यकि ने अत्यन्त क्रुद्ध हो, नतपर्व नौ बाण द्रोण के मारे। फिर द्रोण के देखते ही देखते उसने सौ बाण मार कर, उनकी ध्वजा को छिन्न भिन्न कर, उनके सारथि को भी घायल कर डाला। इसके उत्तर में द्रोण ने सत्तर बाण मार, सात्यकि के सारथि को घायल किया। फिर तीन तीन बाण उसके प्रत्येक घोड़े के मार और उन्हें घायल कर, द्रोण ने एक पैने बाण से सात्यकि के रथ की ध्वजा काट दी। फिर भल्ल बाण से सात्यकि का धनुष काटा। तब क्रोध में भर सात्यकि ने एक गदा तान कर द्रोण के ऊपर फेंकी। किन्तु द्रोण ने विविध प्रकार के बाण मार, लोहे की उस गदा को छिन्न भिन्न कर डाला। इतने में सात्यकि ने दूसरा धनुष ले, बड़े पैने बाण मार द्रोण को घायल कर डाला। युद्ध में द्रोणाचार्य को घायल कर, सात्यकि ने सिंहनाद किया। उसका दहाड़ना द्रोण को असह्य हुआ। तब उन्होंने एक लोहे की शक्ति उठा कर बड़े ज़ोर से सात्यकि के रथ की ओर फेंकी। काल जैसी भयङ्कर शक्ति सात्यकि के निकट न पहुँच सकी। किन्तु उसके रथ को तोड़ और भयङ्कर शब्द करती वह पृथिवी में घुस गयी। इसी तरह सात्यकि ने

द्रोण की दहिनी भुजा को घायल कर उन्हें बड़ा पीड़ित किया। तब द्रोण ने अर्द्धचन्द्राकार बाण से सात्यकि का धनुष पुनः काट, फिर केवड़ी के पत्तों के आकारवाली शक्ति से उसके सारथि को पुनः घायल किया। उस शक्ति के लगने से सात्यकि के सारथि को चक्कर आने लगे और क्षणभर के लिये रथ में गिर वह चेतन हो गया।

हे राजन्! उस समय सात्यकि ने अपना सारथीपन विलक्षण रीति से किया। वह रास थामे घोड़ों को भी हाँकता रहा और द्रोण से लड़ता भी रहा। सात्यकि ने द्रोणाचार्य के सौ बाण मारे। तब द्रोण ने सात्यकि के पाँच बाण ऐसे मारे जो उसके कवच को तोड़, उसके शरीर में घुस, रक्त में सन, पृथिवी में घुस गये। इन घोर बाणों से आहत सात्यकि के क्रोध की सीमा न रही। उसने सुवर्ण के बने रथ पर सवार द्रोण के ऊपर बाणवृष्टि की। तदनन्तर उसने एक बाण मार, द्रोण के सारथि को भूमि में पटक दिया। फिर घोड़ों के बाण मार उन्हें इधर उधर दौड़ाना आरम्भ किया। वे घोड़े सारथि के न रहने से द्रोण के रथ को ले, रणभूमि में बड़ी तेज़ी से दौड़ने लगे। यह देख वहाँ एकत्रित समस्त राजकुमार और राजा लोग, कोलाहल करने लगे। वे चिल्ला चिल्ला कहने लगे—दौड़ो! दौड़ो! द्रोण के घोड़ों को सम्हालो! हे राजन्! उस समय वे सब सात्यकि को छोड़ द्रोण के रथ की ओर दौड़े, किन्तु सात्यकि ने मारे बाण के उन सब को भगा दिया। उस समय उन राजकुमारों को भागते देख, आपकी सेना में पुनः भगदड़ पड़ी। सात्यकि के बाणों से पीड़ित वायु की तरह तेज़ दौड़ने वाले घोड़ों ने द्रोण का रथ, व्यूह के मुहाने ही पर ला कर खड़ा किया। उस समय द्रोण ने देखा कि, पाण्डवों और पाञ्चालों ने उनका व्यूह भङ्ग कर डाला है। अतः वे सात्यकि के पीछे न जा, व्यूह की रक्षा करने लगे। उस समय क्रोधरूपी काठ से धधकते हुए द्रोणरूपी अग्नि ने उदय होते हुए प्रलय कालीन सूर्य की तरह, व्यूह के मुख पर खड़े हो, पाण्डवों और पाञ्चालों की गति रोक दी और उन्हें आगे बढ़ने न दिया।

एक सौ अठारह का अध्याय

सुदर्शन वध

सञ्जय ने कहा—हे कुरुनरनाथ ! सात्यकि द्रोण को तथा आपके कृतवर्मा आदि योद्धाओं को जीत और हँस कर अपने सारथि से बोला—हे सूत ! श्रीकृष्ण तथा अर्जुन ने इन शत्रुओं को पहले ही भस्म कर रखा है, मैं तो केवल निमित्त मात्र हूँ। मैं तो देवराज इन्द्र के अंश से उत्पन्न नरश्रेष्ठ अर्जुन के मारे हुए शूरों ही को मार रहा हूँ। सारथि से यह कह कर धनुर्धर शत्रुसंहारक, बलवान शिनिपुत्र सात्यकि बाण बरसाता हुआ, शत्रुओं पर सहसा वैसे ही टूट पड़ा, जैसे बाज़ पक्षी माँसपिण्ड पर टूटता है—शत्रु सैन्य को मथ और चन्द्र अथवा शङ्खवर्ण घोड़ों से युक्त रथ पर सवार, रथियों में अग्रणी एवं सूर्य तुल्य तेजस्वी सात्यकि को कोई भी न रोक सका। शरद् कालीन सूर्य की ओर जैसे कोई नहीं देख सकता, वैसे ही हे राजन् ! आपके योद्धाओं में से कोई भी अजय पराक्रमी, महाबली, इन्द्र तुल्य प्रभावशाली सात्यकि को आँख उठा कर कोई न देख सका, किन्तु सात्यकि का मार्ग रोकने को एक नृपश्रेष्ठ राजा सुदर्शन अवश्य अग्रसर हुआ। राजा सुदर्शन सोने का कवच पहिने हुए था और विचित्ररूप से लड़ा करता था। तब उन दोनों का बड़ा भयङ्कर युद्ध हुआ। हे राजन् ! आपके योद्धाओं और सोमकवंशी राजाओं ने उन दोनों की वैसी ही प्रशंसा की वैसी प्रशंसा इन्द्र और वृत्रासुर के युद्ध की देवताओं ने की थी। राजा सुदर्शन ने सात्यकि के सैकड़ों तेज़ बाण मारे, किन्तु हे राजन् ! सात्यकि ने उनमें से एक भी बाण अपने निकट न आने दिया। वह उन सब बाणों को बीच ही में काट कर डाल देता था। इसी प्रकार सुदर्शन भी सात्यकि के बाणों के खण्ड खण्ड कर डालता था। अन्त में सुदर्शन खिसियाना सा हो गया और रोष में भर ऐसा जान पड़ा, मानों वह जगत् को भस्म ही कर डालेगा। उस समय उसने सुवर्णपुंख बाण सात्यकि पर छोड़े। फिर उसने

अच्छे पुंखों वाले अग्नि तुल्य स्पर्श वाले तीन पैने शर, धनुष को कान तक तान कर सात्यकि की ओर छोड़े। वे बाण सात्यकि के कवच को तोड़ उसके शरीर में घुस गये। फिर उसने चार बाण सात्यकि के सफेद घोड़ों पर छोड़े। तब तो फुर्तीला सात्यकि झट बहुत से बाण छोड़ सुदर्शन के चारों घोड़ों को मार सिंह की तरह दहाड़ा। फिर सात्यकि ने इन्द्र के वज्र के समान एक भल्ल बाण से सुदर्शन के सारथि का सिर काट गिराया, फिर कालाग्नि जैसा क्षुरप्र बाण मार, कुण्डलों से भूषित एवं पूर्णमासी के चन्द्रमा जैसा, सुदर्शन का मस्तक वैसे ही उड़ा दिया, जैसा पूर्वकाल में इन्द्र ने बलि नामक अत्यन्त बलवान असुर का मस्तक काटा था। यदुश्रेष्ठ वेगवान् सात्यकि राजपुत्र दुर्योधन के पौत्र का वध कर, अतीव हर्षित हुआ। उस समय वह इन्द्र की तरह शोभायमान जान पड़ा। इसके बाद सात्यकि आपकी सेना को पीछे हटा श्रेष्ठ घोड़ों से युक्त रथ पर सवार अर्जुन की ओर रवाना हुआ। रास्ते में जो शत्रु उसके आगे पड़ता, वह फिर जीवित नहीं रहता था। सात्यकि के इस विस्मयकारी पराक्रम की प्रशंसा बड़े बड़े वीर योद्धाओं ने की।

एक सौ उन्नीस का अध्याय

यवनों की हार

सञ्जय ने कहा—युद्ध में सुदर्शन का वध करने के अनन्तर, महाबली सात्यकि ने अपने सारथि से कहा—हे सारथे! जलसन्ध की सेना और राक्षस समान अन्य अनेक योद्धाओं, रथों, घोड़ों, गजों के समूहों से युक्त, धनुष-बाण-शक्ति रूपी तरङ्गों वाले, खड्ग रूपी मछलियों से पूर्ण, गदारूपी ग्राहों से भरा, शूरवीरों के सिंहनाद तथा जुझाऊ बाजों के शब्द रूपी गर्जन शब्द से युक्त, विजयाभिलाषी योद्धाओं से भरे पूरे महाभयङ्कर

अगाध समुद्र रूपी द्रोणाचार्य की सेना को हम लोग पार कर आये। अब जिन सेनाओं को हमें पार करना है, वे मेरे लिये उक्त सागर के सामने, अल्पतोया क्षुद्र नदियों के समान हैं। अतः तुम निर्भय हो रथ को उन सेनाओं की ओर ले चलो। जब मैं महापराक्रमी द्रोण और योद्धाओं में श्रेष्ठ कृतवर्मा को उनके अनुगामियों सहित परास्त कर चुका, तब मैं अपने को अर्जुन के निकट पहुँचा हुआ ही समझता हूँ। सामने जो बहुत बड़ी सेना खड़ी है, उसका मुझे तिलमात्र भी भय नहीं है। मैं उस सेना के समस्त योद्धाओं को वैसे ही अपने बाणों से भस्म कर दूँगा, जैसे ग्रीष्म ऋतु की आग सूखे घास फूस और काष्ठ को भस्म कर डालती है। हे सारथी! देखो यहाँ की रणभूमि, मृत गजों, घोड़ों, टूटे रथों और मृत रथियों से कैसी पटी पड़ी है और यहाँ का दृश्य कैसा भयङ्कर जान पड़ता है। ये समस्त योद्धा अर्जुन के बाणों से मारे गये हैं और पृथिवी पर पड़े अनन्त निद्रा में शयन कर रहे हैं। सामने जो योद्धा इधर उधर भाग रहे हैं, वह भी अर्जुन ही के पराक्रम का परिणाम है। वह धूल जो हाथियों, घोड़ों, रथों और पैदलों के दौड़ने से उड़ रही है, वहीं पर कुरुओं तथा अर्जुन से युद्ध हो रहा है। सुनो—देखो गाण्डीव धनुष का भयङ्कर टंकार शब्द सुन पड़ता है। इससे जान पड़ता है यहाँ से अर्जुन बहुत दूर नहीं है। जैसे शुभ शकुन हो रहे हैं। उनको देख मुझे निश्चय है कि, अर्जुन सूर्यास्त के पूर्व ही जयद्रथ का वध कर अपनी प्रतिज्ञा से उत्तीर्ण हो जाँयगे। हे सारथे! तुम घोड़ों की थकावट मिटा और सावधानी से बढ़ते हुए वहाँ चलो, जहाँ कवचधारी, निष्ठुरकर्मा, धनुर्धर एवं अस्त्रसञ्चालन विद्या में निपुण काम्बोज, यवन, शक, किरात, दरद, बर्बर, ताम्रलिप्त तथा अन्य म्लेच्छ जाति के अस्त्र शस्त्र-धारी योद्धाओं की सेना, मेरी ओर ताकती हुई मुझसे लड़ने को खड़ी है। अतः इस युद्धमें जब मैं गजों, घोड़ों, रथियों, पैदलों सहित उन सब को मार डालूँ; तब तू जानना कि, हम इस दुर्गम व्यूह को पार कर आये।

सारथि ने उत्तर दिया—हे वार्ष्णेय! यदि मेरे सामने क्रोध में भर जमदग्नि-नन्दन परशुराम भी आ खड़े हों, तोभी मैं घबड़ाने वाला नहीं। फिर ये तो हैं ही किस खेत की मूली। हे महाभुज! द्रोण हों, महारथी कृपाचार्य हों, अथवा मद्रराज ही क्यों न हों—तो भी मैं आपके प्रताप से उनसे नहीं डर सकता। हे शत्रुसूदन! आपने, जब पहले कवचधारी, क्रूरकर्मा काम्बोजों, धनुर्धर एवं युद्धदुर्मद शक, किरात, दरद, बर्बरों, ताम्रलिप्तकों तथा विविध अस्त्रशस्त्रधारी अनेक म्लेच्छों का संहार किया था, तब भी मैं ज़रा सा नहीं घबड़ाया था। फिर इस गौ के खुर के समान, क्षुद्र युद्ध को मैं समझता ही क्या हूँ। हे आयुष्मन्! अब यह बतलाइये कि, मैं किस मार्ग से आपको अर्जुन के निकट ले चलूँ? हे वृष्णिवंशी सात्यकि! आप आज किस पर कुपित हुए हैं? आज कौन यम का पाहुना बनना चाहता है? आज किसके सिर पर काल खेल रहा है? आपको प्रलय कालीन यम की तरह पराक्रम प्रदर्शित करते देख, कौन कौन रण छोड़ भागना चाहते हैं? हे महाभुज! आज यमराज किस किस को याद कर रहे हैं?

सात्यकि ने कहा—मैं आज इन मुड़े सिर वाले म्लेच्छों का वैसे ही नाश करूँगा, जैसे इन्द्र दानवों का करते हैं। मैं आज इन काम्बोजों को नष्ट कर, अपनी प्रतिज्ञा पूरी करूँगा और अर्जुन के निकट पहुँचूगा। अतः तुम मुझे उन्हीं योद्धाओं की ओर ले चलो। आज मैं जब बारंबार इन मुड़े सिर वालों और अन्य समस्त सैनिकों का नाश करूँगा, तब दुर्योधनादि कौरवों को मेरे बल का पूरा पता चलेगा। युद्ध में नष्ट होते हुए कौरव सैनिकों के करुणोत्पादक विलापों को सुन कर, आज दुर्योधन के मन को बड़ा कष्ट होगा। मैंने अपने गुरु, श्वेतवाहन, पाण्डवश्रेष्ठ अर्जुन से जो विद्या सीखी है, वह आज मैं प्रत्यक्ष दिखलाऊँगा। आज मेरे हाथ से मारे गये अपने बड़े बड़े योद्धाओं को देख, दुर्योधन परम सन्तप्त होगा। आज जब मैं फुर्ती से बाण छोड़ूँगा, तब कौरव सैनिकों को मेरा धनुष गोलाकार ही देख पड़ेगा। जब मेरे बाणों के प्रहारों से लोहू की फुहारें छोड़ते हुए सैनिक धड़ाधड़ रणभूमि

में गिरने लगेंगे, तब दुर्योधन महादुःखी होगा। आज जब मैं क्रुद्ध हो, छटा छटा योद्धाओं को मार डालूँगा; तब दुर्योधन समझेगा कि, यह भी एक दूसरा अर्जुन है। जब युद्ध में मेरे हाथ से असंख्य राजे मारे जाँयगे, तब दुर्योधन को बड़ा पश्चात्ताप होगा। पाण्डवों के प्रति मेरी कितनी भक्ति है और उन पर मेरा कितना अनुराग है, इसे आज मैं रण में राजाओं के सामने, अगणित योद्धाओं को मार कर दिखला दूँगा। उस समय कौरवों को मेरा बल, वीर्य और कृतज्ञता का हाल विदित होगा।

सञ्जय बोले—हे धृतराष्ट्र! सात्यकि के इस प्रकार कह चुकने पर, सारथि ने चन्द्रमा की तरह उज्ज्वल रथ में जुते चतुर घोड़ों को तेज़ी से हाँका। वे मन अथवा पवन तुल्य वेगवान् घोड़े इस प्रकार गर्दन उठा भागे, मानों आकाश को पी जावेंगे। बात की बात में उन्होंने सात्यकि को यवन सेना के निकट पहुँचा दिया। सात्यकि को सेना में घुसते देख, वे फुर्तीले यवन उस पर बाणवृष्टि करने लगे। सात्यकि ने उन सब के चलाये बाणों को तथा अस्त्रों शस्त्रों को नतपर्व बाणों से काट कर, व्यर्थ कर डाला। अतः उनमें से एक भी बाण सात्यकि के निकट न फटक पाया। तदनन्तर सात्यकि ने सुवर्णपुंख तेज तथा गिद्धों के परों से युक्त बाण और सीधे जाने वाले बाण मार मार कर, उन यवन योद्धाओं की भुजाएँ और सिर काटना आरम्भ किया। वे बाण, उन योद्धाओं के लाल लोहे के बने तथा काँसे के बने कवचों को फोड़ और शरीरों के आरपार होते हुए, पृथिवी में घुस जाते थे। वीरवर सात्यकि के हाथ से मारे गये बहुत से म्लेच्छ निर्जीव हो भूमि पर पड़े हुए थे। इस समय सात्यकि कान तक रोदे को खींच लगातार बाण चला रहा था। उसके बाणों से एक एक बार में पाँच पाँच, छः छः सात सात और आठ आठ तक यवन मारे जाते थे। इस प्रकार, हे राजन्! सात्यकि ने सहस्रों काम्बोज, शक, शबर, किरात और बर्बर सैनिकों को मार डाला। हे राजन्! इस प्रकार आपकी सेना का क्षय करते हुए सात्यकि ने वहाँ लोहू और माँस का काँदा कर दिया। उन सिर मुड़े

और उच्छिन्न यवनों के कटे सिरों से पूर्ण रणभूमि का विचित्र दृश्य था। जिनके सारे शरीर लोहू से लाल हो गये थे, ऐसे रुण्डों से भरा वह रणाङ्गण, लाल लाल बादलों से आच्छादित आकाश की तरह जान पड़ता था। जब सात्यकि ने अगणित यवन-योद्धाओं को बाणप्रहार से मार कर ज़मीन पर बिछा दिया, तब बचे हुए सैनिक अपने सामने घोर सङ्कट को देख, डर गये और युद्ध छोड़ भाग खड़े हुए। घुड़सवार यवन सैनिक अपने घोड़ों को कोड़ों से पीटते, एड़ें मारते तथा सरपट दौड़ाते बड़ी तेज़ी से भागने लगे। हे राजन्! सात्यकि ने दुर्जेय काम्बोज, यवन और शकों की एक बड़ी भारी सेना को भगा कर, आपके पुत्रों की सेना में प्रवेश किया। फिर इनको भी जीत कर सत्यपराक्रमी सात्यकि ने अपने सारथि से कहा—रथ आगे बढ़ाओ।

उस समय सात्यकि के अभूतपूर्व पराक्रम को देख, गन्धर्व और चारण उसकी प्रशंसा करने लगे। हे राजन्! जब अर्जुन का पृष्ठरक्षक सात्यकि अर्जुन के निकट जा पहुँचा; तब चारण और आपके सैनिक भी उसके पराक्रम की सराहना करने लगे।

एक सौ बीस का अध्याय

दुर्योधन का रण छोड़ भागना

सञ्जय ने कहा—हे धृतराष्ट्र! जब सात्यकि, काम्बोज और यवनों को परास्त कर और आपकी सेना में हो कर, अर्जुन के पास जाने लगा—तब वह पुरुषव्याघ्र आपकी सेना को वैसे ही डराने लगा, जैसे सिंह मृगों को। जाता हुआ सात्यकि, सुवर्णपृष्ठ और सुवर्ण की फुल्लियों वाले धनुष को टंकोरता जाता था। सुवर्ण का कवच, सुवर्ण का शिरस्त्राण, सुवर्ण की ध्वजा वाला और धनुषधारी सात्यकि, सुमेरु-शृङ्ग जैसा जान पड़ता था। धनुषरूपी

मण्डल वाला, तेज रूपी किरणों वाला, युद्धरूपी शरद् ऋतु में प्रचण्डता को प्राप्त सूर्य की तरह सात्यकि, शोभायमान हो रहा था। बैल जैसे कन्धे और बैल जैसे नेत्रों वाला सात्यकि, आपकी सेना के मध्य खड़ा गौओं के बीच खड़े हुए साँड़ जैसा जान पड़ता था। द्रोण, भोज, जलसन्ध और काम्बोजों की सेना को पार कर तथा कृतवर्मा रूपी नक्र के फंदे से निकल तथा कौरव-सैन्यरूपी सागर को पार कर, सात्यकि मतवाले हाथी की तरह धीरे धीरे गमन करता हुआ आपकी सेना के योद्धाओं के दल में आ खड़ा हुआ। तब उसका वध करने की इच्छा से आपके महारथी पुत्र दुर्योधन, दुःशासन, चित्रसेन, विविंशति, शकुनि, दुःसह, दुर्धर्षण तथा बहुत से आपके पक्ष के अन्य शस्त्रधारी, अपने साथ बड़े बड़े दुर्धर्ष योद्धाओं को ले और क्रोध में भर, चारों ओर से सात्यकि को घेरने लगे। किन्तु सात्यकि को वे रोक न सके। वह आगे बढ़ता ही चला गया। तब वे लोग और भी अधिक क्रोध में भर उसके पीछे दौड़े।

हे राजन्! पूर्णमासी के दिन समुद्र में जल बढ़ाने का जैसा शब्द होता है, वैसा ही कोलाहल का शब्द आपकी सेना में हुआ। उन सब को अपने पीछे आते देख, सात्यकि ने मुसक्या कर अपने सारथि से कहा—हे सारथि! घोड़ों की चाल धीमी कर दे। क्योंकि देखो कौरवों की चतुरङ्गिणी सेना बड़ी तेज़ी से मेरी ओर दौड़ी चली आ रही है। किन्तु हे सारथि! जैसे पूर्णमासी के दिन उमड़ते हुए समुद्र को, उसका तट पीछे ढकेल देता है, वैसे ही मैं भी इस सेनारूपी समुद्र को पीछे लौटा दूँगा। इनको मैं अपने तीक्ष्ण बाणों से विद्ध करूँगा। तुम आज मेरे अग्नि तुल्य तेज़ बाणों से अगणित पैदलों, गजों, अश्वों और रथों को नष्ट हुआ देखोगे।' इन दोनों में इस प्रकार बातचीत हो ही रही थी कि, वे सैनिक यह कहते और चिल्लाते सात्यकि के निकट आ पहुँचे कि, मारो मारो! धरो धरो! खड़ा रह! खड़ा रह! देखो यह सात्यकि है! तब सात्यकि ने उन पर तीक्ष्ण बाणों को बरसाना आरम्भ किया। देखते देखते उसने तीन सौ अश्वारोहियों और

चार सौ गजारोहियों को यमालय भेज दिया। सात्यकि का उनके साथ यह लोकक्षयकारी युद्ध, देवासुर संग्राम की तरह बड़ी भीषणता से होने लगा।

हे राजन्! आपके पुत्र की मेघमण्डल के समान खड़ी सेना पर सात्यकि विषधर सर्पों की तरह बाणों की वृष्टि करने लगा। आपके योद्धाओं ने बाणों की वृष्टि कर सात्यकि को ढक दिया। किन्तु इससे सात्यकि ज़रा भी न घबड़ाया। उसने तुम्हारे सैनिकों का नाश करना आरम्भ किया। हे राजन्! वहाँ मुझे एक बड़ा अचरज देख पड़ा। वह यह कि, सात्यकि का एक भी बाण व्यर्थ नहीं जाता था। कौरव सेनारूपी महासागर की गति सात्यकिरूपी तट से टकरा कर स्थगित हो गयी। फिर जब सात्यकि ने बाणवृष्टि कर, उस सैन्य को चारों ओर से मारना शुरू किया, तब उस सेना के मनुष्य, हाथी और घोड़े विकल हो भागने लगे। उस समय वह सेना सर्दी से थरथराती गौ की तरह काँपती हुई भागने लगी। उस समय उस सेना में मुझे एक भी ऐसा पैदल, रथ, हाथी, घोड़ा अथवा उनका सवार न देख पड़ा, जो सात्यकि के बाणप्रहार से चोटिल न हुआ हो। हे राजन्। सात्यकि ने हमारी सेना का जितना नाश किया, उतना तो अर्जुन ने भी नहीं किया था। पुरुषश्रेष्ठ सात्यकि अपनी फुर्ती और रणकौशल दिखाता हुआ, अर्जुन से भी बढ़ कर युद्ध करने लगा। इतने में दुर्योधन ने तीन बाण मार कर, सात्यकि के सारथि को घायल किया। फिर चार तेज़ बाण मार उसने सात्यकि के चारों घोड़ों को घायल कर, पीछे तीन, फिर आठ बाण मार, सात्यकि को भी घायल किया। दुःशासन ने सोलह, शकुनि ने पचीस और चित्रसेन ने पाँच बाण सात्यकि के ऊपर छोड़े। दुःसह ने पन्द्रह बाण उसकी छाती में मारे। इन बाणों की चोट से चोटिल वृष्णिसिंह सात्यकि मुसक्याया और उसने उन सब के तीन तीन बाण मारे और शत्रुओं को बुरी तरह घायल कर, वह सेना में घूमने लगा। उसने शकुनि का धनुष और हाथों के चमड़े के दस्ताने काट डाले। फिर तीन बाण दुर्योधन की छाती में मारे। फिर

चित्रसेन के सौ, दुःसह के दस और दुःशासन के दस बाण मार, उनको वेध डाला। हे राजन्! फिर आपके साले ने दूसरा धनुष उठाया और पहले आठ और फिर पाँच बाणों से सात्यकि को विद्ध किया। दुःशासन ने दस, दुःसह ने तीन और दुर्मुख ने बारह बाण सात्यकि के मारे। फिर दुर्योधन ने सात्यकि के तिहत्तर बाण मारे और उसके सारथि को तीन बाण मार घायल किया। तब सात्यकि ने उनमें से प्रत्येक के पाँच पाँच बाण मारे। तदनन्तर सात्यकि ने एक भल्ल बाण मार, दुर्योधन के सारथि को मार डाला। वह निर्जीव हो भूमि पर गिर पड़ा। सारथि से रहित आपके पुत्र के रथ को घोड़े पवन वेग से भगा, युद्धभूमि के बाहिर ले गये। उस समय दुर्योधन को रथ से भागते देख, आपके अन्य पुत्र और सहस्रों सैनिक भी भागे। तब सेना को भागते देख, सात्यकि ने सुवर्ण पुङ्ख एवं सान पर रखे हुए बाण बरसाने आरम्भ किये। इस प्रकार आपके अगणित सैनिकों को भगा कर, सात्यकि, श्वेतवाहन अर्जुन की ओर चला। इस समय रण में प्रवृत्त सात्यकि को देखने वाला यह नहीं देख पाता था कि, वह कब तरकस से बाण निकालता, कब उसे धनुष पर रखता और कब उसे छोड़ता है एवं कब वह अपने सारथि पर चलाये हुए बाणों से उसकी रक्षा करता है। उसके इस अद्भुत रणकौशल को देख, आपके योद्धा उसकी बारम्बार प्रशंसा करते थे।

एक सौ इक्कीस का अध्याय

सात्यकि का सैन्य-प्रवेश

धृतराष्ट्र बोले—हे सञ्जय! मेरी विशाल वाहिनी का संहार कर और अर्जुन के रथ की ओर जाते हुए सात्यकि को देख, मेरे वेहया पुत्रों ने क्या किया? अरे उन मृतप्राय मेरे पुत्रों ने जब अर्जुन तुल्य पराक्रमी सात्यकि को

देखा, अब उनको ढाँढस कैसे बँधा ? इस प्रकार बारम्बार हार कर भागे हुए मेरे पुत्र, क्षत्रियों को क्या मुँह दिखलावेंगे ? क्या वे निर्लज्ज अपने मुँह से यह कहेंगे कि, महायशस्वी सात्यकि हमको जीत कर और सेना में हो कर चला गया ? हे सञ्जय ! यह तो बतला कि, मेरे पुत्रों के जीते जागते सात्यकि कैसे आगे बढ़ पाया ? मुझे तो तेरा यह कथन ही बड़ा आश्चर्यप्रद जान पड़ता है कि अकेला सात्यकि इतने महारथियों से लड़ा। मैं तो अपने पुत्रों को बड़ा मन्दभाग्य मानता हूँ कि, अकेले सात्यकि ने मेरे समस्त महारथियों को परास्त किया। हे सञ्जय ! जब अकेले सात्यकि को परास्त करने के लिये मेरी सेना पर्याप्त नहीं सिद्ध हुई; तब समस्त पाण्डवों के सामने, मेरी सेना का पता भी न चलेगा। द्रोणाचार्य को परास्त कर, वह मेरे पुत्रों को वैसे ही मार डालेगा जैसे सिंह मृगों को मारता है। कृतवर्मा आदि शूर भी जिससे लड़ कर पार न पा सके, वह वीरश्रेष्ठ अवश्य मेरे पुत्रों को मार डालेगा। तेरा यह कहना यथार्थ है कि, ऐसा जनसंहार तो अर्जुन ने भी नहीं किया था, जैसा कि महायशस्वी सात्यकि ने किया।

यह सुन सञ्जय ताना देते हुए धृतराष्ट्र से कहने लगे, हे राजन् ! यह सब आपकी दुष्टनीति का प्रतिफल और दुर्योधन के दुष्कर्मों का परिणाम है। अब आगे का हाल आप सावधान हो कर सुनिये। मैं कहता हूँ। भागने वालों में से दुर्योधन के आदेशानुसार संशप्तक वीर लड़ने का पक्का मनसूबा कर, लौटे। उस समय सात्यकि पर आक्रमणकारी दल में तीन सहस्र अश्वारोही तथा शक, काम्बोज, वाल्हीक, यवन, पारद, कुलिन्द, तङ्गण, अम्बष्ठ, पिशाच, बर्बर तथा अन्य क्रोध में भरे पर्वतवासी योद्धा हाथों में पत्थर लिये हुए थे। इन सब के आगे दुर्योधन था। ये लोग सात्यकि के ऊपर वैसे ही लपके, जैसे पतङ्गे दीपक पर लपकते हैं। हे राजन् ! पत्थरों से लड़ने वाले पहाड़ी सैनिकों की संख्या पाँच सौ थी। अन्य जाति के सहस्रों रथी, सैकड़ों महारथी, एक सहस्र गजारूढ़, दो सहस्र अश्वारोही थे। पैदल सैनिक अगणित थे। ये सब अस्त्र शस्त्र छोड़ते सात्यकि के पीछे दौड़े।

दुःशासन उन सब को यह कह कर उत्तेजित कर रहा था कि, सात्यकि को मार डालो। उन सब ने मिल कर सात्यकि को घेर लिया।

हे राजन्! उस समय मैंने सात्यकि के अद्भुत पराक्रम को देखा। वह इतने योद्धाओं के साथ अकेला ही लड़ रहा था। उसके चेहरे पर घबराहट का नाम निशान भी न था। वह रथसेना, गजसेना अश्वरोही सेना तथा दस्यु जाति के सैनिकों को मारता काटता चला जाता था। हे राजन्! उस समय टूटे पहियों, टूटे अस्त्रों शस्त्रों, टूटे कवचों, मालाओं, आभूषणों, फटे वस्त्रों, टूटे रथों, घायल हाथियों, गिरी हुई ध्वजाओं से तथा मरे हुए योद्धाओं से परिपूर्ण रणभूमि, नक्षत्रों से परिपूर्ण आकाश जैसी जान पड़ती थी। अंजन, वामन, सुप्रतीक, महापद्म, ऐरावत तथा अन्य कुलों में उत्पन्न पर्वताकार बहुत से उत्तम गज, मरे हुए भूमि पर पड़े थे। वनायु, काम्बोज, वाल्हीक और पर्वतों में उत्पन्न हुए सैकड़ों और सहस्रों हाथियों को सात्यकि ने मार डाला था। सब का नाश होते देख कर वे दस्यु जाति के लोग भागने लगे, तब दुःशासन ने उनसे ललकार कर कहा—अरे पापियो! भागने से क्या लाभ? पीछे लौट चलो। किन्तु इतना कहने पर भी जब वे नहीं लौटे और पहले से भी अधिक वेग से भागने लगे—तब आपके पुत्र दुःशासन ने पत्थरों से लड़ने वाले पहाड़ियों से लड़ने को कहा। सात्यकि को पत्थरों से लड़ाई लड़नी नहीं आती थी। अतः दुःशासन ने उन पहाड़ी योद्धाओं से कहा—सात्यकि पत्थरों की लड़ाई से अनभिज्ञ है और कौरवों को भी इस प्रकार के युद्ध का ज्ञान नहीं है। अतः तुम सात्यकि को पत्थरों से मार डालो। अरे तुम धावा करो। डरो मत। सात्यकि तुमसे न जीत पावेगा। यह सुन वे पहाड़ी सैनिक सात्यकि पर वैसे ही टूट पड़े, जैसे राजा के पास मन्त्री भाग कर आँय। पहाड़ी सैनिक पत्थरों के बड़े बड़े टुकड़े हाथों में ले सात्यकि के सामने आ खड़े हुए, आपके पुत्र के कहने से और भी बहुत से लोग हाथों में गोफनियें ले कर, सात्यकि के चारों ओर के मार्ग रोक कर खड़े हो गये, शिलायुद्ध करने की इच्छा से आते

चढ़ाई होती उन आश्रमों का दृश्य बड़ा वीभत्स हो उठता था। जगह जगह टूटे कलश और स्रुवे पड़े हुए देख पड़ते और अग्निहोत्र की आग फैली हुई देख पड़ती थी। कालकेयों के डर से वेदाध्ययन और यज्ञोत्सव एक प्रकार से बंद हो गये। इस लिये जगत् निरुत्साहित सा हो गया। लोग मारे डर के अपनी रक्षा के लिये इधर उधर भाग खड़े हुए। कितने ही गुफाओं में जा छिपे, कितने ही झरनों के निकट चले गये और कितनों ने तो भय के मारे प्राण ही छोड़ दिये। उस समय जो अपने को बड़े शूरवीर लगाते थे और बाणैत थे, वे उन दैत्यों का वध करने के लिये हर्षित हो उन्हें ढूंढ निकालने में अत्यन्त परिश्रम करने लगे। किन्तु कालकेय दैत्य तो दिन भर समुद्र में छिपे रहते थे। अतः उन लोगों को इन दैत्यों का पता न लग सका और वे खोजने वाले खोजते खोजते थक गये। अन्त में हताश हो वे अपने अपने घरों को लौट आये।

हे राजन्! यज्ञोत्सवों के बंद होने के कारण जगत् का नाश होते देख, देवता बहुत दुःखी हुए और इन्द्र के साथ परामर्श कर, यह निश्चय किया कि, अब हमको परमात्मा के शरण में जा कर, अपनी दुःख भरी कथा उनको सुनानी चाहिये। अन्त में इस निश्चय के अनुसार समस्त देवता एकत्र हो शरणागतरक्षक, शरणरूप, समर्थ, अपराजित, अजन्मा और सर्वव्यापक, मधुसूदन भगवान् नारायण के निकट गये और उनको प्रणाम कर, इस प्रकार प्रार्थना की।

हे प्रभो! इस चराचर जगत् के तथा हम सब के रचने वाले आप हैं और इस विश्व के पालनकर्त्ता और नाश करने वाले भी आप ही हैं। हे कमललोचन! पूर्वकाल में जब पृथिवी, समुद्र में डूब गयी थी, तब वाराह का रूप धारण कर जगत् के हित के लिये आपने ही पृथिवी का जल से उद्धार किया था। हे पुरुषोत्तम! आपने ही नरसिंह रूप धारण कर, आदिदैत्य हिरण्यकशिपु का संहार किया था। फिर आपने वामन रूप धारण कर, समस्त जीवों से अवध्य बलि नामी महाअसुर को त्रिलोकी के

रथियों को घोड़े, फरपट दौड़ कर, भगाये लिये जा रहे हैं। शस्त्र त्याग कवच-हीन योद्धा घायल हो, चारों ओर भाग रहे हैं। सारथि इस तुमुल युद्ध में घोड़ों को सम्हाल नहीं सकते। इसीसे घोड़े भड़क भड़क कर बड़े ज़ोर से दौड़ रहे हैं।

द्रोण के इन वचनों को सुन, उनके सारथि ने उनसे कहा—हे आयुष्मन्! देखिये, देखिये कौरवों की सेना कैसी चारों ओर भागी जा रही है। देखिये, घायल हुए योद्धा भी चारों ओर से दौड़े आ रहे हैं। इधर ये शूरवीर पाँचाल राजे आपको मारने की इच्छा से पाण्डवों सहित चारों ओर से हम लोगों पर चढ़ाई कर रहे हैं। अतः हे शत्रुनाशन! यहाँ इनसे लड़ना उचित है, अथवा आगे चलना, इसका निर्णय कर, आप मुझे आज्ञा दें। स्मरण रहे—सात्यकि समीप नहीं है। वह यहाँ से बहुत दूर आगे निकल गया है। द्रोण का सारथी यह कह ही रहा था कि, बहुत से योद्धाओं का नाश करता हुआ सात्यकि देख पड़ा। कितने ही रथी सात्यकि के बाणों से क्षत विक्षत शरीर हो, उसके रथ को त्याग, द्रोणाचार्य की सेना की ओर भाग आये। पहले दुःशासन जिन रथियों को साथ ले, सात्यकि पर आक्रमण करने गया था, वे सब रथी भी भयभीत हो, अपने बचाव के लिये द्रोण के रथ की ओर दौड़े।

एक सौ बाइस का अध्याय

द्रोण के साथ घमासान युद्ध

सञ्जय ने कहा—हे धृतराष्ट्र! द्रोण ने दुःशासन के रथ को अपने निकट खड़ा देख, उससे कहा—अरे दुःशासन! ये सब रथी क्यों भाग रहे हैं? राजा दुर्योधन का तो कोई अनिष्ट नहीं हुआ? सिन्धुराज जयद्रथ अभी तक जीवित है न? तू राजपुत्र, राजा का भाई और युवराज है तथा अपने को महारथियों में लगाता है! तो भी तू रण से भागता है! तूने

द्रौपदी से पुकार कर कहा था—" तू जुए में जीती गयी है। तू अब दासी है। अतः हम लोगों का तू कर, मेरे बड़े भाई के कपड़े धोया कर, पाण्डवों में से कोई पाण्डव अब तेरा पति नहीं है। वे तो अब बिना तेल के तिलों जैसे निस्सार हैं। सो तू पहले द्रौपदी से ऐसे कठोर वचन कह कर, अब किस मुँह से भागता है? तू तो सब पाण्डवों और पाञ्चालों से स्वयं ही बैर बाँध चुका है। सो अब अकेले सात्यकि ही से डर गया? क्या तुझे जुए के पाँसे पकड़ते समय यह मालूम न था कि, ये पाँसे ही पीछे दारुण सर्पों की तरह बाणों का रूप धारण कर लेंगे। वह तू ही है, जिसने प्रथम पाण्डवों से अत्यन्त दारुण शब्द कहे थे। द्रौपदी की बेइज़्ज़ती कर, उसे घोर कष्ट देने वाला भी तू ही है। अरे तेरा वह डींगें मारना, तेरा वह तर्जन गर्जन, तेरा वह मान, इस समय कहाँ चला गया? पाण्डवों को सर्प की तरह क्रुद्ध कर, अब तू भागता कहाँ है? यह भरतवंशी राजा की समस्त सेना, राज्य और दुर्योधन सभी तो शोच्य दशा को प्राप्त हो रहे हैं। क्योंकि तुझ जैसे कठोर हृदय का भाई ऐसे विपत्तिकाल में भागने को तैयार है। अपने को वीर जगाने वाले दुःशासन! तुझे तो भयभीत हो भागती हुई कौरवों की सेना की अपने बाहुबल से रक्षा करनी चाहिये। किन्तु तू तो रण से भाग, शत्रुओं का हर्ष बढ़ा रहा है। हे शत्रुसूदन! जब तू सेना का आधार और नेता हो कर भयभीत हो भाग जायगा; तब भयभीत हो और कौन यहाँ खड़ा रहना पसंद करेगा? यदि आज अकेले लड़ते हुए सात्यकि के साथ लड़ते समय तू रथ छोड़ भागना चाहता है, तो हे दुःशासन! जब, गाण्डीवधारी अर्जुन, भीम अथवा नकुल, सहदेव को युद्ध करते देखेगा, तब तेरी क्या दशा होगी? सात्यकि के सूर्य और अग्नि की तरह चमचमाते बाण तो अर्जुन के बाणों के समान नहीं हैं। अरे उनसे डर कर तू भागा आता है। अरे यदि भागना ही है तो भाग कर अपनी माता गान्धारी के पेट में घुस जा। क्योंकि इस धराधाम पर जहाँ कहीं भाग कर जायगा, वहाँ तेरे प्राण बच न सकेंगे। यदि तुझे भागना ही है, तो चुपचाप अपना राजपाट युधिष्ठिर को

सौंप दे। जब तक केंचुल रहित सर्पों जैसे अर्जुन के भयङ्कर बाण तेरे शरीर में नहीं घुसते, उससे पहले ही, तू पाण्डवों से सन्धि कर ले और यह पृथिवी उनको अर्पण कर दे। जब तक पाण्डवों के हाथ से तेरे सौओं भाई नहीं मारे जाते और पृथिवी नहीं जीती जाती, उससे पहले ही तू सुलह कर ले। महाबली भीमसेन द्वारा अपनी विशाल सेना का नाश किये जाने तथा भाइयों के पकड़े जाने के पूर्व ही तू पाण्डवों से सन्धि कर ले। भीष्म ने तो पहले ही तेरे भाई दुर्योधन से कहा था कि समर में पाण्डवों को जीतना असम्भव है। किन्तु तेरे मूढ़मति भाई ने उनका कहना न माना। अस्तु, अब तू धीरज धर और सावधान हो कर, पाण्डवों से लड़। मैंने सुना है कि भीम ने तेरा रुधिर पीने की प्रतिज्ञा की है। सो वह अपनी प्रतिज्ञा निश्चय ही पूरी करेगा। अरे मूर्ख! क्या तुझे भीम का पराक्रम अविदित था? जो तूने पहले तो उसके साथ बिगाड़ किया और अब युद्ध से भागता है? हे भरतवंशी! जहाँ सात्यकि लड़ रहा है, वहाँ तू शीघ्र। जा तुझे भागते देख, तेरी सेना भी भागी जा रही है। अतः अपने लिये न सही, अपने बन्धुजनों के लिये तो सत्यपराक्रमी सात्यकि से जा कर लड़।

सञ्जय बोले—हे धृतराष्ट्र! द्रोण के इन वचनों को सुन कर भी आप का पुत्र दुःशासन कुछ न बोला और द्रोण की बातें सुनी अनसुनी कर सात्यकि की ओर चला। पीछे को पैर न देने वाले म्लेच्छों की विशाल वाहिनी अपने साथ ले, दुःशासन जा कर सात्यकि से लड़ने लगा। द्रोण भी क्रोध में भर मध्यम वेग से पाञ्चालों और पाण्डवों के ऊपर लपके। वे पाण्डवों की सेना में घुस, सैकड़ों सहस्रों योद्धाओं को खदेड़ने लगे। उस समय द्रोण अपने नाम को सुना सुना कर, पाण्डवों, पाञ्चालों और मत्स्यों की सेनाओं का संहार करने लगे। उस समय पाञ्चालराज-पुत्र, कान्तिमान् वीरकेतु ने द्रोणाचार्य का सामना किया। उसने नतपर्व पाँच बाणों से द्रोण को घायल किया और एक बाण से उनके रथ की ध्वजा काट डाली। फिर सात बाण मार, उनके सारथि को घायल किया। हे राजन्! यह एक

बड़े आश्चर्य की बात मैंने देखी कि, आचार्य द्रोण जब उस पाञ्चाल राजकुमार को युद्ध में न दबा सके, तब द्रोण को ढीला पड़ते देख, धर्मराज के पक्ष के योद्धाओं ने द्रोण को चारों ओर से घेर लिया। वे सब द्रोण के ऊपर अग्नि समान स्पर्शवाले बाण, तोमर तथा विविध प्रकार के अस्त्र फेंकने लगे। तब द्रोण ने बाणवृष्टि कर उन सब अस्त्र शस्त्रों को विफल कर दिया और वे वैसे ही सुशोभित हुए जैसे आकाश में बड़े बड़े बादलों को तितर बितर करने वाला पवन। द्रोण ने एक बड़ा भयङ्कर बाण वीरकेतु के रथ की ओर छोड़ा। वह बाण वीरकेतु को घायल कर रक्त से सना हुआ, बड़ी फुर्ती से पृथिवी में घुस गया। तदनन्तर वीरकेतु अपने रथ से वैसे ही पृथिवी पर गिर पड़ा, जैसे पहाड़ के शिखर पर लगा हुआ चम्पा का पेड़ आँधी से उखड़ कर गिर पड़ता है। उस राजकुमार के मारे जाते ही पाञ्चालों ने द्रोण को घेरा। भाई के मारे जाने से क्रुद्ध, चित्रकेतु, सुधन्वा, चित्रवर्मा और चित्ररथ, लड़ने के लिये द्रोण की ओर लपके। इन लोगों ने द्रोण पर वर्षाकालीन मेघों की जलवृष्टि की तरह बाणवृष्टि की। जब इन राजकुमारों ने बाणों से द्रोण को बहुत पीड़ित किया; तब द्रोण बड़े क्रुद्ध हुए। द्रोण ने उन राजकुमारों पर बाणों का जाल सा बिछा दिया। उस समय वे राजकुमार किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो गये। तब मुसक्याते हुए द्रोण ने उनके घोड़ों, सारथियों तथा रथों को नष्ट कर उन्हें रथहीन कर दिया। फिर भल्ल बाणों से उनके सिरों को वैसे ही काट डाला, जैसे वृक्ष से फूल तोड़े जाते हैं। जैसे देवासुर संग्राम में पहले दैत्य और दानव मर कर गिरे थे, वैसे ही वे तेजस्वी राजकुमार भी मर मर कर रथों से भूमि पर गिर गये। देवताओं के समान महारथी पाञ्चालों को मरा हुआ देख, धृष्टद्युम्न भी घबड़ाया। वह रो पड़ा। अन्त में क्रोध में भर, उसने द्रोण के रथ पर धावा किया। उसने बाण मार कर द्रोण को रोक दिया। इससे सेना में हाहाकार मच गया। धृष्टद्युम्न ने बाणवृष्टि कर द्रोण को ढक दिया, किन्तु इससे द्रोण ज़रा भी विचलित न हुए। वे हँसते हुए लड़ने लगे। उधर धृष्टद्युम्न मारे क्रोध

के आपे में न रहा। उसने नतपर्व नव्वे बाण कस कस कर द्रोण की छाती में मारे। इससे अत्यन्त घायल हो द्रोण मूर्छित हो रथ की गद्दी पर बैठ गये। यह देख धृष्टद्युम्न ने धनुष बाण रख नंगी तलवार उठा ली और द्रोण के रथ पर चढ़ गया। उस समय धृष्टद्युम्न के नेत्र क्रोध के मारे लाल हो रहे थे। वह द्रोण का सिर काटना चहता ही था कि द्रोण सचेत हो गये। सचेत होने पर उन्होंने हाथ में नंगी तलवार लिये धृष्टद्युम्न को अपने समीप खड़ा देखा। तब उन्होंने धनुष उठा लिया और समीप में चोट करने वाले वितस्त बाणों से धृष्टद्युम्न पर प्रहार करना आरम्भ किया। उन बाणों से पीड़ित होने पर धृष्टद्युम्न उत्साहहीन हो गया और द्रोण के रथ से कूद, तुरन्त अपने रथ पर जा बैठा। वहाँ उसने एक बड़ा धनुष उठा, पुनः द्रोण को विद्ध करना आरम्भ किया। द्रोण भी धृष्टद्युम्न को बाणों से विद्ध करने लगे। पूर्वकाल में त्रिलोकी के आधिपत्य के लिये जैसा घोर युद्ध प्रह्लाद और इन्द्र में हुआ था, वैसा ही युद्ध इस समय द्रोण और धृष्टद्युम्न में हुआ। वे दोनों रणपटु योद्धा विचित्र प्रकार के मण्डलों से फिरते हुए एक दूसरे पर बाणों के प्रहार कर रहे थे। वर्षाकालीन मेघों की जलवृष्टि की तरह वे दोनों बाणवृष्टि कर, अन्य योद्धाओं को आश्चर्य चकित कर रहे थे। उनके बाणों से आकाश ढक गया। उस समय आपके पक्ष के योद्धाओं सहित अन्य समस्त क्षत्रिय उनकी प्रशंसा कर रहे थे।

हे राजन्! उस समय पाञ्चाल योद्धाओं ने चिल्ला कर कहा—धृष्टद्युम्न अवश्य द्रोण को हरा देगा। यह सुन द्रोण ने बड़ी फुर्ती से धृष्टद्युम्न के सारथि का सिर वैसे ही धड़ से अलग कर नीचे डाल दिया; जैसे पका हुआ फल पेड़ से तोड़ कर गिराया जाता है। उस समय धृष्टद्युम्न के रथ के घोड़े भड़के और इधर उधर भागने लगे। तब द्रोण आस पास खड़े पाञ्चालों और सृञ्जयों से लड़ने लगे। प्रतापी एवं अरिन्दम द्रोण, पाञ्चालों और पाण्डवों को परास्त कर, पुनः अपने सैन्यव्यूह में जा खड़े हुए। फिर पाण्डवों में द्रोण को जीतने का साहस न रह गया।

एक सौ तेइस का अध्याय

दुःशासन की हार

संजय बोले—हे धृतराष्ट्र ! जैसे जलवृष्टि करता हुआ मेघ आकाश में दौड़ता है, वैसे ही बाणवृष्टि करता हुआ दुःशासन, सात्यकि के रथ के पीछे दौड़ा। उसने पहिले साठ और फिर सोलह बाण मार कर, सात्यकि को विद्ध किया। किन्तु सात्यकि अचल मैनाक की तरह, ज़रा भी न हिला डुला। यद्यपि दुःशासन ने उसके ऊपर बहुत से बाण बरसाये तथा भिन्न भिन्न देश के रथियों सहित उसे घेरा और चारों ओर से उस पर बाणवृष्टि की। उसने मेघ की तरह गर्ज कर दसों दिशाओं को प्रतिध्वनित किया; तथापि सात्यकि युद्ध में हटा नहीं, प्रत्युत उसने दुःशासन को आक्रमण करते देख, उस पर स्वयं आक्रमण किया और बाणों से उसे ढक दिया। उस समय दुःशा-सन के साथ लड़ने वाले सैनिक, दुःशासन के देखते ही देखते भाग खड़े हुए। उनके भाग जाने पर भी हे राजन् ! आपका पुत्र दुःशासन निर्भीक हो वहाँ रहा और बाणों से सात्यकि को पीड़ित करने लगा। उसने घोड़ों के चार, सारथि के तीन और सात्यकि के सौ बाण मारे। फिर वह सिंहनाद कर गर्जा। इस पर क्रुद्ध हो, सात्यकि ने सीधे जाने वाले बाण मार कर, रथ, सारथि और ध्वजा सहित दुःशासन को बाणों से ढक दिया। जैसे मकड़ी अपने जाले से दूसरे को ढक देती है, वैसे ही सात्यकि ने दुःशासन को बाणों से ढक दिया। दुःशासन को बाणों से आच्छादित देख, राजा दुर्योधन ने उसकी सहायता के लिये त्रिगर्तों को भेजा। रणकुशल तीन सहस्र त्रिगर्त रथी दुःशासन की ओर चले। उन लोगों ने युद्ध में न भागने की आपस में शपथ खा, चारों ओर से सात्यकि के रथ को घेर लिया। तब देखते ही देखते सात्यकि ने मारे बाणों के सामने खड़े पाँच सौ त्रिगर्त रथियों को मार डाला। आँधी से उखड़ कर धड़ाधड़ पहाड़ पर से गिरते हुए वृक्षों की तरह, वे योद्धा भूमि पर धड़ाधड़ गिर पड़े। बाणप्रहार से

घायल हो तथा रक्त से लथपथ हो भूमि पर गिरे हुए गजों, अश्वों, ध्वजाओं और रक्तरञ्जित मुकुटों से वहाँ की भूमि, ऐसी जान पड़ती थी, मानों वहाँ टेसू के फूल खिले हों। सात्यकि द्वारा युद्ध में मारे गये आपके योद्धाओं को कोई रक्षक वैसे ही न मिला, जैसे दलदल में फँसे हाथी को कोई रक्षक नहीं मिलता। तब वे लोग आत्मरक्षा के लिये द्रोण के रथ की ओर वैसे ही दौड़े जैसे गरुड़ के भय से सर्प बिल की ओर भागते हैं। पाँच सौ त्रिगर्त योद्धाओं का नाश कर सात्यकि धीरे धीरे अर्जुन के रथ की ओर बढ़ा। तब आपके पुत्र दुःशासन ने आगे जा, सात्यकि के नतपर्व नौ बाण मारे। तब सात्यकि ने भी गिद्ध के पंखों से युक्त तथा सुवर्ण पुँख एवं सीधे जाने वाले पाँच तेज़ बाण दुःशासन के मारे। इस पर दुःशासन ने पहिले तीन, फिर पाँच बाण मार, सात्यकि को विद्ध किया। तब सात्यकि ने पाँच बाण दुःशासन के मारे और उसका धनुष काट डाला। इस प्रकार सब को विस्मित कर सात्यकि पुनः अर्जुन के रथ की ओर जाने लगा। इस पर दुःशासन अत्यन्त क्रुद्ध हुआ और उसने अपने वैरी का नाश करने के लिये सात्यकि के ऊपर एक ठोस लोहे की शक्ति फैंकी। किन्तु सात्यकि ने कङ्कपुंख युक्त पैने बाण से उस शक्ति के टुकड़े टुकड़े कर डाले। तब दुःशासन ने दूसरा धनुष ले सात्यकि को बाणों से विद्ध किया और वह सिंह की तरह दहाड़ा। तब क्रोध में भर सात्यकि ने हे राजन्! आपके पुत्र को मुग्ध कर, पहले अग्निशिखा की तरह चमचमाते, नतपर्व तीन बाण उसकी छाती में मारे। फिर पूरे लोहे के और पैनी नोकों वाले आठ बाण मारे। इस पर दुःशासन ने बीस बाण सात्यकि के मारे। तब सात्यकि ने नतपर्व तीन बाण पुनः दुःशासन की छाती में मारे। फिर अत्यन्त क्रुद्ध हो सात्यकि ने नतपर्व बाणों से उसके घोड़ों और सारथि को विद्ध किया। फिर भल्ल बाण से दुःशासन का धनुष काट, पाँच बाण मार उसके हाथों के दस्ताने फाड़ डाले। दो भल्ल बाणों से उसकी ध्वजा तथा रथशक्ति को काटा। फिर पैने बाणों से सात्यकि ने उसके पार्श्व रक्षकों तथा सारथि का वध किया। दुःशासन की यह दशा

देख, त्रिगर्तों का सेनापति दुःशासन को अपने रथ में बिठा ले जाने लगा। उस समय कुछ दूर तक सात्यकि ने उसका पीछा किया, किन्तु भीमसेन की प्रतिज्ञा उसे स्मरण हो आयी। अतः सात्यकि ने दुःशासन का वध नहीं किया।

हे राजन्! भरी सभा में भीमसेन ने आपके समस्त पुत्रों का वध करने की प्रतिज्ञा की थी। अतः सात्यकि ने केवल दुःशासन को परास्त तो किया, किन्तु उसका वध नहीं किया। फिर सात्यकि जिस रास्ते से अर्जुन गया था, उसी रास्ते से शीघ्रतापूर्वक जाने लगा।

एक सौ चौबीस का अध्याय

घोरयुद्ध

धृतराष्ट्र ने कहा—हे सञ्जय! आश्चर्य! सात्यकि इस तरह चला गया। उसको न तो कोई मार सका और न कोई रोक सका। क्या मेरी सेना में कोई भी ऐसा रथी उसकी टक्कर का न निकला? जैसे दानवों में अकेला इन्द्र घूमे, वैसे ही सत्यपराक्रमी सात्यकि ने उस युद्ध में काम किया, जिस मार्ग से सात्यकि गया, वह मार्ग सूना तो था नहीं। या उस मार्ग की रक्षा पर जो योद्धा थे, उनमें से बहुत पहले ही मारे जा चुके थे? हे सञ्जय! तू सात्यकि के पराक्रम का जैसा बखान करता है, वैसा पराक्रम तो इन्द्र भी नहीं दिखा सकते। वृष्णियों और अन्धकों में सब से बढ़ कर वीर सात्यकि के अचिन्त्य पराक्रम का वृत्तान्त सुन, मेरा मन दुःखी होता है। हे सञ्जय! तेरे कथन से तो जान पड़ता है कि, मेरे पुत्र अब न बचेंगे। क्योंकि अकेले सात्यकि ने ही मेरी अधिकांश सेना नष्ट कर डाली। जब बहुत से महाबली उससे लड़ रहे थे, तब भी अकेला सात्यकि उन सब को अतिक्रम कर, कैसे आगे बढ़ता चला गया? हे सञ्जय! तुम सब हाल मुझे सुनाओ।

सञ्जय ने कहा—हे राजन् ! आपके रथियों, गजपतियों, अश्वारोहियों और पैदल सैनिकों ने सात्यकि के रोकने में कोई बात उठा नहीं रखी थी, बल्कि प्रलयकाल की तरह घोर युद्ध किया था। किन्तु हे मानद ! मेरा तो यह विश्वास है कि, दूर दूर से आयी हुई सेनाओं का आपकी ओर जितना जमाव था, उतना जमाव इस संसार में इसके पूर्व कभी नहीं हुआ था। उसे देखने के लिये जो देवता और चारण आये थे, उनका कथन था कि, यह इतना अधिक सैन्य समूह इस धराधाम पर न कभी देखने में आया है और न आगे देखने में आवेगा। हे प्रजानाथ ! द्रोण ने जयद्रथ की रक्षा के लिये जैसा व्यूह रचा था, वैसा व्यूह भी आज तक कभी किसी ने नहीं रचा था। तूफान से लहराते हुए समुद्र में जैसा तुमुल शब्द होता है, वैसा ही भयङ्कर शब्द उस युद्ध में एक दूसरों पर आक्रमण करने वाली सेनाओं का हो रहा था। हे राजन् ! बाहर से आये हुए राजाओं के सहस्रों और सैकड़ों सैनिक दल, आपकी तथा पाण्डवों की सेना में थे, उस रण में लड़ने वाले अनेक वीर योद्धा क्रोध में भर जब गरजते थे, तब वहाँ बड़ा ही भयङ्कर एवं लोमहर्षणकारी शब्द सुन पड़ता था।

हे राजन् ! तदनन्तर भीमसेन, धृष्टद्युम्न, नकुल, सहदेव और धर्मराज ने चिल्ला कर अपने पक्ष के सैनिकों से कहा—अरे सैनिकों ! शूरवीर अर्जुन और सात्यकि शत्रुसैन्य में घुस गये हैं। अतः धावा बोल कर झटपट शत्रुओं का नाश कर डालो। ऐसा करो जिससे वे दोनों सकुशल जयद्रथ के निकट जा पहुँचें। वे लोग इस प्रकार अपने सैनिकों को उत्तेजित करने लगे। फिर वे लोग कहने लगे, यदि कहीं वे दोनों मारे गये, तो कौरवों का मनोरथ पूरा होगा और हम पराजित हो जाँयगे। अतः तुम सब लोग एकत्र हो, कौरवसेना रूपी समुद्र को वैसे ही बिलो डालो, जैसे पवन समुद्र को बिलो डालता है। इस प्रकार उत्तेजित किये जाने पर वे सैनिक अपनी जानों को हथेलियों पर रख, कौरवों की सेना का नाश करने लगे। उधर हे राजन् ! आपके पक्ष के योद्धा भी यशप्राप्ति की कामना से डट कर, शत्रुओं

का सामना करने लगे। इधर जब इस प्रकार तुमुल युद्ध हो रहा था, तब सात्यकि मार्गरोधक अपने समस्त शत्रुओं को परास्त कर अर्जुन की ओर गया। सुवर्ण के कवचों पर सूर्य की किरणों के पड़ने से सैनिकों की आँखें चौंधिया रही थीं।

हे राजन्! इतने में आक्रमणकारी पाण्डवों के सैन्य को दुर्योधन ने झकझोर डाला। दुर्योधन और पाण्डवों में बड़ा नाशकारी युद्ध हुआ।

धृतराष्ट्र ने पूँछा—हे सञ्जय! अपनी सेनाओं के भाग जाने पर, जब पाण्डवों की सेना ने आक्रमण किया, तब महाविपत्ति में पड़, दुर्योधन ने रण में पीठ तो नहीं दिखलायी थी? युद्ध में बहुतों के साथ अकेले एक का लड़ना बड़ा कठिन काम है। फिर राजा का बहुत से योद्धाओं का सामना करना तो और भी अधिक कठिन काम है। दुर्योधन बड़े सुख से पाला पोसा गया है और स्वयं राजा है। वह अकेला बहुत से योद्धाओं के साथ लड़ते लड़ते संग्राम छोड़ भागा तो नहीं था?

सञ्जय ने उत्तर देते हुए कहा—राजन्! अब आपके एकाकी लड़ने वाले पुत्र के अद्भुत संग्राम का वृत्तान्त सुनिये। जैसे हाथी किसी तालाब में घुस कमलों को रौंद डाले, वैसे ही दुर्योधन ने पाण्डवों की सेना को तब मथ डाला। तब अपनी सेना को दुर्योधन द्वारा नष्ट होते देख, भीमसेन तथा पाञ्चाल योद्धाओं ने दुर्योधन पर धावा बोला। तब दुर्योधन ने भीम के दस, नकुल तथा सहदेव के तीन तीन, धर्मराज के सात, राजा विराट और द्रुपद के छः छः, शिखण्डी के सौ, धृष्टद्युम्न के बीस और द्रौपदी के पुत्रों में से प्रत्येक के तीन तीन बाण मार उन्हें घायल किया। इनके अतिरिक्त क्रोध में भर दुर्योधन ने और भी बहुत से गजारोहियों तथा अश्वारोहियों एवं रथियों को काटा। दुर्योधन ऐसी फुर्ती से बाण छोड़ रहा था कि, यह नहीं जान पड़ता था कि वह बाण को कब तरकस से निकालता है और कब धनुष पर रख छोड़ता है। उसका धनुष सदा मण्डलाकार ही देख पड़ता था। धर्मराज ने दो भल्ल बाणों से आपके पुत्र का धनुष काटा और तान कर दस

बाण दुर्योधन के मारे। वे बाण तुरन्त दुर्योधन का कवच फोड़ पृथिवी में घुस गये। यह देख पाण्डवों को बड़ी प्रसन्नता हुई। पूर्वकाल में वृत्रासुर का नाश करने के बाद जैसे महर्षियों ने इन्द्र को घेर लिया था, वैसे ही पाण्डवपक्षी सेनापतियों ने युधिष्ठिर को घेर लिया। इतने में आपके प्रतापी पुत्र ने दूसरा धनुष हाथ में लिया। फिर वह खड़ा रह, खड़ा रह, कहाँ जाता है, कहाँ जाता है, चिल्लाता हुआ धर्मराज की ओर झपटा। तब पाञ्चाल राजाओं ने एकत्र हो उसका सामना किया, परन्तु पर्वत जैसे जल बरसाने वाले मेघों को आगे बढ़ने से रोक देता है, वैसे ही महारथी द्रोणाचार्य ने, समरभूमि में दुर्योधन की रक्षा करने की अभिलाषा से उन सब योद्धाओं को आगे बढ़ने न दिया। हे महाराज! तब वहाँ पर पाण्डवों की सेना के साथ आपकी सेना के योद्धाओं का वैसा ही संग्राम हुआ, जैसा कि महादेव जी का सकल प्राणियों के संहार का खेल हुआ करता है। हे प्रभो! इसी बीच में उस स्थान पर जहाँ अर्जुन था, लोमहर्षणकारी भीषण कोलाहल होने लगा और उसने अन्य समस्त शब्दों को दबा लिया। हे राजन्! व्यूह के अन्त में जहाँ जयद्रथ था, वहाँ अर्जुन के साथ आपके पक्ष के वीरों का व्यूह के मध्य में कृतवर्मा के साथ सात्यकि का और व्यूह के मुख पर शत्रुसैन्य के साथ द्रोणाचार्य का महाभयङ्कर युद्ध हो रहा था। अर्जुन, सात्यकि और द्रोण क्रुद्ध हो जनसंहार करने लगे।

एक सौ पच्चीस का अध्याय

द्रोण की अद्भुत वीरता

सञ्जय ने कहा—हे राजन्! मध्याह्न के समय द्रोण और सोमकों में बड़ा भयङ्कर युद्ध हुआ। उसमें सिंहनाद करते हुए योद्धाओं का शब्द मेघ गर्जन जैसा हो रहा था। पुरुषों में वीर, आपके हितैषी भरद्वाजनन्दन

राजा सगर ने महाधनुर्धर अंशुमान से जो कहा था, वह अब हम कहते हैं। सुनो।

सगर ने कहा—हे तात! तेरे पिता को मैंने नगर से निकाल दिया है। उसके अतिरिक्त मेरे जो और पुत्र थे, वे जला कर भस्म कर डाले गये। तिस पर भी अश्वमेधीय अश्व नहीं मिला। इन समस्त कारणों से मेरे मन में बड़ा सन्ताप है। उस सन्ताप से मैं जला जाता हूँ। मेरे यज्ञ में यह विघ्न उपस्थित हुआ है। मेरी घबड़ाहट का एक यह भी कारण है। अतः हे पौत्र! तू घोड़े को ला कर, नरक से मुझे उद्धार कर। तू जैसे हो वैसे घोड़े को ले आ, जिससे मैं अपना अधूरा यज्ञ पूर्ण करूँ और स्वर्ग में जाऊँ।

जब महाराज सगर ने अंशुमान से यह कहा, तब अंशुमान भी दुःखी हुआ और उस स्थान पर गया जहाँ भूमि खुदी पड़ी थी। फिर वह उसी मार्ग से उस जगह जा पहुँचा, जहाँ वह घोड़ा मौजूद था और कपिल मुनि तप कर रहे थे। तेजनिधान पुरातन एवं ऋषिश्रेष्ठ कपिल जी को देख, अंशुमान ने भूमि पर गिर कर, उनको साष्टाङ्ग प्रणाम किया और अपने आने का कारण कहा। हे महाराज! धर्मात्मा कपिल, अंशुमान के वचन सुन, प्रसन्न हो गये और बोले—अच्छा मैं मुँह माँगा तुझे वर देता हूँ। तू वर माँग। अंशुमान ने प्रथम से अधूरे यज्ञ को पूरा करने के लिये वह घोड़ा माँगा और दूसरे वर से अपने पितरों के उद्धार के लिये प्रार्थना की।

यह सुन मुनिपुङ्गव एवं महातेजस्वी कपिल मुनि ने उस राजकुमार से कहा—हे अनघ! मैं तेरी इच्छानुसार तुझे वर देता हूँ। तेरा कल्याण हो। क्योंकि तू क्षमावान्, धर्मात्मा और सत्यवादी है। तुझसा पौत्र पा कर तेरा पितामह सगर कृतार्थ हुआ और तेरा पिता पुत्रवान् हुआ। तेरे ही प्रभाव से ये सगर के पुत्र स्वर्ग पावेंगे और तेरा पौत्र सगर के पुत्रों को पवित्र करने

धारी द्रोण के सामने ले चल। वह केकय तथा पाँचालों का नाश कर रहा है। यह सुनते ही सारथि ने काम्बोजदेशी शीघ्रगामी घोड़ों को तेज़ हाँक, शिशुपाल के पुत्र को द्रोण के निकट पहुँचा दिया। जैसे पतंगा दीपक पर झपटे, वैसे ही शिशुपाल का पुत्र धृष्टकेतु द्रोण को मारने को दौड़ा। उसने जाते ही द्रोण, उनके रथ, उनके घोड़ों तथा ध्वजा पर साठ बाण मारे। फिर उसने द्रोण को वैसे ही बाण मार कर छेड़ा; जैसे कोई सोते हुए सिंह को छेड़े। द्रोण ने एक क्षुरप्र बाण से उसका धनुष काट डाला। तब धृष्टकेतु ने दूसरा धनुष उठा लिया और मयूरपंखों से युक्त बाणों से वह द्रोण को विद्ध करने लगा। तब द्रोण ने मुसक्या कर चार बाण मार, उसके चारों घोड़े मारे और एक से सारथि का सिर उड़ा दिया। फिर जब धृष्टकेतु के भी पचीस बाण मारे; तब धृष्टकेतु गदा ले रथ से कूदा। फिर साँपिन जैसी भयङ्कर वह गदा उसने तान कर द्रोण पर छोड़ी। द्रोण ने कालरात्रि के समान सुवर्णभूषित लोहे की उस गदा को मारे बाणों के छिन्न भिन्न कर डाला। तब वह गदा बड़े धड़ाके के साथ भूमि पर गिर पड़ी। अपनी गदा को विफल जाते देख, धृष्टकेतु बहुत चिढ़ा और एक शक्ति और एक तोमर द्रोण के ऊपर फेंका। तब द्रोण ने पाँच पाँच बाण मार, उन दोनों को भी काट कर भूमि पर डाल दिया। तदनन्तर अपना वध करने को उद्यत धृष्टकेतु को मार डालने के लिये द्रोण ने एक तेज़ बाण उसके मारा। वह बाण अमित बलशाली धृष्टकेतु के कवच को फोड़ और उसके हृदय को चीरता हुआ, वैसे ही पृथिवी में घुस गया जैसे हंस कमलवन में घुसे। द्रोणाचार्य ने धृष्टकेतु को भी वैसे ही निगल लिया—जैसे नीलकण्ठ छोटे छोटे कीड़े मकोड़ों को निगल जाता है। चेदिराज के मारे जाने पर उनका पुत्र बहुत चिढ़ा। वह शिशुपाल का अस्त्रज्ञ पौत्र अपने पिता के रिक्तस्थान पर जा डटा। जैसे महाबली व्याघ्र किसी मृगशावक को मार डाले, वैसे ही द्रोण ने बाण मार उसे भी यमसदन भेज दिया। जब इस प्रकार पाण्डव पक्ष के योद्धा नष्ट हो गये; तब जरासन्ध का शूरवीर पुत्र द्रोण के सामने हुआ।

उसने आते ही बाणवृष्टि कर द्रोण को वैसे ही ढक दिया, जैसे मेघ सूर्य को ढक देते हैं। उसके हस्तलाघव को देख, द्रोण ने भी प्रज्वलित बाणों की वर्षा की और देखते देखते द्रोण ने जरासन्ध के पुत्र को भी यमालय भेज दिया। जिनकी आयु पूरी हो चुकी है, उन प्राणियों को जिस प्रकार काल गटकता चला जाता है, वैसे ही द्रोण भी उन योद्धाओं को जो उनके सामने पड़ते, नष्ट कर डालते थे। इसके बाद अपना नाम उद्घोषित करते हुए द्रोण ने पाण्डव वीरों को ढक दिया। अपने नाम से अङ्कित पैने बाणों से द्रोण ने पाण्डवों के सैकड़ों हाथियों, घोड़ों और मनुष्यों को मार डाला। जैसे इन्द्र के हाथ से बड़े बड़े असुर मारे जाते हैं, वैसे ही द्रोण के हाथ से मरते हुए पाञ्चाल वीर शीत से काँपती हुई गौ की तरह, थरथर काँपने लगे। हे राजन्! जिस समय द्रोण इस प्रकार पाण्डवों की सेना का नाश कर रहे थे, उस समय पाण्डव दुःखातुर हो चिल्लाने लगे। द्रोण के बाणों से आहत और सूर्य की कड़क धूप से उत्तप्त पाञ्चाल घबड़ा गये। वे द्रोण के बाणों से निस्तेज हो गये थे और किसी तरह रणक्षेत्र में नाम के लिये खड़े भर थे। अन्त में पाँचालों, चेदियों, कोसलों और काशी के महारथी नरेश उत्साहित हो, द्रोण से लड़ने के लिये उन पर झपटे। पाञ्चाल और सृञ्जय- द्रोण को मार डालो! द्रोण को मार डालो! कहते हुए, द्रोण के ऊपर झपटे। रण में महाकान्तिमान् द्रोण को यमसदन भेजने के लिये, वे पुरुषव्याघ्र पूर्णशक्ति लगा लड़ने लगे। परन्तु द्रोण ने उन लोगों को विशेष कर चेदियों को यमसदन भेज दिया। जब चेदियों के प्रधान प्रधान योद्धा मारे जाने लगे, तब द्रोण के बाणों से पीड़ित पाञ्चाल थरथर काँपने लगे। उस समय वे भीमसेन और धृष्टद्युम्न का नाम ले ले कर कहने लगे— सचमुच यह ब्राह्मण बड़ा तपस्वी है, उसीके प्रताप से यह क्रोध में भरा हुआ, क्षत्रियों का संहार करता चला जाता है। क्षत्रिय का परम कर्त्तव्य युद्ध है और ब्राह्मण का परमधर्म तप। यदि विद्वान् तपस्वी हुआ तो वह दृष्टिमात्र से दूसरे को भस्म कर सकता है। इसीसे अनेक क्षत्रिय राजा

लोग, अग्नि की तरह पैने, द्रोणरूपी दुस्तर और घोर अग्नि में प्रवेश कर, भस्म हो गये। महाप्रकाशवान् द्रोणाचार्य अपने बल, उत्साह और सत्व के अनुसार, समस्त प्राणियों को मोहित कर, हम लोगों की सेना का संहार कर रहे हैं। पाञ्चालों की इस बात को सुन कर, महाबलवान् क्षात्रधर्मा द्रोण के सामने जा डटा और एक अर्धचन्द्राकार बाण मार उसने द्रोण का धनुष काट डाला। तब द्रोणाचार्य और भी अधिक क्रुद्ध हुए। बलवान् द्रोण ने एक बड़ा पैना बाण दूसरे धनुष पर रख और तान कर क्षात्रधर्मा के मारा; जिसके प्रहार से क्षात्रधर्मा मारा गया और वह बाण भूमि में घुस गया। क्षात्रधर्मा का हृदय विदीर्ण हो गया और वह घोड़े के नीचे गिर पड़ा और मर गया। उस समय धृष्टद्युम्न के पुत्र क्षात्रधर्मा के मारे जाने पर पाण्डवों के पक्ष के सैनिक काँप उठे। तदनन्तर महाबलवान् चेकितान ने द्रोण के ऊपर आक्रमण किया और दस बाण मार उनकी छाती को घायल किया। तदनन्तर सात बाणों से उसकी ध्वजा को गिरा कर, तीन बाणों से उसके सारथि को मार डाला। सारथि के मारे जाने पर, वे घायल घोड़े रथ को लिये हुए इधर उधर भागने लगे। चेकितान के घोड़े को इस प्रकार घायल हो भागते देख, जिन चेदियों, पंचालों और सृञ्जयों ने द्रोण पर चढ़ाई की थी, उनको भगाते हुए द्रोण अत्यन्त शोभायमान होने लगे। पचासी वर्ष के बूढ़े द्रोण—जिनके, कानों तक के बाल सफेद हो गये थे, सोलह वर्ष के बालक की तरह घूम रहे थे। शत्रुसूदन द्रोण को निर्भीक हो रणक्षेत्र में भ्रमण करते देख, शत्रुओं ने उन्हें वज्रधर इन्द्र जैसा समझा। हे राजन्! तदनन्तर बुद्धिमान् महाबाहु राजा द्रुपद कहने लगे—जैसे भूखा व्याघ्र छोटे छोटे मृगशावकों को अनायास मार डाले, वैसे ही यह राज्य अथवा यश का लोभी ब्राह्मण क्षत्रियों का संहार किये डालता है। दुर्बुद्धि पापी दुर्योधन के दिये हुए लालच में पड़ बड़े बड़े क्षत्रिय योद्धा समर में मारे जा कर नरक में पड़े हैं और जो बाहर हो रणभूमि में पड़े हैं, उन्हें कुत्ते और गीदड़ वैसे ही नोंच नोंच कर खा रहे हैं, जैसे मरे बैल को। हे

महाराज ! पाञ्चाली सेना के अधिपति राजा द्रुपद ने इस प्रकार पाण्डवों के अमसर (?) हो, द्रोण पर आक्रमण किया।

एक सौ छब्बीस का अध्याय

युधिष्ठिर की व्याकुलता

सञ्जय ने कहा—जब द्रोणाचार्य ने पाण्डवों की सेना का इस प्रकार चारों ओर से संहार किया, तब पाञ्चाल, सोमक और पाण्डव दूर भाग गये ! हे राजन् ! जिस समय इस प्रकार रोमाञ्चकारी, प्रलयकाल की तरह जनसंहारकारी लड़ाई हो रही थी और द्रोण अपना पराक्रम प्रगट करते हुए बारंबार सिंहनाद कर रहे थे और पाञ्चालों की संख्या कम हो रही थी तथा पाण्डव पीड़ित हो रहे थे, उस समय धर्मराज को कोई रक्षक न देख पड़ा और वे चिन्तित हो सोचने लगे कि, इसका क्या परिणाम होगा ! उस समय उन्होंने आँखें फाड़ फाड़ चारों ओर देखा—किन्तु उन्हें न तो अर्जुन और न सात्यकि ही देख पड़े। कपिध्वज नरशार्दूल अर्जुन के न देख पड़ने पर और गाण्डीव धनुष की टंकार को न सुन पड़ने से तथा सात्यकि के भी न देख पड़ने पर, धर्मराज युधिष्ठिर बहुत घबड़ा गये। उस समय शोकावसाद से भयभीत हो धर्मराज मन ही मन कहने लगे कि, पहले तो मुझे अकेले अर्जुन ही की चिन्ता थी किन्तु अब सात्यकि को अर्जुन के पास भेज, मुझे दोहरी चिन्ता करनी पड़ रही है। इस समय यह आवश्यक है कि, अर्जुन और सात्यकि—दोनों की खबर मँगवाऊँ। किन्तु अर्जुन का समाचार लाने को तो मैंने सात्यकि को भेजा; किन्तु सात्यकि का समाचार लाने को मैं किसे भेजूँ। यदि मैं भाई की सुध लाने के लिये सात्यकि को भेज चुप हो बैठूँ और सात्यकि की खोज खबर न लूँ, तो लोग मेरी निन्दा करने लगेंगे और लोकनिन्दा से मैं बहुत डरता हूँ। इस शोकावसाद से बचने

के लिये क्या यह ठीक न होगा कि, मैं भीम को सात्यकि की सुध लेने को भेजूँ। जितना अनुराग मेरा अर्जुन पर है, उतना ही अनुराग मेरा शत्रुसूदन एवं युद्ध दुर्मद सात्यकि पर है। फिर मैंने ही तो सात्यकि को अर्जुन की खोज ख़बर लाने को भेजा है। वह निजगौरव की तथा मित्र के अनुरोध की रक्षा के लिये कौरवसेना में वैसे ही घुस गया है, जैसे नक्र समुद्र में घुसे। यह शब्द उन वीरों का सुन पड़ता है जो वृष्णिवीर सात्यकि से लड़ते हुए रण में कभी पीठ नहीं दिखलाते। इस समय कौन काम करना चाहिये —जब मैं इस प्रश्न पर विचार करता हूँ; तब इस समय मुझे धनुर्धर भीम को भेजना ही उचित जान पड़ता है। क्योंकि भीम के लिये संसार में ऐसा कोई काम नहीं है, जो वह न कर सके। लड़ने के लिये उद्यत भीम, अपने भुजबल से, पृथिवी के समस्त धनुर्धरों के लिये पर्याप्त है। उसी महाबली के भुजबल के सहारे हम लोग सकुशल वनवास की अवधि पूरी कर, लौट सके थे और उसके भुजबल के सहारे हम अभी तक युद्ध में परास्त भी नहीं हुए हैं। भीमसेन के पहुँच जाने पर सात्यकि और अर्जुन सनाथ हो जाँयगे। निश्चय ही उन दोनों के रक्षक श्रीकृष्ण वहाँ मौजूद हैं और वे दोनों अर्थात् अर्जुन और सात्यकि स्वयं अस्त्रविद्या में पटु हैं। अतः उनकी चिन्ता मुझे न करनी चाहिये। किन्तु क्या करूँ यह जान कर भी मेरी चिन्ता दूर नहीं होती। अतः सात्यकि की खोज ख़बर लाने को मैं भीमसेन को अवश्य भेजूँगा। ऐसा करने ही से सात्यकि सम्बन्धी मेरी चिन्ता दूर हो सकेगी।

धर्मराज इस प्रकार मन में निश्चय कर, अपने सारथि से बोले—हे सूत! तू मुझे शीघ्र भीमसेन के पास ले चल। यह सुन चतुर सारथि धर्मराज को भीमसेन के निकट ले गया। वहाँ भीमसेन के साथ धर्मराज ने विचार किया कि, अब क्या करना चाहिये? उस समय धर्मराज बड़े विकल हो रहे थे। यद्यपि वे नाना प्रकार से अपने मन को सावधान करने की चेष्टा करते थे; तथापि उनकी घबड़ाहट दूर नहीं होती थी। उन्होंने भीमसेन से कहा- वत्स! तेरे जिस भाई अर्जुन ने अकेले ही देवताओं, गन्धर्वों और

कौरवों को जीत लिया था, उस तेरे छोटे भाई अर्जुन के रथ का नाम निशान तक कहीं नहीं दिखलायी पड़ता।

धर्मराज को इस प्रकार विकल देख, भीमसेन उनसे कहने लगे—आप पहले तो कभी ऐसे नहीं घबड़ाये थे; बल्कि जब कभी हम घबड़ाते थे, तब आप हमें धैर्य धराते थे। हे राजन्! अतः आप उठें और अपने मन को सावधान करें। मुझे आज्ञा दें मैं आपके लिये क्या करूँ? हे मानद! इस संसार में मेरे लिये ऐसा कोई भी काम नहीं—जिसे मैं न कर सकूँ? या उसे अपने लिये अकर्तव्य समझ छोड़ बैठूँ। आप ज़रा भी न घबड़ायें और मुझे आज्ञा दें।

उस समय खिन्नमना धर्मराज ने लंबी साँस ले कहा—यशस्वी श्रीकृष्ण के बड़े ज़ोर से बजाये हुए पाञ्चजन्य शङ्ख की ध्वनि सुन और अर्जुन के देवदत्त शङ्ख की ध्वनि न सुन कर, मेरे मन में शङ्का उठ खड़ी हुई है कि, कहीं तेरे भाई अर्जुन का अनिष्ट तो नहीं हुआ और वह कहीं शरशय्या पर तो शयन नहीं कर रहा। उसके मारे जाने पर ही श्रीकृष्ण युद्ध में प्रवृत्त हुए हैं। हा! जिस वीर के बल बूते पर पाण्डवों का जीना मरना निर्भर करता है और जो आपत विपत्ति में हमारा एकमात्र आधार है, वह शूर अकेला ही जयद्रथ को मारने की अभिलाषा से शत्रुसैन्य में घुस गया है। हे भीम! मैंने उसे सेना में घुसते तो देखा था, किन्तु उसे लौटते मैंने नहीं देखा। श्यामवर्ण, कुञ्चितकेश, दर्शनीय तरुण अर्जुन की चौड़ी छाती भरी हुई है। उसकी भुजाएँ लंबी हैं और उसमें मतवाले हाथी जैसा पराक्रम है। उसके नेत्र चकोर के नेत्रों जैसे अरुण हैं और शत्रु तो उसे देखते ही भयभीत हो जाते हैं। हा! उसे मैंने जाते तो देखा है, किन्तु वह लौटा अभी तक नहीं। हे शत्रुमर्दन! तेरा कल्याण हो। इसीका मुझे शोक है। हे महाबाहो! जैसे घी डालने से अग्नि अधिक अधिक दहकती है, वैसे ही अर्जुन और सात्यकि की चिन्ता मेरे शोक को बढ़ाती है। अर्जुन की कुछ भी सुध न मिलने से मुझे मूर्छा सी आ रही है। तू जा कर अर्जुन का पता

ला। मैंने अर्जुन की सुध लाने को सात्यकि को भेजा था, सो तू सात्यकि का भी पता लगा कर ला। वह सात्यकि भी तो अभी तक नहीं लौटा। इससे भी मेरा मन उदास और चेहरा फीका पड़ रहा है। जान पड़ता है, इन दोनों के मारे जाने पर ही श्रीकृष्ण को युद्ध में प्रवृत्त होना पड़ रहा है। अर्जुन के पास कोई सहायक न होने से मुझे बड़ी चिन्ता है। युद्ध-कुशल श्रीकृष्ण उसके मारे जाने पर लड़ रहे हैं। हे परन्तप! उनकी ओर से मेरा मन किसी प्रकार भी निश्चिन्त नहीं होता। हे भीम! तू शीघ्र वहाँ जा जहाँ अर्जुन और सात्यकि गये हों। मेरी आज्ञा मान। क्योंकि मैं तेरा बड़ा भाई हूँ। तू सात्यकि को अर्जुन से भी अधिक समझना। क्योंकि वह मेरे कहने से अर्जुन की सहायता के लिये कौरवों की दुर्जय और भयङ्कर सेना में प्रवेश कर के गया है। भीम! ज्यों ही तुझे अर्जुन और सात्यकि सकुशल देख पड़ें, त्यों ही तू सिंहनाद करना। उससे मैं जान जाऊँगा कि, वे दोनों सकुशल हैं।

एक सौ सत्ताइस का अध्याय

भीम का कौरव सैन्यव्यूह में प्रवेश और पराक्रमप्रदर्शन

भीमसेन ने कहा—हे धर्मराज! ब्रह्मा, शिव और इन्द्र ने पूर्वकाल में जिस रथ पर सवार हो युद्धयात्रा की थी, उसी रथ पर सवार हो, श्रीकृष्ण और अर्जुन भी युद्ध करने गये हैं। अतः वे किसी भी सङ्कट में फँस नहीं सकते। किन्तु आप आज्ञा देते हैं, अतः मैं जाता हूँ। अब आप शोक न करें। मैं उन पुरुषव्याघ्रों को देख, आपको उनका कुशलसंवाद दूँगा।

सञ्जय ने कहा—हे धृतराष्ट्र! इस प्रकार युधिष्ठिर को समझा तथा धृष्टद्युम्नादि को धर्मराज की रक्षा करने के लिये बारंबार सावधान कर, भीमसेन वहाँ से चला। चलते चलते भीम ने फिर धृष्टद्युम्न से कहा—

तुम्हें विदित है कि आचार्य द्रोण बराबर इस उद्योग में लगे हुए हैं कि, वे धर्मराज को पकड़ कर क़ैदी बनावें। ऐसी अवस्था में यद्यपि अर्जुन के निकट मेरा जाना उतना आवश्यक नहीं है, जितना आवश्यक मेरा धर्मराज के निकट रह कर द्रोण से उनकी रक्षा करना है। क्योंकि धर्मराज की रक्षा करना बड़े दायित्व का काम है, तथापि मुझे धर्मराज की आज्ञा का पालन करना भी आवश्यक है। क्योंकि मैं उनकी आज्ञा को टाल नहीं सकता। मुझे उनकी आज्ञा बिना कुछ सोचे विचारे मान लेनी चाहिये, अतः मैं वहाँ जाता हूँ, जहाँ जयद्रथ मरने को तैयार खड़ा है। जिस मार्ग से अर्जुन और धीमान सात्यकि गये हैं, उसी रास्ते से मैं भी जाता हूँ। अतः तुम सावधान हो, धर्मराज की रक्षा करते रहना। क्योंकि उनकी रक्षा करना हम लोगों का मुख्य कर्त्तव्य है।

हे राजन्! इस पर धृष्टद्युम्न ने भीमसेन से कहा—हे भीम! आप निश्चिन्त हो कर जाइये। मैं आपके कथनानुसार ही कार्य करूँगा। जब तक धृष्टद्युम्न जीवित है, तब तक द्रोण की मजाल क्या जो धर्मराज को पकड़ लें। यह सुन भीम ने अपने ज्येष्ठ भ्राता युधिष्ठिर को प्रणाम किया और उनकी रक्षा का कार्य धृष्टद्युम्न को सौंप, वे रवाना हुए। रवाना होने के पूर्व धर्मराज ने उन्हें अपनी छाती से लगा, उनका मस्तक सूँघा और उन्हें शुभाशीर्वाद दिये। तदनन्तर भीम ने ब्राह्मणों का पूजन कर, उन्हें प्रसन्न किया और उनकी परिक्रमा की। फिर आठ प्रकार की माङ्गलिक वस्तुओं का स्पर्श किया। फिर कैलातक नाम्नी मदिरा पी। इससे उनके शरीर में विशेष बल प्रकट हो गया और उनके क्रोध वश से लाल लाल हो गये। उस समय ब्राह्मणों ने भीम का स्वस्तिवाचन कर, उनसे कहा—भीम! जाओ। तुम्हारा विजय होगा। भीम का मन भी बारंबार विजय की आशा से आशान्वित हो उल्लसित हो रहा था। पवन भी अनुकूल बह कर, उन को विजय की सूचना दे रहा था। उस समय महाबाहु भीमसेन कवच और सुन्दर कुण्डल तथा भुजाओं पर बाजूबन्द और हाथों में चमड़े के दस्ताने

पहिने हुए था। भीम का लोहे का कवच सोने की कुण्डलियों से विजड़ित होने के कारण विद्युत युक्त मेघ की तरह शोभायमान हो रहा था। रंग बिरंगे वस्त्र पहिने हुए तथा कण्ठत्राण धारण किये हुए भीमसेन की शोभा उस समय इन्द्रधनुष जैसी हो रही थी।

हे राजन्! जिस समय भीमसेन आपकी सेना से लड़ने को प्रस्थानित हुआ, उस समय पाञ्चजन्य शङ्ख की घोर ध्वनि हुई। पाञ्चजन्य की त्रिलोकी को त्रस्त करने वाली ध्वनि को सुन, युधिष्ठिर पुनः महाबाहु भीमसेन से कहने लगे—वृष्णिवीर श्रीकृष्ण की यह शङ्खध्वनि आकाश एवं पृथिवी को गुञ्जारित कर रही है। निश्चय ही अर्जुन घोर सङ्कट में पड़ गये हैं और श्रीकृष्ण को लड़ना पड़ रहा है। पूज्या माता कुन्ती, द्रौपदी तथा सुभद्रा एवं अन्य नातेदार स्त्रियों ने कहा था कि, आज अच्छे सगुन नहीं हो रहे; अतः हे भीम! तुम शीघ्र अर्जुन के पास जाओ। हे पृथानन्दन! मैं चारों ओर निगाह दौड़ाता हूँ; किन्तु अर्जुन और सात्यकि मुझे नहीं देख पड़ते। इससे मेरा मन मोहित हो रहा है। अतः तुम शीघ्र ही जाओ।

यह सुन आज्ञाकारी भीम ने गोह के चमड़े के दस्ताने पहिने और धनुष बाण उठा—नगाड़े पर चोब मारी तथा बारंबार शङ्ख बजाया। फिर सिंहनाद कर अपने धनुष को टंकारा। उनके धनुष के टंकार शब्द को सुन वीरों के हृदय दहल उठे। तब भीम सहसा शत्रुओं के सामने रवाना हुए। भीम के रथ में बड़े तेज़ चलने वाले घोड़े जुते हुए थे, वे उसके रथ को ले आगे बढ़े। कौरवसैन्य में प्रवेश कर, भीमसेन धनुष को तान कर बाण-वृष्टि करने लगे। इससे शत्रुसैन्य का अग्रभाग मथित सा होने लगा। महाबाहु भीम के पीछे पीछे सोमक और पाञ्चाल राजागण वैसे ही हो लिये, जैसे इन्द्र के पीछे देवगण हो लिया करते हैं। भीमसेन के आक्रमण करते ही, उसका सामना करने को पहले ही से तैयार खड़े, रथिश्रेष्ठ दुःशल, चित्रसेन, कुण्डभेदी, विविंशति, दुर्मुख, दुःसह, विकर्ण, शल, विन्द, अनुविन्द, सुमुख, दीर्घबाहु, सुदर्शन, वृन्दारक, सुहस्त, विशालनयन सुषेण,

भीमकर्मा, सुभग, सुवर्मा, दुर्विमोचन आदि आपके पुत्र सैनिकों और पैदल योद्धाओं के साथ ले, भीम के सामने हुए और चारों ओर से भीम को घेर लिया। उन लोगों को अपने को घेरते हुए देख, पराक्रमी, महारथी भीमसेन ने प्रथम तो उनमें से हरेक को देखा, फिर वह उन पर वैसे ही टूट पड़ा, जैसे सिंह, मृगशावकों पर टूटता है। इतने में उन लोगों ने अस्त्र शस्त्र बरसा कर भीम को वैसे ही ढक दिया जैसे बादल सूर्य को ढकता है। किन्तु भीम उन सब को पीछे छोड़, वहाँ जा पहुँचे जहाँ द्रोण अपनी सेना सहित खड़े थे। बीच में भीम को उस गज-सेना का सामना करना पड़ा, जिसने उन पर बाणों की वर्षा की थी। उस समय घूम घूम कर और बाणों की वर्षा करते हुए भीम ने उस गजसेना का संहार करना आरम्भ किया। उस समय गजसेना के हाथी चिंघारते हुए वैसे ही भागे, जैसे वन में शरभ के दहाड़ने पर, हिरन भागते हैं। गजसेना को छिन्न भिन्न कर, भीम पुनः द्रोण की सेना पर लपका। तब द्रोण ने उसे वैसे ही आगे बढ़ने से रोका, जैसे उमड़ते हुए समुद्र को तट रोकता है। फिर मुसक्या कर द्रोण ने भीम के मस्तक में एक बाण मारा। उस बाण के लगने से भीम की शोभा वैसी ही हुई, जैसी शोभा—ऊर्ध्वगामी रश्मियों से सूर्य की होती है। अपने में अर्जुन जैसी भीम की भी पूज्य बुद्धि समझ, आचार्य द्रोण ने भीम से कहा—हे महाबली भीम! आज तू मुझे परास्त किये बिना, इस सैन्य में प्रवेश कर न सकेगा। तेरा भाई अर्जुन मेरी अनुमति प्राप्त कर के ही इस सेना में घुस सका था; पर तुझे मैं न घुसने दूँगा। गुरु के इन वचनों को सुन, भीम आगबबूला हो गया। उसके दोनों नेत्र मारे क्रोध के लाल पड़ गये। उस समय उसने निर्भय हो द्रोण से कहा—हे ब्रह्मबन्धो! अर्जुन तो ऐसा दुर्धर्ष है कि, वह तो इन्द्र द्वारा रक्षित सेना में भी प्रवेश कर सकता है। उसे आपकी अनुमति प्राप्त करने की आवश्यकता नहीं हो सकती। उसने आपका मान रखने के लिये आपके प्रति सम्मान भाव प्रदर्शित किया होगा। किन्तु हे आचार्य!

मैं दयालुहृदय अर्जुन नहीं हूँ। किन्तु मैं हूँ इस समय आपका शत्रु भीमसेन। यद्यपि मैं आपको अपना गुरु और पिता मानता हूँ और अपने को आपका पुत्र समझता हूँ तथा सदा आपको नमस्कार करता रहा हूँ, तथापि आज आपके वार्तालाप से आपका भाव कुछ और का और ही प्रकट हुआ है। यदि आप मुझे अपना शत्रु समझते हैं, तो ऐसा ही सही। अब मैं भी आपके साथ शत्रु जैसा ही बर्ताव करता हूँ।

सञ्जय बोले—हे राजन्! यह कह भीमसेन ने अपनी गदा वैसे ही उठायी, जैसे काल अपने दण्ड को उठाता है। फिर उसे घुमा और तान कर द्रोण पर छोड़ी। द्रोण तो तुरन्त रथ से कूद कर अलग जा खड़े हुए; किन्तु उस गदा के प्रहार से, सारथि, ध्वजा और घोड़ों सहित उनका रथ चकनाचूर हो गया। साथ ही अनेक योद्धा भी उसने वैसे ही नष्ट हो गये, जैसे वायु के वेग से वृक्ष नष्ट हो जाते हैं। इतने में आपके पुत्रों ने भीम को पुनः घेर लिया। इस बीच में द्रोण दूसरे रथ पर सवार हो, सैन्यव्यूह के अग्रभाग की ओर दौड़े और वहाँ जा भीमसेन से लड़ने को डट गये। इधर क्रोध में भर भीम ने हमारी रथसेना पर बाणवृष्टि की। भीमपराक्रमी भीम आपके महारथी पुत्रों को मारता हुआ चला जाता था, तिस पर भी वे हतोत्साह न हो, भीम से लड़ते ही चले गये। यह देख दुःशासन बड़ा क्रुद्ध हुआ। उसने भीम का वध करने के लिये उस पर लोहे की ठोस रथशक्ति फेंकी। उस रथशक्ति के भीम ने बाण मार कर, दो टुकड़े कर डाले। यह बड़ा विस्मयकारक कार्य था। फिर अत्यन्त क्रुद्ध भीमसेन ने कुण्डभेदी सुषेण और दीर्घनेत्र को पैने बाणों से मार डाला। तदनन्तर आपके शूर पुत्रों के लड़ते रहने पर भी भीम ने कौरव-कीर्ति-वर्द्धक वीर वृन्दारक का वध किया। फिर उसने आपके अभय, रौद्रकर्मा और दुर्विमोचन नामक पुत्रों का तीन बाणों से वध किया। हे राजन्! जब भीम पराक्रमी भीम इस प्रकार आपके पुत्रों का संहार करने लगे—तब आपके अवशिष्ट पुत्रों ने उसे चारों ओर से घेर लिया और वे उस पर वैसे ही बाणवृष्टि करने लगे, जैसे

वर्षाऋतु में मेघ पर्वत पर जलवृष्टि करते हैं। किन्तु भीम उनकी उस बाण-वृष्टि से वैसे ही विचलित न हुआ, जैसे ओलों की वर्षा से पर्वत नहीं घबड़ाता। फिर भीम ने तुरन्त सत्रह आपके पुत्र विन्द, अनुविन्द और सुवर्मा को बाण मार कर, मार डाला। फिर बड़ी फुर्ती के साथ भीम ने आपके पुत्र सुदर्शन को बाणों से विद्ध किया। तब वह भी मर कर गिर पड़ा। फिर भीम ने चारों ओर खड़ी हुई सेना को ताक ताक कर नष्ट किया। उस समय भीमसेन के रथ की घरघराहट को सुन, आपके पुत्र संग्राम से वैसे ही भागने लगे; जैसे सिंह का दहाड़ना सुन, मृग भागते हैं। वे सब जब भीमसेन के भय से भागने लगे; तब कुन्तिपुत्र भीमसेन ने आपकी भागती हुई सेना का पीछा किया और उसे मारने लगे। तब भीमसेन द्वारा मार खाते हुए आपके पुत्र घोड़े दौड़ा कर, रणक्षेत्र से भाग गये। भीमसेन उन सब को परास्त कर, सिंह की तरह गर्जे और खम ठोंके। फिर भीमसेन ने बड़े ज़ोर से ताली बजा और रथसेना को हटा कर, श्रेष्ठ श्रेष्ठ योद्धाओं को मार डाला। फिर वे रथियों की सेना को अतिक्रम कर, द्रोण की सेना की तरफ बढ़े।

एक सौ अट्ठाइस का अध्याय

भीम द्वारा द्रोण के रथों का उलट दिया जाना

सञ्जय ने कहा—हे धृतराष्ट्र! भीमसेन रथसेना को अतिक्रम कर, आगे बढ़े। तब भीम को देख, द्रोण मुसक्याये और भीम के ऊपर बाणवृष्टि आरम्भ की। किन्तु उस बाणवृष्टि को भीम ने कुछ भी न गिना और वह द्रोण की ओर आगे बढ़े। भीम की ऐसी अवज्ञा को देख, दुर्योधनादि सहम गये। किन्तु उनकी प्रेरणा से बहुत से महाधनुर्धर राजाओं ने झपट कर भीम को चारों ओर से घेर लिया। तब भीम मुसक्याये और अपनी गदा तान, उन्होंने सिंहगर्जना की। तदनन्तर

शत्रुओं का संहार करने के लिये उन्होंने गदा फेंकी। उस गदा के प्रहार से, हे राजन्! आपके पक्ष के बहुत से योद्धा वैसे ही मारे गये, जैसे इन्द्र की शक्ति से बहुत से असुरों का नाश होता है। अपने गिरने के शब्द से पृथिवी को शब्दायमान करती हुई उस चमचमाती गदा को देख, आपके पुत्र भयभीत हो गये। बड़े धड़ाके के शब्द के साथ गिरी हुई उस चमचमाती गदा को देख, आपके समस्त योद्धा चिल्लाते हुए भागे। उस गदा के गिरने का ऐसा भयङ्कर शब्द हुआ कि, अनेक रथी अपने रथों से नीचे लुढ़क पड़े। तदनन्तर उस गदा से भीम ने आपके सैनिकों का वध करना आरम्भ किया। उस समय आपके योद्धा भीम को देख, वैसे ही भागे जैसे व्याघ्र की गन्ध पा कर, मृग भागते हैं। कुन्तीनन्दन भीमसेन उनको भगा कर, पक्षिराज गरुड़ की तरह, बड़े वेग से सेना को अतिक्रम कर आगे बढ़ गये।

हे महाराज! जब भीमसेन ने इस प्रकार कौरवसेना का संहार करना आरम्भ किया; तब द्रोणाचार्य ने उसका सामना किया। उन्होंने इतने बाण छोड़े कि, भीम का आगे बढ़ना रुक गया। उस समय द्रोण ने सिंहनाद कर, पाण्डवों को भयत्रस्त कर दिया। द्रोण और भीम का देवासुर संग्राम की तरह घोर समर होने लगा। तब द्रोण के धनुष से छूटे हुए बाणों ने अगणित योद्धाओं को मार डाला। भीमसेन धड़ाम से रथ से कूद पड़े। उन्होंने अपने दोनों नेत्र मींच लिये, मस्तक को कन्धों में सकोड़ और दोनों हाथों से छाती ढक ली। तदनन्तर वह मन पवन अथवा गरुड़ की तरह वेग से द्रोण के रथ की ओर झपटे। जैसे मतवाला बैल, जलवृष्टि को अनायास सहन कर लेता है, वैसे ही नरव्याघ्र भीम ने भी उस बाणवृष्टि को सहन कर लिया। महाबली भीमसेन द्रोण की बाणवृष्टि को सहते हुए, द्रोण के रथ के निकट जा पहुँचे और रथ के जुए के आगे के भाग को पकड़, रथ को उलट कर दूर फेंक दिया। तब द्रोण दूसरे रथ पर सवार हो सैन्यव्यूह के मुख पर जा खड़े हुए।

तदनन्तर कुछ समय बाद भीम ने देखा कि, उत्साहमग्न हुए द्रोण दूसरे रथ पर सवार हो, पुनः आ रहे हैं। यह देख भीम बड़े क्रुद्ध हुए और दौड़ कर पुनः द्रोण के रथ के निकट जा पहुँचे। फिर उनके रथ के धुरे को पकड़ भीम ने उस महारथ को भी उठा कर बहुत दूर फेंक दिया। भीम ने द्रोण के आठ रथ दूर फेंक कर, उन्हें नष्ट कर डाला। ज्यों ही भीम द्रोण के एक रथ को नष्ट करते, त्यों ही द्रोण झट दूसरे रथ पर बैठे हुए देख पड़ते थे। उस समय आपके योद्धा विस्मयविस्फारित नेत्रों से यह कौतुक देख स्तब्ध हो गये। उधर भीम के सारथि ने एक और आश्चर्य का काम किया। वह तेज़ी से घोड़ों को हाँक तुरन्त भीम के पास रथ ले कर पहुँच गया। तब महाराज! भीमसेन भी रथ पर सवार हो, बड़ी फुर्ती से आपके पुत्र की सेना की ओर बढ़े चले गये। उस समय भीमसेन क्षत्रिय योद्धाओं को वैसे ही नष्ट करते हुए चले जाते थे, जैसे आँधी वृक्षों को नष्ट करती चली जाती है। भीमसेन सेना की पंक्तियों को तोड़ते हुए वैसे ही आगे बढ़ने लगे, जैसे सिन्धु का वेग, पर्वतों को फोड़ता हुआ आगे बढ़ता चला जाता है। कुछ आगे जाने पर भीम को हृदीकनन्दन कृतवर्मा की भोजसेना मिली। किन्तु भीम उस सेना को भी नष्ट करते हुए आगे बढ़ गये। ताल ठोंक और समस्त सैनिकों को चिकत कर, भीम ने समस्त सेनाओं को वैसे ही जीत लिया, जैसे सिंह, बैलों को जीत लेता है। भोजसेना, दरदसेना तथा अनेक युद्धविशारद म्लेच्छों के दलों को पार कर, भीमसेन गरजते हुए बहुत आगे निकल गये। वहाँ उन्होंने युद्ध करते हुए सात्यकि को देखा। तब तो भीमसेन का मन सावधान हुआ और वह रथ को तेज़ चला, अर्जुन को देखने के लिये आगे बढ़े। हे राजन्! आपके अनेक योद्धाओं का अतिक्रम कर, भीम ने देखा कि, जयद्रथ का वध करने के लिये अर्जुन पराक्रम प्रदर्शन कर युद्ध कर रहे हैं। हे महाराज! तत्काल भीम ने अर्जुन को देख, वर्षाकालीन मेघ की तरह बारंबार गर्जना की। उस गर्जना को श्रीकृष्ण और अर्जुन ने भी सुना।

तब भीम को देखने के लिये श्रीकृष्ण और अर्जुन ने भी वारंवार गर्जना की। कुछ ही देर बाद दो वृषभों की तरह डौंकते हुए वे भीम से आ मिले। भीमसेन एवं अर्जुन का सिंहनाद सुन, युधिष्ठिर की चिन्ता मिट गयी और अब उन्हें आशा बँध गयी कि, अर्जुन अवश्य विजय प्राप्त करेगा। मदोत्कट भीमसेन की गर्जना सुन, धर्मराज मुसक्याये और मन ही मन कहने लगे। हे भीम! सचमुच तूने बड़ों की बात मानी और कुशल समाचार दिया। हे वीर! तू जिससे वैर बाँध ले, वह भला युद्ध में क्यों कर विजयी हो सकता है? सदैव ही से अर्जुन और सत्यपराक्रमी वीर सात्यकि रणकुशल हैं। श्रीकृष्ण और अर्जुन की गर्जना सुनायी पड़ना मैं अपना अहोभाग्य समझता हूँ। हम सब जिसके भुजबल के सहारे जी रहे हैं, उस अर्जुन का सकुशल होना, बड़े ही सौभाग्य की बात है। जिस अर्जुन ने देवताओं से भी अजेय निवातकवचों को एक धनुष के बल जीत लिया था, उस अर्जुन का सकुशल जीवित रहना बड़े ही सौभाग्य की बात है। जिस अर्जुन ने विराट नगर पर आक्रमण करने वाले समस्त कौरवों को अकेले ही हरा दिया था, उस अर्जुन का सकुशल जीवित रहना, हम लोगों के लिये बड़े सौभाग्य की बात है। युद्ध में जिस अर्जुन ने अकेले ही चौदह सहस्र कालकेयों को नष्ट कर डाला था, उस अर्जुन का सकुशल रहना बड़े ही सौभाग्य की बात है। जिस अर्जुन ने निज अस्त्रबल से दुर्योधन के पीछे, गन्धर्वराज चित्रसेन को जीत लिया था, उस अर्जुन का सकुशल जीवित रहना—बड़े सौभाग्य की बात है। किरीटमाली, बलशाली और श्वेतवाहन अर्जुन के श्रीकृष्ण सारथि हैं और जिस पर मेरा सदा अनुराग है, उस अर्जुन का सकुशल जीवित रहना, बड़े ही सौभाग्य की बात है। जो अर्जुन अपने पुत्र अभिमन्यु के वियोगजनित शोक से सन्तप्त है, जो बड़े बड़े काम सहज में कर डालने वाला है और जो जयद्रथवध की प्रतिज्ञा किये हुए है, वह अर्जुन क्या अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार जयद्रथ का वध कर सकेगा? सूर्यास्त होने के पूर्व, श्रीकृष्ण से सुरक्षित अपनी प्रतिज्ञा से उत्तीर्ण

हुए अर्जुन को क्या मैं देख सकूँगा? दुर्योधन के हित में तत्पर जयद्रथ क्या अर्जुन के द्वारा मारा जा कर, अपने शत्रुओं को हर्षित करेगा? राजा दुर्योधन, धनञ्जय द्वारा सिन्धुराज जयद्रथ को मरा देख, क्या हमसे सन्धि करेगा? फिर भीमसेन द्वारा अपने अनेक भाइयों का संहार हुआ देख, मूढ़ दुर्योधन, क्या हमसे सन्धि कर लेगा? बहुत से अन्य वीर योद्धाओं को मरा देख, क्या मन्दबुद्धि दुर्योधन पछतायगा? क्या हम लोगों का आपस का वैर विरोध अकेले भीष्म की मृत्यु के साथ ही समाप्त हो सकेगा? क्या दुर्योधन बचे हुए लोगों की रक्षा की कामना से हमसे सन्धि कर लेगा? इधर तो दयालुचित्त युधिष्ठिर इस प्रकार विचारों की ऊहापोह में संलग्न थे और उधर भयङ्कर युद्ध हो रहा था।

एक सौ उनतीस का अध्याय

कर्ण की हार

धृतराष्ट्र बोले—हे सञ्जय! गड़गड़ाते मेघ की तरह गर्जना करते हुए भीम को हमारे पक्ष के किन वीरों ने घेरा और रोका था। मुझे तो त्रिलोकी में ऐसा कोई नहीं देख पड़ता, जो क्रुद्ध हुए भीम का रण में सामना करे। हे सञ्जय! जब भीम काल की तरह क्रुद्ध हो गदायुद्ध करने लगे—उस समय मुझे तो ऐसा कोई नहीं देख पड़ता, जो उसके सामने ठहर सके। जो भीम रथ से रथ को और गज से गज को नष्ट कर सकता है, उसके सामने किसकी मजाल है जो खड़ा रह सके। उसके सम्मुख तो साक्षात् इन्द्र भी खड़े नहीं रह सकते। जब क्रोध में भरा भीम युद्ध करता हुआ मेरे पुत्र का वध करने लगा, तब दुर्योधन का कौन कौन सा हितैषी उसका सामना करने को अग्रसर हुआ था? जिस समय मेरे पुत्र रूपी तृणों को भीमरूपी दावानल भस्म करने लगा; उस समय उनकी रक्षा के लिये कौन कौन वीर आगे बढ़े थे? जिस समय काल की तरह भीम मेरे पुत्रों

को नष्ट करने लगा—उस समय किन किन वीरों ने उसको घेरा था? मैं जितना भीम से डरता हूँ, उतना मैं अर्जुन, श्रीकृष्ण, धृष्टद्युम्न और सात्यकि से भी नहीं डरता।

हे सञ्जय! जब भीम रूपी आग धधक कर मेरे पुत्रों को भस्म करना चाहती थी, तब उसे रोकने को कौन कौन से वीर आगे आये थे? तुम मुझे यह वृत्तान्त सुनाओ।

सञ्जय ने कहा—हे राजन्! जिस समय भीम घोर गर्जना कर रहा था; उस समय महाबली कर्ण घोर गर्जना करता तथा अपना बड़ा भारी धनुष टंकारता हुआ क्रोध में भर, अपना बल प्रदर्शित करने को भीमसेन के सामने आया। कर्ण ने भीम के रास्ते को वैसे ही अवरुद्ध कर दिया, जैसे पेड़, पवन के मार्ग को रोक देता है। महाबली भीम ने ज्यों ही आँख उठा देखा, त्यों ही उसे अपने सामने कर्ण दिखलायी पड़ा। कर्ण को देखते ही भीम मारे क्रोध के लाल हो गया और पैने तीर छोड़ कर कर्ण को घायल कर दिया। उन तीरों की चोट को कर्ण सह गया; किन्तु फिर उसने भी बाण मार भीम को घायल कर दिया। भीम और कर्ण के युद्ध में उन दोनों के धनुषों की टंकार के शब्दों को सुन सुन कर, समस्त देखने वालों के, योद्धाओं के और रथियों के शरीर काँपने लगे। युद्ध में भीम के घोर गर्जन को सुन कर, योद्धाओं ने अपने मनों में समझ लिया कि, उस गर्जन के शब्द से पृथिवी और आकाश प्रतिध्वनित होने लगे हैं। जब भीम ने फिर घोर गर्जन किया, तब तो योद्धाओं के हाथों से हथियार खसक पड़े और बहुत से मर गये। हाथी, घोड़े आदि जानवरों ने मारे भय के मलमूत्र त्यागा। उस समय आकाश में अनेक गीध और काक मड़राने लगे तथा बहुत से अशुभ द्योतक उत्पात होते हुए देख पड़े।

हे राजन्! भीम और कर्ण के भयङ्कर युद्ध में कर्ण ने भीम के बीस बाण मारे। फिर पाँच बाण मार उसने भीम के सारथि को घायल किया। यह देख भीम अट्टहास करता हुआ कर्ण की ओर दौड़ा और तर ऊपर उसने

कर्ण के चौसठ बाण मारे। तब कर्ण ने भीम के चार बाण मारे। भीम ने अपना हस्तलाघव प्रदर्शित करते हुए नतपर्व बाण मार कर्ण के सब बाण बीच ही में काट डाले। इस पर कर्ण ने बाणवृष्टि कर भीम को ढक दिया। जब कर्ण ने कई बार भीम को बाणवृष्टि से ढक दिया; तब भीम ने कर्ण के धनुष की मूँठ काट कर धनुष को निकम्मा कर डाला। फिर लगातार नतपर्व कितने ही बाण मार कर्ण को घायल कर दिया, तब भीमकर्मा राधेय कर्ण ने दूसरा धनुष उठा, भीम पर बाण मारना आरम्भ किया। इस पर भीम को बड़ा क्रोध आया और उसने नतपर्व तीन बाण धनुष तान कर कर्ण की छाती में मारे। उन तीन बाणों से कर्ण तीन शृङ्ग वाले पर्वत की तरह शोभित हुआ। उन पैने बाणों के लगने से कर्ण की छाती लोहूलुहान हो गयी, उसकी छाती से रक्त बहने लगा और वह ऐसा जान पड़ने लगा, मानो गेरूमय सोते से युक्त पहाड़ हो। भीम के इस भीषण प्रहार से कर्ण विचलित हो गया, किन्तु फिर उसने सावधान हो कर और कान तक रोदा तान तान कर भीम के बाण मार उन्हें विद्ध किया। कर्ण ने इस प्रकार एक दो नहीं अगणित बाण छोड़े। जब कर्ण के बाणप्रहारों से भीम को पीड़ा मालूम होने लगी, तब उन्होंने क्षुरप्र बाण मार कर, कर्ण के धनुष की डोरी काट डाली और भल्ल बाण से कर्ण के सारथि को रथ के नीचे गिरा दिया। तदनन्तर महारथी भीम ने कर्ण के चारों घोड़े भी मार डाले। तब कर्ण डरा और सूत घोड़ों वाले रथ से कूद वृषसेन के रथ पर जा बैठा।

इस प्रकार प्रतापी भीमसेन, युद्ध में कर्ण को परास्त कर, मेघ की तरह गर्जने लगे। भीम के गर्जन को सुन धर्मराज ने जाना कि, भीम ने कर्ण को परास्त कर दिया। अतः उनके आनन्द की सीमा न रही। उस समय पाण्डवों की सेना के समस्त सैनिकों ने शङ्खध्वनि की। तब आपके पुत्र उस शङ्खध्वनि को सुन, स्वयं गर्जने लगे। महाराज युधिष्ठिर ने इस पर अपनी सेना में शङ्खध्वनि, धनुष टंकार तथा हर्षनाद करवा, समस्त दिशाओं को प्रतिध्वनित करवा दिया। हे राजन्! उस समय अर्जुन ने अपना

गाण्डीव धनुष टंकोरा और श्रीकृष्ण ने अपना पाञ्चजन्य शङ्ख बजाया। इतने में भीम पुनः गर्जा। उसका वह गर्जन शब्द उभय सेनाओं के गर्जन को दबा कर, सम्पूर्ण सेना में व्याप्त हो गया। तदनन्तर भीम और कर्ण एक दूसरे को बाणों से आच्छादित करने लगे। किन्तु कर्ण के बाण उतनी दृढ़ता से नहीं छूटते थे, जितनी दृढ़ता से भीम के बाण।

एक सौ तीस का अध्याय

दुर्योधन की युधामन्यु एवं उत्तमौजा के साथ लड़ाई

सञ्जय ने कहा—हे धृतराष्ट्र! जब अर्जुन, सात्यकि और भीमसेन, जयद्रथ का वध करने को कौरवों की सेना में घुस गये और कौरवों की सेना का व्यूह भङ्ग हो, सेना इधर उधर तितर बितर हो गयी, तब आपका पुत्र दुर्योधन रथ पर सवार हो, अकेला ही द्रोण की ओर चल दिया और बात की बात में उनके पास जा पहुँचा। क्रोध के कारण लाल लाल नेत्र कर, आपका पुत्र सगौरव आचार्य द्रोण से बोला—महारथी अर्जुन, सात्यकि और भीम को हमारी ओर का कोई भी महारथी न हरा सका। इसका परिणाम यह हुआ कि, वे तीन बेखटके जयद्रथ के निकट जा पहुँचे हैं। वहाँ भी वे तीनों अपराजित महारथी हमारी सेना का नाश कर रहे हैं। महारथी अर्जुन युद्ध में आपको परास्त कर, निकल गया तो निकल गया. किन्तु हे मानद! सात्यकि और भीम आपके सैन्यव्यूह के मुख पर रहते, सैन्यव्यूह के भीतर कैसे घुस पाये? यह घटना तो सारे संसार को, समुद्र को शुष्क कर देने के समान, आश्चर्यचकित करने वाली है। लोग आपस में यही कानाफूसी कर रहे हैं कि, द्रोण को अर्जुन, सात्यकि और भीम ने हरा दिया। किन्तु हमारे पक्ष के योद्धाओं को लोगों के इस कथन पर विश्वास नहीं होता। अतः वे पूँछते हैं कि, धनुर्वेदपारग द्रोण, उन तीनों से कैसे हार गये? जब वे तीनों महारथी आपको अतिक्रम कर चले गये; तब मुझे बोध होता है

कि मुझ अभागे का नाश अवश्यम्भावी है। अस्तु, अब तक जो हुआ सो हुआ, किन्तु अब आपको जो कुछ मुझसे कहना हो, सो आप साफ़ साफ़ कहें। हे मानद! जो होना था सो हो चुका अब आगे की सुध लीजिये। हे द्विजसत्तम! आप भली भाँति सोच विचार कर, शीघ्र बतलाइये कि, अब हमें सिन्धुराज जयद्रथ की रक्षा के लिये क्या करना चाहिये? आप जो बतलावेंगे मैं वही करूँगा।

यह सुन आचार्य द्रोण ने कहा—हे तात! मुझे बहुत सी बातों पर विचार करना है। किन्तु इस समय जो करना उचित है, उसे तू सुन। पाण्डवों के तीन महारथी हमारी सेना को अतिक्रम कर आगे बढ़ गये हैं। अतः हमारे लिये शत्रुओं का जितना भय आगे है, उतना ही पीछे। किन्तु जहाँ पर श्रीकृष्ण और अर्जुन हैं, वहाँ का मुझे विशेष खटका है। यह भारती सेना इस समय आगे पीछे दोनों ओर से घिर गयी है। अतः मैं इस समय सिन्धुराज की रक्षा करना ही परमावश्यक समझता हूँ। क्रुद्ध अर्जुन से जयद्रथ अत्यन्त डरा हुआ है। साथ ही वीरश्रेष्ठ सात्यकि और भीमसेन भी जयद्रथ की ओर ही गये हैं। अतएव जयद्रथ की भली भाँति रक्षा करना ही मुझे उचित जान पड़ता है। आरम्भ में शकुनि ने तुझे अपने बुद्धिबल से जुआ खिलाया था। वही जुआ अब आगे आ कर खड़ा हो गया है। सभा में जो हार जीत हुई थी, वह तो कुछ न थी, किन्तु सच्ची हार जीत तो आज होगी। कौरव-सभा में शकुनि ने जिन पाँसों को पाँसा समझ जुआ खेला था, उन पासों ने अब भयङ्कर बाणों का रूप धारण कर लिया है। अनेक कौरव योद्धाओं से पूर्ण अपनी इस सेना को तू द्यूत ही समझ और बाणों को पाँसे। इस आज के जुए में जयद्रथ की जान का दाँव लगा हुआ है। इस जुए के अन्त में हार जीत का निर्णय होगा। जयद्रथ के कारण इस समय प्रतिद्वन्द्वियों के साथ बड़ा भारी जुआ हम लोग खेल रहे हैं। अतः हम सब को अपने प्राणों की भी परवाह न कर के, जयद्रथ की रक्षा के लिये विधिवत् सब उपाय करने चाहिये। क्योंकि इसीके ऊपर

आज हमारी हार और जीत निर्भर करती है। इस समय जहाँ बड़े बड़े धनुर्धर सावधान हो जयद्रथ की रक्षा कर रहे हैं, वहाँ ही तू स्वयं भी जा और उन रक्षकों की सहायता दे। मैं यहाँ रह कर तेरी सहायता को अन्य लोगों को भेजता रहूँगा, साथ ही पाण्डवों, सृञ्जयों और पाञ्चालों को भी आगे बढ़ने से रोकता रहूँगा। द्रोण की इन बातों को सुन, दुर्योधन उनसे बिदा माँग और इस बड़े महत्वपूर्ण कार्य का दायित्व अपने ऊपर ले, रक्षकों सहित वहाँ से आगे बढ़ा।

जिस समय अर्जुन ने सेना में प्रवेश किया था, उस समय उसके चक्ररक्षक बन कर युधामन्यु और उत्तमौजा भी उसके साथ जा रहे थे; किन्तु कृतवर्मा ने उनको अन्दर नहीं आने दिया था। तदनन्तर जब अर्जुन सेना में घुस गया, तब वे दोनों सैन्यव्यूह को कतरा कर, कुछ दूर गये। फिर सेना को चीर के सैन्यव्यूह के भीतर घुस गये। घुसते समय दुर्योधन की दृष्टि उन पर पड़ गयी। वे दोनों भाई बड़ी तेज़ी से सैन्यव्यूह में घुसते चले आ रहे थे। यह देख भरतवंशी बलवान् दुर्योधन भी शीघ्रता से उनके निकट जा पहुँचा। घोर युद्ध होने लगा। वे दोनों क्षत्रियश्रेष्ठ महारथी भी दुर्यो-धन को देखते ही धनुष तान, उसके सामने हुए। युधामन्यु ने कङ्कपत्र युक्त तीस बाण मार कर, दुर्योधन को घायल कर डाला। फिर बीस बाण मार दुर्योधन के सारथि को तथा चार बाण मार उसके चारों घोड़ों को घायल कर डाला। फिर एक भल्ल बाण से उसने दुर्योधन के सारथि को मार कर रथ के नीचे गिरा दिया। इसके बदले दुर्योधन ने एक बाण मार कर, युधा-मन्यु की ध्वजा काटी। फिर आपके पुत्र ने उसका धनुष काट डाला। फिर भल्ल बाण मार युधामन्यु के सारथि को रथ के नीचे गिरा दिया। फिर चार बाण मार उसके रथ के घोड़ों को विद्ध किया। इस पर युधामन्यु बहुत क्रुद्ध हुआ और उसने बड़ी तेज़ी से तीस बाण दुर्योधन की छाती में मारे। फिर क्रुद्ध हो उत्तमौजा ने सुवर्णभूषित धनुष से बाण मार कर, दुर्योधन के सारथि को मार डाला।

हे राजेन्द्र ! तदनन्तर दुर्योधन ने भी पाञ्चालदेशीय उत्तमौजा के चारों घोड़ों को और उसके पार्श्वरक्षक तथा सारथि को मार डाला। जब उत्तमौजा के रथ के घोड़े और उसका सारथि मारा गया; तब वह बड़ी फुर्ती के साथ अपने भाई के रथ पर जा बैठा। वहाँ से उसने दुर्योधन के रथ के घोड़ों के बहुत से बाण मार, उन्हें अन्त में मार ही डाला। फिर युधामन्यु ने दुर्योधन का धनुष और तरकस भी काट डाला। तब आपका पुत्र घोड़ों से रहित अपने रथ से कूद पड़ा और गदा उठा उसने उन दोनों पर आक्रमण किया। किन्तु कुरुराज को क्रोध में भर आते देख, उसी समय युधामन्यु और उत्तमौजा दोनों ही रथ से उतर पड़े। इतने में गदा के प्रहार से दुर्योधन ने उनके सुवर्णभूषित रथ सहित सारथि और घोड़े को मार डाला। फिर दुर्योधन बड़ी फुर्ती से दौड़ कर शल्य के रथ पर जा बैठा। इतने में वे दोनों पाञ्चालराजकुमार दूसरे रथ पर सवार हो, अर्जुन के निकट आ पहुँचे।

एक सौ इकतीस का अध्याय

कर्ण की पुनः हार

सञ्जय ने कहा—हे धृतराष्ट्र ! जिस समय ऐसा भयङ्कर युद्ध चल रहा था और समस्त सैनिक चारों ओर से पीड़ित होने के कारण विकल हो रहे थे उस समय हे राजन् ! कर्ण ने भीम पर वैसे ही आक्रमण किया, जैसे एक मतवाला हाथी दूसरे मतवाले हाथी पर आक्रमण करता है। फिर उसने भीम को युद्ध करने के लिये ललकारा।

धृतराष्ट्र ने पूँछा—हे सञ्जय ! महाबली एवं महारथी कर्ण और भीम का, अर्जुन के रथ के निकट कैसा युद्ध हुआ और उस युद्ध का क्या परिणाम हुआ ? भीमसेन तो कर्ण को पहले ही परास्त कर चुका था। फिर महारथी कर्ण उससे लड़ने क्यों गया ? पृथिवी के समस्त योद्धाओं में प्रसिद्ध कर्ण

पर भीम ने फिर आक्रमण क्यों किया? धर्मराज युधिष्ठिर को जितना भय कर्ण से था उतना भय उन्हें भीष्म और द्रोण से भी न था। यहाँ तक कि, उन्हें कितने ही दिनों तक कर्ण की चिन्ता के कारण निद्रा नहीं आयी थी। सो उस कर्ण के साथ भीम क्योंकर लड़ने को उद्यत हुआ? ब्राह्मणों में पूर्ण निष्ठावान्, समर में कभी पीछे पैर न रखने वाले, योद्धाओं में श्रेष्ठ कर्ण से भीम क्योंकर लड़ा? जब वीरवर कर्ण और भीम आपस में युद्ध करने लगे, तब वे अर्जुन के रथ के निकट कैसे लड़े? सूतपुत्र कर्ण को कुन्ती द्वारा यह विदित हो चुका था कि, पाण्डव उसके सगे भाई हैं, तिस पर भी वह भीम से क्यों लड़ा? भीम भी कर्ण के पूर्ववैर को स्मरण कर, कर्ण से समरभूमि में कैसे लड़ा? मेरे पुत्र दुर्योधन को यह पक्का विश्वास था कि, कर्ण समर में समस्त पाण्डवों को जीत लेगा और कर्ण के बल पर ही मेरा मन्दभाग्य पुत्र अपने विजय के लिये आशावान् भी था। उस कर्ण ने भीमकर्मा भीम के साथ किस प्रकार युद्ध किया। जिसके बल पर निर्भर हो मेरे पुत्रों ने पाण्डवों से वैर-विरोध किया था, उस सूतनन्दन कर्ण के साथ भीमसेन कैसे लड़ा था? सूतपुत्र कर्ण ने पाण्डवों का कितनी ही बार अपमान किया था। इन अपमानों को स्मरण कर भीम ने कर्ण के साथ कैसा युद्ध किया था? जिस महाबली कर्ण ने अकेले ही दिग्विजय की थी; उस सूतपुत्र के साथ भीम कैसे लड़ पाया? जिस कर्ण का जन्म कुण्डलों और कवच धारण किये हुए हुआ था, उस वीर कर्ण के साथ भीम किस प्रकार लड़ा? उन दोनों का जैसा युद्ध हुआ हो और उनमें से जो हारा और जीता हो, वह सब तुम मुझे यथार्थ वर्णन कर सुनाओ। क्योंकि हे सञ्जय! तुम वृत्तान्त कहने में बड़े निपुण हो।

इन प्रश्नों को सुन सञ्जय ने कहा—हे राजन्! भीमसेन अपना पिंड कर्ण से छुड़ा, अर्जुन और श्रीकृष्ण के निकट जाना चाहता था, किन्तु कर्ण ने उसका पीछा किया और उस पर कङ्कपत्र युक्त बाणों की वैसे ही वर्षा की, जैसे मेघ पर्वत पर जलवृष्टि करता है। तदनन्तर बलवान् राधेय

कर्ण ने प्रफुल्लित कमल पुष्प की तरह प्रसन्नवदन हो तथा मुसक्या कर, भागे जाते हुए भीम को पुकारा और कहा—हे भीम! मुझे तो यह स्वप्न में भी आशा न थी कि, तू शत्रु से लड़ने का विधिविधान जानता है। फिर तू अर्जुन के पास जाने के लिये उत्सुक हो, मुझे पीठ क्यों दिखाता है? तेरा यह काम तो कुन्तीनन्दनों जैसा नहीं है। अतएव अब तू मेरे सामने आ और मेरे ऊपर बाणवृष्टि कर। कर्ण के इन मर्मभेदी वचनों को सुन कर, भीम से न रहा गया। उसने अपना रथ अर्धमण्डलाकार रीति से पीछे लौटा, कर्ण का सामना किया। कवचधारी, द्वन्द्वयुद्ध में प्रवृत्त तथा अस्त्रविद्या-कुशल कर्ण पर भीम ने सीधे जाने वाले बाणों की वृष्टि की। कर्ण का वध कर, उपस्थित कलह को शान्त करने की कामना से, भीम ने प्रथम तो उसे बाणों से ढक, उसके अनुयायियों का वध किया, फिर कर्ण के ऊपर क्रोध में भर और उसका वध करने की इच्छा से विविध प्रकार के घोर अस्त्र छोड़े। मतवाले गज जैसी चाल वाले भीम की बाणवृष्टि को, अस्त्रवान् कर्ण अपनी अस्त्रमाया से निगल गया। अस्त्र-सञ्चालन-विद्या में ख्यातिप्राप्त कर्ण, बड़ा भारी धनुष ले, रणक्षेत्र में द्रोण की तरह विचरने लगा। हे राजन्! वह क्रोध में भर कर, युद्ध करते हुए कुन्तीपुत्र भीम के सामने हँसता हुआ बढ़ा चला गया। रण में चारों ओर लड़ते हुए वीरों के सम्मुख कर्ण का हँसना, भीम सह न सका। अतः अत्यन्त क्रुद्ध हो, महाबली भीम ने निकटस्थ कर्ण की छाती में वत्सदन्त बाण वैसे ही मारे, जैसे हाथी के अङ्कुश मारा जाता है। तदनन्तर इक्कीस सुवर्णपुंख पैने बाण कर्ण के मार कर, भीम ने विचित्र कवचधारी कर्ण का शरीर विद्ध किया। इस पर कर्ण ने भीम के वायुवेगी, ज़रदोज़ी की झूलों को ओढ़े हुए रथ के प्रत्येक घोड़े के पाँच पाँच बाण मार, उन्हें घायल कर डाला। फिर अर्धनिमेष में कर्ण ने भीम का रथ बाणजाल से ढक दिया। कर्ण के बाणजाल के नीचे ध्वजा, घोड़ों और सारथि सहित भीम का रथ छिप गया। तदनन्तर चौसठ बाण मार, कर्ण ने भीम का कवच छिन्न भिन्न कर डाला।

फिर नाराचों से भीम के मर्मस्थल विद्ध किये। किन्तु सर्प जैसे विषैले उन बाणों की चोट से भीम ज़रा भी विचलित न हुआ। भीम ने बड़े पैने बत्तीस भल्ल बाण कर्ण के मारे। इस पर कर्ण ने भीम के अगणित बाण मारे। कर्ण तो भीम के साथ कोमलता से लड़ता था, किन्तु भीम पूर्व वैर को स्मरण कर, कर्ण के साथ बड़ी कठोरता से युद्ध कर रहे थे। जब यह अवज्ञा भीम न सह सका, तब उस शत्रुनाशन ने कर्ण पर बड़ी फुर्ती से बाणवृष्टि की। भीमसेन के बाण चिड़ियों की तरह चीं चीं करते कर्ण के अङ्गों में घुस गये। जैसे जुगनू अग्नि को घेर लें, वैसे ही भीम के छोड़े बाणों ने कर्ण को घेर लिया।

हे राजन्! जब कर्ण बाणों से ढक गया, तब उसने भयङ्कर बाणवृष्टि की। किन्तु कर्ण के अनेक बाणों को भीम ने भल्ल बाण मार कर बीच ही में काट गिराया। कर्ण तो भी बाणवृष्टि कर भीम को आच्छादित करने लगा। उस समय भीम का शरीर बाणों से बिधा हुआ होने के कारण सेयी जैसा जान पड़ता था। कर्ण के छोड़े सुवर्ण पुङ्ख पैने बाणों की मार को भीम ने वैसे ही धारण किया जैसे सूर्य अपनी किरणों को धारण करते हैं। भीम के अङ्ग प्रत्यङ्ग से ख़ून बहने लगा। उस समय वसन्त ऋतु में फूले हुए अशोक वृक्ष जैसे भीम जान पड़ने लगे। इस तरह जब कर्ण ने बहुत से बाणों का प्रहार भीम पर किया, तब उन प्रहारों को न सह, भीम ने पच्चीस भयङ्कर नाराच कर्ण पर वैसे ही फेंके जैसे श्वेतपर्वत पर विषैले सर्प लपकाये जाँय। देवोपम पराक्रम वाले भीम ने, निज शरीर तक का दान देने वाले कर्ण के मर्मस्थलों में चौदह बाण मारे। तदनन्तर भीम ने अट्टहास किया और झट एक बाण मार कर्ण का धनुष काट डाला। फिर तुरन्त ही और बाण छोड़, कर्ण के सारथि और उसके रथ के घोड़ों का वध किया। फिर अग्नि की तरह चमचमाते बाण कर्ण की छाती में मार, उसे घायल किया। सूर्य की किरणों के समान चमचमाते बाण पर्वत के समान कर्ण के शरीर को फोड़, भूमि में घुस गये। उन बाणों के प्रहार से

कर्ण बड़ा खिन्न हुआ और निज बल के अभिमान में चूर कर्ण बैठने के लिये दूसरे रथ की ओर दौड़ा।

एक सौ बत्तीस का अध्याय

भीम और कर्ण की पुनः लड़ाई

धृतराष्ट्र ने कहा—हे सञ्जय ! धनुर्धरों में श्रेष्ठ जिस कर्ण ने शिव जी के शिष्य परशुराम जी से धनुर्विद्या की शिक्षा प्राप्त की थी और जो उस विद्या में अपने शिक्षा गुरु परशुराम के समान ही नहीं, प्रत्युत उनसे भी बढ़ बढ़ कर था, और जो स्वयं एक आदर्श शिष्य था, उस कर्ण को भी भीम ने अनायास परास्त किया। हे सञ्जय ! जिस कर्ण के बल पर मेरे पुत्र अपने विजय के लिये पूर्णतया निर्भर थे, वही कर्ण जब भीम के सामने से भाग गया; तब दुर्योधन ने क्या कहा ? सराहने योग्य वीर भीम ने कर्ण के साथ कैसे युद्ध किया प्रज्वलित अग्निवत भीम को देख, कर्ण ने उस समय क्या किया ?

सञ्जय बोले—हे धृतराष्ट्र ! कर्ण शास्त्रानुसार निर्मित एक दूसरे रथ पर सवार हो, वायु द्वारा तरङ्गित समुद्र की तरह भीमसेन की ओर बढ़ा। कर्ण को क्रुद्ध देख, आपके पुत्र समझ बैठे कि, भीम मानो आग में झोंक दिया गया। कर्ण अपने धनुष को टंकारता हुआ और भयङ्कर रूप से तालियाँ पीटता हुआ, भीम के रथ की ओर दौड़ा। हे राजन् ! उन दोनों महाबलियों में पुनः घोर युद्ध होने लगा दोनों वीर क्रोध में भरे हुए थे और एक दूसरे का वध करना चाहते थे, उस समय उनकी भावभङ्गी देख ऐसा जान पड़ता था, मानों दृष्टि ही से वे एक दूसरे को भस्म कर डालेंगे। क्रोध के कारण उन दोनों के नेत्र लाल हो गये थे और साँपों की तरह वे दोनों फुँसकार रहे थे। उन दोनों ने आपस में प्रहार करना आरम्भ किया। वे दोनों वीर, व्याघ्रों की तरह क्रोध में भर, श्येन पक्षी की तरह झपटे और परम

की तरह आवेश में भर कर, लड़ने लगे। उस समय भीम के नेत्रों के सामने कर्ण कथित वे वाक्य, जो उसने जुए में कहे थे, वनवास के समस्त क्लेश तथा विराट नगर में सहन किये हुए क्लेश, मूर्ति धारण कर आ खड़े हुए। साथ ही भीम को आपके पुत्रों द्वारा अपहृत निज राज्य का चमचमाते रत्नों का और आपके पुत्रों द्वारा प्राप्त क्लेशों का, आपके द्वारा कुन्ती सहित पाँचों भाइयों को भस्म कर देने के उद्योग का, भरी सभा में द्रौपदी के ऊपर किये गये अत्याचारों का, दुःशासन द्वारा खींचे गये द्रौपदी के केशों वाली घटना का और उस समय कर्ण द्वारा कहे गये कठोर वचनों का (अर्थात् द्रौपदी ! ये पाण्डव अब तेरे पति नहीं रहे । अब तू दूसरा कोई पति चुन ले । पाण्डव तो तैलहीन तिलों की तरह निस्सार हैं और नरक में पड़े हुए हैं), दासी भाव से द्रौपदी को भोगने के लिये कहे हुए वाक्यों का, तथा वन जाते समय आपके सामने कहे गये कर्ण के कठोर वचनों का, दुर्योधन द्वारा दुःखी पाण्डवों के प्रति कहे गये कठोर वाक्यों का तथा बाल्यावस्था ही से भोगे हुए निज दुःखों के दृश्य नाचने लगे। उन बातों की याद आते ही भीम को अपना जीवन दुःखमय अथवा भारस्वरूप जान पड़ने लगा। अतः भीम अपने प्राणों का मोह त्याग और हाथ में एक बड़ा धनुष ले तथा उसे टङ्कोरता हुआ, कर्ण से लड़ने को आगे बढ़ा। भीम ने कर्ण के रथ पर चमचमाते इतने बाण मारे कि, रथ के भीतर सूर्य का प्रकाश प्रवेश न कर सका। तब राधेय कर्ण ने हँस कर, पैने बाण छोड़ उस बाणजाल को काट डाला और भीम के नौ पैने बाण मार उन्हें घायल किया। यद्यपि कर्ण ने उन बाणों को मार भीम को पीछे हटाना चाहा; किन्तु अङ्कुश प्रहार से पीड़ित गज की तरह घायल भीम, उन बाणों के प्रहार से ज़रा भी विचलित न हुए और कर्ण की ओर बढ़ते ही चले गये। यह देख कर्ण भी भीम की ओर वैसे ही लपका, जैसे एक मतवाला हाथी दूसरे मतवाले हाथी के ऊपर लपकता है। उस समय कर्ण ने सैकड़ों भेरियों जैसा शब्द करने वाले अपने शङ्ख को बजाया और जैसे तरङ्गों से तरङ्गित समुद्र उछलता है, वैसे ही वह

भी दर्प से उछला और आगे को बढ़ा। यह देख उसके पक्ष के सैनिक परम आह्लादित हुए। घुड़सवारों, गजारोहियों और पैदल योद्धाओं को हर्ष सम्पन्न देख, भीमसेन ने कर्ण पर इतने बाण छोड़े कि, कर्ण उन बाणों से ढक गया। इतने में कर्ण ने अपने हंस जैसे सफेद रंग के घोड़ों को भीम के रीछ के समान काले घोड़ों से सटा दिया और भीम पर बाणों की वृष्टि आरम्भ की। भीम के काले घोड़ों के साथ कर्ण के सफेद घोड़ों को सटा हुआ देख, हे राजन्! आपके पुत्रों की सेना हाहाकार कर उठी। उस समय परस्पर भिड़े हुए दोनों वीरों के रथों के सफेद काले घोड़े आकाशस्थित श्वेत कृष्ण घटाओं जैसे जान पड़ते थे। उन दोनों को क्रुद्ध और उन दोनों के तांबे की तरह लाल लाल नेत्रों को देख, आपकी सेना के महारथी भयभीत हो, काँपने लगे। उन दोनों के युद्ध करने की समरभूमि, यमपुरी की तरह भयङ्कर और देखने के अयोग्य पितृपुरी की तरह जान पड़ने लगी। अन्य महारथी इन दोनों का युद्ध आश्चर्य में भर वैसे ही देख रहे थे जैसे कोई रङ्गभूमि को देखता हो। उस समय उन दोनों में से कौन हारेगा और कौन जीतेगा—यह कोई भी निर्णय नहीं कर सका। हे राजन्! आपके और आपके पुत्र की अनीति के कारण ही, वे योद्धा उन दोनों महारथियों के निकट खड़े खड़े उनकी लड़ाई देखते रहे। उन दोनों ने एक दूसरे पर बाण-प्रहार करते हुए बाणों से आकाश को ढक दिया। परस्पर बाणवृष्टि करते हुए ये दोनों वीर जलवृष्टि करते हुए दो मेघों जैसे जान पड़ते थे। उनके छोड़े हुए सुवर्णमय बाणों से आकाश बीच बीच में वैसे ही प्रदीप्त हो उठता था, जैसे उल्कापात से आकाश प्रकाशित हो जाता है। उनके छोड़े गिद्ध के परों से युक्त बाण आकाश में जा ऐसे जान पड़ते थे, मानों शरद ऋतु में मतवाले सारसों की पंक्ति आकाश में उड़ी चली जाती हो। उस समय कर्ण के साथ भीम को लड़ते देख, श्रीकृष्ण और अर्जुन ने विचारा कि, इस समय भीम पर बड़ा भार है। उस समय उन दोनों के छोड़े हुए बाणों के भीषण प्रहार से गज, अश्व और पैदल सैनिक मर मर कर भूमि पर लोटने लगे

थे। हे राजन्! उस समय आपके पुत्रों के पक्ष के बहुत से योद्धा मारे गये। कोई तो प्राणहीन हो गिर पड़े थे, कोई प्राणहीन हो गिर रहे थे और बहुत से गिर कर पड़े पड़े तड़फ रहे थे। क्षण भर में मृत गजों, अश्वों और पैदल योद्धाओं की लोथों से पृथिवी पट गयी।

एक सौ तैंतीस का अध्याय

भीम और कर्ण की लड़ाई

धृतराष्ट्र ने कहा—हे सञ्जय! मेरी समझ में तो भीम सचमुच बड़ा अद्भुत पराक्रमी है। क्योंकि उसने बड़ी शीघ्रता से कर्ण को युद्ध में परास्त किया। हे सञ्जय! कर्ण तो रण में मनुष्यों को क्या - देवता और यक्षों को भी स्तम्भित कर सकता है। वही कर्ण पाण्डुनन्दन भीम को युद्ध में क्यों न हरा सका? उन दोनों ने उस युद्ध रूपी जुवे के दाँव पर अपने अपने प्राण लगा दिये थे। सो वह द्यूत किस प्रकार हुआ? यह तो निश्चय ही है कि, इसमें एक पक्ष जीतेगा और दूसरा हारेगा। मेरा पुत्र दुर्योधन तो कर्ण की सहायता से सात्यकि और कृष्ण सहित समस्त पाण्डवों को जीतने के लिये लालायित है। किन्तु मैंने जब से यह सुना है कि, भीमकर्मा भीम ने युद्ध में कर्ण को कई बार नीचा दिखलाया, तब से मेरी आशाओं पर पानी फिर गया है और मेरा हृदय बैठा जाता है। हे सञ्जय! अब मुझे निश्चय जान पड़ने लगा है कि, मेरे पुत्रों के अपराध से समस्त कौरव अवश्य नष्ट हो जाँयगे। महाधनुर्धर पाण्डवों को कर्ण नहीं जीत सकता। अभी तक कर्ण और पाण्डवों में अनेक बार युद्ध हुए हैं; किन्तु उन सब में प्रायः कर्ण ही को नीचा देखना पड़ा है। ऐसा क्यों न हो, इन्द्र सहित समस्त देवता भी पाण्डवों को नहीं हरा सकते। किन्तु हा! बड़े दुःख की बात है कि, मेरा मन्दबुद्धि पुत्र दुर्योधन इस बात को नहीं समझता। जैसे मूढ़ मनुष्य महुक का शहद तो ले लेता है, किन्तु मक्खियों

द्वारा अपने नाश किये जाने का विचार नहीं करता, वैसे ही मेरे पुत्र दुर्योधन ने कुबेर जैसा पाण्डवों का समस्त धन तो ले लिया है, किन्तु यह कभी नहीं विचारा कि, ऐसा करने से उसका सर्वनाश हो जायगा। कपटी, एवं चालाक दुर्योधन ने कपट द्वारा पाण्डवों का राज्य छीन, सदा उनका अपमान किया और मुझ पापिष्ट ने भी पुत्रस्नेहवश, धर्म में स्थित, महात्मा पाण्डवों का अपमान किया है। तिस पर भी दूरदर्शी धर्मराज और उनके भाई शान्ति बनाये रखने को सन्धि करना चाहते थे, किन्तु मेरे पुत्रों ने उनको तुच्छ समझ, उनका अपमान किया। उन दुःखों और तिरस्कारों को याद कर, भीम ने कर्ण के साथ युद्ध किया होगा। हे सञ्जय! अतः तुम एक दूसरे का वध करने के लिये उद्यत उन दोनों श्रेष्ठ वीर योद्धाओं के युद्ध का वृत्तान्त मुझे सुनाओ।

सञ्जय ने कहा—हे राजन्! दो बनैले गजों की तरह आपस में लड़ने वाले उन दोनों वीरों के युद्ध का वृत्तान्त आप सुनें। कर्ण ने क्रोध में भर भीम के तीस बाण मारे; तब भीम ने तीन पैने बाण मार कर्ण का धनुष काट डाला। फिर एक भल्ल बाण से उसके सारथि को मार कर रथ से नीचे गिरा दिया। इस पर कर्ण, भीम का वध करने को और भी अधिक उत्तेजित हुआ। अतः उसने सुवर्णमण्डित और वैदूर्यमणिजटित दण्ड वाली एक शक्ति उठायी। कालशक्ति की भगिनी की तरह उस प्राण-संहारकारिणी शक्ति को कर्ण ने तान कर, भीमसेन के ऊपर वैसे ही फेंका, जैसे इन्द्र अपने वज्र को फेंकते हैं। उस शक्ति को भीम के ऊपर फेंक, कर्ण ने सिंहनाद किया। उस सिंहनाद को सुन आपके पुत्र बहुत प्रसन्न हुए, किन्तु भीम ने चमचमाते सात बाणों से उस शक्ति को बीच ही में टुकड़े टुकड़े कर के व्यर्थ कर डाला। फिर क्रोध में भर भीम ने मोर के पंखों से युक्त, सान पर पैनाये हुए और यमदण्ड जैसे भयङ्कर बाण, कर्ण पर छोड़े। उधर कर्ण ने सुवर्णपृष्ठ एक धनुष हाथ में ले, भीम पर बाण छोड़े। कर्ण के छोड़े नौ महाबाणों को भीम ने नौ नतपर्व बाणों से काट गिराया। उन बाणों को काट, भीम ने

सिंहनाद किया। जैसे दो मत्त बलीवर्द, ऋतुमती गौ को देख डौंके, अथवा दो सिंह, माँसखण्ड के लिये दहाड़ें, वैसे ही भीम और कर्ण गर्जने लगे और एक दूसरे को मार डालने के लिये घात की खोज में घूमने लगे। जैसे गोठ-स्थित दो वृषभ, एक दूसरे को घूर कर, सींगों से लड़ने लगते हैं, वैसे ही दोनों क्रोधविस्फारित नेत्रों से एक दूसरे को देख और धनुष को कान तक तान, एक दूसरे पर बाणप्रहार करने लगे। जैसे दो हाथियों में दाँतों की टक्करों से युद्ध हो, वैसे ही वे दोनों बाणप्रहारों से युद्ध कर रहे थे। वे आपस में एक दूसरे को घूर ऐसे देख रहे थे, मानों एक दूसरे को भस्म कर डालेंगे। वे दोनों हँस कर परस्पर तिरस्कार करते हुए बार बार शङ्खध्वनि करते थे और युद्ध करते थे। इतने में भीम ने पुनः कर्ण का धनुष मूठ पर से काटा। फिर उसके शङ्ख के समान सफेद रंग के चारों घोड़ों को तथा सारथि को मार डाला। जब कर्ण के घोड़े और सारथि मारे गये और स्वयं भी वह बाणों से ढक गया, तब तो कर्ण बड़े सोच विचार में पड़ा। बाणप्रहार के बाहुल्य से कर्ण मोहित हो गया। उस समय क्या करना चाहिये; इसका वह कुछ भी निश्चय न कर सका। कर्ण को इस प्रकार विपद्ग्रस्त देख, दुर्योधन क्रोध से मूर्छित हो अपने भाई दुर्जय से बोला—देख, हमारी आँखों के सामने भीम, कर्ण को निगल जाना चाहता है। अतः तू कर्ण के निकट जा और जंगली भीम को मार कर्ण की रक्षा कर। दुर्योधन के कथनानुसार हे राजन्! आपका पुत्र दुर्जय बाणवृष्टि करता हुआ भीम की ओर दौड़ा। उसने नौ भीम के और आठ बाण भीम के घोड़ों के मारे। फिर छः बाण भीम के सारथि के, तीन ध्वजा पर और सात बाण पुनः भीम के मारे। इस पर भीम बड़ा क्रुद्ध हुआ और उसने बाण मार दुर्जय के कवच को तोड़ डाला। फिर उसे उसके सारथि और घोड़ों सहित यमपुर को भेज दिया। युद्धवेश में सज्जित आपका पुत्र दुर्जय, बाणों के प्रहार से भूशायी हो, साँप की तरह तड़फड़ाने लगा, उसकी दशा देख, कर्ण के नेत्रों से, आँसू बहने लगे। उसने दुर्जय के निकट जा, उसकी प्रदक्षिणा की। इसी

बीच में भीम ने कर्ण के रथ को पुनः नष्ट कर डाला। फिर भीम ने कर्ण के ऊपर खड्ग, शक्ति, गदा तथा फेंके। तब क्रुद्ध अतिरथी कर्ण भी और चुप न रह सका—वह भी भीम के साथ लड़ता ही रहा।

एक सौ चौंतीस का अध्याय

कर्ण का पलायन

संजय ने कहा—हे धृतराष्ट्र! यद्यपि रथशून्य कर्ण को भीम ने फिर पूर्णरूप से जीत लिया था; तथापि कर्ण दूसरे रथ पर सवार हो कर आया और बाणों से भीम को विद्ध करने लगा। वे एक दूसरे पर बाणवृष्टि करते हुए ऐसे ही लड़ने लगे, जैसे दो विशालकाय गज आपस में दाँतों की नोकों से लड़ें। कर्ण ने भीम पर बाणवृष्टि कर, सिंहनाद किया और तदनन्तर भीम की छाती में एक बाण मारा। तब भीम ने कर्ण के दस बाण मारे। फिर नतपर्व सत्तर बाण मार कर, कर्ण को विद्ध किया। भीम ने कर्ण की छाती में नौ बाण मार कर, उसकी ध्वजा को छिन्न भिन्न कर दिया। फिर जैसे हाथियों को अङ्कुशों से और घोड़ों को कोड़ों से पीटते हैं; वैसे ही भीम ने कर्ण के तिरसठ बाण मार कर, कर्ण को विद्ध किया। भीम द्वारा घायल कर्ण अपने जबड़े जीभ से चाटने लगा और उसके नेत्रों के कोए क्रोध से लाल हो गये, तब शरीर को विदीर्ण कर डालने वाला एक बाण कर्ण ने वैसे ही भीम पर छोड़ा, जैसे इन्द्र ने अपना वज्र बलि नामक दैत्य पर फेंका था। कर्ण का छोड़ा हुआ वह विचित्र पुंख बाण भीम के शरीर को फोड़ भूमि में घुस गया। तदनन्तर क्रोध के कारण रक्तनेत्र महाबाहु भीम ने वज्र के समान मजबूत, छः पहलू वाली सोने के पत्रों से युक्त, चार हाथ की बड़ी भारी गदा उठा, कर्ण पर फेंकी। क्रोध में भरे हुए भीम ने उस गदा के प्रहार से कर्ण के रथ के उत्तम घोड़ों को वैसे ही मार डाला, जैसे इन्द्र ने वज्रप्रहार से असुरों का संहार किया था। फिर भीम ने दो क्षुरप्र बाणों से

कर्ण के रथ की ध्वजा काट, सारथि को मार डाला। जब कर्ण के रथ के घोड़े, और सारथि मारे गये और ध्वजा कट गयी, तब उदासमना कर्ण रथ से उतर पड़ा और धनुष तान कर खड़ा हो गया। उस समय मैंने कर्ण का अद्भुत पराक्रम देखा। वह यह कि रथहीन कर्ण पैदल युद्ध करता हुआ भी शत्रु को रोके ही रहा। कर्ण को रथहीन देख, दुर्योधन ने दुर्मुख से कर्ण के पास रथ ले जाने को कहा। दुर्योधन के कथनानुसार दुर्मुख रथ ले कर्ण की ओर गया और भीम पर बाणवृष्टि भी करने लगा। दुर्मुख को कर्ण की सहायता के लिये आते देख, भीम प्रसन्न हो, जावड़े चाटने लगा। फिर भीम बाणों से कर्ण को रोक अपना रथ उस ओर हँकवा ले गया, जिस ओर दुर्मुख था। वहाँ जा उसने नतपर्व नौ बाण मार कर, दुर्मुख को यमालय भेज दिया। हे राजन्! दुर्मुख के रथ में बैठा हुआ सूर्य के समान शोभायमान कर्ण, दुर्जय को मरा हुआ देख, रोने लगा और क्षण भर तक उसे चेत न रहा। तदनन्तर कर्ण सावधान हुआ और रथ से उतर वहाँ गया; जहाँ दुर्मुख का शव पड़ा हुआ था। वहाँ पहुँच उसने उस शव की परिक्रमा की और लंबी लंबी साँसें लेता हुआ वह कुछ भी निश्चय न कर सका। यह सुअवसर हाथ लगते ही भीम ने गिद्ध पक्ष से युक्त चौदह बाण कर्ण के मारे। उन चमचमाते बाणों से कर्ण का कवच छिन्न भिन्न हो गया। कालप्रेरित सर्प जैसे रक्तपान करता है, वैसे ही वे बाण कर्ण के रक्त को पी कर, बिल में आधे घुसे क्रुद्ध महासर्पों की तरह भूमि में आधे घुस, बड़े सुशोभित जान पड़ने लगे। फिर कर्ण ने बड़े उग्र सुवर्णभूषित चौदह बाण मार, भीम को विद्ध किया। उन बाणों के प्रहार से भीम की दक्षिण भुजा घायल हो गयी और वे बाण पृथिवी में वैसे ही घुस गये, जैसे पक्षिगण क्रौंचपर्वत में घुसते हैं। उस समय उनकी वैसी ही शोभा हो रही थी, जैसी शोभा सूर्यास्त समय में पृथिवी पर पड़ती हुई सूर्य की किरणों की होती है, जल बहाते भूधरों की तरह भीमसेन के शरीर से बहुत सा रक्त बहने लगा। तब से, आँसू बहते भीम ने गरुड़ जैसे वेगवान् तीन बाण मार कर, कर्ण को

घायल किया और सात बाण मार कर, उसके सारथि को घायल किया। भीम के छोड़े बाणों के प्रहार से कर्ण घबड़ा गया और अत्यन्त भयभीत हो तथा तेज़ी से घोड़ों को हँकवा, रणक्षेत्र से भागा, किन्तु धधकते हुए अग्नि की तरह अतिरथी भीम अपना सुवर्णपृष्ठ धनुष ताने रणभूमि में खड़ा ही रहा।

एक सौ पैंतीस का अध्याय

धृतराष्ट्र का परिताप

राजा धृतराष्ट्र बोले—हे सञ्जय! जब राधेय कर्ण भी भीम को न हरा सका; प्रत्युत स्वयं पराजित हो भीमसेन के सामने से भाग गया, तब उसके पुरुषार्थ का धिक्कार है। वास्तव में पुरुष का पुरुषार्थ कुछ भी नहीं है। मैं तो दैव ही को पुरुषार्थ की अपेक्षा श्रेष्ठतम मानता हूँ। दुर्योधन के मुख से मैंने सुना है कि, कर्ण चाहे तो कृष्ण सहित अर्जुनादि पाण्डवों को पराजित कर सकता है। दुर्योधन के मतानुसार इस धराधाम पर कर्ण की टक्कर का योद्धा दूसरा कोई नहीं है। उस मूढ़ ने मुझसे यह भी कहा था कि, कर्ण दृढ़ धनुर्धर, अथक परिश्रमी, परम पराक्रमी और महाबली है। इस लिये यदि रणभूमि में कर्ण मेरा सहायक हो, तो अल्पपराक्रमी, बुद्धिशून्य पाण्डवों की तो हकीकत ही क्या है, देवगण भी मुझे युद्ध में पराजित नहीं कर सकते। सो उसी दुर्योधन ने भीम के आगे से विषदन्तविहीन सर्प की तरह भागे हुए कर्ण के पराजित होने पर, क्या कहा? हाँ, जिस दहकती आग के समान तेजस्वी भीम के सामने, अश्वत्थामा, कृप, मद्रराज शल्य और कर्ण खड़े नहीं रह सकते, उसके सम्मुख, दुर्योधन ने मोहवश ही अकेले दुर्मुख को भेजा। अश्वत्थामा आदि महारथी वायुतुल्य तेजस्वी भीम के बल पराक्रम से अनजान नहीं हैं। भीमकर्मा भीम को निष्ठुर स्वभाव, दस सहस्र हाथियों जितने बल से सम्पन्न एवं आतापू[illegible] काल के

समान भयङ्कर जान कर भी, उन सब लोगों ने उसे युद्धभूमि में क्यों क्रुद्ध किया ? यद्यपि कर्ण ने अपने भुजबल पर निर्भर हो, भीमसेन का तिरस्कार कर, उससे युद्ध किया, तथापि उसे भीम ने वैसे ही परास्त किया जैसे इन्द्र ने असुरों को परास्त किया था। मुझे तो कोई भी वीर ऐसा नहीं देख पड़ता, जो भीम को युद्ध में हरा सके। फिर जब उसने द्रोण की सेना को भेद कर, मेरी सेना में प्रवेश किया है, तब अपने जीवित रहने की आशा रख कर कौन उसको पीड़ित कर सकता है ? हे सञ्जय ! युद्धभूमि में खड़े वज्रधर इन्द्र का जैसे कोई असुर सामना नहीं कर सकता, वैसे ही गदा ले कर रणक्षेत्र में खड़े भीम का भी कोई योद्धा सामना नहीं कर सकता। भले ही कोई भूतनाथ महाकाल रुद्र का सामना कर जीवित बच जाय; किन्तु भीमसेन के सामने पड़ किसी का भी जीवित रहना सम्भव नहीं। जो अल्पबुद्धि लोग अज्ञानवश, क्रोधी भीम के सामने लड़ने को आते हैं, वे धधकती हुई आग में प्रवेश करने वाले पतंगों की तरह भीमसेन रूपी आग में हठात् पड़ते हैं। क्रोधी भीम ने द्यूतसभा में मेरे पुत्रों के वध की प्रतिज्ञा की थी। उस प्रतिज्ञा के कारण तथा कर्ण को पराजित देख, दुःशासन और दुर्योधन निश्चय ही हतोत्साह हो गये होंगे। नीचबुद्धि दुर्योधन ने पहले कहा था कि मैं, कर्ण और दुःशासन—ये तीन महारथी मिल कर, रणक्षेत्र में पाण्डवों को परास्त कर देंगे। सो इस समय कर्ण को रथभ्रष्ट और पराजित देख कर, वह कृष्ण के कथन के विरुद्ध आचरण करने के लिये अवश्य ही परिताप करता होगा। मेरे पुत्रों का भीमसेन द्वारा मारा जाना देख, दुर्योधन को अपने किये अपराधों पर पश्चाताप होता होगा। साक्षात् काल के समान, भीमसेन के युद्ध में खड़े रहने पर जीने की आशा रखने वाला कौन उसके सामने आवेगा। मैं तो समझता हूँ कि, बाड़वानल में कोई पुरुष बचकर जीवित निकल आ सकता है, किन्तु रणक्षेत्र में भीम के हाथ में पड़ कर, कोई कभी नहीं बच सकता। अकेला भीम ही क्या ? युद्ध में क्रुद्ध हुए समस्त पृथापुत्र, पाञ्चाल योद्धा, कृष्ण, सात्यकि—आदि कोई

भी योद्धा युद्ध के समय अपने प्राणों की कुछ भी परवाह नहीं करते। इससे हे संजय! मेरे पुत्रों का जीवन बड़े सङ्कट में पड़ गया है।

यह सुन संजय ने कहा—हे राजन्! निश्चय ही उपस्थित महाभय के लिये आप पछता रहे हैं, किन्तु इन समस्त वीरों के नाश का मूल कारण तो आप ही हैं। क्योंकि उस समय तो आप अपने पुत्रों के मत से सहमत हो कर, अपने हितैषी पुरुषों के बार बार मना करने पर भी और किसी की बात न मान कर, आपने इस घोर वैर को वैसे ही उत्पन्न किया है, जैसे मरणासन्न रोगी दवा और पथ्य से विरक्त हो, अपनी मौत आप बुलाता है। राजन्! आपने जिस विष को स्वयं ही पान किया है, वह सहज में पचने वाला नहीं है। अतः उसका फल अब आप चखें। शूरवीर योद्धा युद्ध करने में अपनी पूर्ण शक्ति को लगाते हैं, तिस पर भी आप उनकी निन्दा करते हैं। आप जैसा चाहें वैसा समझें, मैं अब युद्ध का वृत्तान्त ज्यों का त्यों आपको सुनाता हूँ। आप सुनें। आपके महाधनुर्धर पुत्र दुर्मर्षण, दुःसह, दुर्मद, दुर्धर और जय ने जब देखा कि, कर्ण को भीमसेन से नीचा देखना पड़ा है, तब यह बात उनको सहन न हो सकी। अतः वे पाँचों भाई क्रोध में भर, भीमसेन की ओर लपके। उन पाँचों ने चारों ओर से भीम को घेर लिया और टीड़ियों के दल की तरह बाणवृष्टि कर समस्त दिशाएं पाट दीं। देवसमान आपके उन पुत्रों को सहसा अपनी ओर आते देख, भीम ने हँस कर उन्हें निवारण किया। आपके पुत्रों को भीमसेन के सामने लड़ने के लिये खड़ा देख, कर्ण स्वयं वहाँ गया। तब भीम सुवर्णपुंख बाणों को छोड़ता हुआ, बड़ी फुर्ती के साथ—आपके पुत्रों के रोकने पर भी, कर्ण की ओर झपटा। तब आपके पाँचों पुत्र और कर्ण चारों ओर से भीम के ऊपर बाणवृष्टि करने लगे। तब भीम ने पचीस बाण मार, आपके पाँचों पुत्रों को उनके घोड़ों और सारथियों सहित यमालय भेज दिया। जैसे रंगबिरंगे फूलों वाले वृक्ष, पवन के प्रचण्ड झकोरे से उखड़ कर गिर पड़ते हैं, वैसे ही वे पाँचों भी अपने सारथियों और घोड़ों सहित निर्जीव हो, भूमि पर गिर

पड़े। वहाँ पर मैंने भीम का विस्मयोत्पादक पराक्रम यह देखा कि, वह बाणप्रहार से कर्ण को रोकता भी था और साथ ही आपके पुत्रों पर बाण प्रहार कर, उनका वध भी कर रहा था। भीम के बाणों से बिद्ध कर्ण क्रोध में भर भीम को घूरने लगे। भीम भी क्रोध में भर और लाल लाल आँखें कर, अपना प्रचण्ड धनुष घुमाता हुआ, कर्ण की ओर टकटकी बाँध देखने लगा।

एक सौ छत्तीस का अध्याय

भीम के हाथ से पुनः दुर्योधन के सात भाइयों का वध

सञ्जय ने कहा—हे राजन्! आपके पाँचों पुत्रों के मारे जाने पर, कर्ण बड़ा कुपित हुआ और वह अपने जीवन को धिक्कारने लगा। अपने आँखों के सामने आपके पुत्रों का मारा जाना देख, कर्ण ने अपने को अपराधी समझा, तदनन्तर क्रुद्ध भीमसेन निडर हो, कर्ण पर लपके। कर्ण ने भीम का तिरस्कार करते हुए पहले उसके पाँच बाण मार उसे घायल किया फिर दस बाणों से उसे पुनः घायल किया। किन्तु भीम ने कर्ण के बाणों को कुछ भी न गिना, प्रत्युत अपने सौ पैने बाणों से कर्ण को बिद्ध किया। फिर पाँच अति पैने बाण मार कर्ण के मर्म स्थलों को बेध डाला। तदनन्तर एक बाण और मार कर्ण का धनुष भी काट डाला। तब क्रोध में भर कर्ण ने दूसरा धनुष लिया और इतने बाण छोड़े कि, भीम बाणों से ढक गया। इस पर भीम ने उसके घोड़ों और सारथि को मार कर, शत्रुता की इतिश्री करने की कामना से, सिंहनाद कर, अट्टहास किया। तदनन्तर भीम ने तुरन्त ही कर्ण का धनुष पुनः काट डाला। कर्ण का सुवर्णभूषित धनुष घोर टंकार शब्द सहित भूमि पर गिरा। तब तो कर्ण हाथ में गदा ले रथ से उतर पड़ा। फिर कर्ण ने वह गदा भीम पर फैंकी। किन्तु सब के देखते ही देखते भीम ने उस गदा को व्यर्थ कर डाला। फिर

कर्ण का वध करने की इच्छा से भीम ने कर्ण पर अगणित बाण छोड़े। किन्तु कर्ण ने उन सब को बीच ही में अपने बाणों से काट डाला। फिर कर्ण ने सब योद्धाओं के सामने भीम का कवच काट कर भूमि पर गिरा दिया। फिर पचीस बाण मार भीम को विकल किया। कर्ण का यह पराक्रम आश्चर्यप्रद था। भीम ने क्रोध में भर कर्ण पर नौ बाण छोड़े। भीम के वे बाण कर्ण के कवच को फाड़ और दक्षिण भुज को भेद कर वैसे ही भूमि में घुस गये, जैसे सर्प अपने बिलों में घुसते हैं। कर्ण इस बार भी भीमसेन के बाणों की मार को न सह कर उसके सामने न टिक सका और भागा। जब दुर्योधन ने देखा कि, कर्ण भीमसेन के बाणप्रहार से पीड़ित हो, पैदल भागा जा रहा है, तब उसने अपने सहोदर भाइयों से कहा—हे पुरुषसिंह ! तुम लोग सब प्रकार से उद्योग कर, रण में कर्ण की रक्षा करो। इस पर चित्र, उपचित्र, चित्राक्ष, चारुचित्र, शरासन, चित्रायुध और चित्रवर्मा नामक आपके सात पुत्र अपने ज्येष्ठ भ्राता के आदेशानुसार, उस समय भीम के पराक्रम को देख, बड़ी फुर्ती से बाण छोड़ते हुए भीमसेन की ओर दौड़े। आपके पुत्रों को लड़ने के लिये आता देख, भीम ने उनमें से प्रत्येक के एक एक बाण मार, उन सब का वध कर डाला। वे भीमसेन के प्रचण्ड बाण-प्रहार से मर कर पृथिवी पर वैसे ही गिर गये, जैसे वायु के प्रचण्ड झोकों से उखड़े हुए वृक्ष गिर पड़ते हैं। उस समय आँखों में आँसू भरे हुए कर्ण को विदुर के वचन स्मरण हो आये। तदनन्तर कर्ण एक सुसज्जित रथ पर सवार हो और अपना पराक्रम प्रदर्शित करता हुआ, भीम की ओर दौड़ा।

उस समय ये दोनों, सूर्यकिरणों से युक्त दो मेघखण्डों की तरह जान पड़ने लगे। भीम ने क्रुद्ध हो बड़े पैने छत्तीस बाणों से कर्ण का कवच काट कर गिरा दिया। इस पर कर्ण ने भीम के पचास बाण मारे और भीम को बुरी तरह घायल किया। रक्तचन्दन चर्चित वे दोनों वीर क्षत विक्षत हो, सूर्यवत् प्रकाशित होने लगे। बाणों से दोनों ही के कवच कटकुट गये थे। अतः वे दोनों युद्धभूमि में वैसे ही शोभित होते थे, जैसे

फैलाए छोड़े हुए साँप। जैसे दो सिंह अपने पैने दाँतों से एक दूसरे को काटते हुए प्रहार करते हैं, वैसे ही वे दोनों पुरुषसिंह भी परस्पर बाण प्रहार कर, क्षत विक्षत शरीर हो, अत्यन्त पीड़ित हुए। जैसे मेघ आकाश से जलवृष्टि करते हैं, वैसे ही वे दोनों एक दूसरे पर बाणवृष्टि कर रहे थे। जैसे दो मतवाले हाथी आपस में दाँतों और सूँड़ों से लड़ते हैं, वैसे ही वे पराक्रमी वीर बाणों द्वारा एक दूसरे को घायल कर और लोहूलुहान हो अत्यन्त शोभायमान जान पड़ते थे। वे दोनों रथियों में श्रेष्ठ पराक्रमी योद्धा सिंहनाद करते थे, उछलते थे और मण्डलाकार गति से रथ को घुमाते हुए रणभूमि में क्रीड़ा कर रहे थे। सिंहसमान पराक्रमी वे दोनों पुरुषसिंह सिंहनाद कर रहे थे। क्रोध से लाल लाल नेत्र किये वे दोनों वैसे ही युद्ध कर रहे थे, जैसे पूर्वकाल में इन्द्र और राजा बलि का युद्ध हुआ था।

हे महाराज! भीम अपना धनुष चढ़ा, बिजली से युक्त बादलों की तरह रणभूमि में विराजमान थे। उनके रथों का घरघराहट शब्द बादल की गड़गड़ाहट जैसा होता था। उसका धनुष बिजली की तरह देख पड़ता था। वह मेघ रूपी हो कर, अपने बाणों की वृष्टि से कर्णरूपी पर्वत को छिपाने लगा। महापराक्रमी भीम ने अगणित बाण बरसा कर, कर्ण को छिपा दिया। यह देख आपके पुत्र भयभीत हो गये। भीमसेन, यशस्वी श्रीकृष्ण अर्जुन, सात्यकि और अर्जुन के चक्ररक्षक पञ्चालदेशी दो राजकुमारों को हर्षित करते हुए, युद्धभूमि में कर्ण को निवारण करने लगे। आपके समस्त पुत्र भीमसेन के पराक्रम, धैर्य और भुजबल को देख, हतोत्साह हो गये।

एक सौ सैंतीस का अध्याय

विकर्ण तथा चित्रसेन वध

सञ्जय ने कहा—जैसे वैरी हाथी की चिंघार को दूसरा हाथी नहीं सहता, वैसे ही कर्ण भी भीमसेन के धनुष की टंकार को न सुन सका। कर्ण

सुहृच्चमर के लिये भीम के सामने से हट गया। फिर जब वह लौटा, तब उसने भीम द्वारा आपके पुत्रों को मरा हुआ देखा। हे नृपश्रेष्ठ! आपके पुत्रों को देख, कर्ण उदास हो गया और वह अत्यन्त दुःखी हुआ। वह लंबी साँसे लेता हुआ, पुनः भीम के सामने गया। क्रुद्ध कर्ण साँप की तरह फुँसकारता तथा बाण छोड़ता, किरण विस्तार करते हुए सूर्य जैसा जान पड़ता था। हे राजन्! जैसे सूर्य रश्मियों से पर्वत व्याप्त हो जाता है, वैसे ही कर्ण के बाणों से भीमसेन आच्छादित हो गया। सन्ध्या समय बसेरा लेने को वृक्षों पर जाने वाले पक्षियों की तरह, मयूरपुंखों से युक्त कर्ण के छोड़े बाण भीम के शरीर में घुसने लगे। सुवर्णपुंख बाण, जो कर्ण के धनुष से छूटते थे वे ऐसे जान पड़ते थे, मानों हंसों की पंक्ति जा रही हो। कर्ण ऐसी फुर्ती से बाण छोड़ रहा था कि, उसके धनुष, ध्वजा, उपस्कर, छत्र, दण्ड और जुए में से भी बाण छूटते हुए से जान पड़ते थे। गिद्ध के परों से युक्त सुवर्ण-भूषित बाणों से कर्ण ने आकाश ढक दिया। कर्ण ने अपने प्राणों की कुछ भी परवाह न कर, यमराज की तरह अत्यन्त दृढ़ भीमसेन को बेध डाला। जब भीम ने देखा कि, कर्ण का वेग असह्य है, तब वह उसके बाण समूह को रोकने लगा। कर्ण के चलाये बाणों को नष्ट कर, बीस पैने बाणों से कर्ण को घायल किया। जैसे कर्ण ने भीम को बाणों से ढक दिया था, वैसे ही भीम ने भी कर्ण को बाणों से ढक दिया। यह देख आपके पक्ष के योद्धा भी भीम की प्रशंसा कर, धन्य धन्य कहने लगे। चारण भी हर्षित हो भीम की प्रशंसा करने लगे। भूरिश्रवा, कृप, अश्वत्थामा, शल्य, जयद्रथ, उत्तमौजा, युधामन्यु, सात्यकि, श्रीकृष्ण और अर्जुन—अर्थात् कौरव और पाण्डव पक्ष के दस महारथी योद्धा, सिंह की तरह दहाड़ते हुए सहसा कहने लगे—भीम धन्य है! भीम धन्य है!! सहसा ऐसे भयङ्कर एवं रोमहर्षणकारी शब्द को सुन, आपके पुत्र दुर्योधन ने अपने पक्ष के राजाओं, राजकुमारों तथा विशेष कर अपने सगे भाइयों से कहा—तुम लोगों का मङ्गल हो। भीम के बाणप्रहार से कर्ण के मारे जाने के पूर्व ही तुम लोग

पहुँच कर, भीम के पंजे में फँसे कर्ण को बचाओ। दुर्योधन के इस प्रकार आज्ञा देते ही उसके सात सहोदर भ्राताओं ने क्रोध में भर भीम को घेरा। जैसे वर्षाऋतु में मेघ किसी पर्वत को ढक कर, उस पर जल की बूँदों की बौछार करते हैं; वैसे ही वे सब भी भीम को चारों ओर से घेर उस पर बाणवृष्टि करने लगे। जैसे प्रलयकाल उपस्थित होने पर, सात ग्रह मिल कर चन्द्रमा का ग्रास करते हैं, वैसे ही वे सातों सहोदर क्रोध में भर भीम को पीड़ित करने लगे। इस पर भीम ने मज़बूती से अपना धनुष पकड़, सूर्य की किरणों की तरह चमचमाते सात बाण छोड़े। भीम ने पूर्व वैर को स्मरण कर, वे बाण आपके पुत्रों का वध करने के लिये छोड़े थे। सो वे बाण उन सातों भाइयों को घायल कर आकाश में उड़ गये। आपके पुत्रों के हृदयों को विदीर्ण कर, आकाश की ओर जाते हुए सुवर्णभूषित वे सात बाण आकाशचारी गरुड़ जैसे जान पड़ते थे। उन बाणों का पिछला भाग रुधिर से सना हुआ था। वे बाण आपके पुत्रों का रक्त पी कर, आकाश में उड़ रहे थे। पर्वतशृङ्ग पर लगा वृक्ष जैसे हाथी द्वारा झकझोरे जाने पर उखड़ कर गिर पड़ता है; वैसे ही आपके सातों पुत्र अपने अपने रथों पर से भूमि पर गिर पड़े। भीम ने शत्रुञ्जय, शत्रुसह, चित्र, चित्रायुद्ध, दृढ़, चित्रसेन और विकर्ण नामक आपके सात पुत्रों का वध किया। आपके मरे हुए पुत्रों में अपने प्रिय विकर्ण को मरा हुआ देख, भीम को बड़ा दुःख हुआ। वे कहने लगे—विकर्ण! मैंने प्रतिज्ञा की थी कि, मैं कौरवों का रण में वध करूँगा। सो तू भी मेरी चपेट में आ गया। क्या करूँ मुझे अपनी प्रतिज्ञा की रक्षा के लिये विवश हो ऐसा करना पड़ा है। सचमुच क्षात्रधर्म बड़ा निठुर है। हा! तू तो मेरा और विशेष कर युधिष्ठिर का हितैषी था, तुही क्यों! देखो बृहस्पति के समान अगाध बुद्धि सम्पन्न भीष्म पितामह भी अपने प्राण गवाँ रणभूमि में सो रहे हैं। अतः निसन्देह युद्ध का कार्य बड़ा कठोर है।

सञ्जय ने कहा—कर्ण के सामने ही आपके पुत्रों को मार, पाण्डुनन्दन

महाबली भीम ने सिंहगर्जन किया। वह गर्जना धर्मराज के विजय और भीम के भीषण युद्ध को सूचित करती हुई चारों ओर व्याप्त हो गयी। भीम के उस महागर्जन को सुन धर्मराज अत्यन्त प्रसन्न हुए। उन्होंने बाजे बजवा भाई के सिंहनाद का समर्थन किया। अनन्तर युद्ध में भरे युधिष्ठिर, भीम के इङ्गित को पा और सचेत हो, द्रोण की ओर चढ़े। इधर आपके इक्कीस पुत्रों को रणभूमि में निर्जीव हो पड़ा देख, दुर्योधन को विदुर की बात हठात् याद हो आयी। वह कहने लगा—उस समय विदुर ने मेरे हित के लिये जो बातें कही थीं, वे सब ज्यों की त्यों अब सामने आ रही हैं। उस समय आपके पुत्र दुर्योधन को कोई उपाय न सूझा। द्यूतसभा में आपके मन्दमति दुर्योधन और अल्पबुद्धि कर्ण ने सब लोगों के सामने द्रौपदी को बुलवा उससे कहा था—हे कृष्णा! पाण्डव तो अब नष्ट हो सदा के लिये दुर्गति में पड़ गये। अतः तू अब अपने लिये कोई दूसरा पति चुन ले। फिर आपके पुत्रों ने पाण्डवों को चिढ़ाने के लिये उनसे कहा था—तुम तैलरहित तिलों की तरह निस्सार अर्थात् नपुंसक हो। उन कठोर वचनों के कहने ही का यह फल सामने है। तेरह वर्ष के रुके हुए क्रोधाग्नि को भीम उगल कर आपके पुत्रों का संहार कर रहा है। विदुर ने आपसे और आपके पुत्रों से अनुनय विनय कर शान्ति बनाये रखने के लिये प्रार्थना की थी; किन्तु विदुर की बातें आपके मन पर न चढ़ीं। अतः हे राजन्! उसका फल पुत्रों सहित अब आप भोगें। अपने धीर, वयोवृद्ध और कार्याकार्य का मर्म जानने वाले मित्रों का कहना आपने नहीं माना, सो यह सब भाग्य की बात है। हे राजन्! अतः अब आप दुःखी न हों। इसमें आपका बड़ा भारी दोष है। अपने पुत्रों के विनाश का कारण भी आप ही हैं। हे राजेन्द्र! आपके पुत्रों में प्रधान पराक्रमी विकर्ण और चित्रसेन मारे गये। इन दो के अतिरिक्त अन्य महारथी भी मारे गये। हे महाराज! आपके जिन जिन पुत्रों ने भीम का सामना किया, वे सब भीम के हाथों तुरन्त मार डाले गये। हे राजन्! आपही के कारण भीम तथा कर्ण को

असंख्य बाणों की वर्षा कर, सैनिकों का संहार करना पड़ा था। यह घटना मेरी आँखों देखी हुई है।

एक सौ अड़तीस का अध्याय

भीमसेन और कर्ण का घोर युद्ध

धृतराष्ट्र ने कहा—हे सञ्जय ! यद्यपि मेरा दुःखी होना अनिवार्य है, तथापि मैं यह स्वीकार करता हूँ कि, इसमें मैं बड़ा भारी अपराधी हूँ और मुझे यह फल अपने उसी घोर अपराध के कारण भुगतना पड़ता है। जो होनहार था वह हो चुका, किन्तु मेरी समझ में नहीं आता कि, इसमें अब मैं क्या करूँ ? हे सञ्जय ! यह वीरों का संहार मेरी दुष्ट नीति से जैसे हुआ हो, सो तू मुझको सुना। मैं अब शान्त भाव से उसे सुनने को बैठा हूँ।

सञ्जय ने कहा—हे धृतराष्ट्र ! पराक्रमी और महाबली कर्ण तथा भीम जल वृष्टि करने वाले बादलों की तरह—बाणवृष्टि करने लगे। भीम के लिखे नामाङ्कित सुवर्णपुङ्ख बाण कर्ण के निकट जा, उसके शरीर में ऐसे घुसे मानों वे उसके प्राणों को नष्ट कर डालेंगे। इधर से कर्ण के छोड़े मयूरपंखों से युक्त असंख्य बाणों ने भीम को आच्छादित कर दिया था। उन दोनों के छोड़े हुए बाणों से, जो इधर उधर भी गिर रहे थे, सेना में बड़ी गड़बड़ी मच गयी। उस समय हाथियों, घोड़ों और सैनिकों से रणभूमि वैसे ही जान पड़ने लगी, जैसी आँधी से टूटे हुए वृक्षों से ढकी पृथिवी जान पड़ती है। भीम के बाणों के भीषण प्रहार से विकल हो आपके अन्य सैनिक "यह क्या ? यह क्या" ? कहते हुए तथा रणक्षेत्र छोड़ भागने लगे। कर्ण और भीम के बाण प्रहारों से घबड़ा कर, सिन्धु, सौवीर और कौरवों की सेना रणक्षेत्र छोड़ बहुत दूर खड़ी हुई। उनमें से कितने ही शूर योद्धा अपने वाहनों को गँवा और आपस में यह कहते थे कि, सचमुच पाण्डवों के विजय के लिये देवता हमें मोहित कर रहे हैं, ऐसा न होता तो, भीम के बाणों के साथ

को मारने की इच्छा से, उन्होंने कृत्या प्रकट करने के लिये अग्नि में आहुति छोड़ी। अग्नि में आहुति देते ही महर्षि के तपोबल से एक बड़ा पराक्रमी और विशालकाय असुर, जिसका नाम मद था, उत्पन्न हुआ। उसका मुँह बहुत बड़ा था। उसके दाँतों के अग्रभाग बड़े नुकीले थे। वह ऐसा भयङ्कर था कि, देवता उसकी ओर मारे डर के देख नहीं सकते थे। जब वह मुँह फाड़ता था, तब उसका एक ओंठ पृथिवी पर और एक आकाश में जा लगता था। उसके मुख में चार डाढ़े थीं। वे सौ सौ योजन लंबी थीं। उसके नीचे ऊपर के दाँत महलों के कंगूरों की तरह दस दस योजन ऊँचे और त्रिशूल की नोंक की तरह पैने थे। उसकी दोनों भुजाएँ पर्वत की तरह स्थूल और दस हज़ार योजन लंबी थीं। उसके दोनों नेत्र सूर्य चन्द्र की तरह चमकीले थे और उसका मुख प्रलयकालीन अग्नि की तरह था। वह बिजली की तरह अपनी जीभ से ओठ चाट रहा था तथा भयानक दृष्टि से इधर उधर ताक रहा था। ऐसा जान पड़ता था, मानों वह सारे जगत् को बरज़ोरी निगल जाना चाहता था। वह असुर क्रोध में भर, महाभयङ्कर गर्जना करता हुआ और तीनों लोकों को दहलाता हुआ, इन्द्र की ओर, उनको खा जाने के लिये दौड़ा।

[नोट—जहाँ तक च्यवन और इन्द्र के उपर्युक्त कथोपकथन का मर्म समझ में आया है; वहाँ तक इन्द्र का कथन ठीक जान पड़ता है। इन्द्र का कथन है कि, अश्विनीकुमार देव-चिकित्सक तो हैं ही—साथ ही वे मर्त्य-लोक में भी इच्छानुसार वेष बना कर घूमा करते हैं। जब अश्विनीकुमारों के ज़िम्मे एक ख़ास काम है, जिसका सम्बन्ध मरने जीने से है; तब यदि उनको सोमपान का अधिकार यज्ञों में दे दिया जायगा तो अनेक रोगार्त प्राणी समय पर उचित चिकित्सा के अभाव से नष्ट हो जायँगे। साथ ही सोमवल्ली का रस एक प्रकार का मादक पदार्थ है। वैद्य हो कर यदि इन्हें नशा करा दिया जाया करेगा, तो न मालूम नशे की झोंक में वे लोग क्या का क्या अनर्थ न कर डालें। यद्यपि इन्द्र की आपत्ति युक्तियुक्त थी,

एक सौ उनतालीस का अध्याय

भीम का मरे हाथियों के पीछे जा कर छिपना

सञ्जय बोले—हे राजन् ! कर्ण ने तीन बाण भीम के मारे। फिर कर्ण ने भीम पर विविध प्रकार के बाणों की वृष्टि की। कर्ण के चलाये बाणों का प्रहार भीम पर्वत की तरह अचलभाव से खड़ा हो, सहता रहा। उस बाण-वृष्टि से उसे कुछ भी पीड़ा न जान पड़ी। भीम ने कर्णि बाण छोड़ कर्ण का कुण्डल सहित कान काट कर भूमि पर वैसे ही गिरा दिया, जैसे आकाश से ज्योतिःपिण्ड गिरता है। फिर क्रोध में भरे भीमसेन ने तिरस्कार सूचक मुसक्यान से एक भल्ल बाण तान कर कर्ण की छाती में मारा। इसके बाद केंचुली रहित सर्प जैसे दस बाण पुनः भीम ने कर्ण के मारे।

हे राजन् ! भीम के दसों बाण, कर्ण के मस्तक को फोड़ वैसे ही मस्तक के भीतर घुस गये, जैसे सर्प बिल में घुसे। उस समय उन बाणों से कर्ण की वैसी ही शोभा हुई जैसी शोभा उसकी नील कमल की माला धारण करने से होती थी। वेगवान् भीम के बाणों से अत्यन्त घायल कर्ण रथ के डंडे को पकड़, अचेत हो गया। उसने अपनी दोनों आँखें बंद कर लीं। उसके सारे शरीर से उस समय रुधिर बह रहा था। कुछ देर बाद कर्ण जब सचेत हुआ, तब वह अत्यन्त क्रुद्ध हुआ। वह क्रोध में भर भीम के रथ की ओर झपटा और गिद्धपंखों से युक्त सौ बाण भीम पर छोड़े। किन्तु भीम ने उन बाणों की कुछ भी परवाह न की और कर्ण पर भीषण बाणवृष्टि की। इस पर क्रुद्ध कर्ण ने तान कर नौ बाण भीम की छाती में मारे। दोनों ही वीर दो व्याघ्रों की तरह बली होने के कारण, दो मेघों की तरह आपस में लड़ते हुए बाणवृष्टि कर रहे थे। वे एक दूसरे पर विविध भाँति के बाणों को छोड़ते हुए एक दूसरे को त्रास देने लगे। दोनों ही चाहते थे कि, वे एक दूसरे से अपकार का बदला चुकावें। अतः वे आवेश में भर, युद्ध करने लगे। तदनन्तर, भीम ने क्षुरप्र बाण से कर्ण का धनुष काट, सिंहनाद किया।

हुई। वे पुनः अपनी आज्ञाकारिणी पत्नी सुकन्या के साथ वन में रह, विहार करने लगे। हे युधिष्ठिर! यह ब्राह्मण-सेवित सरोवर उन्हीं महर्षि च्यवन का है। हे राजन्! तुम इस सरोवर में अपने भाइयों सहित देव-पितृ-तर्पण करो। हे राजन्! इस सरोवर तथा सिकताक्ष के दर्शन करने के बाद, सैन्धवारण्य में जा, नदियों के दर्शन करना और पुष्कर तीर्थ में जा, वहाँ के पवित्र जल से आचमन कर, स्नान करना। हे युधिष्ठिर! यहाँ शिवमंत्र का जप करने से तुमको सिद्धि मिलेगी। यह समय कलि और द्वापर की सन्धि का है; किन्तु इस तीर्थ में द्वापर और त्रेता युगों की सन्धि जैसा समय बना रहता है। अर्थात् इसमें स्नान करने से स्नानकर्त्ता पर कलियुग अपना प्रभाव नहीं डाल सकता। हे पार्थ! देखो, सब पापों को नष्ट करने वाला वह तीर्थस्थान देख पड़ता है।

अतएव तुम सम्पूर्ण पाप-नाशक इस तीर्थ के जल में स्नान करो। यह आर्चीक नामक पर्वत है। इस पर आत्मज्ञानी महर्षि वास करते हैं। इस पर मरुत्व देवताओं का श्रेष्ठ स्थान है। इस पर जो वृक्ष हैं उनमें सदा (हर ऋतु में) फल लगा करते हैं और झरनों से सदा जल बहा करता है। हे युधिष्ठिर! ये जो भाँति भाँति के वृक्ष देख पड़ते हैं, सो ये देवताओं की यज्ञभूमि की सीमाओं को बतलाने वाले वृक्ष हैं। यह चक्रतीर्थ है। इस पर अग्नि की तरह तेजस्वी वैखानस और बालखिल्य नामक ऋषि रहते हैं। ये ऋषि गण वायु भक्षण करते हैं। यहाँ पर तीन शिखर हैं, जो काशीक्षेत्र के समान हैं। यहाँ पर तीन प्रवाह भी हैं। वे प्रयागधाम की तरह हैं। इनकी परिक्रमा कर इनमें मनमाना स्नान कीजिये। हे राजन्! पूर्वकाल में इस पर्वत पर राजा शान्तनु, राजा शुनक और उभय नर नारायण ने तप कर, सनातन लोक पाये थे। हे राजन्! इस आर्चीक पर्वत पर देवगण और पितृगण महर्षियों सहित रह कर, तप किया करते थे। तुम उनका भी आराधन करो। पूर्वकाल में इस पर्वत पर, ऋषियों ने यज्ञ की हवि खायी थी। यहाँ यमुना भी सदैव बहा करती है और यहाँ श्रीकृष्ण जी ने तप किया था।

बढ़ता ही चला गया। उस समय सुवर्णभूषित भीम का विशाल धनुष, ताने जाने पर इन्द्रधनुष की तरह लंबा जान पड़ता था। उस समय भीम के धनुष से सुवर्णपुङ्ख और नतपर्व बाण बराबर निकल रहे थे और उनसे आकाश परिपूर्ण हो रहा था। आकाश में उन सुवर्णभूषित बाणों से बना हुआ जाल, सुवर्णहार जैसा जान पड़ता था। धीरे धीरे भीम के बाणों ने कर्ण के छोड़े और आकाश में फैले बाणों को काट कर गिरा दिया। अग्निस्फुलिङ्ग के समान स्पर्शवाले, शीघ्रगामी, सुवर्णपुङ्ख भीम तथा कर्ण के बाणों से आकाश परिपूर्ण हो गया। अतः सूर्य का आलोक और वायु का सञ्चार दोनों रुक गये। किन्तु सूतपुत्र कर्ण, महाबली भीम के अस्त्र का तिरस्कार कर और बाणों से भीम को आच्छादित करता हुआ, उसके निकट जा पहुँचा। उस समय निकट और सामने सामने खड़े उन दोनों के बाण आपस में टकरा कर ऐसा शब्द करते, मानों आँधी चल रही हो। बाणों के बराबर परस्पर टकराने से आकाश में आग जल उठी। उस समय भीम का वध करने की कामना से कर्ण ने अति पैने लोहे के बाण भीम पर छोड़े। किन्तु भीम ने कर्ण के प्रत्येक बाण को तीन तीन बाणों के प्रहार से काट कर व्यर्थ कर डाला। तदनन्तर खड़ा रह, खड़ा रह, कहते हुए भीम ने, कर्ण पर भयङ्कर बाणवृष्टि की। उस समय भीम बड़े आवेश में भरा हुआ था और धधकते हुए अग्नि जैसे क्रोधावेश से युक्त था। उस समय गोहचर्म के बने दस्तानों से आच्छादित दोनों वीरों के हाथों का चटाचट शब्द हो रहा था। उस समय भयानक सिंहनाद, रथों के पहियों की घरघराहट, रोदों का दारुण टंकार शब्द सुन पड़ता था। उस समय लड़ते हुए योद्धा एक दूसरे की जान के ग्राहक हो रहे थे। किन्तु कर्ण और भीम के युद्ध को देखने की इच्छा से उन लोगों ने लड़ना बन्द कर दिया था। उस समय देवता, ऋषि, सिद्ध तथा गन्धर्व, साधु साधु कह कर, उन दोनों की सराहना कर रहे थे। विद्याधरों ने उनका उत्साह बढ़ाने को उन पर फूल बरसाये थे। भीम ने कर्ण के चलाये अस्त्रों को हटा कर, उस पर अपने बाणों का प्रहार करना आरम्भ

किया। जब कर्ण ने भी भीम के बाणों को अपने बाणों से हटा कर, भीम को अपने बाणों से विद्ध किया। कर्ण ने सर्प की तरह फाटने वाले, नौ बाण भीम के ऊपर छोड़े। किन्तु भीम ने उन नौओ बाणों को बीच ही में काट गिराया। फिर कर्ण को भागा रह, खड़ा रह, कह कर, ललकारते हुए क्रुद्ध पराक्रमी भीम ने यमदण्ड जैसा एक भयानक बाण कर्ण के ऊपर छोड़ा। किन्तु कर्ण ने तीन बाण मार कर, उस बाण के टुकड़े टुकड़े कर डाले। इस पर भीम ने भयङ्कर बाणवृष्टि की। किन्तु कर्ण ने निर्भीक हो उस बाणवृष्टि को नष्ट किया। साथ ही नतपर्व बाण मार कर, अपनी अस्त्र-माया से भीम का तरकस, धनुष की डोरी, घोड़ों की रासें और जोतों को काट डाला। फिर भीम के रथ के घोड़ों को मार, भीम के सारथि को भी घायल कर दिया। तब भीम का सारथि कूद कर, युधामन्यु के रथ पर चढ़ गया। तदनन्तर प्रलयकालीन अग्नि की तरह, कान्तियुक्त कर्ण ने क्रुद्ध हो भीम के रथ की ध्वजा पताका भी काट कर गिरा दी। धनुषरहित होने पर भीम ने एक शक्ति तान कर कर्ण के रथ पर फेंकी, किन्तु कर्ण ने दस बाण मार कर, उस शक्ति के टुकड़े टुकड़े कर डाले। फिर "कार्यं वा साधयेयं शरीरं वा पातयेयं" के सिद्धान्तानुसार भीम ने ढाल तलवार ले ली। किन्तु कर्ण ने धनुष से बाण मार भीम की ढाल काट डाली। तब ढाल और रथहीन भीम ने घुमा कर बड़ी फुर्ती से तलवार कर्ण की ओर फेंकी। उस तलवार से कर्ण के हाथ का धनुष कट गया। तब कर्ण हँसा और क्रोध में भर शत्रुनाशक एवं दृढ़ प्रत्यञ्चा वाला दूसरा धनुष हाथ में लिया। फिर भीम का वध करने की इच्छा से उसने भीम पर बाणवृष्टि आरम्भ की। कर्ण ने अगणित बाण भीम पर छोड़े। तब कर्ण के बाणों से घायल भीम ऊपर को उछला। भीम को उछलते देख कर्ण सिकुड़ कर रथ के खटोले के नीचे छिप कर जा बैठा। भीम उसके रथ की ध्वजा को पकड़ खड़ा हो गया और उसने कर्ण को पकड़ कर, रथ के खटोले के नीचे से वैसे ही खींचना चाहा, जैसे गरुड़ सर्प को बिल से खींचता है।

उस समय कौरवों और चारणों ने भीम की बड़ी प्रशंसा की। रथ के टूट जाने पर भी भीम क्षात्रधर्म का पालन करता हुआ, अपना दूसरा रथ कर्ण के पीछे लगा, उससे बराबर लड़ता ही रहा। कर्ण ने भी पीठ न दिखायी और वह भी भीम से लड़ता ही रहा। महाबली नरश्रेष्ठ कर्ण और भीम आपस में स्पर्धा करते हुए, आमने सामने खड़े खड़े वर्षाकालीन मेघों की तरह गर्जने लगे। वे दोनों वीर आपस में वैसे ही लड़ रहे थे, जैसे देवता और दानव लड़ते हैं। किन्तु भीम के पास अब प्रायः शस्त्र नहीं रह गये थे और कर्ण को यह बात विदित हो गयी थी। अतः कर्ण ने बड़े वेग से भीम पर आक्रमण किया। उस समय भीम को चिन्ता हुई कि, अब क्या करना चाहिये। इतने ही में भीम को अर्जुन द्वारा मारे गये हाथियों की लोथों के ढेर देख पड़े। भीम ने सोचा हाथियों की लोथों पर कर्ण का रथ न जा सकेगा। यह विचार शस्त्रहीन भीम उन लोथों में जा छिपा। प्राणरक्षा करने पर प्रहार करना त्याग, भीम हाथियों की लोथों से भरे ऐसे स्थान में चला गया, जहाँ कर्ण का रथ बड़ी कठिनाई से जा सकता था। जैसे हनुमान जी ने गन्धमादन पहाड़ उठा लिया था, वैसे ही भीम एक हाथी की लोथ को उठा कर्ण के सामने आ खड़ा हुआ। तब कर्ण ने उस हाथी की लोथ को बाणों के प्रहार से टुकड़े टुकड़े कर डाला। उस समय भीम उन टुकड़ों को कर्ण के ऊपर फेंक उसे मारने लगा। फिर भीम रथ के पहिये, घोड़ों की लोथें, जो कुछ उसके हाथ में पड़ता, वही उठा कर, उससे कर्ण को मारने लगा। किन्तु कर्ण भीम के फेंके सब पदार्थों के टुकड़े टुकड़े कर डालता था। तब भीम ने चाहा कि घूँसा मार कर कर्ण को मार डाले। किन्तु जब भीम को याद आया कि, अर्जुन ने कर्ण को मारने की प्रतिज्ञा की है; तब भीम ने कर्ण को मारने का विचार त्याग दिया। कर्ण ने भीम के लगातार पैने बाण मार कर, उसे मूर्छित कर दिया। कर्ण ने कुन्ती से अर्जुन को छोड़, अन्य पाण्डव भाइयों को न मारने की प्रतिज्ञा की थी; अतः अस्त्रहीन भीम को मारने का अवसर हाथ आने पर भी कर्ण ने

उसे नहीं मारा। किन्तु भीम के निकट पहुँच कर्ण ने उसके शरीर में धनुष की नुकीली नोंक भोंक दी। उसके चुभते ही, फुँसकारते हुए क्रुद्ध सर्प की तरह, लम्बी साँस ले, भीम ने कर्ण के हाथ से उसका धनुष छीन लिया और तान कर उसके सिर में मारा। धनुष के प्रहार को सह कर्ण के नेत्र मारे क्रोध के लाल हो गये। उसने मुसक्या कर भीम से कहा—अरे दाढ़ी-मूँछ रहित ज़नाने! अरे मूढ़! अरे पेटू! अरे अस्त्र विद्या अनभिज्ञ! तू लड़ने का विचार त्याग दे। अरे छोकरे! अरे युद्धभीरु! अरे दुर्मते! तुझे तो वहाँ जाना चाहिये जहाँ खाने पीने का बहुत सा सामान हो। तुझे रणक्षेत्र में आना शोभा नहीं देता। भीम! तू व्रतनियमादि पालन में पटु हो सकता है। फल फूल खाने में अभ्यस्त हो सकता है। वनवास करने में भी तू चतुर हो सकता है, किन्तु तू युद्ध करने में प्रवीण नहीं है। भीम! सोच तो कहाँ युद्ध और कहाँ मुनिवृत्ति! तू लड़ने लायक नहीं। तुझे तो वन में रहने ही से आनन्द मिलता है। अतः तू वन ही में चला जा। तू केवल घर में उतावला हो घूमने भर ही का है, अथवा नौकरों चाकरों को डाँट डपट कर रसोइयों से भोजन मँगवा लेने ही के काम का है। तू घरेलू कामों के करने ही में पटु है। तू भला लड़ना क्या जाने? अरे दुर्मते! तू मुनिवेश धारण कर, वन में चला जा! अरे वन में जा और वहाँ फल मूल से अपना पेट भर। तू युद्ध करना क्या जाने? तू फल मूल खाने में तथा आतिथ्य करने में निस्सन्देह बहुत चतुर है। यह बात तो मैं भी मान सकता हूँ। किन्तु मैं तुझे युद्ध-कुशल मानने को तैयार नहीं हूँ।

हे राजन्! लड़कपन में भीम ने जो जो कष्ट सहे थे, उन सब को लेकर कर्ण ने भीम पर ताने कसे। तदनन्तर अंगों को सकोड़ कर, बैठे हुए भीम के शरीर में कर्ण ने पुनः धनुष की नुकीली नोंक चुभो दी और फिर हँस कर कहा—तू मुझ जैसे वीरों से वृथा ही भिड़ा, जा किसी और योद्धा से भिड़। जो मुझ जैसे वीरों से लड़ता है, उसकी इससे भी बुरी दुर्गति होती है। जा जा, श्रीकृष्ण और अर्जुन के पास चला जा। वे तेरी

रक्षा कर लेंगे। या घर को भाग जा। तू अभी छोकरा है, तू युद्धक्षेत्र में रह कर क्या करेगा?

कर्ण के इन दारुण कटाक्षपूर्ण वचनों को सुन, भीम ने हँस कर कहा—अरे तू बड़ा दुष्ट है। मैं तुझे एक बार नहीं कितनी ही बार नीचा दिखला चुका हूँ, तब भी तू अभी डींगें ही हाँकता है और बक बक किये चला ही जाता है। अरे हार जीत से तो इन्द्र भी नहीं बचे; यह बात तू तो जान ही क्या सकता है, पुरनियाँ लोग जानते हैं। फिर तू किस बिते पर बड़बड़ाता है। अरे तेरे तो माता पिता का भी पता नहीं। कर्ण! यदि तुझमें कुछ हौसला हो तो आ मुझसे कुश्ती लड़ देख। मैं सब राजाओं के सामने तुझे वैसे ही पीस डालूँगा, जैसे मैंने महाबली और महाकामी कीचक का पलोथन निकाला था। बुद्धिमानों में श्रेष्ठ कर्ण झट भीम का आशय समझ गया और उसने भीम से युद्ध करना उचित न समझा और वह हट गया। हे राजन्! भीम को रथहीन कर, कर्ण ने श्रीकृष्ण और अर्जुन के सामने भीम से बुरी बुरी बातें कहीं। तब अर्जुन ने श्रीकृष्ण के कथनानुसार कर्ण के ऊपर तेज़ बाण छोड़ने आरम्भ किये। अर्जुन के वे बाण कर्ण के शरीर में वैसे ही घुसने लगे, जैसे हंस, क्रौंच पर्वत में प्रवेश करते हैं। उन बाणों के प्रहार से घबड़ा कर कर्ण को भीम के पास से दूर हट जाना पड़ा। तब भीम ने कर्ण का धनुष काट डाला और अर्जुन ने उसे बाणों से विद्ध किया। इस पर कर्ण तेज़ी से रथ हँकवा, भीम के आगे से भाग गया। तब भीम सात्यकि के रथ पर सवार हो, अपने भाई अर्जुन के निकट जा पहुँचा। अर्जुन ने फुर्ती के साथ, कर्ण को लक्ष्य कर, कालप्रेरित मृत्यु की तरह एक बाण उसके ऊपर छोड़ा। जैसे गरुड़ सर्प को पकड़ने के लिये आकाश से झपटे, वैसे ही वह गाण्डीव धनुष से छूटा हुआ बाण, कर्ण की ओर दौड़ा। किन्तु अश्वत्थामा ने कर्ण को अर्जुन के भय से बचाने को, एक बाण छोड़, अर्जुन के बाण को बीच ही में काट डाला। यह देख अर्जुन बहुत क्रुद्ध हुआ और उसने अश्वत्थामा के साठ बाण मारे। फिर

उससे कहा—अरे अश्वत्थामा! अब भागना मत, क्षण भर तो खड़ा रह। किन्तु अश्वत्थामा भागा और रथसैन्य के भीतर मतवाले गजों के दल में घुस गया। अर्जुन के गाण्डीव धनुष के टंकार ने, अन्य धनुषों के टंकार शब्दों को दबा दिया। अर्जुन ने कुछ दूर तक भागते हुए अश्वत्थामा का पीछा किया और रास्ते में जो सैनिक पड़े, उन्हें त्रस्त किया। फिर अर्जुन कङ्क और मयूर के पंखों से युक्त बाण छोड़, गजों, अश्वों और पैदल सैनिकों के शरीरों को विदीर्ण करने लगा। अर्जुन ने देखते देखते शत्रुपक्ष की चतुरङ्गिणी सेना नष्ट कर डाली।

एक सौ चालीस का अध्याय

अलम्बुष वध

धृतराष्ट्र ने कहा—हे सञ्जय! दिनों दिन मेरा उज्ज्वल यश नष्ट होता चला जाता है। साथ ही मेरे बहुत से योद्धा भी रण में मारे गये हैं। इससे तो मुझे जान पड़ता है कि, यह सब करतूत काल ही की है। नहीं तो अश्वत्थामा और कर्ण से सुरक्षित जिस सेना में देवता भी नहीं घुस सकते, उस सेना में अकेला अर्जुन घुस गया। फिर बलवान श्रीकृष्ण, सात्यकि और भीम से उसकी हिम्मत और भी अधिक बढ़ गयी। हे सञ्जय! मैं क्या करूँ। तभी से शोकाग्नि मेरे हृदय को प्रति क्षण भस्म किये डालता है। मैं तो इन सब राजाओं को तथा जयद्रथ को अब मरा हुआ ही समझ रहा हूँ। विशेष कर जयद्रथ ने तो अर्जुन के साथ बड़ी शठियाई का काम किया है। अतः वह अर्जुन के सामने पड़, कैसे जीता जागता बचा रह सकता है? हे सञ्जय! मेरा अनुमान है कि, जयद्रथ, अर्जुन के हाथ से बच न सकेगा। जो हो—अब तुम उस युद्ध का सम्पूर्ण वृत्तान्त ज्यों का त्यों मुझे सुनाओ। जैसे क्रोध में भर कर हाथी ताल में घुस उसके जल को विलोड़ डालता है, वैसे ही विशाल वाहिनी को मथ कर, अर्जुन की सुध लाने

को जो सात्यकि हमारे सैन्यव्यूह में घुसा था, उस सात्यकि के युद्ध का वृत्तान्त भी तुम मुझे सुनाओ। क्योंकि हे सञ्जय! तुम वृत्तान्त कहने में चतुर हो। सञ्जय ने कहा—हे राजन्! जब कर्ण के बाणों से पीड़ित भीम भागने लगा; तब सात्यकि भी उसके पीछे, वर्षाकालीन मेघों की तरह गरजता हुआ तथा शरदीय सूर्य की तरह प्रदीप्त हो, आपके पुत्रों की सेना और शत्रुओं को मारता तथा कँपाता हुआ, रथियों के बीच हो कर निकला। उस समय हे राजन्! आपका कोई भी वीर जब सात्यकि को पीछे न हटा सका, तब सुवर्ण कवचधारी नृपश्रेष्ठ अलम्बुष झपट कर सात्यकि के सामने आ डटा और उसे आगे बढ़ने से रोका। हे राजन्! उस समय उन दोनों में ऐसा विकट युद्ध हुआ कि वैसा और कोई युद्ध नहीं हुआ था। अलम्बुष ने धनुष तान कर दस बाण सात्यकि पर छोड़े। किन्तु सात्यकि ने उनको अपने बाणों से बीच ही में काट डाला। तब उसने तीन पैने बाण सात्यकि के ऊपर पुनः छोड़े। वे बाण सात्यकि का कवच तोड़, उसके शरीर में घुस गये। फिर उसने सात्यकि के चारों सफेद घोड़ों को, चार बाण मार, घायल किया। इस पर सात्यकि ने क्रुद्ध हो, अलम्बुष के रथ के चारों घोड़े बाण मार मार कर मार डाले। फिर प्रलयाग्नि तुल्य भल्ल से अलम्बुष के सारथि का सिर काट, अलम्बुष का कुण्डलों से भूषित मस्तक धड़ से अलग कर दिया। इस प्रकार सात्यकि अलम्बुष का वध कर और आपकी सेना के योद्धाओं को निवारण करता हुआ, अर्जुन के निकट पहुँचने के लिये आगे बढ़ा। उस समय गोदुग्ध, चन्द्रमा अथवा शङ्ख की तरह सफेद रंग के, सात्यकि के घोड़े, सारथि के इशारे से ऐसे वेग के साथ चले कि, सारथि जहाँ चाहता, वहीं वे उसके रथ को तत्काल पहुँचा देते थे। जैसे मदमत्त पवन आकाशस्थित बादलों को तितर बितर करे, वैसे ही सात्यकि शत्रुसैन्य के योद्धाओं को तितर बितर करता, आगे बढ़ता चला गया। इस प्रकार सात्यकि को आगे बढ़ते देख, आपके पुत्र, दुःशासन को आगे कर और सात्यकि को घेर, उसके ऊपर चारों ओर से असंख्य बाणों का प्रहार

करने लगे ; तब सात्यकि ने उन योद्धाओं के बाणजालों को अपने बाणों से काट, दुःशासन के रथ के चारों घोड़े मार डाले। उस समय सात्यकि के पराक्रम को देख, श्रीकृष्ण और अर्जुन परम प्रसन्न हुए।

एक सौ इकतालीस का अध्याय

अर्जुन और सात्यकि की आपस में देखादेखी

सञ्जय ने कहा—हे राजन्! शीघ्र किये जाने वाले कामों में फुर्ती करने वाला तथा अर्जुन की जीत चाहने वाला महाबलवान सात्यकि ज्यों ही कौरवसेना रूपी अगाध सागर में, दुःशासन के रथ की ओर गमन करने के लिये घुसा, त्यों ही सुनहली ध्वजा वाले, महाधनुर्धर त्रिगर्त्तों ने उस पर धावा बोला। वे सात्यकि को चारों ओर से घेर, उस पर बाणवृष्टि करने लगे। उस समय बिना नौका के सागर के पार जाने वाले पुरुष की तरह सात्यकि ने, खड्ग, शक्ति और गदाधारी सैनिकों के हाथ की तालियों से गुञ्जायमान भारती सेना के बीच घुस, अकेले ही, शत्रु पक्ष के पचास योद्धाओं को परास्त किया। उस समय मैंने स्वयं सात्यकि के अपूर्व पराक्रम को देखा। उस समय सात्यकि रणक्षेत्र में ऐसी फुर्ती से फिर रहा था कि, कभी पूर्व में और तुरन्त ही पश्चिम में देख पड़ता था। वह नृत्य करता हुआ सा पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण तथा अन्य उपदिशाओं में घूम रहा था। त्रिगर्त्त राजागण, सात्यकि के पराक्रम को देख, मन ही मन सन्त्रस्त हुए और अपने सैनिकों में शूरसेन के योद्धा मदमस्त सात्यकि को बाणों से वैसे ही रोकने लगे, जैसे अङ्कुश मार कर हाथी को रोकते हैं। किन्तु सात्यकि क्षण भर के लिये उदास हो गया, किन्तु बाद ही उनको परास्त कर, अचिन्त्य पराक्रमी सात्यकि कलिङ्गों से जा भिड़ा। फिर उस दुर्लङ्घ्य कलिङ्ग सैन्य को अतिक्रम कर, सात्यकि अर्जुन के निकट जा पहुँचा। जैसे जल में तैरता हुआ मनुष्य स्थल में पहुँच दम लेता है, वैसे ही सात्यकि भी नरव्याघ्र

अर्जुन को देख, परिश्रम रहित हो स्वस्थ हो गये। सात्यकि को आते देख, श्रीकृष्ण ने अर्जुन से कहा—अर्जुन! तुम्हारा अनुयायी सात्यकि वह आ रहा है। सत्यपराक्रमी सात्यकि तुम्हारा शिष्य व मित्र है, इस पुरुषश्रेष्ठ ने समस्त योद्धाओं को तृणवत् मान, उनको पराजित किया है। अर्जुन! प्राणोपम प्रिय तुम्हारा सात्यकि कौरव योद्धाओं की दुर्गति कर, हम लोगों की ओर आ रहा है। हे किरीटिन्! सात्यकि, बाणों से द्रोण, भोज और कृतवर्मा का तिरस्कार कर, हम लोगों के निकट आ रहा है। धर्मराज के हित की बातों की खोज में रहने वाला, शूर और अस्त्र-विद्या-विशारद सात्यकि बड़े बड़े नामी योद्धाओं का संहार कर, तुम्हें देखने के लिये हमारे निकट आ रहा है। हे पाण्डव! महाबली एवं पराक्रमी सात्यकि अपना अपूर्व पराक्रम प्रदर्शित कर, तुम्हारे पास आ रहा है। हे पार्थ! सात्यकि अकेला ही द्रोण आदि बड़े नामी महारथियों से लड़ता भिड़ता हमारे पास आ रहा है। तुम्हारी सुध लेने को धर्मराज द्वारा प्रेषित सात्यकि अपने भुजबल से कौरव सेना को विदीर्ण कर, तुम्हारे निकट आ रहा है। जिस सात्यकि की टक्कर का एक भी योद्धा कौरवों के पास नहीं है, वही युद्धदुर्मद योद्धा सात्यकि हमारे निकट आ रहा है। हे पार्थ! कौरवों की बहुत सी सेना का नाश कर, सात्यकि वैसे ही चला आ रहा है, जैसे सिंह बहुत से साँड़ों को मार कर आता हो। अगणित कमल जैसे मुखों वाले राजकुमारों के सिरों को काट और उनके कटे सिरों से रणभूमि को ढक, बड़ी फुर्ती से सात्यकि हमारे पास आ रहा है। सात्यकि, भ्राताओं सहित दुर्योधन को परास्त कर तथा जलसन्ध का वध कर, फुर्ती के साथ हमारे पास आ रहा है। सात्यकि माँस के पङ्क और रुधिर के जल वाली नदी को प्रवाहित कर और उस नदी में कौरवों को तृण की तरह बहा, झपटा हुआ, हम लोगों के पास आ रहा है।

श्रीकृष्ण के वचन सुन, अर्जुन प्रसन्न न हुए। वे उदास हो कहने लगे-सात्यकि का यहाँ आना, मुझे अच्छा न लगा। क्योंकि सात्यकि के

यहाँ चले आने पर धर्मराज के जीवित होने में मुझे पूर्ण सन्देह है। सात्यकि को तो मेरे आदेशानुसार धर्मराज के निकट रह कर, उनकी रक्षा करनी चाहिये थी। न मालूम मेरे आदेश के विरुद्ध, धर्मराज को वहाँ छोड़, सात्यकि यहाँ क्यों चला आया। द्रोण का सामना करने के लिये धर्मराज अब अकेले वहाँ रह गये हैं। यहाँ जयद्रथ अभी तक नहीं मारा गया। देखिये उधर भूरिश्रवा, सात्यकि से लड़ने के लिये आगे बढ़ा चला आता है। मैं सिन्धुराज का वध करने की प्रतिज्ञा कर, पहले ही बड़ा भारी एक काम अपने ऊपर ले चुका हूँ। उसे मुझे पूर्ण करना है। साथ ही मुझे युधिष्ठिर की सुध भी मँगवानी है। महाबली सात्यकि बहुत थका माँदा है। अब इसमें बहुत थोड़ा बल रह गया है। इसके रथ के घोड़े और सारथि भी बहुत थके हुए हैं। किन्तु भूरिश्रवा अभी ताज़ा चला आ रहा है। साथ ही उसके पास उसके सहायक भी हैं। क्या हम इस युद्ध में सात्यकि को सकुशल देख सकेंगे? सारे समुद्र को तैर कर कहीं सात्यकि तलैया में न डूब जाय। अतएव कुरुवंशी महाबली भूरिश्रवा के साथ लड़ने पर सात्यकि का मङ्गल हो। केशव! धर्मराज ने द्रोण से न डर, सात्यकि को मेरे निकट भेज दिया सो यह उन्होंने बड़ी भूल का काम किया है। जैसे श्येन पक्षी सदा माँस की टोह में रहता है, वैसे ही द्रोण, धर्मराज को पकड़ने की टोह में सदा लगे रहते हैं। इसीसे मुझे धर्मराज के सकुशल होने की चिन्ता है।

एक सौ बयालीस का अध्याय

भूरिश्रवा के साथ सात्यकि की लड़ाई

सञ्जय ने कहा—हे राजन्! युद्धदुर्मद सात्यकि को आक्रमण करते देख, भूरिश्रवा ने क्रोध में भर, उस पर आक्रमण किया। भूरिश्रवा ने सात्यकि से कहा—आज भाग्य ही से तुम मेरे सामने पड़ गये हो। आज

मेरी चिरकालीन अभिलाषा पूर्ण होगी। यदि तू रण छोड़ कर, भाग न गया; तो तू जीता जागता लौट कर न जा पावेगा। हे दाशार्ह! अपने को शूर होने का अभिमान रखने वाले तुझको मार, कर आज मैं दुर्योधन को प्रसन्न करूँगा। वीरों में श्रेष्ठ श्रीकृष्ण और अर्जुन आज तुझे मेरे बाणाग्नि से भस्म हो कर गिरा हुआ देखेंगे। आज वे धर्मराज युधिष्ठिर, जिन्होंने हठात् तुझे सैन्यव्यूह में प्रवेश करवाया है, तुझे मृत देख अपनी करतूत पर लज्जित होंगे। अर्जुन को मेरा विक्रम उस समय विदित होगा, जब तू लोहूलुहान हो मर कर भूमि पर पड़ा होगा। पूर्वकाल में जैसे दैत्यराज बलि के साथ लड़ने को इन्द्र उत्सुक थे, वैसे ही तुझसे लड़ने को मैं बहुत दिनों से लालायित हूँ। हे सात्यकि! मैं आज तुझसे घोर युद्ध करूँगा। युद्ध के समय तुझे मेरे बल और पराक्रम का पूर्ण रूप से ज्ञान होगा। मैं आज तुझे मार कर वैसे ही यमालय भेजूँगा, जैसे श्रीरामचन्द्र के अनुज लक्ष्मण ने मेघनाद को मार कर यमपुरी भेजा था। आज जब तू मारा जायगा, तब धर्मराज, श्रीकृष्ण और अर्जुन हतोत्साह हो, युद्ध बंद कर, चल देंगे। आज बाणों द्वारा मैं अच्छी तरह तेरा पूजन करूँगा, जिससे तेरे हाथ से युद्ध में मारे गये वीरों की स्त्रियाँ प्रसन्न हों। जैसे सिंह के सामने पड़ क्षुद्र मृग का बचना असम्भव है, वैसे ही मेरे सामने पड़ तेरा बचना भी असम्भव है।

सञ्जय ने कहा—हे परन्तप! भूरिश्रवा के इन वचनों को सुन, सात्यकि ने कहा—भूरिश्रवा! मैं वह नहीं हूँ जो युद्ध से डरूँ। न तो मुझे कोई बातों की धमकी से डरा सकता है और न कोई मुझे युद्ध में मार ही सकता है। ऐसा भी कोई माई का लाल नहीं, जो युद्ध में मुझे निरस्त्र भी कर दे। जो मुझे युद्ध में मार गिरावेगा—वह फिर सब को मार लेगा। बहुत सी बकवाद करने से लाभ ही क्या है। तुझमें यदि कुछ पराक्रम है तो उसे प्रदर्शित कर। तेरी यह बकवाद शरद्कालीन मेघों की गर्जना की तरह व्यर्थ है। मुझे तो तेरी इस बकवक को सुन हँसी आती है। चिरवाञ्छित मेरा तुम्हारा

युद्ध अब आरम्भ हो। तुमसे लड़ने को मेरा जी अब बहुत चाह रहा है। अरे नराधम! आज मैं तेरा वध किये विना रणस्थल के बाहिर पैर न रखूँगा। इस प्रकार आपस में कड़ाकड़ी की बातचीत हो चुकने बाद उन दोनों वीरों का युद्ध आरम्भ हुआ। जैसे ऋतुमती हथिनी के पीछे दो मत-वाले हाथी लड़ें, वैसे ही वे दोनों क्रुद्ध हो लड़ने लगे। अरिन्दम सात्यकि और भूरिश्रवा, बूँदे बरसाने वाले दो मेघों की तरह, एक दूसरे पर बाणवृष्टि करने लगे। सात्यकि का वध करने की कामना करने वाले भूरिश्रवा ने, प्रथम सात्यकि को बाणों से ढक कर, पीछे उस पर तीक्ष्ण बाण छोड़े। फिर भूरि-श्रवा ने सात्यकि के ऊपर दस बाण छोड़े। किन्तु सात्यकि ने अपनी अस्त्र-माया से भूरिश्रवा के छोड़े समस्त बाणों को अपने बाणों से बीच ही में काट डाला। दोनों कुलीन और यशस्वी वीर एक दूसरे पर नाना प्रकार के शस्त्रों की वर्षा करने लगे। जैसे सिंह नखों से और गज दाँतों से लड़ते हैं, वैसे ही वे दोनों रथी शक्ति और बाणों के प्रहारों से एक दूसरे को घायल करने लगे। प्राणों की बाज़ी लगा—वे दोनों प्रहारों से एक दूसरे के अंगों को खुत्र कर डालते थे। रक्त से नहाये हुए दोनों वीर दो यूथपति गजों की तरह आपस में गुथे हुए थे। थोड़ी ही देर में ब्रह्मलोक के भी ऊपर वाले लोक में गमनेच्छु वे दोनों सिंह की तरह दहाड़ने लगे। वे दोनों हर्षित हो आपके पुत्रों के सामने ही एक दूसरे पर बाणों की वृष्टि कर रहे थे। ऋतुमती हथिनी के पीछे लड़ने वाले दो गजों की तरह लड़ने वाले उन दोनों का युद्ध मनुष्य देख रहे थे। दोनों ने दोनों के रथों के घोड़ों को मार डाला और धनुषों को काट डाला। तदनन्तर वे दोनों वीर रथों से उतर हाथ में ढाल तलवार ले रणक्षेत्र में डट गये। वे दोनों पैतरे बदलते तथा उछल उछल कर एक दूसरे पर वार करते थे। कवच, अंगद और शस्त्रधारी वे दोनों इधर उधर घूमते हुए खड्गप्रहार के कौशलों को दिखलाते थे। कभी वे ऊपर उछलते, कभी तिरछे हो पैतरे बदलते, कभी नीचे झुक जाते, कभी झुके झुके सरक जाते थे, वे दोनों एक दूसरे पर पूरा वार करने का अवसर

ढूँढ़ रहे थे, उन दोनों ने कुछ देर तक घोर युद्ध कर के, आपस में विलक्षण ढंग से कथोपकथन किया। वे दोनों अस्त्र-चालन-विद्या की सफाई और सौष्ठव दिखा दिखा कर, आपस में एक दूसरे को हराना चाहते थे।

हे राजेन्द्र! घोर युद्ध कर के, वे दोनों वीर कुछ देर तक दम लेने को समस्त सैनिकों के सामने खड़े रहे। फिर उन दोनों ने एक दूसरे की सौ फुल्लियों वाली दोनों ढालें काट डालीं और वे बाहुयुद्ध करने लगे। मल्लयुद्ध में कुशल वे दोनों वीर लोहे जैसी कड़ी और परिघ समान लंबी भुजाओं से आपस में गुथ गये। हे राजन्! वे अपनी उच्च शिक्षा के कारण अपने खंभ ठोंकने लगे। महाराज! उन दोनों वीरों की युद्धनिपुणता, भुजबन्धन और भुजाएँ छुड़ा कर फिर गुथ जाना आदि देख कर, योद्धागण हर्षित होने लगे। जिस समय वे दोनों पुरुष इस प्रकार मल्लयुद्ध में प्रवृत्त थे, उस समय वज्र घहराने जैसा घोर शब्द होने लगा। जैसे दो बलवान हाथी, दाँतों से और दो बली साँड़ सींगों से लड़ते हैं, वैसे ही भूरिश्रवा और सात्यकि लड़ रहे थे। भुजबन्धन, सिरों की टक्करें, पैर की चपरास, घूँसों का प्रहार आदि और मल्लयुद्ध के बत्तीसों पेच दिखलाते हुए, वे आपस में गुथे हुए थे। उस समय श्रीकृष्ण ने अर्जुन से कहा—धनुर्धरों में श्रेष्ठ सात्यकि रथहीन होने पर भी भूरिश्रवा से लड़ रहा है। तुम उसकी ओर ज़रा निहारो तो। हे पार्थ! यह सात्यकि भरतवंशी राजाओं की सेना को विदीर्ण कर, तुम्हारे निकट आ रहा है। इतना ही नहीं, उसने समस्त भरतवंशी राजाओं को युद्ध में पछाड़ा है, किन्तु हमारी ओर आते हुए तथा श्रान्त सात्यकि से, बहुदक्षिणा देने वाला भूरिश्रवा भिड़ा हुआ है। इस समय सात्यकि का उसके साथ लड़ना ठीक नहीं है। इधर अर्जुन और श्रीकृष्ण में यह वार्तालाप हो ही रहा था कि, उधर युद्धदुर्मद, क्रुद्ध एवं मदमत्त भूरिश्रवा ने उछल कर सात्यकि पर वैसे ही प्रहार किया, जैसे एक मतवाला गज दूसरे मतवाले गज पर प्रहार करता है। यह देख श्रीकृष्ण ने अर्जुन से कहा—वृष्णिकुल तथा अन्धक कुल में व्याघ्र सदृश सात्यकि इस

समय भूरिश्रवा के पंजे में पड़ गया है। उसे तुम देखो। दुष्कर कर्म करने के कारण सूश्रान्त अपने वीर शिष्य की तुम रक्षा करो। तुम ऐसा करो जिससे वह भूरिश्रवा के पंजे में न फँसने पावे। तुम शीघ्र इस ओर ध्यान दो। अब विलंब करने का अवसर नहीं है। यह सुन अर्जुन ने हर्षित हो, श्रीकृष्ण से कहा—वन में मतवाले गज को जैसे सिंह खदेड़े वैसे ही भूरिश्रवा द्वारा खदेड़े हुए सात्यकि को देखो। सञ्जय ने कहा—हे राजन्! जब श्रीकृष्ण अर्जुन से इस प्रकार कह रहे थे, तब सेना में बड़ा कोलाहल मचा। भूरिश्रवा ने सात्यकि को उठा कर भूमि पर दबोच दिया। फिर उसने सात्यकि की छाती पर एक लात मारी और उसके सिर के बाल पकड़, उसे मारने के व्याज से तलवार निकाली। वह सात्यकि का कुण्डलों से सुशोभित सिर काटने को उद्यत हुआ। जैसे कुम्हार दण्ड से अपना चाक घुमाता है, वैसे ही सात्यकि अपने सिर के केशों सहित भूरिश्रवा के हाथ को घुमा रहा था। यह इसलिये कि जिससे वह उसके हाथ से छूट जावे। यह देख श्रीकृष्ण ने अर्जुन से कहा—अर्जुन! देख, तेरे समान धनुर्विद्या में चतुर तेरा शिष्य सात्यकि, भूरिश्रवा के हाथ पड़ गया है। रण में और बल में सात्यकि से भूरिश्रवा अधिक प्रभावित हुआ है। सात्यकि अब विवश है। यह सुन अर्जुन मन ही मन भूरिश्रवा के बल की प्रशंसा करने लगा। वह कहने लगा भूरिश्रवा खिलौने की तरह सात्यकि को कढ़ोर रहा है। यह देख, मुझे बड़ी प्रसन्नता होती है। निस्सन्देह भूरिश्रवा कुरुकुल की कीर्ति बढ़ाने वाला है। जैसे सिंह मतवाले हाथी को कढ़ोरता है, वैसे ही वह सात्यकि को घसीट रहा है; किन्तु भूरिश्रवा, सात्यकि को मारने नहीं पावेगा। इस प्रकार मन ही मन कह अर्जुन ने श्रीकृष्ण से कहा—इस समय मेरा ध्यान जयद्रथ की ओर होने से मैं सात्यकि की ओर नहीं देख सकता। तथापि मैं इस यदुवीर की प्राणरक्षा के लिये, एक बड़ा खेल खेलता हूँ, तुम देखो। यह कह और श्रीकृष्ण के अनुरोध की रक्षा के लिये, अर्जुन ने एक क्षुरप्र बाण गाण्डीव धनुष पर रख कर छोड़ा। आकाशच्युत उल्का की तरह वेग से छूटे

हुए उस बाण ने यशस्वी भूरिश्रवा की उस भुजा को, जिससे वह सात्यकि का सिर काटने के लिये खड्ग लिये हुए था, काट डाला।

एक सौ तैंतालीस का अध्याय

भूरिश्रवा का वध

सञ्जय ने कहा—हे धृतराष्ट्र! अर्जुन ने अदृश्य रूप से भूरिश्रवा का वह हाथ जो उसने सात्यकि का सिर काटने के लिये उठाया था, बाण मार कर काट डाला, भूरिश्रवा का बाजूबंद से भूषित और खड्ग ग्रहण किये हुए वह हाथ, पाँच फन वाले सर्प की तरह, रक्त टपकाता हुआ गिर पड़ा। यह काण्ड देख लोगों को बड़ा दुःख हुआ। भूरिश्रवा, सात्यकि को छोड़ अलग जा खड़ा हुआ। वह कहने लगा कि, अर्जुन ने मुझे निकम्मा कर डाला। अतः वह क्रोध में भर अर्जुन को कुवाच्य कहने लगा। वह बोला—अर्जुन! तूने एक नृशंस मनुष्य जैसा यह कार्य किया है। मैं तो दूसरे से लड़ रहा था। मेरा ध्यान दूसरी ओर था। ऐसे अवसर में तूने मेरा हाथ काटा है। जब धर्मराज तुझसे पूँछेंगे कि तूने भूरिश्रवा को कैसे मारा? तब तू क्या यह कहेगा कि, जिस समय भूरिश्रवा, सात्यकि से लड़ रहा था—उस समय मैंने उसे मार डाला। क्या यही अस्त्रविद्या तू इन्द्र से सीख कर आया है अथवा यह अस्त्रविद्या तू साक्षात् शङ्कर से सीख आया है? या यह विद्या कृपाचार्य या द्रोणाचार्य की सिखलायी हुई है? तू संसार के समस्त धनुषधारियों में श्रेष्ठ है, तिस पर भी तूने अपने साथ युद्ध न करते हुए मुझ पर प्रहार किया। रणनीति के ज्ञाता पुरुष असत्त के ऊपर भयभीत के ऊपर, रथहीन के ऊपर, अनुनय विनय करने वाले के ऊपर तथा दुःखी मनुष्य के ऊपर, रण में कभी प्रहार नहीं करते। ऐसा निकृष्ट कार्य तो वे ही लोग करते हैं, जो नीच और दुष्ट होते हैं। अतः तूने ऐसा भयङ्कर का क्यों किया? सज्जन पुरुष अच्छे काम तो सहज ही में कर डालते

हैं, किन्तु उनसे खोटे काम नहीं बन पड़ते। श्रेष्ठ पुरुष ही क्यों न हो, वह खरे खोटे जैसे लोगों की संगत में रहता है, वह वैसा ही बन जाता है। इस बात का अनुभव मुझे प्रत्यक्ष हो रहा है। तू कुरुवंशी राजघराने में जन्म लेकर और सुशील हो कर भी क्षात्रधर्म से विचलित कैसे हो गया? सात्यकि के पीछे तूने यह अतियुद्ध जो काम किया है, सो इसमें निस्सन्देह श्रीकृष्ण की सलाह है। किन्तु तुझे तो ऐसा काम कदापि न करना चाहिये था। क्योंकि यह काम तेरी मान मर्यादा के सर्वथा विरुद्ध है। कृष्ण के मित्र के सिवाय और कोई भी पुरुष अन्य से युद्ध करने में प्रवृत्त पुरुष के साथ ऐसा व्यवहार नहीं कर सकता। अर्जुन! क्या तू नहीं जानता कि, कृष्ण और अन्धककुल के राजे स्वभाव ही से व्रात्य और क्रूरकर्मा होने से निन्दा के पात्र हैं। अतः उनकी बात को तूने कैसे ठीक माना? जब रण में भूरिश्रवा ने अर्जुन से ऐसा कहा, तब अर्जुन उससे बोला—सचमुच मरणासन्न पुरुष की बुद्धि ठिकाने नहीं रह जाती। तेरा यह सब कथन व्यर्थ है। तू मुझको तथा श्रीकृष्ण को भली भाँति जानता है। तिस पर भी तू व्यर्थ ही मेरे लिये और श्रीकृष्ण के लिये अपने मुख से कुवाच्य निकालता है। तू स्वयं रणनीति जानता है तथा समस्त शास्त्रों का पारदर्शी है। तुझे यह भी विदित है कि, मैं अधर्म कार्य नहीं करता। फिर भी तू क्यों कर भ्रम में पड़ गया है? तुम सब, अपने, भाई, चचा, पुत्र और सगे नतैत भाईबन्धुओं तथा समवयस्क मित्रों को साथ ले कर, निज भुजबल के भरोसे शत्रुओं से लड़ते हो। फिर क्या कारण है, जो मैं अपने पक्ष के उन लोगों की, जो हम लोगों के सुख दुःख में शरीक हैं और अपने प्राणों को हथेली पर रख, हमारे लिये युद्ध कर रहे हैं, रक्षा न करूँ? फिर सात्यकि की, जो युद्धविद्या में मेरी दहिनी भुजा की तरह पटु है रणनीति के अनुसार सेनापति को केवल आत्मरक्षा ही न करनी चाहिये, प्रत्युत उसे उन सब की भी रक्षा करनी होती है, जो उसके लिये लड़ते हैं। जो राजा युद्ध में अपने योद्धाओं की रक्षा करता है, उसीकी रक्षा होती है। यदि मैं तेरे हाथ से सात्यकि का

मारा जाना देखता रहता, तो मैं स्वयं पाप का भागी होता। अतः सात्यकि को बचाना मेरा धर्म था। अतः मैंने उसकी रक्षा की। फिर तू मेरे ऊपर क्यों क्रुद्ध होता है? तेरा यह कह कर मेरी निन्दा करना कि, दूसरे से लड़ते हुए तुझे मैंने धोखे में मारा—सो यह तेरा मतिभ्रम है। रथों, गजों, अश्वों आदि से युक्त, सिंहनाद से प्रतिध्वनित तथा अपने और शत्रुपक्ष के योद्धा जिसमें उपस्थित हैं, उस सेनारूपी गम्भीर सागर में तू कवच उछालता और रथ पर चढ़ा हुआ धनुष की डोरी खींच रहा था, फिर तू किस मुँह से यह कहता है कि, तू अकेला सात्यकि के साथ लड़ रहा था। सात्यकि बहुत से महारथियों से लड़ते लड़ते और उनको परास्त करते करते श्रान्त हो गया था; उसके रथ के घोड़े भी थके हुए थे। घायल और थके मांदे सात्यकि को हराने में क्या तू अपनी बहादुरी समझता है? तिस पर ऐसे सात्यकि का तू सिर काटने को उद्यत था। इसको कौन सहन कर सकता था? तुझे निन्दा तो अपनी करनी चाहिये कि, तू आत्मरक्षा न कर सका। आश्रितों की रक्षा तो कर ही क्या सकता है?

सञ्जय ने कहा—हे धृतराष्ट्र! जब अर्जुन ने यह कहा, तब भूरिश्रवा ने सात्यकि को छोड़, प्राणत्याग के समय तक के लिये अनशनव्रत धारण कर लिया। अर्जुन से कुछ भी न कहा। भूरिश्रवा ने पृथिवी पर बाण बिछाये। फिर उन पर वह शरीर त्यागने को बैठ गया। उसने अपने नेत्रों को नेत्रों के अधिष्ठातृ देवता सूर्य में और मन को जल में होमा और वह ब्रह्म का ध्यान करता हुआ, समाधिमग्न हो गया। कौरव पक्षीय सैनिक श्रीकृष्ण और अर्जुन की निन्दा और भूरिश्रवा की प्रशंसा करने लगे। उनकी निन्दा का श्रीकृष्ण और अर्जुन ने कुछ भी उत्तर न दिया। तिस पर भी तुम्हारे पुत्र उनकी निन्दा करते ही रहे। यह बात अर्जुन को सह्य न हुई। पर इसके लिये अर्जुन को रोष न आया। अर्जुन ने उन लोगों को स्मरण कराते हुआ इतना ही कहा—सब राजा लोगों को मेरा यह व्रत मालूम है कि, लड़ते समय मेरे पक्ष के किसी भी पुरुष को, जो मेरे बाण की पहुँच के भीतर रहेगा, कोई न मार

सकेगा। हे भूपकेतु भूरिश्रवा! तू मेरे इस व्रत को जान कर भी, मेरी निन्दा करता है—यह तो ठीक नहीं। असली बात समझे बिना निन्दा करना उचित नहीं। शस्त्रधारी एवं सात्यकि का वध करने को उद्यत भूरिश्रवा के हाथ को काट कर, मैंने अधर्म नहीं किया। क्यों जी! तुम लोगों ने पाञ्चरहित, रथरहित और कवचरहित अभिमन्यु को मारा—सो क्या प्रशंसा का काम था? अर्जुन की इन बातों को सुन, भूरिश्रवा ने पृथिवी में माथा रगड़, वामहस्त से अपना कटा हुआ दहिना हस्त, अर्जुन की ओर फेंका। भूरिश्रवा का सिर नीचा हो गया और वह चुपचाप बैठ गया। उसका ऐसा भाव देख, उससे अर्जुन ने कहा—हे शल के ज्येष्ठ भ्राता! मेरा जैसा अनुराग युधिष्ठिर, भीम, नकुल और सहदेव के ऊपर है, वैसा ही तेरे ऊपर भी है। श्रीकृष्ण के आज्ञानुसार तू उन लोकों में जा, जिनमें उशीनरनन्दन—शिवि जैसे पुण्यवान जन गये हैं। श्रीकृष्ण बोले—हे यज्ञनिरत भूरिश्रवा! जिन लोकों के लिये ब्रह्मादि बड़े बड़े देवता सदा ललचाया करते हैं और जिनमें सदा प्रकाश बना रहता है, उन लोकों में मेरी तरह गरुड़ पर सवार हो तू जा।

सञ्जय ने कहा—हे धृतराष्ट्र! भूरिश्रवा से छूट कर सात्यकि अभी तक भूमि पर ही पड़ा था। वह अब उठा और उसने निष्पाप भूरिश्रवा का सिर काटने के लिये हाथ में तलवार ली। यह देख सारी सेना में बड़ा कोलाहल मचा। उस समय अर्जुन, श्रीकृष्ण, भीम, चक्ररक्षक, अश्वत्थामा, कृपाचार्य, कर्ण वृषसेन और जयद्रथ ने सात्यकि को निषेध किया और कहा—अरे मूर्ख! यह क्या करता है? सब के मना करने पर भी और सैनिकों के कोलाहल मचाने पर भी सात्यकि ने मरणकाल पर्यन्त अनशन-व्रत-धारी, छिन्नभुज भूरिश्रवा का सिर काट डाला। सात्यकि के इस कार्य की सब लोगों ने घोर निन्दा की। देवता, सिद्ध, चारण तथा मनुष्यों ने भूरिश्रवा के प्रति सम्मान प्रदर्शित किया और उसके कार्यों को आश्चर्यचकित हो देखा। सात्यकि के कर्म के औचित्य, अनौचित्य को ले, क्षत्रियों में बहुत समय तक वादविवाद

होता रहा। अन्त में उन्होंने कहा—इसमें सात्यकि निर्दोष है। क्योंकि यह ऐसा होना ही था। अतः इसके लिये क्रोध करना उचित नहीं। क्योंकि क्रोध में मनुष्यों को बड़ा दुःख होता है। वीर शत्रु को उचित है कि, वह शत्रु को मार डाले, इसमें आगा पीछा करने की आवश्यकता नहीं। सात्यकि कहने लगा—अरे धर्म की ध्वजा उड़ाने वाले पापी कौरवों! तुम लोग जो इस समय धर्म की दुहाई दे रहे हो और कह रहे हो, भूरिश्रवा का मारना उचित नहीं हुआ—किन्तु तुम्हारा यह धर्मविचार उस समय कहाँ हवा खा रहा था, जिस समय तुम लोगों ने मिल कर, निरस्त्र सुभद्रानन्दन अभिमन्यु का वध किया था। मेरा तो यह प्रण है कि, युद्ध में जो कोई मेरा अपमान करेगा और मेरे लात मारेगा, और मैं जीवित बना रहूँगा, तो उसका मैं अवश्य वध करूँगा। वह भले ही मुनिव्रत धारण किये ही क्यों न बैठा हो? मैं बदला लेने की घात में था और मेरी भुजाओं में बल भी था, तब भी तुमने आँखों के रहते मुझे मरा हुआ समझ लिया। यह तो तुम्हारी समझ का ओछापन था। मैंने तो बदला ले कर उचित कार्य ही किया है। अर्जुन ने उसकी भुजा काटी और अपनी प्रतिज्ञा की रक्षा की, सो इससे तो मेरे यश में बट्टा लग गया। किन्तु होनहार होता है, वह हुए विना नहीं रहता और भाग्यानुसार कार्य हुआ ही करता है। इसका युद्ध में मारा जाना दैवयोग के सिवाय और क्या कहा जा सकता है? इसमें मैंने कोई पाप कर्म नहीं किया। वाल्मीकि ने प्रथम इस धराधाम पर एक श्लोक पढ़ा था; जिसका अर्थ यह है—हे कपि! तेरा कहना है कि, स्त्रियों का वध करना अनुचित कार्य है, किन्तु मनस्वी पुरुष को वह काम करना चाहिये, जिससे शत्रु को पीड़ा पहुँचे।

सञ्जय बोले—हे राजन्! तब सात्यकि ने उन लोगों को इस प्रकार फटकारा; तब वे सब चुप हो रहे और मन ही मन उसकी सराहना करने लगे; किन्तु बड़े बड़े यज्ञों में मंत्राभिषिक्त जलों से पूत, सहस्रों का दान करने वाले और मुनिवृत्ति से वन में रहने वाले, यशस्वी भूरिश्रवा के वध का

अभिनन्दन किसी ने भी प्रत्यक्ष रूप से नहीं किया। श्याम केशों तथा पारावत जैसे लाल नेत्रों से युक्त भूरिश्रवा का कटा हुआ मस्तक, यज्ञवेदी पर पड़े हुए अश्वमेधीय अश्व के सिर जैसा जान पड़ता था। जो भूरिश्रवा याचकों की कामनाओं को पूर्ण किया करता था, वह माननीय भूरिश्रवा, महारण में शस्त्र द्वारा मारा जा कर, पवित्र हो गया। वह निज शरीर को त्याग कर, अपने पुण्यप्रभाव तथा तेज से आकाश और पृथिवी को व्याप्त करता हुआ ऊर्ध्वलोक को प्रस्थानित हुआ।

एक सौ चौवालीस का अध्याय

सात्यकि और भूरिश्रवा की शत्रुता का कारण

धृतराष्ट्र बोले—हे सञ्जय! अर्जुन के पास जाने का वचन युधिष्ठिर को दे, तथा द्रोण, कर्ण, विकर्ण और कृतवर्मा आदि में से किसी से भी न हारने वाला सात्यकि, भूरिश्रवा द्वारा क्यों कर वश में किया गया? भूरिश्रवा ने उसे कैसे उठा कर भूमि पर पटक दिया?

सञ्जय ने उत्तर दिया—हे राजन्! आपको कदाचित् सात्यकि और भूरिश्रवा की उत्पत्ति-कथा का वृत्तान्त नहीं मालूम। अतः मैं उन दोनों का जन्म-वृत्तान्त आपको सुनाता हूँ। आप सुनें! अत्रि का पुत्र सोम था, सोम का पुत्र बुध था। बुध के, इन्द्र तुल्य पराक्रमी पुरूरवा नामक एक पुत्र था। पुरूरवा के आयु, आयु के नहुष और नहुष के ययाति नामक पुत्र हुआ। उस राजा की देवता और ऋषि भी प्रतिष्ठा करते थे। ययाति के देवयानी के गर्भ से यदु नामक ज्येष्ठ राजकुमार जन्मा था। यदु के वंश में देवमीढ नामक एक राजा हुआ। इसका त्रिलोकविश्रुत यदुवंशी राजा शूर नाम का पुत्र हुआ। शूर के वसुदेव नामक पुत्र हुआ। वसुदेव के समान धनुर्विद्या में दूसरा कोई वीर न था। वह युद्ध में कार्त्तवीर्य के समान था। उसके कुल में शिनि नामक एक राजा हुआ, जो उसके समान था।

उन्हीं दिनों, देवक की पुत्री देवकी का स्वयंवर रचा गया। उस स्वयंवर में सब देशों के राजा शरीक हुए थे। किन्तु शिनि ने उन सब को परास्त कर, देवकी को रथ पर चढ़ा लिया और देवकी का विवाह वसुदेव के साथ करने को शिनि उसे ले आया। राजा सोमदत्त को शिनि का यह कर्म असह्य हुआ। अतः उन दोनों वीरों में अर्द्धदिवस तक मल्लयुद्ध हुआ किया। यह युद्ध बड़ा विस्मयकारी था। अन्त में शिनि ने समस्त दर्शकों के सामने सोमदत्त को ऊपर उठा भूमि पर दे मारा। फिर उसकी चोटी पकड़ उसकी छाती में लात मारी और तलवार निकाल उसका सिर काटना चाहा। पीछे से उसके मन में दया का सञ्चार हुआ; तब उसने सोमदत्त को छोड़ दिया और उसका सिर खड्ग से न काटा। साथ ही कहा—जा मैं तुझे प्राणदान दे कर छोड़े देता हूँ। अपनी इस दुर्दशा से सोमदत्त के मन में बड़ी ग्लानि उत्पन्न हुई। अतः उसने तप द्वारा महादेव जी को प्रसन्न किया। महादेव जी ने प्रसन्न हो कर जब उससे वर माँगने को कहा, तब सोमदत्त ने कहा—भगवन्! मेरे ऐसा पुत्र हो, जो हज़ारों राजाओं के सामने, शिनि के पुत्र को भूमि पर पटक, उसकी छाती पर लात मारे। इस पर महादेव जी एवमस्तु कह कर अन्तर्धान हो गये। अतः शिव जी के वरदानानुसार सोमदत्त के भूरिश्रवा नामक पुत्र हुआ। उसी भूरिश्रवा ने इस युद्ध में शिनिनन्दन सात्यकि को पटक उसकी छाती में लात मारी। राजन्! सात्यकि के भूरिश्रवा द्वारा परास्त किये जाने का यही कारण है। वास्तव में सात्यकि को बड़े बड़े योद्धा नहीं जीत सकते; औरों की तो बात ही क्या है! सात्वतवंशी अपने लक्ष्य को वेधने में कभी नहीं चूकते और ये लोग विचित्र ढंग से युद्ध करते हैं। उनमें इतनी शक्ति है कि, वे देवताओं, गन्धर्वों और दानवों को भी जीत सकते हैं। ये लोग सदा सतर्क रहते हैं और कभी पराधीन हो कर नहीं रहते। ये निज पराक्रम से सदा विजयी हुआ करते हैं। इस पृथिवी तल पर तीनों कालों में वृष्णिवंशियों के समान बलवान् होना असम्भव है। ये लोग अपने जाति वालों का सम्मान कर, अपने बड़े बूढ़ों के कहने में

चलते हैं। युद्ध में उनको देवता, दैत्य, गन्धर्व, यक्ष, सर्प और राक्षस लोग भी परास्त नहीं कर सकते। फिर बेचारे मनुष्यों की तो बात ही क्या है? ये लोग, ब्रह्मद्रव्य, गुरुद्रव्य एवं आत्मीय द्रव्य का संरक्षण करते हैं। अहिंसक हैं और विपत्तिग्रस्त की रक्षा करते हैं। बड़े धनाढ्य होने पर भी वे निरभिमानी हैं। ये ब्राह्मणभक्त और सत्यवादी भी हैं। ये बलवान् होने पर भी शक्तिशालियों का अकारण अपमान नहीं करते और विपत्ति से दीनजनों का उद्धार करते हैं। ये देवपूजक हैं और बकवादी नहीं हैं। इसीसे वृष्णिवंशियों का प्रताप कम न हो, दिन दूना रात चौगुना बढ़ रहा है। सम्भव है, कोई बलवान् मेरु पर्वत को उठा ले और अपार सागर तैर कर पार कर ले, किन्तु उनसे लड़ कर, उनका नाश करना किसी के लिये भी सम्भव कार्य नहीं है। हे राजन्! मैंने आपका सन्देह दूर कर दिया। किन्तु हे कौरवाधिपते! आपको यह न भूल जाना चाहिये कि, ये सारे घोर अन्याय, आप ही की कूटनीति के परिणाम हैं?

एक सौ पैंतालीस का अध्याय

तुमुलयुद्ध

राजा धृतराष्ट्र ने पूँछा—हे सञ्जय! कुरुवंशीय भूरिश्रवा के मारे जाने के बाद, क्या हुआ—अब तुम मुझे यह सुनाओ।

सञ्जय ने कहा—राजन्! जब भूरिश्रवा को सात्यकि ने मार डाला, तब अर्जुन ने श्रीकृष्ण से कहा—हे कृष्ण! अब तुम झटपट मेरा रथ वहाँ ले चलो, जहाँ सिन्धुराज जयद्रथ है। तुम ऐसा करो जिससे मेरी प्रतिज्ञा पूर्ण हो। देखो, सूर्य भगवान् अस्ताचल गमन के लिये शीघ्रता कर रहे हैं और मुझे जयद्रथ वधरूपी बड़ा भारी कार्य करना है। देखो, कौरवपक्षीय महारथी योद्धा जयद्रथ की कैसी रक्षा कर रहे हैं। अतः हे कृष्ण! अब

तुम ऐसे रथ हाँको, जिससे सूर्यास्त के पूर्व ही मैं जयद्रथ का वध कर, अपनी प्रतिज्ञा को पूर्ण कर सकूँ ।

यह सुन, अश्वविद्या-विशारद श्रीकृष्ण ने जयद्रथ की ओर रथ बढ़ाया । अमोघ अस्त्रधारी अर्जुन के रथ के घोड़े, रथ को बड़ी तेज़ी से खींचने लगे । घोड़े इतने तेज़ चल रहे थे कि, जान पड़ता था, मानों वे आकाश में उड़ रहे हैं । उस समय दुर्योधन, कर्ण, वृषसेन, मद्रराज शल्य, कृपाचार्य और जयद्रथ आदि महारथी अर्जुन को आते देख, वेग से उसकी ओर झपटे । जयद्रथ को अपने सामने खड़ा देख, क्रोध में भर अर्जुन ने उसकी ओर ऐसे देखा, मानों वह दृष्टि ही से जयद्रथ को भस्म कर डालेगा ।

अर्जुन को तेज़ी के साथ जयद्रथ के रथ की ओर जाते देख, दुर्योधन ने कर्ण से कहा—कर्ण ! अब तुम्हारे लड़ने का समय आया है । अब तुम अपना बल पराक्रम इन समस्त योद्धाओं को प्रदर्शित करो । ऐसा प्रयत्न करो, जिससे अर्जुन, जयद्रथ का वध न करने पावे । हे नरसिंह ! सूर्यास्त होने में अब बहुत देर नहीं है । अतः तुम बाणवृष्टि कर, अर्जुन के कार्य में बाधा उपस्थित करो । क्योंकि सूर्यास्त हो गया और अर्जुन यदि जयद्रथ का वध न कर सका, तो अपनी प्रतिज्ञा के मिथ्या होने पर वह निश्चय ही अग्नि में कूद आत्मघात कर लेगा । जब अर्जुन न रहा, तब उसके भाई तथा अन्य साथी योद्धा अपने आप मरने को तैयार हो जाँयगे । इस तरह जब पाण्डवों में से कोई भी न रह जायगा, तब हम लोग ससागरा पृथिवी को निष्कण्टक हो उपभोग करेंगे । हे कर्ण ! दुर्भाग्यवश ही अर्जुन की बुद्धि विपरीत हो गयी है । इसीसे उसने अच्छे बुरे का विचार न कर, अपने ही नाश के लिये जयद्रथवध की प्रतिज्ञा की है । फिर इस धराधाम पर मुझे तो ऐसा कोई भी वीर नहीं दिखलायी पड़ता, जो तुम्हें जीत सके । अतः तुम्हारे सामने, सूर्यास्त के पूर्व अर्जुन क्यों कर जयद्रथ का वध कर सकेगा ? फिर तुम्हारे साथ वाले महाराज शल्य, कृपाचार्य, अश्वत्थामा और दुःशासन, अर्जुन के साथ लड़ेंगे । ऐसी

दशा में तो अर्जुन जयद्रथ के रथ के निकट भी न फटकने पावेगा। अतः अर्जुन की आयु पूरी हो चुकी है। क्योंकि उधर उससे लड़ने को यहाँ इतने योद्धा हैं ही और उधर सूर्य भी अब अस्त होने वाले हैं। मैं तो समझता हूँ कि, अर्जुन किसी प्रकार भी जयद्रथ को न मार पावेगा। अतः हे कर्ण! अब तुम शल्य, अश्वत्थामा आदि पराक्रमी योद्धा के साथ मिल कर, विशेष यत्नपूर्वक, अर्जुन से युद्ध करो।

सञ्जय ने कहा—हे राजन्! आपके पुत्र दुर्योधन के इन वचनों को सुन कर्ण ने उसे उत्तर दिया—राजन्! इस समय महावीर भीमसेन के बाणों की चोटों से मेरा शरीर क्षत विक्षत हो रहा है। संग्रामभूमि में अपनी उपस्थिति को अनिवार्य समझ कर ही मैं यहाँ विद्यमान हूँ। नहीं तो घावों के कारण हिलने डुलने में भी मेरा शरीर दुःखता है। तो भी जयद्रथ की रक्षा के लिये और तुम्हारा प्रयोजन सिद्ध करने के लिये, जब तक मेरे शरीर में प्राण हैं तब तक मैं अपनी शक्ति के अनुसार लड़ता रहूँगा। मेरे तीक्ष्ण बाणों की वृष्टि होने पर अर्जुन, किसी तरह भी जयद्रथ के पास न फटकने पावेगा। हे कुरुश्रेष्ठ! अपने हितैषी और अनुरक्तों की आशा पूरी करने वाले पुरुषों का जो कर्त्तव्य होता है उस कर्त्तव्य का मैं पूर्ण रीति से पालन करूँगा, किन्तु रहा हारना जीतना—सो मेरे हाथ की बात नहीं है—वह तो दैवाधीन है। मैं आज तुम्हारे लिये अर्जुन से लड़ूँगा और तुम्हारा प्रिय करने तथा जयद्रथ की रक्षा के लिये विशेष प्रयत्न करूँगा। किन्तु हार जीत दैवाधीन है। आज सैनिक लोग मेरा और अर्जुन का रोमाञ्चकारी भयङ्कर युद्ध देखेंगे।

सञ्जय ने कहा—इधर तो दुर्योधन और कर्ण में इस प्रकार बातचीत हो रही थी और उधर अर्जुन, तीक्ष्ण बाणों से आपकी सेना का नाश कर रहा था। अर्जुन अपने पैने बाणों को छोड़, युद्ध में कभी पीठ न दिखाने वाले वीर योद्धाओं की परिघ अथवा हाथी की सूँड़ जैसी भुजाओं को काट काट कर गिराने लगे। उस समय अर्जुन लगातार बाणवृष्टि कर रहे थे।

उस बाणवृष्टि से विशेष कर क्षुरप्र बाणों से हाथियों की सूँड़ें, घोड़ों की गर्दनें, रथों की धुरियाँ, प्रास-तोमर-धारी घुड़सवारों और गजपतियों के सिर, काट काट कर भूमि पर डालता जाता था। युद्धभूमि में सहस्रों हाथी, घोड़े, पैदल सैनिक, ध्वजा, छत्र और सफ़ेद चँवर चारों ओर से कट कट कर गिर रहे थे। क्षण भर में अर्जुन ने आपकी सेना को वैसे ही नष्ट कर डाला, जैसे अग्नि घास फूँस को जला कर भस्म कर डालता है। सत्यपराक्रमी अर्जुन युद्ध करता हुआ, आपकी सेना के बहुत से योद्धाओं को मार कर, जयद्रथ के निकट जा पहुँचा। सात्यकि और भीमसेन से रक्षित दुराधर्ष अर्जुन धधकते हुए अग्नि जैसा जान पड़ता था। अर्जुन का इस प्रकार का पराक्रम-प्रदर्शन, हे राजन्! आपके महाधनुर्धर योद्धाओं को सह्य न हुआ। अतः दुर्योधन, कर्ण, वृषसेन, शल्य, अश्वत्थामा और कृपाचार्य जयद्रथ की रक्षा के लिये तैयार हो गये। स्वयं जयद्रथ भी, आत्मरक्षा के लिये लड़ने को उद्यत हुआ। इन योद्धाओं ने अपने धनुष को टंकोरते हुए—संग्राम-निपुण अर्जुन को चारों ओर से घेर लिया। ये सब योद्धा जयद्रथ को अपने पीछे रख, मुँह खोले हुए काल की तरह अर्जुन के सामने जा, श्रीकृष्ण और अर्जुन का वध करने के लिये घूमने लगे। सूर्य की अस्तोन्मुख लालिमा देख और भी सरगर्मी के साथ सर्प जैसे अपने धनुषों को तान तान कर, सूर्य जैसे चमचमाते बाण अर्जुन के ऊपर छोड़ने लगे। किन्तु युद्धदुर्मद किरीटी ने, उनके छोड़े हुए बाणों को खण्ड खण्ड कर भूमि पर डाल दिये। फिर अर्जुन उनको बाणों से विद्ध करने लगा। सिंह-पुच्छ-चिन्ह-चिह्नित ध्वजा वाले अश्वत्थामा ने अपना पराक्रम प्रदर्शित कर अर्जुन को रोकना चाहा। वह दस बाणों से अर्जुन और सात से श्रीकृष्ण को घायल कर, जयद्रथ की रक्षा करता हुआ, रथ जाने के मार्ग को रोक कर खड़ा हो गया। उधर अन्य सब महारथी रथों पर सवार हो और बाणों को छोड़ते हुए, अर्जुन के रथ को चारों ओर से घेर कर, आपके पुत्र के आदेशानुसार, जयद्रथ की रक्षा करने लगे। उस समय अर्जुन का भुजबल प्रकट हुआ और उसके अक्षय्य तूणीर तथा गाण्डीव धनुष का महत्व

गर्भवती हुई। वह गर्भ अग्नि की तरह तेजस्वी था। उसने शास्त्र का अध्ययन करने वाले अपने पिता से एक दिन कहा—यद्यपि आप सारी रात वेद पढ़ा करते हैं, तथापि आपको यथार्थ वेद नहीं आता। हे पिता जी! मैंने गर्भ में रह कर, आपके अनुग्रह से सब शास्त्रों तथा साङ्गोपाङ्ग वेदों का ज्ञान प्राप्त कर लिया है। अपने इसी ज्ञान के आधार पर मैं कहता हूँ कि, आपका वेदपाठ ठीक नहीं होता।

जब गर्भस्थित पुत्र ने शिष्यों के बीच स्थित अपने पिता पर इस प्रकार आक्षेप किया; तब महर्षि कुपित हुए और उदरस्थित पुत्र को शाप दिया कि, तेरा शरीर आठ जगह टेढ़ा हो जाय। क्योंकि गर्भ में रहता हुआ ऐसी टेढ़ी (वक्र) बातें कहता है।

इस प्रकार पिता के शाप से महर्षि अष्टावक्र जन्मते समय आठ जगह से टेढ़े हो कर जन्मे। अतः उनका नाम अष्टावक्र पड़ा। इनके मामा का नाम श्वेतकेतु था। उनकी और अष्टावक्र की उम्र एक थी। अष्टावक्र जब गर्भ में वृद्धि को प्राप्त हुए, तब उनकी माता सुजाता पीड़ित हुई। एक समय एकान्त में सुजाता ने अपने धनहीन पति से धन माँगते हुए कहा।

हे महर्षे! मैं धनहीन हूँ। मुझे दसवाँ मास चल रहा है। तुम्हारे पल्ले कुछ है नहीं। बालक उत्पन्न होने पर मैं किस तरह इस विपत्ति से छुटकारा पा सकूँगी।

जब इस प्रकार सुजाता ने कहोड़ से धन लाने के लिये कहा—तब कहोड़ राजा जनक के निकट गये और वहाँ शास्त्रार्थ करने वाले बन्दी के साथ उन्होंने शास्त्रार्थ किया। कहोड़ शास्त्रार्थ में हारे और पूर्वप्रतिज्ञा के अनुसार बन्दी ने उनको जल में डुबा दिया। उद्दालक ने जब सुना कि, बन्दी ने कहोड़ को शास्त्रार्थ में परास्त कर जल में डुबा दिया है; तब वे तुरन्त सुजाता के निकट गये और उसे सारा वृत्तान्त सुना, बोले—तू इस बात को अष्टावक्र से मत कहना। इस लिये जन्म होने पर भी अष्टावक्र को

अश्वत्थामा ने उस बाण को बीच ही में अर्धचन्द्राकार बाण से काट दिया। इसके बदले में कर्ण ने भी अगणित बाण छोड़, बाणों से अर्जुन को ढक दिया। वे दोनों वीर साँड़ की तरह डँकरते हुए बाणों से आकाश को पूर्ण करने लगे। बाणों से आच्छादित होने पर भी वे दोनों परस्पर प्रहार कर रहे थे। कर्ण! मैं अर्जुन हूँ! तू खड़ा रह। इस पर कर्ण कहता, अर्जुन! मैं कर्ण हूँ। तू खड़ा तो रह। इस प्रकार एक दूसरे को ललकारते वे दोनों लड़ रहे थे। दोनों ही वीर अद्भुत हस्तलाघव दिखला, युद्ध कर रहे थे। उनके युद्ध को देख, सिद्ध, चारण और सर्प उनकी प्रशंसा कर रहे थे। जिस समय वे दोनों एक दूसरे का वध करने की कामना से लड़ रहे थे, उस समय दुर्योधन ने अपने पक्ष के योद्धाओं से कहा—कर्ण मुझसे कह चुका है कि, अर्जुन को मारे बिना मैं आज न हटूँगा। अतः तुम लोग यत्नपूर्वक कर्ण की रक्षा करो। इतने में अर्जुन ने धनुष को कान तक तान कर बाण छोड़े और कर्ण के रथ के घोड़े मार डाले। फिर भल्ल बाण से उसके सारथि को मार रथ के नीचे गिरा दिया। तदनन्तर हे राजन्! आपके पुत्रों के सामने ही कर्ण को अर्जुन ने बाणों से ढक दिया। तब तो कर्ण की बुद्धि ठिकाने न रही। तब अश्वत्थामा ने कर्ण को अपने रथ में बिठा, अर्जुन से लड़ना शुरू किया। शल्य ने अर्जुन के तीस बाण मार, उसे घायल किया। अश्वत्थामा ने बीस बाण श्रीकृष्ण पर छोड़े और बारह शिलीमुख बाण अर्जुन के मारे। फिर चार बाण जयद्रथ ने और सात बाण वृषसेन ने अर्जुन के मारे। इस प्रकार उन सब ने अलग अलग बाण छोड़, श्रीकृष्ण और अर्जुन को घायल किया। तब अर्जुन ने भी उन सब को घायल किया। उसने चौसठ बाण अश्वत्थामा के, सौ शल्य के, दस जयद्रथ के और तीस वृषसेन के तथा बीस बाण कृपाचार्य के मार सिंहनाद किया। वे सब एकत्र हो, अर्जुन के ऊपर इसलिये टूट पड़े, जिससे अर्जुन अपनी प्रतिज्ञा से च्युत हो जाय। इस पर हे राजन्! आपके समस्त पुत्रों को विकल करने के लिये अर्जुन ने वरुणास्त्र प्रकट किया। तिस पर भी कौरव,

बड़े लोगों के बैठने योग्य रथों पर सवार हो अर्जुन के निकट जा उस पर बाण बरसाने लगे । उस समय दोनों ओर से घोर दारुण संग्राम हुआ; किन्तु किरीटमाली अर्जुन तिल भर भी घबड़ाये बिना ही, शत्रुपक्ष पर बाण-वृष्टि करता रहा । अप्रमेय बलवान अर्जुन, कौरवों द्वारा प्राप्त द्वादश वर्षात्मक क्लेशों को स्मरण कर और अपना राज्य लौटाने की कामना से सब दिशाओं को बाणमय करने लगे। जब अर्जुन बाण छोड़, शत्रुओं का संहार करने लगा, तब आकाश में प्रज्वलित उल्कापिण्ड देख पड़े और लाशों पर गीध टूटने लगे। महाकीर्तिशाली एवं किरीटमाली अर्जुन शत्रुसैन्य को परास्त करने के लिये, अपने विशाल धनुष पर बाण रख चारों ओर छोड़ रहा था। उसके छोड़े बाणों से अश्वों और गजों पर सवार और गर्जना करते हुए योद्धा मर मर कर भूमि पर गिर रहे थे। उधर भयङ्करदर्शन कौरव पक्ष के राजा लोग भारी गदाएँ, लोहे के परिघ, शक्तियाँ और अन्य बड़े बड़े शस्त्र ले, अर्जुन पर लपके। यमलोक की जनसंख्या बढ़ाने वाला अर्जुन, उस आक्रमणकारी कौरववाहिनी को देख, हँसा और प्रलय कालीन मेघों की तरह गड़गड़ा कर और अपने विशाल गाण्डीव धनुष से बाणसमूह छोड़, आपके वीर का नाश करने लगा। अर्जुन ने क्रोध में भर, अश्वारोहियों, हाथी-सवारों तथा पैदल सैनिकों के अस्त्र शस्त्र काट, उन्हें यमालय भेज दिया।

एक सौ छियालीस का अध्याय

जयद्रथ-वध

सञ्जय ने कहा—हे धृतराष्ट्र ! अर्जुन ने ज्यों ही गाण्डीव धनुष ताना, त्यों ही उससे इन्द्र के वज्र की तरह भयङ्कर और यम जैसी घोर गर्जना का शब्द निकला। उसे सुन, हे राजन् ! प्रलयकालीन वायु से तरङ्गित और उमड़े हुए तथा नक्र आदि जलजन्तुओं से रहित समुद्र जल की तरह, आपकी सेना, भयभीत हो, उन्मत्तों की तरह उद्भ्रान्त हो गयी। उस समय

कुन्तीनन्दन अर्जुन, चतुर्दिक् बाणवृष्टि करता हुआ रणाङ्गण में घूम रहा था। उसकी उस समय की बाण छोड़ने की फुर्ती देखे ही बन आती थी। देखने वालों को यही नहीं ज्ञान पड़ता था कि, वह कब तरकस से बाण निकालता, कब उसे धनुष पर रख छोड़ता था। उसका धनुष निरन्तर मण्डलाकार ही देख पड़ता था। तदनन्तर अर्जुन ने समस्त भारती सेना को त्रस्त करने के लिये दुरासद ऐन्द्रास्त्र का प्रयोग किया। उससे अग्निवत् चमचमाते अगणित बाण निकल पड़े। उससे निकले सूर्यरश्मियों जैसे चमचमाते बाणों से पूर्ण आकाश, उल्काओं से पूर्ण आकाश जैसा भयङ्कर जान पड़ने लगा। तब कौरवों ने भी आकाश को बाणजाल से आच्छादित कर, घोर अन्धकारमय कर दिया। इस अन्धकार से कुछ क्षणों के लिये अर्जुन भी भ्रान्त हो गया, किन्तु उसने तुरन्त ही दिव्यास्त्र के मंत्रों से अभिमन्त्रित बाण छोड़ कर, उस अन्धकार को वैसे ही नष्ट कर डाला, जैसे सूर्य की किरणें रात्रि के अन्धकार को दूर कर डालती हैं। तदनन्तर अर्जुन ने आपकी सेना को बाणों से वैसे ही नष्ट करना आरम्भ किया, जैसे सूर्य अपनी प्रखर किरणों से ग्रीष्मऋतु में तालाबों का जल सोख कर नष्ट कर डालता है। दिव्यास्त्र चलाने में कुशल अर्जुन के बाण, शत्रुसैन्य के ऊपर बरस रहे थे। वे बाण वीरों के हृदय में वैसे ही चिपट गये थे, जैसे कोई बन्धु अपने बन्धु से लिपटे। आपके जो जो वीर अर्जुन के सामने पड़े, वे सब वैसे ही नष्ट हो गये; जैसे प्रदीप्त अग्नि के सामने जाने वाला पतंग नष्ट होता है। उस समय अर्जुन शत्रुओं की कीर्ति और प्राणों को नष्ट करता हुआ, समरभूमि में मूर्तिमान काल की तरह भ्रमण कर रहा था, अर्जुन के बाणप्रहार से मुकुटों सहित सिर, बाजूबंद सहित मोटे मोटे भुजदण्ड, कुण्डलों सहित कान कट कर भूमि पर पड़े थे। तोमरधारी गजारोहियों के, प्रासधारी अश्वारोहियों की और ढाल तलवार धारी पैदल सिपाहियों की, धनुषों सहित रथियों की तथा चाबुक सहित सारथियों की भुजाएँ अर्जुन ने काट डालीं थीं। प्रदीप्त और उग्र बाणरूपी ज्वालाओं वाला अर्जुन प्रदीप्त अग्नि की तरह रण में शोभाय-

मान हो रहा था। देवराज इन्द्र की तरह समस्त शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ अर्जुन को उस समय आपके लड़ने वाले योद्धा वैसे ही न देख सके, जैसे मध्याह्न कालीन सूर्य को लोग नहीं देख सकते। मुकुटधारी तेजस्वी और उग्र धनुषधारी अर्जुन, इस समय वर्षाकाल के जलपूरित और इन्द्रधनुष वाले महामेघ की तरह शोभायमान हो रहा था। अर्जुन के चलाये बड़े बड़े अस्त्रों के कारण, दुस्तर संहार-प्रवाह में पड़, प्रधान प्रधान योद्धा डूबने लगे। हे राजन्! कटे हुए मुख और हाथों वाले शरीर, पहुँचा रहित बाँहें, उँगलियों रहित हाथ, कटी हुई सूँड़ें, भग्न दन्त गज, घायल ग्रीवा वाले घोड़े, टूटे फूटे रथ, पेट से निकली हुई आँतें, कटे हुए हाथ, पैर तथा दूसरे जोड़ वाले सैकड़ों और सहस्रों योद्धा, भूमि से उठना और सरकना चाहते थे, किन्तु अशक्त होने के कारण उठ नहीं सकते थे। हे राजन्! मैंने जब वह रणक्षेत्र देखा, तब वह भीरुओं को भय देने वाला रणक्षेत्र बड़ा भयङ्कर देख पड़ता था। उस समय वह रणक्षेत्र पशुओं का संहार करते हुए शिव की क्रीड़ा भूमि की तरह भयङ्कर जान पड़ता था। क्षुरप्र बाणों द्वारा कटी हाथी की सूँड़ों से रणक्षेत्र ऐसा जान पड़ता था, मानों उसमें सर्प पड़े हों। कहीं कहीं वीरों के मुख-कमलों से परिपूर्ण रणभूमि, मालाओं से भूषित जैसी जान पड़ती थी। रणक्षेत्र में जगह जगह, पगड़ियाँ, मुकुट, तावीज़, बाजूबंद, कुण्डल, सोने के अनेक आकार प्रकार के कवच और हाथी घोड़ों के भूषण पड़े हुए थे। इन वस्तुओं से अलंकृत रणभूमि नववधू जैसी जान पड़ती थी। अर्जुन ने मज्जा और मेद रूपी कीचड़ वाली, रक्त की लहरों से लहराती तथा आँतों और अस्थियों से पूर्ण, केशरूपी सिवार से युक्त विचित्र नदी प्रवाहित की। उसमें भरे हुए विशालकाय हाथी पड़े थे और रथरूपी सैकड़ों नौकाओं से वह युक्त थी। घोड़ों की लोथें उसके तट से जान पड़ते थे। रथों के पहिये, जुए, ईषा, धुरी और कूबरों के कारण वह नदी अति दुर्गम थी। प्रास, तलवार, शक्ति, फरसे और बाण रूपी सर्पों से वह अगम्य थी। बगले और कङ्क पक्षियों रूपी बड़े बड़े नक्र उसमें थे। गीदड़ियों के भयङ्कर रव के कारण, वह भयङ्कर

जान पड़ती थी। वहाँ पर सैकड़ों भूतप्रेत नाच रहे थे। योद्धाओं की लाशें उसमें बह रही थीं। वह भीरुओं को भय देने वाली थी। वह नदी रौद्र रसोत्पादक घोर वैतरणी जैसी भयङ्कर जान पड़ती थी। मृत्युसमानकाल जैसे भयङ्कर अर्जुन के पराक्रम को देख, रणभूमि में कौरव अभूतपूर्व भय से त्रस्त हो गये। तदनन्तर घोरकर्मा अर्जुन ने समस्त शत्रुओं के अस्त्रों को स्तम्भित कर दिया तथा उनको अपना रौद्र रूप दिखा तथा उन सब को अतिक्रम कर वे आगे बढ़े। उस समय मध्यान्हकालीन प्रचण्ड सूर्य की तरह रणभूमि में स्थित अर्जुन की ओर शत्रु लोग देख भी नहीं सकते थे। उस समय भी अर्जुन के धनुष से छूटे बाण आकाश में वैसे ही जान पड़ते थे; जैसे आकाश में उड़ती हुई हंसों की पंक्ति। अर्जुन वीरों के चलाये अस्त्रों को अपने अस्त्रों से निवारण कर, अपनी उग्रता प्रदर्शित कर रहे थे। श्रीकृष्ण जिसके सारथि थे, वह अर्जुन, शत्रुपक्ष के महारथियों का अतिक्रम कर, रथ सहित आगे बढ़ गया। वह जयद्रथ का वध करने के लिये, सब को क्षुब्ध कर, चारों ओर बाणों के प्रहार करने लगा। अर्जुन के चलाये अगणित बाणों से आकाश व्याप्त हो रहा था। उस समय अर्जुन के बाण चलाने की फुर्ती देखते ही बन आती थी। तदनन्तर अर्जुन समस्त शत्रु पक्षीय राजाओं तथा अन्य दिशाओं को कदम्ब पुष्प की तरह शिव निर्माल्य जान कर, उस दिशा की ओर बढ़ा जिसमें जयद्रथ था। वहाँ पहुँच अर्जुन ने नतपर्व चौंसठ बाण जयद्रथ के मारे। जब अर्जुन जयद्रथ के निकट पहुँच गया, तब कौरव योद्धा जयद्रथ के जीवन से हताश हो, रणक्षेत्र से लौटने लगे। हे प्रभो! उस समय आपके पक्ष का जो वीर अर्जुन से लड़ने जाता, वही उसके प्राणनाशक बाण से मारा जाता था, अग्नि और सूर्य जैसे चमचमाते बाण के प्रहारों से अर्जुन ने आपकी सेना को सिरहीन कबन्धमयी बना दिया। हे राजन्! आपकी चतुरङ्गिणी सेना को बाणों से विकल कर, अर्जुन ने अपना ध्यान जयद्रथ की ओर लगाया। अर्जुन ने पचास बाणों से अश्वत्थामा को और तीन बाणों से वृषसेन को घायल किया और कृपाचार्य को अर्जुन ने दयनीय

समझा। अतः उन पर उसने केवल नौ बाण चलाये। तदनन्तर शल्य के सोलह, कर्ण के बत्तीस और जयद्रथ के चौसठ बाण मार उन सब को घायल कर डाला, अर्जुन के बाणप्रहार को जयद्रथ न सह सका। अतः वह अङ्कुश के प्रहार से विकल हाथी की तरह क्रोध में भर गया। शूकर चिन्ह चिन्हित ध्वजाधारी जयद्रथ ने क्रुद्ध सर्प की तरह भयङ्कर, सोधे जाने वाले एवं गिद्ध के परों से युक्त पैने छः बाण अर्जुन पर, तीन श्रीकृष्ण पर चलाये। पुनः छः बाण मार जयद्रथ ने अर्जुन को घायल किया। फिर जयद्रथ ने आठ बाणों से अर्जुन के घोड़ों को घायल किया। फिर एक बाण अर्जुन की ध्वजा पर मारा। तब अर्जुन ने सिन्धुराज के चलाये बाणों को अपने बाणों से दूर फेंक दिया। फिर एक साथ दो बाण छोड़ अर्जुन ने, जयद्रथ के सारथि का सिर उड़ा दिया और दूसरे से जयद्रथ की विशाल ध्वजा काट कर भूमि पर गिरा दी। इतने में सूर्यास्त का समय उपस्थित हुआ। यह देख श्रीकृष्ण ने हड़बड़ा कर अर्जुन से कहा—अर्जुन छः महारथी जयद्रथ को घेरे हुए खड़े हैं और जयद्रथ भी अपनी जान बचाने को आग्रह पूर्वक उनके बीच में खड़ा है। अतः हे पुरुषश्रेष्ठ अर्जुन! बिना इन छः महारथियों को हराये तू जयद्रथ का वध नहीं करने पावेगा। मैं माया से ऐसा करूँगा कि, अकेले जयद्रथ को ही सूर्यास्त हुआ जान पड़े। उस समय हर्षित हो दुराचारी जयद्रथ तुझे मारने को उनके बीच से निकल, तेरे सामने आवेगा। सूर्यास्त हो गया समझ, वह अपनी रक्षा की ओर से असावधान हो जायगा। उस समय तुझे उसके ऊपर तात्कालिक प्रहार करना चाहिये। कहीं उस समय सूर्यास्त हो गया समझ, तू उदासीन मत हो जाना।

इस पर अर्जुन ने कहा तथास्तु। तब योगेश्वर श्रीकृष्ण ने सूर्य को ढकने के लिये अन्धकार उत्पन्न किया। उससे सूर्य ढक गये और हे राजन्! आपके पक्ष के योद्धा यह देख कि, सूर्यास्त हो गया और यह जान कर कि, अर्जुन अपनी प्रतिज्ञा से भ्रष्ट होने के कारण आत्मघात कर लेगा—बड़े प्रसन्न हुए। उस समय आपके सैनिक और जयद्रथ उचक उचक कर और

सिर उठा कर सूर्य को देखने लगे। तब श्रीकृष्ण ने अर्जुन से कहा—अर्जुन! देखो, जयद्रथ तेरी ओर से निर्भय हो, अब सूर्य की ओर देख रहा है। अतः इस दुष्ट को मारने का यही समय है। अब शीघ्रता से इसके मस्तक को काट कर, अपनी प्रतिज्ञा को पूरी कर।

श्रीकृष्ण की बात सुन प्रतापी अर्जुन अग्नि और सूर्य की समान चमकीले बाणों से आपकी सेना का संहार करने लगा। अर्जुन ने बीस कृपाचार्य के पचास कर्ण के. शल्य तथा दुर्योधन के छः छः, वृषसेन के आठ और जयद्रथ के आठ बाण मार घायल किया। हे राजन्! इस प्रकार आपके पुत्रों को अर्जुन ने बहुत से बाण मार कर घायल किया। फिर अर्जुन, जयद्रथ पर झपटा। धधकते हुए अग्नि की तरह, अर्जुन को निकट खड़ा देख, जयद्रथ के रक्षक बड़े भारी असमञ्जस में पड़े। फिर हे महाराज! जय चाहने वाले तुम्हारे योद्धा अर्जुन को बाणधारा से स्नान कराने लगे। इस पर अर्जुन को बड़ा क्रोध उपजा और उसने आपकी सेना का नाश करने के लिये भयङ्कर बाणजाल फैलाया। जब वीर अर्जुन, आपके योद्धाओं को मारने लगा, तब वे लोग भयभीत हो जयद्रथ को त्याग भागे। उस समय वे सब ऐसे हड़बड़ाये हुए थे कि, एक साथ दो सैनिक भी नहीं भाग पाते थे। उस समय मैंने अर्जुन का अभूतपूर्व अद्भुत पराक्रम देखा। उसने पशु संहारकारी शङ्कर की तरह अश्वों तथा गजों को उनके आरोहियों सहित पीस डाला। उस समय समरक्षेत्र में एक भी हाथी, घोड़ा या मनुष्य न था जो अर्जुन के बाणप्रहार से अछूता बचा हो। अन्धकार छा जाने तथा आँखों में धूल भर जाने के कारण योद्धा यहाँ तक घबड़ाये कि, वे आपस में एक दूसरे को पहचान भी न सके।

हे राजन्! अर्जुन के छोड़े हुए बाणों से मर्मस्थल विद्ध होने से सैनिक भागते समय ठोंकरें खा खा कर गिरने लगे। प्रजाओं के संहार के समान उस महाभयानक दुष्पार और अतिदारुण युद्ध के चलते रहने से और रुधिर के छिड़काव से वहाँ जो धूल उड़ी वह जहाँ की तहाँ बैठ गयी। रणभूमि में

रथों के पहिये धुरों तक, रक्त में डूबे हुए थे। सवारों के मारे जाने पर, बहुत से हाथी बाणों से घायल हो, अपनी सेना के सैनिकों को पाँवों तले कुचलते और बुरी तरह चिंघारते हुए इधर उधर दौड़ते फिरते थे। उधर सवारों सहित सुन्दर घोड़े, पैदल सैनिकों के अस्त्रों से व्याकुल हो समरभूमि में दौड़ रहे थे। सैनिकों में से कोई कोई रक्त टपकाता, कोई सिर के बाल खोले, कोई कवचहीन हो भय के मारे, इधर उधर चारों ओर दौड़ रहे थे। कोई कोई सैनिक ठोंकरे खा, जहाँ के तहाँ रह गये। कितने ही मृतहाथियों की लोथों में जा छिपे थे। हे राजन्! इस प्रकार आपकी सेना को खदेड़ कर, अर्जुन ने जयद्रथ के रक्षकों की खबर ली। अर्जुन ने अश्वत्थामा, कृपाचार्य, कर्ण, शल्य, वृषसेन और दुर्योधन को तीक्ष्ण बाणों से ढक दिया। हे राजन्! अर्जुन बड़ी शीघ्रता से बाण छोड़ रहा था। यहाँ तक कि, उसका धनुष मण्डलाकार और बाण सब ओर देख पड़ते थे। अर्जुन ने कर्ण और वृषसेन के धनुष काट डाले और शल्य के सारथि को मार कर भूमि पर गिरा दिया। अर्जुन ने कृपाचार्य और अश्वत्थामा को, जो आपस में मामा भाँजे का सम्बन्ध रखते थे, बहुत अधिक घायल कर डाला। इस प्रकार आपके महारथियों को विकल कर, अर्जुन ने अग्नि जैसा भयङ्कर एक बाण निकाला। इस बाण का पूजन चन्दन पुष्पों से सदा किया जाता था। उसे वज्रास्त्र के मंत्र से अभिमंत्रित कर, अर्जुन ने धनुष पर रखा। उस बाण के धनुष पर चढ़ते ही आकाशचारी प्राणियों ने बड़ा कोलाहल मचाया। उस समय श्रीकृष्ण ने तुरन्त अर्जुन से कहा—अर्जुन! तू इस दुष्ट के सिर को जल्दी से काट। क्योंकि अब सूर्य अस्त होने ही वाले हैं। जयद्रथ वध के सम्बन्ध में मुझे तुमसे एक बात और भी कहनी है, वह यह कि, जयद्रथ के जगत्प्रसिद्ध पिता वृद्धक्षत्र के, जयद्रथ ढलती उमर में हुआ था। जिस समय जयद्रथ जन्मा था, उस समय मेघगर्जन गम्भीर यह आकाशवाणी हुई थी—हे राजन्! तुम्हारे पुत्र में कुल, शील, दमादिगुण चन्द्र तथा सूर्य वंशियों जैसे होंगे। वह क्षत्रियों में श्रेष्ठ माना जायगा और शूरवीर लोग उसका आदर करेंगे। किन्तु एक जगत्प्रसिद्ध क्षत्रिय इस पर चढ़ाई करेगा

और तुम्हारे पुत्र का सिर काट डालेगा। इस देववाणी को सुन, वृद्धक्षत्र सोच विचार में पड़ गये। तदनन्तर पुत्रस्नेह में डूबे हुए उस राजा ने अपनी जाति वालों से कहा—मेरा पुत्र बड़े भारी दायित्व को ओढ़, जब युद्ध में प्रवृत्त होगा, तब जो कोई इसका सिर काट कर भूमि में गिरावेगा, उसके सिर के निश्चय ही सौ टुकड़े हो जाँयगे। राजा वृद्धक्षत्र यह कह कर, पुत्र को राज्य दे और वन में जा उग्र तप करने लगा। हे अर्जुन! सो इस समय वृद्धक्षत्र स्यमन्तपञ्चक तीर्थ के बहिर्भाग में उग्र तप कर रहा है। तू ऐसा कर, जिससे जयद्रथ का कुण्डलों सहित कटा हुआ मस्तक वृद्धक्षत्र की गोद में जा कर गिरे। यदि तूने कहीं इसका माथा काट कर भूमि में गिराया, तो निस्सन्देह तेरे मस्तक के सौ टुकड़े हो जाँयगे। अतः हे कुरुश्रेष्ठ! तप करते हुए उसके पिता को हम लोगों की यह बात मालूम न होने पावे। तू अब दिव्यास्त्र चला इसका मस्तक काट। हे इन्द्रपुत्र! तेरे लिये कुछ भी असम्भव नहीं है। तू जो चाहे, वही कर सकता है।

श्रीकृष्ण के इन वचनों को सुन, अर्जुन दोनों जावड़े जिह्वा से चाटने लगा। उसने इन्द्र के वज्र की तरह, तीक्ष्ण, सब के पराक्रम के सामने टिकने वाले, नित्य चन्दन से चर्चित, दिव्य मन्त्र से अभिमन्त्रित, उस बाण को जयद्रथ के वधार्थ छोड़ दिया। बाज के समान शीघ्रगामी बाण, जयद्रथ के कटे मस्तक को ले आकाश की ओर उड़ा। मित्रों को हर्षित और शत्रुओं को खिन्न करने के अभिप्राय से अर्जुन ने जयद्रथ के उस मस्तक को बाणों के प्रहार से आकाश की ओर चढ़ाया। उस समय हे राजन्! आपके पक्ष के छवों महारथी क्रुद्ध हो लड़ने लगे। किन्तु अर्जुन ने उन सब को कदम्ब पुष्पवत् तुच्छ जाना और उनके साथ वह लड़ता रहा। उस समय हे राजन्! मैंने एक बड़ा आश्चर्य देखा। वह यह कि, अर्जुन का बाण जयद्रथ के सिर को स्यमन्तपञ्चक के बहिर्देश में ले गया। उस समय आपके नातेदार वृद्धक्षत्र सन्ध्योपासन कर रहे थे। उनकी गोद में उस बाण ने जयद्रथ का कटा और कृष्णकेशों तथा कुण्डलों से भूषित सिर

काट दिया। उसका गिरना वृद्धक्षत्र को मालूम भी न पड़ा। जब राजा वृद्धक्षत्र जपादि से निवृत्त हो उठे, तब उनकी गोद से वह मस्तक अचानक पृथिवी पर गिर पड़ा। जयद्रथ का मस्तक उनकी गोद से भूमि पर गिरते ही, वृद्धक्षत्र के सिर के सौ टुकड़े हो गये। यह देख समस्त सैनिक आश्चर्य चकित हो गये और वे लोग महारथी श्रीकृष्ण और अर्जुन की सराहना करने लगे।

हे राजन्! जब जयद्रथ, किरीटी अर्जुन के हाथ से मारा गया, तब श्रीकृष्ण ने मायारचित अन्धकार हटा दिया। तब अपने साथियों सहित आपके पुत्रों को विदित हुआ कि यह सब श्रीकृष्ण की माया का खेल था। अमित तेजस्वी अर्जुन ने आठ अक्षौहिणी सेनाओं का नाश कर, आपके जमाई जयद्रथ को मार डाला। हे राजन्! आपके पुत्र, जयद्रथ को मरा हुआ देख, दुःखी हो रोने लगे और उन्हें अपने विजयी होने की आशा से हाथ धोने पड़े। हे राजन्! अर्जुन द्वारा जयद्रथ के मारे जाने पर, परन्तप श्रीकृष्ण, अर्जुन, भीम, सात्यकि और पराक्रमी उत्तमौजा ने अपने शङ्ख अलग अलग बजाये। उनकी शङ्खध्वनि को सुन, धर्मराज ने जान लिया कि, अर्जुन के हाथ से जयद्रथ मारा गया। तब उन्होंने बाजे बजवा कर, अपने पक्ष के योद्धाओं को हर्षित किया और द्रोण से लड़ने के लिये, उन पर आक्रमण किया। जब सूर्य अस्ताचलगामी हो गये, तब सोमकों के साथ द्रोण का लोमहर्षण युद्ध हुआ। क्योंकि जयद्रथ के मारे जाने पर, सोमकगण, द्रोण को मारने के लिये, सन्नद्ध कर युद्ध करने लगे। पाण्डव भी जयद्रथ को मार कर और विजयी हो तथा जय प्राप्ति के कारण उन्मत्त हो, द्रोण से लड़ने लगे। महाबाहु अर्जुन भी राजा जयद्रथ को मार कर, आपके श्रेष्ठ रथियों से लड़ने लगा। जैसे उदयोन्मुख सूर्य अन्धकार को नष्ट करता है, वैसे ही अर्जुन प्रतिज्ञोत्तीर्ण हो, वज्रधारी इन्द्र की तरह असुरवत् आपके योद्धाओं को नष्ट करने लगा।

एक सौ सैंतालीस का अध्याय

कृपाचार्य का अचेत होना

धृतराष्ट्र ने कहा—हे सञ्जय ! जब अर्जुन ने जयद्रथ को मार डाला, तब मेरे पुत्रों ने क्या किया ? अब तुम यह मुझे सुनाओ।

सञ्जय ने कहा—हे राजन् ! अर्जुन द्वारा जयद्रथ का वध हुआ देख, कृपाचार्य ने क्रुद्ध हो अर्जुन के ऊपर घोर बाणवृष्टि की। दूसरी ओर से अश्वत्थामा भी रथ में बैठ अर्जुन के ऊपर झपटा। वे दोनों महारथी जब इस प्रकार अर्जुन पर तीक्ष्ण बाणों की वृष्टि करने लगे; तब अर्जुन उस बाणवृष्टि से अत्यन्त व्यथित हुआ। क्योंकि वह गुरु और गुरुपुत्र का वध करना नहीं चाहता था। अतः अर्जुन उन दोनों के छोड़े बाणों को दूर हटा, उन दोनों पर धीरे धीरे बाणवृष्टि करता था। यद्यपि अर्जुन मन्द-वेग से बाण चलाता था; तथापि उसके बाण उन दोनों के बड़े वेग से जा कर लगते थे। बहुत से बाण लगने से उन दोनों के शरीरों में बड़ी वेदना होने लगी। हे राजन् ! कुन्तीपुत्र के बाणों के प्रहार से जब कृपा-चार्य के शरीर में भीषण वेदना होने लगी, तब वे मूर्छित हो, रथ के खटोले में बैठ रहे। उस समय उनके सारथि ने समझा कि, आचार्य मारे गये, अतः वह रथ हाँक कर उन्हें रणक्षेत्र से बाहिर ले गया। कृपाचार्य को मूर्छित देख, अश्वत्थामा भी लड़ना छोड़, रथ पर सवार हो, वहाँ से चल दिया। कृपाचार्य का मूर्छित होना देख, अर्जुन को बड़ा दुःख हुआ। उसकी आँखों से आँसू निकल पड़े और गद्गद कण्ठ से उसने कहा—जिस समय पापिष्ठ दुर्योधन पैदा हुआ था, उस समय विदुर ने धृतराष्ट्र से कहा था, इस कुलकलङ्क को यमलोक को पठा दो। इसीमें अच्छाई है। क्योंकि इसके कारण आगे चल कर, कुरुवंश के बड़े बड़े पुरुषों के लिये महद् भय उपस्थित होगा। सत्यवादी विदुर की तब की कही बात आज सामने आयी है। हाय ! दुर्योधन के पीछे ही मुझे अपने गुरु को शरशय्या पर पड़ा हुआ देखना

पड़ता है। क्षात्रधर्म को धिक्कार है। क्षत्रिय के बल और उसके पुरुषार्थ को भी धिक्कार है। मुझ जैसा कौन पुरुष ब्राह्मण आचार्य से द्रोह करना पसन्द करेगा? आचार्य कृप मेरे गुरु हैं, द्रोण के सम्बन्धी हैं और ऋषिपुत्र हैं। हा! वे ही आचार्य कृप मेरे बाणों से घायल हो, रथ में अचेत पड़े हैं। मेरी इच्छा इनको मारने की कदापि न थी। तो भी वे मेरे बाणों से पीड़ित हुए हैं और पीड़ित हो रथ में पड़े हैं। इनका इस प्रकार पड़ना मेरे लिये महादुःखदायी है। मैं पुत्रशोक से सन्तप्त और बाणपीड़ा से पीड़ित था। ऐसी दुरवस्था में होने पर, मैंने अपने गुरु पर बहुत बाण छोड़े। अतः वे मूर्छित हो, दुःखियारे की तरह पड़े हैं। हे कृष्ण! तुम तनक उनकी ओर तो देखो। मेरा चित्त तो अभिमन्यु के मारे जाने से ठिकाने नहीं है। यह दुःख उनके कारण और भी बढ़ रहा है। जिन गुरुओं से विद्या सीखी जाय, उनकी मनोभिलाषाओं को पूर्ण करने वाले शिष्यों को देवयोनि प्राप्त होती है। किन्तु जो नराधम गुरुओं से विद्याध्ययन कर, उनका वध करते हैं, वे निश्चय ही नरकगामी होते हैं। मैंने तो उन पर बाणों की वर्षा कर और उन्हें मूर्छित कर, नरक जाने का काम किया है। विद्या पढ़ते समय कृपाचार्य ने मुझसे कहा था कि, शिष्य को गुरु पर कभी भी प्रहार न करना चाहिये; किन्तु मैंने उनकी अवज्ञा की है और उन्हींके ऊपर बाणवृष्टि की है। रण से न भागने वाले श्रद्धेय आचार्य कृप को मैं प्रणाम करता हूँ। हे कृष्ण! मुझे धिक्कार है कि, मैंने इनके ऊपर हाथ साफ़ किया।

जब अर्जुन, कृपाचार्य के लिये इस प्रकार दुःखी हो रहे थे, तब जयद्रथ को मरा देख, कर्ण दौड़ा। कर्ण को अर्जुन के रथ की ओर झपटते देख, दोनों पाञ्चाल राजकुमार और सात्यकि ने दौड़ कर, उसका सामना किया। कर्ण को अपनी ओर आते देख, अर्जुन ने हँस कर श्रीकृष्ण से कहा, कृष्ण! अधिरथनन्दन यह कर्ण झपट कर सात्यकि की ओर चला जा रहा है। इसे भूरिश्रवा का मारा जाना असह्य है।

अतः जिधर कर्ण बढ़ रहा है, उधर ही तुम रथ हाँक कर ले चलो। जिससे वह, कहीं सात्यकि का वध न कर डाले। यह सुन श्रीकृष्ण ने समयानुसार यह कहा—अर्जुन! अकेला सात्यकि कर्ण के लिये बहुत है। फिर सात्यकि के पास दो पाञ्चाल राजकुमार हैं। अतः चिन्ता की कोई बात नहीं। इस समय कर्ण के साथ तुम्हारा लड़ना ठीक नहीं। क्योंकि उसके पास इन्द्र की दी हुई एक पुरुषघातनी चमचमाती शक्ति है। उसे कर्ण ने तुम्हारे लिये ही रख छोड़ा है और वह उसकी नित्य पूजा किया करता है। अतः कर्ण को सात्यकि की ओर जाने दो। उसकी गति में बाधा डालना उचित नहीं। हे पार्थ! मैं जब बतलाऊँ, तब तुम इस दुष्ट का वध करना।

धृतराष्ट्र बोले—हे सञ्जय! भूरिश्रवा और जयद्रथ के मारे जाने के बाद कर्ण के साथ सात्यकि का युद्ध हुआ था, उसमें तो सात्यकि के पास रथ था नहीं। फिर सात्यकि और चक्ररक्षक दोनों पाञ्चालकुमार किनके रथों पर सवार थे, मुझे यह बतलाओ।

सञ्जय ने कहा—जैसे जैसे यह महायुद्ध हुआ, उस सब का वर्णन मैं आपको सुनाता हूँ। आप ध्यान दे कर सुनें। यह सब आपकी कुटिल-नीति का परिणाम है। हे प्रभो! श्रीकृष्ण यह बात पहले ही जानते थे कि, सात्यकि को भूरिश्रवा परास्त करेगा। क्योंकि हे राजन्! श्रीकृष्ण भूत, भविष्यत् और वर्तमान काल की सब बातें जानते हैं। इस लिये उन्होंने अपने सारथि दारुक को बुला कर कहा कि, प्रातःकाल ही मेरे रथ को जोत कर, तैयार रखना। हे राजन्! श्रीकृष्ण और अर्जुन ऐसे हैं कि इन्हें देवता, गन्धर्व, यक्ष, सर्प, राक्षस आदि जाति का कोई भी नहीं जीत सकता। फिर मनुष्य का तो पूँछना ही क्या है? पितृ, देवता, सिद्ध उनके प्रभाव को भली भाँति जानते हैं। हे राजन्! अब आप युद्ध का वृत्तान्त सुनिये। श्रीकृष्ण ने जब सात्यकि को रथहीन और कर्ण को उस पर आक्रमण करने के लिये आते देखा; तब उन्होंने ऋषभस्वर में अपना शङ्ख बजाया। उस शङ्खध्वनि को सुन, दारुक गरुड़ की ध्वजा से शोभित रथ सात्यकि के

लिये ले आया। उस रथ को दारुक हाँक रहा था और उसमें शैब्य, सुग्रीव, मेघपुष्प और बलाहक नामक इच्छानुसार चलने वाले श्रेष्ठ जाति के घोड़े जुते थे। उस रथ को दारुक हाँक रहा था। अग्नि अथवा सूर्य जैसे उस चमकीले रथ पर सात्यकि सवार हो गया। उस विमान जैसे रथ पर सवार हो, सात्यकि बहुत से बाण छोड़ता हुआ, कर्ण की ओर लपका। अर्जुन के दोनों चक्ररक्षक, युधामन्यु और उत्तमौजा ने भी कर्ण पर आक्रमण किया। तब क्रोध में भरा कर्ण बाणवृष्टि करता हुआ, सात्यकि पर टूट पड़ा। उस समय जैसा विकट युद्ध हुआ, वैसा युद्ध तो न कभी अन्तरिक्ष में देवताओं, राक्षसों और गन्धर्वों ही में हुआ था। पृथिवी पर तो मनुष्यों में वैसा युद्ध हो ही नहीं सकता था। इन लोगों के पराक्रम को देख, चतुरङ्गिणी सेना शान्त हो गयी। इस अलौकिक युद्ध को देख, समस्त योद्धा आश्चर्यचकित हो गये। उस समय दारुक के रथ हाँकने की चतुराई देख, आकाशस्थित देव, दानव और गन्धर्व भी विस्मित हो गये। वे लोग बड़े ध्यान से कर्ण और सात्यकि का युद्ध देखने लगे। अपने अपने मित्रों के लिये लड़ने वाले एवं देवताओं जैसे उन दोनों वीरों ने एक दूसरे पर बाणवृष्टि आरम्भ की। कर्ण, सात्यकि की ओर ऐसे घूर रहा था, मानों उसे दृष्टि से भस्म कर डालेगा। सात्यकि भी कर्ण पर क्रुद्ध हो, उससे वैसे ही लड़ रहा था, जैसे एक हाथी दूसरे हाथी के साथ युद्ध करता है। दोनों ओर से घोर प्रहार होने लगे। सात्यकि ने लोहे के ठोस बाण मार, कर्ण के अङ्ग-प्रत्यङ्ग घायल कर डाले, फिर सात्यकि ने एक भल्ल बाण से कर्ण के सारथि को मार कर, रथ के नीचे गिरा दिया और उसके रथ के चारों सफेद रङ्ग के घोड़ों को भी मार डाला। फिर सात्यकि ने हे राजन्! आपके पुत्र के सामने ही कर्ण की ध्वजा काट, उसके रथ के सैकड़ों टुकड़े कर डाले। सात्यकि ने कर्ण को रथहीन कर डाला। यह देख हे, राजन्! आपका पुत्र उदास हुआ। तब कर्ण के पुत्र वृषसेन, मद्रराज शल्य ने तथा द्रोणपुत्र अश्वत्थामा ने सात्यकि को चारों ओर से घेर लिया। उस समय बड़ी

गड़बड़ी मची। लोगों की कुछ समझ ही में न आया। जब लोगों को मालूम पड़ा कि, सात्यकि ने कर्ण को रथहीन कर डाला, तब समस्त सैनिक हाहाकार करने लगे। रथहीन कर्ण, जो लड़कपन से आपके पुत्र को अपना मित्र मानता था और जिसने आपके पुत्र को राज्य दिलाने का वचन दिया था, वही कर्ण इस समय लंबी लंबी साँसें लेता हुआ, दौड़ कर दुर्योधन के रथ पर चढ़ गया! हे राजन्! भीम और अर्जुन की प्रतिज्ञाओं को स्मरण कर, सात्यकि ने रथहीन कर्ण का तथा दुःशासनादिक आपके पुत्रों का वध नहीं किया। भीमसेन ने आपके पुत्रों का वध करने की प्रतिज्ञा की थी। दूसरी बार जब जुआ हुआ था, तब अर्जुन ने कर्ण को मारने की प्रतिज्ञा की थी। अतः सात्यकि ने रथहीन कर के, कर्ण को विकल तो कर डाला, पर उसे जान से नहीं मारा। यद्यपि कर्ण आदि चुने चुने महारथियों ने सात्यकि को मार डालने के लिये बड़े बड़े यत्न किये, तथापि उनमें से कोई भी अपने उद्योग में सफल न हुआ। धर्मराज के हितैषी, वीरता में श्रीकृष्ण और अर्जुन जैसे सात्यकि ने एक ही धनुष से अश्वत्थामा, कृतवर्मा तथा अन्य बहुत से नामी गामी योद्धाओं को तथा आपकी समस्त सेना को खेलते खेलते जीत लिया। इस संसार में श्रीकृष्ण, अर्जुन और सात्यकि को छोड़, चौथा धनुर्धारी नहीं है।

धृतराष्ट्र ने कहा—वासुदेव के बराबर पराक्रमी एवं भुजबलसम्पन्न, सात्यकि, श्रीकृष्ण के अजेय रथ पर सवार हो, कर्ण का रथ कट चुकने पर भी, क्या उसी रथ पर बैठा रहा? अथवा वह दूसरे रथ पर बैठा? हे सञ्जय! तुम रणवृत्तान्त कहने में पटु हो, अतः मुझे समस्त वृत्तान्त तुम सुनाओ। मैं तो सात्यकि को अजेय मानता हूँ। अतः तुम मुझे उसके युद्ध का वृत्तान्त सुनाओ।

सञ्जय ने कहा—हे राजन्! इस युद्ध का पूरा पूरा वृत्तान्त मैं आपको सुनाता हूँ। सुनिये। हे राजन्! दारुक के अनुज ने मेघ की तरह गम्भीर घरघराहट का शब्द करने वाला, तथा युद्धोपयोगी सामग्री से परिपूर्ण रथ,

सात्यकि के सामने ला कर खड़ा कर दिया। श्रीकृष्ण के आदेशानुसार वह रथ खूब सजाया गया था। उस पर यथास्थान लोहे तथा सुवर्ण के पत्तर जड़े हुए थे। उस पर कुल्लियों से नक़्क़ाशी का काम किया गया था और उसके ऊपर सिंहध्वजा फहरा रही थी। उस पर सुवर्ण के आभूषणों की सजावट थी। उत्तम जाति के और सफ़ेद रङ्ग के तथा सोने के कवच धारण किये चार घोड़े जुते हुए थे। घंटियों की झंकार से वह रथ गर्ज सा रहा था। उसमें चमचमाते तोमर और शक्तियाँ रखी थीं। इनके अतिरिक्त और भी अनेक प्रकार के शस्त्र अस्त्र रखे थे। सात्यकि उसके ऊपर सवार हो, हे राजन्! आपकी सेना पर लपका और दारुक श्रीकृष्ण की ओर गया। इधर कौरव भी एक बड़ा बढ़िया सुवर्ण भूषणों से भूषित, अच्छी जाति के वेगवान घोड़ों से युक्त, युद्धोपयोगी उपस्कर से परिपूर्ण एक रथ, कर्ण की सवारी के लिये ले आये। कर्ण उस रथ पर सवार हो, शत्रुओं की ओर झपटा। हे राजन्! आपके प्रश्न का पूर्ण उत्तर मैंने दे दिया। अब आगे आप अपनी कुटिल नीति के कारण जो संहार हुआ, उसका वृत्तान्त सुनिये। भीम ने आपके इकतीस पुत्रों का वध किया। सात्यकि और अर्जुन ने चित्रयोधी दुर्मुख को, भीष्म को और भगदत्त को मुहाने पर ला कर, आपके हज़ारों वीरों का नाश किया था। हे राजन्! आपकी दुर्नीति के कारण इस प्रकार का बड़ा भारी संहार हुआ।

एक सौ अड़तालीस का अध्याय

अर्जुन का अभिनन्दन

धृतराष्ट्र ने पूँछा—हे सञ्जय! जिस समय पाण्डवों और मेरे वीरों की यह दशा हो रही थी, उस समय भीम ने क्या किया?

सञ्जय ने कहा—हे राजन्! भीम का रथ नष्ट हो गया। कर्ण के वचन रूपी भालों से पीड़ित हो, भीम ने क्रोध में भर अर्जुन से कहा—

पार्थ ! देखो कर्ण मुझसे बारंबार ओ नपुंसक ! ओ मूढ़ ! ओ बकपिट्टू ! ओ शस्त्रचालन में मूर्ख ! ओ छोकरे ! ओ डरपोंक ! आदि तिरस्कारसूचक बातें कह रहा है। अतः मैं अब इसे मारूँगा। धनञ्जय मुझे इस सम्बन्ध में तुमसे इतना ही कहना है कि जैसा तुम्हारा व्रत है, वैसा ही मेरा भी व्रत है। मेरा तुम्हारे साथ जो ठहराव है—उसे तुम जानते ही हो। अतः हे नरश्रेष्ठ ! तुम इसका वध करने के लिये मेरे वचन को स्मरण करो और ऐसा कोई उपाय सोचो जिसमें मेरी बात झूठी न पड़ने पावे।

भीम के वचनों को सुन परमपराक्रमी अर्जुन आगे बढ़, कर्ण के निकट गया और उससे कहने लगा—ओ कर्ण ! अरे सूतनन्दन ! जान पड़ता है, आँखें रहते भी तुझे सूझ नहीं पड़ता। इसीसे तेरे दल के तेरी बड़ाई करते हैं, किन्तु हे पापी ! अब मैं तुझसे जो कहता हूँ, उसे तू सुन ! रणक्षेत्र में शूरवीरों के कर्तव्य दो प्रकार के हुआ करते हैं। वे ये कि, या तो शत्रु को हरा दें अथवा स्वयं उससे हार जाँय। हे राधेय ! किन्तु युद्ध में कौन हारेगा, कौन जीतेगा—इसका निश्चय तो इन्द्र भी नहीं कर सके। तू स्वयं ही रण में कितनी ही बार रथहीन हो चुका है। कितनी ही बार तू युद्ध में घबड़ा चुका है। यहाँ तक कि तू मारा जाने ही वाला था, किन्तु तेरी मौत मेरे हाथ से है, अतः युयुधान ने तुझे जान ले न मारा और तुझे परास्त कर, छोड़ दिया। फिर दैववशात् तेरी भीम से मुठभेड़ हुई। तब ज्यों त्यों कर तूने उसे रथहीन कर दिया और उसे गालियाँ दीं। यह काम तेरा बड़ा पापपूरित है। क्योंकि जो वीर होते हैं वे शत्रु को परास्त कर, हल्की बातें अपने मुँह से नहीं निकालते। न वे किसी की निन्दा करते हैं। किन्तु हे सूतनन्दन ! तू तो ठहरा गँवार। इसीसे तुझे अंटसंट बकते लज्जा नहीं आती। तूने रणक्षेत्र में समस्त सैनिकों के सामने, श्रीकृष्ण के सामने और मेरे सामने भीमसेन को गालियाँ दी हैं। तूने भीमसेन से बड़े बड़े अप्रिय वचन कहे हैं। जब भीमसेन ने तुझे कई बार रथहीन कर दिया था, तब तो उन्होंने तुझसे कभी एक भी अप्रिय वचन नहीं कहा

था। फिर तू उन्हें गालियाँ क्यों देता है? मेरी अनुपस्थिति में तूने मेरे पुत्र अभिमन्यु को मार डाला है। अतः तुझे अपनी इस गर्वपूर्ण करतूत का फल बहुत जल्द मिलेगा। तूने अभिमन्यु का जो धनुष काटा था, उसे भी तू अपने नाश का कारण समझ। रे मूर्ख! तुझे अपनी इन करतूतों का दण्ड भोगना पड़ेगा और मैं तुझे तेरे पुत्र, बन्धु बान्धव और अनुचर वर्ग सहित मारूँगा। अब तू सावधान हो जा और तुझे जो कुछ करना हो सो कर ले। क्योंकि अब तेरे ऊपर घोर विपत्ति पड़ने वाली है। रणभूमि में, मैं तेरी उपस्थिति ही में तेरे पुत्र वृषसेन का वध करूँगा। जो अन्य राजन्य वर्ग उस समय उसकी रक्षा करने आवेंगे, वे भी मेरे हाथ से मारे जायँगे। मैं यह बात अपने आयुधों की शपथ खा कर कहता हूँ। तुझ जैसे मूर्ख और मूढ़बुद्धि को मरा हुआ देख, मन्दबुद्धि दुर्योधन, बहुत सन्तप्त होगा।

अर्जुन ने यह कह कर्ण के पुत्र वृषसेन का वध करने की प्रतिज्ञा की। अर्जुन की इस प्रतिज्ञा को सुन, रथियों में बड़ा कोलाहल मचा। तदनन्तर घोर संग्राम आरम्भ हुआ। इतने ही में सूर्य का प्रकाश मन्द पड़ा और सूर्य अस्त हो गये। तब अपनी प्रतिज्ञा को पूर्ण किये हुए अर्जुन को आलिङ्गन कर, श्रीकृष्ण ने अर्जुन से कहा—अर्जुन! तुम अपनी प्रतिज्ञा से उत्तीर्ण हुए। यह बहुत ही अच्छा हुआ। तुमने पापिष्ठ जयद्रथ और उसके पिता वृद्धक्षत्र को मार डाला। सो यह काम तुमने बहुत ही अच्छा किया। अर्जुन! धृतराष्ट्र के पुत्र की सेना ऐसी बलवती है कि, देवताओं की सेना भी यदि उससे भिड़े, तो निश्चय ही उसे खिन्न होना पड़े। अतः बहुत सोचने विचारने पर मुझे तो तुम्हें छोड़ और कोई नहीं देख पड़ता, जो दुर्योधन की सेना का सामना कर सके। दुर्योधन की सेना में तुम्हारे समान, तुमसे भी अधिक बली और प्रभावशाली बहुत से राजे इकट्ठे हुए हैं। किन्तु वे कवचधारी एवं क्रोधी राजे तुम्हें देख कर, तुम्हारे सम्मुख नहीं आये। क्योंकि तुम्हारा बलवीर्य तो रुद्र, इन्द्र और यमराज के समान है। कोई भी मनुष्य तुम्हारे समान

पराक्रम प्रदर्शित नहीं कर सकता। हे शत्रुतापन! तुमने आज जैसा पराक्रम प्रदर्शित किया है, वैसा पराक्रम तो आज तक किसी ने नहीं दिखलाया। अतः मैं इस आनन्दावसर पर तुम्हें बधाई देता हूँ। जब तुम बन्धु बान्धव सहित दुष्ट कर्ण का वध कर डालोगे, तब मैं तुम्हें पुनः बधाई दूँगा। यह सुन अर्जुन ने श्रीकृष्ण से कहा—हे कृष्ण! यह आप ही की कृपा है जो मैं अपनी प्रतिज्ञा को पूर्ण कर सका हूँ। क्योंकि इस प्रकार की प्रतिज्ञा को पूर्ण करना देवताओं के लिये भी कठिन बात थी। किन्तु हे केशव! आप जिनके अनुकूल हैं, उनके विजयी होने में कुछ भी आश्चर्य नहीं है। आप ही के अनुग्रह से महाराज युधिष्ठिर अखिल भूमण्डल के अधीश्वर होंगे। हे वृष्णिवंशिन्! यह सब आपका प्रभाव है और यह आप ही का विजय है। हे मधुसूदन! आप इसी प्रकार हम लोगों की वृद्धि करते रहें।

अर्जुन के इन वचनों को सुन, श्रीकृष्ण घोड़ों को धीरे धीरे हाँक, उस भयङ्कर रणक्षेत्र का घोर दृश्य दिखाते हुए कहने लगे—अर्जुन! देख, विजयाभिलाषी और यश की चाहना रखने वाले शूरवीर अनेक राजा युद्ध में तेरे बाणों के प्रहार से मारे जा कर, रणभूमि में सो रहे हैं। उनको तू देख। देख, इनके शस्त्र और आभूषण कैसे छितराये हुए पड़े हैं। इनके हाथी, घोड़े तथा रथ नष्ट भ्रष्ट हो कैसे पड़े हैं। देख, इनके मर्मस्थल कैसे विद्ध हो रहे हैं। अतः इन मरे हुए और अधमरे वीरों को तड़पते और कराहते देख मन विकल हो जाता है। देख, कान्तिवान राजा मर जाने पर भी कान्तिहीन नहीं हुए, अतः वे जीवित से देख पड़ते हैं। सुवर्णपुंख बाणों तथा विविध शस्त्रों एवं वाहनों से रणक्षेत्र परिपूर्ण हो रहा है। हे पार्थ! कवच, ढाल, माला, कुण्डलों से शोभित कटे हुए सिर, पगड़ी, मुकुट और पुष्पहार, वस्त्र, कंठा, बाजूबंद, निष्क तथा अन्य विचित्र आभूषणों से यह भूमि सुशोभित हो रही है। टूटे रथों के ढाँचों, पताकाओं, ध्वजाओं, ईषा के काठों, रथों के टूटे पहियों, धुरों, जुओं, रासों, धनुषों, बाणों, भूलों, अङ्कुशों, शक्तियों, भिन्दिपालों, भुशुण्डियों, तलवारों, फरसों, मूसलों,

मुगदरों, गदाओं, कृपाणों, सोने की डंडियों के चाबुकों, गजघंटों, बाणों से विदीर्ण बहुमूल्य वस्त्रों तथा टूटे फूटे आभूषणों से रणभूमि वैसी ही जान पड़ती है, जैसी शरदऋतु में नक्षत्रों से युक्त रजनी। ये भूपाल, भूमि के पीछे, (समर) भूमि में मारे गये हैं और अपनी प्रेयसी की तरह पृथिवी को आलिङ्गन किये हुए पड़े हैं। हे पार्थ! देख, पर्वतशृङ्ग जैसे और ऐरावत की तरह ये हाथी तेरे बाणों से घायल हो, पृथिवी में पड़े पड़े चिंघार रहे हैं। जैसे गिरिगुहा से गेरू की धार बहे; वैसे ही ये हाथी अपने घावों से रक्त की धारें बहा रहे हैं। देख, सुवर्ण के आभूषणों से भूषित घोड़े, मरे हुए भूमि पर पड़े हैं। गन्धर्वनगरों जैसे इन रथों को भी तू देख, देख, इनकी ध्वजाएँ और पताकाएँ, धुरे तथा पहिये, नष्ट भ्रष्ट हो गये हैं। ये ऊँचे विमानों जैसे रथ निकम्मे हो यहाँ पड़े हैं। देख, सैकड़ों, सहस्रों ढाल तलवार धारी एवं धनुर्धर सैनिक रक्त से लथपथ हो, अनन्त निद्रा में पड़े सो रहे हैं। हे महाभुज! देख तेरे बाणों से क्षत विक्षत अंगों वाले योद्धाओं के बालों में, भूमि पर गिर पड़ने से, कैसी धूल भर गयी है। ये लोग पृथिवी को चिपटाये हुए पड़े हैं। रणक्षेत्र मरे हुए हाथियों, घोड़ों और टूटे रथों से खचाखच भरा है। इसमें रक्त, माँस, वसा की कीँच हो रही है। राक्षस, कुत्ते, भेड़िये और पिशाच, इस रणक्षेत्र को देख देख कर, कैसे हर्षित हो रहे हैं। यश को बढ़ाने वाला, रणभूमि सम्बन्धी यह कृत्य, हे पार्थ! तुम को और दैत्य दानव-नाशी इन्द्र ही को सोहता है, अर्थात् तुम दो को छोड़ और कोई ऐसा काम नहीं कर सकता।

सञ्जय ने कहा—हे राजन्! इस प्रकार अर्जुन को युद्धभूमि दिखलाते समरविजयी वीरों से युक्त श्रीकृष्ण जी ने अपना पाञ्चजन्य शङ्ख बजाया।

एक सौ उनचास का अध्याय

युधिष्ठिर द्वारा श्रीकृष्ण का यशकीर्तन

सञ्जय ने कहा—हे धृतराष्ट्र ! जब कुन्तीनन्दन अर्जुन ने सिन्धुराज जयद्रथ को मार डाला, तब हर्षित श्रीकृष्ण धर्मराज के निकट गये और उन को प्रणाम कर कहने लगे—हे राजेन्द्र ! यह आपका ही भाग्य है, जो उत्तरोत्तर आपकी वृद्धि हो रही है। आपका शत्रु जयद्रथ मारा गया, अतः मैं आपको बधाई देता हूँ। आपके सौभाग्य से आपका छोटा भाई अर्जुन अपनी प्रतिज्ञा को पूर्ण करने में समर्थ हुआ।

सञ्जय ने कहा—हे राजन् ! जब श्रीकृष्ण ने इस प्रकार कहा—तब शत्रुपुरञ्जय युधिष्ठिर हर्षित हुए तथा रथ से उतर के श्रीकृष्ण और अर्जुन से मिले। उस समय हर्ष के उद्रेक से धर्मराज के नेत्रों में आँसू उमड़ रहे थे, श्वेतकमल जैसे गौरवर्ण अपने मुख को वस्त्र से पोंछ धर्मराज ने श्रीकृष्ण और अर्जुन से कहा—हे कमलनयन ! आपके मुख से इस सुखप्रद संवाद को सुन, मैं अपने हर्ष का वैसे ही ओर छोर नहीं देखता, जैसे समुद्र का ओर छोर उस मनुष्य को नहीं देख पड़ता, जो उसके पार जाना चाहता है। हे कृष्ण ! निस्सन्देह अर्जुन का यह आश्चर्यकर कार्य है। यह सौभाग्य की बात है कि, मैं तुम दोनों महारथियों को युद्ध भार से रहित देख रहा हूँ। सौभाग्य ही से नराधम पापी जयद्रथ मारा गया है। हे कृष्ण ! आपसे सुरक्षित अर्जुन ने पापी जयद्रथ को मार मेरा हर्ष बढ़ाया है। यह कार्य भी बहुत ही अच्छा हुआ है। मुझे तो आप ही का सहारा है। अतः इस कार्य के पूर्ण होने पर मैं विस्मित नहीं होता। हे मधुसूदन ! जब त्रैलोक्यगुरु आप हम लोगों के रक्षक हैं, तब हम अपने शत्रुओं को निश्चय ही परास्त करेंगे। आप तो सदा सर्वदा हमारे प्रिय और हितसाधन में संलग्न रहते हैं। हे इन्द्रानुज ! असुरों को नष्ट करते समय, जिस प्रकार, देवताओं ने इन्द्र का सहारा लिया था और अस्त्रों से काम लिया था, वैसे ही हमने

आपका पल्ला पकड़ा है और समर में हथियार उठाया है। हे जनार्दन! अर्जुन ने वह काम किया है, जिसे देवता भी नहीं कर सकते थे। यह सब आपके बुद्धिबल का ही प्रसाद है। हे कृष्ण! लड़कपन ही से आपके अमानुषिक एवं दिव्य कर्मों को सुन, मैं जान गया था कि, हम लोग अपने शत्रुओं को मार कर, पृथिवी को अपने वश में कर लेंगे। हे शत्रुनाशन! आप ही की कृपा से इन्द्र ने सहस्रों दैत्यों का संहार कर देवराज की पदवी प्राप्त की है। हे अतीन्द्रिय वीर! यह स्थावर-जङ्गमात्मक जगत् आप ही की कृपा से, अपने अपने धर्ममार्ग पर स्थिर रह कर, जप होमादि कर्म करता है। हे महाभुज! आरम्भ में यह जगत् तिमिराच्छन्न था और यह जल में निमग्न था। अब इसका यह जो रूप देख पड़ता है; सो आप ही के अनुग्रह का प्रतिफल है। हे हृषीकेश! जो लोग सृष्टिकर्त्ता एवं अव्यय रूप आपका दर्शन करते हैं, वे कभी मोह में नहीं पड़ते। आप पुराणमूर्ति, देवदेव, सनातन और देवगुरु हैं। जो लोग आपके शरण में आते हैं, उन्हें कभी मोह नहीं व्यापता। आप आदि-अन्त-शून्य संसार को उत्पन्न करने वाले हैं और अव्यय हैं। जो आपको भजते हैं, वे दुःखों से छूट जाते हैं। आप पुराणपुरुष, परात्पर और परमात्मा स्वरूप हैं। जो आपकी शरण गहता है, वह सम्पत्तिशाली होता है। चारों वेद आप ही का स्तव करते हैं, वेदों में आप ही का यश गाया गया है। आप महात्मा हैं। मैं आपके शरणागत हो, अनुपम ऐश्वर्य भोगता हूँ। आप परमेश हैं, आप ही परेश हैं। आप ही पृथिवीश्वर हैं। आप ही नरेश्वर और आप ही सर्वेश्वर हैं। आप ही ईश हैं और आप ही ईश्वर के भी ईश्वर हैं। आप पुरुषोत्तम हैं। अतः मैं आपको प्रणाम करता हूँ। हे माधव! आप ईश हैं, ईश्वर हैं, और ईशान हैं। हे प्रभो! आपका मङ्गल हो। आप सब के उत्पादक और नाशक हैं। आप सर्वात्मन् हैं। आप विशालनयन हैं। आप अर्जुन के मित्र हैं। आप अर्जुन के हितैषी एवं रक्षक हैं। मनुष्य आपका शरण गह, सुख पाता है। हे निर्दोष! आपके चरित्रों के ज्ञाता एवं प्राचीन ऋषि मार्कण्डेय मुनि ने पहले

मुझे आपका माहात्म्य और प्रभाव सुनाया था। असित, देवल, महातपस्वी नारद और मेरे पितामह व्यास ने आपको परमात्मा बतलाया है। आप तेज स्वरूप हैं। आप परब्रह्म हैं, आप सत्य हैं। आप महातपोमूर्ति हैं। आप ही श्रेय, आप ही यश और आप ही जगत् के मुख्य कारण हैं। यह स्थावर जङ्गमात्मक जगत् आप ही की रचना है। हे जगत्-स्वामिन् जब प्रलय होने का समय उपस्थित होता है, तब यह समस्त जगत्प्रपञ्च आप में प्रवेश करता है। क्योंकि आप आदि-अन्त-शून्य और विश्व के स्वामी हैं। वेदवेत्ता जन आपको धाता, अजन्मा, अव्यक्त, भूतात्मा, महात्मा, अनन्त और विश्वतोमुख बतलाते हैं। आप ही गुह्यादि के कारण हैं, जगत्पति हैं, नारायण हैं, परमदेव हैं, परमात्मा हैं, ईश्वर हैं, ज्ञान के कारण रूप हरि हैं और विष्णु हैं। आप ही मुमुक्षुओं के परम-आश्रय-रूप हैं। आप परम-पुराण-पुरुष और पुरातन-रूप हैं। देवताओं को भी आपका स्वरूप ज्ञान नहीं हो सकता। हे प्रभो! पृथिवी और स्वर्ग में आपके किये हुए, हो रहे और आगे होने वाले कर्मों की गणना करने वाला कोई भी नहीं है। ऐसे सर्व-गुण-सम्पन्न आपको, हम लोगों ने अपना सम्बन्धी और सखा बनाया है। अतः आप हम लोगों की रक्षा उसी तरह सर्वत्र कीजिये, जिस तरह इन्द्र, देवताओं की रक्षा किया करते हैं।

जब धर्मराज ने इस प्रकार श्रीकृष्ण से कहा—तब धर्मराज के अनुरूप शब्दों में उत्तर देते हुए धर्मराज से श्रीकृष्ण जी बोले—आपके कठोर तप से, धर्माचरण से, साधुता से, एवं सरलता से पापी जयद्रथ मारा गया है। हे नरव्याघ्र! अर्जुन ने आपकी रक्षा में रह कर, हज़ारों योद्धाओं का नाश कर, जयद्रथ को मार डाला। इस संसार में काम करने में, भुजबल में, धैर्य में, फुर्ती में, अगाध बुद्धि में, अर्जुन की टक्कर का पुरुष अन्य कोई नहीं है। हे राजन्! आपके ऐसे भाई इस अर्जुन ने समर में शत्रुओं के सैन्य का नाश कर, जयद्रथ का सिर काट डाला। हे धृतराष्ट्र! इस प्रकार आपस में बातचीत हो चुकने पर, धर्मराज ने अर्जुन को छाती से लगा, उसके मस्तक पर हाथ

फेर उसे शान्त किया। फिर वे अर्जुन से बोले—हे अर्जुन! तूने आज वह काम किया है, जिसे देवताओं सहित इन्द्र भी नहीं कर सकते थे। यह कार्य बड़ा दुरूह था। तू अब संग्राम के भार से मुक्त हुआ। क्योंकि तूने शत्रु का नाश कर, अपनी प्रतिज्ञा पूर्ण की। तूने यह कार्य अपने अनुरूप ही किया है।

इस प्रकार अर्जुन की सराहना कर, धर्मराज ने अर्जुन की पीठ सहलायी। महाराज युधिष्ठिर के वचन सुन, महात्मा श्रीकृष्ण और अर्जुन ने धर्मराज से कहा—हे महाराज! हमने जयद्रथ को नहीं मारा। किन्तु वह पापिष्ठ तो आपके क्रोधाग्नि ही से भस्म हुआ है। यह आपकी कृपा ही है, जिससे हम कौरवसैन्य को अतिक्रम कर, सकुशल लौट आये हैं। हे राजन्! कौरव भी आप ही के क्रोध में भस्म हो मारे गये हैं और आगे भी मारे जावेंगे। हे राजन्! दुष्ट दुर्योधन ने दृष्टिमात्र से भस्म कर देने वाले आपको क्रुद्ध किया है। अतः वह समर में अपने मित्रों और बन्धु बान्धवों सहित मारा जायगा। पूर्वकाल में जिन्हें देवगण भी नहीं हरा सकते थे, वे भीष्म-पितामह आपके क्रोधानल में भस्म हो शरशय्या पर पड़े सो रहे हैं। हे धर्मराज! आप जिन पर क्रुद्ध होते हैं, उनको समर में कदापि विजय प्राप्त नहीं हो सकता—प्रत्युत वे तो मौत के पंजे में फँस जाते हैं। हे राजन्! आप जिनके ऊपर क्रुद्ध होते हैं, उनका राज्य, प्राण, लक्ष्मी, पुत्र तथा नाना प्रकार के सुख तुरन्त नाश को प्राप्त हो जाते हैं। हे परन्तप! राजधर्म में परायण आप जब से कौरवों के ऊपर क्रुद्ध रहते हैं, तभी से, मैं पुत्र, पशु और बान्धवों सहित कौरवों को मरा हुआ समझता हूँ।

इसके बाद महाधनुर्धर, शूर भीम तथा सात्यकि ने हाथ जोड़ कर धर्मराज को प्रणाम किया और पाञ्चालराज के पुत्रों के साथ वे धर्मराज के निकट भूमि पर बैठ गये। अपने सम्मुख भीम एवं सात्यकि को हाथ जोड़े, बैठा देख, धर्मराज प्रसन्न हुए और उन दोनों का अभिनन्दन करते हुए उनसे कहने लगे—दुस्तर कौरव सेना रूपी समुद्र के और दुराधर्ष द्रोणरूपी ग्राह से तुम दोनों को मुक्त देख, मुझे बड़ा हर्ष हो रहा है। यह बहुत अच्छा किया

कि, तुमने महाबली द्रोण और कृतवर्मा को समर में परास्त किया। हे महापुरुषों! तुमने रण में कर्ण को खूब नीचा दिखलाया और शल्य को भगा दिया। तुम दोनों ही रणकुशल हो। तुम दोनों को सकुशल रण से लौटा हुआ देख, मुझे बड़ा हर्ष हो रहा है। तुम दोनों मेरे आज्ञानुवर्ती हो। अतः तुम दोनों को, कौरव सैन्यरूपी महासागर के पार हुआ देख, मैं अत्यन्त प्रसन्न हूँ। तुम दोनों युद्ध से हर्षित होने वाले हो। तुम दोनों मेरे वाक्य की प्रतिमूर्ति हो। अतः तुम दोनों को देख मुझे बड़ा आनन्द प्राप्त होता है। हे राजन्! इस प्रकार धर्मराज ने पुरुषव्याघ्र सात्यकि और भीमसेन से कह, उन्हें अपने हृदय से लगाया। उस समय मारे आनन्द के धर्मराज के नेत्र सजल हो गये।

सञ्जय ने कहा—हे राजन्! इस प्रकार विजयी पाण्डव हर्षित हो, पुनः युद्ध करने का मन ही मन विचार करने लगे।

एक सौ पचास का अध्याय

दुर्योधन का परिताप

सञ्जय ने कहा—हे धृतराष्ट्र! जब समर में जयद्रथ मारा गया, तब आपका सर्वापराधी दुष्ट पुत्र दुर्योधन रोने लगा तथा शत्रुओं का पराजय करने में उसका उत्साहभङ्ग हो गया। वह मन ही मन उदास हुआ और भग्न विषदन्त सर्प की तरह फुँसकारता हुआ बड़ा दुःखी हुआ। अर्जुन, भीम और सात्यकि ने युद्ध में हमारी सेना का बड़ा नाश किया था। यह देख और जान कर, आपका पुत्र बड़ा उदास हुआ। उसका रंग फीका पड़ गया और उसके नेत्रों में आँसू भर आये। उस समय उसने मन ही मन समझा कि, अर्जुन की टक्कर का योद्धा इस धराधाम पर नहीं है। उसने जाना कि, जब अर्जुन क्रुद्ध होता है, तब उसके सामने द्रोण, कर्ण, अश्वत्थामा अथवा कृपाचार्य कोई भी खड़ा नहीं रह सकता। अर्जुन ने मेरे

बड़े बड़े महारथियों को पराजित कर, अन्त में सिन्धुराज जयद्रथ को मार ही डाला और कोई भी उसे न रोक सका। कौरवों की प्रायः समस्त सेना नष्ट हो गयी। साक्षात् इन्द्र भी अब मेरी सेना की रक्षा पाण्डवों से नहीं कर सकते। मैंने जिसके बल पर पाण्डवों से युद्ध छेड़ा था, उस कर्ण को भी अर्जुन ने हरा कर, जयद्रथ को मार डाला। जिसके भरोसे मैंने मेल कराने को आये हुए श्रीकृष्ण का तृणवत् समझा था, उस कर्ण को भी अर्जुन ने समर में हरा दिया। हे राजन्! समस्त दोषों की जड़ आपका पुत्र दुर्योधन मन ही मन बहुत उदास हुआ और मिलने के लिये द्रोण के पास गया। वहां दुर्योधन ने कौरवसेना के बड़े भारी संहार का पाण्डवों की सफलता का वृत्तान्त, और कौरवों की अवनति सम्बन्धी बातें कहनी आरम्भ कीं। उसने कहा—हे आचार्य! आप देखिये मेरे पक्ष के भीष्मादि समर। मूर्धाभिषिक्त राजाओं का नाश हो गया। मेरे पितामह भीष्म का संहार कर, लालची शिखण्डी मन ही मन बड़ा प्रसन्न है और पाञ्चाल राजाओं के साथ सेना के आगे खड़ा है। अर्जुन ने सात अक्षौहिणी सेना का नाश कर, महापराक्रमी और दुराधर्ष आपके शिष्य जयद्रथ को मार डाला है। इसके अतिरिक्त हमारी जीत चाहने वाले, हमारे उपकारी नातेदार भी युद्ध में मारे जा कर यमालय जा पहुंचे। मुझे अब यह चिन्ता है कि, जिन लोगों ने मेरे पीछे अपने प्राण त्यागे हैं, उनके ऋण से मैं क्यों कर उऋण होऊँ। जो पृथिवी-पति राजा मेरे लिये पृथिवी को चाहते थे, वे राजे आज पृथिवी के ऐश्वर्य को त्याग, भूमि पर पड़े सो रहे हैं। मैं सचमुच बड़ा नीच पुरुष हूँ। इस प्रकार अपने जनों का संहार करवा—मैं यदि हजारों अश्वमेध यज्ञ भी करूँ, तो भी मैं अपने आत्मा को पवित्र नहीं कर सकता। मेरे विजय की अभिलाषा रखने वाले मेरे पक्ष के बहुत से राजा लोग, समर में अपना पराक्रम दिखा, यमालय को चले गये हैं। सचमुच मैं बड़ा आचारभ्रष्ट हूँ। मैंने अपने सगे सम्बन्धियों के साथ वैर किया है। हरे हरे! राजसभा में पृथिवी क्यों न फटी, जिससे मैं उसमें समा जाता। राजाओं के बीच रुधिर से लथपथ, रक्त

से मारे जाने के कारण शरशय्याशायी भीष्म पितामह को मैं न बचा सका। अब परलोकवासी दुराधर्ष भीष्म पितामह, मुझ अनार्य एवं मित्रद्रोही से स्वर्ग में मिलेंगे, तब वे मुझसे क्या कहेंगे? सात्यकि के हाथ से मारे गये जलसन्ध को तो देखिये। इस शूर ने अपने प्राणों की कुछ भी परवाह न कर, मेरे पीछे शत्रु से युद्ध किया था। काम्बोजराज, राजा अलम्बुष एवं अन्य अनेक अपने स्नेही राजाओं को मरा हुआ देख, मैं विचारता हूँ कि, मेरे जीवित रहने से अब लाभ ही क्या है। क्योंकि मेरे लिये लड़ने वाले वे वीर, जो युद्ध में कभी पीछे पग नहीं रखते थे, मेरे शत्रुओं को परास्त करने का प्रयत्न करते हुए मारे गये हैं। अतः मैं, अपने उन स्नेहियों को यमुना जल से तृप्त कर, उनके ऋण से उऋण होना चाहता हूँ।

हे समस्त शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ आचार्य द्रोण! मैं आपके सामने बावड़ी कूप तथा अपने पराक्रम एवं पुत्रों की शपथ खा कर प्रण करता हूँ कि, मैं समरभूमि में समस्त पाञ्चालों और पाण्डवों को मार कर ही सन्तुष्ट होऊँगा। यदि ऐसा न हुआ तो मेरे लिये जिन वीरों ने लड़ते हुए अर्जुन के हाथ से अपने प्राण गँवाये हैं, उन्हीं के पास मैं भी जाऊँगा। हे महाबाहो! मेरे जो सहायक हैं, अब वे भी रक्षा के अभाव में मेरे साथ खड़ा होना पसंद नहीं करते। वे अब पाण्डवों के पक्षपाती और मेरे विपक्षी बनते चले जाते हैं। औरों की बात जाने दीजिये, आप स्वयं भी अपने शिष्य अर्जुन की उपेक्षा किया करते हैं। सत्यप्रतिज्ञ हो कर भी, आपने ही हम लोगों को चौपट किया है। यदि ऐसा न होता तो हमारे पक्ष के राजा लोग क्यों मारे जाते। मुझे तो इस समय अपना हितैषी अकेला कर्ण ही देख पड़ता है। जो मूढ़-बुद्धि मित्र को पहचाने बिना ही, उसे अपने हित के काम में नियुक्त कर देता है, उसका कोई भी काम सफल नहीं होता। मैं मुग्ध होने के कारण लुब्ध, पापिष्ठ और कपटी हूँ और धनाकाँक्षी हूँ। मेरे परम स्नेही मित्रों ने मेरा काम ऐसा ही बतलाया है। जयद्रथ, भूरिश्रवा, अभीषाह, शूरसेन, शिबि और वसाति राजे मेरे लिये लड़ते लड़ते अर्जुन द्वारा रण में मारे

गये। अतः अब मैंने उन्हीं महापुरुषों का अनुसरण करने का ठान ठाना है। उन पुरुषों के न रहने से, मैं अकेला जी कर ही क्या कर सकता हूँ। अतः हे पाण्डवों के आचार्य! आप मुझे जाने की अनुमति दें।

एक सौ इक्यावन का अध्याय

द्रोण का दुर्योधन को समझाना

राजा धृतराष्ट्र ने कहा—जब सिन्धुराज जयद्रथ, अर्जुन के हाथ से और भूरिश्रवा, सात्यकि के हाथ से मारे गये; तब तुम लोगों के मन में क्या विचार उत्पन्न हुए थे? जब दुर्योधन ने इस प्रकार द्रोणाचार्य के सामने दुःख प्रदर्शित किया, तब द्रोण ने दुर्योधन से क्या कहा था?

सञ्जय ने कहा—हे राजन्! जयद्रथ और भूरिश्रवा के मारे जाने पर, आपकी सेना में बड़ा कोलाहल मचा। समस्त सैनिकों की आपके पुत्र दुर्योधन की मन्त्रणा पर श्रद्धा न रह गयी। वे लोग समझ गये कि, दुर्योधन की कुमन्त्रणा ही से सैकड़ों, सहस्रों वीर क्षत्रियों का नाश हुआ है। किन्तु द्रोणाचार्य ने जब आपके पुत्र के वचन सुनें, तब वे दुःखी हुए और कुछ देर तक चुपचाप मन ही मन सोचते रहे। तदुपरान्त उन्होंने दुर्योधन से कहा—दुर्योधन! मैं तो तुमसे सदैव यही कहता चला आता हूँ कि, सव्यसाची अर्जुन को इस संसार में कोई नहीं जीत सकता। तब तू क्यों वचनरूपी बाणों से मुझे विद्ध कर, दुःखी करता है। अर्जुन से रक्षित शिखण्डी ने जब समरक्षेत्र में भीष्मपितामह का वध किया, तब ही से अर्जुन के पराक्रम का पूर्ण प्रमाण हमें प्राप्त हो चुका है। देवदानवों से भी अवध्य भीष्म का मारा जाना देख, मैं तो उसी समय से जाने बैठा हूँ, कि इस भारतीय सेना की रक्षा होनी असम्भव है। हम लोग इस संसार में जिसे सर्वोत्कृष्ट वीर समझे हुए थे उस वीरशिरोमणि भीष्म के मारे जाने पर, अब कौन पुरुष है, जिसके बल पर हम शत्रुओं के सामने, युद्धभूमि में खड़े रह सकें। हे तात! कुरु-

सभा में शकुनि ने जिन पाँसों से जुआ खेला था—वे सब वास्तव में पाँसे न थे। वे ही अब शत्रुओं को पीड़ित करने वाले चोखे बाण बन गये हैं। विदुर ने बार बार मना किया, तब भी तुम लोगों ने न माना। सो अब वे ही सब पाँसे बाण बन और अर्जुन के धनुष से छूट, हम लोगों का संहार कर रहे हैं। दुर्योधन! विदुर ने बारम्बार विलाप कर, तुझे हितकर उपदेश दिये, तिस पर भी तूने उनका कहना न माना। तेरी उस समय की अवमानना के कारण ही आज तेरे समस्त शूरवीरों का नाश हो रहा है। जो मूढ़ जन अपने जनों और अपने सुहृदों के हितकर वचनों की अवहेला कर मनमाना काम किया करता है, उसकी दशा शीघ्र ही शोच्य हो जाती है। दुर्योधन! उत्तम कुल में उत्पन्न, सर्वशुभलक्षणों से युक्त एवं सभा में न लाने योग्य द्रौपदी को भरी सभा में ला और बेईमानी से पाण्डवों को जुए में जीत, उन्हें कृष्ण मृगचर्म पहना, तूने उन्हें वनवास दिया था—तेरे इन्हीं सब अधर्मकृत्यों के प्रतिफल से तुझे यह नारकीय यातना भोगनी पड़ रही है। किन्तु स्मरण रख, यदि इस लोक में तेरी ऐसी दुर्दशा न होती, तो परलोक में तुझे इससे भी बढ़ कर, अपने पापों के लिये दण्ड भोगना पड़ता। तुझे छोड़ और कौन धर्मात्मा पुरुष, धर्मात्मा पाण्डवों के साथ द्वेष कर सकता है। धृतराष्ट्र की सम्मति से तूने और शकुनि ने उस समय भरी सभा में जो पाण्डवों का कोप भड़काया, उसकी जड़ तो दुःशासन ने दृढ़ की, कर्ण ने उसे बढ़ाया और उसकी रक्षा करने में तो तुम सभी सम्मिलित थे। फिर अर्जुन से तुम सब को क्यों नीचा देखना पड़ा? तुम लोगों से सुरक्षित सिन्धुराज जयद्रथ किस तरह मारा गया? दुर्योधन! कर्ण, कृपाचार्य, शल्य, अश्वत्थामा और तेरे जीवित रहते, जयद्रथ क्योंकर मारा गया? तेरी सेना के समस्त राजाओं ने जयद्रथ को बचाने के लिये प्राणपण से युद्ध किया था। फिर भी तुम्हारे बीच में खड़ा जयद्रथ क्योंकर मारा गया? फिर जयद्रथ को अपनी रक्षा की विशेषरूप से मुझसे और तुझ ही से आशा थी; किन्तु तो भी वह अर्जुन के हाथ से न बचाया जा सका।

अतः अब मुझे तो अपने प्राणों की रक्षा का भी कोई उपाय नहीं सूझता। जब तक मैं धृष्टद्युम्न, शिखण्डी और समस्त पाञ्चाल योद्धाओं को न मार डालूँ, तब तक मैं अपने को धृष्टद्युम्नरूपी दलदल में निमग्न ही समझता हूँ। अतः जब मैं जयद्रथ की अर्जुन के हाथ से रक्षा करने में अपने को असमर्थ पा स्वयं ही दुःखी हो रहा हूँ, तब तू क्यों मुझे वचनरूपी बाणों से विद्ध कर रहा है? जब समरभूमि में क्लिष्टकर्मा, सत्यपराक्रमी भीष्म की सुवर्णमयी ध्वजा ही लुप्त हो गयी, तब तू व्यर्थ ही अपनी जीत के लिये आशावान् हो रहा है? समस्त महारथियों के बीच रह कर, जब कौरवश्रेष्ठ भूरिश्रवा और सिन्धुराज जयद्रथ मारा गया, तब तू अब किसे जीवित समझ रहा है? पराक्रमी कृपाचार्य यदि सिन्धुराज के अनुगामी न हो कर, जीवित बचे हैं, तो मैं उन्हें विशेष प्रशंसा का पात्र समझता हूँ। जब से मैंने इन्द्रादि देवताओं से भी अवध्य महाबली एवं अत्यन्त पराक्रमी भीष्म को दुःशासन के सामने ही मरते हुए देखा है, तब से मेरे मन में यह विचार उठ रहा है, कि यह वसुन्धरा पृथिवी अब तेरे अनुकूल नहीं रही। वह देख, पाण्डव और सृञ्जय योद्धा एकत्र हो मेरी ओर दौड़े हुए चले आ रहे हैं। अतः आज मैं तेरी भलाई के लिये समरभूमि में भली भाँति युद्ध करूँगा। मैं आज जब तक समस्त पाञ्चाल योद्धाओं को मार न डालूँगा; तब तक अपने शरीर से कवच न उतारूँगा। तू मेरे पुत्र अश्वत्थामा से कह देना कि, वह जीते जी सोमकवंशी तथा पाञ्चाल योद्धाओं को जीता न छोड़े। उससे यह भी कह देना कि, तेरे पिता ने तुझे जो आज्ञा दी है, उसका तू पालन कर। दम, दया, सत्य तथा सरलता को मत त्यागना। धर्म, अर्थ और काम में निपुण रहना। ऐसा बर्त्ताव करना जिससे अर्थ में और धर्म में बाधा न पड़े। धर्म को मुख्य मान कर, कार्य करना। तू दृष्टि से तथा मन से ब्राह्मणों को सन्तुष्ट रखना। यथाशक्ति उनका सत्कार करना और ऐसा कोई काम मत करना जो उनको बुरा लगे। क्योंकि ब्राह्मण अग्निशिखा तुल्य होते हैं।

(इसके बाद द्रोण ने पुनः दुर्योधन से कहा--) दुर्योधन ! तूने मुझे अपने वाग्बाणों से पीड़ित किया है, अतः मैं अब लड़ने के लिये शत्रुसैन्य में घुसता हूँ। यदि तुझमें शक्ति हो तो तू इस सेना की रक्षा करना। क्योंकि कौरवपक्षीय तथा सञ्जय राजा लोग क्रोध में भरे हुए हैं, अतः आज वे रात में भी लड़ेंगे। तुझे उनसे सावधान रहना चाहिये। इस प्रकार दुर्योधन को समझा, आचार्य द्रोण, पाण्डवों और सञ्जयों से लड़ने के लिये चल दिये और वे उनका तेज वैसे ही हरने लगे, जैसे सूर्य, नक्षत्रों का तेज हर लेता है।

एक सौ बावन का अध्याय

दुर्योधन का आक्रमण

सञ्जय ने कहा--हे राजन् ! तदनन्तर आपके पुत्र दुर्योधन ने द्रोण के समीप इस प्रकार अपमानित हो, क्रोध में भर लड़ने के लिये पक्का विचार किया और उसी समय कर्ण को अपने निकट देख, उससे कहा--कर्ण ! देखो, श्रीकृष्ण की सहायता से अर्जुन ने द्रोणाचार्य के बनाये और देवताओं से भी अभेद्य सैन्यव्यूह को अनायास तोड़ डाला और द्रोणाचार्य तुम तथा अन्य मुख्य योद्धाओं के युद्ध करने पर भी, जयद्रथ को अर्जुन ने मार डाला। देखो, जैसे सिंह छोटे पशुओं को मार डाले, वैसे ही अकेले अर्जुन ने युद्ध सम्बन्धी समस्त कलाओं में निपुण जयद्रथ को मार डाला। कर्ण ! समरभूमि में, मैं स्वयं लड़ रहा था। तिस पर भी अर्जुन ने मेरे बहुत से सैनिकों को मार डाला। अब मेरी सेना में बहुत ही थोड़े लोग बचे हैं। किन्तु यदि द्रोणाचार्य, चित्त को सावधान कर युद्ध करते तो अर्जुन कदापि इस दुर्भेद्य व्यूह को नहीं भेद सकता था। केवल द्रोण ही की उपेक्षा से इन्द्र समान पराक्रमी बड़े बड़े राजा लोग, अर्जुन के हाथ से मारे जा कर, रणभूमि में पड़े शयन कर रहे हैं। यह द्रोण की उपेक्षा ही

का फल है कि, जयद्रथ को अर्जुन मार सका और उसने अपनी प्रतिज्ञा पूर्ण कर दिखलायी। यदि द्रोण चाहते तो अर्जुन कभी भी इस सैन्यव्यूह के भीतर नहीं घुस सकता था। किन्तु द्रोण का अर्जुन पर स्नेह है—इसीसे उन्होंने बिना युद्ध ही के उसे व्यूह में घुस जाने दिया। देखो, मेरे दुर्भाग्य ही से द्रोण ने जयद्रथ को अभयप्रदान करके भी अर्जुन को व्यूह के भीतर घुस जाने दिया। यदि जयद्रथ को वे पहले ही घर जाने की अनुमति दे देते, तो मेरे योद्धा और जयद्रथ क्यों मारे जाते। हा! जब सिन्धुराज जयद्रथ अपने प्राण बचाने को घर जाना चाहता था, तब द्रोण से अभयप्रदान प्राप्त कर, मैंने अवश्य यह मूर्खता की थी कि, मैंने जयद्रथ को घर नहीं जाने दिया था। हा! मैं बड़ा निष्ठुर और दुष्ट पुरुष हूँ। तभी तो मेरी आँखों के सामने मेरे चित्रसेन आदि सहोदर भ्राता, भीम के हाथ से मारे गये।

दुर्योधन के इन आक्षेपपूर्ण वाक्यों को सुन, कर्ण कहने लगा—राजन्! आचार्य द्रोण निश्चय ही अपने बल, उत्साह और शक्ति के अनुरूप ही युद्ध कर रहे हैं। अतः आप उनकी निन्दा न करें। यद्यपि श्वेतवाहन अर्जुन ने उन्हें अतिक्रम कर, व्यूह के भीतर प्रवेश किया है, तथापि इसमें द्रोणाचार्य का रत्ती भर भी दोष नहीं है। क्योंकि अर्जुन अभी युवा होने के कारण बड़ा बलवान है, युद्ध में बड़ा निपुण है और बड़ी फुर्ती के साथ बाण छोड़ता है। फिर जिसके रथ को श्रीकृष्ण, सारथि बन हाँकते हैं, वह बलवान अर्जुन, उस कपिध्वज रथ पर सवार हो, यदि दिव्य अस्त्रों के सहारे और अभेद्य कवच धारण कर, पैने बाणों की वृष्टि कर के द्रोण को अतिक्रम कर, सैन्यव्यूह में घुस जाय, तो यह कोई आक्षेप की बात नहीं है। क्योंकि आचार्य द्रोण वृद्ध हैं। फुर्ती के साथ घूम फिर नहीं सकते और न अङ्गशैथिल्य के कारण फुर्ती के साथ बाण चला सकते हैं। इसीसे यदि वे अर्जुन का सामना न कर सके हों, तो आश्चर्य नहीं। इसमें द्रोणाचार्य का कुछ भी दोष नहीं है। फिर आचार्य द्रोण, पाण्डवों को युद्ध में अजेय

समझते हैं। इसीसे अर्जुन ने उन्हें अतिक्रम कर, तुम्हारे सैन्यव्यूह में प्रवेश किया। मुझे तो अब निश्चय सा हो गया है कि, दैव जिसके अनुकूल होता है—उसका कोई भी पुरुष कुछ भी बिगाड़ नहीं कर सकता। क्योंकि हम लोगों ने युद्ध करने में यद्यपि कोई बात उठा नहीं रखी, तथापि जयद्रथ का मारा जाना, दैव की उत्कृष्टता ही का तो प्रतिपादक है। और देखिये, सनर में हम लोग तुम्हारे साथ रह कर सदा पराक्रम प्रदर्शित कर तुम्हारे विजय के लिये यत्न किया करते हैं; तिस पर भी दैव हम लोगों के पुरुषार्थ को व्यर्थ कर, हमारे समस्त उपायों को व्यर्थ कर दिया करता है। राजन्! भाग्यहीन पुरुष भले ही यत्नपूर्वक कोई कार्य करे, किन्तु उसका सब किया धरा व्यर्थ ही होता है। यह सब होने पर भी लोगों को निशङ्क हो, अपने कर्त्तव्य का पालन करना चाहिये। कर्त्तव्य पराङ्मुख होना कभी उचित नहीं। कार्य का होना न होना दैवाधीन है। देखिये न! हमने पाण्डुनन्दन भीम को विष पिलाया, पाण्डवों को भस्म करने के लिये जतुगृह बनवाया, जुए में चाल चल उन्हें हराया और फिर विविध प्रकार के उन्हें कष्ट दिये। फिर राजनैतिक चाल चल उन्हें वनवास दिया। ये सब किया, किन्तु दैव के प्रतिकूल होने से हम लोगों की एक भी चाल पूरी न उतरी। अस्तु अब तुम सावधान हो प्राणपण से युद्ध करो। मुझे विश्वास है कि, बलवान सैनिकों के दैव अनुकूल होगा। क्योंकि यह नहीं कहा जा सकता कि, पाण्डवों ने आज तक समझबूझ कर सब सत्यकर्म ही किये हैं और तुमने बुद्धिहीनता-वश केवल असत् कर्मों का अनुष्ठान ही किया है। तिस पर भी उनके सब काम सद्रूप में और तुम्हारे समस्त कार्य असद्रूप में परिणत हुए हैं—इसमें दैव का प्राबल्य नहीं तो और है क्या? दैव अथवा भाग्य उस समय भी नहीं सोता, जब समस्त प्राणी सोते हैं। जिस समय यह युद्ध आरम्भ हुआ था, उस समय आप ही के पक्ष में अगणित योद्धा थे और आपकी सेना भी बहुत बड़ी थी। पाण्डवों की सेना आपकी सेना के सामने बहुत कम थी। किन्तु क्या यह आश्चर्य की बात नहीं है कि, उनकी सेना कम होने पर

भी आपके ही असंख्य योद्धा मारे जाते हैं। अतः हम लोगों का बल और पुरुषार्थ का नष्ट होना—दैव की प्रतिकूलता ही का द्योतक है।

सञ्जय ने कहा—हे धृतराष्ट्र! कर्ण और दुर्योधन में इस प्रकार बात चीत हो रही थी कि, इतने ही में पाण्डवों की सेना समरभूमि में दिखलायी पड़ी। तदनन्तर आपके और पाण्डवों की ओर के रथी रथी से, गजारोही गजारोही से और पैदल सिपाही पैदल सिपाही से अपना अपना जोड़ बाँध युद्ध करने लगे। राजन्! आपकी कुनीति ही इस घोर संहार की जड़ है।

जयद्रथ वध पर्व समाप्त

घटोत्कच वध

एक सौ तिरपन का अध्याय

दुर्योधन की हार

सञ्जय ने कहा—हे राजन्! आगे बढ़ी हुई आपकी गजसेना, पाण्डवों की सेना को रेद रेद कर युद्ध करने लगी। पाञ्चाल राजाओं तथा कौरव पक्ष के राजाओं ने चिरकाल यमलोक को आबाद करने के सङ्कल्प से युद्ध करना आरम्भ किया। योद्धा लोग आपस में भिड़ गये और बाण, तोमर और शक्तियों से एक दूसरे को घायल कर वध करने लगे। रथी से रथी भिड़ जाते थे और एक दूसरे को घायल कर, रक्त की नदी बहा देते थे। इस प्रकार वह भीषण संग्राम हो रहा था।

हे राजन्! मतवाले हाथी क्रुद्ध हो आपस में दाँतों की टक्करें मार लड़ रहे थे। उस तुमुल संग्राम में यश प्राप्त करने के लिये योद्धा अश्वारोहियों के शरीरों को प्रास, शक्ति, और तोमर मार कर, विदीर्ण करने लगे। हे राजन्! सहस्रों शस्त्रधारी पैदल सिपाही अपना अपना पराक्रम प्रदर्शित कर अपने अपने प्रतिद्वन्द्वियों को पीड़ित करने लगे। उस समय योद्धा लोग अपने अपने कुलों का तथा अपने अपने नामों का बखान करते जाते थे। उनके

नामों और गोत्रों को सुनने से जान पड़ता था कि, पाञ्चालों और कौरवों में युद्ध हो रहा है। योद्धा लोग आपस में एक दूसरे पर बाणों, शक्तियों और तोमरों के प्रहार कर अपने प्रतिद्वन्द्वियों को यमालय भेज रहे थे और निःशङ्क हो रणभूमि में घूम रहे थे। उनके छोड़े अगणित बाणों से समस्त दिशाएं परिपूर्ण हो गयीं। इससे रणभूमि में रात जैसा अन्धकार छा गया। पाण्डवों के सैनिक जब जी तोड़ कर लड़ रहे थे, तब दुर्योधन ने उनकी सेना को झकझोर डाला। दुर्योधन को उस समय जयद्रथ के मारे जाने से बड़ा क्रोध चढ़ा हुआ था। अतः उसने मन में यह विचारा कि, एक दिन तो मरना ही है, वह शत्रु सैन्य में घुस गया। उसके रथ की गड़गड़ाहट से भूमि काँपने लगी। वह पाण्डवों की सेना पर टूट पड़ा। तब आपके पुत्र के साथ पाण्डवों के सैनिक तुमुल युद्ध करने लगे। इस समय दोनों पक्षों की सेनाओं का नाश हो रहा था। मध्यान्ह कालीन सूर्य की तरह, बाणों की ज्वाला से सैनिकों को सन्तप्त करते हुए दुर्योधन को, पाण्डवों के सैनिक न देख सके। वे जय की आशा त्याग भागने को उद्यत हुए। तब आपका धनुर्धर पुत्र महाबली दुर्योधन सुवर्णपुंख और पैने फल वाले बाणों से पाञ्चालों को विद्ध करने लगा। इससे पाञ्चाल योद्धा भी भयभीत हो भाग खड़े हुए। दुर्योधन के बाणप्रहार से पाण्डवों के योद्धा मर मर कर धड़ाम धड़ाम भूमि पर गिरने लगे। इस युद्ध में आपके पुत्र ने जैसी वीरता दिखलायी वैसी वीरता आपके किसी योद्धा ने नहीं दिखलायी थी। जिस प्रकार कमलपुष्पों से सुशोभित तालाब को हाथी मथ डालता है और पवन तथा सूर्य के ताप से जिस प्रकार तालाब सूख कर शोभाविहीन हो जाता है, उसी प्रकार आपके पुत्र के तेज से पाण्डवों की सेना हतप्रभ हो गयी। हे राजन्! आपके पुत्र को पाण्डवों की सेना का नाश करते हुए देख पाञ्चाल राजों ने भीम को आगे कर उस पर आक्रमण किया। इस युद्ध में आपके पुत्र ने भीम के दस, माद्रीनन्दनों के तीन तीन, विराट एवं द्रुपद के छः छः, शिखण्डी के सौ, धृष्टद्युम्न के सत्तर, धर्मपुत्र के सात तथा केकय एवं

चेदि देशीय राजाओं के बहुत बाण मारे, दुर्योधन ने पाँच बाण मार सात्यकि को घायल किया। फिर द्रुपदनन्दनों के तीन तीन बाण मारे। अन्त में घटोत्कच को बाणों से विद्ध कर, दुर्योधन ने सिंहनाद किया। क्रुद्ध दुर्योधन ने बाणों के प्रहार से सहस्रों गजारोही और अश्वारोही मार डाले।

जब दुर्योधन इस प्रकार पाण्डवसैन्य का संहार करने लगा, तब पाण्डवों की सेना के पैर उखड़ गये। वह भाग खड़ी हुई। इस युद्ध में सूर्य की तरह तपते हुए आपके पुत्र की ओर, पाण्डवों के योद्धा वैसे ही आँख उठा कर देख भी नहीं सकते थे; जैसे कोई सूर्य की ओर नहीं देख सकता। अपनी सेना की दुर्दशा देख, धर्मराज युधिष्ठिर कुपित हुए और आपके पुत्र को मारने के लिये वे उसकी ओर बढ़े। दुर्योधन और युधिष्ठिर में अपने अपने स्वार्थ की सिद्धि के लिये घोर युद्ध आरम्भ हुआ। दुर्योधन ने नतपर्व बाणों से धर्मराज का धनुष काट डाला। फिर उनके रथ की ध्वजा को काट तीन बाण उनके सारथि इन्द्रसेन के मस्तक में और एक बाण उसके शरीर में मारा। फिर चार बाण मार उनके रथ के चारों घोड़ों को घायल कर दिया। इससे धर्मराज के क्रोध की सीमा न रही। उन्होंने तुरन्त दूसरा धनुष उठा लिया और बड़े वेग से आगे बढ़ते हुए दुर्योधन को रोका। फिर दो भल्ल बाणों से दुर्योधन का धनुष काट, दस बाण उसके मारे। धर्मराज के छोड़े बाण दुर्योधन के मर्मस्थलों को विदीर्ण कर भूमि में घुस गये। पूर्वकाल में जैसे वृत्रासुर का वध करने के लिये देवताओं ने इन्द्र को घेर लिया था, वैसे ही उनके पक्ष के समस्त योद्धा युधिष्ठिर को घेर कर खड़े हो गये। अभी तुझे मारता हूँ, कह कर धर्मराज युधिष्ठिर ने सूर्यकिरण की तरह चमचमाता, महाउग्र और कभी ख़ाली न जाने वाला एक बाण धनुष पर रख और रोदे को कान तक खींच आपके पुत्र दुर्योधन के मारा। उस बाण के प्रहार से दुर्योधन घायल हो गया और अचेत हो, रथ के ऊपर लुढ़क पड़ा। उस समय पाञ्चाल राजाओं ने हर्ष प्रगट करते हुए महाकोलाहल मचाया, उस समय चारों ओर यह शब्द सुन पड़ा कि, राजा दुर्योधन मारा गया। उस कोलाहल

को सुन द्रोणाचार्य वहाँ बड़ी फुर्ती से आ पहुँचे। इतने में दुर्योधन सचेत हो गया और उसने द्रोण को अपनी सहायता के लिये आता हुआ देख, झट एक दूसरा धनुष उठा लिया। फिर वह धर्मराज को खड़ा रह, खड़ा रह, कह कर ललकारता हुआ, उनके ऊपर झपटा। इतने में विजयाभिलाषी पाञ्चाल राजागण दौड़ कर उसके निकट आ पहुँचे। विशाल पर्वत पर उदय हो सम्मुखीन मेघों को नष्ट करने के लिये जैसे सूर्य आगे बढ़ते हैं, वैसे ही कुरुश्रेष्ठ राजा दुर्योधन की रक्षा करने के लिये द्रोणाचार्य पाण्डवों के सामने बढ़े। हे राजन्! युद्धाभिलाषी हो एक स्थान पर एकत्रित हुए आपकी ओर के योद्धाओं और शत्रु पक्षीय योद्धाओं में बड़ी विकट लड़ाई आरम्भ हुई। इस युद्ध में बहुत से सैनिक मारे गये।

[चौदहवें दिन की रात्रि]

एक सौ चौवन का अध्याय

पाण्डवों तथा सृञ्जयों का आक्रमण

धृतराष्ट्र ने पूँछा—हे सञ्जय! मेरी आज्ञा की अवहेलना करने वाले मेरे पुत्र दुर्योधन से अनेक कठोर वचन कह, जब क्रुद्ध द्रोणाचार्य हाथ में बड़ा धनुष ले, पाण्डवों की सेना में चारों ओर भ्रमण करने लगे, तब उन्हें पाण्डवों ने कैसे रोका? द्रोण के रथ के वाम एवं दक्षिण पहियों के रक्षक कौन थे? जिस समय द्रोण लड़ रहे थे उस समय कौन कौन वीर उनके पीछे की ओर खड़े हो, उनकी रक्षा करते थे और उनका सामना किसने किया था। मुझे जान पड़ता है जो लोग द्रोण के सामने खड़े हुए होंगे, उन्हें बिना शिशिर के भी थरथरी छूटी होगी और शीत से विकल गौ की तरह वह काँप रहे होंगे। द्रोणाचार्य जी अजेय एवं समस्त शस्त्रधारियों से उत्कृष्ट थे। वे रथमार्गों पर नृत्य करते हुए से घूम रहे थे। उन्होंने कुपित

अग्नि की तरह पाञ्चाल राजाओं की समस्त सेना को भस्म कर डाला था। ऐसे प्रबल पराक्रमी द्रोण समर में किस प्रकार मारे गये?

सञ्जय ने कहा—हे राजन्! सन्ध्या समय जयद्रथ को मार अर्जुन और सात्यकि, धर्मराज युधिष्ठिर से मिल, द्रोण से लड़ने के लिये उनके सामने गये। धर्मराज युधिष्ठिर और भीम भी पृथक् पृथक् सेनाओं को अपने साथ ले, द्रोण से लड़ने के लिये गये। साथ ही ससैन्य, नकुल, सहदेव, धृष्टद्युम्न केकयराज, राजा विराट, मत्स्यराज तथा शाल्वदेशीय राजागण भी द्रोण पर टूट पड़े। राजा द्रुपद ने भी द्रोण पर आक्रमण किया। द्रुपद के पुत्र और घटोत्कच ने भी ससैन्य आक्रमण किया। छः हज़ार प्रभद्रक और पाञ्चाल सैनिकों ने शिखण्डी के आधिपत्य में द्रोण पर चढ़ाई की। पाण्डवों के अन्य महारथी शूरों ने एकत्र हो द्रोण पर धावा बोला। हे राजन्! तुरन्त ही भीरुओं के भय को बढ़ाने वाली, सैनिकों के लिये अमङ्गलदायी, भयावह काल के निकट पहुँचाने वाली, अश्वों गजों एवं सिपाहियों का संहार करने वाली घोर रात्रि आ पहुँची। उस समय मुख से अग्निज्वाला उगलने वाली गीदड़ियों के रोने का शब्द कानों में पड़ा—भयसूचक अत्यन्त दारुण उल्लू भी कौरवसेना में बोलते हुए सुन पड़े। भेरी और मृदङ्ग की ध्वनि से, हाथियों की चिंघार से, घोड़ों की हिनहिनाहट और टापों के शब्द से, बड़ा भारी कोलाहल मचा। सन्ध्याकाल ही से द्रोण के साथ सृञ्जयों की लड़ाई आरम्भ हो गयी थी। रात के समय अन्धकार छा जाने पर—समरभूमि में कुछ भी नहीं देख पड़ता था। सैनिकों और उनके वाहनों की दौड़-धूप से धूल उड़ रही थी। उस धूल में सैनिकों और उनके वाहनों का रक्त मिल गया था। उस समय ग्लानि के कारण वह धूल मुझसे देखी न गयी। जैसे पर्वत के ऊपर उगे बाँस के वन में रात के समय आग लगने पर, चटाचट का शब्द सुन पड़ता है; वैसे ही चमचमाते शस्त्रों के प्रहार का खटाखट शब्द मात्र सुन पड़ता था। मृदङ्गों, नगाड़ों, निर्हाद, झाँझ, पटह की ध्वनि से तथा घोड़ों की हिनहिनाहट से एवं हाथियों की फुँसकारों से समरक्षेत्र

परिपूर्ण था। अँधेरे के कारण अपना विराना नहीं जान पड़ता था। अतः समस्त सैनिक विक्षिप्त से हो रहे थे। इतना रुधिर बहा कि, धूल तर हो गयी और धूल का उड़ना बंद हो गया। सुवर्ण के चमचमाते कवचों और रत्न-जटित आभूषणों से प्रकाश तिरोहित होने लगा। हे राजन्! उस रात को मणिजटित आभूषण धारण किये हुए सैनिकों से पूर्ण सेनाएँ—नक्षत्र युक्त आकाश की तरह सुशोभित जान पड़ती थीं। शक्ति आदि अस्त्र एवं ध्वजा-पताका से युक्त वह सेना काक, गिद्ध, कङ्क तथा गीदड़ों की भयानक बोलियों और हाथियों, घोड़ों और सैनिकों के चीत्कार से और अस्त्रों की खनखनाहट से बड़ी भयङ्कर जान पड़ती थी। उस समय रोमाञ्चकारी ऐसा भयानक कोलाहल मचा कि, मानों समस्त दिशाओं को स्तम्भित कर, इन्द्र के वज्र का शब्द हो रहा हो। रात के समय वह भारती सेना—कवच, कुण्डल, अन्य आभूषण एवं विविध प्रकार के अस्त्रों शस्त्रों मे प्रकाशमान हो, बड़ी शोभामयी देख पड़ती थी। उस सेना में स्वर्ण के भूषणों से भूषित हाथियों के दल वैसे ही जान पड़ते थे, जैसे बिजली से युक्त बादल। शक्ति, ऋष्टि, गदा, बाण, मूसल, फरसे और पट्टिशों के चलने से, ऐसा जान पड़ता था, मानों अग्निवृष्टि हो रही हो।

तदनन्तर उस सैन्यदल में द्रोणाचार्य और पाण्डव रूपी मेघ देख पड़े। दुर्योधन उन मेघों को आगे बढ़ाने वाला पवनस्थानीय था। रथ, हाथी और घोड़े ही उस समय बकपंक्ति जैसे जान पड़ते थे। मारूबाजों की ध्वनि मानों मेघगर्जन थी। धनुष और ध्वजाएँ बिजली की तरह जान पड़ते थे। खड्ग, शक्ति, गदा, आदि अस्त्र, उसमें वज्र जैसे जान पड़ते थे, अविराम शस्त्रवृष्टि, जलवृष्टि जैसी जान पड़ती थी। युद्धाभिलाषी शूरवीर ने उस दुस्तर एवं भयानक भारती सैन्य में प्रवेश किया। शूरों के हर्ष और डरपोकों के भय को बढ़ाने वाली विकट कोलाहल युक्त उस भयङ्कर रात में दोनों ओर की सेनाओं में युद्ध हुआ। पाण्डवों और सृञ्जय योद्धाओं ने मिल कर, द्रोणाचार्य पर आक्रमण किया। किन्तु जो जो वीर आचार्य द्रोण

के सामने गये, उन सब को द्रोण ने विमुख किया। कितने ही शूरों को निर्जीव कर द्रोण ने भूमि पर सुला दिया। अपने पैने बाणों से द्रोण ने उस रात्रि में एक सहस्र गज, दस सहस्र रथी, पचास हज़ार पैदल योद्धाओं और एक अर्बुद घोड़ों को मार कर भूमि पर लिटा दिया।

एक सौ पचपन का अध्याय

द्रोण का पाण्डवसेना में प्रवेश

धृतराष्ट्र ने कहा – हे सञ्जय! जब समरभूमि में महापराक्रमी एवं अत्यन्त बली धनुर्धर द्रोण ने क्रोध में भर सृञ्जयों की सेना में प्रवेश किया, तब तुम्हारे मन में क्या विचार उठा था? मेरी आज्ञा की अवहेलना करने वाले मेरे पुत्र दुर्योधन को उसकी भूल बतला, जब आचार्य द्रोण पाण्डवों की सेना में घुस गये, तब अर्जुन ने क्या किया? भूरिश्रवा और जयद्रथ के मारे जाने के बाद, जब अजेय द्रोणाचार्य पाञ्चालों की सेना में घुसे, तब दुर्योधन ने समयोचित क्या काम किया था? हे सञ्जय! दुर्योधन की अभिलाषा को पूर्ण करने के लिये जब आचार्य द्रोण ने शत्रुसैन्य में प्रवेश किया, तब मेरी ओर के कौन कौन से योद्धा उनके अनुगामी हुए थे? युद्ध के समय उनके पृष्ठरक्षक कौन थे? समरभूमि में पाण्डव पक्षीय किन किन योद्धाओं ने उनका सामना किया था। मैं तो समझता हूँ कि, जैसे शिशिर ऋतु में शीत से थरथराती गौओं की तरह, द्रोणाचार्य के बाणों से पीड़ित हो, पाण्डव भी काँपने लगे होंगे। शत्रु-विध्वंस-कारी, पुरुषशार्दूल, महाधनुर्धर द्रोणाचार्य, पाञ्चाल सेना में घुस, कैसे मारे गये। उस रात्रि में जब दोनों ओर की सेनाएँ आ डटीं और वीर लोग अपने अपने जोड़ के लोगों को ढूँढ भिड़ गये, तब तुम लोगों के मन में कैसे कैसे विचार उत्पन्न हुए थे? तुम्हारा कहना है कि, उस रात्रि के युद्ध में मेरी ओर के बहुत से योद्धा मारे गये; कितने ही समर त्याग भाग गये, कितने ही पराजित हुए और

रथियों की सेना के बीच कितने ही रथभ्रष्ट हो गये थे। उस महानिबिड़ अन्धकार में जब तुम लोग पाण्डवों की सेना के सामने से भाग गये और मुग्ध हो गये, बतलाओ तो, तब तुम लोग अपनी बुद्धि को कैसे स्थिर कर सके? तुमने कहा है कि, पाण्डवों के पक्ष के सैनिक विजयी, हर्षित और उत्साहपूर्ण थे और मेरी ओर के सैनिक भयभीत और हतोत्साह हो रहे थे। सो जो हो—अब तुम मुझे उस रात्रि वाले युद्ध का यथार्थ वर्णन सुनाओ।

सञ्जय ने कहा—जब घोर युद्ध होने लगा, तब पाण्डव लोग सोमकों को साथ ले, द्रोणाचार्य की ओर लपके। तब द्रोण ने धृष्टद्युम्न के पुत्रों और केकय देशीय वीरों को मार मार कर, यमालय भेज दिया। जब द्रोणाचार्य ने पाण्डवों की सेना के वीरों का नाश करना आरम्भ किया, तब प्रतापी शिविराज उनके सामने गया। पाण्डवों के पक्ष के उस महारथी योद्धा शिविराज को अपनी ओर आते देख, लोहमय दस बाणों से द्रोण ने उसे विद्ध किया। इस पर शिविराज ने तीस बाण मार द्रोण को घायल कर भल्ल बाण से उनके सारथि को मार डाला। तब द्रोण ने शिविराज के सारथि और घोड़ों का नाश कर, एक बाण से उसका शिरस्त्राण-सहित सिर काट कर भूमि पर गिरा दिया। उधर दुर्योधन ने द्रोण के रथ पर दूसरा सारथि भेज दिया। जब वह रथ हाँकने लगा, तब द्रोणाचार्य ने फिर शत्रुओं पर आक्रमण किया। भीमसेन पहले कलिङ्गराज का वध कर चुका था, अतः कलिङ्गराज का पुत्र अपनी सेना-सहित, भीमसेन की ओर लपका। उसने आते आते पाँच और फिर सात बाण मार भीम को घायल कर डाला। फिर उसने तीन बाण मार भीम के सारथि को घायल कर, एक बाण से भीम के रथ की ध्वजा को विद्ध किया। इस पर भीम क्रोध में भर, अपने रथ से कूद, उसके रथ पर चढ़ गये और उस क्रोधी राजपुत्र को घूँसों की मार से पीड़ित करने लगे। अन्त में घूँसों के प्रहार से उस राजकुमार की हड्डियाँ चूर हो गयीं और वह निर्जीव हो भूमि पर गिर पड़ा।

भीमसेन का यह कर्म कर्ण और उसके भाइयों से सहन न हो सका। वे विषधर सर्प जैसे भयङ्कर बाणों से भीमसेन पर प्रहार करने लगे। भीमसेन उस राजपुत्र का वध कर उसके रथ से उतरा और ध्रुव के समीप गया। उस समय ध्रुव ने भीम पर निरन्तर बाणवृष्टि की; किन्तु एक मूँका मार भीम ने उसे अचेत कर भूमि पर लिटा दिया। महाबली भीमसेन ध्रुवका वध कर के जयरात के रथ पर जा चढ़ा। वहाँ जा और बार बार सिंहनाद कर भीम ने जयरात के बाएँ हाथ से एक ऐसा थप्पड़ मारा कि, वह कर्ण के सामने ही निर्जीव हो, भूमि पर गिर पड़ा। उस समय कर्ण ने एक सुवर्णभूषित शक्ति हाथ में ले भीमसेन पर फेंकी। पराक्रमी पाण्डुनन्दन भीम ने उछल कर उस शक्ति को पकड़ लिया और उसे कर्ण के ऊपर फेंका। उस शक्ति को कर्ण की ओर आते देख, शकुनि ने पैने बाणों से उसे काट डाला। अद्भुत पराक्रम प्रकाशित करने वाले भीमसेन समरभूमि में ऐसे ऐसे अद्भुत कार्य कर, अपने रथ पर जा चढ़े और आपकी सेना पर झपटे। क्रोध में भरे यम-राज की तरह भीम को आगे बढ़ते देख, आपके पुत्र अत्यन्त क्रुद्ध हुए और बाणवृष्टि कर भीम को ढक दिया। इस पर भीम ने बाणप्रहार से दुर्मद के घोड़ों और सारथि को मार डाला। तब वह अपने रथ से कूद पड़ा और दौड़ कर, अपने भाई दुष्कर्ण के रथ पर जा बैठा। फिर वे दोनों भाई भीम पर वैसे ही झपटे, जैसे देवासुर संग्राम में मित्रावरुण, दैत्यसत्तम तारक पर झपटे थे। एक ही रथ पर सवार दुर्मद और दुष्कर्ण बाणप्रहार से भीम को विद्ध करने लगे। महाराज! शत्रुओं के नाश करने वाले पाण्डवपुत्र भीमसेन ने कर्ण, अश्वत्थामा, दुर्योधन, कृपाचार्य, सोमदत्त और बाल्हीक के सामने ही मारे लातों के दुष्कर्ण के रथको चूर कर डाला। फिर भीम ने दुष्कर्ण और दुर्मद को मूँकों से मार मार कर मूर्छित कर दिया। तदनन्तर भीम ने उच्च स्वर से सिंहनाद किया। सैनिक पुरुषों ने भीम के इस भीम कार्य को देख, बड़ा कोलाहल मचाया। राजा लोग आपस में कहने लगे कि, भीम निश्चय ही रुद्र है। रुद्र ही भीमरूप धारण कर, कौरवों की सेना से लड़

रहे हैं। यह कहते हुए राजा लोग अपने अपने गजों और घोड़ों को तेज़ी के साथ हाँक, समरभूमि से भागने लगे। हे राजन्! अधिक क्या कहूँ, उस समय आपकी सेना के पुरुष ऐसे डरे कि, दो सैनिक साथ साथ नहीं जा सके।

हे राजन्! जब आपकी सेना उस रात्रियुद्ध में इस प्रकार छिन्न भिन्न हो गयी; तब हर्षितमना और कमलनयन भीम ने मुख्य मुख्य राजाओं से प्रशंसित हो, ससैन्य धर्मराज के निकट गमन किया। धर्मपुत्र युधिष्ठिर, नकुल, सहदेव, द्रुपद, विराट् और केकय आदि देशों के समस्त नरपति गण भीमसेन का पराक्रम देख, अत्यन्त आनन्दित हुए। उन समस्त राजाओं ने भीम का वैसा ही सम्मान किया, जैसा सम्मान समस्त देवताओं ने अन्धकासुर का वध करने वाले शिवजी का किया था। वरुणपुत्रों जैसे पराक्रमी, आपके पुत्रों ने पाण्डवों को हर्षित देख और अत्यन्त क्रुद्ध हो हाथी घोड़े रथ तथा पैदल चलने वाले योद्धाओं की चतुरङ्गिणी सेना सहित द्रोण को आगे कर, चारों ओर से भीम को घेर लिया। उस महाअन्धकारमयी घोर निशा में, काक, गिद्ध और भेड़िये आदि मांसभक्षी पशु-पक्षियों के आनन्द को बढ़ाने वाले, महाबली क्षत्रियों का आपस में बड़ा भयङ्कर एवं अद्भुत युद्ध आरम्भ हुआ।

एक सौ छप्पन का अध्याय

सात्यकि और घटोत्कच की वीरता

सञ्जय ने कहा—हे धृतराष्ट्र! सात्यकि ने, अनशनव्रत धारण कर बैठे हुए सोमदत्त के पुत्र भूरिश्रवा को मार डाला था। अतः उसने ज्यों ही सात्यकि को देखा, त्यों ही उसने क्रोध में भर सात्यकि से कहा—हे सात्वत! पूर्वकालीन महात्माओं और देवताओं द्वारा कथित क्षात्रधर्म के विरुद्ध तूने डँकुओं जैसा कार्य क्यों किया? क्षत्रधर्मानुसार युद्धपराङ्मुख, दीन बने

हुए और शस्त्रत्यागे हुए पुरुष को कभी नहीं मारता। वृष्णिवंशियों में युद्ध के लिये तू और दूसरा प्रद्युम्न दो ही प्रख्यात हैं। जब अर्जुन ने मेरे पुत्र की दक्षिण भुजा काट डाली; तब वह युद्ध करना त्याग अनशनव्रत धारण किये बैठा था। तब भी तुझ जैसे जगत्प्रसिद्ध योद्धा ने क्रूर और नरक में डालने वाला कर्म क्यों किया? अरे दुराचारी! अब तू अपने उस कर्म का फल चख। रे मूढ़! आज मैं समर में अपना पराक्रम दिखला, तेरा मस्तक काटूँगा। सात्यकि! मैं अपने दोनों प्रियपुत्रों तथा अपने सुकृत की शपथ खा कर कहता हूँ कि, यदि आज की रात में शूरता की दम भरने वाले तुझको, तेरे पुत्र को और तेरे भाइयों को मैं जान से न मार डालूँ तो, मैं घोर नरक में डाला जाऊँ। किन्तु साथ ही शर्त यह है कि, अर्जुन तेरी सहायता न करे।

इस प्रकार कह और अत्यन्त कुपित हो सोमदत्त ने बड़े ज़ोर से अपना शङ्ख बजाया, और सिंहनाद किया। उसके गर्जन को सुन, कमलनेत्र, सिंह जैसी दंष्ट्राओं वाला दुर्जेय सात्यकि अत्यन्त क्रुद्ध हुआ। उसने सोमदत्त से कहा—अरे राजन्! मैं तेरे क्या, किसी के साथ भी युद्ध करने नहीं डरता। यदि तू अपनी समस्त सेना से रक्षित हो कर भी मुझसे लड़ेगा, तब भी तू मेरा बाल बाँका नहीं कर सकता। भले ही तू युद्ध के सारभूत और दुर्जनों के अभिमत दुर्वाक्य मुझसे कह ले, किन्तु क्षात्रधर्म का पालन करने वाले मुझको तो भयभीत नहीं कर सकता। यदि तू आज मुझसे युद्ध करना चाहता है, तो तू निष्ठुरता धारण कर, मेरे ऊपर तीक्ष्ण बाणवृष्टि कर ले। पीछे मैं भी दारुण बाणवृष्टि तेरे ऊपर करूँगा। क्योंकि तेरा प्रियपुत्र महारथी भूरिश्रवा मेरे हाथ से मारा गया है तथा उसके भाई शल्य और वृषसेन अपने भाई के मारे जाने से खिन्न हो समर में मारे गये हैं। मैं आज भाई और पुत्र सहित तेरा भी वध करूँगा। यदि तू समरभूमि से भागा नहीं, तो मैं समझूँगा कि तू महारथी है और कौरवों में एक श्रेष्ठ राजा है। महाराज युधिष्ठिर में शम, दम, शौच, अहिंसा, लज्जा, धैर्य और क्षमा—सदा रहती हैं। मुरज-चिह्न चिह्नित ध्वजा से सुशोभित युधिष्ठिर के प्रताप के सामने तेरा

तेरा तो पहले ही नष्ट हो चुका। वो आज तू कर्ण तथा शकुनि सहित निश्चय ही मारा जायगा। इस समय मुझे क्रोध चढ़ आया है, अतः मैं अब पुत्रों सहित तुझ पापी का नाश करूँगा। यह प्रतिज्ञा मैं श्रीकृष्ण, अर्जुन तथा अपने इष्टपूर्त की शपथ खा कर कहता हूँ। अब मुझे तुझसे यह और कहना है कि, यदि तू समरभूमि छोड़ भाग गया, तो बच जायगा, नहीं तो निस्सन्देह तुझे अपनी जान खोनी पड़ेगी।

इस प्रकार आपस में कहा सुनी कर, क्रोध में भरे वे दोनों वीर लाल लाल नेत्र कर आपस में एक दूसरे पर बाणों की वर्षा करने लगे, उस समय दुर्योधन एक हज़ार रथ, दस हज़ार हाथी ले सोमदत्त को घेर कर उसकी रक्षा करने लगा। समस्त शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ, महाभुज, वज्र जैसा दृढ़ शरीर वाला युवा आपका साला शकुनि भी क्रोध में भर एवं अपने पुत्र, पौत्र तथा इन्द्र जैसे पराक्रमी अपने भाई को साथ ले, लड़ने को आया। उस बुद्धिमान् के एक लक्ष अश्वारोही सैनिक महाधनुर्धर सोमदत्त को चारों ओर से घेर, उसकी रक्षा कर रहे थे। इस प्रकार बड़े बड़े बलवान् योद्धाओं से सुरक्षित सोमदत्त ने नतपर्व बाण चला सात्यकि को ढक दिया। यह देख, धृष्टद्युम्न बड़ा कुपित हुआ। वह एक विशालवाहिनी अपने साथ ले, सोमदत्त से लड़ने को आया। उस समय आपस में एक दूसरे पर प्रहार करती हुई सेना में वैसा ही गर्जन हो रहा था, जैसा कि तूफ़ान के उठने पर, क्षुब्ध समुद्र में हुआ करता है। सोमदत्त ने नौ बाण मार कर सात्यकि को विद्ध किया। इस पर सात्यकि ने भी दो बाण मार कर—सोमदत्त को घायल किया। सात्यकि के चलाये बाण सोमदत्त के ऐसे ज़ोर से लगे कि, वह अचेत हो रथ के भीतर गद्दी पर गिर पड़ा। सोमदत्त को मूर्छित देख, उसका सारथि उसे रणक्षेत्र से बाहिर ले गया। सोमदत्त को दुःखित और मूर्छित देख, सात्यकि का वध करने को उस पर द्रोणाचार्य ने आक्रमण किया। यह देख सात्यकि की रक्षा करने के लिये युधिष्ठिरादि पाण्डववीर सात्यकि को घेर कर खड़े हो गये। पूर्वकाल में

इन्द्र ने त्रैलोक्य का राज्य पाने के लिये जैसे राजा बलि के साथ युद्ध किया था, वैसे ही पाण्डवों ने आचार्यद्रोण के साथ युद्ध किया। द्रोण ने बाणवृष्टि कर पाण्डवों की सेना को ढक दिया। तदनन्तर द्रोण ने बाणों से युधिष्ठिर को विद्ध किया। उन्होंने सात्यकि के दस, धृष्टद्युम्न के बीस, भीम के नौ, नकुल के पाँच, सहदेव के आठ और शिखण्डी के सौ बाण मारे। तदनन्तर द्रोण ने द्रौपदी के पुत्रों में से प्रत्येक के पाँच पाँच, विराट के आठ, द्रुपद के दस, युधामन्यु के तीन, उत्तमौजा के छः बाण मारे। फिर अन्य योद्धाओं को बहुत से बाणों से विद्ध कर, वे युधिष्ठिर की ओर झपटे। आचार्य द्रोण ने युधिष्ठिर पक्षीय योद्धाओं के ऐसे पैने बाण मारे कि वे, बुरी तरह चिल्लाते हुए भागने लगे। अपनी सेना को इस प्रकार व्याकुल हो पलायन करते देख, अर्जुन क्रुद्ध हुए और द्रोण से लड़ने को उनके सामने गये। अर्जुन को अपनी ओर आते देख, द्रोण ने युधिष्ठिर की सेना को और भी अधिक खदेड़ा। आपके पुत्रों से घिरे द्रोण, पाण्डवों की सेना का नाश वैसे ही कर रहे थे जैसे अग्नि रुई के ढेर का नाश कर देता है। सूर्य के समान दुर्लंघ्य द्रोण की ओर देखने की शक्ति किसी भी विपक्षी में न थी। द्रोण के सामने जो जाता, उसका सिर काट द्रोण के बाण पृथिवी में घुस जाते थे। इस प्रकार पाण्डवों की सेना पर जब मार पड़ी, तब अर्जुन की उपस्थिति ही में पाण्डवों की सेना भयभीत हो भाग खड़ी हुई। यह देख अर्जुन ने श्रीकृष्ण से कहा—कृष्ण! मेरा रथ द्रोण के रथ के निकट ले चलो, यह सुन श्रीकृष्ण ने गोदुग्ध अथवा चाँदी अथवा कुन्द पुष्प अथवा चन्द्रमा की तरह श्वेत वर्ण के घोड़ों से युक्त रथ द्रोण की ओर हाँका। अर्जुन को द्रोण की ओर जाते देख, भीमसेन ने अपने सारथि विशोक को आज्ञा दी कि, हमारा रथ द्रोणाचार्य के रथ की ओर ले चल। भीमसेन के इन वचनों को सुन, सारथि आनन्द में भर गया। उसने अपना रथ अर्जुन के रथ के पीछे डाल दिया। यह देख पाञ्चाल, सृञ्जय, मत्स्य, चेदि, कारुष, केकय तथा कोशल देश के महारथी राजाओं की सेनाएँ भी उन दोनों के पीछे हो लीं।

हे राजन् ! अब तो दोनों ओर से रोमाञ्चकारी भीषण युद्ध होने लगा। अर्जुन ने आपकी सेना के दक्षिण भाग को और भीम ने वाम भाग को घेरा। इन दोनों महारथियों को लड़ते देख, महारथी धृष्टद्युम्न और सात्यकि भी चढ़ आये। पवन के झोंकों से लहराता हुआ समुद्र जैसा गर्जन करता है, वैसा ही शब्द उस समय दोनों ओर की जुटी हुई सेनाओं से निकल रहा था। भूरिश्रवा के मारे जाने का स्मरण आ जाने से अश्वत्थामा को बड़ा क्रोध चढ़ आया। उसने सात्यकि को समरभूमि में लड़ते देख, उसका वध करने का अपने मन में विचार किया। तिस पीछे उसने सात्यकि पर आक्रमण किया। अश्वत्थामा को सात्यकि पर आक्रमण करते देख, भीमसेन का पुत्र घटोत्कच अत्यन्त कुपित हुआ और उसने शत्रु की गति रोक दी। घटोत्कच लोहे के बने आठ पहिये के एक बड़े भारी रथ पर सवार था। उस रथ पर रीछ का चर्म मढ़ा हुआ था। उसकी लंबाई चौड़ाई तीस* नल्व थी। उसमें युद्धोपयोगी अस्त्र, कवचादि सामग्री भरी हुई थी। उस रथ को हाथी या घोड़े नहीं बल्कि हाथियों जैसे विचित्र प्रकार के पिशाच खींच रहे थे। उस रथ की उच्च ध्वजा पर एक गिद्ध आँखें फाड़े, पाँव और पर फड़फड़ाता हुआ चिल्ला रहा था। उस पर जो पताका फहरा रही थी, वह रक्त से रञ्जित थी। उस पर अँतड़ियाँ हारों की जगह पड़ी हुई थीं। घटोत्कच स्वयं मेघ की तरह गर्ज रहा था। इस प्रकार के साज सामान के साथ घटोत्कच ने अश्वत्थामा का सामना किया। घटोत्कच के साथ त्रिशूल, मुद्गर, पहाड़ तथा वृक्षों को लिये भयानक राक्षसों की एक अक्षौहिणी सेना थी। घटोत्कच के हाथ में प्रलयकालीन यम की तरह एक डंडा था। घटोत्कच अब अपने धनुष को टंकोरता हुआ शत्रुसैन्य की ओर बढ़ा। उसे अपनी ओर आते देख कौरवपक्ष के राजागण घबड़ा उठे। घटोत्कच का शरीर पर्वत जैसा ऊँचा था। उसके रूप को देखने से बड़ा डर लगता था। क्योंकि उसकी डाढ़ें बड़ी विकराल, मुख उग्र, कान खूँटे जैसे, ठोडी बहुत बड़ी, केश खड़े

* एक नल्व ४०० हाथ का होता है।

हुए, नेत्र डरावने और मुख जल सा रहा था। उसका पेट नीचे को लटक रहा था। गले में बड़ा एक छेद था। सिर पर मुकुट था। इस लिये लोगों को वह मुख फाड़े काल जैसा जान पड़ता था। शत्रु तो उसे देखते ही भयभीत हो जाते थे। घटोत्कच को देख, हे राजन्! आपकी सेना वैसे ही क्षुब्ध हुई, जैसे भँवरों से युक्त और लहरों से लहराती हुई गङ्गा, पवन के झकोरों से क्षुब्ध हो जाती है। शत्रुपक्ष की सेना में घुसते ही घटोत्कच ने सिंहनाद किया। उसके सिंहनाद को सुन हाथियों ने मूत मारा और सिपाही त्रस्त हो गये। रात होने से राक्षसों का बल बढ़ गया। राक्षस शत्रुओं पर शिलावृष्टि करने लगे। चारों ओर से लोहे के चक्रों, भुशुण्डियों, प्रासों, तोमरों, शूलों तथा पट्टिशों की मार पड़ने लगी। उस समय अत्यन्त भीषण युद्ध देख, आपके पक्ष के राजा, आपके पुत्र तथा कर्ण भी उदास हो गये और वे चारों ओर भागने लगे। आपकी सेना में अकेला अश्वत्थामा ही था जो नहीं भागा और समरभूमि में डटा रहा। अश्वत्थामा ने अपने बाणों से घटोत्कच की माया नष्ट कर डाली। अपनी माया को नष्ट हुई देख, घटोत्कच अत्यन्त कुपित हुआ। उसने अश्वत्थामा पर बाण छोड़े जो अश्वत्थामा के शरीर में घुस गये। घटोत्कच के चलाये सुवर्णपुङ्ख बाण अश्वत्थामा के शरीर को फोड़, रुधिर में भरे पृथिवी में वैसे ही घुस गये, जैसे क्रुद्ध सर्प अपने बिल में घुसता है। इस पर अश्वत्थामा बड़ा कुपित हुआ और उसने घटोत्कच के दस बाण मारे। इन बाणों से घटोत्कच के मर्मस्थल विद्ध हो गये। तब घटोत्कच ने सहस्र आरों वाला और मध्य भाग में क्षुर से युक्त तथा प्रातःकालीन सूर्य की तरह चमचमाता, मणि तथा हारों से भूषित, एक चक्र हाथ में लिया। फिर अश्वत्थामा का वध करने के लिये, उस चक्र को उस पर छोड़ा। चक्र को बड़े वेग से अपनी ओर आते देख, अश्वत्थामा ने बाण मार कर, उसके टुकड़े टुकड़े कर डाले। भाग्यहीन पुरुष के सङ्कल्प की तरह, विफल हो, वह चक्र धड़ाम से पृथिवी पर आ पड़ा। चक्र को व्यर्थ गया देख, घटोत्कच ने अश्वत्थामा को बाणों से वैसे ही ढक

दिया जैसे राहु सूर्य को ढक देता है। जब अश्वत्थामा आगे बढ़ घटोत्कच की ओर जाने लगा; तब टूट कर गिरे हुए अञ्जन पर्वत की तरह डीलडौल वाला घटोत्कच का पुत्र और भीमसेन का पौत्र अञ्जनपर्वा अश्वत्थामा के सामने जा खड़ा हुआ और बाण मार उसका रास्ता वैसे ही रोका जैसे महागिरि, पवन के मार्ग को रोक देता है। उस समय रुद्र, विष्णु, और इन्द्र के समान पराक्रमी अश्वत्थामा, मेघमण्डल की जल की मूसलधार वृष्टि को हड़प जाने वाला मेरु पर्वत की तरह शोभायमान लगने लगा और शत्रु की बाणवृष्टि से ज़रा भी न घबड़ाया। उसने एक बाण से अञ्जनपर्वा की ध्वजा काट डाली। दो बाणों से उसके रथ के दोनों सारथियों को मार डाला, तीन बाणों से उसके रथ के त्रिवेणु को काट डाला फिर एक बाण से उसका धनुष काट फिर चार बाण मार उसके रथ के चारों घोड़े मार डाले। तदनन्तर जब अञ्जनपर्वा ने हाथ में तलवार ली, तब सुवर्ण की फुल्लियों से सुशोभित उसके हाथ की तलवार को अश्वत्थामा ने बाणों से टुकड़े टुकड़े कर डाला। तब तो अञ्जनपर्वा ने हेमाङ्गदा नामक गदा उठायी और उसे घुमा अश्वत्थामा की ओर फेंकी; किन्तु अश्वत्थामा ने बाण मार कर उसके भी टुकड़े टुकड़े कर डाले। वह गदा भूमि पर गिर पड़ी। यह देख अञ्जनपर्वा प्रलयकालीन मेघ की तरह गर्जता हुआ उड़ कर आकाश में गया और वहाँ से वह वृक्षों की वर्षा करने लगा। तब अश्वत्थामा ने उसे अपने बाणों से वैसे ही बेधना आरम्भ किया जैसे आकाशस्थित सूर्य मेघ को अपनी किरणों से विद्ध करते हैं। तब अञ्जन-पर्वा आकाश से पृथिवी पर चला आया और अपने सुवर्णमण्डित रथ पर सवार हो गया। अञ्जनपर्वा नाम ही का अञ्जनपर्वा न था, बल्कि उसका रंग अञ्जन की तरह काला था। वह ठोस लोहे का कवच पहिने हुए था। तथापि अश्वत्थामा ने उसे वैसे ही मार डाला जैसे महादेव ने अन्धकासुर को मारा था। अश्वत्थामा द्वारा अपने बली पुत्र का मारा जाना देख, घटोत्कच अत्यन्त कुपित हुआ और अश्वत्थामा के सामने गया। जैसे धधकती हुई

आग घासफूँस को भस्म कर डाले, वैसे ही पाण्डवों की सेना को नाश करने वाले अश्वत्थामा को रोक, घटोत्कच ने कहा—द्रोणपुत्र खड़ा रह, खड़ा रह, अब तू मेरे सामने से जीता जागता नहीं जा सकेगा। अग्निकुमार स्कन्ध ने जैसे क्रौंच का नाश किया था, वैसे ही मैं भी तेरा नाश कर डालूँगा। अश्वत्थामा बोला—अरे देवताओं के समान बलवान् वत्स! तू यहाँ से हट जा और अन्य किसी से जाकर लड़। हे हिडिम्बानन्दन! पुत्र का पिता के साथ लड़ना उचित नहीं। मैं तुझ पर क्रुद्ध नहीं हूँ। क्रोधी मनुष्य अपना नाश स्वयं कर डालता है।

सञ्जय ने कहा—हे राजन्! जब पुत्रशोक से क्रुद्ध और दुःखी घटोत्कच ने अश्वत्थामा के ये वचन सुने, तब तो वह मारे क्रोध के लालताता हो गया और कहने लगा—अरे अश्वत्थामा! क्या मैं पामर और कायर हूँ जो तू मुझे वचन से डराना चाहता है। तेरे ये वचन सर्वथा अनुचित है। मेरा जन्म कौरवकुल में भीमसेन के औरस से हुआ है। मैं युद्ध में कभी पीठ न दिखाने वाले पाण्डव का पुत्र हूँ। मैं राक्षसों का राजा हूँ और रावण की तरह बलवान् हूँ। अरे द्रोणपुत्र! खड़ा रह, खड़ा। अब तू जीता जागता न जाने पावेगा। आज मैं तेरी युद्ध की हुमहुमी दूर कर दूँगा। यह कह क्रोध में भरा घटोत्कच, लाल लाल नेत्र कर, अश्वत्थामा के ऊपर वैसे ही लपका; जैसे सिंह हाथी पर झपटता है। घटोत्कच ने अश्वत्थामा पर वैसे ही बाण-वृष्टि की; जैसे मेघ जलवृष्टि करते हैं। किन्तु अश्वत्थामा ने उसकी बाणवृष्टि को अपने बाणों से बीच ही में नष्ट कर डाला। उस समय ऐसा जान पड़ा, मानों अन्तरिक्ष में बाणों की मुठभेड़ हो रही हो। क्योंकि बाण आपस में टकराते थे। सन्ध्या होने पर जैसे उड़ते हुए जुगुनुओं से आकाश दमकने लगता है, वैसे ही आपस में टकराते हुए अस्त्रों से उत्पन्न हुई चिनगारियों से आकाश जान पड़ता था। अश्वत्थामा ने घटोत्कच की माया नष्ट कर दी। तब वह वृक्षों से परिपूर्ण अनेक शिखरों वाला एक बड़ा ऊँचा पर्वत बन गया। उस पर्वत से जैसे जल के झरने बहें, वैसे ही उस पर से

त्रिशूलों, शर्सों, तलवारों और मूसलों का प्रवाह सा बहने लगा। काजल जैसे काले इस पर्वत से शस्त्र धाराओं को देख, अश्वत्थामा ज़रा भी न घबड़ाया। उसने मुसक्या कर उस पर्वत पर वज्रास्त्र का प्रयोग किया। तब तो उस अञ्जन पर्वत के खण्ड खण्ड हो गये। तब घटोत्कच श्याम मेघघटा बन, आकाश में आ खड़ा हुआ और वहाँ से अश्वत्थामा पर पत्थर बरसा, पत्थरों से अश्वत्थामा को ढक दिया। तब अश्वत्थामा ने वायव्यास्त्र चला श्याम मेघघटा को छिन्न भिन्न कर डाला। अश्वत्थामा ने बाणवृष्टि कर समस्त दिशाएँ ढक दीं और एक लाख रथी मार डाले। शार्दूल की तरह बलवान और मदमत्त गज की तरह पराक्रमी गजों, रथों, और घोड़ों पर सवार घटोत्कच के सैनिक राक्षसों को साथ ले जो इन्द्र के समान पराक्रमी थे और पौलस्त्य, यातुधान तथा तापस जाति के थे, जो विविध प्रकार के कवच और आयुध धारण किये हुए थे, जो बड़े शूरवीर थे और जो भयङ्कर चीत्कार कर आँखें फाड़ फाड़ कर देख रहे थे, धनुर्धर घटोत्कच लड़ने के लिये अश्वत्थामा की ओर चला। उसको देख, हे राजन्! आपका पुत्र दुर्योधन उदास हो गया। उस समय अश्वत्थामा ने कहा—हे दुर्योधन! तुम खड़े खड़े देखते रहो। घबड़ाओ मत। मैं इन शूरवीर तुम्हारे भाइयों को तथा इन्द्र जैसे पराक्रमी राजाओं को नष्ट कर डालूँगा। तुम हारने न पाओगे। मैं तुमसे यह सत्य सत्य प्रण करता हूँ। किन्तु तुम अपनी सेना को धैर्य धारण कराते रहो।

दुर्योधन बोला—हे गौतमीनन्दन! तुम्हारे कथन में अत्युक्ति नहीं है और न उसमें कोई आश्चर्य की बात है। क्योंकि तुम्हारा मेरे ऊपर बड़ा अनुराग है।

सञ्जय ने कहा—हे राजन्! इस प्रकार अश्वत्थामा से बातचीत कर, दुर्योधन ने शकुनि से कहा—तुम साठ हज़ार रथियों की सेना ले, सहस्त्रों रथी राजाओं से लड़ते हुए अर्जुन पर आक्रमण करो। कर्ण, वृषसेन, कृप, नील, उत्तर दिशा वाले राजा लोग, कृतवर्मा, पुरुमित्र, दुःशासन, निकुम्भ,

कुण्डभेदी, पुरञ्जय, दृढ़रथ, पताकी, हेमकम्पन, शल्य, आरुणि, इन्द्रसेन, सञ्जय, जय, विजय, कमलाक्ष, पराथी, जयवर्मा और सुदर्शन नामक योद्धा और साठ हज़ार पैदल सिपाही तुम्हारे साथ जायँगे। जहाँ अर्जुन लड़ रहा है, वहाँ तुम जाओ और जैसे इन्द्र, असुरों का संहार करते हैं, वैसे ही तुम भीम, नकुल, सहदेव तथा युधिष्ठिर का नाश करो। मुझे अपने विजय का पूरा भरोसा तुम्हारे ही ऊपर है। अश्वत्थामा के बाणों से जर्जर-शरीर पाण्डवों का संहार तुम जा कर वैसे ही करो, जैसे कार्तिकेय ने असुरों का किया था।

हे राजन्! जब आपके पुत्र ने इस प्रकार शकुनि से कहा; तब शकुनि पाण्डवों का संहार करने को तथा आपके पुत्रों को प्रसन्न करने के लिये पाण्डवों से लड़ने के लिये चल दिया। इन्द्र तथा प्रह्लाद का जैसा पूर्वकाल में युद्ध हुआ था, वैसा ही उस रात्रि में अश्वत्थामा एवं राक्षसों में तुमुल युद्ध होने लगा। क्रुद्ध घटोत्कच ने विष जैसे भयङ्कर और अग्नि जैसे चमकीले दस बाण अश्वत्थामा की छाती में मारे। उन बाणों के लगने से अश्वत्थामा वैसे ही काँप उठा, जैसे पवन के झकोरे से कोई बड़ा वृक्ष थरथरा उठता है। फिर एक अञ्जलिक बाण से घटोत्कच ने अश्वत्थामा के हाथ का धनुष काट डाला। तब अश्वत्थामा ने दूसरा धनुष उठा लिया। फिर उसने वैसे ही बाणवृष्टि की, जैसे बादल जलवृष्टि करता है। अश्वत्थामा ने आकाशचारी घटोत्कच पर बाणवृष्टि की। विशालवक्षःस्थल राक्षस अश्वत्थामा के बाण-प्रहार से वैसे ही विकल हुए, जैसे सिंह द्वारा झकझोरा हुआ गजों का दल विकल होता है। प्रलय काल उपस्थित होने पर जैसे अग्निदेव प्राणियों को जला कर भस्म कर डालते हैं, वैसे ही अश्वत्थामा अपने बाणों से घोड़ों, सारथियों, गजों, रथों, सहित राक्षसों को भस्म करने लगा। अश्वत्थामा राक्षसों का संहार कर वैसे ही शोभायमान हुआ, जैसे पूर्व काल में त्रिपुरासुर को मार कर, शिव जी स्वर्ग में सुशोभित हुए थे। प्रचण्ड अग्निदेव प्रलय होने पर समस्त प्राणियों को भस्म कर, जैसे शोभायमान होते हैं, वैसे ही

शत्रुओं को नष्ट कर, अश्वत्थामा सुशोभित होने लगा। यह देख घटोत्कच बड़ा क्रुद्ध हुआ और उसने भयङ्करकर्मा राक्षसों को आज्ञा दी कि, तुम अश्वत्थामा को मार डालो। घटोत्कच की आज्ञा पा कर, बड़ी बड़ी डाढ़ों वाले राक्षस, मुख फाड़, जीभ निकाल, लाल नेत्र किये तथा गर्जते हुए शस्त्रों को उठाये अश्वत्थामा को मारने के लिये दौड़े और उसके मस्तक पर शक्ति, शतघ्नी, परिघ, अशनि, शूल, पट्ट, खड्ग, गदा, भिन्दिपाल, मूसल, फरसे, प्रास, तलवार, तोमर, कणप, कम्पन, भुशुण्डी, पत्थर, गदा, खूँटे और रण में शत्रुओं को विदीर्ण करने वाले लोहे के महाभयङ्कर मुद्गरों को मारने लगे। अश्वत्थामा के सिर पर इस प्रकार अस्त्रों की वृष्टि होते देख, आपके पक्ष के योद्धा बहुत उदास हुए। परन्तु महा-पराक्रमी अश्वत्थामा ने वज्र जैसे भयानक तेज़ बाण मार, उस शस्त्रवृष्टि को नष्ट कर डाला। फिर अश्वत्थामा ने सुवर्णपुँख बाणों को दिव्यास्त्रों के मंत्रों से अभिमंत्रित कर, उन राक्षसों का संहार करना आरम्भ किया। तब उसके बाणों के प्रहार से स्थूलवक्षःस्थल वाले राक्षसों के दल वैसे ही बहुत घबड़ाये। जैसे सिंह के उपद्रव से हाथियों के झुँड घबड़ाते हैं। जब महाबली अश्वत्थामा निरन्तर बाणवृष्टि कर राक्षसों को पीड़ित करने लगा; तब वे तमोगुणी बलवान राक्षस, बहुत क्रुद्ध हुए और उस पर टूट पड़े।

हे राजन्! उस समय अश्वत्थामा ने अभूत पूर्व अद्भुत पराक्रम करके दिखलाया। अश्वत्थामा ने प्रज्वलित बाण मार मार कर राक्षसराज घटोत्कच के सामने ही उसकी राक्षसी सेना को भस्म कर डाला। प्रलय कालीन संवर्तक अग्नि जैसे समस्त प्राणियों को भस्म कर डालता है, वैसे ही अश्वत्थामा भी उन राक्षसों को भस्म करता हुआ जान पड़ता था। द्रोण पुत्र अश्वत्थामा ने विषैले बाण मार कर, सेना का संहार करना आरम्भ किया। उस समय पाण्डवों की ओर से सहस्रों योद्धा उपस्थित थे, किन्तु घटोत्कच को छोड़ और किसी का साहस, अश्वत्थामा के सामने आने का

न होता था। घटोत्कच ने क्रोध निस्फारित नेत्र कर, ताली बजायी और अपने सारथि से कहा—मेरा रथ अश्वत्थामा के निकट हाँक ले चल। भयङ्कर पराक्रमी घटोत्कच विशाल ध्वजा से युक्त रथ पर सवार हो, अश्वत्थामा के निकट गया और सिंह की तरह दहाड़ कर, आठ घंटों से युक्त, देवनिर्मित महाभयङ्कर साँग अश्वत्थामा के मारी। उस साँग को अपनी ओर आते देख, अश्वत्थामा झट रथ पर से कूद पड़ा और उछल कर उस शक्ति को पकड़, उसे घटोत्कच के रथ पर फेंका। यह देख घटोत्कच रथ पर से कूद पड़ा। वह महाभयङ्कर शिव जी की शक्ति घटोत्कच के सारथि, घोड़ों और रथ को दग्ध कर, भूमि के भीतर घुस गयी। अश्वत्थामा का शिव जी की शक्ति को उछल कर पकड़ लेना बड़ी वीरता का काम था। अतः समस्त योद्धाओं ने अश्वत्थामा की बड़ी प्रशंसा की। अपना रथ नष्ट हो जाने पर घटोत्कच धृष्टद्युम्न के रथ पर सवार हो गया और इन्द्र के आयुध जैसे मोटे और भयङ्कर धनुष को चढ़ा, वह अश्वत्थामा की छाती में तीर मारने लगा। साथ ही धृष्टद्युम्न भी सावधान हो, विषधर सर्प की तरह सुवर्णपुँख बाण अश्वत्थामा के हृदय में मारने लगा। बदले में अश्वत्थामा ने भी घटोत्कच तथा धृष्टद्युम्न पर सहस्रों पैने बाण छोड़े। अश्वत्थामा के बाणों को घटोत्कच और धृष्टद्युम्न ने अपने पैने बाणों से काट डाला। इन वीरों का इस प्रकार युद्ध चल रहा था। इस युद्ध से उभय पक्ष के लोग सन्तुष्ट थे। यह युद्ध हो ही रहा था कि, भीमसेन एक हज़ार रथ, तीन सौ गजारोही और छः हज़ार घुड़सवार ले वहाँ आ पहुँचा। किन्तु अश्वत्थामा घटोत्कच और अनुचरों सहित धृष्टद्युम्न से लड़ता ही रहा। यही नहीं, बल्कि उसने ऐसा अद्भुत कर्म किया, जिसे अन्य कोई नहीं कर सकता। अर्थात् उसने निमेष मात्र ही में भीमसेन, घटोत्कच, धृष्टद्युम्न, नकुल, सहदेव, अर्जुन तथा श्रीकृष्ण के सामने ही राक्षसों की चतुरङ्गिणी एक अक्षौहिणी सेना का नाश कर डाला। तदनन्तर वह हाथियों का नाश करने लगा। उस समय हाथी सशिखर पर्वतों की तरह भूमि पर गिरने लगे। हाथियों की कटी सूँड़ों से भरी [illegible]

वह सर्पों से परिपूर्ण हो, ध्वजा रूपी मेंढकों वाली, भेरी रूप कछुओं वाली, छत्र रूपी हंसों से युक्त, चामर रूपी फेनों और तरंगों से पूर्ण, कङ्क और गिद्ध रूपी बड़े बड़े नक्रों से युक्त तथा विविध आयुध रूपी मच्छों वाली, इधर उधर पड़े हाथी रूपी पत्थरों वाली, मृत अश्व रूपी मगरों वाली, पताका रूपी विशाल वृक्षों वाली, बाण रूपी मछलियों वाली, देखते ही भयप्रद प्रास, शक्ति ऋष्टि रूपी जलसर्पों से परिपूर्ण, माँस मज्जा रूपी कीचड़ से युक्त, रुण्ड रूपी नौकाओं वाली, केश रूपी सिवार से विचित्र रंग बिरंगी देख पड़ने वाली, मृत योद्धाओं के शरीरों से निकले हुए रुधिर से उत्पन्न, घायल योद्धाओं के आर्त्तनाद से गूँजती हुई, रक्त की लहरों से लहराती हुई, भयङ्कर रूप वाली, कुत्तों सियारों से पूर्ण, यमराज के समुद्र की तरह महाभयङ्कर नदी, अश्वत्थामा ने प्रवाहित की। द्रोण-नन्दन अश्वत्थामा ने बाणों से राक्षसों का नाश करना आरम्भ किया। वह घटोत्कच को भी पीड़ित कर सका नहीं; उसने नाराच बाणों से क्रोध में भर, भीम के अनुयायी सैनिकों तथा पाण्डवों को विद्ध किया। द्रुपदनन्दन सुरथ को, शत्रुञ्जय को, बलानीक को, जयानीक को, जयाश्व को तथा श्रुताहुय को अश्वत्थामा ने मार डाला। तदनन्तर सुन्दर सुवर्ण पुँखयुक्त बाणों से उसने कुन्तिभोज के दस पुत्रों का भी वध किया। फिर उसने क्रोध में भर, यम-दण्ड जैसे विकराल और सीधे जाने वाले एक भयानक बाण को अपने धनुष पर रखा और धनुष को कान तक तान, वह बाण घटोत्कच की छाती में मारा। वह बाण घटोत्कच की छाती को फोड़, पुँखसहित भूमि में घुस गया। इस बाण के प्रहार से घटोत्कच रथ से भूमि पर गिर पड़ा। यह देख और घटोत्कच को मरा जान, धृष्टद्युम्न ने अपना रथ पीछे को हटवाया। राजा युधिष्ठिर की सेना को इस प्रकार हटा, अश्वत्थामा ने सिंहनाद किया। उस समय समस्त लोगों ने तथा आपके पुत्रों ने अश्वत्थामा के प्रति बड़ा सम्मान प्रदर्शित कर, उसकी प्रशंसा की। इस समय तक अश्वत्थामा सैकड़ों राक्षसों का वध कर चुका था। मृत राक्षसों से समरभूमि पट गयी थी। सिद्ध, गन्धर्व,

पिशाच, सर्प, गरुड़, पितर, पक्षी, राक्षस, भूत, अप्सरा और देवगण ने अश्वत्थामा का पराक्रम देख, उसकी बड़ी प्रशंसा की।

एक सौ सत्तावन का अध्याय

बाल्हीक वध

सञ्जय ने कहा—हे धृतराष्ट्र ! जब अश्वत्थामा ने राजा द्रुपद के तथा कुन्तिभोज के पुत्रों तथा हज़ारों राक्षसों को मार डाला; तब युधिष्ठिर, भीम, द्रुपदपुत्र धृष्टद्युम्न और सात्यकि ने पुनः तैयार हो लड़ने का विचार किया। समरक्षेत्र में सात्यकि को देखते ही सोमदत्त पुनः मारे क्रोध के लाल ताता हो गया। उसने बाणवृष्टि कर, सात्यकि को बाणों से ढक दिया। उस समय आपके और विपक्षी सैनिकों में घोर युद्ध होने लगा। विजया-भिलाषी सोमदत्त को आगे बढ़ते देख, भीमसेन ने, सात्यकि की रक्षा के निमित्त उसके दस बड़े पैने बाण मारे। सोमदत्त ने सात्यकि के सौ बाण मारे। तब सात्यकि बड़ा क्रुद्ध हुआ और उसने उस सोमदत्त को जो पुत्र शोक से दुःखी हो रहा था, जो वृद्ध था तथा जो नहुषनन्दन ययाति की तरह शील सम्पन्न था, दस बाण मार, घायल कर डाला। तदनन्तर पुनः सात्यकि ने सोमदत्त के सात बाण मार, उसे घायल किया। तदनन्तर भीम ने एक बड़ा दृढ़ परिघ ले, सोमदत्त के सिर में मारा। साथ ही सात्यकि ने एक अत्यन्त पैना बाण सोमदत्त की छाती में मारा। परिघ और बाण सोमदत्त के साथ ही साथ लगे। अतः वह मूर्छित हो भूशायी हो गया। पुत्र को मूर्छित देख, बाल्हीक ने भीम पर आक्रमण किया और जलवृष्टि करने वाले मेघ की तरह वह बाणवृष्टि करने लगा। सात्यकि की ओर से भीम ने दस बाण मार, बाल्हीक को घायल किया। तब तो प्रतीपनन्दन बाल्हीक बड़ा क्रुद्ध हुआ। उसने भीम की छाती में एक शक्ति वैसे ही मारी, जैसे इन्द्र वज्र मारते हैं। शक्ति के प्रहार से भीम काँप उठा और मूर्छित हो गया।

कुछ देर बाद जब भीम सचेत और सावधान हुआ; तब उसने बाल्हीक के माथे पर गदा का प्रहार कर, उसका माथा चकनाचूर कर डाला। जैसे वज्र के प्रहार से विशाल पर्वत ढह पड़े; वैसे ही गदा के प्रहार से बाल्हीक निर्जीव हो भूमि पर ढह पड़ा। बाल्हीक के मारे जाने पर, श्रीरामचन्द्र के समान पराक्रमी आपके पुत्र नागदत्त, दृढ़रथ, महाभुज अयोभुज, दृढ़, सुहस्त, विरज, प्रमाथी, उग्र और अनुयायी नामक दस पुत्रों ने बाणवृष्टि कर, भीम को पीड़ित किया। युद्धसङ्कटों को सहने में अभ्यस्त भीम अत्यन्त क्रुद्ध हुए और आपके प्रत्येक पुत्र के मर्मस्थल में एक एक बाण मार, उन सब को नष्ट कर डाला। वे सब निर्जीव हो वैसे ही भूमि पर गिर पड़े; जैसे आँधी के झोंके से उखड़ा हुआ वृक्ष, पर्वतशिखर से गिरता है। भीम ने दस बाण मार आपके दसों पुत्रों को मार डाला। फिर कर्ण के पुत्र वृषसेन के ऊपर भीमसेन ने बाण बरसाना आरम्भ कर दिया। यह देख, कर्ण के प्रसिद्ध भाई वृकरथ ने भीम पर बाण छोड़े। तब भीम उसकी ओर दत्तचित्त हुआ। हे राजन्! शूर भीम ने आपके वीर और महारथी सालों में से सात को मार कर, शतचन्द्र को भी मार डाला। शकुनि के पराक्रमी भाई गवाक्ष, सरल, विभु, सुभग, भानुदत्त और शरभ, शतचन्द्र का मारा जाना बहुत अखरा, अतः वे क्रोध में भर, भीमसेन की ओर दौड़े और पैने बाणों के प्रहारों से उन लोगों ने भीम को पीड़ित किया। जैसे बलवान् साँड, जल-वृष्टि से पीड़ित होता है, वैसे ही पराक्रमी भीमसेन ने उन शूरवीर योद्धाओं के बाणों की चोट से पीड़ित हो, पाँच बाण मार, उन पाँचों महारथियों का नाश कर डाला। उन पाँच वीरों का मारा जाना देख, समस्त राजा लोग भयभीत हो गये।

उसी समय धर्मराज युधिष्ठिर क्रुद्ध हो द्रोणाचार्य और दुर्योधन के सामने ही आपकी सेना का नाश करने लगे, उन्होंने क्रोध में भर, अम्बष्ठ, मालव, त्रिगर्त और शिवि राजाओं को संग्राम में मार डाला। फिर अभीषाह शूरसेनों, बाल्हीकों तथा वसातिकों को काट कर, रणक्षेत्र को रक्त एवं माँस ,

वन्दी ने कहा—अग्नि पाँच हैं। पाँच पदों वाला पंक्तिछन्द है। यज्ञ पाँच प्रकार के हैं। इन्द्रियाँ पाँच हैं। वेद में पाँच प्रकार की (अर्थात् चैतन्य, प्रमाण, विकल्प, विपर्यय, निद्रा और स्मृति) वृत्तियों का वर्णन है। पञ्चनद (पञ्जाब) सर्वत्र पवित्र माना जाता है।

अष्टावक्र जी बोले—अग्न्याधान की दक्षिणा के लिये छः गोदान होते हैं। ऋतुएँ छः हैं। इन्द्रियाँ छः हैं, कृत्तिकाएँ छः हैं, तथा समूचे वेद में सावस्क छः यज्ञों का विधान पाया जाता है।

वन्दी ने कहा—सात प्रकार के ग्राम्य पशु हैं। वनपशु भी सात प्रकार के होते हैं। सात छन्दों से एक यज्ञ पूर्ण होता है। ऋषि भी सात ही हैं। पूज्य ऋषि सात हैं और वीणा में तार भी सात ही हैं।

अष्टावक्र जी बोले—आठ गोनी का शतमान नामक माप होता है। शरभ के, जो सिंह को मार डालता है, आठ पैर होते हैं। देवताओं में वसु आठ हैं। समस्त यज्ञों का यूप अठपहल होता है।

वन्दी बोला—पितृयज्ञ में सामधेनी नौ होती हैं। बृहती छन्द का प्रत्येक चरण नव अक्षरों का होता है। गणित में नौ अङ्क हैं।

अष्टावक्र जी बोले—दिशाओं की संख्या दस है। दस शत मिल कर एक सहस्र होते हैं। नारी का गर्भ दस मास में पूर्ण होता है। तत्त्वोपदेशक दस हैं अधिकारी और द्वेष करने वाले भी दस दस हैं।

वंदी बोला—इन्द्रियजन्य विषय ग्यारह हैं। ये ही ग्यारह विषय जीवरूपी पशु को बाँधने के लिये खूँटे हैं। प्राणियों में ग्यारह प्रकार के विकार होते हैं और रुद्रों की संख्या भी एकादश है।

अष्टावक्र जी बोले—एक वर्ष में बारह मास होते हैं। जगती छन्द के प्रत्येक चरण में द्वादश अक्षर होते हैं। प्राकृत यज्ञ की पूर्ति बारह दिवस में होती है। आदित्यों की संख्या बारह प्रसिद्ध ही है।

द्रोणाचार्य की ओर दौड़े और उनके ऊपर निरन्तर बाणवृष्टि करने लगे। उसी समय महातेजस्वी पाञ्चाल, सृञ्जय और मत्स्य देशीय सेना के योद्धा, सात्यकि की सेना के सैनिक एकत्र हो अर्जुन और भीम के साथ हो लिये। कुरुसेना के योद्धा लोग तो पहले ही से निद्रा से पीड़ित और अन्धकार से विकल हो गये। तिस पर अर्जुन के बाणों ने तो उनको और भी अधिक घबड़ा दिया। उस समय द्रोण और दुर्योधन स्वयं उन्हें रोक रहे थे; किन्तु वे न रुके और भाग गये।

एक सौ अट्ठावन का अध्याय

कर्ण और कृपाचार्य

सञ्जय ने कहा—हे धृतराष्ट्र! पाण्डवों की सेना को उमड़ते देख, दुर्योधन ने समझ लिया कि, अब हम इसे पीछे न हटा सकेंगे। अतः वह कर्ण से बोला—हे मित्रवत्सल! मैत्री दिखाने का यही समय है। अतः हे कर्ण! अब तुम मेरे समस्त योद्धाओं की रक्षा करो। मेरे महारथी योद्धा क्रोधातुर हो रहे हैं और साँपों का तरह फुँसकार रहे हैं। पाञ्चालों, मत्स्यों, केकयों और पाण्डवों ने उन्हें घेर लिया है। देखो, विजयी पाण्डव और पाञ्चालों के बहुत से महारथी हर्ष में आ कर गर्ज रहे हैं। दुर्योधन के इन वचनों को सुन कर, कर्ण ने कहा—इस समर में यदि इन्द्र भी अर्जुन की रक्षा करने आये हों, तो भी मैं तुरन्त उसको परास्त करूँगा और तदनन्तर अर्जुन का वध करूँगा। मैं तुझे वैसे ही जिताऊँगा जैसे अग्नि ने इन्द्र को जिताया था। मैं तो तुम्हारे हितसाधन ही के लिये जीवन धारण किये हुए हूँ। पाण्डवों में एकमात्र अर्जुन ही बड़ा बली है। अतः मैं इन्द्रप्रदत्त अमोघ शक्ति से उसका वध करूँगा। जब वह मारा जायगा, तब उसके भाई या तो हमारे अधीन हो जायँगे अथवा वन में चले जावेंगे। हे राजन्! मैं जब तक जीवित हूँ, तब तक तुम ज़रा भी चिन्तित मत हो। क्योंकि मैं इन सब पाण्डवों को

आश्रम में टिका हुआ हूँ। इस वन से पवन के झोके से उड़ एक सौगन्धिक कमल हमारे आश्रम में आया था। उस श्रेष्ठ कमल को द्रौपदी ने देखा और उसी तरह के कई एक कमल के फूलों को लेने की इच्छा उसके मन में उत्पन्न हुई। अतएव हे दैत्यों! तुमको विदित हो कि, मैं अपनी निर्दोष अंगोवाली प्रिया का मन रखने के लिये यहाँ आया हूँ।

राक्षस बोले—हे पुरुषश्रेष्ठ! यह कुबेर का प्रिय क्रीडास्थल है। अतः यहाँ कोई भी मरणशील मनुष्य विहार नहीं कर सकता। हे वृकोदर! देवर्षि, यक्ष और देवता तक यक्षराज की आज्ञा ले कर ही इस सरोवर में जलपान और विहार कर पाते हैं और उनकी आज्ञा पाये बिना, गन्धर्व और अप्सराएँ स्नान नहीं कर सकतीं। यदि कोई दुराचारी पुरुष, कुबेर का तिरस्कार कर, अन्याय पूर्वक यहाँ स्नान करना चाहे, तो वह निश्चय ही मार-डाला जाता है। फिर तुम यक्षराज कुबेर जी का तिरस्कार कर, बरजोरी कमलपुष्प क्यों लेना चाहते हो? और इस प्रकार का अन्याय करने को उद्यत होने पर भी अपने को धर्मराज का भाई बतलाते हो! प्रथम तुम यक्षराज से पूँछ लो, तब जल पीना और कमलपुष्प भी ले जाना। किन्तु बिना उनकी आज्ञा के तुम किसी भी कमल पुष्प की ओर देख भी नहीं सकते।

यह सुन महाबली भीम ने कहा—हे राक्षसों! प्रथम तो कहीं कुबेर जी मुझे दिखलायी नहीं पड़ते और यदि वे मुझे दिखलायी भी पड़ें, तो भी मैं उनसे पुष्पों के लिये याचना नहीं करूँगा। क्योंकि राजा याचना नहीं करते। यह राजाओं का सनातन धर्म है और मैं क्षात्र धर्म को किसी तरह भी छोड़ने को तैयार नहीं हूँ। यह सरोवर पहाड़ी झरनों से भरता है और पर्वत पर होने के कारण यह रमणीक देख पड़ता है। इसकी रमणीयता कुबेर के भवन के कारण नहीं है। अतः इस पर जितना स्वत्व कुबेर का है उतना ही अन्य लोगों का भी। ऐसी सार्वजनिक वस्तु के लिये क्यों किसी से कोई याचना करने जायगा?

को इस प्रकार उत्तर दिया। शूरवीर पुरुष जैसे वर्षाकालीन मेघों की तरह गर्जते हैं, वैसे ही यथासमय बोये हुए बीज की तरह शीघ्र ही फल देते हैं। मैं तो इसमें कुछ भी दोष नहीं समझता। मैं तो व्यवसाय को अपना संगी बना, हृदय से रणभार को झेलूँगा। रण में श्रीकृष्ण और सात्यकि सहित पाण्डवों को नाश कर, मैं सिंहनाद करूँगा। हे विप्र! मेरे गर्जने से तुम्हारी क्या हानि होती है? मनुष्य जिस भार को उठाने का सङ्कल्प कर, उसे उठाने का प्रयत्न करता है, दैव अवश्य ही उसे सहायता देता है। मैं व्यवसाय को अपना सहवर्ती बना, रण के बोझ को उठाऊँगा। युद्ध में कृष्ण और सात्यकि सहित पाण्डुपुत्रों का नाश करूँगा और तब गर्जूँगा। हे विप्र! शूरों का गर्जन शरद्कालीन मेघों की तरह व्यर्थ नहीं होता। वे अपनी अपनी सामर्थ्यानुसार ही गर्जते हैं। हे गौतमवंशी कृप! रण में लड़ने को तैयार खड़े हुए श्रीकृष्ण और अर्जुन को पराजित करने के लिये मेरा मन उत्साहित हो रहा है। इसीसे मैं गर्ज रहा हूँ। हे विप्र! तुम मेरे इस गर्जन के फल को देखो। मैं कृष्ण और सात्यकि तथा पाण्डवों का वध कर भूमण्डल का निष्कण्टक राज्य दुर्योधन को सौंपूँगा।

कृपाचार्य बोले - कर्ण! तेरे यह अभिमान युक्त वचन किसी काम के नहीं है। तू कृष्ण की तथा पाण्डुपुत्र धर्मराज की सदा निन्दा किया करता है। युद्धकुशल वे दोनों वीर जिस स्थान पर हैं, वहाँ ही विजय है। कवच-धारी श्रीकृष्ण का तथा अर्जुन का, संग्राम में देव, गन्धर्व, यक्ष, मनुष्य, उरग और राक्षस भी सामना नहीं कर सकते। फिर औरों की तो बात ही क्या है? धर्मपुत्र युधिष्ठिर ब्राह्मणों के रक्षक, सत्यवादी, दान्त, गुरु और देवताओं के पूजक हैं। वे धर्म के ऊपर सदा प्रेम रखते हैं और प्रायः समस्त अस्त्रों को चलाने रोकने आदि की विधि के ज्ञाता हैं। वे बड़े धीर और कृतज्ञ हैं। उनके भाई भी बड़े बलवान तथा सर्वशस्त्रविशारद हैं। वे बड़े बुद्धिमान, धर्मात्मा, यशस्वी बन्धु बान्धव युक्त, इन्द्र जैसे पराक्रमी, और बड़े अनुरागवान् योद्धा हैं। उनके सहायक धृष्टद्युम्न, शिखण्डी, दुर्मुख

सुत, जनमेजय, चन्द्रसेन, रुद्रसेन, कीर्तिधर्मा, ध्रुव, अधर, वसुचन्द्र, रामचन्द्र, सिंहचन्द्र, सुतञ्जय, द्रुपदनन्दन तथा गवाक्ष स्वयं राजा द्रुपद हैं। इनके अतिरिक्त पुत्रसहित, मत्स्यराज, शतानीक, सूर्यदत्त, श्रुतानीक, श्रुतध्वज, रथानीक, जयानीक, जयाश्व, रथवाहन, चन्द्रोदय, समरथ, राजा विराट के सद्गुणी भाई, नकुल, सहदेव, द्रौपदी के पुत्र राक्षस घटोत्कच आदि अनेक वीर हैं। देखो, ये सब लड़ रहे हैं। अतः पाण्डवों का कभी भी नाश नहीं हो सकता। इनके अतिरिक्त और भी बहुत से लोग पाण्डवों के सहायक हैं। यदि अर्जुन और भीम चाहें तो देव, असुर, मनुष्य, यक्ष, राक्षस, भूत, सर्प और हाथियों सहित समस्त जगत् के अस्त्रबल से ही सारे जगत् को नष्ट कर डालें। यदि धर्मराज युधिष्ठिर चाहें, तो केवल अपनी दृष्टि ही से पृथिवी को भस्म कर डालें। हे कर्ण! जिनके सहायक कवचधारी अप्रमेय श्रीकृष्ण हैं, उन पाण्डवों को रण में तू जीतने का साहस क्यों कर करता है? तू सदा श्रीकृष्ण से जो लड़ने की अभिलाषा रखे हुए है, सो यह तेरी बड़ी भारी भूल है।

सञ्जय ने कहा—हे राजन्! जब कृपाचार्य ने इस प्रकार कर्ण से कहा—तब राधापुत्र कर्ण हँसा और शरद्वान् के पुत्र गुरु कृपाचार्य से बोला—हे ब्रह्मन्! आपने पाण्डवों के सम्बन्ध में जो कुछ कहा वह ठीक है। आपके बतलाये गुणों के अतिरिक्त और भी बहुत से गुण पाण्डवों में विद्यमान हैं। सचमुच रण में पाण्डव, दैत्यों, गन्धर्वों, पिशाचों, सर्पों, राक्षसों तथा देवराज इन्द्र सहित देवताओं से भी अजेय हैं। किन्तु इन्द्रप्रदत्त शक्ति मेरे पास है। इस शक्ति से मैं अर्जुन का वध करूँगा। जब अर्जुन मारा जायगा तब उसके बिना उसके भाई किसी प्रकार भी राज्य नहीं कर सकेंगे। उन सब का नाश होने के बाद, समुद्र पर्यन्त समूची पृथिवी कौरवों के हाथ आ जावेगी। हे गौतम! इस संसार में समस्त कार्य उत्तम प्रकार की बुद्धियों ही से सिद्ध होते हैं। इसी बात को भली भाँति समझ मैं गरजता हूँ। रहे आप सो आप तो ब्राह्मण ठहरे और वृद्धावस्था के कारण लड़ने में असमर्थ

हैं और पाण्डवों के भक्त हैं। इसीसे तो आप मेरा अपमान करते हैं। परन्तु हे ब्रह्मन्! अब आगे तू मेरा इस प्रकार अपमान न करना। अगर तूने फिर ऐसी बातें मुझसे कहीं तो मैं तलवार से तेरी जीभ काट डालूँगा। अरे दुर्बुद्धि! तू पाण्डवों की प्रशंसा कर, कौरवों को डराना चाहता है। किन्तु स्मरण रख, मैं तुझसे सच सच कहता हूँ कि, दुर्योधन, द्रोण, शकुनि, दुर्मुख, दुःशासन, वृषसेन मद्रराज, सोमदत्त, भूरिश्रवा, अश्वत्थामा, विविंशति ऐसे योद्धा हैं कि, जब ये सब कवच पहिन रणक्षेत्र में आ डटें; तब इन्द्र जैसा बलवान् पुरुष भी इनको परास्त नहीं कर सकता। शूर, अस्त्रपटु, बली, स्वर्गप्राप्ति के लिये उत्कण्ठित रणनीतिनिपुण और युद्धकुशल ये योद्धा समर में देवताओं को भी नष्ट कर सकते हैं। ये ही योद्धा कवच पहिन, दुर्योधन को जिताने के लिये और पाण्डवों का वध करने के लिये समरभूमि में डटे हुए हैं। किन्तु हार जीत तो भाग्याधीन है। बली से बली योद्धा की हार जीत को मैं तो भाग्याधीन ही मानता हूँ।

क्योंकि जब महाबली भीष्म, विकर्ण, चित्रसेन, बाल्हीक, जयद्रथ, भूरिश्रवा, जय, जलसंध, सुदक्षिण, महारथी शल, पराक्रमी भगदत्त आदि बलवान और शूर राजाओं को पाण्डवों ने मार डाला; तब अरे नराधम! इसे दैवयोग के सिवाय और क्या समझा जाय। अरे ब्रह्मन! तू बारंबार दुर्योधन के वैरियों की बड़ाई करता है, किन्तु उनके भी तो सैकड़ों सहस्रों योद्धा मारे गये हैं। मुझे तो इस समर में पाण्डवों की कुछ भी विशेषता नहीं दिखलायी पड़ती, क्योंकि कौरवों और पाण्डवों की सेनाओं का एक ही सा संहार हुआ है। हे ब्राह्मणाधम! तिस पर भी तू पाण्डवों को सदैव बलवान बतलाया करता है। अतः मैं भी दुर्योधन के हितसाधन के लिये यथाशक्ति पाण्डवों से युद्ध करने का प्रयत्न करूँगा और जीत हार तो भाग्याधीन है।

एक सौ उनसठ का अध्याय

कर्ण और अश्वत्थामा का कथोपकथन

सञ्जय ने कहा—हे धृतराष्ट्र ! जब अश्वत्थामा ने देखा कि, कर्ण ने कठोर वचन कह उसके मामा कृपाचार्य का तिरस्कार किया है, तब अश्वत्थामा ने म्यान से तलवार खींचली और नंगी तलवार ले वह कर्ण के ऊपर झपटा। क्रोध से लाल अश्वत्थामा ने दुर्योधन के सामने ही कर्ण की वैसे ही झपेटा जैसे सिंह मदमत्त गज को झपेटता है।

अश्वत्थामा ने कर्ण से कहा—अरे दुर्बुद्धि ! मेरे शूरवीर मामा ने अर्जुन की जो प्रशंसा की है, वह रत्ती रत्ती ठीक है। किन्तु तू अर्जुन से द्वेष करता है, अतः तू अर्जुन का तिरस्कार करता है। आज तेरा घमंड यहाँ तक बढ़ गया है कि, तू अद्वितीय धनुर्धर अर्जुन की निन्दा कर, अपने बराबर किसी को नहीं समझता। किन्तु अर्जुन ने तेरी विद्यमानता ही में जयद्रथ को मार डाला, तब तेरा पराक्रम कहाँ था ? तेरे अस्त्र कहाँ थे ? अरे नीच कर्ण ! जो साक्षात् महादेव के साथ युद्ध कर चुका है, उसे हराने की बात अपनी जिह्वा पर लाना तेरे लिये व्यर्थ है। समस्त देवताओं सहित इन्द्र तथा दैत्य इकट्ठे हो कर भी धनुर्धारियों में श्रेष्ठ और श्रीकृष्ण के सखा अर्जुन को परास्त नहीं कर सकते ! हे दुर्बुद्धे ! उस अद्वितीय योद्धा अर्जुन को तू इन सामान्य योद्धाओं की सहायता से कदापि नहीं जीत सकेगा, नराधम कर्ण ! खड़ा रह ! देख, मैं अभी तेरा सिर धड़ से अलग किये डालता हूँ।

सञ्जय ने कहा—यह कह अश्वत्थामा बड़े वेग से कर्ण की ओर लपका; किन्तु दुर्योधन ने और स्वयं महातेजस्वी कृपाचार्य ने उसे पकड़ लिया।

तब कर्ण ने कहा—यह दुर्बुद्धि है। द्विजों में नीच ब्रह्माधम ! इसे युद्ध-विधान-कुशल होने का बड़ा अभिमान है। इसे तुम छोड़ दो, जिससे इसे मेरे पराक्रम का स्वाद चखने का अवसर हाथ लग जाय।

अश्वत्थामा ने कहा—अरे दुर्बुद्धि कर्ण ! मैं तो तेरे अपराध को क्षमा किये देता हूँ; किन्तु याद रख अर्जुन तेरे इस अभिमान को चूर करेगा।

दुर्योधन बोला—हे मानद अश्वत्थामा ! क्रोध दूर करो और प्रसन्न हो जाओ। आपको तो क्षमा ही शोभा देती है। आपको कर्ण पर क्रुद्ध होना कदापि उचित नहीं। हे द्विजश्रेष्ठ ! मैंने आपके, कर्ण के, कृपाचार्य के, द्रोण, के, सुबलपुत्र के तथा मद्रराज के ऊपर ही इस महाकार्य का भार रक्खा है। अतः आप मेल से रहो। हे द्विजश्रेष्ठ ! वे सब पाण्डव लड़ने के लिये श्रीकृष्ण को साथ ले, राधा के पुत्र कर्ण के साथ चले आते हैं और चारों ओर से हमें बुला रहे हैं।

सञ्जय ने कहा—इस प्रकार दुर्योधन ने मधुर वचन कह कर, अश्वत्थामा को प्रसन्न किया। कृपाचार्य तो शान्तमूर्ति ही थे। अतः तुरन्त ही वे मृदु हो कर कहने लगे। कृपाचार्य ने कहा—अरे दुर्बुद्धि कर्ण ! हम तो तेरे अपराध को गया बीता किये डालते हैं, किन्तु याद रख, अर्जुन तेरे इस बड़े बड़े अभिमान को चूर करेगा।

सञ्जय बोले—हे राजन् ! इन लोगों में इस प्रकार कलह हो ही रहा था कि, यशस्वी पाण्डवों और पाञ्चालों ने मिल कर, कर्ण के ऊपर आक्रमण किया। तब पराक्रमी कर्ण भी धनुष ले, देवताओं सहित इन्द्र की तरह, श्रेष्ठ श्रेष्ठ कौरवों को साथ ले, अपने भुजबल के सहारे रणक्षेत्र में सब के आगे डट गया। कर्ण और पाण्डवों का बड़ा विकट युद्ध आरम्भ हुआ। योद्धा सिंह की तरह दहाड़ रहे थे। यशस्वी पाण्डव और पाञ्चाल, महाबली कर्ण को देख, गर्जन कर, ज़ोर से बोल उठे—कर्ण यह है ! कर्ण यहाँ है ! हे कर्ण ! खड़ा रह ! खड़ा रह ! अरे पुरुषाधम ! अरे दुरात्मा ! हमसे लड़। तदनन्तर अन्य राजा लोग क्रोध के कारण लाल लाल नेत्र कर, बोल उठे—नीचमना सूतपुत्र कर्ण यह है। सब राजा लोग मिल कर इसे मार डालो। इसके जीने से कुछ भी लाभ नहीं। यह पाण्डवों का घोर शत्रु है; बड़ापापी है। यह अनर्थों का मूल है और दुर्योधन के मतानुसार चलता है; अतएव

इसका वध करो। वध करो। इस प्रकार कहते हुए वे सब महारथी क्षत्रिय, पाण्डवों की प्रेरणा से कर्ण का वध करने के लिये उसके ऊपर टूटे और चारों ओर से उसके ऊपर बाणवृष्टि कर, बाण जाल से दिशाएँ ढक दीं। जब कर्ण ने उन सब को अपने ऊपर आक्रमण करते देखा, तब वह न तो घबड़ाया और न उदास ही हुआ। उसने धैर्य धारण कर, प्रथम तो उस उमड़ते हुए सेना रूपी महासागर को देखा। फिर उस फुर्तीले एवं आपके पुत्र के हितैषी कर्ण ने बाणवृष्टि कर, उस आगे बढ़ती हुई सेना को चारों ओर से रोक दिया। उस समय सैकड़ों, सहस्रों राजा लोग धनुषों को उछालते उछालते कर्ण के साथ लड़ने लगे। हे राजन्! कर्ण ने बाणों की बड़ी भारी वर्षा कर, पाण्डवों के पक्ष के राजाओं की बाणवृष्टि को नष्ट कर डाला। उस समय कर्ण और पाण्डव पक्षीय राजाओं में तुमुल युद्ध हुआ।

सञ्जय ने कहा—हे राजन्! हम तो इस समर में कर्ण का अद्भुत युद्ध-कौशल देख दंग रह गये। इस युद्ध में सब राजा लोग मिल कर भी अकेले कर्ण को न हरा सके। महारथी कर्ण राजाओं के बाणों को निवारण कर, निज नाम अङ्कित बाण उन राजाओं के रथों, ईषाओं, जुओं, छत्रों, ध्वजाओं और घोड़ों पर निरन्तर बरसा रहा था। कर्ण के बाणों के प्रहार से विपक्षी राजा लोग घबड़ा गये और जड़ाती हुईं गौओं की तरह काँपते हुए, इधर उधर भाग गये। गजारोही अश्वारोही और रथी भी कर्ण के बाणों से घबड़ा कर, इधर उधर भागने लगे। शूरों के कटे मस्तकों तथा भुजाओं से पृथिवी ढक गयी थी। मारे गये और मारे जाते हुए तथा चीखते हुए योद्धाओं से रणभूमि यमपुरी की तरह भयङ्कर जान पड़ने लगी। राजा दुर्योधन, उस समय कर्ण के पराक्रम को देख, अश्वत्थामा के निकट गया और उससे कहने लगा देखो, समस्त राजाओं से आक्रान्त हो कर्ण कैसा लड़ रहा है। स्वामि-कार्त्तिकेय के बाणों से जैसे असुरों की सेना पलायन करती है, वैसे ही कर्ण के बाणों की मार से पीड़ा पा कर, पाण्डवों की सेना भाग रही है। चतुर कर्ण ने युद्ध में मेरी सेना का पराजय किया है—यह देख कर अर्जुन, कर्ण को

मारने की इच्छा से इसके ऊपर चढ़ा चला आता है। अतः ऐसा करो, जिससे अर्जुन, सूतपुत्र कर्ण को मारने न पावे। दुर्योधन की बात सुन कर, अश्वत्थामा, कृपाचार्य, शल्य और महारथी हार्दिक्य आदि योद्धा, अर्जुन को कर्ण पर वैसे ही आक्रमण करते देख, जैसे इन्द्र ने वृत्रासुर के ऊपर चढ़ाई की थी, कर्ण की रक्षा के लिये अर्जुन के सामने गये। हे नरेन्द्र! इन्द्र ने जैसे वृत्रासुर के ऊपर चढ़ाई की थी, वैसे ही अर्जुन भी साक्षात् शत्रुओं से घिर कर, कर्ण के आगे चढ़ा।

धृतराष्ट्र ने पूँछा कि—हे सञ्जय! क्रोध में भरे हुए और प्रलय की तरह भयङ्कर प्रतीत होते हुए अर्जुन को देख, जो महारथी कर्ण, सदा अर्जुन से ईर्ष्या किया करता था, उसने अर्जुन को अपनी ओर आते देख, क्या किया?

सञ्जय ने कहा—हे धृतराष्ट्र! अर्जुन को अपनी ओर आते देख, कर्ण निर्भय हो वैसे ही अर्जुन की ओर लपका, जैसे कोई हाथी अपने वैरी हाथी की ओर लपके। अर्जुन ने वेग से आते हुए कर्ण को सीधे बाणों से आगे बढ़ने से रोक दिया। तब कर्ण ने बाणवृष्टि कर अर्जुन को ढक दिया। कर्ण बड़ा क्रुद्ध हुआ और उसने अर्जुन के तीन बाण मारे। किन्तु महाबली अर्जुन कर्ण की फुर्ती को सह न सका। तदनन्तर अर्जुन ने कर्ण पर तीन सौ पैने बाण छोड़े। अर्जुन ने मुसक्या कर कर्ण के दहिने हाथ पर एक बाण ऐसा मारा कि, उसके प्रहार से कर्ण के हाथ से धनुष छूट पड़ा। तब आधे निमेष ही में महाबली कर्ण ने दूसरा धनुष उठा कर और बाणवृष्टि कर अर्जुन को बाणों से ढक दिया। अर्जुन ने कर्ण की बाणवृष्टि को नष्ट कर डाला। फिर मुसक्या कर और बाणप्रहार कर, कर्ण को अर्जुन ने पीड़ित किया। वे दोनों विजयाभिलाषी वीर परस्पर बाणवृष्टि करने लगे। ऋतुमती हथिनी के लिये जैसे दो मदमत्त और क्रुद्ध हाथी लड़ें, वैसे ही कर्ण तथा अर्जुन के बीच महाअद्भुत युद्ध आरम्भ हो गया। इस समय में अर्जुन को कर्ण के पराक्रम की थाह मिल गयी। उसने बड़ी फुर्ती से एक बाण मार कर्ण

की मुट्ठी में से धनुष काट डाला। फिर भल्ल बाण मार, उसके चारों घोड़ों को भी यमलोक भेज दिया और सारथि का मस्तक काट गिराया। इस प्रकार कर्ण को रथहीन कर, पुनः अर्जुन ने उसके चार बाण मारे। कर्ण तब रथ के नीचे उतर पड़ा और बाणों के प्रहार से पीड़ित हो, कृपाचार्य के रथ पर चढ़ गया। अर्जुन के बाणों से उसका शरीर विदीर्ण हो गया था और सेई की तरह उसके समस्त अङ्गों में बाण चुभे हुए थे। कर्ण की हार हुई देख, अन्य आपके पक्ष के योद्धा अर्जुन के बाणों से छिन्न भिन्न हो, दसों दिशाओं को भागने लगे। हे राजन्! दुर्योधन उनको दौड़ते देख, उनको पीछे को लौटाने के लिये चिल्ला कर कहने लगा। अरे शूर क्षत्रियों! भागो मत! भागो मत! खड़े रहो, खड़े रहो। अर्जुन का वध करने में स्वयं जाता हूँ। मैं रण में, पाञ्चाल राजाओं का, सोमक राजाओं का तथा पाण्डवों का नाश करूँगा। प्रलय के समय जैसे काल का पराक्रम देखने में आता है, वैसे ही आज मैं अर्जुन के साथ युद्ध करूँगा और पाण्डवों को अपना पराक्रम दिखाऊँगा। आज मैं असंख्य बाणों की वृष्टि करूँगा। टीड़ी दल की तरह गिरते हुए बाणसमूह को योद्धागण देखेंगे। चौमासे में जैसे मेघ की धाराएँ दिखलायी पड़ती हैं, वैसे ही मैं धनुष धारण कर आज बाणों की वर्षा करूँगा। उसे सैनिक देखेंगे। आज मैं नतपर्व बाणों से युद्ध कर अर्जुन को परास्त करूँगा। अतः हे वीरों! तुम रणक्षेत्र से भागो मत और अर्जुन से मत डरो। जैसे मगर मच्छ युक्त सागर, तट पर पहुँच आगे नहीं बढ़ता, वैसे ही अर्जुन भी मेरे पराक्रम को सहन न कर सकेगा। यह कह कर, क्रोध में भर और लाल नेत्र कर दुर्योधन सेना साथ ले अर्जुन की ओर झपटा। दुर्योधन को आगे बढ़ते देख कृपाचार्य अश्वत्थामा के निकट जा कर बोले, दुर्योधन इस समय मारे क्रोध के अपने आपे में नहीं है। इसीसे वह पतंगे की तरह अर्जुन के सामने लड़ने को जा रहा है। पुरुषों में व्याघ्र समान दुर्योधन कहीं अर्जुन के हाथ से मारा न जाय, अतः तू उसके निकट जा, उसे लड़ने से रोक। नहीं तो अर्जुन के बाणों से दुर्योधन आज मारा जायगा। उसका नाश बचाने के लिये, तू आगे

जा और उसे आगे बढ़ने से रोक। अरे अर्जुन के मारे हुए केंचुली रहित सर्प की तरह चमकते हुए बाण, दुर्योधन को जला कर भस्म न करें; अतः तू दुर्योधन के पीछे लौट जा। हम लोगों के जीवित रहते दुर्योधन अकेला लड़ने को जाय, यह तो ठीक नहीं है। सिंह के साथ गज भिड़े और वह जीवित रहे—यह असम्भव बात है।

जब कृपाचार्य ने इस प्रकार कहा—तब शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ अश्वत्थामा ने दुर्योधन के पास जा कर, उससे कहा—हे दुर्योधन! हे गान्धारीनन्दन! मैं जब तक जीवित हूँ, तब तक तुम्हें यह उचित नहीं कि, मुझ जैसे अपने हितैषी का तिरस्कार कर, तुम अकेले लड़ो। तुम्हें अर्जुन को जीत लेने के सम्बन्ध में उतावला न होना चाहिये। तुम खड़े भर रहो, मैं अर्जुन का आगे बढ़ना अभी रोकता हूँ।

दुर्योधन बोला—हे द्विजवर्य! जब द्रोणाचार्य भी निज पुत्रवत् पाण्डवों की रक्षा करते हैं और तुम भी उनकी ओर से लापरवाह से हो, तब मैं लड़ने को न जाऊँ तो करूँ क्या? सचमुच मैं बड़ा मन्दभाग्य हूँ कि जिसने, तुम्हारा पराक्रम भी मन्द कर दिया है। धर्मराज अथवा द्रौपदी को प्रसन्न करने के लिये तुम अपना भरपूर पराक्रम नहीं दिखलाते होगे। मेरी समझ में नहीं आता कि, वास्तव में बात क्या है। धिक्कार है मुझ राज्यकामुक को, जिसके पीछे सर्वथा सुख भोगने योग्य मेरे बन्धु एवं सुहृद परम कष्ट पा रहे हैं। शस्त्रवेत्ताओं में श्रेष्ठ तथा महादेव जी के समान बलवान् एवं शक्तिशाली हो कर वह कौन पुरुष है, जो शत्रु का नाश न करेगा हाँ गौतमीपुत्र की बात निराली है—वह भला अर्जुन का नाश क्यों करने लगा। हे अश्वत्थामा! तुम तो ऐसे पराक्रमी हो कि, जहाँ तुम शस्त्रप्रहार करने को उद्यत हो जाओ, वहाँ क्या देवता और क्या दानव—कोई भी नहीं टिक सकता। अतः तुम मेरे ऊपर अनुग्रह करो और मेरे शत्रुओं को नष्ट कर डालो। हे द्रोणनन्दन! पाञ्चाल एवं सोमक राजाओं को उनकी सेनाओं सहित तुम नष्ट कर डालो। उनको छोड़ और जो बचेगा

उन्हें मैं तुमसे सुरक्षित हो, यमालय भेज दूँगा। हे विप्र! ये यशस्वी सोमक तथा पाञ्चाल राजागण, क्रोध में भर कर, दावानल की तरह मेरी सेना में घूम रहे हैं। अतः हे बलवान्! तुम पहले उनको एवं केकयों को रोको। वे अर्जुन की रक्षा में रह कर, हमारी सेना का नाश किये डालते हैं। हे अरिन्दम अश्वत्थामा! तुम तुरन्त उनके सामने जाओ। क्योंकि अब करो या पीछे करो, यह काम करना तुम्हींको है। हे विप्र! तुम पाञ्चाल राजाओं का नाश करने के लिये पैदा हुए हो। अतः तुम कमर कस कर, अब अनुचरों सहित पाञ्चालों का नाश कर डालो। यह बात आकाशवाणी द्वारा सब को विदित हो चुकी है और होना भी तदनुसार ही है। देवराज इन्द्र भी तुम्हारे प्रहार को नहीं सह सकते। तब पाञ्चालों और पाण्डवों का तो कहना ही क्या है? यह बात मैं तुमसे सत्य सत्य कहता हूँ। हे वीर! मैं सत्य सत्य कहता हूँ कि, सोमक तथा पाण्डव संग्राम में तुम्हारा सामना करने की शक्ति नहीं रखते। अब तुम शीघ्र लड़ने को रवाना हो और समय व्यर्थ ख़राब मत करो। देखो, अपनी ओर की सेना, अर्जुन की मार से घबड़ा भागी जा रही है। अतः तुम्हीं अपने दिव्यास्त्रों से पाण्डु के पुत्रों को और पाञ्चालों को ठीक कर सकते हो।

एक सौ साठ का अध्याय

अश्वत्थामा की वीरता

सञ्जय ने कहा—हे धृतराष्ट्र! दुर्योधन के इस प्रकार कहने पर, युद्ध-दुर्मद अश्वत्थामा ने शत्रुनाश के लिये वैसा ही उद्योग करना आरम्भ किया, जैसा कि इन्द्र, दैत्यों का नाश करने के लिये किया करते हैं। उस समय आपके पुत्र से, अश्वत्थामा ने कहा—हे दुर्योधन! तुम्हारा कहना सब यथार्थ है। मेरे पिता को और मुझे भी पाण्डव बड़े प्रिय हैं। उनको भी

हम लोगों में बड़ी भक्ति है। किन्तु युद्ध के समय उस भाव को न तो वे ही मानते हैं और न हम लोग ही। समर में तो हम लोग प्राण का मोह छोड़, शक्त्यनुसार युद्ध करते हैं। मैं, कर्ण, शल्य, कृप और कृतवर्मा क्षण भर में पाण्डवों की सेना का संहार कर सकते हैं, यदि हम न हों, तो वे लोग अर्ध निमेष में कौरवों की समस्त सेना का नाश कर डालें। किन्तु हे भरतवंशी राजन्! परस्पर युद्ध करते हुए उनका और हमारा तेज, परस्पर मिलने के कारण शान्त हो जाता है। अतः पाण्डवों के जीवित रहने तक, उनकी सेना का हारना असम्भव है। यह बात तुम सत्य समझना। पाण्डव शक्तिशाली हैं और अपने न्यायानुमोदित प्राप्त राज्य के लिये तुमसे झगड़ रहे हैं। अतः वे तुम्हारी सेना का नाश क्यों न करेंगे। दुर्योधन! तू महा-लोभी, कपटी, सब में अविश्वास करने वाला और महाअभिमानी है। इसीसे तुझे हम लोगों पर सन्देह होता है। यही नहीं, मैं जानता हूँ कि, तू दुष्ट है, पापी है, पापरूप है। अतः हे क्षुद्र पुरुष! तू अपनी तरह दूसरों को पापी समझता है। हे कुरुपुत्र! तेरे हित के लिये मैं रण में मरने तक लड़ता रहूँगा। मैं अब लड़ने को जाता हूँ और जा कर शत्रुओं से लड़ता हूँ। मैं तुझे प्रसन्न करने के लिये पाञ्चालों, सोमकों, केकयों और पाण्डवों से लड़ूँगा और विपक्षी प्रधान योद्धाओं को परास्त करूँगा। मेरे बाणों के प्रहार से आज पाञ्चाल तथा सोमक राजा लोग, वैसे ही भागेंगे जैसे सिंह के डर से गौएँ चारों ओर भागती हैं। धर्मपुत्र युधिष्ठिर को आज सारा जगत् अश्वत्थामामय देख पड़ेगा और सोमकों सहित उन्हें खिन्न होना पड़ेगा। हे भरतवंशी राजन्! पाञ्चाल और सोमक राजाओं के मारे जाने पर, जो राजा लोग मुझसे लड़ने आवेंगे, उन्हें भी मैं मार डालूँगा। हे राजन्! मेरे भुजबल से पीड़ित हो कर, उनका बचना दुर्लभ हो जायगा।

हे राजन्! इस प्रकार आपके पुत्र से कह कर और उसके हित के लिये समस्त प्राणियों में श्रेष्ठ महाबली अश्वत्थामा, समस्त धनुर्धरों को भगाता

हुआ युद्ध करने लगा। उस समय गौतमीनन्दन अश्वत्थामा ने केकय और पाञ्चाल राजाओं से कहा—अरे महारथियों! प्रथम तुम सब मेरे ऊपर मनमाने बाण फैंक तथा सवधान हो अपना हस्तलाघव प्रदर्शित करो।

अश्वत्थामा के इन वचनों को सुन, समस्त महारथियों ने अश्वत्थामा पर वैसे ही बाणवृष्टि की, जैसे मेघ जलवृष्टि करते हैं। अश्वत्थामा ने अपने बाणों से उन सब के चलाये बाण काट डाले औ पाञ्चालों, सोमकों, पाण्डवों और धृष्टद्युम्न के सामने ही पाण्डवों के दस वीर मार डाले। तब तो अश्वत्थामा द्वारा पीड़ित पाञ्चाल और सोमक समर छोड़ भाग खड़े हुए। शूर पाञ्चाल और सोमक राजा रण में भागते देख पड़े। पाञ्चालराज के महारथी पुत्र धृष्टद्युम्न के साथ, सौ वीर ऐसे थे जो रथों पर सवार थे तथा सिंह की तरह गम्भीर गर्जन करते थे और जो समरक्षेत्र में कभी पीछे पैर नहीं रखते थे। धृष्टद्युम्न ने अश्वत्थामा द्वारा अपने योद्धाओं का मारा जाना देख, अश्वत्थामा से कहा—अरे हो आचार्य द्रोण के मूर्ख पुत्र! इनकी हत्या करने से तुझे क्या मिलेगा? यदि सचमुच तुझे वीरता की ठसक है, तो आ मुझसे लड़। सामने भर तू आ जा, मैं तुझे अभी यमालय भेजता हूँ। यह कह धृष्टद्युम्न ने अश्वत्थामा के पैने बाण मारने शुरू किये। मदमत्त भ्रमर जैसे मधुपान के लालच में फँस, वृक्षों पर मड़राते हैं, वैसे ही सुवर्णपुँख और चमचमाते पंक्तिबद्ध बाण अश्वत्थामा के शरीर में घुसने लगे। उन बाणों के लगने से अश्वत्थामा बुरी तरह घायल हो गया। तब पैर से दबे हुए सर्प की तरह क्रोध में भर अभिमानी अश्वत्थामा ने हाथ में धनुष ले कर यह कहा—धृष्टद्युम्न! तू क्षण भर विश्राम कर ले। क्योंकि मैं अभी तुझे अपने पैने बाणों से यमालय भेजता हूँ।

धृष्टद्युम्न से यह कह, शत्रुनाशी अश्वत्थामा ने उस पर बड़ी फुर्ती से बाणवृष्टि की और उसे बाणों से ढक दिया। जब धृष्टद्युम्न उसके बाणों से पीड़ित हुआ, तब युद्धदुर्मद धृष्टद्युम्न ने उसे बाग्बाण से घायल करते हुए यह कहा—अरे ब्राह्मन्! क्या तुझे मेरी उत्पत्ति का हेतु और मेरी प्रतिज्ञा

नहीं मालूम। अरे दुष्ट ! मैं प्रथम द्रोण का वध कर लूँ, पीछे तुझे भी यमालय भेजूँगा। द्रोण अभी जीवित है—इसीसे मैं तुझे अभी नहीं मारता। रात पूरी होवे न होवे मैं आज तेरे पिता का वध करूँगा। फिर समर में तेरा वध कर, अपना सङ्कल्प पूर्ण करूँगा। अतः तुझसे जहाँ तक बन पड़े, वहाँ तक तू पाण्डवों से द्वेष कर, कौरवों के प्रति अपनी भक्ति प्रकट कर ले। पर याद रख, तू मेरे हाथ से जीवित बच कर, न जाने पावेगा। जो ब्राह्मण अपने ब्राह्मण वर्णोचित कर्त्तव्य को त्याग, क्षात्र धर्मानुसार आचरण करता है, वह पुरुष पुरुषाधम होने के कारण वध करने योग्य समझा जाता है।

जब धृष्टद्युम्न ने अश्वत्थामा से ऐसे कठोर वचन कहे, तब अश्वत्थामा ने क्रोध में भर, कहा—खड़ा तो रह, खड़ा तो रह। यह कह क्रोध विस्फारित नेत्रों से वह धृष्टद्युम्न की ओर ऐसे देखने लगा, मानों वह दृष्टि ही से उसे भस्म कर डालेगा। फिर उसने सर्प की तरह फुँसकार कर, धृष्टद्युम्न पर बाणवृष्टि की और बाणों से उसे ढक दिया। किन्तु धृष्टद्युम्न ज़रा भी न घबड़ाया। प्रत्युत उसने भी अश्वत्थामा के ऊपर, विविध प्रकार के बाणों की वृष्टि की। इस प्रकार उन दोनों वीरों के बीच प्राण का दाँव लगा—युद्ध रूपी द्यूत होने लगा। सिद्ध चारण तथा आकाशचारी देवता, अश्वत्थामा और धृष्टद्युम्न के इस घोर युद्ध को देख, उन दोनों की प्रशंसा करने लगे। उन दोनों ने मारे बाणों के आकाश तथा समस्त दिशाएँ ढक दीं। चारों ओर अंधकार फैल गया। तब वे उस अन्धकार में अदृश्य हो लड़ने लगे। दोनों वीर, धनुष को गोलाकार कर, नाचते हुए से जान पड़ते थे। वे एक दूसरे का वध करने का अवसर ढूँढ़ रहे थे। वे लोग बड़ी फुर्ती के साथ लड़ रहे थे। रणक्षेत्र में उपस्थित सहस्रों नामी योद्धा लोग, उनके युद्धकौशल को देख, उनकी प्रशंसा कर रहे थे। जैसे दो वनैले गज लड़ें, वैसे ही उन दोनों को लड़ते देख, दोनों सेनाओं में बड़ा हर्ष व्याप्त हो गया। अतः दोनों ओर के वीर, सिंहनाद करने लगे, शङ्ख बजाने लगे और सैकड़ों सहस्रों मारू बाजे

भागने लगे। दर्शकों को भयभीत करने वाला वह तुमुल युद्ध एक मुहूर्त तक एक सा चलता रहा। इस युद्ध में अश्वत्थामा ने धृष्टद्युम्न की ध्वजा, धनुष और छत्र को काट, उसके सारथि और रथ के चारों घोड़ों को मार डाला। फिर आगे बढ़ अश्वत्थामा ने नतपर्व बाणों के प्रहारों से सैकड़ों पदगों पाञ्चाल योद्धाओं तथा राजाओं को भगा दिया। उस समय पाण्डवों की सेना बहुत पीड़ित हुई। तब पाञ्चाल वीर धृष्टद्युम्न ने अश्वत्थामा के इन्द्र तुल्य पराक्रम को देख, सौ बाण मार कर, सौ योद्धाओं के मस्तकों को काट डाला और तीन पैने बाण मार कर, तीन महारथी मार डाले। अश्वत्थामा ने द्रुपदनन्दन धृष्टद्युम्न और महारथी अर्जुन के देखते ही देखते अगणित पाञ्चालों को मार डाला और उनके रथों और ध्वजाओं को नष्ट कर डाला। यह देख पाञ्चाल और सृञ्जय रथ छोड़ भागने लगे। शत्रुओं को इस प्रकार परास्त कर, अश्वत्थामा बड़े ज़ोर से मेघ की तरह गर्जा। प्रलय के समय, सब को भस्म कर जैसे शङ्कर जान पड़ते हैं, वैसे ही अनेक शूरों का संहार कर अश्वत्थामा भी जान पड़ता था। शत्रुओं को परास्त कर जैसे इन्द्र शोभायमान होते हैं, वैसे ही सहस्रों शत्रुओं को पराजित कर, प्रतापी अश्वत्थामा सुशोभित हुआ। उस समय कौरव पक्षीय योद्धा उसकी सराहना करने लगे।

एक सौ इकसठ का अध्याय

कौरव सेना का पलायन

सञ्जय ने कहा—हे धृतराष्ट्र! अपनी सेना की दुर्दशा देख, पाण्डुपुत्र युधिष्ठिर तथा भीमसेन ने अश्वत्थामा को घेरा। तब दुर्योधन द्रोणाचार्य के साथ पाण्डवों पर चढ़ आया और उनमें युद्ध होने लगा। वह युद्ध बड़ा भयङ्कर था और भीरुओं को भय देने वाला था। क्रोध में भर भीम ने अम्बष्ठ, मालव, वङ्ग, शिवि और त्रैगर्त आदि राजाओं को मार कर, यमलोक को

भेज दिया। उसने अभीषाह, शूरसेन तथा अन्य युद्धोन्मत्त क्षत्रियों को नष्ट कर, उनके रक्त और माँस से भूमि में कीचड़ कर दी। दूसरी ओर अर्जुन ने भी पार्वत्य योद्धाओं, मद्रदेशी राजाओं तथा मालवे के राजाओं को तीक्ष्ण बाणों से मार डाला। तदनन्तर अर्जुन ने हाथियों पर प्रहार किया। तब वे हाथी दो शृङ्ग वाले पर्वतों की तरह मर मर कर, भूमि में गिरने लगे। उन हाथियों की कटी हुई सूँड़ें रणभूमि में इधर उधर लुढ़क रही थीं। उस समय ऐसा जान पड़ता था, मानों साँप रेंग रहे हों। राजाओं के सुवर्ण के बने टूटे फूटे छत्रों से पूर्ण रणभूमि सूर्य, चन्द्र आदि ग्रहों से भरे हुए आकाश की तरह शोभा पा रही थी। उस समय द्रोण के रथ के निकट, मारो-मारो और निडर हो उन्हें छेद डालो की भयङ्कर ध्वनि सुन पड़ी। उसे सुन द्रोण अत्यन्त क्रुद्ध हो गये। उन्होंने वायव्यास्त्र का प्रयोग कर, योद्धाओं का संहार किया। द्रोणाचार्य के प्रहार से खिन्न हो कर और भयभीत हो, पाञ्चालराज गण, अर्जुन और भीम के सामने ही रणक्षेत्र से भागने लगे। तदनन्तर भीमसेन और अर्जुन ने अपने साथ बहुत से रथियों की सेना ले, यथाक्रम उत्तर और दक्षिण की ओर से द्रोणाचार्य पर आक्रमण किया और उनके ऊपर बहुत से पैने बाणों की वर्षा की। तब मत्स्य और सोमकवंशी वीरों सहित पाञ्चाल योद्धा उनके पीछे पीछे गये। इसी समय आपकी सेना के प्रधान प्रधान योद्धा द्रोणाचार्य की सहायता के लिये उनके निकट पहुँचे। परन्तु अन्धकार और निद्रा से दुःखित हुए, कुरुसेना के योद्धा लोग अर्जुन के बाणों से पीड़ित हो कर, फिर छिन्न भिन्न हो गये। उस समय उन योद्धाओं को पलायन करते देख, पराक्रमी द्रोणाचार्य आपके पुत्र दुर्योधन ने स्वयं निवारण किया। किन्तु वे रोके जाने पर भी न रुके। उस महाघोर अन्धकार में आपके पुत्र की सेना पाण्डवों की मार से विकल हो, चारों ओर भागने लगी। सेनापति योद्धा तथा पराक्रमी राजा लोग अपनी सेना को छोड़ और भयभीत हो भाग खड़े हुए।

एक सौ बासठ का अध्याय

सोमदत्तवध

सञ्जय ने कहा—हे धृतराष्ट्र! सात्यकि ने सोमदत्त को बड़ा भारी धनुष फिराते हुए देख, अपने सारथि से कहा—हे सूत! तू मुझे सोमदत्त के निकट ले चल। मैं सत्य सत्य कहता हूँ कि, आज मैं इस कुरुकुलाधम सोमदत्त को मारे बिना युद्धक्षेत्र से न जाऊँगा।

सारथि ने सात्यकि का यह वचन सुन, मन के समान शीघ्रगामी एवं शङ्ख की तरह सफेद रंग के सिंधु देशीय घोड़ों को तेज़ी से हाँका। मन और वायु के समान शीघ्रगामी वे घोड़े रणभूमि में सात्यकि के रथ को वैसे ही खींचने लगे, जैसे असुरों का नाश करने वाले इन्द्र के रथ के घोड़े उनके रथ को खींचते हैं। सात्यकि को बड़ी तेज़ी से अपनी ओर आते देख, सोमदत्त ने सात्यकि को बाणों से वैसे ही ढक दिया, जैसे जलयुक्त बादल सूर्य को ढक लेते हैं। सात्यकि ने भी निर्भय चित्त से बाणवृष्टि कर, कौरवों में मुख्य सोमदत्त को छिपा दिया। तदनन्तर सोमदत्त ने आठ बाण मार, सात्यकि की छाती पर प्रहार किया। तब सात्यकि ने भी बहुत से तीक्ष्ण बाणों से सोमदत्त को विद्ध किया। इस प्रकार वे दोनों एक दूसरे को घायल कर और रक्त से रञ्जित हो, समरभूमि में दो पुष्पित सालवृक्षों की तरह जान पड़ते थे। वे एक दूसरे को ऐसे घूर रहे थे, मानों दृष्टि ही से भस्म कर डालेंगे। मण्डलाकार गति से रथ पर सवार हो घूमते हुए उन दोनों वीरों ने एक दूसरे के शरीरों को बाण से विद्ध कर, शरीरों को बाणमय कर डाला। वे दोनों बाणों से परिपूरित शरीरों से, ऐसे जान पड़ने लगे, मानों वर्षाकालीन खद्योत समूह से युक्त दो वृक्ष हों। इसी प्रकार महारथी सोमदत्त और सात्यकि बाणों से पीड़ित हो, लुकों से युक्त दो गजों की तरह रणक्षेत्र में विराजमान थे। तदनन्तर महारथी सोमदत्त ने यदुवीर सात्यकि के बड़े धनुष को काट दिया और उसे पचीस बाणों से विद्ध

कर के फ़ुर्ती, के साथ पुनः उसे दस बाणों से विद्ध किया तदनन्तर सात्यकि ने फिर एक बाण मार कर, सोमदत्त के रथ की सुवर्ण-रत्न-भूषित ध्वजा काट कर, पृथिवी पर गिरा दी। तब सोमदत्त ने सात्यकि के शरीर में बीस बाण मारे। तदनन्तर सात्यकि ने अत्यन्त क्रुद्ध हो कर, एक पैने क्षुरप्र बाण से सोमदत्त का धनुष काट दन्तविहीन हाथी की तरह अशक्त सोमदत्त के नतपर्व एवं सुवर्णपुंख सौ बाण मारे। इतने में सोमदत्त ने दूसरा धनुष उठा लिया और इतने बाण बरसाये कि सात्यकि बाणों में छिप गया। तब क्रोध में भर सात्यकि ने भी सोमदत्त को बाणों से विद्ध कर डाला। इस पर सोमदत्त ने भी सात्यकि के बाण मार उसे पीड़ित किया। इसी बीच में भीम वहाँ पहुँच, सात्यकि को सहायता देने लगा। भीम ने दस बाण सोमदत्त के मारे। इस पर सोमदत्त ने मचल कर, भीम पर तेज़ बाण छोड़े। सात्यकि ने एक बड़ा परिघ उठा कर सोमदत्त की छाती में मारा। तब सोमदत्त ने मुसक्या कर, बाण मार उस परिघ के दो टुकड़े कर डाले। वह लोहे का बड़ा परिघ दो टुकड़े हो भूमि पर वैसे ही गिर पड़ा; जैसे वज्राहत पर्वतशिखर टूट कर पृथिवी पर गिरता है। यह देख सात्यकि ने भल्ल बाण से सात्यकि के हाथ के दस्ताने काट डाले। फिर चार बाण मार, उसके उत्तम घोड़ों को मार डाला और सारथि का मस्तक उड़ा दिया। तदनन्तर बली सात्यकि ने प्रज्वलित अग्नि जैसा चमचमाता और अति पैना बाण सोमदत्त की छाती में मारा। वह बड़े वेग से छोड़ा हुआ बाण सोमदत्त की छाती में घुस गया। सात्यकि के बाणप्रहार से महारथी सोमदत्त को बुरी तरह घायल कर डाला। यहाँ तक कि सोमदत्त निर्जीव हो भूमि पर गिर पड़ा। सोमदत्त का मारा जाना देख, कौरव पक्ष के वीरों ने बाण छोड़ते हुए सात्यकि पर आक्रमण किया। उन लोगों ने सात्यकि पर अगणित बाणों की वर्षा की। यह देख कर, युधिष्ठिरादि पाण्डवों और प्रभद्रकों की बड़ी भारी सेना ने, द्रोण के ऊपर धावा बोला। क्रुद्ध युधिष्ठिर ने द्रोणाचार्य के सामने खड़ी आपकी सारी सेना को बाण मार मार कर, भगा दिया। धर्मराज का

यह कृत्य देख, द्रोण के नेत्र मारे क्रोध के लाल हो गये। वे झटपट युधिष्ठिर की ओर लपके। उन्होंने सात तीक्ष्ण बाण धर्मराज की छाती में मारे। इस पर युधिष्ठिर के नेत्र भी मारे क्रोध के लाल हो गये और उन्होंने पाँच बाण मार, द्रोण को विद्ध किया। इन बाणों के लगने से आचार्य द्रोण घायल हो गये और वेदना के कारण जावड़े चाटने लगे। फिर उन्होंने युधिष्ठिर के रथ की ध्वजा और उनका धनुष काट डाला। धर्मराज ने उस धनुष के कटते ही झट दूसरा धनुष ले लिया और फिर द्रोण के सारथि और उनके रथ की ध्वजा पर एक सहस्र बाण मारे। उनका यह कार्य बड़ा ही विस्मयोत्पादक था। हे राजन्! युधिष्ठिर के बाणप्रहार से द्रोणाचार्य दो घड़ी तक अचेत अवस्था में रहे और रथ के खटोले पर पड़े रहे। जब वे सचेत हुए; तब उन्होंने क्रोध में भर धर्मराज पर वायव्यास्त्र का प्रयोग किया। किन्तु इससे युधिष्ठिर घबड़ाये नहीं। उन्होंने भी वायव्यास्त्र छोड़ा। अब दोनों वायव्यास्त्र बीच ही में आपस में टकरा गये। इतने में धर्मराज ने द्रोण के विशाल धनुष के दो टुकड़े कर डाले। तब क्षत्रियमर्दन द्रोण ने झट दूसरा धनुष उठाया। किन्तु भल्ल बाण मार धर्मराज ने उसे भी काट डाला। इस बीच में श्रीकृष्ण ने धर्मराज से कहा—धर्मराज! मेरा कहना मान कर, तुम द्रोण से मत लड़ो। क्योंकि वे तुम्हें पकड़ने के लिये सदा यत्नवान् रहते हैं। अतः उनके साथ तुम्हारा लड़ना मुझे ठीक नहीं जान पड़ता, द्रोण से तो तुम उस धृष्टद्युम्न को भिड़ने दो, जिसने उनका नाश करने ही के लिये जन्म लिया है। वही द्रोण का वध करेगा। तुम आचार्य को छोड़, दुर्योधन की ओर जाओ। क्योंकि राजा को राजा ही के साथ लड़ना सोहता है। राजा को राजातिरिक्त अन्य लोगों से लड़ना उचित नहीं है। देखो, अर्जुन और भीमसेन, मेरी सहायता से कौरवों से लड़ रहे हैं। अब तुम गजों, अश्वों तथा रथों को साथ ले, दुर्योधन से जा कर लड़ो।

श्रीकृष्ण के इन वचनों को सुन, धर्मराज ने कुछ देर तक मन ही मन विचार किया। तदनन्तर वे वहाँ जाने को उद्यत हुए जहाँ मुख फाड़े काल

की तरह भीमसेन शत्रुओं का नाश कर रहा था। अपने विशाल रथ से वर्षा-कालीन मेघ की तरह गड़गड़ाहट करते, धर्मराज युधिष्ठिर, शत्रुओं का संहार करने में संलग्न भीमसेन की ओर चले। आचार्य द्रोण इस रात में पाण्डवों के पक्ष के पाञ्चाल तथा अन्य राजाओं का संहार करने लगे।

एक सौ तिरसठ का अध्याय

मसालें जला जला कर युद्ध

सञ्जय ने कहा—हे राजन्! उस समय धूल और अन्धकार से पृथिवी आच्छादित थी। उस समय दोनों ही ओर से महाभयङ्कर युद्ध हो रहा था। रणभूमि में खड़े योद्धा आपस में एक दूसरे को देख भी नहीं पाते थे। वे लोग अपने अपने नाम ले और अटकल ही से हाथियों, घोड़ों और पैदल सिपाहियों का संहार कर रहे थे। वह रोमाञ्चकारी युद्ध उत्तरोत्तर ज़ोर पकड़ता जाता था। हम लोगों की ओर के वीर द्रोण, कृप, कर्ण और शत्रुपक्ष के भीम, धृष्टद्युम्न और सात्यकि—युद्ध करते हुए एक दूसरे की सेना को नष्ट कर रहे थे। हे धृतराष्ट्र! सेनाएँ धूल तथा अन्धकार से ढक गयीं और चारों ओर से उन्हें महारथी नष्ट करने लगे। तब वे लोग इधर उधर भागने लगे। उनके नेत्र विह्वल हो गये और वे इधर उधर भागने लगे। उनमें से बहुत से योद्धा तो खेत रहे। आपके पुत्र की कुटिल नीति के कारण अन्धकार में दिङ्मूढ़ बने हुए सहस्रों महारथी, सहस्रों महारथियों द्वारा मारे गये। रणभूमि में अन्धकार छाया हुआ था। उस समय सेनापति और सैनिक बहुत घबड़ाये।

धृतराष्ट्र ने पूँछा—हे सञ्जय! उस समय जब तुम लोग पाण्डवों के सैनिकों के अस्त्रों शस्त्रों से पीड़ित और अन्धकार से विकल हुए थे, तब तुम लोगों की बुद्धि समरभूमि में क्यों कर स्थिर रह सकी? मेरी सेना और पाण्डवों की सेना में प्रकाश क्योंकर हुआ?

सञ्जय ने कहा—महाराज! तदनन्तर मरने से बची हुई सेना, सेनापतियों की आज्ञा से पुनः व्यूह बाँध कर समरक्षेत्र में खड़ी हुई। आपकी व्यूहबद्ध सेना के आगे द्रोणाचार्य और पीछे राजा शल्य, अगल बगल अश्वत्थामा और शकुनि खड़े थे। दुर्योधन अपनी समस्त सेना की रक्षा करता हुआ स्वयं शत्रुओं की ओर जाने लगा। उसने पैदल सिपाहियों से कहा—तुम लोग हथियार छोड़ कर हाथों में मशालें ले लो। तदनुसार उन सिपाहियों ने मशालें, लुकड़े, पलीते जला कर हाथों में ले लिये। उनके प्रकाश से आपकी सेना में प्रकाश हो गया। उस व्यूहबद्ध सेना के पैदल चलने वाले सिपाही अपने पैने अस्त्र शत्रुओं पर फेंक, हाथों में मशालें लिये हुए शोभित हुए। उस रात में सेना के समस्त योद्धा हाथों में मशालें लिये हुए पैदल सिपाहियों से युक्त हो, ऐसे जान पड़े, मानों आकाशस्थित मेघ बिजली से युक्त हों। उसी समय सुवर्ण कवचधारी, पराक्रमी द्रोणाचार्य शत्रुसैन्य को चारों ओर से अग्नि की तरह उत्तप्त करते हुए, मध्यान्हकालीन प्रचण्ड सूर्य की तरह रणभूमि में खड़े थे। उस समय उस दीपालोक के सहारे सैनिक शस्त्रों को शत्रुसैन्य पर छोड़ने लगे। लोहे की चमचमाती गदाएँ, सफेद परिघ और शक्तियों पर प्रकाश की ज्योति पड़ने से लोगों की आँखें, चौंधिया जाती थीं। इस प्रकार युद्ध में प्रवृत्त क्षत्रियों के इधर उधर घूमने से उनके छत्र, चँवर, मणिजटित मालाएँ और चमचमाते खड्ग उस प्रकाश से चमकने लगे। शूरवीरों के रत्नजटित कवच और रुधिर में सने अस्त्र शस्त्र वैसे ही जान पड़ते थे, जैसे बादलों में बिजली। एक दूसरे पर वार करने में लगे हुए, शूरों के शरीर वैसे ही शोभायमान जान पड़ते थे, जैसे वायु से हिलते हुए फूलों से युक्त कमलों के वन। अधिक क्या कहा जाय? इस समय तो ऐसा जान पड़ने लगा, मानों देवदारु के महावन में प्रचण्ड दावानल में जलते हुए वृक्ष, सूर्यरश्मियों से और भी अधिक प्रकाशित हो रहे हों।

तब पाण्डवों ने हम लोगों की सेना में प्रकाश देख अपने पैदल

सिपाहियों को मशालें लेने की आज्ञा दी। तदनुसार सिपाहियों ने जलती हुई मशालें, लुक्के और पलीते हाथों में ले लिये। प्रत्येक हाथी पर सात, सात, प्रत्येक रथ पर दस, प्रत्येक घोड़े पर दो और प्रत्येक ध्वजा पर और सेना के दहिने बाएँ तथा पीछे बहुत सी मशालें जलायी गयीं। इस प्रकार पाण्डवों की सेना में भी प्रकाश फैल गया। इनके अतिरिक्त बहुत से अन्य लोग मशालें लिये हुए इधर उधर घूमने लगे। पाण्डवों से रक्षित शत्रुसैन्य में इस प्रकार उजियाला हुआ। जैसे प्रचण्ड सूर्य की किरणें खूब तपती हैं; वैसे ही आपकी सेना के योद्धा शत्रुसैन्य के योद्धाओं को देख और भी अधिक उत्तप्त हो उठे। उस समय उभय सेनाओं के कृत्रिम प्रकाश से आकाश, पृथिवी तथा समस्त दिशाएँ प्रकाशित हो गयीं। उस समय आकाशचारी देवता, यक्ष, गन्धर्व, अप्सरा और सिद्ध पुरुष उस युद्ध को देखने के लिये अन्तरिक्ष में एकत्रित हुए। उसी समय बड़े बड़े शूर वीर शत्रुओं के हाथों से मारे जा कर स्वर्ग को जाने लगे। देवता, गन्धर्व, यक्ष आदि अन्तरिक्ष में खड़े खड़े कौरवों और पाण्डवों का युद्ध देख रहे थे। हाथियों, घोड़ों और रथों से पूर्ण दोनों ओर की सेनाएँ क्रुद्ध योद्धाओं के प्रहारों से घबड़ा कर, इधर उधर दौड़ती हुईं, व्यूहबद्ध दानवों और देवताओं की सेनाओं की तरह जान पड़ती थीं।

हे राजन्! उस रात की लड़ाई प्रलयकालीन संहार का दृश्य उपस्थित कर रही थी। योद्धाओं के हाथ से छूटी हुई शक्तियों की आँधी चल रही थी। महारथीरूपी बादल उमड़े चले आते थे। घोड़ों की हिनहिनाहट और हाथियों का चिंघाड़रूपी मेघगर्जन हो रहा था। शस्त्ररूपी जल की वृष्टि हो रही थी। रुधिररूपी धाराएँ बह रही थीं। शरत्कालीन सूर्य जैसे लोगों को उत्तप्त करता है; वैसे ही विप्रश्रेष्ठ द्रोण, पाण्डवों को उत्तप्त कर रहे थे।

एक सौ चौसठ का अध्याय

द्रोण युद्ध

जिस रणक्षेत्र में कुछ काल पूर्व अन्धकार और धूल छा रही थी, उस युद्धक्षेत्र में मसालों के जलते ही चारों ओर उजियाला हो गया। दोनों पक्षों के योद्धा हाथों में हथियार लिये हुए और भूमि पर डटे हुए, टकटकी बाँध कर, एक दूसरे को घूर रहे थे। समरभूमि में चारों ओर रत्नजटित सहस्रों मसालों से, जिनमें सुगन्धित तेल जलाया जा रहा था, समरक्षेत्र वैसा ही सुशोभित जान पड़ता था, जैसा कि, नक्षत्रों से शोभित आकाश जान पड़ता है। प्रलय उपस्थित होने पर जैसे पृथिवी जलती हुई देख पड़ती है, वैसे ही उन जलती हुई मशालों के प्रकाश से झलमल करती हुई समरभूमि प्रकाशित हो रही थी। वर्षाकाल में जुगुनुओं से युक्त वृक्ष जैसे सुशोभित होते हैं, वैसे मसालों के प्रकाश से समस्त दिशाएँ सुशोभित जान पड़ती थीं।

हे राजन्! आपके पुत्र के आदेशानुसार, वीर लोग अलग अलग वीरों के साथ युद्ध करने लगे। गजारोही गजारोही के साथ, अश्वारोही अश्वारोही के साथ और पैदल पैदल के साथ लड़ने लगे। उभय पक्ष की चतुरंगिणी सेनाओं में महासंहार होने लगा। उस समय उत्तेजित अर्जुन ने कौरवों तथा उनकी सेनाओं का नाश करना आरम्भ किया।

धृतराष्ट्र ने पूँछा – हे सञ्जय! क्रुद्ध अर्जुन जब मेरी सेना में घुसा, तब तुम्हारे मन में क्या क्या विचार उठे थे और उस समय तुमने क्या किया था? शत्रुदमनकारी कौन कौन वीर उसके सामने गये थे। अर्जुन के सेना में घुस जाने पर, द्रोण के दाये तथा बाये पहिये की रक्षा कौन कौन वीरवर रहे थे? जब द्रोण आगे बढ़, शत्रुसंहार कर रहे थे, तब कौन कौन वीर उनके पृष्ठ की ओर रक्षक हो खड़े थे और उनके रथ के आगे कौन कौन से वीर पुरुष चलते थे? महापराक्रमी एवं अजेय द्रोणाचार्य, रथों के मण्डलों में नृत्य करते हुए से बड़ी शीघ्रता से पाञ्चालों की सेना में पहुँचे और धूमकेतु की तरह

बाण मार कर, पाञ्चाल राजाओं के रथियों को जला कर भस्म कर डाला। इतना होने पर भी द्रोणाचार्य कैसे मारे गये? हे सूत! मैं देख रहा हूँ कि, तू शत्रुपक्षी योद्धाओं को धैर्यधारी, विजयी, हर्षितमना तथा उन्नतिशील बतलाता है। किन्तु मेरी सेना के योद्धाओं के सम्बन्ध में तू कहा करता है कि—नष्ट हो गये, मारे गये, विदीर्ण हो गये, रथी रथरहित हो गये आदि आदि। अतः जो यथार्थ बात हो वही तू मुझसे कह।

सञ्जय ने कहा—हे महाराज! दुर्योधन ने द्रोणाचार्य का मत ले कर, अपने अधीनस्थ भाइयों से तथा कर्ण, वृषसेन, मद्रराज, महाबाहु तथा दुर्धर्ष उनके अनुचरों से कहा—तुम लोग बड़ी सवाधानी के साथ लड़ो और द्रोणाचार्य की पीछे से रक्षा करो। कृतवर्मा द्रोणाचार्य के रथ की दहिनी ओर तथा शल्य रथ की बाईं ओर रह कर, रथ के दहिने बाएँ पहियों की रक्षा करें। त्रिगर्त देश के बचे हुए वीरों को दुर्योधन ने द्रोण के रथ के आगे रहने की आज्ञा दी। जब द्रोणाचार्य और पाण्डव लड़ने के लिये भली भाँति तैयार हो गये; तब आपके पुत्र ने योद्धाओं को सम्बोधन कर के कहा—द्रोणाचार्य जिस समय शत्रुओं का नाश करने लगें, उस समय तुम लोग बड़ी सावधानता से उनकी रक्षा करना। द्रोणाचार्य बड़े बलवान और प्रतापवान हैं। वे बड़ी फुर्ती से बाण छोड़ते हैं। वे समर में देवताओं को भी पराजित कर सकते हैं। उनके लिये सोमक और पाञ्चाल तो कुछ भी नहीं हैं। मुझे तुम लोगों से यही कहना है कि, जैसे बने वैसे तुम सब मिल कर, धृष्टद्युम्न से द्रोण की रक्षा करना। मैं पाण्डवों की सेना में धृष्टद्युम्न को छोड़ अन्य किसी को भी ऐसा नहीं पाता, जो समर में द्रोण का सामना कर सके।

अतः तुम सब लोग बड़ी सावधानी से द्रोण की रक्षा करना। यदि वे सुरक्षित रहें, तो मैं समझता हूँ कि, वे सोमकों और सृञ्जयों का नाश कर डालेंगे। रण में सब से आगे रह कर, द्रोण समस्त सृञ्जयों का नाश करेंगे। अश्वत्थामा तब निस्सन्देह धृष्टद्युम्न को मार डालेगा। महारथी कर्ण अर्जुन

का नाश करेगा और युद्ध की दीक्षा लेने वाला, मैं स्वयं भीम का वध करूँगा। इनके अतिरिक्त जो तेजोहीन पाण्डव बच जाँयगे, उन्हें हमारे योद्धा, शीघ्रता से नाश कर डालेंगे। इस प्रकार चिरकाल तक हमारा ही विजय होगा। अतः अब तुम युद्धभूमि में महारथी द्रोणाचार्य की रक्षा करो।

हे राजन्! इस प्रकार कह कर, आपके पुत्र दुर्योधन ने सेना को लड़ने के लिये आज्ञा दी। हे भरतवंश में श्रेष्ठ राजन्! परस्पर विजयाभिलाषी योद्धाओं में उस रात में बड़ा विकट युद्ध हुआ। इस युद्ध में अर्जुन भाँति भाँति के अस्त्रों से कौरवों की सेना को पीड़ित करने लगा और कौरव योद्धा भी विविध प्रकार के शस्त्रों से अर्जुन को पीड़ित करने लगे। इस युद्ध में अर्जुन भाँति भाँति के अस्त्रों से कौरवों की सेना को उत्पीड़ित करने लगा। अश्वत्थामा पांचाल राजाओं के ऊपर तथा द्रोणाचार्य सृञ्जय राजाओं के ऊपर नतपर्व बाणों की वृष्टि कर उन्हें ढकने लगे। हे राजन्! परस्पर युद्ध करते हुए पाण्डव और पाञ्चाल राजागण तथा कौरव रणभूमि के ऊपर संहारसूचक घोर शब्द करने लगे। यह युद्ध ऐसा भयङ्कर हुआ कि, वैसा घोर युद्ध न तो कभी पहले किसी ने देखा था और न सुना था।

एक सौ पैंसठ का अध्याय

युधिष्ठिर का पलायन

सञ्जय ने कहा—हे राजन्! प्राणियों का संहार करने वाला, भयङ्कर तथा रौद्र रात्रियुद्ध होने लगा। उस समय धर्मपुत्र युधिष्ठिर ने पांचाल, पाण्डव तथा सोमकों को आज्ञा दी कि, तुम सब एक साथ द्रोण पर आक्रमण कर, उन्हें मार डालो।

युधिष्ठिर के वचन सुन, क्रोध में भरे हुए पाञ्चाल तथा सृञ्जय राजाओं ने पूर्ण उत्साह, मानसिक बल तथा शारीरिक शक्ति लगा, द्रोण पर आक्रमण किया।

एक मदमत्त हाथी जैसे दूसरे मदमत्त हाथी पर टूट पड़े, वैसे ही युधिष्ठिर ने द्रोण के ऊपर आक्रमण किया। तब कृतवर्मा ने युधिष्ठिर का सामना किया। कुरुकुमार भूरि ने युद्ध में सेना के आगे खड़े हो कर और चारों ओर बाणवृष्टि कर, सात्यकि पर आक्रमण किया। महारथी पाण्डुपुत्र सहदेव, दण्ड देने के लिये द्रोण की ओर बढ़ने लगा। सूर्यपुत्र कर्ण ने सामने आ उसको आगे बढ़ने से रोका। मुख फाड़े हुए काल की तरह भीमसेन लड़ने के लिये आगे बढ़ा। दुर्योधन स्वयं ही उस काल रूप शत्रु से लड़ने के लिये तैयार हुए। अत्यन्त फुर्तीला सुबलपुत्र शकुनि युद्धकुशल नकुल से भिड़ा। कृपाचार्य ने रथ पर सवार और लड़ने के लिये आगे बढ़ते हुए शिखण्डी का सामना किया। मयूर के समान वर्ण वाले घोड़ों से युक्त रथ पर सवार, राजा प्रतिविन्ध्य से दुःशासन भिड़ गया। सैकड़ों माया जानने वाले भीमनन्दन घटोत्कच को अश्वत्थामा ने आगे बढ़ने से रोका। द्रोणाचार्य को पकड़ने के लिये ससैन्य आते हुए द्रुपद को वृषसेन ने आगे बढ़ने से रोका। हे राजन्! राजा विराट् को, जो द्रोणाचार्य का नाश करने के लिये बढ़ आया था, मद्रराज ने रोका। नकुलपुत्र शतानीक बड़ी तेज़ी से द्रोणाचार्य की ओर बढ़ रहा था। उसे चित्रसेन ने बाणों से रोका। योद्धाओं में श्रेष्ठ अर्जुन को जो कौरव सैन्य का नाश करने के लिये आगे बढ़ा चला आता था, अलम्बुष राक्षस ने रोकना आरम्भ किया। महाधनुर्धर द्रोण हर्षित हो, शत्रुसैन्य का संहार करने लगे। उनके कार्य में द्रुपदनन्दन धृष्टद्युम्न ने बाधा डाली। पाण्डवपक्ष के अन्य महारथी जो लड़ने को आये थे, उनको आपकी ओर के महारथियों ने रोका। इस युद्ध में गजारोही गजारोहियों पर सहसा आक्रमण कर लड़ रहे थे और अगणित सैनिकों का नाश कर रहे थे। हे राजन्! आधी रात के समय लड़ने के लिये जाते हुए घुड़सवार बड़े वेग से वैसे ही चले जा रहे थे और शत्रुओं से लड़ उनको भगा रहे थे, जैसे पंखधारी पहाड़ बड़े वेग से आपस में लड़ कर, एक दूसरे को भगाते हों। घुड़सवार प्रास, शक्ति और ऋष्टि आदि आयुधों को हाथ में ले कर, भयङ्कर

अलग गर्जना करते हुए आपस में लड़ रहे थे । बहुत से पैदल सिपाही भी गदा, मूसल तथा नाना प्रकार के शस्त्रों को ले, आपस में लड़ रहे थे। जैसे तट उमड़ते हुए सागर को रोक लेता है, वैसे ही हृदीकनन्दन कृतवर्मा ने युधिष्ठिर को आगे बढ़ने न दिया। युधिष्ठिर ने पाँच बाण कृतवर्मा के मारे। फिर बीस बाण मार कर उनसे कहा—अरे कृतवर्मा! खड़ा रह, खड़ा रह, भागा कहाँ जाता है। यह सुन, कृतवर्मा अत्यन्त क्रुद्ध हुआ और उसने भल्ल बाण से युधिष्ठिर का धनुष काट डाला। फिर सात बाण मार कर उनको विद्ध किया। महारथी युधिष्ठिर ने दूसरा धनुष उठा कृतवर्मा की छाती और दोनों भुजाओं पर बीस बाण मारे। इस प्रकार जब धर्मपुत्र ने कृतवर्मा को बाणों से विद्ध किया, तब वह काँप उठा और क्रोध में भर उसने युधिष्ठिर के सात बाण मारे। तब युधिष्ठिर ने उसका धनुष और दस्ताने काट डाले और बड़े पैने पाँच बाण उसके ऊपर छोड़े। वे बाण कृतवर्मा के बहुमूल्य सुवर्णकवच को फोड़, वैसे ही भूमि में घुस गये जैसे सर्प बिल में घुसता है। कृतवर्मा ने पल ही भर में दूसरा धनुष उठा लिया और सात बाण युधिष्ठिर के तथा नौ उनके सारथि के मारे। तब धर्मराज ने धनुष तो रख दिया और सर्प के समान भयङ्कर एक बढ़िया शक्ति कृतवर्मा पर छोड़ी। उस शक्ति में सोने के पत्तर जड़े हुए थे और वह बड़ी वज़नी थी। वह शक्ति कृतवर्मा के हाथ को घायल करती हुई भूमि में घुस गयी । तदनन्तर युधिष्ठिर ने दूसरा धनुष उठा नतपर्व बाणों से कृतवर्मा को ढक दिया। तब कृतवर्मा ने आधे निमेष में युधिष्ठिर को रथ, घोड़ों और सारथि से रहित कर डाला। तब युधिष्ठिर ने ढाल तलवार ली; किन्तु कृतवर्मा ने उन दोनों के भी टुकड़े टुकड़े कर डाले। तब धर्मराज ने सुवर्ण दण्ड विभूषित एक तोमर बड़ी फुर्ती के साथ कृतवर्मा के मारा। किन्तु फुर्तीले कृतवर्मा ने उसके भी टुकड़े कर डाले। फिर कृतवर्मा ने धर्मराज के सौ बाण मार उनका कवच छिन्न भिन्न कर डाला। आकाश से जैसे नक्षत्र टूटें, वैसे ही बाणों के प्रहार से धर्मराज का कवच टुकड़े टुकड़े हो भूमि पर गिर पड़ा। धर्मराज का रथ टूटा, कवच टूटा और बाणों की

चोट से वे पीड़ित हुए। तब वे भागे और तब कृतवर्मा, द्रोणाचार्य के चक्रव्यूह की रक्षा करने में प्रवृत्त हुआ।

एक सौ छियासठ का अध्याय

भीम तथा दुर्योधन

सञ्जय ने कहा—हे धृतराष्ट्र! बलवाँ स्थान से नीचे था, भूरि ने मत्त की तरह आते हुए सात्यकि को रोका। उसने क्रोध में भर पाँच पैने बाण उसकी छाती में मारे। उन बाणों के प्रहार से सात्यकि के शरीर से रक्त निकलने लगा। तदनन्तर भूरि ने पुनः दस पैने बाण सात्यकि की छाती में मारे। फिर तो दोनों वीर क्रोध में भर एक दूसरे पर बाणों के प्रहार करने लगे। क्षणमात्र सहज वे दोनों वीर क्रोध में भर, एक दूसरे पर अतिदारुण शस्त्रों की वृष्टि करने लगे। एक मुहूर्त तक सामान्य रीति से युद्ध चला किया। किन्तु पीछे से क्रुद्ध सात्यकि ने मुसक्या कर भूरि का धनुष काट डाला। उसका धनुष काटने के पीछे तुरन्त ही उसकी छाती में नौ बाण मारे और उससे कहा—अरे खड़ा रह, खड़ा रह, कहाँ भागा जाता है। इस प्रकार बलवान शत्रु ने भूरि को बाणप्रहार कर, घायल किया। तब शत्रु को तपाने वाले भूरि ने दूसरा धनुष उठा बाणों से सात्यकि को मारना आरम्भ किया। सात्यकि के तीन बाण मार चुकने बाद उसने भल्ल बाण से सात्यकि का धनुष काट डाला। धनुष कटे जाने पर सात्यकि क्रोध से मूर्छित हो गया और फिर कर भूरि की छाती में तान कर एक शक्ति मारी। शक्ति के प्रहार से भूरि का शरीर विदीर्ण हो गया। वह धड़ाम से भूमि पर वैसे ही गिर पड़ा जैसे दमकता हुआ मङ्गल का तारा दैववशात् टूट कर पृथिवी पर आ पड़े। भूरि का मारा जाना देख अश्वत्थामा ने सात्यकि पर चढ़ाई की। वह चिल्ला कर कहने लगा—अरे ओ सात्यकि! अब तू भाग कर कहाँ जाता है। खड़ा तो रह! खड़ा रह!

इस प्रकार सात्यकि को युद्ध के लिये ललकार कर, अश्वत्थामा ने सात्यकि पर वैसे ही बाणवृष्टि की जैसे मेघ मेरु पर्वत पर जलवृष्टि करते हैं। सात्यकि पर अश्वत्थामा को आक्रमण करते देख, महारथी घटोत्कच ने गर्ज कर कहा—ओ रे द्रोण के छोकरे! खड़ा रह! खड़ा रह! अब तू मेरे सामने से जीता जागता लौट कर नहीं जाने पावेगा। मैं तेरा वध वैसे ही करूँगा, जैसे कार्तिकेय ने महिषासुर का किया था। मैं आज रणाङ्गण में तेरे युद्ध का हौसिला दूर कर दूँगा। यह कह, उस शत्रुसंहारकारी राक्षस घटोत्कच ने क्रोध से लाल लाल आँखें कर वैसे ही अश्वत्थामा पर आक्रमण किया जैसे सिंह बड़े भारी हाथी पर झपटता है। घटोत्कच ने रथ के धुरे जैसे मोटे बाणों की वृष्टि अश्वत्थामा पर की। तब अश्वत्थामा ने सर्पों जैसे विषैले बाण छोड़, उसके बाणों की वृष्टि को देखते देखते नष्ट कर डाला। फिर सौ मर्मभेदी बाण मार कर घटोत्कच को विद्ध किया। सब के आगे खड़ा हुआ राक्षसराज घटोत्कच बाणों से छिद सा गया। उस समय वह सेई जैसा जान पड़ने लगा। तब महाप्रतापी भीमसुत घटोत्कच ने क्रोध में भर वज्र एवं शक्ति की तरह चमचमाते पैने क्षुरप्र बाण, अर्धचन्द्राकार बाण, नाराच, शिलीमुख, वाराहकर्ण, नालीक, विकर्ण आदि बाणों की वृष्टि कर, अश्वत्थामा को विद्ध किया। जब महाभ्र के समान भयङ्कर गर्जना के साथ शस्त्रों की निरन्तर वृष्टि अपने ऊपर पड़ने लगी, तब अश्वत्थामा के मन में ज़रा भी घबड़ाहट या पीड़ा नहीं हुई। प्रत्युत उसने उस असह्य बाणवृष्टि को दिव्यास्त्रों से वैसे ही छिन्न भिन्न कर डाला, जैसे वायु मेघों को छिन्न भिन्न कर डालता है। हे महाराज! इस समय आकाश में उड़ते हुए बाण योद्धाओं के हर्ष को बढ़ाते हुए विलक्षण रीति से भयङ्कर युद्ध कर रहे थे। सायङ्काल के समय जैसे उड़ते हुए पटबीजनों से आकाश छा जाता है, वैसे ही उन चिनगारियों से आकाश भर रहा था। आपके पुत्र के हितैषी अश्वत्थामा ने घटोत्कच के ऊपर बड़ी भारी बाणवृष्टि की। इतने में घोर अन्धकारमयी आधी रात

हुई। उस समय प्रह्लाद और इन्द्र के युद्ध की तरह घटोत्कच और अश्वत्थामा में युद्ध हो रहा था। जब क्रोध में भर घटोत्कच ने दस पैने बाण मार अश्वत्थामा को विद्ध कर डाला, तब पवन के झोंके से काँपते हुए वृक्ष की तरह अश्वत्थामा काँप उठा। वह क्षण भर में मूर्छित हो, ध्वजा का दण्ड पकड़ निश्चेष्ट हो रथ में बैठा रहा। अश्वत्थामा को मूर्छित देख, आपके सब पुत्र और समस्त सैनिक हाहाकार करने लगे। उधर पाण्डवपक्ष के पाञ्चाल और सृञ्जय राजाओं ने हर्षनाद किया। कुछ देर बाद जब अश्वत्थामा को चेत हुआ, तब उसने धनुष की डोरी को कान तक तान यमदण्ड सदृश एक भयङ्कर बाण घटोत्कच के मारा। वह सुवर्णपुंख बाण घटोत्कच की छाती को विदीर्ण कर, पृथिवी में घुस गया। घटोत्कच मूर्छित हो रथ में गिर पड़ा। उसको मूर्छित देख, उसका सारथि घबड़ाया और रथ भगा अश्वत्थामा से दूर ले गया। तब तो अश्वत्थामा बड़े ज़ोर से गर्जा और आप के पुत्रों तथा सैनिकों ने उसकी प्रशंसा की। घटोत्कच के मूर्छित होने बाद, भीम पर जो द्रोण के रथ की ओर आपकी सेना के बीच से आ रहा था दुर्योधन ने तीक्ष्ण बाण छोड़े। भीम ने दुर्योधन के दस पैने बाण मारे और दुर्योधन ने उसके बीस बाण मारे। आकाश में मेघों से ढके हुए सूर्य और चन्द्रमा की तरह वे दोनों योद्धा मन्द कान्ति युक्त हो गये। दुर्योधन ने भीम के पाँच बाण मार कर, कहा—कहाँ भागा जाता है? खड़ा रह, खड़ा रह! यह सुन भीम ने दस बाण मार दुर्योधन का धनुष और उसकी ध्वजा काट डाली। तदनन्तर भीम ने दुर्योधन के नब्बे नतपर्व बाण मारे। इस प्रहार से दुर्योधन को बड़ा क्रोध उपजा। भरतवंश में श्रेष्ठ दुर्योधन ने दूसरा विशाल धनुष उठा, सब के सामने भीम को बाणों से पीड़ित किया। भीम ने दुर्योधन के छोड़े बाणों को नष्ट कर, पचीस क्षुद्रक बाण दुर्योधन के मारे। हे राजन्! तब दुर्योधन बहुत क्रुद्ध हुआ और क्षुरप्र बाण से भीम का धनुष काट डाला और भीम के दस बाण मारे। महाबली भीम ने दूसरा धनुष ले कर, बड़े पैने सात बाण मार कर, दुर्योधन को बड़ी फुर्ती

से विद्ध किया। फुर्तीले दुर्योधन ने भीम का वह धनुष भी काट डाला। तब भीम ने दूसरा धनुष लिया, दुर्योधन ने उसे भी काट डाला। इस प्रकार चार पाँच ही धनुष नहीं, बल्कि जितने धनुष भीम ने उठाये उतने दुर्योधन ने काट डाले। अब भीम के जितने ही धनुष दुर्योधन ने काट डाले, तब भीम ने काल की भगिनी जैसी एक लोहे की ठोस और अग्नि की तरह चमचमाती शक्ति दुर्योधन के ऊपर फेंकी। भीम तथा सब योद्धाओं के सामने ही दुर्योधन ने उस शक्ति को अधबिच ही में काट डाला। तब भीम ने बड़ी मोटी और चमचमाती गदा उठायी और तान कर दुर्योधन के रथ के ऊपर फेंकी। उस महागदा के प्रहार से, हे राजन्! आपके पुत्र का रथ, रथ के घोड़े और सारथि चूर्ण हो गये। तब तो आपका पुत्र दुर्योधन भीम से डर कर चुपचाप नन्दक के रथ पर जा बैठा। भीम ने समझा दुर्योधन मारा गया। तब वह कौरवों का अपमान करता हुआ सिंहनाद करने लगा। आपके सब योद्धा भयभीत हो गये और आर्तनाद करने लगे। उनके आर्तनाद तथा भीम के सिंहगर्जन को सुन, युधिष्ठिर भी सशङ्कित हुए। उन्होंने मन ही मन कहा—क्या जाने—दुर्योधन मारा ही गया हो। यह सोच युधिष्ठिर हर्षित होते हुए शीघ्रतापूर्वक भीम के निकट गया। फिर पाञ्चाल, केकय, मत्स्य और और सृञ्जय आदि राजाओं ने द्रोण पर चढ़ाई की। उस रात के अन्धकार में द्रोण तथा उन आक्रमणकारी राजाओं में घोर युद्ध होने लगा।

एक सौ सरसठ का अध्याय

सहदेव और द्वितीय अलम्बुष का पलायन

सञ्जय ने कहा—हे राजन्! द्रोणाचार्य को पकड़ने के लिये आगे बढ़ कर आते हुए सहदेव को वैकर्तन कर्ण ने रोका। तब सहदेव ने कर्ण के नौ बाण तथा नतपर्व दस बाण मारे। कर्ण ने सहदेव पर नतपर्व सौ बाण छोड़े और सहदेव का धनुष काट डाला। प्रतापी माद्रीनन्दन सहदेव ने झट

दूसरा धनुष उठा कर्ण के बीस बाण मारे। यह देख सब लोगों को बड़ा आश्चर्य हुआ। कर्ण ने नतपर्व बाण मार सहदेव के घोड़ों को मार डाला और सारथि को यमालय भेज दिया। अब सहदेव रथ रहित हो गया। तब उसने ढाल तलवार ले कर्ण का सामना किया। कर्ण ने हँसते हँसते ढाल तलवार को काट डाला। तब क्रोध में भर सहदेव ने एक बड़ी मोटी सुवर्ण भूषित गदा कर्ण के रथ के ऊपर फेंकी। उस गदा को कर्ण ने बाणों से काट कर, पृथिवी पर फेंक दिया। गदा को नष्ट हुई देख, सहदेव ने तुरन्त कर्ण पर शक्ति फेंकी। कर्ण ने बाणों से उसके भी टुकड़े टुकड़े कर डाले। तब सहदेव झटपट रथ से उतर पड़ा और रथ का पहिया उठा कर्ण के रथ पर फेंका। वह पहिया रथ पर गिरने ही को था कि, कर्ण ने बहुत बाण मार उसके टुकड़े टुकड़े कर डाले। तब सहदेव रथ के ईषा दण्ड. रासें धुरे और हाथियों के कटे हुए अँग, मृत घोड़े और मुर्दों को उठा कर, कर्ण के ऊपर फेंकने लगा। किन्तु कर्ण ने उन सब को काट कर फेंक दिया। अब सहदेव निरस्त्र हो गया था। अतः बाणों का प्रहार होने पर वह लड़ते लड़ते थम गया और रणक्षेत्र छोड़ कर भागा। कर्ण ने उसका पीछा किया और उसका उपहास करते हुए उससे कहा—देख, अब फिर कभी अपने से विशेष बलवान महारथी से मत भिड़ना। लड़ना ही हो तो अपने जोड़ीदार से लड़ना। मेरे कथन पर सन्देह मत करना। सहदेव के शरीर में धनुष की नोंक चुभो कर, कर्ण ने पुनः सहदेव से कहा—अच्छा या तो तू अर्जुन के निकट भाग कर जा अथवा अपने घर चला जा। सहदेव पर इस प्रकार आक्षेप कर और उसका पीछा छोड़, कर्ण पाञ्चालों और पाण्डवों की सेना को भस्म सा करता हुआ उनकी ओर गया। हे राजन्! कर्ण यदि चाहता तो माद्रीनन्दन सहदेव का वध कर सकता था, परन्तु कर्ण अपनी बात का धनी था। वह कुन्ती के सामने प्रतिज्ञा कर चुका था कि, वह अर्जुन को छोड़ अन्य किसी पाण्डव का वध न करेगा। अपनी इस प्रतिज्ञा को स्मरण कर, कर्ण ने सहदेव का वध नहीं किया। उधर सहदेव

को कर्ण के बाणों से तथा नाकुलों से अपने जीवन से ग्लानि उत्पन्न हुई। सहदेव भाग कर पाञ्चालराज के पुत्र जनमेजय के रथ पर चढ़ गया। इतने ही में राजा विराट् सेना को साथ ले, द्रोणाचार्य के ऊपर लपका। मद्रराज ने बाणवृष्टि कर, धनुर्धर राजा विराट् को ढक दिया। उस समय उन दोनों में वैसा ही युद्ध हुआ, जैसा कि पूर्वकाल में जम्भासुर और इन्द्र में हुआ था। इस युद्ध में मद्रराज ने सेनापति राजा विराट् के नतपर्व सौ बाण मारे। राजा विराट् ने तेज़ किये हुए नौ, तिहत्तर तथा सौ बाण मद्रराज के मारे। फिर मद्रराज ने बाण मार कर, राजा विराट के रथ के चारों घोड़ों को मार डाला। फिर दो बाणों से सारथि को मार कर और ध्वजा काट कर पृथिवी पर गिरा दी। उसी समय राजा विराट रथ से कूद पड़ा और भूमि पर खड़ा हो धनुष टंकोरते हुए बाण छोड़ने लगा। अपने भाई को रथहीन हो, भूमि पर खड़ा देख, शतानीक सब के सामने रथ ले भाई की सहायता करने को दौड़ा। मद्रराज ने शतानीक को आते देख उसे मारे बाणों के यमालय भेज दिया। वीरधन्वा के मारे जाने के बाद, राजा विराट् तुरन्त उसके रथ पर सवार हो गया और भ्रातृवध के कारण उसमें दुगना बल आ गया। वह मारे क्रोध के आँखें फाड़ फाड़ कर मद्रराज के रथ पर बाणवृष्टि करने लगा। इससे मद्रराज भी अत्यन्त कुपित हुआ। उसने तान कर नतपर्व एक बाण विराट की छाती में मारा। उस बाण के प्रहार से राजा विराट् बुरी तरह घायल हुआ। उस प्रहार की तीव्र वेदना होने से वह मूर्छित हो रथ में गिर पड़ा। तब उसका सारथि रथ को भगा रणक्षेत्र से दूर चला गया। तब तो मद्रराज शल्य ने विराट की सेना पर बाणवृष्टि की। उस बाणवृष्टि को न सह कर, राजा विराट् की सेना भी भागी। राजा विराट् की सेना को पलायन करते देख, श्रीकृष्ण और अर्जुन ने शल्य का सामना किया। उस समय, हे राजन्! राक्षसराज अलम्बुष (द्वितीय) अश्वों जैसे मुखाकृति वाले पिशाचों से युक्त आठ पहियों के रथ पर सवार हो, उन दोनों के सामने युद्ध के लिये उपस्थित हुआ। उसके रथ पर रक्तरंजित ध्वजा फहरा रही

थी। उसका रथ रक्तपुष्पों से सजाया गया था और रथ पर रीछ का चमड़ा मढ़ा हुआ था। ध्वजा में विचित्र पङ्खों वाला गिद्धराज चोंच खोले क्रूर शब्द करता हुआ बड़ा भयानक जान पड़ता था। जैसे कज्जलगिरि का टूटा हुआ कोई टुकड़ा हो, वैसा ही वह राक्षसराज जान पड़ता था। जैसे पर्वत-राज हिमालय सम्मुख चलते हुए पवन को रोक दे, वैसे ही उसने सामने आते हुए अर्जुन को रोक दिया। उसने अर्जुन के ऊपर सहस्रों बाणों की वर्षा कर डाली। मानव राक्षस में घोर संग्राम हुआ। उस लड़ाई को देख, समस्त दर्शक, गिद्ध, कौए, बक, उल्लू, कङ्क और गिद्ध बलिदान की आशा से परम प्रसन्न हुए। हे राजन्! अर्जुन ने इस युद्ध में राक्षस के सौ बाण मारे और मर्म में हुए सौ बाण मार कर, उसकी ध्वजा काट डाली। फिर सारथि के तीन बाण मार तीन बाण रथ के त्रिवेणु में मारे। फिर एक बाण मार उसका धनुष काटा। फिर चार बाण मार उसके रथ के चारों घोड़ों को भी मार डाला। तब उस राक्षस ने तुरन्त दूसरा धनुष उठा लिया। अर्जुन ने उसे भी काट डाला। तब रथहीन अलम्बुष राक्षस तलवार तान अर्जुन के ऊपर दौड़ा। अर्जुन ने बाण मार तलवार को काट डाला। फिर चार तेज़ बाण राक्षसराज के मारे। तब वह राक्षसराज भयभीत हो रण से भागा।

इस प्रकार उस राक्षस को हरा, अर्जुन बड़ी तेज़ी से द्रोण की ओर चला और हमारे पैदलों, अश्वों और गजों के ऊपर बाणवृष्टि करने लगा।

हे राजन्! उस यशस्वी अर्जुन ने हमारे सैनिकों को मारना आरम्भ किया। उस समय आपके पक्ष के सैनिक योद्धा मर मर कर वैसे ही भूमि पर गिरने लगे, जैसे पवन के वेग से उखड़े हुए वृक्ष पृथिवी पर गिरते हैं। देखते देखते आपकी सेना रणक्षेत्र से भाग गयी।

एक सौ अड़सठ का अध्याय

फुटकल युद्ध

सञ्जय ने कहा—हे धृतराष्ट्र ! नकुलपुत्र शतानीक मारे बाणों के आपकी सेना का नाश करने लगा। तब उसका सामना आपके पुत्र चित्रसेन ने किया। जब शतानीक ने चित्रसेन के पाँच बाण मारे; तब चित्रसेन ने शतानीक के दस बाण मारे। फिर चित्रसेन ने शतानीक की छाती में नौ तेज़ बाण मारे। नकुलपुत्र शतानीक ने नतपर्व बहुत से बाण मार कर, चित्रसेन का कवच काट डाला। शतानीक का यह कार्य बड़ा विस्मयोत्पादक था। उस समय हे राजन् ! आपका पुत्र चित्रसेन कवच टूट जाने से वैसा ही जान पड़ता था, जैसा कैंचली रहित सर्प। कवचहीन होने पर भी चित्रसेन विजय प्राप्ति के लिये प्रयत्न करने लगा। तब नकुल-पुत्र ने उसके रथ की ध्वजा तथा उसके हाथ का धनुष काट डाला। तब चित्रसेन ने दूसरा धनुष उठाया। भरतवंश के महारथी चित्रसेन ने क्रुद्ध हो शतानीक के नौ तेज़ बाण मारे। इस पर शतानीक बहुत क्रुद्ध हुआ और उसने चित्रसेन के चारों घोड़ों को तथा सारथि को मार डाला। तुरन्त ही महाबली और महारथी चित्रसेन रथ से कूद पड़ा और उसने शतानीक के पचीस बाण मारे। तब शतानीक ने अर्धचन्द्राकार बाण मार कर, रत्नजटित चित्रसेन के धनुष को काट डाला। तब चित्रसेन भाग कर कृतवर्मा के रथ पर जा बैठा। उधर राजा द्रुपद, आचार्य द्रोण को पकड़ने के लिये ससैन्य आगे बढ़े और द्रोण पर बहुत से बाणों की वर्षा की। हे राजन् ! यज्ञसेन ने रण में महारथी कर्ण के पुत्र वृषसेन की दोनों भुजाओं पर और छाती पर साठ बाण मारे। दोनों ही वीर घायल हो गये और दोनों के शरीरों में बाण चुभे हुए ऐसे जान पड़ते थे, मानों काँटों से युक्त सेहे हों। इस युद्ध में दोनों के कवच सुवर्णपुङ्ख बाणों से छिन्न भिन्न हो गये थे। दोनों ही लोहूलुहान थे। वृषसेन ने यज्ञसेन के उनासी बाण मारे। पुनः तीन बाण

मारे। तदनन्तर जलवृष्टि करने वाले मेघ की तरह द्रुपद के ऊपर बाणों की झड़ी लगा दी। उस समय जलवृष्टि जैसा दृश्य देख पड़ता था। राजा द्रुपद ने क्रुद्ध हो भल्ल बाण से वृषसेन का धनुष काट डाला। तब वृषसेन ने तुरन्त दूसरा धनुष उठा लिया। उस पर तरकस से निकाल चमचमाता एक बड़ा पैना बाण चढ़ाया। उस धनुष को कान तक खींच वह बाण राजा द्रुपद पर छोड़ा। फिर उस समय समस्त सोमक राजा गण त्राहि त्राहि चिल्लाने लगे। वृषसेन का बाण राजा द्रुपद की छाती के आरपार हो भूमि में समा गया। तब तो उस बाणप्रहार से पीड़ित हो राजा द्रुपद मूर्छित हो गये। तब सारथि अपने कर्त्तव्यानुसार उन्हें रणक्षेत्र से हटा कर दूर ले गया। राजा द्रुपद के जाते ही उसकी सेना भी रणक्षेत्र से भाग खड़ी हुई।

हे राजन्! उस समय सिपाहियों के हाथों से इधर उधर फेंके हुए पलीते, लुक्के और मशालें चारों ओर जल रही थीं। अतः जैसे मेघशून्य आकाश, तारागण से शोभित होता है, वैसे ही रणभूमि उनके प्रकाश से शोभायमान जान पड़ती थी। रणभूमि में जगह जगह मृत योद्धा राजाओं के बाजूबंद पड़े हुए थे। अतः वर्षाऋतु में जैसे बिजली से आकाश दमकने लगता है, वैसे ही उन बाजूबंदों से रणभूमि दमक रही थी। पूर्वकाल में तारकासुर की लड़ाई में जैसे दानवगण, इन्द्र से भयभीत हो भागे थे, वैसे ही इस युद्ध में सोमक राजागण वृषसेन से भयभीत हो भागे।

हे राजन्! इस युद्ध में कर्ण के पुत्र ने सोमकों को ऐसा पीड़ित किया कि, वे राजागण प्रज्वलित दीपकों की तरह पलायन करते हुए साफ़ साफ़ देख पड़ते थे। उस समय कर्ण का पुत्र रण में शत्रुओं का पराजय कर मध्यान्ह कालीन सूर्य की तरह जान पड़ता था। उस समय शत्रुपक्ष की सेना में, आपके पक्ष की सेना में तथा अन्य एकत्रित राजाओं में वृषसेन ही वृषसेन देख पड़ता था। राजाओं को परास्त कर, महारथी वृषसेन वहाँ गया

जहाँ धर्मराज युधिष्ठिर युद्ध कर रहे थे। आपका पुत्र दुःशासन क्रोध में भर, शत्रुओं का संहार करता हुआ प्रतिविन्ध्य की ओर गया। उन दोनों का समागम उस समय वैसा ही जान पड़ा जैसा कि, मेघशून्य निर्मल आकाश में चन्द्र और सूर्य का समागम जान पड़ता है। जब प्रतिविन्ध्य ने युद्ध में भयङ्कर कर्म करने आरम्भ किये; तब आपके पुत्र धनुर्धर दुःशासन ने उसके ललाट में तीन बाण तान कर मारे और उसे घायल किया। ललाट में चुभे हुए तीन बाणों के कारण प्रतिविन्ध्य तीन शिखर वाले पर्वत की तरह जान पड़ता था। महारथी प्रतिविन्ध्य ने प्रथम नौ और फिर सात बाण मार कर, दुःशासन को घायल किया। हे राजन्! इस युद्ध में आपके पुत्र ने भी बड़ा दुष्कर कार्य किया। उसने पैने बाण मार कर, प्रतिविन्ध्य के रथ के घोड़े मारे। फिर भल्ल बाण से उसके सारथि का वध किया। फिर उसके रथ की ध्वजा काट उसने नीचे गिरा दी। फिर उसने रथ के टुकड़े टुकड़े कर डाले। हे राजन्! आपके क्रुद्ध पुत्र ने नतपर्व बाण मार कर पताका के, तरकस के, रासों के और जोतों के टुकड़े टुकड़े कर डाले। धर्मात्मा प्रतिविन्ध्य रथहीन हो गया। उसके हाथ में यद्यपि केवल एक धनुष ही रह गया था; तथापि उसने लड़ना बंद नहीं किया। उसने आपके पुत्र के ऊपर हज़ारों बाण बरसाये। तब आपके पुत्र ने क्षुरप्र बाण से प्रतिविन्ध्य का धनुष काट डाला। फिर दस बाण मार कर, उसने प्रतिविन्ध्य को घायल किया। इतने ही में उसके महारथी भाई अपने भाई को रथहीन हो लड़ते देख, बड़ी भारी सेना सहित बड़े वेग से प्रतिविन्ध्य की रक्षा करने को दौड़े। तब प्रतिविन्ध्य दौड़ कर सुतसोम के रथ पर सवार हो गया और वहाँ से वह आपके पुत्र के बाण मारने लगा। इसी प्रकार आपके पक्ष के समस्त योद्धा बड़ी भारी सेना को साथ ले और आपके पुत्र को घेर प्रतिविन्ध्य से लड़ने लगे। इस प्रकार आपके पक्ष के तथा शत्रुपक्ष के योद्धाओं में आधी रात को दारुण युद्ध हुआ। वह युद्ध यमलोक की वृद्धि करने वाला था।

एक सौ उनहत्तर का अध्याय

ख़ूनख़राबी मारकाट

सञ्जय ने कहा—हे राजन्! पाण्डुनन्दन नकुल जब बड़ी तेज़ी से आपके सैनिकों का नाश करने लगा; तब सुबलपुत्र शकुनि, खड़ा रह, खड़ा रह, कह के नकुल की ओर लपका। पहले के वैर को याद कर, वे दोनों वीर कान पर्यन्त धनुष खींच अपने अपने बाणों से एक दूसरे को घायल करने लगे। जिस प्रकार नकुल बाणवृष्टि करता था, उसी प्रकार शकुनि भी बाणों की वर्षा कर रहा था। उस समय शरीर में बाणों के चुभने से दोनों के शरीर सेही जैसे जान पड़ने लगे। तपे हुए सुवर्ण की तरह प्रकाशमान एवं विचित्र शरीर वाले वे दोनों वीर एक दूसरे पर सुवर्णपुंख तेज बाणों के प्रहार कर, कवच रहित हो लोहूलुहान हो गये। उस समय उनके शरीर फूले हुए पलाश वृक्ष जैसे जान पड़ते थे। उस समय बाणों से युक्त उनके शरीर काँटेदार सेमल के पेड़ की तरह जान पड़ते थे। वे दोनों वीर क्रोध में भर, एक दूसरे को ऐसे घूर रहे थे मानों दृष्टि से एक दूसरे को भस्म कर डालेंगे। तदनन्तर आपके साले शकुनि ने अत्यन्त क्रुद्ध हो कर, एक तीक्ष्ण कर्णिक अस्त्र से अनायास माद्रीनन्दन नकुल की छाती में प्रहार किया। पाण्डुपुत्र नकुल आपके साले शकुनि के अस्त्र से विद्ध हो, अचेत पुरुष की तरह मूर्छित हो रथ में बैठ गये। शकुनि ने नकुल को मूर्छित देख, वर्षा कालीन मेघों की तरह गम्भीर गर्जन किया। कुछ देर बाद जब नकुल सचेत हुआ; तब वह मुँह फाड़े काल की तरह शकुनि की ओर लपका। पहले साठ, फिर सौ बाण मार नकुल ने शकुनि को विद्ध किया। तदनन्तर नकुल ने शकुनि के धनुष की मुठिया और रथ की ध्वजा काट कर डाल दी। नकुल के बाणों के आघात से पीड़ित हो, हे राजन्! आपका साला शकुनि मूर्छित हो गया। जैसे कोई कामुक पुरुष कामिनी के कंधे का सहारा ले, वैसे ही वह रथ के डंडे को पकड़ रथ में बैठ गया।

हे राजन् ! आपके साले शकुनि को रथ में मूर्छित हो बैठा देख, उसका सारथि रथ बढ़ा वहाँ से चल दिया। शकुनि को परास्त हुआ देख पाण्डवों ने तथा उनकी सेना ने उच्च स्वर से सिंहनाद किया। शकुनि को पराजित कर नकुल ने क्रोध में भर अपने सारथि से कहा—मेरा रथ अब तुम द्रोणाचार्य की सेना की ओर ले चलो। सारथि नकुल के कथनानुसार द्रोणाचार्य की सेना में नकुल का रथ हाँक कर ले गया। उसी समय शिखण्डी को द्रोणाचार्य की ओर जाते देख, कृपाचार्य सावधान हो, बड़ी तेज़ी से उसकी ओर गये। शिखण्डी ने द्रोणाचार्य की सहायता के लिये, कृपाचार्य को आया हुआ देख, उन्हें नौ बाणों से विद्ध किया। आपके पुत्रों के कृपाभाजन कृपाचार्य ने पहले पाँच, फिर बीस बाणों से शिखण्डी को भस्म किया। देवासुर संग्राम में इन्द्र के साथ जैसे संवरासुर का युद्ध हुआ था, वैसे ही कृपाचार्य के साथ शिखण्डी का युद्ध हुआ।

हे राजन् ! उस अँधियारी रात में वैसे ही आकाश भयङ्कर देख पड़ता था, तिस पर भी वर्षाकालीन मेघ की तरह युद्धदुर्मद महारथी कृपाचार्य और शिखण्डी के बाणों से पूरित हो, अत्यन्त ही डरावना देख पड़ता था। अधिक क्या कहा जाय वह भयङ्कर रात योद्धाओं के लिये कालरात्रि स्वरूपिणी हो गयी। तदनन्तर शिखण्डी ने गौतमपुत्र कृपाचार्य के धनुष को अर्धचन्द्राकार बाण से काट डाला। धनुष कटने पर कृपाचार्य ने क्रोध में भर सुवर्णदण्ड युक्त तेज़ धार वाली एक भयानक शक्ति शिखण्डी पर छोड़ी। शिखण्डी ने बाण मार कर, उस शक्ति को बीच ही में काट डाला। वह बरछी कट कर भूमि पर गिर पड़ी। इतने में कृपाचार्य ने दूसरा धनुष उठा लिया और शिखण्डी पर पैने बाणों की वर्षा की। तब तो शिखण्डी, कृपाचार्य के बाणों से पीड़ित हो मूर्छित हो गया। शिखण्डी को मूर्छित देख, कृपाचार्य ने उसके बहुत से बाण मारे। तब पाञ्चालों और सोमकों ने शिखण्डी के रथ को घेर कर उसकी रक्षा की। उधर आपके पुत्र तथा योद्धागण एक बड़ी सेना साथ ले, द्रोणाचार्य को घेर कर खड़े हो गये।

दोनों ओर के वीरों में पुनः घोर युद्ध होने लगा। रथी रथियों से भिड़ गये। उस समय रणभूमि में गर्जते हुए मेघों की तरह घोर शब्द सुन पड़ा। तदनन्तर दोनों ओर के अश्वारोही सैनिकों ने एक दूसरे पर आक्रमण किया, उस समय रणभूमि का दृश्य बड़ा भयङ्कर जान पड़ता था। एक दूसरे पर झपटते हुए पैदल सिपाहियों के पदाघात से पृथिवी भयत्रस्त, स्त्री की तरह, काँप उठी। अगणित रथी योद्धा शत्रुरथी योद्धाओं की ओर जा, घोर युद्ध करने लगे। उसी समय मदमत्त हाथी शत्रुसैन्य के मदमत्त हाथियों के सामने जा, दाँतों और सूँड़ों से लड़ने लगे। यद्यपि दोनों पक्षों के घुड़सवार सैनिक आपस में भिड़े हुए थे, तथापि उनमें से एक भी पक्ष की घुड़सवार सेना दूसरे पक्ष की घुड़सवार सेना को पीछे न हटा सकी। किन्तु सैनिक वीरों के बार बार दौड़ने से रणभूमि में महाघोर कोलाहल मचा हुआ था। हाथियों और घोड़ों के ऊपर से भूमि पर गिरते हुए लुक्के आकाश से गिरती हुई उल्काओं जैसे जान पड़ते थे। रणभूमि में चारों ओर मशालों की रोशनी होने से दिन की तरह प्रकाश हो रहा था। जैसे सूर्योदय काल में जगत् का अन्धकार नष्ट हो जाता है, वैसे ही मशालों की रोशनी से समरक्षेत्र का अन्धकार नष्ट हो गया। जब रणभूमि में हर तरफ़ रोशनी हो गयी, तब उस रोशनी से वीरों के अस्त्र, शस्त्र, कवच एवं मणिखचित आभूषणों की चमक उससे दब गयी। उस रात में जब योद्धाओं के चीत्कार के साथ घोर युद्ध हो रहा था, तब योद्धा युद्ध के उन्माद से अपने तक को भूल गये। उस समय मोह के वश में हो पिता पुत्र का, मामा भाँजे का और पुत्र, ~पिता का वध करने लगा। इस प्रकार आत्मीय जन आत्मीय जनों के साथ, फिर स~ शत्रु के ऊपर, अस्त्र शस्त्रों से प्रहार करने लगे। उस भयावह ने शकुनि के भ~भय को बढ़ाने वाला, मर्यादाशून्य युद्ध होने लगा।

नकुल के बाणों के प्र

मूर्छित हो गया। जै

वैसे ही वह रथ के डंडे।

एक सौ सत्तर का अध्याय

धृष्टद्युम्न पर शत्रुओं का बाण बरसाना

सञ्जय ने कहा—हे महाराज ! जिस समय महाघोर युद्ध हो रहा था, उस समय धृष्टद्युम्न ने द्रोणाचार्य के ऊपर आक्रमण करने का पक्का विचार किया। उसने अपने धनुष पर रोदा चढ़ाया फिर धनुष को बारंबार टंकोरता हुआ, धृष्टद्युम्न, द्रोण का वध करने की कामना से उनके सुवर्णमण्डित रथ की ओर बढ़ा। पाञ्चालराज भी द्रोण का संहार करने के लिये धृष्टद्युम्न को जाते देख, पाण्डवों सहित द्रोण के रथ के चारों ओर जमा हो गये। द्रोण को शत्रुओं द्वारा घिरा हुआ देख, आपके पुत्र सतर्क हुए। वे द्रोण को घेर चारों ओर से उनकी रक्षा करने लगे, पवन द्वारा उत्तेजित एवं क्षुब्ध जलचरों से पूर्ण दो महासागरों की तरह कौरवों और पाण्डवों के वे सैन्यसागर उस रात को एक दूसरे को ठेलने लगे। युद्ध आरम्भ होते ही पाञ्चालराज-नन्दन धृष्टद्युम्न ने द्रोण की छाती में पाँच बाण मारे और सिंह जैसी गर्जना की। तब द्रोण ने धृष्टद्युम्न पर पच्चीस बाण छोड़े। फिर भल्ल बाण से धृष्टद्युम्न के उस धनुष को काट डाला जो बड़े ज़ोर से टंकोरने का शब्द कर रहा था। प्रतापी धृष्टद्युम्न द्रोण के हाथ से घायल होने के कारण बड़ा क्रुद्ध हुआ। उसने कटा हुआ धनुष एक ओर पटक, मारे क्रोध के ओठ चबा दूसरा धनुष उठाया। फिर द्रोण का नाश करने के लिये उस पर भयङ्कर बाण चढ़ा और रोदे को कान तक खैंच, द्रोण पर छोड़ा। उस घोर बाण के छूटते ही उदयकालीन सूर्य की तरह सेना में प्रकाश हो गया। उस भयङ्कर बाण को अपनी ओर आते देख, दर्शक देवता, गन्धर्व और मनुष्य बोल उठे—द्रोण का मङ्गल हो। उस बाण को द्रोण के रथ की ओर सरसरा कर आते देख, कर्ण ने बड़ी फुर्ती से बाण मार उसके टुकड़े टुकड़े कर डाले। तब वह बाण विषहीन सर्प की तरह भूमि पर गिर पड़ा। तदनन्तर कर्ण ने दस, अश्वत्थामा ने पाँच, द्रोण ने सात, शल्य ने

दस, दुःशासन ने तीन, दुर्योधन ने बीस और शकुनि ने पाँच बाण, धृष्टद्युम्न पर छोड़े।

इस प्रकार सब महारथियों ने फुर्ती से बाण मार कर, धृष्टद्युम्न को घायल किया, किन्तु धृष्टद्युम्न ज़रा भी न घबड़ाया। उसने द्रोण को, अश्वत्थामा को, कर्ण को और आपके पुत्र को तीन तीन बाणों से विद्ध कर डाला। इतने ही में उन महारथियों में से प्रत्येक ने फिर धृष्टद्युम्न के तीन तीन पैने बाण मारे। द्रुमसेन ने प्रथम एक और फिर तीन बाण मार कर, धृष्टद्युम्न से कहा—खड़ा रह, कहाँ को भागा जाता है। तब धृष्टद्युम्न ने उसके ऊपर सरलगामी सुवर्ण पुंख के पैने प्राणान्तकारी तीन बाण मारे। फिर भल्ल बाण से द्रुमसेन के धड़ से उसका कुण्डलों से भूषित मस्तक काट डाला। ओठ चबाता हुआ वह मस्तक, पवन के झोंके से पके तालफल की तरह भूमि पर गिर पड़ा। द्रुमसेन का वध करने के बाद, उस वीर ने तेज़ किये हुए बाणों से फिर दूसरे योद्धाओं को घायल करना आरम्भ किया। उसने भल्ल बाणों से विचित्र ढंग से लड़ने वाले कर्ण के धनुष को काट डाला। जैसे बंदर अपनी विशाल पूँछ का नाश नहीं सह सकता, वैसे ही कर्ण अपने धनुष के कटने को न सह सका। क्रोध के मारे उसकी आँखें लाल हो गयीं। उसने एक लंबी साँस ले दूसरा धनुष उठाया और धृष्टद्युम्न पर बाणों की वर्षा करनी आरम्भ की। क्रुद्ध कर्ण, दुर्योधन, दुःशासन, द्रोण, शल्य और शकुनि ने धृष्टद्युम्न का वध करने के लिये, उसे चारों ओर से घेर लिया। हे राजन्! आपके इन छः महारथियों से धृष्टद्युम्न को घिरा देख मैंने तो समझा कि धृष्टद्युम्न काल के गाल में पहुँच गया। जब सात्यकि ने यह देखा कि धृष्टद्युम्न को शत्रुओं ने फँसा लिया है, तब वह सटासट बाण छोड़ता हुआ, वहाँ जा घुसा। युद्धकुशल महाधनुर्धर सात्यकि को आते देख, कर्ण ने उसके दस बाण मारे। सात्यकि ने भी कर्ण के दस बाण मारे तथा सब वीरों को सुनाते हुए कहा—खड़ा रह—भागना मत।

हे राजन्! उस समय सात्यकि और कर्ण में वैसा ही युद्ध हुआ, जैसा

कि शक्ति और इन्द्र में हुआ था। इस युद्ध में क्षत्रियश्रेष्ठ सात्यकि ने अपने रथ की गड़गड़ाहट से क्षत्रियों को भयभीत कर दिया। कमलनयन कर्ण को बाण मार कर, विद्ध किया। बलवान कर्ण धनुष के टंकार से पृथिवी को कम्पायमान करता हुआ, सात्यकि से भिड़ गया। विपाठ, कर्णिक, नाराच, वत्सदन्त तथा क्षुर आदि अनेक प्रकार के अगणित बाण मार कर्ण ने सात्यकि को विद्ध किया। तब सात्यकि ने भी कर्ण पर बाणवृष्टि की। दोनों में समान रूप से युद्ध होने लगा। इस युद्ध में आपके पुत्र तथा कवचधारी कर्णपुत्र भी सात्यकि पर चारों ओर से बाणवृष्टि कर रहे थे। हे राजन्! कर्णपुत्र के बाणों के प्रहार से सात्यकि अत्यन्त कुपित हुआ। उसने अस्त्र मार कर, आपके पुत्रों तथा कर्ण एवं कर्णपुत्र के छोड़े बाणों को निवारण किया और दूसरा बाण मार कर, वृषसेन की छाती विदीर्ण कर डाली। हे राजन्! सात्यकि का बाण लगते ही पराक्रमी वृषसेन हाथ से धनुष छोड़, रथ ही में मूर्छित हो गिर पड़ा। अपने महारथी पुत्र को मृत समझ कर्ण के क्रोध की सीमा न रह गयी। वह बाण मार मार कर सात्यकि को पीड़ित करने लगा, ज्यों ज्यों कर्ण बाण प्रहार से सात्यकि को पीड़ित करता त्यों ही त्यों सात्यकि भी बाण मार मार कर, कर्ण को पीड़ित करता था। इस प्रकार बहुत देर तक उन दोनों में युद्ध होता रहा। सात्यकि ने कर्ण के दस और (सचेत हुए) वृषसेन के सात बाण मारे और उसके दोनों दस्तानों सहित उसका धनुष भी काट डाला, तब उन दोनों ने शत्रु को भयङ्कर लगने वाले दो धनुष सुसज्जित किये और चारों ओर से सात्यकि के ऊपर बाणवृष्टि आरम्भ की।

हे राजन्! वीरों का संहार करने वाला यह महायुद्ध हो रहा था—इतने ही में दूर से गाण्डीव धनुष की टंकार ध्वनि तथा रथ की घरघराहट सब ने सुनी। उसे सुन दुर्योधन ने कर्ण से कहा—हमारी समस्त सेना के प्रधान वीरों का तथा कौरवराजाओं का संहार कर, महाधनुर्धर अर्जुन अपने विजय पर हर्षित हो धनुष की टंकार रहा है। उस ओर इन्द्र की गर्जना के समान

अर्जुन की गर्जना, गाण्डीव की टंकारध्वनि तथा रथ की घरघराहट हो रही है। जान पड़ता है, अर्जुन अपने स्वरूप के अनुरूप कर्म कर रहा है। देखो न, यह भारतीय सेना कैसी बिखर गयी है। पवन जैसे बादलों को बखेरे, वैसे ही अर्जुन ने भी हमारी बहुत सी सेनाओं को बखेर दिया है। वे कहीं पर भी खड़ी नहीं हो रही हैं। यदि कोई योद्धा उसका सामना भी करता है, तो वह अर्जुन के निकट जाते ही वैसे ही नष्ट हो जाता है, जैसे समुद्र में छोटी डोंगी। अर्जुन के छोड़े बाणों से विद्ध हो और भागते हुए बड़े बड़े नामी योद्धाओं का चीत्कार सुनायी दे रहा है। हे राजसिंह! उनको भी तुम सुनो। आधीरात के समय आकाश में मेघगर्जन की तरह दुन्दुभियों की गड़गड़ाहट सुनाई पड़ रही है। उसे भी तुम सुनो। हे राजन्! अर्जुन के रथ की तरफ बड़ा कोलाहल मचा हुआ है। इस समय सात्वत-वंश-श्रेष्ठ सात्यकि ही हम लोगों के बीच में पड़ गया है। अतः यदि हम पहले उस का वध कर डालें, तो हम समस्त शत्रुओं को पराजित कर सकेंगे। पाञ्चालराज का पुत्र धृष्टद्युम्न भी शूर और महारथी योद्धाओं के साथ द्रोणाचार्य के सामने जा युद्ध कर रहा है। उसको पराजित करने की भी आवश्यकता है। अतः हे राजन्! इस अभिमन्यु की तरह चारों ओर से घेर कर, इन वृष्णिवंशियों तथा पृषतवंशियों का नाश कर डालें। तभी हम लोग विजयी हो पावेंगे। अर्जुन, द्रोण की सेना से भिड़ा हुआ है। अतः सात्यकि को हम लोगों के पंजे में फँसा हुआ ही समझना चाहिये। अब तुम लोग बड़े बड़े महारथियों को साथ ले उसके सामने जाओ और तुरन्त बड़ी फुर्ती से उसके ऊपर बाणवृष्टि करो। आप ऐसी युक्ति से काम लो कि सात्यकि अवश्य मारा जाय।

हे राजन्! कर्ण के इन विचारों को सुन, आपके पुत्र ने शकुनि से वैसे ही कहा जैसे इन्द्र यशस्वी विष्णु से समरक्षेत्र में कहते हैं। मामा! तुम दस सहस्र गजारोही और दस हज़ार रथियों को साथ ले, अभी अर्जुन के ऊपर चढ़ाई करो। अपनी सहायता के लिये तुम अपने साथ दुःशासन,

दुर्विषह, सुबाहु, दुष्प्रधर्षण सहित बहुत से पैदल सिपाहियों को भी लेते आओ। तुम कृष्ण, युधिष्ठिर, अर्जुन, नकुल, सहदेव तथा भीम का वध करो। मेरी जीत आप ही के ऊपर वैसे ही निर्भर है, जैसे देवताओं का विजय इन्द्र पर निर्भर करता है। जैसे अग्निकुमार कार्तिकेय ने असुरों का संहार किया था, वैसे ही तुम पाण्डवों का संहार कर डालो।

सञ्जय बोले—हे राजन्! जब आपके पुत्र ने शकुनि से इस प्रकार कहा, तब शकुनि आपके पुत्रों का प्रिय करने के लिये, आपके पुत्रों को तथा बड़ी भारी सेना ले पाण्डवों का वध करने के लिये प्रस्थानित हुआ और वहाँ जा जहाँ अर्जुन लड़ रहा था, पाण्डवों से लड़ने लगा।

हे राजन्! जब शकुनि ने पाण्डवों की सेना पर आक्रमण किया, तब बड़ी भारी एक सेना ले कर्ण ने सहसा सात्यकि के ऊपर धावा बोल दिया और सात्यकि के ऊपर वह बाणवृष्टि करने लगा। बहुत से राजाओं ने चारों ओर से सात्यकि को घेर लिया। उधर द्रोण ने धृष्टद्युम्न पर आक्रमण किया। आधीरात के समय द्रोणाचार्य के साथ धृष्टद्युम्न और पाञ्चाल वीरों के साथ महाविस्मयोत्पादक युद्ध छिड़ा।

एक सौ इकहत्तर का अध्याय

घोर युद्ध

सञ्जय बोले—हे धृतराष्ट्र! रथोन्मत्त योद्धा सात्यकि के प्रहारों को न सह सके। वे क्रुद्ध हो बड़ी फुर्ती के साथ सात्यकि के रथ की ओर दौड़े। उन्होंने सुवर्ण एवं चाँदी के काम से सज्जित रथों, घुड़सवारों और गजारोहियों द्वारा सात्यकि को चारों ओर से घेर लिया और वे सिंह समान गर्जना करने लगे। आपके महावीर योद्धा सात्यकि का वध करने की इच्छा से सत्यपराक्रमी सात्यकि के ऊपर बड़ी फुर्ती के साथ पैने बाणों की वर्षा करने लगे। शत्रुओं का संहार करने वाले महाभुज सात्यकि ने शत्रुओं की

ओर से आते हुए बाणों को सह, उन पर बहुत से बाण बरसाये। सात्यकि नतपर्व बाणों से शत्रुओं के सिर काटने लगा। वह आपके गजों की सूंड़ों, घोड़ों के सिरों और योद्धाओं की आयुधों सहित भुजाओं को काटने लगा। उस समय रणक्षेत्र छितराये हुए चँवरों और श्वेतछत्रों से वैसा ही शोभायमान जान पड़ता था, जैसा नक्षत्रों से आकाश सुशोभित होता है। हे राजन्! युद्ध में सात्यकि के सामने युद्ध करने वाले योद्धा प्रेतों की तरह रो रहे थे। उस आक्रन्दन से सारी समरभूमि गूँज रही थी। उस समय आधीरात थी। रोमाञ्चकारी भयङ्कर अर्धरात्रि में सात्यकि के बाणप्रहारों से घबड़ा कर, आपकी सेना ने पलायन किया। अपने सैनिकों का रोना सुन और उनको भागते देख, आपके पुत्र ने अपने सारथि से कहा—जहाँ से यह रोने का शब्द आ रहा है, वहाँ तू मुझे पहुँचा। दुर्योधन के आदेशानुसार सारथि ने दुर्योधन का रथ उस स्थान पर पहुँचा दिया। दुर्योधन ने सात्यकि पर आक्रमण किया। तब सात्यकि ने भी धनुष को कान तक खींच रक्तपायी बारह बाण दुर्योधन के मारे। सात्यकि ने दुर्योधन को सामने देखते ही बाणप्रहार से व्यथित कर डाला। तब क्रुद्ध हो दुर्योधन ने भी दस बाण मार कर, सात्यकि को विद्ध किया। तदनन्तर पाञ्चाल राजाओं ने एवं समस्त भरतवंशी राजाओं ने आपस में विकट युद्ध करना आरम्भ किया। उस समय सात्यकि ने क्रोध में भर आपके पुत्र की छाती में अस्सी बाण मारे। फिर उसने आपके पुत्र के रथ के घोड़ों का वध किया। फिर सारथि को उसने मार कर भूमि पर गिरा दिया। यद्यपि आपके पुत्र के रथ के घोड़े और सारथि मारे जा चुके थे, तथापि आपका पुत्र उस अश्वहीन एवं हतसारथि वाले रथ पर बैठा हुआ, सात्यकि के ऊपर तेज़ बाण छोड़ता रहा। आपके पुत्र के छोड़े हुए पचास बाण, फुर्तीले सात्यकि ने अपने बाणों से काट डाले। फिर सात्यकि ने भल्ल बाण से आपके पुत्र के हाथ का धनुष काट डाला। जब दुर्योधन के पास धनुष न रहा, तब वह कृतवर्मा के रथ पर जा चढ़ा। दुर्योधन के पीठ फेरते ही सात्यकि

ने भागीरथ को आपकी सेना को मार कर भगा दिया। एक ओर शकुनि लाखों घुड़सवारों और लाखों गजारोहियों का साथ ले चारों ओर से अर्जुन को घेर उसके ऊपर बाणवृष्टि कर रहा था। उसके साथ के क्षत्रिय योद्धा भी अर्जुन के ऊपर अस्त्रों की वर्षा कर रहे थे। अर्जुन ने सहस्रों रथों, हाथियों और घोड़ों का आगे बढ़ना रोक दिया और उनका संहार करना आरम्भ किया। तब शकुनि ने मुसक्या कर अर्जुन पर पैने बाण छोड़े और सौ बाण मार उनके विशाल रथ को आगे बढ़ने न दिया; तब अर्जुन ने शकुनि के बीस बाण मार कर, अन्य धनुर्धरों में से प्रत्येक के तीन तीन बाण मारे। इन्द्र जैसे असुरों का संहार करें; वैसे ही अर्जुन ने शत्रुओं के बाणों को रोक आपके योद्धाओं के ऊपर बाण छोड़े। रणभूमि में हाथी की सूँड की तरह भुजाएँ भरी पड़ी थीं और पंचमुखी सर्पों जैसी जान पड़ती थीं। मुकुटधारी, सुन्दर नासिकाओं वाले, सुन्दर कुण्डलधारी, ओठों को चबाते हुए, आँखें फाड़े हुए, प्रियभाषी, पदक एवं चूड़ामणिधारी क्षत्रियों के मस्तक, रणभूमि में लुढ़क रहे थे। उनसे वहाँ की भूमि की वैसी ही शोभा हो रही थी, जैसी शोभा पर्वतों से पृथिवी की होती है। उग्रपराक्रमी अर्जुन ने नतपर्व पाँच बाण पुनः शकुनि के और तीन बाण उलूक के मारे। उलूक ने एक बाण श्रीकृष्ण जी के मारा और सिंहनाद कर पृथिवी को प्रतिध्वनित किया। तब अर्जुन ने बाण मार शकुनि का धनुष काट डाला। उसके चारों घोड़े मार डाले। तब शकुनि रथ छोड़ नीचे उतर पड़ा और उलूक के रथ पर सवार हो गया। महारथी पिता पुत्र एक ही रथ पर सवार हो, अर्जुन पर मेघ की जलवृष्टि की तरह बाणवृष्टि करने लगे। तब अर्जुन ने पैने बाण मार कर उन दोनों को विद्ध किया और अगणित बाण मार, आपकी सेना को भगाया। उस समय हे राजन्! आपकी सेना वैसे ही छिन्न भिन्न हो गयी, जैसे पवन से बादल। कौरवों की सेना चारों ओर भागने लगी। उनमें से बहुत से तो भाग कर निविड़ अन्धकार में जा छिपे थे। हे राजन्! आपके योद्धाओं को युद्ध में परास्त कर, श्रीकृष्ण तथा अर्जुन ने हर्षित हो शङ्खध्वनि की।

दूसरी ओर धृष्टद्युम्न ने तीन बाण मार द्रोण को विद्ध किया। फिर उसने तीक्ष्ण बाणों से द्रोण का धनुष भी काट डाला। क्षत्रियों का संहार करने वाले वीरवर द्रोण ने टूटे धनुष को फेंक, एक दूसरा अच्छा धनुष हाथ में लिया। फिर सात बाण धृष्टद्युम्न के मारे। फिर पाँच बाण धृष्टद्युम्न के सारथि के ऊपर छोड़े। किन्तु धृष्टद्युम्न ने द्रोण के बाणों को अपने बाणों से काट डाला। फिर कौरवों की सेना का संहार वैसे ही किया जैसे इन्द्र, असुर-सेना का संहार करते हैं।

हे राजन्! इस प्रकार जब आपके सेना के योद्धा मारे जाने लगे तब, दोनों सेनाओं के बीच, यमलोकस्थित वैतरनी नदी की तरह भयङ्कर रुधिर की एक नदी बह चली। उसमें हाथी, घोड़े, रथ, नौका और जलजन्तु रूपी बन कर, बहने लगे। उस समय प्रतापी धृष्टद्युम्न कौरव सेना के योद्धाओं को छिन्न भिन्न कर और अपनी सेना से घिर, वैसे ही रणभूमि में स्थित हुए, जैसे देवताओं से घिर कर इन्द्र स्थित होते हैं। तदनन्तर पाण्डुनन्दन भीम, नकुल, सहदेव भी शिखण्डी के साथ साथ अपने अपने शङ्ख बजाने लगे। इसी तरह पराक्रमी एवं महारथी पाण्डव, आपके पुत्र दुर्योधन, कर्ण, द्रोण और अश्वत्थामा के देखते देखते आपकी सेना के सहस्रों रथियों को पराजित कर, भयङ्कर सिंहनाद करने लगे।

एक सौ बहत्तर का अध्याय

कर्ण और द्रोण द्वारा पाण्डवों की सेना का भगाया जाना

सञ्जय ने कहा—हे राजन्! पाण्डवों द्वारा अपनी सेना का विनाश होते तथा अपनी सेना को पलायन करते देख, आपका पुत्र दुर्योधन बड़ा क्रुद्ध हुआ। क्रोध में भरा दुर्योधन, कर्ण तथा द्रोण के पास गया और उनसे बोला—जब अर्जुन ने सिन्धुराज का वध कर डाला; तब आपने ही यह युद्ध आरम्भ किया है। तो भी आप लोग मध्यस्थ की तरह मेरी सेना को नष्ट

होती हुई देख रहे हैं। यदि आप मुझको त्यागना ही चाहते थे, तो आपको मुझे इस बात का विश्वास दिलाना उचित न था कि, आप लोग पाण्डवों को जीत लेंगे। यदि मुझे आपकी यह दुरभिसन्धि पहले से अवगत होती तो मैं भूल कर भी पाण्डवों से वैर बाँध, अपनी सेना का नाश न करता। यदि आप दोनों सचमुच मुझे नहीं त्याग बैठे, तो आपको अपने बल एवं पराक्रम के अनुरूप युद्ध करना चाहिये।

हे राजन्! द्रोणाचार्य और कर्ण दुर्योधन के वचन रूपी चाबुक को खा कर, क्रुद्ध सर्प की तरह युद्ध करने लगे। जगत्प्रसिद्ध धनुर्धर द्रोणाचार्य और कर्ण, सात्यकि आदि पाण्डव पक्ष के योद्धाओं की ओर झपटे। तब पाण्डव भी अपनी सेना सहित बारंबार सिंहनाद करने वाले द्रोण और कर्ण की ओर लपके। तब द्रोण ने क्रोध में भर दस बाणों से शिनिपौत्र सात्यकि को विद्ध किया। फिर कर्ण ने दस, दुर्योधन ने सात, वृषसेन ने दस और शकुनि ने सात बाण मार, सात्यकि को विद्ध किया। अधिक क्या कहूँ, उस समय उन समस्त योद्धाओं ने सात्यकि को अपने बाणजाल से ढक दिया। सोमकों ने जब देखा कि द्रोण, पाण्डवों की सेना के योद्धाओं का नाश किये डालते हैं, तब वे बड़ी फुर्ती से द्रोणाचि के ऊपर बाणवृष्टि करने लगे। उस समय द्रोण चारों ओर बाण बरसाते हुए क्षत्रियों का नाश वैसे ही करने लगे, जैसे सूर्य अपनी किरणों से अन्धकार को नष्ट करता है। उस समय द्रोण के बाणों से व्यथित पाञ्चाल वीरों का घोर तुमुल शब्द सुन पड़ा। उस समय उन लोगों में से कोई अपने पुत्र से, कोई अपने पिता से, कोई भ्राता से कोई मामा से, कोई भाँजे से, कोई मित्र से और कोई अपने सम्बन्धी से हाथ धो, रणभूमि से भागने लगे। कोई कोई योद्धा ऐसे बद-हवास हो गये कि वे द्रोणाचार्य ही की ओर भागे। उस रात को पाण्डवों की ओर के योद्धा द्रोण के बाणों से पीड़ित हो, भीमसेन, अर्जुन, श्रीकृष्ण, नकुल, सहदेव और धृष्टद्युम्न के सामने ही मशालों, लुकों, पलीतों को इधर उधर पटक, रणक्षेत्र से भागे। जब वे मशालें आदि फेंक कर भागने लगे, तब

रणक्षेत्र में अन्धकार फैल जाने से कुछ भी न सूझ पड़ता था। किन्तु हे राजन्! आपकी सेना के प्रकाश में पलायन करते हुए शत्रु पक्षीय योद्धा साफ दिखलायी पड़ते थे। द्रोण और कर्ण उन भागते हुए योद्धाओं पर पीछे से बाणप्रहार कर रहे थे। जब द्रोण और कर्ण के प्रहारों से चारों ओर भागते हुए पाञ्चाल योद्धा नष्ट होने लगे—तब दुःखी हो श्रीकृष्ण ने अर्जुन से कहा-हे अर्जुन! देखो, धनुर्धारियों में अग्रणी द्रोण और कर्ण पाञ्चाल योद्धाओं सहित, धृष्टद्युम्न और सात्यकि के ऊपर भीषण बाण प्रहार कर रहे हैं। अधिक क्या कहूँ, उन दोनों की बाणवृष्टि से, हमारी ओर के महारथी बारंबार युद्धभूमि से भाग रहे हैं। रोके जाने पर भी वे अब नहीं रुकते, अतः चलो शस्त्रधारी सैनिकों सहित हम लोग आगे बढ़ कर, कर्ण और द्रोणाचार्य को रोकने के लिये विशेष यत्न करें, ये दोनों बड़े वीर, कृतास्त्र, बली और प्रभावशाली हैं। यदि हम लोग इनकी उपेक्षा करते रहे तो ये दोनों आज रात ही में तुम्हारी समस्त सेना का संहार कर डालेंगे। जब श्रीकृष्ण और अर्जुन की इस प्रकार बातचीत हो रही थी, तब महाबली भीमसेन भागती हुई सेना को लौटा कर, द्रोण की ओर जाने लगे। द्रोण की ओर ससैन्य भीम को आते देख, श्रीकृष्ण ने अर्जुन से कहा—हे पार्थ! भीमसेन क्रुद्ध हो, सोमक वंशी सेना के बहुत से योद्धाओं को साथ लिये हुए, बड़ी तेज़ी से द्रोण एवं कर्ण की ओर जा रहे हैं। तुम अपनी सेना को धैर्य बँधा महारथी पाञ्चाल योद्धाओं और भीमसेन के साथ जा शत्रुओं से लड़ो।

हे राजन! पुरुषसिंह श्रीकृष्ण और अर्जुन इस प्रकार आपस में कहासुनी कर, द्रोण और कर्ण की ओर ताकते हुए समरभूमि में खड़े थे। उधर धर्मराज की विशाल वाहिनी पुनः लौट कर उस स्थान में जा स्थित हुई; जहाँ द्रोण तथा कर्ण लड़ रहे थे। जैसे पूर्णिमा के दिन समुद्र में लहरें उठती हैं, वैसे ही कौरवों और पाण्डवों की सेनाओं में आपस में महाविषम युद्ध होने लगा। तदनन्तर हे राजन्! आपके पक्ष के योद्धा हाथ की मशालें और

पलीते फेंक और निःशङ्क हो पाण्डव पचीस वीरों से लड़ने लगे। इससे युद्धभूमि अन्धकारमयी हो रही थी। साथ ही धूल उड़ने से वहाँ कुछ भी नहीं सूझ पड़ता था। तब विजयाभिलाषी वीर अपने नाम और गोत्र सुना कर लड़ रहे थे। जैसे स्वयंवर सभा में नाम और गोत्र सुन पड़ते हैं, वैसे ही युद्धभूमि में लड़ने वाले राजाओं के नाम और गोत्र सुन पड़ते थे। हे राजन्! तदुपरान्त कुछ देर के लिये समरभूमि में सन्नाटा छा गया। किन्तु कुछ ही देर बाद जब सैनिक पुनः लड़ने लगे, तब पराजित और विजयी दोनों ओर की सेनाओं के बीच बड़ा भारी कोलाहल होने लगा। हे राजेन्द्र! उस समय जिस जगह मशालों की रोशनी देख पड़ती थी, उसी जगह शूरवीर पतङ्ग की तरह दौड़ कर युद्ध करने लगते थे। इस प्रकार जब कौरवों और पाण्डवों की लड़ाई होने लगी; तब धीरे धीरे वह महानिशा और भी अधिक भयङ्कर जान पड़ने लगी।

एक सौ तिहत्तर का अध्याय

घटोत्कच का रणाङ्गण में प्रवेश

सञ्जय ने कहा—हे राजन्! तदनन्तर शत्रुनाशन कर्ण ने धृष्टद्युम्न की छाती में दस मर्मभेदी बाण मारे। धृष्टद्युम्न ने कर्ण के बाणों से विद्ध और निर्भय हो कर, कर्ण से कहा—खड़ा रह! खड़ा रह!! और फिर दस बाण मार, कर्ण को घायल किया। वे दोनों योद्धा कान तक धनुष तान कर, एक दूसरे पर बाणवृष्टि कर, एक दूसरे को ढक रहे थे। कर्ण ने धृष्टद्युम्न के चारों घोड़े मार कर गिरा दिये। फिर सारथि को विद्ध कर, धृष्टद्युम्न के हाथ का धनुष भी काट डाला। फिर कर्ण ने भल्ल बाण से धृष्टद्युम्न के सारथि को मार, भूमि पर गिरा दिया।

इस प्रकार रथ का, घोड़ों का तथा सारथि का नाश होने पर, धृष्टद्युम्न अकेला रह गया। तब उसने एक बड़ा भारी परिघ मार, कर्ण के घोड़ों को

मार डाला। तब कर्ण ने विषैले सर्प जैसे भयङ्कर बाण मार कर, धृष्टद्युम्न को घायल किया। तब धृष्टद्युम्न पैदल ही चल कर युधिष्ठिर की सेना में आ पहुँचा और सहदेव के रथ पर सवार हो, पुनः कर्ण पर आक्रमण करने को उद्यत हुआ। किन्तु युधिष्ठिर ने उसको आगे जाने से रोका। उधर महातेजस्वी कर्ण ने सिंहनाद कर अपना धनुष टंकोरा। फिर बड़े ज़ोर से अपना शङ्ख बजाया। कर्ण द्वारा धृष्टद्युम्न को पराजित देख, सोमक और पाञ्चाल सामन्त क्रोध से लाल हो गये। वे मृत्यु के भय को छोड़ और विविध प्रकार के आयुधों को ले, कर्ण का वध करने को उसकी ओर गये। इस बीच में कर्ण के सारथि ने कर्ण के रथ में उत्तम जाति के सिन्धु देशीय शङ्ख जैसे सफेद रंग के घोड़े जोत लिये थे। वे घोड़े बड़े वेगवान् थे। नये घोड़ों से युक्त रथ पर सवार कर्ण ने पाञ्चाल सामन्तों की सेना पर वैसे ही बाणवृष्टि की जैसे मेघमण्डल, पर्वत पर जलवृष्टि करते हैं। कर्ण की मार से घबड़ा कर, पाञ्चालों की महासेना वैसे ही भागी; जैसे सिंह के डर से विकल हो मृगी भागती है। उस समय सैनिक लोग कर्ण के बाणप्रहारों से घोड़ों, गजों और रथों से टपाटप गिर रहे थे। कर्ण भागते हुए योद्धाओं की भुजाएँ तथा कुण्डलों से शोभायमान मस्तकों को काटने लगा। कर्ण क्षुरप्र बाणों से गजारोहियों, अश्वारोहियों तथा पैदल सिपाहियों की जाँघे काट रहा था। उस समय बहुत से महारथी भी रणक्षेत्र से भाग रहे थे। वे हड़बड़ी में अपनी पीड़ा तथा वाहनों तक को भूल गये थे। कर्ण के बाणों से घायल, पाञ्चाल और सृञ्जय पत्ते की खड़कन सुनते ही कह उठते, अरे वह कर्ण आया और भयभीत हो जाते थे। यदि घबड़ा कर अपना ही कोई सैनिक भागता; तो वे उसे ही कर्ण समझ और भयभीत हो भाग खड़े होते थे। हे राजन्! इस प्रकार पाण्डवों की सेना भागने लगी। तब कर्ण ने उसका पीछा कर, उस पर बाणों की वृष्टि की। द्रोण और कर्ण ने बड़े बड़े बाणों से पाञ्चाल सामन्तों को मारना आरम्भ किया। तब पाञ्चाल राजे भ्रमवश हो, एक दूसरे का मुख निहारने लगे। वे रण में खड़े न रहने

के कारण जिधर को मुख फिरता उधर ही को भाग जाते थे। अपनी सेना को भागते देख धर्मराज भी भागने को उद्यत हुए। वे अर्जुन से बोले—हे अर्जुन! सामने खड़े हुए धनुषधारी कर्ण को देखो। यह आधी रात के समय तपते हुए सूर्य की तरह दिखायी दे रहा है। अर्जुन! हमारे नातेदार भी कर्ण के बाणों से बिद्ध हो, अनाथ की तरह विलाप कर रहे हैं। उन्हींके विलाप की यह दारुणध्वनि सुन पड़ती है। उसे ज़रा सुनो। हे पार्थ! जब कर्ण शीघ्रगामी बाणों को चढ़ा चढ़ा कर, छोड़ता है, तब यह नहीं जान पड़ता कि, वह कब बाण तरकस से निकालता, कब धनुष पर रखता और कब धनुष को तान कर, उसे छोड़ता है। वह बाण छोड़ने में एक ही फुर्तीला है। इससे तो मुझे जान पड़ता है कि, वह अवश्य ही हम लोगों का नाश कर डालेगा। अतः उसका वध करने के लिये तुम्हें जो उपाय ठीक जान पड़े सो करो।

जब इस प्रकार धर्मराज ने अर्जुन से कहा—तब अर्जुन ने श्रीकृष्ण से कहा—महाराज युधिष्ठिर आज कर्ण का पराक्रम देख, भयभीत हो गये हैं। आज कर्ण की सेना ने वारंवार आक्रमण किया है। अतः हमें अब समयानुसार इसके लिये शीघ्र ही उद्योग करना चाहिये। क्योंकि हमारी सेना भयभीत हो गयी है और इसलिये भाग रही है। हे मधुसूदन! हमारे योद्धा द्रोण के बाणों से विध गये हैं और कर्ण से त्रस्त हो रहे हैं। सैनिकों का तो कहना ही क्या, सेनापति भी भाग रहे हैं। देखो, कर्ण भागते हुए, महारथियों पर तीक्ष्ण बाणों का प्रहार कर रहा है। मैं देखता हूँ, कर्ण निर्भीक हो रणक्षेत्र में घूम रहा है। सर्प जैसे पादस्पर्श को नहीं सह सकता, वैसे ही मैं भी अपनी आँखों के सामने इसका इस प्रकार भ्रमण करना नहीं देख सकता। अतः जहाँ महारथी कर्ण खड़ा है? वहाँ मुझे शीघ्र ले चलो। हे मधुसूदन! या तो आज मैं उसका वध कर डालूँगा अथवा वही मुझे मार डालेगा।

श्रीकृष्ण ने कहा—हे पार्थ! समरभूमि में भ्रमण करते हुए अमानुषिक

पराक्रमी नरव्याघ्र कर्ण को, मैं इन्द्र के समान बलवान् समझता हूँ। इसके साथ या तो तू लड़ सकता है अथवा घटोत्कच। किन्तु यह सब होने पर भी मुझे यह समय तेरे लिये कर्ण से लड़ने का उपयुक्त प्रतीत नहीं होता। क्योंकि कर्ण के पास एक-पुरुष-घातिनी इन्द्रप्रदत्त शक्ति है। कर्ण ने वह शक्ति तेरे वध के लिये सैंत रक्खी है। वह बड़ी भयङ्कर शक्ति है। अतः इस समय घटोत्कच भले ही कर्ण के सामने जाय, किन्तु तेरा जाना ठीक नहीं। घटोत्कच, भीम का पुत्र होने से बड़ा बलवान् है। वह देवताओं के समान पराक्रमी है और उसके पास दिव्य राक्षसी और आसुरी तीनों प्रकार के अस्त्र शस्त्र हैं। फिर उसका तुम्हारे ऊपर पूर्ण अनुराग है। वह तुम्हारा हितैषी भी है। अतः वह निश्चय ही कर्ण को परास्त करेगा।

श्रीकृष्ण के इन वचनों को सुन, महाभुज और कमलनयन अर्जुन ने घटोत्कच को अपने निकट बुलाया। वह राक्षस कवच, बाण, धनुष और खड्ग आदि शस्त्रों से सुसज्जित हो, अर्जुन के निकट जा खड़ा हुआ। उसने श्रीकृष्ण तथा अर्जुन को प्रणाम किया। तदनन्तर श्रीकृष्ण की ओर देख, उसने कहा—मैं उपस्थित हूँ। मेरे लिये क्या आज्ञा है? यह सुन दाशार्ह-कुलोत्पन्न श्रीकृष्ण ने मुसक्या कर और हर्षित हो हिडिम्बानन्दन घटोत्कच से, जिसका मेघ के समान श्याम मुखमण्डल, चमचमाते कुण्डलों से भूषित था, कहा—वत्स घटोत्कच! मैं जो बात तुमसे कहता हूँ, उस पर तू ध्यान दे। आज तेरे पराक्रम दिखाने का समय आ गया है। तेरे समान पराक्रम अन्य किसी में नहीं है। अतः तू रणसागर में निमग्न होते हुए नातेदारों के लिये नौका रूप बन कर, उनको उबार ले। तेरे पास विविध प्रकार के अस्त्र शस्त्र हैं और तुझे राक्षसी माया भी मालूम है। हे घटोत्कच! कर्ण ने आज पाण्डवों की सेना को वैसे ही हाँका है, जैसे गोपाल गौओं को हाँके। फिर देख, कर्ण, पाण्डवों के पक्ष के बड़े बड़े क्षत्रिय योद्धाओं का संहार कर रहा है। बाणों की महावृष्टि करने वाले, कर्ण के बाणों की ज्वाला से व्यथित हो योद्धा, समरक्षेत्र में खड़े भी नहीं हो सकते। कर्ण ने आधी रात के समय

बाणवृष्टि कर पाञ्चाल राजाओं को वैसे ही पीड़ित कर खिन्न किया है, जैसे सिंह, मृगों को पीड़ित करता है। अतः वे समरक्षेत्र से भागे जा रहे हैं। इस समय कर्ण ज़ोरों पर है और हे भयङ्कर पराक्रमी! तुझे छोड़ और कोई इस समय उसका सामना करने योग्य नहीं देख पड़ता। अतः तू अपने मामाओं तथा चाचाओं के पराक्रम एवं अस्त्र के बलानुरूप पराक्रम प्रदर्शित कर। हे हिडिम्बानन्दन! लोग पुत्रों को इसी लिये चाहते हैं कि, समय पर वे अपने पिता का उद्धार करें। अतः तू अपने पिता एवं चाचाओं का दुःख दूर कर। इस लोक और परलोक में उद्धार करने वाले हितैषी पुत्रों को पिता चाहा करता है। अतः तू उनकी इच्छाओं को पूरा कर। हे भीमनन्दन! तू युद्ध में जब प्रवृत्त होगा; तब रात्रि का समय होने के कारण तेरा बल भयङ्कर हो जायगा और तेरी माया दुस्तर होगी। आज तो कर्ण ने पाण्डवों की सेना को बाणों से बिद्ध कर डाला है। पाण्डव, कौरव सेना रूपी सागर में निमग्न हो गये हैं, उनका तू उद्धार कर। राक्षस लोग, रात के समय अत्यन्त बलवान, दुराधर्ष, शूर तथा पराक्रमी हो जाया करते हैं। अतः तू आज आधीरात के समय माया रच, धनुर्धर कर्ण को मार डाल और धृष्टद्युम्न आदि पाण्डव लोग, द्रोण का वध करें।

सञ्जय ने कहा—हे धृतराष्ट्र! जब श्रीकृष्ण यह कह चुके, तब उनका समर्थन करते हुए अर्जुन ने घटोत्कच से कहा—मैं शत्रुनमनकारी तुझको, महाबली सात्यकि को तथा अपने भाई भीम को अपनी ओर के महारथियों में मुख्य मानता हूँ। अतः तू जा कर आज रण में कर्ण के साथ द्विरथ युद्ध कर। इस समय महारथी सात्यकि तेरे पीछे रह कर, तेरी रक्षा करेगा। पूर्वकाल में कार्तिकेय की सहायता से इन्द्र ने जैसे तारकासुर का वध किया था, वैसे ही सात्यकि की सहायता से तू भी रण में वीर कर्ण का वध कर।

यह सुन घटोत्कच ने कहा—हे राजन्! मैं तो अकेला ही कर्ण, द्रोण तथा अस्त्रकुशल अन्य बलवान क्षत्रियों के लिये पर्याप्त हूँ। मुझे दूसरे किसी महारथी की सहायता अपेक्षित नहीं है। आज मैं कर्ण के साथ ऐसा युद्ध

करूँगा कि, जब तक मानव जाति इस धराधाम पर रहेगी; तब तक वह मेरे आज के युद्ध को याद करती रहेगी। मैं राक्षसी धर्म के अनुसार शूरों को, भीरुओं को तथा प्राणदान के लिये अनुनय विनय करने वालों को भी न छोड़ूँगा; मैं तो सब को मार डालूँगा।

सञ्जय ने कहा—हे राजन् ! यह कह घटोत्कच लड़ने के लिये कर्ण के सामने गया। क्रोध के मारे लाल मुँह किये और सुनहले केशों वाले हिडिम्ब का, सूतपुत्र कर्ण ने हँसते हुए सामना किया। सिंहगर्जन करते हुए कर्ण तथा हिडिम्ब में वैसा ही महायुद्ध होने लगा, जैसे इन्द्र और प्रह्लाद में हुआ था।

एक सौ चौहत्तर का अध्याय

दूसरे अलम्बुष का वध

सञ्जय ने कहा कि हे राजन् ! युद्ध में कर्ण का वध करने के लिये घटोत्कच ने उस पर आक्रमण किया। यह देख आपके पुत्र ने दुःशासन से कहा—हे मानद ! कर्ण को शत्रुसैन्य का नाश करते देख, घटोत्कच उस पर दौड़ा चला आता है। अतः तू इस राक्षस का आगे बढ़ना रोक। जहाँ महाबली कर्ण खड़ा है, तू ससैन्य जा और कर्ण की रक्षा कर। कहीं ऐसा न हो कि, हम लोगों के प्रमाद से यह घोर राक्षस कर्ण का नाश कर डाले। उन दोनों में इस प्रकार बातचीत हो ही रही थी कि, जटासुर का महाबली पुत्र अलम्बुष दुर्योधन के निकट आ कहने लगा—हे दुर्योधन ! आपकी आज्ञा से, युद्धोन्मत्त आपके विख्यात वैरी पाण्डवों का उनके अनुचर वर्ग सहित मैं वध करना चाहता हूँ। मेरा पिता जटासुर राक्षसों का मुखिया था, उसे पाण्डवों ने शत्रु दे कई वर्षों पूर्व रक्षोघ्न मंत्रों से मार डाला है। अतः मैं पाण्डवों के रक्त तथा माँस से अपने पिता का तर्पण कर, उन्हें तृप्त करना चाहता हूँ। अतः हे राजेन्द्र ! आप मुझे इस कार्य को करने की अनुमति प्रदान करें।

यह सुन दुर्योधन बहुत प्रसन्न हुआ और बोला—मैं तो आचार्य द्रोण एवं कर्ण के साहाय्य से अपने शत्रुओं का नाश करने की शक्ति रखता हूँ। किन्तु यदि तेरी इच्छा है तो तू प्रथम राक्षस और मनुष्य से उत्पन्न घोर घटोत्कच का वध कर। क्योंकि वह पाण्डवों का हितैषी है और हमारे हाथियों, घोड़ों और रथों का नाश करता है। वह आकाश में भी जा सकता है। अतः उससे लड़ कर तुम उसे मार डालो।

दुर्योधन के इन वचनों को सुनते ही और तथास्तु कह कर, महाकाय जटासुरनन्दन अलम्बुष ने भीमसुत घटोत्कच को युद्ध के लिये ललकारा। उस पर विविध भाँति के बहुत से बाण छोड़े। हिडिम्बासुत घटोत्कच ने अकेले ही, अलम्बुष, कर्ण तथा दुस्तर कौरव सैन्य पर, प्रहार कर उसे वैसे ही तितिर बितर कर दिया जैसे प्रचण्ड पवन मेघघटाओं को तितिर बितर कर देता है। राक्षस अलम्बुष ने भी घटोत्कच की माया को देख, उस पर विविध प्रकार के बाणों की वृष्टि की। फिर पाण्डवों की सेना पर बाणवृष्टि कर उसने उस सेना को भगाया। उसने पाण्डवों की सेना वैसे ही भगायी जैसे हवा, बादलों को भगाती है। जब घटोत्कच ने हे राजन्! आपकी सेना पर बाणवृष्टि करनी आरम्भ की, तब सहस्रों सैनिक मशालें फेंक फेंक कर, आधी रात के समय रणक्षेत्र से भागने लगे। कौरव सेना को भागते देख, अलम्बुष क्रोध से लाल हो गया। उसने घटोत्कच के दस बाण वैसे ही मारे जैसे मदमत्त हाथी के अङ्कुश मारा जाता है। घटोत्कच ने अतिदारुण गर्जन कर, उसके वाहनों के तथा रथ के और हथियारों के काट काट कर टुकड़े टुकड़े कर डाले। फिर घटोत्कच ने कर्ण तथा अन्य सहस्रों कुरुवंशी राजाओं पर बाणों की वैसे ही वृष्टि की, जैसे वर्षाऋतु के बादल मेरु पर्वत पर जल की वृष्टि करते हैं। जब घटोत्कच ने कौरव सेना को उत्पीड़ित किया, तब तो सैनिकों में बड़ी गड़बड़ी पड़ गयी। उनकी चतुरङ्गिणी सेना उत्तरोत्तर आपस में एक दूसरे का संहार करने लगी। जब जटासुरनन्दन अलम्बुष रथ तथा सारथिहीन हो गया; तब क्रुद्ध हो उसने घटोत्कच पर मुष्टिप्रहार किया। उसके

उस मुष्टिप्रहार से घटोत्कच वैसे ही काँप उठा जैसे वृक्षों, लताओं तथा घास फूस सहित पर्वत काँपने लगता है। तदनन्तर शत्रुनाशकारी घटोत्कच ने परिघ के समान मोटे हाथ की मुट्ठी बाँध, बड़े ज़ोर से एक घूँसा अलम्बुष की छाती में मारा। फिर उसे भूमि पर पटक, घटोत्कच ने उसे खूब रगड़ा। तदनन्तर अलम्बुष ने ज्यों त्यों कर अपने को घटोत्कच के हाथ से छुड़ाया और फिर वेग से घटोत्कच के ऊपर आक्रमण किया और उसे पटक कर रगड़ा। दोनों गर्जन कर लड़ने लगे। उनका तुमुल युद्ध रोमाञ्चकारी था। वे दोनों बड़े मायावी एवं बलवान् वीर, अलम्बुष और घटोत्कच वैसे ही लड़ने लगे जैसे इन्द्र और विरोचनपुत्र बलि मायामय युद्ध करते थे। देखते देखते वे अग्नि और समुद्र बन जाते थे, क्षण में गरुड़ तथा तक्षक बन जाते थे। क्षण में मेघ और पवन बन जाते थे। क्षण में वज्र तथा महापर्वत, क्षण में राहु और सूर्य, क्षण में हाथी तथा सिंह बनते थे। इस प्रकार सैकड़ों प्रकार की माया रच, वे दोनों एक दूसरे का वध करने के लिये विचित्र युद्ध कर रहे थे। परिघ, गदा, प्रास, मुद्गर, पट्टिश, मूसल और पर्वत शृङ्गों से एक दूसरे को मारते थे। तदनन्तर वे दोनों महाराक्षस घुड़सवार, हाथी, सवार, रथी, और पैदल बन कर, आपस में लड़ने लगे। इस प्रकार कुछ देर लड़ने के बाद घटोत्कच क्रोध में भर गया और अलम्बुष का नाश करने के लिये आकाश की ओर उड़ा और बाज़ की तरह पुनः नीचे उतर उसे पृथिवी पर वैसे ही पटका जैसे विष्णु ने मय को दे पटका था। फिर म्यान से तलवार खींच, घटोत्कच ने छटपटाते और चिल्लाते अलम्बुष का सिर काट डाला। फिर रक्त से तर उस कटे सिर को चोटी से पकड़ घटोत्कच, दुर्योधन के रथ की ओर गया और उस विकृत आकार वाले मस्तक को दुर्योधन के रथ में डाल, वह वैसे ही गर्जा जैसे वर्षाकालीन मेघ गर्जते हैं। फिर घटोत्कच ने दुर्योधन से कहा—अपने सहायक बन्धु का परिणाम देख, मैंने इसे मार डाला। अब तू शीघ्र ही कर्ण सहित इसी दशा को प्राप्त होगा। जिसे धर्म, अर्थ और काम को प्राप्त करने की चाहना हो, उसे ब्राह्मण, राजा और

स्त्री के निकट निःशस्त्र न जाना चाहिये। अतः तो मैं तुम्हें यह (कटा सिर) भेंट करता हूँ। मैं जब तक कर्ण का वध करूँ; तब तक तू हर्षित हो यहाँ ही लगा रह।

हे राजन्! दुर्योधन से इस प्रकार कह, घटोत्कच उस ओर गया जिस ओर कर्ण था। फिर उस पर तीक्ष्ण बाणों की वर्षा करने लगा। इस प्रकार उस समय मनुष्यों और राक्षसों में घोर एवं विस्मयकारी युद्ध होने लगा।

एक सौ पचहत्तर का अध्याय

घटोत्कच का विक्रम

धृतराष्ट्र ने पूँछा—हे सञ्जय! अर्धरात्रि के समय सूर्यपुत्र कर्ण तथा घटोत्कच का परस्पर युद्ध होने लगा तो वह युद्ध कैसा हुआ था? उस भयानक राक्षस का रूप, उसका रथ, उसके घोड़े तथा उसके अस्त्र शस्त्र कैसे थे? उसके घोड़ों की मुखाकृति कैसी थी? उसके रथ की ध्वजा, उसका धनुष, कितने बड़े थे? उसका कवच तथा शिरस्त्राण कैसा था? तुम मुझे मेरे इन प्रश्नों के उत्तर दो। क्योंकि तुम वृत्तान्त कहने में बड़े पटु हो।

सञ्जय ने कहा—हे राजन्! घटोत्कच की आँखें लाल लाल थीं। उसका शरीर बड़ा लंबा चौड़ा था। मुख की रंगत ताँबे के रंग की थी। उसका पेट पतला और सिर के बाल खड़े थे। डाढ़ी और मूँछें काले रंग की, कान कीलों जैसे, कंधे मोटे, मुख कान तक फटा हुआ, डाढ़ें बड़ी पैनी और आगे के चार दाँत मोटे और निकले हुए थे। जीभ लंबी और लाल रंग की थी। इसी प्रकार उसके ओठ भी लाल लाल और लवे थे। उसकी भौंहें लंबी, नासिका स्थूल, उसकी देह काले रंग की और कण्ठ लाल रंग का था। वह बड़ा लंबा था और बड़ा भयङ्कर था। उसका माथा बहुत बड़ा और भुजाएं लंबी थीं। उसके शरीर में बड़ा बल था। उसके शरीर की खाल रूखी और खुरदरी थी। उसकी जंघाएँ तथा नितम्ब बड़े मोटे मोटे थे।

उसकी नाभि पेट के मांसों में छिपी हुई थी। उत्पात प्रदेश में भी उसके बाल थे। वह भुजाओं पर बाजूबन्द पहिने हुए था और बड़ा मायावी था। पहाड़ जैसे अपने शिखर के ऊपर दावानल धारण करता है वैसे ही वह अपने वक्षःस्थल पर सुवर्ण का हार धारण किये हुए था। उसका मुकुट बड़ा चमचमा रहा था। उसका रत्नजटित वह मुकुट रत्नजटित वन्दनवार की तरह शोभा पाता था। उसके दोनों कानों में सूर्य की तरह लाल रंग के दो कुण्डल थे। गले में सुवर्ण की सुन्दर सुन्दर माला पड़ी हुई थीं। वह अपने प्रकाण्ड शरीर पर एक बड़ा भारी कवच पहने हुए था। वह कवच काँसे का था और उसमें बहुत अधिक चमक भी थी। वह एक ऐसे विशाल रथ पर सवार था, जिसमें सैकड़ों घुँघरू टंके थे और चलते समय झनझनाते थे। वह रथ रीछ के चर्म से मढ़ा था। उस रथ की लंबाई चौड़ाई चार सौ हाथ की थी। उसमें तरह तरह के हथियार रखे हुए थे। उसके ऊपर ध्वजा फहरा रही थी। रथ में आठ पहिये थे। चलते समय रथ में मेघगर्जन जैसा शब्द होता था। उस रथ में ऐसे सौ घोड़े जुते हुए थे, जिनके नेत्र लाल थे, गज की तरह डील थे। जो भयङ्कर आकृति वाले, इच्छानुकूल रूप धारण करने वाले और इच्छानुसार वेग वाले थे। उनके अयाल बहुत लंबे थे उन्हें परिश्रम नहीं व्यापता था। वे बराबर हिनहिनाया करते थे। घटोत्कच के सारथि का नाम विरूपाक्ष था। उसके नेत्र बड़े भयङ्कर थे और कुण्डल चमक रहे थे। वह उन घोड़ों को सूर्य की किरणों की तरह चमचमाती रासों से थामे हुए था। जैसे सूर्य, अरुण के साथ रथ पर बैठते हैं, वैसे ही घटोत्कच भी विरूपाक्ष के साथ अपने रथ पर बैठा हुआ था। उसकी ऊँची ध्वजा आकाश में फहरा रही थी। उसके ऊपर लाल नेत्र से युक्त मांसभक्षी एक भयङ्कर गिद्ध बैठा हुआ था। ऐसे रथ पर सवार हो, घटोत्कच, इन्द्र धनुष जैसे धनुष पर रोदा चढ़ा कर और मोटे मोटे बाणों से सम्पूर्ण दिशा को परिपूरित कर, उस भयङ्कर रात में कर्ण की ओर झपटा। जब वह राक्षस अपने रथ पर बैठा हुआ अपना धनुष टंकारने लगा; तब समस्त शब्दों का अतिक्रम करने वाले

वज्र की तरह उसका धनुषटंकार सुन पड़ा। उससे आपकी सेना के योद्धा भयत्रस्त हो कर, वैसे ही थर्राने लगे, जैसे वायु के झोंका से समुद्र की तरंगें काँपती हैं। उस भयङ्कर शब्द वाले राक्षस को अपनी ओर आते देख, कर्ण ने उसे निवारण करना खिलवाड़ समझा और वे उसे निवारण करने लगे। जैसे हाथी और यूथपति ऋषभ क्रुद्ध हो एक दूसरे पर झपटते हैं, वैसे ही कर्ण बाणवृष्टि करता हुआ, उस राक्षस की ओर झपटा। उस समय कर्ण और राक्षस घटोत्कच का युद्ध वैसा ही हुआ जैसा कि पूर्वकाल में इन्द्र और सम्बरासुर का हुआ था। महावेगशाली भयङ्कर टंकार शब्द से परिपूरित प्रचण्ड धनुष को ग्रहण कर तथा महाशस्त्रों के प्रहार से उस विचित्र शरीर हो, दोनों एक दूसरे को बाणों से छिपाने लगे। फिर धनुष को कान तक तान कर छोड़े हुए बाणों से एक दूसरे के कवचों को फोड़, वे दोनों एक दूसरे को घायल करने लगे। जैसे दो शार्दूल नखों से और दो हाथी अपने दाँतों से लड़ते हैं, वैसे ही वे दोनों शक्ति आदि अस्त्रों से तथा बाणों के प्रहार से घायल हो गये। कभी तो वे बाण छोड़ते, कभी अन्य अस्त्रों का प्रहार करते थे। उन दोनों में ऐसा भयङ्कर युद्ध होने लगा कि, अन्य योद्धाओं को उस युद्ध को देखने की हिम्मत भी न पड़ी। अधिक क्या कहा जाय, उस समय उन दोनों के शरीर बाणों से विद्ध हो रहे थे। उनके शरीरों से वैसे ही रक्त बह रहा था जैसे पर्वत के ऊपर से गेरू की धार प्रवाहित होती है। परस्पर बाण प्रहार से उन दोनों ने दोनों के शरीर यद्यपि घायल कर डाले थे, तथापि यत्न करने पर भी उन दोनों में से एक भी दूसरे को रणभूमि से न भगा सका। प्राण का दाँव लगा कर लड़ते हुए कर्ण और घटोत्कच का युद्ध स्वाभाविक-रीत्या बहुत देर तक होता रहा। परन्तु घटोत्कच को निर्भय चित्त से बाण-प्रहार करते देख, आपकी सेना के समस्त योद्धा उसके धनुषटंकार ही से त्रस्त हो गये। समस्त अस्त्र-शस्त्र विद्या को जानने वाला कर्ण जब किसी प्रकार भी घटोत्कच से पार न पा सका; तब उसने दिव्यास्त्रों का प्रयोग किया। तब भीमनन्दन घटोत्कच ने राक्षसी माया से काम लिया। उससे वह रणभूमि

ही में शूल, मुद्गर, वृक्ष और पत्थर धारिणी भयङ्कर राक्षसीसेना से युक्त हो गया। सम्पूर्ण प्राणियों का नाश करने वाले दण्डधारी यमराज के समान हाथ में धनुष ले और राक्षसी सेना सहित घटोत्कच को आते देख, वह बड़ा दुःखी हुआ। उस समय घटोत्कच के सिंहनाद से भयभीत हो, हाथी घोड़े मल मूत्र त्यागने लगे। सैनिक लोग भी अत्युत भयभीत हो गये। रात के समय प्रबल पड़ने वाले राक्षसों ने कौरवों के सैनिकों पर पत्थरों की वर्षा की। लोहे के चक्रों, भुशुण्डियों, शक्तियों, तोमरों, शूलों, शतघ्नियों और पट्टिशों तथा विविध प्रकार के अस्त्रों शस्त्रों की वर्षा आपके सैनिकों के ऊपर होने लगी। तब आपके पुत्र और सैनिक भयभीत हो, चारों ओर भागने लगे। उस समय अस्त्रबल में प्रसिद्ध अकेला कर्ण नहीं घबड़ाया और उसने अपने दिव्यास्त्रों से घटोत्कच की माया को भस्म कर डाला। तब तो घटोत्कच क्रुद्ध हो सूतपुत्र कर्ण के ऊपर महाघोर बाणों की वर्षा करने लगा। वे सब के सब बाण कर्ण के शरीर में घुस गये और कर्ण के शरीर को विद्ध कर तथा रक्त से सने, पृथिवी में घुस गये। तब कर्ण ने दस बाण मार घटोत्कच के शरीर को घायल किया। उसके मर्मस्थल विद्ध हो गये। इस पर क्रुद्ध हो, घटोत्कच ने देवनिर्मित एवं सहस्र धारों से युक्त चक्र उठा कर कर्ण पर छोड़ा। किन्तु हे राजन्! कर्ण ने बाणों की मार से उस चक्र को काट कर वैसे ही व्यर्थ कर डाला, जैसे भाग्यहीन पुरुष के मनोरथ व्यर्थ होते हैं। चक्र को व्यर्थ गया देख घटोत्कच ने बाणवृष्टि कर कर्ण को वैसे ही छिपा दिया, जैसे राहु सूर्य को छिपा देता है। किन्तु, रुद्र अथवा इन्द्र के समान पराक्रमी सूतपुत्र कर्ण ने भी निर्भय चित्त से अपने बाणजाल से घटोत्कच के रथ को बड़ी तेजी से छिपा दिया। तब घटोत्कच ने क्रुद्ध हो सुवर्णभूषित एक भारी गदा घुमा कर कर्ण पर फैंकी। किन्तु वह गदा भी कर्ण के बाणों से निष्फल हुई। यह देख वह विशालकाय घटोत्कच आकाश में चला गया और वहाँ से वह कर्ण के ऊपर वृक्षों को बरसाने लगा। तब कर्ण ने चमचमाते

बाणों से उसके रथ के घोड़े और सारथि को मार डाला। फिर घटोत्कच के शरीर को ऐसे ही सिद्ध किया, जैसे सूर्य अपनी किरणों से अन्धकार को नष्ट कर देता है। जब कर्ण ने राक्षसी माया में निपुण भीमसेनपुत्र घटोत्कच के रथ और घोड़ों को काट कर गिरा दिया और जल बरसाने वाले बादल की तरह उस राक्षस पर भी बाणवृष्टि करने लगा, तब घटोत्कच के शरीर में दो अंगुल भी ऐसा स्थान न रहा, जिसमें कर्ण के बाण न छिदे हों। अधिक क्या कहा जाय, सेई का शरीर जैसा काँटों से युक्त देख पड़ता है; बाणों से विद्ध घटोत्कच का शरीर भी वैसा ही देख पड़ता था। तब मायावी घटोत्कच ने दिव्यास्त्रों से कर्ण के दिव्यास्त्र व्यर्थ कर दिये। फिर वह कर्ण के साथ मायामय युद्ध करने लगा। उस समय घटोत्कच राक्षसी माया द्वारा, अस्त्र विद्या की फुर्ती प्रदर्शित कर, युद्ध कर रहा था और अदृश्य हो, अन्तरिक्ष से कर्ण के ऊपर बाण छोड़ रहा था। हे राजन्! मायावी घटोत्कच ने अपनी माया द्वारा शत्रुपक्ष के योद्धाओं को दिङ्मूढ़ कर दिया। वह भयङ्कर रूप बना, मुख फैला, कर्ण के दिव्यास्त्रों को निगलने लगा। किन्तु कर्ण ने घटोत्कच के बार बार बाण मार कर, उसे घायल कर डाला। सहस्रों घाव लगने से निर्बल और हतोत्साह हो घटोत्कच आकाश से भूमि पर आ गया। तब कौरव पक्षीय राजाओं ने उसे मृत समझ हर्षनाद किया। देखते ही देखते घटोत्कच ने मानों अन्य अनेक शरीर धारण कर लिये और वह हर दिशा में देख पड़ने लगा। वह माया के प्रभाव से कभी एक सौ सिर, एक सौ उदर और कभी विशालकाय हो मैनाक पर्वत की तरह देख पड़ता था। कभी अँगूठे जितना हो, फिर उठती हुई समुद्र की लहर की तरह वह वक्रगति से उमड़ता हुआ सा देख पड़ता था। कभी भूमि को चीर कर, वह जल के अंदर जा छिपता था। फिर क्षण भर बाद ही दूसरी जगह प्रकट होता था। क्षण भर बाद ही वह पूर्व स्थान पर दिखलायी पड़ता था। इस प्रकार राक्षसी माया के बल से वह राक्षस, पृथिवी, आकाश और समस्त दिशाओं

ने क्रमशः धनु, कवच और कुण्डल पहिने हुए, सुवर्णमय रथ पर चढ़ कर, कर्ण के रथ के निकट जा पहुँचा और कर्ण से उसने कहा—हे सूतपुत्र! खड़ा रह, खड़ा रह, मेरा अपमान कर अब तू जीता जागता नहीं रह सकता। आज मैं तेरे युद्ध का चाव दूर कर डालूँगा। यह कह, रक्तनेत्र एवं क्रूर पराक्रमी घटोत्कच आकाश की ओर उठा और अट्टहास कर, उसने कर्ण पर वैसे ही शस्त्रों का प्रहार किया, जैसे केसरी गज पर प्रहार करता है। घटोत्कच ने महारथी कर्ण पर वैसे ही रथ के धुरे जैसे बाणों की वृष्टि की जैसे मेघ, पर्वत पर जलवृष्टि करे; किन्तु कर्ण ने मारे बाणों के उसकी बाणवृष्टि को निवारण किया। हे राजन्! जब कर्ण ने घटोत्कच की माया का भी संहार कर डाला; तब घटोत्कच ने तुरन्त ही अदृश्य हो कर नयी माया रची। वह झट एक ऐसा महापर्वत बन गया जो वृक्षों और शृङ्गों से परिपूर्ण था। वही पर्वत कर्ण के ऊपर प्रास खड्ग, त्रिशूल और मूसल बरसाने लगा। अञ्जन के ढेर की तरह देख पड़ने वाला कर्ण, उस पर्वत को देख, ज़रा भी विचलित न हुआ और बराबर बाणवृष्टि करता रहा। फिर मुसक्या कर उसने उस पहाड़ पर एक दिव्यास्त्र चला उसके खण्ड खण्ड कर डाले। तब घटोत्कच आकाश में गया और इन्द्र धनुष युक्त मेघ का रूप धारण कर, कर्ण पर पत्थर बरसाने लगा। अस्त्रवेत्ताओं में श्रेष्ठ सूतपुत्र कर्ण ने वायव्यास्त्र चला उस मेघ के खण्ड खण्ड कर डाले। साथ ही इतने बाण छोड़े कि, आकाश के सब कोने बाणों से पूर्ण हो गये। घटोत्कच ने अपने बाणों से कर्ण के छोड़े समस्त शस्त्रों का नाश कर डाला। तुरन्त ही महाबली भीम के पुत्र ने रणाङ्गण में मुसक्या कर, महारथी कर्ण के सामने ही माया रची। महारथी घटोत्कच, सिंह शार्दूल एवं मदमत्त हाथियों की तरह बलवान एवं पराक्रमी क्रूरकर्मा बहुत से राक्षसों को साथ ले कर्ण के ऊपर झपटा। वे राक्षस बड़े भयङ्कर थे तथा रथों और घोड़ों पर सवार थे। उनके पास विविध प्रकार के अस्त्र शस्त्र थे और अनेक प्रकार के कवचों को [illegible] हुए थे। उनचास पवनों से घिरे हुए इन्द्र की तरह घटोत्कच को

राक्षसों सहित आते देख, कर्ण ने उस पर अस्त्र छोड़ना आरम्भ किया। इस बार घटोत्कच ने कर्ण के पाँच बाण मार कर उसे घायल किया। फिर वह समस्त राजाओं को भयभीत करता हुआ भयङ्कर हुँकार शब्द करने लगा। फिर उसने अञ्जलिक बाण से कर्ण के हाथ का धनुष टुकड़े टुकड़े कर डाला। तब कर्ण ने तुरन्त एक दूसरा विशाल धनुष हाथ में लिया। इन्द्र धनुष की तरह उस विशाल धनुष को तान, कर्ण ने सुवर्णपुंख और शत्रुओं का संहार करने वाले आकाशचारी बाणों के प्रहार से राक्षसों को पीड़ित किया। तब स्थूलवक्षःस्थल वाले राक्षस, कर्ण के बाणों से वैसे ही पीड़ित हुए, जैसे वन में रहने वाले हाथियों का झुँड सिंह से पीड़ित होता है। हाथियों, घोड़ों और सारथियों सहित कर्ण ने उन राक्षसों को मार डाला। प्रलयकालीन अग्निदेव जैसे समस्त प्राणियों को जला कर भस्म कर डालते हैं, वैसे ही कर्ण ने भी उन समस्त राक्षसों को नष्ट कर डाला। पूर्वकाल में त्रिपुरासुर का वध कर जैसे शिव कैलास पर शोभायमान हुए थे, वैसे ही इस समय उन राक्षसों का संहार कर कर्ण शोभायमान हुआ। पाण्डवों के स्वजनों वीर राजाओं में, घटोत्कच को छोड़ और कोई ऐसा न था, जो कर्ण की ओर देख भी सके। बलवान एवं क्रुद्ध घटोत्कच काल की समान, कर्ण की ओर देखता हुआ खड़ा था। जैसे मशाल से तेल की बूँदों के साथ आग गिरती है, वैसे ही क्रुद्ध हो खड़े हुए घटोत्कच की आँखों में से चिनगारियाँ निकल रही थीं। कर्ण का विक्रम निहार कर, घटोत्कच हाथ मलने लगा। उसने ओठ चबा, माया से दूसरा रथ बनाया। उसमें पिशाच की तरह मुखों वाले और हाथी जैसे डीलडौल वाले गधे जुते हुए थे। उसने उस रथ में बैठ कर, और क्रुद्ध हो, अपने सारथि से कहा—मुझे तू शीघ्र कर्ण के सामने पहुँचा।

हे राजन्! जब घटोत्कच ने इस प्रकार अपने सारथि से कहा—तब सारथि उसे कर्ण के सामने ले गया। घटोत्कच ने कुपित हो, आठ चक्रों वाली, दो योजन ऊँची और एक योजन लंबी शङ्कर की बनायी हुई ठोस लोहे की महाभयङ्कर शक्ति कर्ण के ऊपर फैंकी। कर्ण तुरन्त रथ पर से कूद

पड़ा और धनुष फेंक उसने उछल कर उस शक्ति को हाथ से पकड़ लिया। फिर वही शक्ति उसने घटोत्कच के रथ पर फेंकी। तब घटोत्कच रथ से कूद पड़ा और सारथि, घोड़ों और ध्वजा सहित घटोत्कच के रथ को भस्म कर, वह शक्ति भूमि में घुस गयी। कर्ण के इस पराक्रम को देख, देवता लोग भी आश्चर्य चकित हो गये और समस्त प्राणी कर्ण की सराहना करने लगे। वे कहने लगे शङ्कर निर्मित शक्ति को कर्ण ने रथ से कूद कर हाथ से पकड़ लिया। अतः वह धन्य है! धन्य है! परन्तु कर्ण ऐसा महापराक्रम प्रदर्शित कर, फिर अपने रथ पर जा बैठा और घटोत्कच पर बाणों की वृष्टि करने लगा।

उस समय कर्ण ने जैसा अद्भुत पराक्रम दिखलाया वैसा पराक्रम कर्ण को छोड़ अन्य कोई नहीं दिखला सकता। मेघ जैसे पर्वत के ऊपर जलवृष्टि करे, वैसे ही कर्ण ने भी घटोत्कच के ऊपर बाणवृष्टि की। तब गन्धर्वनगर की तरह घटोत्कच पुनः अदृश्य हो गया। फिर मायावी शत्रुसंहारक राक्षस घटोत्कच बड़ी फुर्ती से कर्ण के अनेक दिव्यास्त्र मारने लगा। किन्तु कर्ण इससे भी न डरा और निर्भीक हो उससे लड़ता ही रहा। तब कोप में भरे हुए महाबली घटोत्कच ने माया का आश्रय ग्रहण कर अनेक प्रकार के रूप धारण किये और वह महारथियों को डराने लगा। चारों ओर सिंह, व्याघ्र रीछ और अग्नि की तरह लपलपाती हुई जीभ वाले सर्प और लोहे के मुख वाले पक्षी कौरवी सेना के महारथियों के सामने आ डटे। तब कर्ण ने धनुष तान कर, बाण छोड़े। जब वे बाण घटोत्कच के ऊपर गिरे, तब वह नाग-राज की तरह दुष्प्रेक्ष्य हो वहीं अन्तर्धान हो गया। इतने में मायावी पिशाच, राक्षस, यातुधान, कुत्ते तथा भयावह व्याघ्र, कर्ण का वध करने के लिये उसकी ओर दौड़े और गालियाँ दे तथा आँसू टपकाते हुए भयानक अस्त्रों को उठाये हुए कर्ण को त्रस्त करने लगे। कर्ण ने उनमें से प्रत्येक को अनेक बाण मार कर विद्ध किया और दिव्यास्त्र का प्रयोग कर, राक्षसों का नाश किया। फिर नतपर्व बाण उसने घटोत्कच के रथ के घोड़ों पर छोड़े। उनके प्रहार से घोड़ों की पीठें उधड़ गयीं। उनकी पीठों पर घाव हो गये और वे घटोत्कच के

सामने से निर्जीव हो भूमि पर गिर पड़े। तब घटोत्कच यह कहता हुआ कि, इतर, मैं अभी तेरा नाश करता हूँ, वहाँ से अन्तर्धान हो गया।

एक सौ छिहत्तर का अध्याय

अलायुध का रण में आगमन

सञ्जय ने कहा—हे धृतराष्ट्र ! इस प्रकार कर्ण और घटोत्कच में युद्ध हो ही रहा था कि, इतने में घटोत्कच के मातुल पक्ष का नातेदार अलायुध एक बड़ी भारी राक्षस सेना साथ ले, दुर्योधन के निकट आया। उसके साथ जो राक्षस थे वे नाना प्रकार के रूप धारण कर सकते थे। वे बड़े वीर और साथ ही भयङ्कर रूप थे। वह पाण्डवों के साथ पूर्व वैर को स्मरण कर आया था। क्योंकि भीम ने उसके सम्बन्धी बक, महातेजस्वी किर्मीर तथा हिडिम्बासुर को मार डाला था। उसी वैर के बदले में आज के रात्रि-युद्ध में भीम का वध करने को अलायुध ससैन्य आया था। वह मतवाले हाथी की तरह अथवा क्रोध में भर सर्प की तरह, लड़ने के लिये बड़ा उत्सुक हो रहा था। दुर्योधन के पास जा उसने उससे कहा—महाराज ! तुम जानते ही हो कि, भीम मेरे बान्धव हिडिम्ब, बक, किर्मीर को मार चुका है। यही नहीं उसने हिडिम्बा का सतीत्व भी नष्ट किया है। उसने हम सब लोगों का अपमान करने के लिये यह कार्य किया है। अतः हे राजन् ! मैं स्वयं घोड़ों, रथों, हाथियों, पैदलों और मंत्रियों सहित हिडिम्बा के पुत्र का नाश करने की आज्ञा माँगने के लिये आपके पास आया हूँ। आज मैं वासुदेव प्रधान समस्त पाण्डवों को तथा घटोत्कच को उसके अनुचरों सहित मार कर खा जाऊँगा। अतः आप समरभूमि से अपनी सेना हटा लें। आज हम सब राक्षस ही पाण्डवों के साथ युद्ध करेंगे।

अलायुध के इन वचनों को सुन, दुर्योधन परम प्रसन्न हुआ। उसने अपने भाइयों के सामने उससे कहा—हम तुम्हें तुम्हारी राक्षसी सेना सहित

आगे जा, पाण्डवों के साथ युद्ध करेंगे। क्योंकि मेरे पक्ष के योद्धाओं के मनों में भी वैर की आग धधक रही है। अतः उनका शान्त हो कर बैठना सम्भव नहीं।

यह सुन राक्षसराज अलायुध ने कहा—अच्छा ऐसे ही सही। यह कह वह राक्षसों सहित हड़बड़ाता, घटोत्कच के सामने लड़ने को जा पहुँचा। हे राजन्! घटोत्कच की तरह अलायुध भी तेजस्वी था। सूर्य के समान चमचमाता जैसा रथ घटोत्कच का था, वैसा ही चमचमाता रथ अलायुध का भी था। अलायुध के रथ से घरघराहट का बड़ा शब्द होता था। अनेक तोरणों से उसका रथ विचित्र देख पड़ता था। उसका रथ चार सौ हाथ लंबा चौड़ा तथा रीछ की चाम से मढ़ा हुआ था। उसमें सौ घोड़े जुते हुए थे। वे घोड़े बड़े वेगवान थे और डीलडौल में हाथी जैसे जान पड़ते थे। वे सदा हिन-हिनाया करते थे और वे माँस तथा रक्त खाते पीते थे। उसके रथ की घर-घराहट महामेघ की तरह होती थी। उसका धनुष मोटा, दृढ़ प्रत्यञ्चा वाला और सुवर्ण की तरह उज्ज्वल था। शिला के ऊपर घिस कर, तेज किये हुए और सुवर्ण की पुंख वाले उसके बाण भी रथ के धुरे की तरह लंबे थे। जैसे घटोत्कच के पास युद्ध सामग्री भरपूर थी, वैसे ही महाभुज शूर राक्षस अलायुध भी सामग्री से लैस था। उसके रथ की, ऊँची ध्वजा भी अग्नि और सूर्य की तरह चमक रही थी और शृगालों की सेना से रक्षित थी। वह स्वयं भी घटोत्कच की तरह सुडौलपन में समान था। उसके भयङ्कर रूप को देख, सम्पूर्ण प्राणी विकल हो गये। महाराज! उस समय वह हाथी के समान रूप धारण कर, सफेद किरीट, कवच आभूषण माला आदि वस्तुओं से शोभित था। वह धनुष, तलवार, गदा, भुशुण्डी, मूसल और हल आदि अनेक भाँति के अस्त्रों शस्त्रों को ले और अग्नि जैसे चमचमाते रथ पर सवार हो, पाण्डवों के योद्धाओं को छिन्न भिन्न करने लगा। वह रणभूमि में वैसे ही घूम रहा था, जैसे बिजली युक्त आकाशस्थित वर्षा करने वाले बादल आकाश-मण्डल में चारों ओर भ्रमण करते हैं। अलायुध को इस प्रकार समरभूमि

में प्रमथ करने देख, आपकी सेना के महाबलवान मुख्य मुख्य राजा लोग भी कवच धारण कर तथा अस्त्रों शस्त्रों से सुसज्जित हो हर्षितमन। पाण्डवों की सेना के वीरों से युद्ध करने में प्रवृत्त हुए।

एक सौ सत्तर का अध्याय

भीम और अलायुध

सञ्जय ने कहा—हे धृतराष्ट्र! समर में भयङ्कर-कर्म-कर्त्ता अलायुध को सेना सहित आये देख, समस्त कौरव योद्धा हर्षित हो गये। समुद्र को तरने की इच्छा रखने वाला, नौका रहित पुरुष जैसे नौका मिलने पर सन्तुष्ट होता है, वैसे ही आपके पुत्र दुर्योधन आदि उस राक्षस की सहायता मिलने पर अपना नया जन्म हुआ समझने लगे और उसका आगत स्वागत करने लगे। इस समय कर्ण और घटोत्कच में महाभयङ्कर दारुण और अमानुषिक रात्रि-युद्ध चल रहा था। उस युद्ध को देख कर, राजा युधिष्ठिर तथा पाञ्चालराज आश्चर्य में पड़ गये। आपकी ओर के योद्धा कहने लगे कि हमारा पक्ष नहीं टिक सकेगा। द्रोणाचार्य अश्वत्थामा, कृपाचार्य आदि आपकी ओर के महारथी योद्धा भयभीत हो उच्चस्वर से बोले—सब योद्धाओं का नाश होना चाहता है। विशेष कर आपकी सेना के पुरुष कर्ण के जीवन से निराश हो, हाहाकार कर चिल्लाने लगे। उसी समय कुरुराज दुर्योधन कर्ण को घटोत्कच के अस्त्रों से अत्यन्त पीड़ित देख, राक्षसराज अलायुध को बुलाकर, उससे यह वचन बोले—हे वीर! यह देखो वैकर्त्तन कर्ण रणभूमि के बीच घटोत्कच के साथ अपनी शक्ति के अनुसार युद्ध कर रहा है जिस पर भी मेरी सेना के बहुत से योद्धा और राजा लोग घटोत्कच के नाना प्रकार के अस्त्रों शस्त्रों से पीड़ित हो कर, पृथिवी पर वैसे ही गिर रहे हैं, जैसे हाथी की सूँड़ से टूट कर बहुतेरे वृक्ष पृथिवी पर गिर पड़ते हैं। हे वीर! अतः जब तक यह पापी राक्षस मायाबल के आसरे से शत्रुनाशन कर्ण का वध नहीं करता, तब तक

उससे पूर्व ही तुम पराक्रम दिखा घटोत्कच को मार डालो। क्योंकि आपकी अनुमति से ही इस राक्षस को मैंने तुम्हारा भाग निश्चित किया है। जब राजा दुर्योधन ने ऐसा वचन कहा; तब महापराक्रमी महाबाहु अलायुध राक्षस उनके वचन को स्वीकार कर घटोत्कच की ओर दौड़ा। भीमपुत्र घटोत्कच भी युद्धभूमि में कर्ण को त्याग कर सन्मुख आये हुए निज शत्रु अलायुध को अपने तीक्ष्ण बाणों से पीड़ित करने लगा। हे राजन्! उस समय उन दोनों क्रोधी राक्षसों में वैसा ही घोर युद्ध हुआ, जैसा वन में हथिनी के पीछे दो मतवाले हाथियों में हुआ करता है।

इधर महारथियों में मुख्य कर्ण घटोत्कच से छूट कर और अपने सूर्य जैसे चमचमाते रथ पर सवार हो, भीम पर दौड़ा। किन्तु भीम ने सिंह गृहीत वृषभ की तरह अपने पुत्र घटोत्कच को अलायुध राक्षस के अस्त्रों से पीड़ित देख, स्वयं रथ पर सवार हो, अलायुध पर आक्रमण किया। तब अलायुध ने घटोत्कच को छोड़ भीमसेन ही को ललकारा। भीम ने मारे बाणों के राक्षस सैन्य सहित अलायुध को विकल कर डाला। अलायुध ने भी भीम पर पैने बाण छोड़े। उसके साथ के सैनिकों ने भी कौरवों की विजयकामना से नाना प्रकार के अस्त्रों शस्त्रों को ले, भीमसेन पर आक्रमण किया। महाबली भीम ने उनके बाणप्रहार से पीड़ित हो, उनमें से प्रत्येक राक्षस को पाँच पाँच बाण मार कर, घायल किया। खरवंशी वे राक्षस गण भीमसेन के बाणप्रहार से विकल हो, बुरी तरह चीत्कार करते हुए चारों ओर भागने लगे। महाबली अलायुध राक्षस अपनी सेना के राक्षसों को भयभीत देख, वेग पूर्वक भीमसेन की ओर दौड़ा और भीम को बाणजाल से ढक दिया। तब भीम ने भी पैने बाणों की वृष्टि अलायुध पर की। अलायुध ने भीम के चलाये बहुत से बाण अपने तेज़ बाणों से काट गिराये और कितनों ही को बड़ी फुर्ती से पकड़ लिया। यह देख भीम ने वज्र तुल्य अपनी गदा उठा कर अलायुध पर फेंकी। अग्नि की तरह चमचमाती उस गदा को अपनी ओर आते देख, अपनी गदा फेंक, भीम की गदा को व्यर्थ कर डाला। अलायुध

की गदा से टकरा कर भीम की गदा भीम ही की ओर चली। तदनन्तर कुन्तीपुत्र भीम ने अलायुध राक्षस को अगणित बाणों से ढक दिया। किन्तु उसने अपने पैने बाणों के प्रभाव से भीमसेन के समस्त बाणों को निष्फल कर डाला।

उस रात के समय अलायुध के आदेश से बड़े बड़े बलवान राक्षस गण पाण्डवों की गजसेना का संहार करने लगे। उस समय बड़े बड़े गज, घोड़े और पाञ्चाल एवं सृञ्जय योद्धा आदि राक्षसों के अस्त्रप्रहार से पीड़ित हो, युद्धभूमि से भागने लगे। जब घोर संग्राम हो रहा था, तब कमलनयन श्रीकृष्ण ने अर्जुन से कहा—हे अर्जुन! देखो, महाबाहु भीमसेन, अलायुध राक्षस के पंजे में फँस गये। अतः अब सोच विचार न कर तुरन्त चल कर भीम की सहायता करो। हे पुरुषशार्दूल! तुम, महारथी धृष्टद्युम्न, शिखण्डी, युधामन्यु, उत्तमौजा और द्रौपदी के पाँचों पुत्रों को, कर्ण से युद्ध करने की आज्ञा दो। वे उसके निकट जा युद्ध करें। पराक्रमी सात्यकि, नकुल और सहदेव—अलायुध की सेना के राक्षसों का नाश करें। तुम स्वयं द्रोणाचार्य-रक्षित इस व्यूहबद्ध सेना के योद्धाओं को निवारण करो। क्योंकि यह बड़े जोखिम का समय है।

श्रीकृष्ण के इन वचनों को सुन कर, ऊपर वर्णित योद्धा, वैकर्त्तन कर्ण और अलायुध की सेना की ओर लपके।

इस बीच में महाबलवान् एवं प्रतापी राक्षसराज अलायुध ने विषधर सर्प के समान तेजस्वी बाणों से भीमसेन के धनुष घोड़े और सारथि को काट डाला। तब भीमसेन ने रथ में से एक भारी गदा उठा ली और सिंहनाद करते हुए वे अलायुध की ओर लपके। भीमसेन की गदा को अपनी गदा से निवारण कर अलायुध ने सिंहनाद किया। अलायुध के ऐसे भयङ्कर कर्म को देख, पुनः हर्षित हो भीम ने एक गदा उठायी। उन दोनों का इस प्रकार घोरयुद्ध होने लगा। गदाओं के टकराने के शब्द से भूमि प्रतिध्वनित होने लगी। तदनन्तर वे दोनों वीर पुरुष गदा फेंक एक दूसरे से भिड़ गये और मुक्कामुक्की

करने लगे। पास पड़ी हुई छुरी, लकड़ी तथा पहिया—जो कुछ हाथ आता—उसीसे वे एक दूसरे पर प्रहार करने लगते। दोनों में मल्लयुद्ध भी हुआ। इस युद्ध में वे दोनों एक दूसरे को मतवाले हाथी की तरह आकर्षण करने लगे। उस समय दोनों वीरों की देहों से लगातार रुधिर प्रवाहित होने लगा। पाण्डवों के हितैषी श्रीकृष्ण उन दोनों वीरों का ऐसा युद्ध देख, भीमसेन की रक्षा के अर्थ, घटोत्कच से यह बोले।

एक सौ अठहत्तर का अध्याय

अलायुध का संहार

सञ्जय ने कहा—हे राजन्! श्रीकृष्णचन्द्र, रणक्षेत्र में, भीमसेन को अलायुध के वश में हुआ देख, घटोत्कच से बोले—हे महाबली घटोत्कच! देख, तुम्हारे और तुम्हारी समस्त सेना के सामने ही भीमसेन, राक्षस अलायुध के पंजे में जा फँसे हैं। अतः तुम अपना ध्यान कर्ण की ओर से हटा अलायुध का वध करो।

श्रीकृष्ण के इन वचनों को सुन, घटोत्कच तुरन्त अलायुध से जा भिड़ा। उस रात को उन दोनों वीर राक्षसों में बड़ा विकट युद्ध हुआ। जब अलायुध के सेना से राक्षस योद्धा धनुषों को तान कर पाण्डवों की सेना पर झपटे, तब महारथी सात्यकि, नकुल और सहदेव अत्यन्त कुपित हो, पैने बाणों से राक्षसों के शरीरों के खण्ड खण्ड करने लगे। उधर किरीटमाली अर्जुन बाणों से मुख्य मुख्य क्षत्रिय योद्धाओं को पीड़ित करने लगा। सूतपुत्र कर्ण, धृष्टद्युम्न, शिखण्डी आदि पाञ्चाल सेना के महारथी राजाओं को छिन्न भिन्न कर, रणक्षेत्र से, भगाने लगे। महापराक्रमी भीमसेन उन महारथी वीरों को कर्ण के बाणों से पीड़ित देख, बाणवृष्टि करता हुआ कर्ण की ओर झपटा। उसी समय सात्यकि, नकुल और सहदेव क्षण भर के भीतर राक्षसों का संहार कर, वहाँ जा पहुँचे जहाँ, कर्ण लड़ रहा था।

जब ये लोग कर्ण के साथ लड़ने लगे ; तब पाञ्चाल देशीय सैनिकों ने द्रोणाचार्य पर धावा मारा। उधर शत्रुनाशक अलायुध ने एक बड़ा परिघ उठा कर, घटोत्कच के मारा। परिघ के प्रहार से घटोत्कच मूर्छित हो गया। तदनन्तर घटोत्कच ने सावधान हो कर एक सौ घंटियों से युक्त एक भयङ्कर गदा उठा अलायुध पर फेंकी। वह भयङ्कर गदा पराक्रमी घटोत्कच के हाथ से छूट कर, धड़ाम से अलायुध के रथ पर गिरी। इस गदा के प्रहार से घोड़े और सारथि सहित रथ नष्ट हो गया। तब अलायुध रथ छोड़ और माया रच रुधिर की वर्षा करने लगा। उस समय आकाश को काले बादल छा गये। वे बादल गर्जने लगे। बिजली कड़कने लगी और वज्रपात जैसा शब्द सुन पड़ा। उस समय उस महाघोर संग्रामभूमि में अस्त्रों शस्त्रों के टकराने का खड़खड़ शब्द होने लगा। अलायुध की इस घोर माया को देख, घटोत्कच आकाश में गया और क्षण भर में अपनी माया से अलायुध की माया नष्ट कर डाली। तब अलायुध ने घटोत्कच पर शिलाओं की वर्षा की। तब घटोत्कच ने बाणवृष्टि कर शिलावृष्टि नष्ट कर डाली। घटोत्कच का यह पराक्रम विस्मयोत्पादक था। तदनन्तर वे दोनों वीर लोहमय परिघों, शूलों, गदाओं, मूसलों, मुग्दरों, धनुषों, तलवारों, तोमरों, प्रासों, कम्पनों नाराचों, भालों, बाणों, चक्रों, फरसों और भिन्दिपालों का प्रयोग कर, एक दूसरे पर प्रहार करने लगे। फिर बड़े बड़े कीकर, पाकर, शमी, प्लक्ष, पीपल आदि अनेक जातियों के वृक्षों और विविध धातुओं से युक्त पर्वतों के शिखरों को उखाड़ उखाड़ कर, वे एक दूसरे के ऊपर प्रहार करने लगे। उस समय पर्वत के शिखरों से वे दोनों वीर लड़ने लगे। जब वे दोनों वीर आपस में एक दूसरे पर पर्वतशृङ्गों के प्रहार करने लगे, तब पर्वत शृङ्गों के परस्पर टकराने से वज्रपात जैसा शब्द होने लगा। पूर्वकाल में जैसा युद्ध वानरराज वालि और सुग्रीव में हुआ था, वैसा ही यह भी युद्ध था। दोनों वीर एक दूसरे पर बड़े बड़े भयङ्कर बाण और अस्त्र शस्त्र चला रहे थे। तद-नन्तर उन दोनों में मल्लयुद्ध हुआ। मल्लयुद्ध होने के बाद उनमें गुथंगुथ्था

हुई। लड़ते लड़ते वे दोनों पसीने से नहा उठे। उनके शरीरों से मेघ की जलवृष्टि की तरह रुधिर टपक रहा था। घटोत्कच ने झपट कर और किचकिचा कर, अलायुध को पकड़ लिया। फिर गुफना की तरह घुमा बड़े वेग से उसे भूमि पर दे पटका। फिर कुण्डलभूषित अलायुध का सिर खड्ग से काट, घटोत्कच ने भयङ्कर सिंहनाद किया। बकासुर के विशालकाय भाई अलायुध का वध देख, पाञ्चाल तथा पाण्डव राजागण समरभूमि में सिंहनाद करने लगे। उस राक्षस के मारे जाने से पाण्डवों की ओर के योद्धा हर्षपूरित हो गये। वे सहस्रों भेरियाँ और शङ्ख बजाने लगे। इस प्रकार मशालों से प्रकाशित वह रात पाण्डवों को विजयदायिनी हुई। तदनन्तर महाबली घटोत्कच ने मृत अलायुध के मस्तक को उठा, व्याकुल दुर्योधन के आगे फेंक दिया। हे राजन्! अलायुध के मस्तक को देख, दुर्योधन और उसके सैनिकों को बड़ा दुःख हुआ। अलायुध पूर्ववैर का स्मरण कर, दुर्योधन से आ मिला था और दुर्योधन के आगे उसने भीम को मार डालने की प्रतिज्ञा की थी। इससे दुर्योधन को विश्वास हो गया था कि, वह भीम का वध अवश्य कर डालेगा और उसके भाई चिरकाल तक जीवित रहेंगे। किन्तु जब घटोत्कच ने अलायुध ही को मार डाला, तब दुर्योधन को विश्वास हो गया कि, भीम की प्रतिज्ञा पूरी होगी और वह भाइयों सहित भीम के हाथ से मारा जायगा।

एक सौ उनासी का अध्याय

घटोत्कच वध

सञ्जय ने कहा—हे धृतराष्ट्र! अलायुध का वध कर, घटोत्कच मन ही मन हर्षित हुआ और आपकी सेना के सामने आ ऐसी भयङ्कर गर्जना की कि, उसे सुन गज भी घबड़ा गये और आपके सैनिकों के मन में भय उत्पन्न हो गया। जिस समय भीमनन्दन घटोत्कच और अलायुध का आपस में

युद्ध हो रहा था, उस समय महासुत कर्ण ने पाञ्चालों पर आक्रमण किया था। उसने धृष्टद्युम्न और शिखण्डी के नतपर्व वाले दस दस बाण मारे थे। युधामन्यु, उत्तमौजा और महारथी सात्यकि को भी बाणों से विद्ध कर, कर्ण ने थरथरा दिया था। पाण्डवपक्ष के योद्धाओं के दहिनी बाईं ओर से छोड़े हुए बाण मण्डलाकार देख पड़ते थे। उस समय धनुष के रोदे को खींच कर छोड़ने का और रथों के पहियों का वैसा ही तुमुल शब्द हो रहा था, जैसा कि, वर्षाकालीन मेघों की गर्जन का होता है। उस समय प्रत्यञ्चा तथा पहियों की गड़गड़ाहटरूपी गर्जना वाला, धनुष, ध्वजा और पताकारूपी विद्युत से युक्त, बाणसमूहरूपी जलधारा से सम्पन्न संग्रामरूपी मेघ चढ़ आया था। उस समय एक विशाल पर्वत की तरह बलवान् और शत्रुओं का संहार करने वाले सूर्यपुत्र कर्ण ने रणभूमि से शत्रु द्वारा की हुई बाणवृष्टि को वैसे ही पीछे को लौटा दिया; जैसे अटल अचल भाव से स्थित पर्वत मेघ को पीछे लौटा देता है। आपके पुत्रों के हितैषी कर्ण ने सुवर्णपुङ्ख पैने बाणों से, जो वज्र की तरह घायल करने वाले थे, शत्रुओं का नाश करना आरम्भ किया। फुर्तीले कर्ण ने मारे बाणों के बहुत से रथों की ध्वजाएँ छिन्न भिन्न कर डालीं। कितने ही सैनिकों के शरीर काट डाले। कितने ही रथों को उसने सारथियों और घोड़ों से रहित कर डाला। इस युद्ध में जब पाण्डवों के योद्धा अपनी रक्षा न कर सके, तब वे युधिष्ठिर की सेना में चले गये। पाण्डवों की सेना को भागते देख, घटोत्कच बड़ा कुपित हुआ। वह रत्नजटित सुन्दर दर्शनीय रथ पर सवार हो और सिंह की तरह दहाड़ता हुआ, कर्ण की ओर बढ़ा और उसके वज्र जैसे भयङ्कर बाण मारने लगा। दोनों योद्धाओं ने कर्णी, नाराच, शिलीमुख, नालीक, दण्ड, आसन, वत्सदन्त वराह कर्ण, विपाठ, शृङ्ग, और क्षुरप्र बाणों की वृष्टि आपस में एक दूसरे पर की। उन दोनों के छोड़े बाणों से आकाश व्याप्त हो गया। प्रजाजनों पर बरसते हुए, फूलों से जैसी शोभा आकाश की होती है, वैसी ही शोभा सुवर्णपुङ्ख बाणों से पूरित आकाश की हुई। दोनों योद्धाओं का अनुपम

प्रभाव था और वे युद्ध में बड़े प्रवीण थे। वे एक दूसरे पर अत्युत्तम कोटि के अस्त्रों का प्रहार कर रहे थे। उन दोनों में एक भी दूसरे से उत्कृष्ट नहीं जान पड़ता था। जैसे आकाश में राहु और सूर्य के मध्य होने वाले भयङ्कर युद्ध में शस्त्रों के भयङ्कर प्रहार होते हैं, वैसे ही सूर्यपुत्र और भीम के पुत्र में अद्भुत एवं भयङ्कर युद्ध होने लगा।

सञ्जय ने कहा—हे राजन्! जब कर्ण घटोत्कच के साथ युद्ध करने में उत्कृष्टता प्राप्त न कर सका, तब कर्ण ने उस राक्षस पर उग्र अस्त्र का प्रयोग किया और घटोत्कच के रथ के घोड़ों को, उसके सारथि को मार डाला। रथरहित होते ही घटोत्कच अन्तर्धान हो गया।

धृतराष्ट्र ने पूँछा—हे सञ्जय! माया से युद्ध करने वाले घटोत्कच के अन्तर्धान होने पर मेरी ओर के योद्धाओं ने क्या किया?

सञ्जय ने कहा—हे धृतराष्ट्र! राक्षसराज को अदृश्य हुआ जान कर, सब कौरव चिल्ला कर बोले—यह मायावी राक्षस, अब अप्रत्यक्ष हो, कर्ण को मार डालेगा। जब कौरव पक्ष के लोग इस प्रकार कह, कोलाहल कर रहे थे, तब कर्ण ने मारे बाणों के समस्त दिशाएँ ढक दीं। तब आकाश में घोर अन्धकार छा गया। कर्ण के इतने बाण छोड़ने पर भी कोई प्राणी नीचे न गिरा। उस समय कर्ण ने ऐसी फुर्ती की कि, देखने वाले को यही न जान पड़ता कि, वह कब बाण तरकस से खींचता, कब धनुष पर रखता और कब रोदा खींच उसे छोड़ता है। घटोत्कच की माया से आकाश लाल रंग के बादलों की तरह और अग्नि की उग्र शिखा की तरह भलमल करता हुआ सा देख पड़ता था। घटोत्कच की माया के प्रकट होने पर, आकाश में बिजलियाँ कड़कने लगीं, प्रज्वलित उल्काएँ गिरने लगीं और सहस्रों दुन्दुभियों की अति तुमुल ध्वनि सुन पड़ने लगी। तदनन्तर सुवर्णपुंख बाणों की आकाश से वर्षा होने लगी। फिर शक्ति, ऋष्टि, प्रास, मूसल, फरसे, पैनी तलवारें, पैनी धार के तोमर, पट्टिश, परिघ, लोहे की गदाएँ और शूल, सुवर्ण के पत्तरों से जड़ी बड़ी बड़ी गदाएँ और

शतघ्नियाँ चारों ओर से गिरने लगीं। बड़ी बड़ी हजारों शिलाएँ, शक्तियाँ, वज्र, चक्र तथा अग्नि की तरह तेजस्वी सहस्रों छुरे आकाश से गिरने लगे। शक्ति, पाषाण, परशु, प्रास, तलवार और वज्र तथा मुद्गरों की मूसलधार वर्षा होने लगी। कर्ण ने बाण मार कर, उन सब को रोकना चाहा, किन्तु वह न रोक सका। बाणप्रहार से पृथिवी पर गिरते हुए घोड़े, वज्रप्रहार से मर कर गिरते हुए हाथी और शिलाओं के प्रहार से नीचे गिरते हुए महारथियों का रणभूमि में बड़ा संहार हुआ। घटोत्कच विविध प्रकार के महाभयानक अस्त्रों से दुर्योधन की सेना को पीसने लगा। तब दुर्योधन की सेना के कितने ही योद्धा विकल हो इधर उधर भागते हुए हाहाकार करने लगे। किन्तु जो वीर थे वे रणक्षेत्र में जहाँ के तहाँ डटे रहे। घटोत्कच बड़े भयङ्कर अस्त्रों की वर्षा कर, आपके सैनिकों का संहार कर रहा था। उसे देख आपके पक्ष के योद्धा बहुत डर गये। उस समय अग्निशिखा की तरह भीम लपलपाती सैकड़ों गीदड़ियाँ भयङ्कर शब्द कर रही थीं। राक्षसों के झुंड गर्जना कर रहे थे। हे राजेन्द्र! उसे सुन आपके योद्धा उदास हो गये। प्रज्वलित जिह्वा वाले, अग्नि की तरह प्रचण्ड दंष्ट्राओं वाले, भयङ्कर शब्दों वाले, पर्वताकार डीलडौल वाले, हाथों में शक्तियाँ लिये हुए, आकाशचारी भयङ्कर राक्षस, मेघों की जलवृष्टि की तरह भयङ्कर शस्त्रवृष्टि करने लगे। उन बाणों, शक्तियों, शूलों, गदाओं, परिघों, वज्रों, बाणों, शक्तियों, शतघ्नियों और चक्रों के प्रहार से कौरव योद्धा मर मर कर समरभूमि में गिरने लगे। हे राजन्! राक्षस ने आपके पुत्र की सेना पर त्रिशूल, भुशुण्डी, अश्मगुड, लोहे की शतघ्नियाँ बरसा कर, आपके सैनिकों को किंकर्तव्यविमूढ़ बना दिया। शूरों के शरीरों से आँतें बाहर निकल पड़ीं। सैनिकों की खोपड़ियाँ चूर चूर हो गयीं; शरीरों की खाल उधड़ गयी और वे मर कर रणभूमि में लुढ़कने लगे। कटे हुए हाथियों और घोड़ों की लोथें स्थान स्थान पर देख पड़ती थीं और शिलाओं के प्रहार से रथों का चूरा हो गया था। इस प्रकार उन भयङ्कर राक्षसों ने पृथिवी पर शस्त्रों की भयावनी वृष्टि कर, शत्रुसैन्य का संहार

कर डाला। घटोत्कच की माया से न तो कोई भयभीत बच पाता था और न प्राणरक्षा के लिये अनुनय विनय करने वाला ही। समय की प्रतिकूलता से कौरव वीर मारे जाने लगे। क्षत्रिय परास्त होने लगे। तब समस्त कौरवों ने भागते हुए योद्धाओं से कहा—दौड़ो! दौड़ो! यह मानवसेना नहीं है, किन्तु इन्द्रादिदेवता पाण्डवों का पक्ष ले, हमारा नाश कर रहे हैं। इस प्रकार चिल्लाते हुए योद्धा समरभूमि से भागने लगे। उस समय घोर सङ्कट में निमग्न योद्धाओं की रक्षा अकेला कर्ण ही द्वीप बन कर, कर रहा था। उस सङ्कुल युद्ध में कौरवों की सेना बिखरी हुई भाग खड़ी हुई। उस समय उस भगड़ में कौरव और पाण्डव एक दूसरे को चीन्ह भी न सके। उस भयङ्कर जनसंहार में सेना ने मर्यादा त्याग दी थी। उस समय समस्त दिशाएँ शून्य देख पड़ती थीं। उस समय अकेला सूतपुत्र ही शत्रु की शस्त्रवृष्टि को अपनी छाती पर झेल, समरभूमि में डटा हुआ, देख पड़ता था। वह उस शस्त्रवृष्टि से तनिक भी न घबड़ाया और उसने वीरोचित कार्य किया। उस राक्षस की दिव्यमाया के विरुद्ध युद्ध कर कर्ण ने बाणवृष्टि द्वारा आकाश ढक दिया। उस समय हे राजन्! सिन्धुदेशी तथा बाल्हीकदेशी राजा रण में राक्षस की जीत देख, कर्ण के धैर्य की प्रशंसा करने लगे। साथ ही वे भयग्रस्त हो आत्मरक्षा के लिये कर्ण का सहारा तक रहे थे। इतने में घटोत्कच ने एक चक्रवाली शतघ्नी कर्ण के रथ के घोड़ों के ऊपर फैंकी। उस के प्रहार से घोड़ों की जीभें और आँखें निकल पड़ीं। वे दाँत निपोरे निर्जीव हो भूमि में घुटनों के बल गिर पड़े। तब कर्ण उदास हो रथ से उतर पड़ा। यह देख कौरवों के पक्ष के योद्धा भागने लगे। उन्हें भागते देख, कर्ण घबड़ाया नहीं, किन्तु सोचने लगा। उस समय घटोत्कच की उस दुरत्यय माया को देख कौरवों ने कर्ण से कहा—हे कर्ण! इस समय तू इन्द्र की दी हुई एक पुरुषघातिनी शक्ति से काम ले, घटोत्कच को मार डाल, नहीं तो समस्त कौरव राक्षसी माया से नष्ट हुए जाते हैं। हमें भीम और अर्जुन का ज़रा भी भय नहीं है। तू इस समय रात में प्रबल पड़ने वाले राक्षस को उस शक्ति

मे मार डाल। आज जो वीर इस विकट युद्ध में हमारी रक्षा करेगा, उसी पुरुष के साथ हम सेना सहित पाण्डवों से लड़ेंगे। अतः हे कर्ण! तू इन्द्रप्रदत्त शक्ति से अब उस राक्षस का वध कर जिससे इन्द्र तुल्य बल-वान समस्त कौरव योद्धा नष्ट होने से बच जाँय।

आधी रात हो चुकी थी और घटोत्कच बराबर कर्ण पर अस्त्र प्रहार कर रहा था। सारी सेना भयभीत हो त्राहि त्राहि कह कर चिल्ला रही थी और कौरव डाढ़ें मार मार कर रो रहे थे। यह सब देख कर्ण ने उस शक्ति से काम लेना निश्चित किया। कर्ण अत्यन्त कुपित हुआ और शत्रु के संहार-कारी अस्त्र प्रहार को न सह सका। उस समय उसने शत्रुनाशिनी असह्य वैजयन्ती शक्ति उठा ली। यह वही शक्ति थी, जिसे कर्ण बहुत वर्षों से यत्न पूर्वक इस लिये सेंते था कि, वह उससे अर्जुन का वध करेगा। कर्ण को यह शक्ति इन्द्र से अपने दोनों कुण्डलों के बदले मिली थी। मृत्यु की सहोदरा भगिनी की तरह और दहकती हुई उल्का की तरह, अथवा पाशों से वेष्टित कालजिह्वा की तरह उस शक्ति को कर्ण ने घटोत्कच पर फेंका। जिस समय कर्ण ने वह शक्ति हाथ में ली, उस समय विन्ध्यगिरि जैसा विशाल वपुधारी घटोत्कच भयभीत हो रणक्षेत्र से भागा। उस शक्ति को कर्ण के हाथ में देख, अन्तरिक्षस्थित प्राणी भी हाहाकार करने लगे। ज़ोर की हवा सनसनाती हुई चलने लगी। पृथिवी को फोड़ वज्र उसके भीतर घुस गया। वह शक्ति घटोत्कच की समस्त माया को नष्ट कर और उसका हृदय विदीर्ण कर, नक्षत्रपथ में जा अदृश्य हो गयी। उस शक्ति के प्रहार से घटोत्कच को अपने प्रिय प्राणों से हाथ धोना पड़ा। घटोत्कच के समस्त मर्मस्थल विद्ध हो गये थे, तिस पर भी उसने शत्रुओं का संहार करने के लिये अत्यद्भुत रूप धारण किया था। उसने पर्वत अथवा मेघ जैसा रूप धारण किया था। घटोत्कच का शरीर स्तब्ध हो गया, जिह्वा निकल पड़ी, शरीर विदीर्ण हो गया। विशालवपुधारी घटोत्कच आकाश से भूमि पर गिर पड़ा। उसके शरीर के नीचे शत्रुसैन्य का एक भाग दब कर चकनाचूर हो गया। मरते

समय उसने अपना शरीर बहुत बड़ा किया था। पाण्डवों के हितसाधन के लिये, उसने आपकी एक अक्षौहिणी सेना का, गिर कर नाश कर डाला। कौरव लोग घटोत्कच और उसकी माया को नष्ट हुआ देख हर्षित हो कोलाहल करने लगे और योद्धाओं के हर्षनाद के साथ ही साथ भेरी, शङ्ख, मृदङ्ग और नगाड़े बजाने लगे। घटोत्कच के मारे जाने पर कौरवों ने कर्ण का वैसे ही पूजन किया, जैसे वृत्रासुर का वध कर चुकने पर इन्द्र का देवताओं ने पूजन किया था। कर्ण आपके पुत्र के साथ रथ पर सवार हो अपनी सेना में चला गया।

एक सौ अस्सी का अध्याय

श्रीकृष्ण की प्रसन्नता

सञ्जय ने कहा—हे राजन्! पर्वत जैसे वज्रप्रहार से खण्ड खण्ड हो गिर पड़ता है, वैसे ही घटोत्कच को उस अमोघ शक्ति से मरते देख, पाण्डवों की तथा उनके पक्ष के योद्धाओं की आँखों में आँसू भर आये। किन्तु श्रीकृष्ण को बड़ा हर्ष हुआ और उन्होंने आनन्दित हो अर्जुन को छाती से लगा लिया। उस समय श्रीकृष्ण ने घोड़ों की रास छोड़ दी और वे सिंहनाद करते हुए वैसे ही नाचने लगे, जैसे वायु के झकोरों से वृक्ष के पत्ते हिल कर नाचने लगते हैं। रथ पर बैठे हुए श्रीकृष्ण, अर्जुन का हाथ अपनी ओर कर, बारंबार ताली बजा कर, बड़े गम्भीर स्वर से सिंहनाद करने लगे।

महायशी अर्जुन, श्रीकृष्ण को अत्यन्त हर्षित देख, दुःखी हुए और कहने लगे—हिडिम्बानन्दन घटोत्कच के मारे जाने पर हमारी सेना के समस्त पुरुष शोकान्वित हो रहे हैं, किन्तु तुम इस दुःख के समय भी आनन्दित हो रहे हो। हे माधव, घटोत्कच के मारे जाने से मेरी सेना के सब लोग रणक्षेत्र

छोड़ कर भाग रहे हैं। अधिक क्या कहूँ, उसके मारे जाने से मुझे भी बड़ा दुःख है। हे जनार्दन! मुझे जान पड़ता है, इसमें कोई विशेष भेद की बात है। जो हो, तुम सत्यवादियों में सर्वाग्रगण्य हो। अतः मैं तुमसे पूँछता हूँ कि तुम ठीक ठीक जो बात हो वह मुझे बतला दो। आज तुम्हारा यह कार्य समुद्र सूखने और सुमेरु पर्वत के काँपने की भाँति मुझे असम्भव मालूम होता है। अतः यदि यह बात गोप्य न हो तो तुम इस अपने धैर्यच्युति के कारण को प्रकट रूप से कहो।

अर्जुन के इन वचनों को सुन, श्रीकृष्ण बोले—हे धीमान् अर्जुन! मेरे सहसा आनन्दित हो जाने का कारण सुनो। घटोत्कच के मरने से कर्ण के पास इन्द्रप्रदत्त अमोघ शक्ति नहीं रह गयी। अतः अब तुम कर्ण को मरा हुआ ही समझो। यदि कर्ण, स्वामिकार्तिक की तरह रणभूमि में इन्द्र की अमोघ शक्ति ले कर खड़ा हो जाता, तो इस पृथिवीतल का कोई भी पुरुष उसके सामने खड़ा नहीं हो सकता था। हे अर्जुन! तुम्हारे भाग्य से कर्ण अपने जन्मजात कवच कुण्डलों से पहले ही रहित हो चुका था, अब वह तुम्हारे ही सौभाग्य से उस अमोघ शक्ति को घटोत्कच पर चला, उससे भी रहित हो गया है। यदि बलवान कर्ण अभेद्य कवच और कुण्डलों को पहिने हुए रणभूमि में डट जाता, तो वह देवताओं सहित तीनों लोकों को जीत सकता था। इन्द्र, कुबेर, वरुण और यमराज भी कर्ण का सामना न कर सकते। अधिक क्या कहूँ, तुम गाण्डीव धनुष और मैं सुदर्शन चक्र ग्रहण कर के भी इस पुरुषश्रेष्ठ कर्ण को पराजित न कर सकता। हे अर्जुन! पहले देवराज इन्द्र ने आपके हित की अभिलाषा से शत्रुनाशन कर्ण को, माया से मुग्ध कर, उससे कवच कुण्डल ले लिये थे। इन्द्र को अपना कवच और कुण्डल शरीर से काट कर देने से, उसका नाम वैकर्तन पड़ा है। इस समय उस शक्ति के पास न रहने से कर्ण, मंत्र द्वारा कीले हुए क्रोधी एवं विषधर सर्प की तरह अथवा शिखारहित अग्नि की तरह शान्त पड़ता है। हे अर्जुन! इन्द्र ने कर्ण को उसके दिव्य कवच और कुण्डलों के बदले

जब से वह अमोघ शक्ति दी, जिससे कर्ण ने अभी घटोत्कच का वध किया है, तब से कर्ण तुझे युद्ध में मरा हुआ मानता था। मैं शपथ पूर्वक सत्य सत्य कहता हूँ कि, यद्यपि आज कर्ण के हाथ से वह अमोघ शक्ति निकल गयी है, तथापि तुझे छोड़ और कोई उसे नहीं मार सकता। कर्ण ब्राह्मणों का भक्त, सत्यवादी, तपस्वी, व्रतधारी तथा शत्रुओं के ऊपर भी दया करने वाला है। अत. उसकी वही वृष संज्ञा है, जो धर्म की है। कर्ण बड़ा बली और युद्धकला में बड़ा पटु है। वह अपने धनुष पर सदा डोरी चढ़ाये रखता है। वह रण में वैसे ही दहाड़ता है, जैसे वन में सिंह। वह रण में सब के सामने खड़ा हो, रथी रूपी सिंहों को वैसे ही नष्ट किया करता है, जैसे मतवाला हाथी यूथपतियों का नाश करता है। हे अर्जुन! जैसे शरद्-ऋतु में मध्यान्ह कालीन सूर्य को कोई नहीं देख सकता, वैसे ही तेरे पक्ष के मुख्य मुख्य महाबली योद्धाओं की भी इतनी सामर्थ नहीं कि, वे सहस्रों बाण-रूपी किरणों से युक्त कर्णरूपी सूर्य की ओर देख सकें। वर्षाऋतु में निरन्तर जल बरसाने वाले मेघों की तरह कर्ण भी निरन्तर शस्त्रवृष्टि करने वाला है। यदि देवता लोग चारों ओर से बाणवृष्टि करें और दैत्यगण चारों ओर से माँस तथा रुधिर की वर्षा करें तो भी वे कर्ण को परास्त नहीं कर सकते। हे अर्जुन! यह कर्ण, कवच और कुण्डलों से रहित तो कभी का हो गया था और आज इन्द्र की दी हुई शक्ति को छोड़ देने से यह एक सामान्य मनुष्य जैसा हो गया है। इस कर्ण के वध का अब एकमात्र उपाय यही है कि द्वैरथ युद्ध के अवसर पर, इसके रथ का पहिया भूमि में धस जायगा। उस समय कर्ण बहुत घबड़ायगा और दुःखी होगा। तब तू मेरा सङ्केत पा, उसे मार डालना। क्योंकि अजेय कर्ण जब हथियार ले समरभूमि में खड़ा हो जायगा, तब दैत्यों को मारने वाले वीराग्रगण्य एवं बलि दैत्य को मारने वाले इन्द्र भी यदि वज्र ले कर आवें, तो वे भी कर्ण को नहीं मार सकते। हे अर्जुन! तेरी भलाई के लिये महाबली जरासन्ध, चेदिराज, शिशुपाल और भिल्लराज एकलव्य को अनेक उपायों से मारा है। इसी तरह राक्षसराज

हिडिम्ब, किर्मीर, बक, शत्रु-सैन्य नाशन अलायुध और उग्रकर्मा घटोत्कच आदि राक्षसों को विविध उपायों से मैंने वध करवाया है।

एक सौ इक्यासी का अध्याय

श्रीकृष्ण के पाण्डवों के प्रति किये गये उपकारों का वर्णन

अर्जुन बोले—हे जनार्दन! आपने जरासन्ध आदि राजाओं को हमारे हित के लिये किन किन उपायों से तथा किस प्रकार मारा था?

श्रीकृष्ण ने कहा—अर्जुन महाबली जरासन्ध, चेदिदेश का राजा शिशुपाल और महाबली एकलव्य को यदि मैंने पहले न मार डाला होता, तो आज वे तेरे लिये महाभय का कारण होते। दुर्योधन इस समय उन महारथी राजाओं को निमंत्रण दे बुला लेता और उनके साथ हम लोगों की चिरकालीन शत्रुता होने के कारण वे कौरवों की सहायता करते। वे बड़े वीर, महाधनुर्धर, शस्त्रविद्या में चतुर और बड़े भारी योद्धा थे। वे देवताओं की तरह चारों ओर से कौरव-सैन्य की रक्षा करते। बलवान कर्ण, जरासन्ध, शिशुपाल और एकलव्य दुर्योधन के पक्ष में खड़े हो, सारी पृथिवी अपने अधीन कर लेते। हे धनञ्जय! इसीलिये मैंने उनका नाश किया। उनका वध करने के लिये, मैंने जिन उपायों से काम लिया था, उनका वर्णन अब मैं करता हूँ। सुन। उन उपायों से काम लिये बिना देवता भी उन लोगों को रण में नहीं जीत सकते थे। हे अर्जुन! मैंने तुझे जिन राजाओं के नाम अभी बतलाये हैं, उनमें से प्रत्येक राजा, समरभूमि में लोकपालों से रक्षित अखिल देवसैन्य के साथ लड़ सकता था। एक बार बलदेव जी ने जरासन्ध की अप्रतिष्ठा की। अतः वह क्रुद्ध हो गया। जैसे इन्द्र वज्र का प्रहार करते हैं, वैसे ही हमारा नाश करने के लिये उसने सब का संहार करने वाली गदा हमारे ऊपर फेंकी। तब तो मानों आकाश में सीमन्त की रचना करती हुई, वैसे ही और अग्नि समान चमचमाती हुई

वह गदा मेरे ऊपर गिरती सी जान पड़ी। तब रोहिणीनन्दन बलदेव जी ने स्थूणाकर्ण नामक अस्त्र उस गदा को नष्ट करने के लिये छोड़ा। उस अस्त्र के प्रहार से गदा खण्ड खण्ड हो गयी और धर्रा कर भूमि पर गिर पड़ी। उस समय ऐसा जान पड़ा मानों वह पृथिवी को विदीर्ण कर पहाड़ों को कँपा रही हो। वह गदा जिस स्थान पर गिरी थी, वहाँ जरा नाम्नी एक महाबलवती राक्षसी बैठी थी। वह गदा के तथा शस्त्रों के प्रहार से पुत्रों और संबन्धियों सहित मर गयी। इस राक्षसी ने जन्मकाल में जरासन्ध को जोड़ कर जीवित किया था। जरासन्ध को जोड़ने के सम्बन्ध में कहा जाता है कि, जरासन्ध का जन्म दो माताओं के पेट से हुआ था और जन्म के समय उसके शरीर के दो भाग अलग अलग थे। जरा राक्षसी ने उन दोनों टुकड़ों को एकत्र कर, जोड़ दिया था। इस कारण उसका नाम जरासन्ध पड़ा था। हे अर्जुन! उस गदा ने जरा राक्षसी को और स्थूणाकर्ण बाण ने गदा को नष्ट कर डाला। इस प्रकार जरासन्ध जब गदा और राक्षसी दोनों से हीन हो गया; तब भीमसेन ने महासंग्राम में तुम्हारे सामने ही उसको मार डाला। यदि कहीं आज जरासन्ध जीवित होता और गदा ले लड़ने को आता तो उसका नाश इन्द्रादि देवता भी नहीं कर सकते थे। मैंने कपट से द्रोण को एकलव्य का गुरु बना कर, उनके द्वारा सत्यपराक्रमी भिल्लपुत्र एकलव्य का अंगूठा कटवा डाला था। इसमें भी तुम्हारी भलाई ही हुई है। वह दृढ़ पराक्रमी एवं महाअभिमानी भिल्लपुत्र हाथों में चमड़े के मोज़े पहिन कर, वन में भ्रमण किया करता था। वह अपर राम की तरह तेजस्वी भी था। हे अर्जुन! यदि एकलव्य का अँगूठा पूर्ववत् होता तो रण में देवता दानव, राक्षस एवं नाग भी किसी प्रकार उसका नाश नहीं कर सकते थे। तब कोई मनुष्य तो उसकी ओर आँख उठा देख ही कैसे सकता था। उसकी मुट्ठी बड़ी मज़बूत थी। वह बाण चलाने में भी बड़ा पटु था और रात दिन बाण छोड़ा करता था। ऐसे भिल्लराज का भी तेरी भलाई के लिये ही नाश किया। फिर तेरी भलाई के लिये ही और तेरे सामने ही मैंने शिशुपाल

का भी वध किया। उसे भी रण में मिल कर सब देवता और दानव नहीं जीत सकते थे। उसका तथा देवताओं के शत्रु अन्य दैत्यों का नाश करने के लिये और मनुष्यों के हितार्थ मैंने अवतार लिया है। तेरी सहायता से मैंने सब का नाश कर डाला है। इसी प्रकार रावण के समान महाबली और ब्राह्मणों तथा यज्ञों के द्वेषी हिडिम्बासुर, बक, किर्मीर आदि को भी भीम ने मार डाला है। मायावी अलायुध को घटोत्कच ने मार डाला और कर्ण के हाथ से इन्द्रप्रदत्त अमोघ शक्ति को घटोत्कच पर छुड़वा कर, मैंने घटोत्कच का नाश करवाया है। यदि कर्ण महासंग्राम में घटोत्कच को न मार डालता, तो मुझे स्वयं घटोत्कच को मारना पड़ता। मैंने जो आज तक घटोत्कच को नहीं मारा था, उसका कारण यह था कि, जिससे तुम बुरा न मानो। क्योंकि घटोत्कच स्वयं ब्राह्मणविद्वेषी, यज्ञद्वेषी, धर्म का नाश करने वाला और पक्के दर्जे का पापी था। अतः मैंने ही उसको मरवाया है। कर्ण को इन्द्र से जो अमोघ शक्ति प्राप्त हुई थी, उसे भी मैंने इस उपाय से व्यर्थ करवा दिया है। क्योंकि हे पाण्डव! जो पुरुष धर्म का नाश करता है, मैं उसका नाश कर देता हूँ। धर्मसंस्थापन करने की मेरी अटल प्रतिज्ञा है। मैं सत्य की शपथ खा कर कहता हूँ कि, जहाँ ब्रह्म, सत्य, दया, शौच, धर्म, लज्जा, लक्ष्मी, धैर्य और क्षमा रहती है, वहीं मैं सदा रहता हूँ। अब मुझे कर्ण के नाश की चिन्ता नहीं रही। जिस उपाय से कर्ण को तू रण में मारेगा, उसका उपक्रम मैंने कर दिया है। मैं उसके वध की युक्ति तुझे बतलाऊँगा; किन्तु इस समय शत्रुसैन्य में कोलाहल बढ़ता चला जाता है। तेरी सेना दसों दिशाओं को भाग रही है। कौरव ताक ताक कर, तेरी सेना का नाश कर रहे हैं। वह महायोद्धा द्रोणाचार्य तेरी सेना का नाश कर रहे हैं—ज़रा उस ओर देख तो सही।

एक सौ बयासी का अध्याय

दैव का खिलवाड़

धृतराष्ट्र ने पूँछा—हे सञ्जय! जब कर्ण की शक्ति, एक पुरुष का वध कर, निष्फल हो जाने वाली थी; तब फिर उसने अन्य सब योद्धाओं को छोड़, अर्जुन के ऊपर ही छोड़ कर उससे काम क्यों नहीं लिया? यदि कर्ण कहीं अर्जुन को मार डालता तो समस्त पाण्डव और सृञ्जय अवश्य ही मारे जाते। अतः उसने अर्जुन का नाश कर शत्रु, पर विजय क्यों प्राप्त नहीं किया? यदि तू कहे कि, अर्जुन लड़ने को नहीं आता था तो मैं कहूँगा कि, अर्जुन का तो यह व्रत है कि, यदि कोई भी उसे युद्ध के लिये ललकारे, तो वह रण में पीछे नहीं हटता। अतः सूतपुत्र कर्ण ने यदि अर्जुन को लड़ने के लिये बुलाया होता, तो वह लड़ने को आता ही। उस समय हे सञ्जय! कर्ण ने द्विरथ युद्ध करने को अर्जुन को ललकार, इन्द्रप्रदत्त शक्ति से उसका वध क्यों नहीं कर डाला? शोक! मेरा पुत्र निश्चय ही निर्बुद्धि है। उसका सच्चा सहायक कोई नहीं है। वह शत्रुओं के धोखे में आ गया है। वह पापी है। अतः वह शत्रुओं को कदापि नहीं जीत सकता। सचमुच कर्ण की जो महाशक्ति गिनी जाती थी, जिस पर कर्ण को पूरा भरोसा था, वह शक्ति कृष्ण ने घटोत्कच पर फिकवा निष्फल कर डाली। जैसे टूटे हुए हाथ में आये हुए फल को बलवान पुरुष ले जाता है, वैसे ही कर्ण की शक्ति को कृष्ण ने चालाकी से छीन लिया है। वह शक्ति अमोघ थी, किन्तु घटोत्कच के ऊपर प्रयोग करने से अब वह व्यर्थ हो गयी। जहाँ सुअर और कुत्ते लड़ते हों; वहाँ दोनों में से एक के भी मरण से, जिस प्रकार चाण्डाल को लाभ होता है, वैसे ही मेरी समझ में कर्ण और घटोत्कच के युद्ध से श्रीकृष्ण को लाभ है। समरभूमि में यदि घटोत्कच कहीं कर्ण को मार डाले, तो पाण्डवों का परम उपकार हो। यदि सूतपुत्र कर्ण घटोत्कच का वध करे, तो भी उस एक-पुरुष-घातिनी शक्ति के निष्फल होने से बहुत बड़ा कार्य सिद्ध

होगा। बुद्धिमान कृष्ण ने ऐसा ही सोच कर, पाण्डवों के हितसाधन की कामना से कर्ण द्वारा घटोत्कच का वध कराया।

सञ्जय ने कहा—हे राजन्! महाबुद्धिमान् मधुसूदन श्रीकृष्ण ने कर्ण के आन्तरिक अभिप्राय को ताड़ कर ही, इन्द्रप्रदत्त शक्ति के निष्फल करने की कामना से कर्ण के साथ घटोत्कच को लड़ने के लिये प्रवृत्त किया था। किन्तु यह सब आपकी दुर्नीति ही का परिणाम है। हे राजन्! श्रीकृष्ण यदि रणभूमि में अर्जुन को कर्ण से न बचाते तो हम लोग उसी समय अपने उद्योग में सफल हो जाते। सर्वशक्तिमान् परमेश्वर श्रीकृष्ण यदि समर-भूमि में अर्जुन की रक्षा न करते, तो निश्चय ही, रथ, घोड़े, ध्वजा के साथ साथ अर्जुन निर्जीव हो भूमि पर पड़ा दिखलायी पड़ता। श्रीकृष्ण उसके रक्षक हैं, इसीसे शत्रुओं की जीत और हमारी हार होती है। श्रीकृष्ण ने इन्द्रप्रदत्त एक-पुरुष-घातिनी अमोघ शक्ति से अर्जुन की विशेष रूप से रक्षा की है—नहीं तो कर्ण की भुजा से छूटी हुई वह अमोघ शक्ति कुन्तीपुत्र अर्जुन के शरीर को वैसे ही चीर फार डालती, जैसे वज्र के प्रहार से पहाड़।

धृतराष्ट्र ने कहा—हे सञ्जय! मेरा पुत्र दुर्योधन केवल बुद्धिमान पुरुषों का अपमान करने वाला, विरोधी और दुष्ट विचार में निपुण है—नहीं तो अर्जुन के वध का यह अमोघ उपाय भी क्या निष्फल जा सकता था। फिर कर्ण ने ही क्यों अर्जुन पर उस अमोघ शक्ति का प्रहार नहीं किया? हे सञ्जय! उस समय क्या तुम्हारी बुद्धि भी भ्रम में पड़ गयी थी? यदि तुम भ्रम में न पड़ गये होते तो तुमने क्यों उस अमोघ शक्ति के विषय में कर्ण को स्मरण नहीं कराया?

सञ्जय बोले—महाराज! दुर्योधन शकुनि दुःशासन और मैं प्रतिदिन रात के समय सोच समझ कर कर्ण से कहा करते थे, हे कर्ण! कल तुम सब को छोड़ अकेले अर्जुन ही का वध कर डालो। क्योंकि अर्जुन के मारे जाने से हम अन्य समस्त पाण्डवों तथा पाञ्चाल योद्धाओं को सहज ही में हरा

सकेंगे तथा उन्हें अपने वश में कर, सम्पूर्ण पृथिवी के राज्य को भोगेंगे। अथवा अर्जुन के मारे जाने पर, यदि वृष्णिनन्दन कृष्ण पाण्डवों की ओर से दूसरे वीरों को युद्धकार्य में प्रवृत्त करें, तो कृष्ण ही को मार डालो। क्योंकि कृष्ण ही पाण्डवों के सब कार्यों की सिद्धि के प्रधान कारण हैं। अर्जुन, कृष्णरूपी वृक्ष की बड़ी शाखा, अन्य पाण्डव छोटी शाखा और समस्त पाञ्चाल योद्धा उसके पत्र हैं। अधिक क्या कहा जाय—कृष्ण ही पाण्डवों के आश्रयस्थल, बल और सहायक हैं। जैसे सम्पूर्ण ज्योतिर्मय पदार्थों का आश्रयस्थल सूर्य है वैसे ही कृष्ण भी पाण्डवों के परम आश्रयरूप हैं। हे कर्ण! अतः तुम शाखा और पत्रों को छोड़ पाण्डवरूपी वृक्ष के मूलरूपी कृष्ण ही का सर्वप्रथम नाश करो। हे राजेन्द्र! हम लोग कर्ण से इस प्रकार कह कर पुनः दुर्योधन से यह कहते थे—हे राजन्! यदि कर्ण कहीं कृष्ण को मार डाल सके तो यह समूची पृथिवी निश्चय ही तुम्हारी मुट्ठी में आ जाय। यदुवंश और पाण्डववंश को हर्ष देने वाले कृष्ण निर्जीव हो भूमि पर लेट जाय, तो निस्सन्देह वनों, पर्वतों और समुद्रों सहित यह भूमण्डल तुम्हारे वश में हो जाय। हे राजन्! हम लोग नित्य रात्रि के समय श्रीकृष्ण के वध के सम्बन्ध में इस प्रकार निश्चय किया करते थे; तो भी अगले दिन जब युद्ध होता, तब हम सब लोगों की बुद्धि मोहित हो जाती थी। कर्ण के पास जब तक इन्द्रप्रदत्त वह अमोघ शक्ति विद्यमान थी, तब तक श्रीकृष्ण सदा अर्जुन को कर्ण से बचाते रहे। अन्त में बहुत सोच विचार कर श्रीकृष्ण पाण्डव पक्षीय अन्य महारथियों को कर्ण के सामने भेजते थे। जब श्रीकृष्ण ने कर्ण के हाथ से अर्जुन की रक्षा कर ली, तब वे क्या अपनी रक्षा नहीं कर सकते? मैंने तो बहुत अच्छी तरह सोच विचार कर देख लिया, मुझे तो तीनों लोकों में ऐसा एक भी पुरुष नहीं देख पड़ता, जो सुदर्शन-चक्र-धारी कृष्ण का वध कर सके।

रथियों में प्रधान सत्यपराक्रमी सात्यकि ने कर्ण के सम्बन्ध में श्रीकृष्ण

से पूछा था—हे कृष्ण ! कर्ण के पास इन्द्रप्रदत्त अमोघ शक्ति है। अतः उसे उस पर पूरा विश्वास था, तब भी उसने क्यों उस अमोघ शक्ति को अर्जुन पर नहीं चलाया ?

सात्यकि के प्रश्न के उत्तर में श्रीकृष्ण ने कहा—हे सात्यकि ! दुर्योधन, दुःशासन, शकुनि और सिन्धुराज जयद्रथ आपस में प्रतिदिन रात को सलाह कर यह निश्चय किया करते थे और कर्ण से कहते थे—हे कर्ण ! तुम इस अमोघ शक्ति का प्रयोग अर्जुन को छोड़ अन्य किसी पर मत करना। क्योंकि जैसे देवताओं में इन्द्र है, वैसे ही पाण्डवों में यशस्वी अर्जुन ही मुख्य वीर है। अतः अर्जुन का वध होने से शक्तिहीन देवताओं की तरह अन्य पाण्डव और सृञ्जय अनायास ही नष्ट हो जाँयगे। हे सात्यकि ! कर्ण ने उन लोगों की इस बात को सुन तदनुसार ही प्रतिज्ञा भी की थी। तभी से उसके मन में अर्जुनवध की बात सदा बनी रहती थी। अकेला मैं ही कर्ण को मोहित करता था। इसीसे वह श्वेतवाहन अर्जुन के ऊपर अमोघ शक्ति का प्रयोग न कर सका। हे महायोद्धा ! कर्ण असल में अर्जुन का काल है—मेरे जी में यह बात उठने के कारण मुझे रात भर नींद नहीं पड़ती थी। मेरा मन भी प्रसन्न नहीं रहता था; किन्तु हे शिनिपुङ्गव ! आज उस शक्ति के घटोत्कच पर पड़ने से उसे निष्फल हुई देख, अब मैं समझता हूँ कि, अर्जुन काल के गाल से निकल आया। मैं रण में अर्जुन की रक्षा करना जैसा आवश्यक समझता हूँ, वैसी आवश्यकता मुझे अपनी, अपने माता पिता की, तुम्हारी, और भाइयों की रक्षा करने की नहीं जान पड़ती। त्रिलोकी के राज्य की अपेक्षा भी यदि कोई अत्यन्त दुर्लभ वस्तु हो, तो उस दूसरी वस्तु के पीछे भी मैं अर्जुन को छोड़ना नहीं चाहता, अतः हे सात्यकि ! आज मानों मर कर पुनः जीवित हुए से अर्जुन को देख, मुझे बड़ा हर्ष हो रहा है। मैंने तो इसी उद्देश्य से कर्ण का सामना करने को घटोत्कच को भेजा था। इसके अतिरिक्त यह भी बात थी कि, घटोत्कच को छोड़ रात्रि के समय कर्ण को और कोई दबा भी नहीं सकता था।

सञ्जय ने कहा—राजन्! अर्जुन का प्रिय और हित करने वाले देवकी-नन्दन श्रीकृष्ण ने उस समय सात्यकि को इसी प्रकार उत्तर दिया था।

एक सौ तिरासी का अध्याय

युधिष्ठिर का शोक

धृतराष्ट्र ने कहा—हे तात! कर्ण, दुर्योधन, शकुनि और विशेष कर तुमने भी बड़ा अन्याय किया है। क्योंकि जब तुम सब को यह बात मालूम थी कि, उस दुर्निवार्य शक्ति से केवल एक ही पुरुष का वध करने की शक्ति है; तब युद्ध में कर्ण ने उसका प्रयोग श्रीकृष्ण अथवा अर्जुन पर क्यों नहीं किया?

सञ्जय ने कहा—हे राजन्! रणभूमि से लौट आने पर हम सब का रात में यही विचार हुआ करता था और हम लोग आपस में कहा करते थे कि, कल सबेरा होते ही तू श्रीकृष्ण या अर्जुन पर उस शक्ति का प्रहार करना, किन्तु अगले दिन सबेरा होते ही देवगण कर्ण की मति पलट देते थे। इस से शक्ति रहने भी कर्ण ने रथ में स्थित अर्जुन या कृष्ण को न मारा। इस लिये मुझे तो दैव ही प्रधान जान पड़ता है। यद्यपि काल-रात्रि की तरह भयङ्कर और सदा प्रस्तुत रहने वाली शक्ति, कर्ण के हाथ में मौजूद थी, तथापि उसकी मति को दैव ने पलट दिया और दैवी माया ने उसे मोहित कर दिया। अतः देवकीनन्दन श्रीकृष्ण के ऊपर अथवा इन्द्र तुल्य शक्ति सम्पन्न अर्जुन के ऊपर उनका नाश करने के लिये इन्द्रप्रदत्त शक्ति का कर्ण ने प्रयोग नहीं किया।

धृतराष्ट्र ने पूछा—हे सञ्जय! दैव के प्राधान्य से अथवा श्रीकृष्ण के प्रबन्ध से तुम्हारा सर्वनाश तुम्हारी ही बुद्धि द्वारा हुआ है। इन्द्रप्रदत्त शक्ति तृणवत् घटोत्कच का नाश कर चली गयी। दुर्दैव ही से कर्ण, मेरे

समस्त पुत्र तथा मेरे पक्षपाती समस्त राजा लोग युद्ध में मारे जाँयगे। मुझे अब बतला कि, घटोत्कच के मारे जाने पर कौरव और पाण्डवों में किस प्रकार युद्ध चला। पाण्डव, सृञ्जय और पाञ्चाल राजे सैन्यव्यूह रच कर, जब, द्रोणाचार्य के सामने लड़ने के लिये पहुँचे तब उन लोगों ने किस प्रकार युद्ध किया था। जब द्रोणाचार्य सोमदत्त के पुत्र भूरिश्रवा के तथा सिंधुराज के मारे जाने पर क्रोध में भर और जान को हथेली पर रख, जावड़े चाटते हुए, व्याघ्र की तरह मुख फाड़, काल की तरह सेना में घुसे और बाणवृष्टि करने लगे—तब पाण्डवों, सृञ्जयों और पाञ्चालों ने द्रोणाचार्य पर किस तरह आक्रमण किया और उनका सामना किया? हे तात! मुझे बतला दुर्योधनादि मेरे पुत्र, अश्वत्थामा, कर्ण एवं कृपाचार्य, रण में जब द्रोणाचार्य की रक्षा कर रहे थे; तब उन्होंने युद्ध उपस्थित होने पर कैसा पराक्रम प्रदर्शित किया। हे सञ्जय! मुझे यह भी बतला कि, मेरे पुत्रों ने तथा मेरे पक्ष के अन्य योद्धाओं ने, द्रोणाचार्य का वध करने की इच्छा रखने वाले भीम और अर्जुन के साथ कैसा युद्ध किया। सिन्धुराज जयद्रथ का वध हो चुकने पर तथा अन्य कौरवों एवं घटोत्कच के मारे जाने पर क्रोध में भरे पाण्डवों ने आधी रात को कैसा युद्ध किया था।

सञ्जय ने कहा—राजन्! रात्रि के समय जब कर्ण ने घटोत्कच को मार डाला, तब आपके योद्धा जो लड़ने को उत्सुक हो रहे थे, बारंबार गर्जने लगे। फिर वे झपट झपट कर पाण्डवों की सेना का नाश करने लगे। घोर अन्धकार से पूर्ण अर्द्धरात्रि का समय था। उस समय राजा युधिष्ठिर अत्यन्त दीन हुए और भीमसेन से बोले—हे महाभुज भीम! देखो, कौरवों की सेना हमारी सेना का नाश किये डालती है, अतः इसे भगा दो। घटोत्कच के मारे जाने से मेरा जी तो ठिकाने नहीं है। अतः मैं तो अब कुछ भी कर धर न सकूँगा। यह कह युधिष्ठिर आँसू बहाते और बार बार लंबी साँसें छोड़ते रथ पर जा बैठे। वे कर्ण के पराक्रम को देख बहुत खिन्न हो गये थे। युधिष्ठिर को खिन्न देख, श्रीकृष्ण ने

कहा—हे कुन्तीपुत्र ! तुम खेद मत करो। तुम जैसे महापुरुष को सामान्य जन की तरह न घबड़ाना चाहिये। उठ खड़े हो और लड़ो। महासमर के धुरा को धारण करो। यदि तुम्हीं घबड़ा गये तो फिर विजय प्राप्ति में तो पूर्ण सन्देह है।

श्रीकृष्ण के इन वचनों को सुनते ही धर्मराज ने आँसू पोंछ डाले और श्रीकृष्ण से कहने लगे—हे महाबाहो ! मैं धर्म का रहस्य भली भाँति समझता हूँ। जो मनुष्य उपकारों को भूल जाता है, वह ब्रह्महत्या के पाप का भागी होता है। हे जनार्दन ! महाबली घटोत्कच यद्यपि बालक था, तथापि जिन दिनों हम लोग वनवास में थे और अर्जुन अस्त्र प्राप्त करने स्वर्ग में गये हुए थे, उन दिनों उसने हम लोगों की बड़ी सहायता की थी। जब तक अर्जुन लौट कर मेरे पास नहीं आया, तब तक काम्यक वन में घटोत्कच हम लोगों के साथ ही रहता था। जब हम लोग गन्धमादन पर्वत की यात्रा करने को गये थे, तब उसने हमारे अनेक कष्ट दूर किये थे। जब मार्ग की थकावट से हम लोग थक गये थे, तब द्रौपदी को पीठ पर सवार कर, उसने उसे गन्तव्य स्थान तक पहुँचाया था। हे प्रभो ! वह रणकुशल था। उसने कई बार हमारी ओर से युद्ध किये थे और आज की लड़ाई में भी उसने बड़ी बहादुरी दिखलायी थी। हे कृष्ण ! स्वभावतः सहदेव पर मेरी जैसी प्रीति है, वैसा ही अनुराग मेरा घटोत्कच पर था। वह महाबली मेरा परमभक्त था। मेरा उस पर स्नेह था और उसकी मुझमें पूर्ण भक्ति थी। अतः हे कृष्ण ! उसके मारे जाने का मुझे बड़ा शोक है। इसीसे मैं खिन्न हो रहा हूँ। हे कृष्ण ! देखो, कौरव हमारी सेनाओं को खदेड़ रहे हैं। वह देखो, महारथी कर्ण तथा द्रोणाचार्य समरभूमि में कैसे घूम रहे हैं। कौरवों की सेना हमारी सेना को वैसे ही कुचल रही है, जैसे मतवाला हाथी नरकुल के वन को कुचलता है। हे माधव ! कौरव, भीम के भुजबल का तथा अर्जुन के विचित्र आयुधों का तिरस्कार कर, देखो कैसी बहादुरी दिखा रहे हैं। देखो, द्रोण, कर्ण और दुर्योधन रण में घटोत्कच को मार हर्षित हो कैसे गर्ज रहे हैं। हे कृष्ण !

इस सब लोगों का तिरस्कार कर, महाबली कर्ण ने महाबली घटोत्कच को अर्जुन के सामने ही मार डाला है। हे कृष्ण! जब इन दुष्ट कौरवों ने अभिमन्यु का वध किया था, तब तो महारथी अर्जुन वहाँ विद्यमान न था। इसे जयद्रथ ने रोक रखा था। अतः द्रोण और अश्वत्थामा ने उसको मरवा डाला। गुरु द्रोणाचार्य ने अभिमन्यु को मारने का उपाय कर्ण को बतलाया था। तब कर्ण ने तलवार का प्रहार कर, युद्ध करते हुए अभिमन्यु की तलवार काट डाली थी। इस तरह अभिमन्यु को तलवार से हाथ धोने पड़े थे। उस समय अवसर पा कृतवर्मा ने नृशंस पुरुष की तरह अभिमन्यु के रथ के घोड़ों को दोनों पार्श्वरक्षकों को और सारथि को मार डाला था। तब अन्य बड़े बड़े महारथी योद्धाओं ने सुभद्रानन्दन को घेर कर मार डाला था। इसमें अकेले जयद्रथ ही का अपराध न था। तो भी अर्जुन ने जयद्रथ का वध किया है। मुझे यह बात अच्छी नहीं जान पड़ी। यदि शत्रु का वध करना ही नीति के अनुकूल मान लिया जाय तो पाण्डवों को उचित था कि, वे पहले द्रोण और कर्ण को मार डालते। क्योंकि ये दोनों ही हमारे दुःख का प्रधान कारण हैं। इन दोनों की सहायता पा दुर्योधन रण में निर्भय रहता है। जब अर्जुन को द्रोणाचार्य तथा अनुचरों सहित कर्ण को मारना चाहिये था, तब उन्हें न मार कर अर्जुन ने दूरस्थित जयद्रथ को मारा। किन्तु धर्मानुसार यदि विचार किया जाय तो मारने योग्य सूतपुत्र कर्ण ही है। अतः हे वीर कृष्ण! मैं स्वयं कर्ण को मारने के लिये जाऊँगा और महाबाहु भीमसेन द्रोणाचार्य की सेना से लड़ रहा है—सो यह लड़ा करे।

यह कह धर्मराज ने अपना विशाल धनुष टंकारा और भयानक शङ्खनाद करते हुए वे बड़ी तेज़ी से कर्ण से लड़ने को रवाना हुए। उस समय शिखण्डी एक हज़ार रथ, तीन हज़ार हाथी, पाँच सहस्र घोड़े तथा प्रभद्रक एवं पाँचाल योद्धाओं को साथ ले धर्मराज के पीछे हो लिया। कवचधारी पाण्डवों तथा पाँचालों के योद्धा भेरी और शङ्ख बजाने लगे। उस समय

श्रीकृष्ण ने अर्जुन से कहा—धर्मराज युधिष्ठिर कुपित हो, बड़ी फुर्ती के साथ कर्ण को मारने की कामना से उससे लड़ने को आ रहे हैं, किन्तु इनको अकेले जाने देना ठीक नहीं।

अर्जुन से यह कह, श्रीकृष्ण ने अपने घोड़े तेज़ी से हाँके और दूर निकल गये हुए धर्मराज के निकट वे आ पहुँचे। शोक से पीड़ित और कृतसङ्कल्प धर्मराज युधिष्ठिर उस समय मारे क्रोध के अग्नि की तरह धधक रहे थे। वे कर्ण का संहार करने के लिये बड़े वेग से रथ को दौड़वाते जा रहे थे। यह देख, व्यास जी ने उनके निकट जा उनसे कहा।

व्यास जी बोले—यह सौभाग्य की बात है कि, कर्ण से लड़ कर भी अर्जुन जीवित है, कर्ण ने अर्जुन का वध करने की कामना से इन्द्रप्रदत्त एक-पुरुष-घातिनी-शक्ति रख छोड़ी थी। इसीसे अर्जुन ने उसके साथ द्विरथ युद्ध करना अच्छा न समझा। सो यह भी सौभाग्य ही बात है। हे युधिष्ठिर! आरम्भ में तो दोनों वीर योद्धा स्पर्धावान् हो दिव्यास्त्रों का प्रयोग करते और जब अस्त्रों का नाश हो जाता, तब सूतपुत्र कर्ण धैर्यच्युत हो, निश्चय ही इन्द्रप्रदत्त शक्ति अर्जुन पर छोड़ता। उस समय हे युधिष्ठिर! तुम महा-सङ्कट में पड़ जाते। अतएव हे मानद! कर्ण ने युद्ध में उस शक्ति से घटोत्कच को मार डाला—सो अच्छा ही हुआ। काल ही ने इन्द्रप्रदत्त शक्ति द्वारा उसका नाश करवाया है। हे तात! तुम्हारी भलाई के लिये ही घटो-त्कच मरा है। उसका मरना शक्ति ही से निर्दिष्ट था। हे तात! तुम क्रुद्ध मत हो और शोक को त्याग दो। क्योंकि प्राणिमात्र की अन्तिम गति यही है अतः हे भरतवंशी राजन्! तुम अपने समस्त महाबली भाइयों और अपने पक्ष के बलवान राजाओं के साथ रह कर, कौरवों से लड़ो। आज से पाँचवें दिन अखिल धरामण्डल के तुम अधीश्वर हो जाओगे। हे धर्मराज! तुम नित्य धर्म ही की ओर चित्त लगाये रहो। तुम दयालुता, तप, दान, क्षमा तथा सत्य का पूर्ण अनुराग से सेवन करो। क्योंकि यतो धर्मः ततो जयः अर्थात् जहाँ धर्म है, वहीं विजय है।

इस प्रकार धर्मराज को समझा कर वेदव्यास जी वहीं अन्तर्धान हो गये।

घटोत्कच वध पर्व समाप्त

द्रोणवध पर्व

एक सौ चौंसठ का अध्याय

समरक्षेत्र ही में सेना का शयन करना

सञ्जय ने कहा—हे राजन्! व्यास जी के इन वचनों को सुन कर धर्मराज ने कर्ण को स्वयं मारने का विचार त्याग दिया। उस रात में कर्ण के हाथ से घटोत्कच मारा गया था। अतः दुःखी और कुपित युधिष्ठिर ने भीमसेन को आपकी विशाल वाहिनी को रोकते देख, धृष्टद्युम्न से कहा—तू द्रोणाचार्य को रणक्षेत्र से पीछे हटा। तू द्रोणाचार्य का नाश करने के लिये बाण, कवच, तलवार और धनुष सहित अग्निकुण्ड से प्रकट हुआ था। तू शत्रु को सन्तप्त करने वाला है। अतः प्रसन्न हो तू द्रोणाचार्य का सामना कर। तुझे डरना नहीं चाहिये। जनमेजय, शिखण्डी, दुर्मुख के पुत्र यशोधरेन्द्र एवं नकुल, सहदेव, द्रौपदी के पाँचों पुत्र और प्रभद्रक योद्धा हर्षित हो चारों ओर से घेर कर द्रोण पर आक्रमण करें। द्रुपद, विराट, उसके भ्राता और पुत्र, सात्यकि, केकय राजे और पाण्डुपुत्र अर्जुन भी द्रोण का नाश करने के लिये शीघ्र द्रोण पर आक्रमण करें। समस्त रथी, गजारोही, अश्वारोही और पैदल भी महारथी द्रोण के ऊपर आक्रमण करें और उनका संहार करें।

जब धर्मराज ने यह आज्ञा दी; तब पाण्डवों के समस्त योद्धाओं ने द्रोण पर आक्रमण किया। यह देख द्रोणाचार्य ने सावधान हो उन सब का सामना किया। राजा दुर्योधन ने कुपित हो, द्रोण की रक्षा करने के लिये,

अपने साथ, अपने समस्त सहायक राजाओं को ले, पाण्डवों पर लपका। हुँकार करते हुए कौरव और पाण्डव पुनः आपस में भिड़ गये। हे राजन्! इस समय वाहन और सिपाही बहुत थके हुए थे। तिस पर निद्रा देवी का उन पर आक्रमण हुआ। तब तो बड़े बड़े योद्धा अंधे से हो गये। वे यह निर्णय न कर सके कि अब उन्हें क्या करना चाहिये। सहस्रों प्राणियों का नाश करने वाली, तीन प्रहर की वह भयानक रात आपस में लड़ते हुए और विशेष घायल हुए तथा निद्रा से अंधे से बने हुए उन योद्धाओं को सहस्रों प्रहरों जैसी जान पड़ रही थी। जब आधी रात बीत गयी; तब सम्पूर्ण क्षत्रिय योद्धा निद्रा से अंधे हो गये। उनका उत्साह नष्ट हो गया। उनके मन में वैराग्य उत्पन्न हो गया। आपके और शत्रुपक्ष के योद्धाओं के बाण चुक गये। तिस पर भी वे अपने क्षात्र धर्म को स्मरण कर, सेना को छोड़ नहीं गये। किन्तु तो भी वे लड़ते ही रहे। कितने ही साधारण जन निद्रा से विकल हो, अस्त्रों को पटक, अस्त्रों को दूर फेंक कर सो गये। हे राजन्! कितने ही योद्धा रथों पर, कितने ही हाथियों पर और कितने ही घोड़ों की पीठ पर निद्राभिभूत हो सो रहे। अब क्या करना चाहिये—यह उन्हें नहीं सूझ पड़ता था। उस समय सामने खड़े योद्धा रण में निद्रा के वशीभूत हो अचेत पड़े हुए योद्धाओं को यमालय भेज रहे थे। निद्रा से अंधे हुए कितने ही योद्धा महारण में अनेक बकवादें कर रहे थे और गड़बड़ी में अपने पक्ष का दूसरों का तथा स्वयं अपना भी नाश कर रहे थे। निद्रा के कारण उन लोगों की आँखें लाल लाल हो गयी थीं। उनमें से हमारे बहुत से योद्धा, शत्रुओं के साथ लड़ना आवश्यक समझ, समरक्षेत्र में खड़े थे। निद्रा से अंधे बहुत से योद्धा दौड़ दौड़ कर शत्रुओं का नाश कर रहे थे। कितने ही योद्धा तो रणभूमि में ऐसे निद्रान्ध हो रहे थे कि, शत्रु का प्रहार उनको जान ही नहीं पड़ता था। योद्धाओं की ऐसी दशा देख, पुरुषश्रेष्ठ अर्जुन ने दिशाओं को गुँजाते हुए उच्च स्वर से कहा—हे वीरों! तुम सब तथा तुम लोगों के वाहन भी थक गये हैं। तुम लोगों को निद्रा ने भी

घेर रखा है। अन्धकार एवं धूल से सेना ढक गयी है। यहाँ तक कि एक दूसरे को देख भी नहीं पड़ता। अतः मेरा कहा मान कर, अब तुम लोग लड़ना बंद कर दो और दो घड़ी के लिये समरभूमि ही में सो जाओ। जब तुम्हारी थकावट मिट जाय और तुम जागो और चन्द्रोदय हो जाय, तब कौरवों और पाण्डवों का युद्ध पुनः आरम्भ हो।

अर्जुन की यह बात सब धर्मात्मा योद्धाओं को अच्छी लगी और उन लोगों ने मान ली। वे एक दूसरे को बुलाने लगे। कोई कहता, हे कर्ण! कोई कहता हे दुर्योधन! पाण्डवों की परिश्रान्त सेना विश्राम कर रही है, अतः हमारी सेना को भी विश्राम करना चाहिये।

अतः दोनों ओर की सेनाएं आराम करने लगीं। महाबली अर्जुन के इस प्रस्ताव की देवताओं, महर्षियों तथा समस्त सैनिकों ने सराहना की। वे सब लोग दो घड़ी तक सो, थकावट मिटाने को तैयार हो गये। आपकी थकी हुई सेना भी विश्राम करने का अवसर मिल जाने से अर्जुन की सराहना करती हुई कहने लगी—हे अर्जुन! तुम्हीमें सम्पूर्ण वेद, बुद्धि, पराक्रम, धर्म एवं समस्त अस्त्र भली भाँति से विराजमान हैं। सम्पूर्ण प्राणियों के ऊपर तुम्हारे शरीर में दया है। हे अर्जुन! हम लोग विश्राम कर, सुखी हो कर, जैसे तुम्हारे मंगल की कामना करते हैं, वह निश्चय ही सिद्ध होगी। अधिक क्या कहा जाय—तुम्हारा अभीष्ट अचिर सिद्ध होगा।

इस प्रकार वे महारथी योद्धा अर्जुन की सराहना करते हुए निद्रित हो गये। अनन्तर कोई हाथियों, कोई घोड़ों, कोई रथों पर और कितने ही योद्धा भूमि ही पर पड़ कर सो गये। वे सब कवच एवं आभूषण पहिने और हथियार लगाये हुए थे। निद्रा से मतवाले हो कितने ही हाथी, सर्पों की तरह फुँसकारते हुए, सूँड़ों से साँसे ले और साँस छोड़ भूमि को शीतल कर रहे थे। जब समस्त हाथी सूँड़ों से साँसे छोड़ते हुए रणभूमि के बीच बारंबार साँसे छोड़ने लगे, तब उनके सूँड़ों सहित शरीर सर्प युक्त पर्वत

जैसे जान पड़ने लगे, सुवर्ण भूषित कवचों से युक्त घोड़ों ने अपने पाँवों से पृथिवी को खोद और लोट पोट कर अपनी थकावट दूर की। जो घोड़े रथों में जुते हुए थे, वह जुते जुते ही निद्रित हो गये। इस प्रकार अत्यन्त थके हुए हाथी घोड़े और सैनिक युद्ध से छुट्टी पा, रणभूमि में सो गये। जब वे सब योद्धा वाहनों सहित सो गये, तब ऐसा जान पड़ने लगा मानों किसी चतुर चितेरे का बनाया हुआ हाथी, घोड़े और सिपाहियों से युक्त चित्रपट हो। परस्पर के शस्त्रप्रहारों से घायल, सुन्दर कुण्डलों से भूषित क्षत्रिय योद्धा हाथियों के ऊपर शयन करते हुए, ऐसे जान पड़ते थे, मानों वे कामिनियों के कुचों पर पड़े सो रहे हों। तदनन्तर नेत्रानन्ददायी पाण्डुर वर्ण चन्द्रदेव, महेन्द्राचल की ओर उदय होता हुआ दिखलायी पड़ा। वह उदयाचलवासी केसरी की भाँति पूर्वदिक् रूपी गुफा से निकल, अपने किरण रूपी केसरों से सम्पूर्ण दिशाओं को प्रकाशित कर के हस्तियूथ रूपी अन्धकार को नष्ट करता हुआ उदय हुआ। महाराज! हरवृषाङ्ग जैसे श्वेत वर्ण वाले नवीन वारवधू की हँसी की भाँति प्रकाशित अत्यन्त मनोहर कामदेव के कान तक खींचे गये धनुष की तरह, मण्डलाकार रूप से उदय हो कर भगवान् कुमुदबन्धु चन्द्रमा मुहूर्त्त भर के बीच सम्पूर्ण ज्योति वाले पदार्थों के प्रकाश को दबा, शशचिन्ह के अग्रभाग को लाल वर्ण से प्रदर्शित करने लगा। तदनन्तर सुवर्ण वर्ण वाली अपनी किरणों, को चारों ओर फैलाने लगा। इसी भाँति चन्द्रमा का प्रकाश अन्धकार को दूर कर, धीरे धीरे सम्पूर्ण दिशा और पृथिवी पर फैल गया। चन्द्रमा के उदय होने पर, सम्पूर्ण दिशा, प्रकाशमयी हो गयीं और अन्धकार तो एक दम दूर हो गया। इसी भाँति जब चन्द्रमा के उदय होने पर जगत् प्रकाशमय हो गया; तब कितने ही रात्रिचर जीव जन्तु इधर उधर भ्रमण करने से निवृत्त हुए। कितने ही जीव जन्तु समरभूमि में भ्रमण करते हुए भी देख पड़ते थे। जैसे पूर्णमासी के दिन चन्द्रमा के उदय होने पर, समुद्र की भयङ्कर तरङ्गे बहुत ऊँची उठती हुई देख पड़ती हैं वैसे ही वह सेना रूपी समुद्र चन्द्रमा के उदय से वेग पूर्वक बढ़ने लगा। अनन्तर

स्वर्ग जाने की कामना से शूरवीर योद्धाओं का आपस में पुनः महाघोर युद्ध आरम्भ हुआ।

एक सौ पचासी का अध्याय

रात का अन्तिम प्रहर

सञ्जय ने कहा—हे राजन्! जब सेना सो रही थी, तब दुर्योधन द्रोणाचार्य के निकट जा, क्रोध में भर, तेज और हर्ष को बढ़ाते हुए यह वचन बोले—हे आचार्य! समरभूमि में यदि शत्रु मलिनमन हो, विश्राम करने की प्रार्थना करे, तो लब्धलक्ष्य पुरुष को उचित है कि, वह किसी तरह भी शत्रु को क्षमा न करे। किन्तु बली पाण्डव लोग युद्धभूमि में थक गये थे; तो भी हम लोगों ने आपकी प्रसन्नता के लिये उनको क्षमा कर दिया। देखिये, आपसे रक्षित पाण्डवों के पराक्रम की उत्तरोत्तर वृद्धि हो रही है। हम लोग क्रमशः तेज तथा बल से सब प्रकार हीन होते चले आते हैं। हमें तो निश्चय है कि, इस संसार में ब्राह्म और दिव्य जितने अस्त्र शस्त्र हैं—वे सब आपको विदित हैं। अतः मैं शपथ पूर्वक आपसे कहता हूँ कि, आप यदि दृढ़ रूप से युद्ध में प्रवृत्त हों, तो क्या पाण्डव और क्या हम लोग तथा अन्य धनुर्धर वीर—कोई भी आपकी टक्कर का नहीं है। आपको दिव्यास्त्रों का जैसा ज्ञान है, उससे तो निश्चय ही आप देवताओं, असुरों और गन्धर्वों सहित समस्त लोकों को अपने दिव्य अस्त्रों द्वारा नष्ट कर सकते हैं। बल में अस्त्रकला में पाण्डव आपसे बहुत कम हैं। तो भी उनको अपना शिष्य समझ कर, तथा मेरे अभाग्य के कारण आप सदा पाण्डवों के विषय में क्षमा किया करते हैं।

सञ्जय ने कहा—हे राजन्! द्रोणाचार्य आपके पुत्र दुर्योधन की इस प्रकार की अनेक बातों को सुन, बड़े कुपित एवं उत्तेजित हो गये। उन्होंने फटकार बतलाते हुए, दुर्योधन से कहा—मैं बूढ़ा हूँ, तो भी अपनी शक्ति के

अनुसार करता हूँ। तिस पर भी तुझे मेरे ऊपर सन्देह है। मैं समस्त अस्त्रों का चलाना जानता हूँ, किन्तु यदि मैं उन अस्त्रों को चला, उन अस्त्रों का चलाना न जानने वाले योद्धाओं को उनसे मार डालूँ, तो मेरे लिये इससे बढ़ कर नीच काम और कोई न होगा। भला हो अथवा बुरा, जो कुछ काम तू कहेगा, उसे मैं करूँगा। मैं समस्त पाञ्चाल राजाओं को संग्राम में मार कर ही अपने शरीर से कवच उतारूँगा। अब मैं तेरे सामने सत्य प्रतिज्ञा कर शस्त्र उठाता हूँ। किन्तु हे दुर्योधन! तेरा यह भ्रम है कि, अर्जुन लड़ते लड़ते थक गया है। मैं तुझे उसका पराक्रम सत्य सत्य सुनाता हूँ। सुन, जब अर्जुन संग्रामभूमि में कुपित होता है, तब देवता, गन्धर्व, यक्ष और राक्षस भी उसको, नहीं जीत सकते। खाण्डववन में अर्जुन ने इन्द्र का सामना किया था। उसने सारे नागों के इन्द्र का जल बरसाना भुला दिया था। अर्जुन ने बल के अभिमान में चूर यक्षों, नागों तथा दैत्यों को भी नष्ट किया है, यह बात तो तू जानता ही है। क्योंकि जब चित्रसेन गन्धर्व तुझे पकड़ कर लिये जाते थे, तब अर्जुन ने ही तुझे उनसे छुड़ाया था। देवताओं के वैरी निवातकवच दैत्यों को, जिन्हें देवता भी नहीं मार सके थे, अर्जुन ने मारा था। हिरण्य-पुरवासी सहस्रों दानवों को अर्जुन ने परास्त किया था। फिर उसे मनुष्य तो जीत ही कैसे सकते हैं? हम सब लोगों के हज़ार उपाय करने पर भी तेरे सामने ही अर्जुन ने तेरे समस्त सैनिकों का नाश कर डाला।

सञ्जय ने कहा—हे राजन्! जब द्रोणाचार्य ने इस प्रकार अर्जुन की प्रशंसा की; तब आपका पुत्र दुर्योधन रोष में भर गया। उसने द्रोणाचार्य से कहा—दुःशासन, कर्ण और मामा शकुनि उधर हम भारती सेना को दो भागों में विभक्त करेंगे। एक भाग को अपने साथ ले, हम अर्जुन को मार डालेंगे।

दुर्योधन की इस बात को सुन कर, द्रोण ने मुसक्या कर कहा—बहुत अच्छी बात है। भगवान् तेरा कल्याण करें। गाण्डीव धनुषधारी एवं परम तेजस्वी क्षत्रियश्रेष्ठ अविनाशी अर्जुन को मार डालने वाला कोई क्षत्रिय मुझे

को देख नहीं पड़ता। कुबेर, इन्द्र, यम, वरुण तथा असुर, नाग और राक्षस भी आयुधधारी अर्जुन का पराजय नहीं कर सकते, अतः हे राजन् ! तू जिस प्रकार की बातें करता है, उस प्रकार की बातें मूर्ख को छोड़, कोई समझदार नहीं कह सकता। अर्जुन से लड़ने के लिये गया हुआ कौन पुरुष सकुशल लौट कर घर आया है ? तू तो पापी, नृशंस और सब पर सन्देह करने वाला है। जो तेरा कल्याण करना चाहते हैं, उनको तू अकारण उपालम्भ देता है। तू कुलीन हो कर भी युद्धाभिलाषी है; किन्तु तू इन निरपराधी समस्त क्षत्रियों का संहार क्यों करता है ? इस बखेड़े की जड़ तो तू ही है। अतः तू ही कुन्तीनन्दन अर्जुन से जा कर लड़ और अपने इस बुद्धिमान्, क्षात्र-धर्म का पालन करने वाले, कपट से जुआ जीतने वाले, महाशठ, मामा को रण का जुआ खेलने को अर्जुन के पास भेज। वह कपटी ज्वारी है और पाँसे फेंकने में बड़ा चतुर है। अतः यह रणद्यूत में भी पाण्डवों को हरा देगा। तूने कर्ण के साथ रह कर, मूर्खतावश, धृतराष्ट्र को सुनाते हुए, अत्यन्त हर्षित हो, बारंबार बुद्धिहीन की तरह बड़े आवेश में भर कर कहा था—हे तात ! मैं, कर्ण और मेरा भाई दुःशासन मिल कर समर में पाण्डवों को मार डालेंगे। भरी सभा में इस प्रकार तुझे बड़े बोल बोलते मैंने अपने कानों से सुना है। अतः तू अब उनको साथ ले अपनी उस प्रतिज्ञा को सत्य कर दिखला। देख यह तेरा वैरी पाण्डुनन्दन अर्जुन निर्भीक हो लड़ने के लिये तैयार खड़ा है। तू क्षात्रधर्म का विचार कर, लड़ने को तैयार हो जा। जीतने की अपेक्षा तो तेरा अर्जुन के हाथ से मारा जाना ही अच्छा है। तूने दान दिये हैं, राज-सुख भोगे हैं, वेदाध्ययन किया है और यथेष्ट ऐश्वर्य भी प्राप्त किया है। अतः तू इस प्रकार से सफलमनोरथ, सुखी और ऋणों से उऋण है। अतः अब तू निर्भीक हो अर्जुन के साथ लड़। यह कह और सेना को दो भागों में विभक्त कर, द्रोण उस ओर चल दिये, जिधर शत्रु खड़े थे। युद्ध पुनः आरम्भ हुआ।

एक सौ छियासी का अध्याय

प्रभातकाल और राजा विराट एवं द्रुपद का मारा जाना

सञ्जय ने कहा—हे धृतराष्ट्र ! जब तीन चौथाई रात्रि बीत गयी और एक चौथाई शेष रह गयी ; तब हर्षित कौरवों और पाण्डवों का युद्ध पुनः आरम्भ हुआ । कुछ ही देर में चन्द्रमा की प्रभा को हर कर, आकाश में लाली फैलाते हुए अरुण देव, सूर्य के आने से पहले ही आ पहुँचे । अरुण की लालिमा से लाल लाल सूर्यमण्डल सोने के पहिये की तरह पूर्व दिशा में देख पड़ने लगा । दिन का उजियाला चारों ओर फैल गया । कौरव और पाण्डव रथ, घोड़े तथा पालकियों को त्याग कर, प्रातः सन्ध्योपासन करने के लिये सूर्य के सामने हो उपस्थान और जप करने लगे । प्रातः कृत्य समाप्त हो चुकने पर, कौरवों की सेना दो भागों में विभक्त हो गयी । आचार्य द्रोण ने दुर्योधन को अगुआ बना, पांचाल, सोमक और पाण्डवों के योद्धाओं पर आक्रमण किया । उस समय श्रीकृष्ण ने कौरवों की सेना के दो भाग देख, अर्जुन से कहा—शत्रुओं को बाईं ओर रख, द्रोणाचार्य के रथ को दाहिनी ओर रखो । श्रीकृष्ण के इस वचन को सुन कर, अर्जुन ने श्रीकृष्ण से कहा—ठीक है ऐसा ही कीजिये । यह कह, द्रोण और कर्ण की बाईं ओर धनञ्जय घूमने लगा । उस समय परपुरञ्जय भीम ने, जो श्रीकृष्ण का अभिप्राय ताड़ गया था, अर्जुन से कहा—मैं जो कहता हूँ, उसे तुम ध्यान से सुनो । क्षत्रियाणी जिस समय के लिये पुत्र उत्पन्न करती है, उस काम को करने का समय अब उपस्थित हुआ है । सो यदि इस हाथ आये हुए अवसर पर भी तू हित का काम न करेगा तो तेरे स्वरूप का अपमान होगा और तेरा कर्म बड़ा क्रूर समझा जायगा । इस समय तो तू पराक्रम प्रदर्शित कर, सत्य, धर्म और यश प्राप्त कर और शत्रुसैन्य का संहार कर । तू कौरवों को अपने रथ की दहिनी ओर ले आ ।

सञ्जय ने कहा—हे धृतराष्ट्र ! जब श्रीकृष्ण और भीम ने इस प्रकार

अर्जुन से कहा—तब सव्यसाची अर्जुन कर्ण और द्रोण को चारों ओर से घेरने लगा। अर्जुन सब के आगे जा, बड़े बड़े क्षत्रिय योद्धाओं का संहार करने लगा। बड़े बड़े क्षत्रिय योद्धा यत्न कर के भी अर्जुन को वैसे ही न रोक सके, जैसे बढ़ता हुआ अग्नि किसी के रोके नहीं रुकता। तदनन्तर दुर्योधन, कर्ण और शकुनि ने अर्जुन पर बाणों की वर्षा करनी आरम्भ की। किन्तु अर्जुन ने उनके चलाये समस्त अस्त्रों को व्यर्थ कर डाला। फिर शत्रुपक्ष के प्रत्येक योद्धा के दस दस बाण मार उन सब को घायल किया। उस समय धूल और बाणों की वर्षा होने लगी। जिधर देखो उधर घोर अन्धकार छाया हुआ था और चारों ओर से महाभयानक शब्द सुनायी पड़ता था। उस समय न तो आकाश, न पृथिवी और न दिशाएँ ही देख पड़ती थीं। सैनिकों के पैरों से उड़ी हुई धूल के कारण समस्त सैनिक मूढ़ और अंधे से हो रहे थे। हे राजन्! उस समय हम और पाण्डव एक दूसरे को चीन्ह तक नहीं सकते थे। रथहीन राजा लोग अनुमान से तथा रथों पर सवार राजा लोग अपने नामों को बतला बतला कर, एक दूसरे के बालों, कवचों और भुजाओं को पकड़ पकड़ कर लड़ रहे थे। कितने ही रथी, जिनके रथों के घोड़े और सारथि मारे गये थे, जीवित रह कर भी मारे डर के युद्ध न कर दम साधे पड़े थे। कितने ही घोड़ों के साथ कितने ही पर्वताकार हाथियों से चिपटे पड़े मृत जैसे देख पड़ते थे। उस समय द्रोणाचार्य समरभूमि में उत्तर की ओर धूम रहित धधकती हुई आग की तरह जा खड़े हुए। अब पाण्डवों की सेना ने देखा कि, द्रोणाचार्य दूर चले गये हैं; तब वे काँपने लगे। उस समय शत्रुगण द्रोणाचार्य को दिव्य श्री से युक्त और भभकती हुई अग्नि की तरह तेजस्वी देख, भयभीत हो गये और उत्साह रहित हो युद्धभूमि से भाग खड़े हुए। जैसे दानवगण इन्द्र को पराजित करने में हतोत्साह हो गये थे, वैसे ही पाण्डव शत्रुसैन्य को आकुल करने वाले और मतवाले हाथी जैसे द्रोणाचार्य को पराजित करने की आशा से हीन हो गये। द्रोणाचार्य को देखने मात्र से कितने ही योद्धा

हतोत्साह हो गये और कितने ही साहसी योद्धा क्रुद्ध भी हुए थे। कितनों ही को आश्चर्य हुआ, कितने ही उनके सामने ठहर तक न सके, और कितने ही अपने हाथ मल रहे थे। कोई कोई कुपित हो दाँतों से ओठों को चबा रहे थे। कोई आयुधों को घुमा रहे थे, और कितने ही भुजदण्डों पर थपकी दे रहे थे। कितने ही महाबली योद्धा प्राणों को कुछ भी न समझ, द्रोणाचार्य की ओर लपके चले जाते थे। हे राजेन्द्र! यद्यपि द्रोणाचार्य के बाणप्रहार से पाञ्चाल लोग अत्यन्त पीड़ित हो रहे थे; तथापि वे इस भयङ्कर युद्ध में लड़ने को तैयार थे। राजा विराट् तथा राजा द्रुपद ने युद्ध में दुर्जय द्रोण पर आक्रमण किये। द्रुपद के तीन पौत्र और महाधनुर्धर चेदिराज भी द्रोण से लड़ने को चले। इस युद्ध में द्रोण ने तीन बड़े कठोर बाण मार कर, द्रुपद के तीनों पौत्रों को मार डाला। वे मर कर भूमि पर गिर पड़े। तदनन्तर द्रोण ने चेदि, केकय और सृञ्जयों को युद्ध में पराजित किया। तब तो क्रुद्ध हो राजा द्रुपद और राजा विराट, द्रोणाचार्य के ऊपर बाणवृष्टि करने लगे। किन्तु क्षत्रियों का संहार करने वाले द्रोणाचार्य ने उनकी की हुई बाणवृष्टि को तितर बितर कर डाला और दोनों राजाओं को बाणों से ढक दिया। इस पर राजा विराट् और राजा द्रुपद बहुत क्रुद्ध हुए और द्रोण पर बाणों से प्रहार करने लगे। इस पर क्रोध में भर द्रोण ने दो भल्ल बाण मार उन दोनों के धनुष काट डाले। तब राजा विराट ने क्रोध में भर, दस तोमर और दस बाण द्रोण का वध करने की इच्छा से मारे। द्रुपद ने भी क्रोध में भर भुजगेन्द्र जैसी लोहे की शक्ति, जो सुवर्ण से भूषित थी, द्रोण के रथ पर मारी। किन्तु द्रोण ने भल्ल बाणों से उन दोनों राजाओं के फैंके तोमरों, बाणों और शक्ति को काट कर बेकाम कर दिया। तदनन्तर पानीदार दो भल्ल बाण मार कर द्रोण ने राजा द्रुपद और राजा विराट् को मार डाला। द्रोण ने इस प्रकार राजा विराट्, द्रुपद, केकय, चेदिराज, मत्स्यराज एवं द्रुपद के तीन शूर पौत्रों को मार डाला। द्रोण के इस घोर पराक्रम को देख, बड़े मनस्वी धृष्टद्युम्न को बड़ा क्रोध चढ़ा और

साथ ही वह दुःखी भी हुआ। अतः उसने रथियों के सामने शपथ खा प्रतिज्ञा की कि--"आज द्रोण यदि मेरे हाथ से बच गया, अथवा यदि उसने आज मेरा अपमान किया, तो मेरे किये हुए यज्ञ का फल, वापी 'कूप' तड़ाग खुदवाने का फल, क्षात्रधर्म के पालन करने का पुण्य और अग्निरूप ब्राह्मणों के उद्योग से उत्पन्न होने के कारण, मेरा जो ब्रह्मतेज है—वह सब नष्ट हो जाय। इस प्रकार समस्त योद्धाओं के सामने प्रतिज्ञा कर, धृष्टद्युम्न अपनी सेना को साथ ले द्रोणाचार्य पर लपका। एक ओर पाञ्चाल राजे पाण्डवों के साथ रह कर, द्रोणाचार्य के बाण मारने लगे। उधर से दुर्योधन, कर्ण, शकुनि तथा अन्य प्रधान प्रधान कौरव द्रोणाचार्य की रक्षा कर रहे थे। पाञ्चालों ने इन सब को भगा देने के लिये बड़े बड़े प्रयत्न किये; किन्तु वे अपने उद्योग में कृतकार्य न हो पाये। हे राजन्! इस पर भीमसेन को धृष्टद्युम्न पर क्रोध आ गया और तीव्र शब्दों में उपालम्भ देते हुए भीम ने उससे कहा।

भीमसेन ने कहा—तेरा जन्म द्रुपद के कुल में हुआ है और सब प्रकार के अस्त्रों शस्त्रों के चलाने में तू प्रवीण है। तिस पर भी तुझको छोड़ और कौन क्षत्रिय सामने स्थित उस शत्रु को जिसने पिता और पुत्र का वध कर डाला हो जीता छोड़ देगा। फिर जिसने राजसभा के बीच प्रतिज्ञा की हो वह पुरुष तो शत्रु को कभी जाने ही न देगा। द्रोण बढ़ते हुए अग्नि की तरह बड़ा तेजस्वी देख पड़ता है। वह बाण तथा धनुषरूपी ईंधन से परिपूर्ण है। द्रोण अपने तेज से आज क्षत्रियों को भस्म किये डाल रहे हैं। देखो, वे पाण्डवों की सेना का नाश कर रहे हैं। अतः तुम खड़े हो कर मेरा पराक्रम देखो। मैं द्रोण के सामने जाता हूँ। यह कह कुपित भीम बाणप्रहार से आपकी सेना को भगाता हुआ द्रोणाचार्य की सेना में जा पहुँचा। धृष्टद्युम्न भी कौरवों की विशाल वाहिनी में होता हुआ द्रोणाचार्य के सामने जा पहुँचा। सूर्योदय के समय ऐसा घोर युद्ध हुआ कि, वैसा घोर युद्ध पहले न तो कभी किसी ने देखा था और न सुना था। हे राजन्! सेना सङ्कट में पड़

गयों और रथियों के दल के दल आपस में भिड़ गये। मृत योद्धा समरभूमि में ऐसे ढेरे से पड़े थे कि, रास्ते में से चलने वालों के पैरों से ठुकराये जाते थे। उस समय कितने ही तो रणक्षेत्र को पीठ दिखा भागे। उन पर पीछे से मार पड़ रही थी। उस समय समरभूमि में बड़ी गड़बड़ी मची हुई थी और बड़ा दारुण युद्ध हो रहा था। इतने ही में उस भाग में सूर्योदय पूर्ववीति से हो गया।

पन्द्रहवाँ दिवस

एक सौ सत्तासी का अध्याय

नकुल की वीरता

सञ्जय ने कहा—हे राजन्! सूर्योदय होने पर कवचधारी कौरव और पाण्डव पक्षीय योद्धागण सूर्योपासना करने लगे। कुछ ही देर बाद तप्त सुवर्ण जैसी कान्ति वाले सूर्य पूर्णरूप से उदय हुए। हे भारत! फिर घोर संग्राम होने लगा। सूर्योदय के पूर्व जो जिससे लड़ रहा था, वह फिर उसीसे लड़ने लगा। अश्वारोही रथियों के साथ, गजारोही अश्वारोहियों के साथ और पैदल पैदलों के साथ कभी एकत्र हो और कभी अलग अलग भयङ्कर युद्ध करने लगे। इन योद्धाओं में से जिन्होंने रात में अपनी शक्त्यानुसार युद्ध किया था, वे अब धूप में घबड़ा गये। वे भूख तथा प्यास से खिन्न और अचेत से हो रहे थे। तब उधर शङ्खों का, भेरियों का, मृदङ्गों का, हाथियों के चिंघारने का, धनुष की टंकार का, दौड़ते हुए पैदलों के चिल्लाने का, शस्त्रप्रहार [illegible] घोड़ों की हिनहिनाहट का, रथों के चलने की घरघराहट का, [illegible] शब्द हुआ कि, आकाश और दिशाएँ उससे प्रतिध्वनित हो उठीं और वह कानों में गूँजने लगा। हे राजन्! अनेक प्रकार के शस्त्रों से कटे हुए अङ्ग प्रत्यंगों वाले पैदल रथी, अश्वारोही और गजारोही, इधर उधर

भागते हुए चीखें मार रहे थे। उनका आर्त्तस्वर रणभूमि में सुन पड़ रहा था। उनकी दशा देख देखने वाले को बड़ा दुःख होता था। समस्त सेनाएँ आपस में ऐसी हिलमिल गयी थीं कि, कौरव सैनिक अपने पक्ष ही के सैनिकों को मारने लगे। वीर पुरुषों की घूमती हुई तलवार शत्रुओं पर और उनके हाथियों पर पड़ रही थी। शत्रु पर तलवार का प्रहार ऐसा जान पड़ता था मानों कपड़े धोने के पाटों पर, वस्त्र पटक पटक कर धोये जाते हों। उन तलवारों के प्रहार का शब्द भी वैसा ही होता था, जैसा शब्द वस्त्रों को धोते समय हुआ करता है। जब योद्धागण अति निकट आ जाते, तब एकधारी तलवारों, तोमरों और फरसों से महाघोर संग्राम होता था। वीरों ने रणभूमि में हाथी और घोड़ों के शरीरों से रक्त की नदी प्रवाहित की। उस नदी में सैनिकों के शव उतराने लगे। वह नदी शस्त्र रूपी मछलियों से परिपूर्ण थी और उसमें माँस और रुधिर का कीचड़ हो रहा था। घबड़ाये हुए वीरों के चीत्कार से वह नदी प्रतिध्वनित हो रही थी। उस नदी की एक सीमा यमलोक था। रात की लड़ाई में हाथी घोड़े आदि वाहन बाणों और बरछियों की मार से व्याकुल हो गये थे और अपने अपने अंगों को सकोड़े खड़े हुए थे। मृत वीरों के कटे हुए हाथ, विविध प्रकार के कवच, कटे हुए सिर, कुण्डल और युद्धोपयोगी सामग्री समरभूमि में जहाँ तहाँ पड़ी हुई थीं। अतः समरभूमि में माँसाहारी पशुपक्षियों एवं मृत तथा अधमरे सैनिकों से वहाँ की भूमि परिपूर्ण थी। यहाँ तक कि, रथों के चलने का रास्ता भी नहीं रह गया था। रथों के पहिये रक्त की नदी में डूब रहे थे और उनमें जुते घोड़े बाणों के प्रहारों से पीड़ित हो काँप रहे थे। तिस पर भी वे हाथियों जैसे डीलडौल के एवं उत्तम जाति के परिश्रान्त बलवान एवं उत्साही घोड़े अपने शरीरों का पूर्ण बल लगा, ज्यों त्यों कर रथों को खींच रहे थे। उस समय आचार्य द्रोण और अर्जुन को छोड़ बाकी सब सेना क्षुब्ध, भयग्रस्त, ऊबी हुई और आतुर हो रही थी। द्रोण और अर्जुन अपने अपने पक्षों के घबड़ाये हुए पुरुषों के आधार स्वरूप थे और शत्रुपक्ष का नाश

करने वाले थे। दोनों पक्षों के योद्धा आपस में युद्ध कर के यमलोक को जा रहे थे। इस लड़ाई में कौरवों की सेना बहुत भयत्रस्त थी और पाण्डवों की ओर पाञ्चालदेशीय सेना का हाल बेहाल था। कालक्रीड़ा की तरह यह हो रहा था। लड़ते समय कुछ भी नहीं देख पड़ता था। इस युद्ध में बड़ा भारी संहार राजकुलों का हो रहा था। उस समय मेघघटा की तरह धूल आकाश में छा गयी। तब द्रोण, कर्ण, अर्जुन, युधिष्ठिर, भीमसेन, नकुल, सहदेव, पाञ्चालकुमार धृष्टद्युम्न, सात्यकि, दुःशासन, अश्वत्थामा, दुर्योधन, शकुनि, कृपाचार्य, शल्य, कृतवर्मा अपने आपको भी साफ़ साफ़ नहीं देख पाते थे। योद्धाओं को न तो पृथिवी, न दिशाएँ, न उपदिशाएँ और न कोई अन्य वस्तु ही देख पड़ती थी। यहाँ तक कि, वे अपने आपको भी नहीं देख पाते थे। उस समय ऐसा जान पड़ता था कि, मानों पुनः रात हो गयी। कौरव, पांचाल और पाण्डव कोई भी तो, धूल के कारण छाये हुए अन्धकार में नहीं देख पड़ते थे। किन्तु विजयाभिलाषी योद्धा युद्ध में अपने व पराये जिस किसी का बदन छू जाता उसीको मार डालते थे। यह दशा कुछ देर तक रही। पीछे ज़ोर से हवा चली और धूल उड़ने लगी। उधर रक्त का छिड़काव होने से भूमि पर उड़ती हुई धूल दब गयी। हाथी, घोड़े, योद्धा, रथी और पैदल सिपाही जो रक्तरञ्जित हो रहे थे, वे पारिजात के वन की तरह सुशोभित जान पड़े। कौरवों के चार महारथी अर्थात् दुर्योधन, कर्ण, द्रोण तथा दुःशासन—पाण्डवों के चार महारथियों के साथ भिड़ गये। दुःशासन सहित दुर्योधन, नकुल और सहदेव से, कर्ण भीमसेन से और द्रोण अर्जुन के साथ लड़ने लगे। उनके घोर और विस्मयोत्पादक युद्ध को दर्शक चारों ओर खड़े खड़े देख रहे थे। उग्रस्वभाव के वे महारथी रथों की विचित्र गतियों से अलौकिक युद्ध कर रहे थे। इस युद्ध में अनेक प्रकार के रथियों ने भाग लिया था। अन्य रथी इन विचित्र ढंग से लड़ने वालों के विचित्र युद्ध को देख रहे थे। वे भी एक दूसरे का पराजय करना चाहते थे। वे बड़े पराक्रमी थे और विजय के लिये प्रयत्नवान थे। वे बाणों की वृष्टि वैसे

ही कर रहे थे, जैसे वर्षाकालीन मेघ जलवृष्टि किया करते हैं। सूर्य जैसे चम-चमाते रथों पर सवार होने के कारण वे चंचला चपला से युक्त शरद्कालीन मेघों की तरह शोभायमान जान पड़ते थे। वे असहिष्णु, स्पर्धावान् एवं महाधनुर्धर योद्धा मदमत्त बड़े बड़े हाथियों की तरह आपस में युद्ध कर रहे थे।

हे राजन्! जब तक समय नहीं आता, तब तक कभी कोई नहीं मरता। यही कारण था कि, सब महारथी एक साथ लड़ते हुए भी एक साथ नहीं मारे जाते थे। रणभूमि में कटी हुई भुजाएं, पैर, कुण्डलों से भूषित मस्तक, धनुष, बाण, प्रास, छोड़े बाण, पैनी पैनी शक्तियाँ, तोमर तथा अन्य बहु-मूल्य आयुध, कवच, तरह तरह के टूटे हुए रथ, मृत हाथी, घोड़े, तथा घोड़ों से रहित भग्न ध्वजा वाले सूने रथ, सवारों से रहित उत्तम जाति के सजे हुए और इधर उधर भागते हुए घोड़े, चँवर, कवच, ध्वजा, छत्र, आभूषण, खुशबूदार फूल, हार, मुकुट, पगड़ियाँ, घुंघरू, मणियाँ समरभूमि में पड़ी ऐसी जान पड़ती थीं मानों आकाश में तारागण सुशोभित हों।

तदनन्तर क्रोधी एवं असहिष्णु दुर्योधन क्रोधी एवं असहनशील नकुल के साथ लड़ने लगा। माद्रीनन्दन नकुल आपके पुत्र की अपनी बाँईं ओर ले गया और उसके ऊपर अगणित बाण वर्षा, गर्जने लगा। इसे न सह दुर्योधन ने नकुल को अपने बाईं ओर ला डालना चाहा और इसके लिये बड़े बड़े यत्न किये; किन्तु नकुल ने उसकी एक भी न चलने दी। प्रत्युत बाण-प्रहार से पीड़ित कर, उसको रण से विमुख कर दिया। यह देख कर, समस्त सैनिक नकुल की वीरता की प्रशंसा करने लगे। दुर्योधन को रण से बेमुख देख, नकुल ने अपने ऊपर पड़े हुए समस्त दुःखों को स्मरण कर, उसे ललकारा और कहा—दुर्योधन! खड़ा रह, खड़ा रह। अब कहाँ को भागा जाता है। अपने कपट का प्रतिफल तो लेता जा।

एक सौ अठासी का अध्याय

दुःशासन और सहदेव

सञ्जय ने कहा—हे राजन्! तदनन्तर दुःशासन क्रोध में भर गया और रथ के भीषण वेग से भूमि को कपाँता हुआ, सहदेव के ऊपर झपटा। पराक्रमी दुःशासन को झपट कर अपनी ओर आते देख, माद्रीनन्दन नकुल ने बड़ी फुर्ती से एक भल्ल बाण छोड़ा, जिसके प्रहार से दुःशासन के सारथि का सिर पगड़ी सहित कट कर नीचे गिर पड़ा। किन्तु यह बात दुःशासन अथवा उसके अन्य सैनिकों में से किसी को भी विदित न हुई। जब सारथि-रहित घोड़े इधर उधर दौड़ने लगे तब दुःशासन को जान पड़ा कि उसका सारथि मारा गया। उस समय अश्वविद्या में निपुण दुःशासन स्वयं घोड़ों को हाँकता हुआ नकुल से लड़ने लगा। यह देख, आपकी ओर की सेना के योद्धाओं ने उसके इस काम की प्रशंसा की। तब सहदेव ने बड़ी फुर्ती के साथ पैने बाणों से उसके रथ के घोड़ों के शरीर विद्ध किये। तब पीड़ित हो उसके रथ के घोड़े रणक्षेत्र में चारो ओर दौड़ने लगे। उस समय दुःशासन को घोड़ों को सम्हालने के लिये धनुष हाथ से रख देना पड़ा और जब वह धनुष लेता तब घोड़ों की रास छोड़ देता था। इसी बीच में माद्रीनन्दन सहदेव ने दुःशासन के ऊपर अनेक बाण बरसाये। तब कर्ण दुःशासन की रक्षा करने के लिये सहदेव के निकट गया। कर्ण को सहदेव की ओर आते देख भीमसेन ने तीन भल्ल बाणों से कर्ण के वक्षःस्थल में प्रहार किया और सिंहनाद किया। इस पर कर्ण ने क्रुद्ध हो सहदेव की ओर से लौट कर भीमसेन पर सैकड़ों बाण छोड़े और उसे घायल किया। उस समय उन दोनों वीरों का बड़ा घोर युद्ध हुआ। मारे क्रोध के लाल लाल नेत्र कर वे दोनों सिंहनाद करते हुए एक दूसरे की ओर दौड़े। उस समय उन दोनों वीरों के रथ एक स्थान पर ऐसे सट गये कि वे दोनों धनुषों से काम न ले सके।

अतः वे दोनों गदायुद्ध करने लगे। अतः भीमसेन ने अपनी गदा के प्रहार से कर्ण के रथ के टुकड़े टुकड़े कर डाले। भीम के इस भयङ्कर पराक्रम को देख, कर्ण ने एक भयानक गदा घुमा कर भीमसेन के ऊपर फेंकी। भीमसेन ने कर्ण की फेंकी गदा को अपनी गदा पर रोप लिया। फिर एक दूसरी भारी गदा उठा कर भीम ने कर्ण की ओर फेंकी। उसे देख कर कर्ण ने पुंखयुक्त वेगवान दस बाणों से तथा मंत्र से अभिमंत्रित बाणों के प्रहार से भीम की गदा लौट कर भीम ही की ओर चली और जा कर भीम के रथ पर गिरी। तब उसके प्रहार से भीम का सारथि मूर्छित हो गया और उसकी ध्वजा भी टूट कर पृथिवी पर गिर पड़ी। तब भीम ने क्रोध में भर आठ बाण कर्ण के धनुष, बाण और ध्वजा को लक्ष्य कर छोड़े। उनके प्रहार से कर्ण का बाण सहित धनुष और रथ की ध्वजा कट गयी। तब पराक्रमी कर्ण ने दूसरा धनुष उठा लिया और रथशक्ति चला, भीम के रथ के रीछों के रंग जैसे चारों काले घोड़ों को और उसके पृष्ठरक्षक योद्धाओं को मार डाला। घोड़ों के मरने और पृष्ठरक्षकों के मारे जाने पर भीम कूद कर नकुल के रथ पर वैसे ही चढ़ गये जैसे सिंह कूद कर एक जगह से दूसरी जगह चला जाता है।

उधर गुरु द्रोण और उनके शिष्य अर्जुन में युद्ध हो रहा था। वे दोनों एक दूसरे पर बड़ी फुर्ती से बाण छोड़ रहे थे और अपने रथों को विचित्र गति से घुमा रहे थे। वे दोनों इन्द्रजाल की तरह अपने युद्धकौशल से सब के चित्तों को मोहित करते हुए विचित्र ढंग से युद्ध कर रहे थे। उस समय अन्य समस्त योद्धा द्रोणाचार्य के अद्भुत युद्ध को देखने लगे। किन्तु महाबलवान् द्रोणाचार्य और अर्जुन अपने अपने रथों को विचित्र ढंग से चक्कर लगवा, एक दूसरे को बाईं ओर करने की चेष्टा करने लगे। उस समय उभय सेनाओं के वीर आश्चर्यचकित हो, उन दोनों वीरों की वीरता देखने लगे। आकाशस्थित माँस को पाने की इच्छा रखने वाले दो श्येन पक्षियों की तरह द्रोण तथा अर्जुन का, घोर युद्ध होने लगा। उस समय द्रोणाचार्य ने अर्जुन को परास्त करने के लिये जो जो अस्त्र छोड़े, अर्जुन ने

उन सब को व्यर्थ कर डाला। जब द्रोणाचार्य किसी तरह भी अर्जुन से बाज़ी न मार सके; तब उन्होंने दिव्यास्त्रों का प्रयोग करना आरम्भ किया। ऐन्द्र, वायव्य, पाशुपत, त्वाष्ट्र, और वारुणास्त्र आदि जितने दिव्यास्त्र द्रोणाचार्य ने चलाये, पराक्रमी अर्जुन ने उन सब को अपने दिव्यास्त्रों से रोक दिया। इस पर द्रोणाचार्य ने बड़े बड़े दिव्यास्त्रों को छोड़ अर्जुन को छिपा दिया। किन्तु अर्जुन के सामने द्रोण के किसी भी दिव्यास्त्र की एक न चली। उसने अपने दिव्यास्त्रों से आचार्य द्रोण के समस्त दिव्यास्त्रों को बेकाम कर डाला। यह देख द्रोण ने मन ही मन अपने शिष्य अर्जुन की प्रशंसा की। अपने शिष्य अर्जुन को भूमण्डल के समस्त अस्त्रवेत्ताओं में सब से बढ़ बढ़ कर निपुण देख, द्रोणाचार्य ने अपने को सर्वोत्कृष्ट समझा। फिर अर्जुन महा-बलवानों के बीच द्रोणाचार्य को पीछे हटाने का उद्योग करने लगा। प्रेम से मुसक्याते हुए द्रोणाचार्य भी अर्जुन को पीछे हटाने का उद्योग करने लगे। उस समय द्रोण और अर्जुन का युद्ध देखने के लिये आकाश में सहस्रों देवता, गन्धर्व, ऋषि और सिद्ध खड़े हुए थे। अप्सराओं, यक्षों और गन्धर्वों से तथा इन लोगों से आकाश ढक गया था। इन लोगों से आकाश की उस समय वैसी ही शोभा हो रही थी, जैसी शोभा वनघटाओं से हुआ करती है। हे राजन्! उस समय द्रोण तथा अर्जुन की प्रशंसा युक्त वाणियाँ भी आकाश में सुन पड़ीं। इन दोनों वीरों के चलाये हुए दिव्यास्त्रों से दसों दिशाएँ प्रज्वलित हो रही थीं। दर्शक ऋषिगण कह रहे थे कि, यह युद्ध मानुषी, आसुरी, राक्षसी, दैवी या गान्धर्वी ढंग का नहीं है, किन्तु सचमुच यह ब्रह्मयुद्ध है। यह युद्ध सचमुच बड़ा आश्चर्यप्रद है। हमने तो आज से पहले कभी ऐसा युद्ध नहीं देखा और न सुना। यद्यपि द्रोणाचार्य अर्जुन से कहीं अधिक बलवान हैं, तथापि अर्जुन उनसे बढ़ता जाता है। इन दोनों के इस भेद को कोई मनुष्य नहीं जान सकता। यदि शिव जी अपने शरीर को दो भागों में विभक्त कर, उन दोनों भागों से परस्पर लड़ें, तो वे इस युद्ध की उपमा हो सकते हैं। अन्यत्र इसकी उपमा नहीं मिल

सकती। यदि द्रोणाचार्य में शूरता की सीमा है, तो अर्जुन में बल और वीरत्व दोनों ही हैं। अतः शत्रु इन दोनों महाधनुर्धारियों को युद्ध में नहीं मार सकता। किन्तु यदि ये दोनों चाहें तो देवताओं सहित यह सारा जगत नष्ट कर सकते हैं। इन दोनों पुरुषश्रेष्ठ महाधनुर्धर पराक्रमी वीरों के अलौकिक युद्ध को देख, आकाशवासी देवता, गन्धर्व, यक्ष, राक्षस, सिद्ध तथा पृथिवी पर स्थित समस्त प्राणी द्रोणाचार्य और अर्जुन के विषय में इसी भाँति के वचन आपस में कहते हुए उन दोनों महाबलियों की प्रशंसा करते हैं। तदनन्तर महाबुद्धिमान द्रोणाचार्य ने अर्जुन तथा आकाशस्थित समस्त प्राणियों को विस्मित कर, ब्राह्म अस्त्र चलाया। उसके चलाते ही पर्वतों, वनों और समुद्रों सहित अखिल भूमण्डल काँपने लगा। वायु प्रबल वेग से चलने लगा। समुद्र का जल उमड़ने लगा। जब द्रोणाचार्य ने ब्रह्मास्त्र छोड़ा, तब कौरवों और पाण्डवों की सेनाओं के वीर योद्धा तथा सम्पूर्ण प्राणी भयभीत हो गये; किन्तु अर्जुन समरभूमि से तिल भर भी विचलित न हुआ। उसने द्रोण के ब्रह्मास्त्र को ब्रह्मास्त्र चला कर निवारण किया। उसके निवारण होने पर समस्त दिशाएँ पूर्ववत् प्रकाशित हुईं। इसी प्रकार वे दोनों पराक्रमी वीर जब दिव्य अस्त्रों को चला कर भी एक दूसरे को नीचा न दिखला सके; तब वे सामान्य बाणों से काम लेने लगे। महाराज! उस समय जब अस्त्रशस्त्रों से द्रोणाचार्य और अर्जुन का संग्राम होने लगा; तब मेघमण्डल की तरह आकाश छा गया। अतः वहाँ कुछ भी नहीं देख पड़ता था और उस समय आकाश में एक भी पक्षी नहीं रह गया था।

एक सौ नवासी का अध्याय

दुर्योधन और सात्यकि की बातचीत

सञ्जय ने कहा—हे धृतराष्ट्र! जब हाथी, घोड़े तथा मनुष्यों का संहार करने वाला युद्ध हो रहा था; तब इस युद्ध में दुःशासन धृष्टद्युम्न के

साथ लड़ने लगा। उसने सोने के रथ पर धृष्टद्युम्न के बहुत से बाण मारे। इससे धृष्टद्युम्न के बड़ी पीड़ा हुई। तब धृष्टद्युम्न ने क्रोध में भर आपके पुत्र के घोड़ों के ऊपर बाणवृष्टि करनी आरम्भ की। क्षण भर ही में धृष्टद्युम्न के बाणों के नीचे सारथि, ध्वजा और रथ सहित दुःशासन ढक गया। हे राजेन्द्र! महाबली धृष्टद्युम्न के बाणों के प्रहारों से विकल हो, दुःशासन उसके सामने न टिक सका। वह रणभूमि से भाग गया। धृष्टद्युम्न ने बाण मार मार कर, दुःशासन को रणभूमि से भगा दिया। फिर रण में हज़ारों बाण बरसाता हुआ धृष्टद्युम्न द्रोणाचार्य के ऊपर लपका। बीच में उससे कृतवर्मा से मुठभेड़ हो गयी। धृष्टद्युम्न तथा उसके दो सहोदर भाइयों ने कृतवर्मा को घेरा। जब द्रोणाचार्य के ऊपर आक्रमण करने को धृष्टद्युम्न चला था; तब उसकी रक्षा के लिये उसके पीछे पीछे नकुल और सहदेव भी हो लिये थे। अतः नकुल और सहदेव ने भी कृतवर्मा को घेरा। इस भाँति दोनों सेनाओं के साथ महारथी योद्धा लोग क्रोध में भर और प्राणों को हथेली पर रख, घोर संग्राम करने लगे। वे महाबली एक दूसरे को जीतने की इच्छा तथा स्वर्गप्राप्ति की कामना से आपस में धर्मयुद्ध कर रहे थे। क्योंकि सब योद्धा कुलीन थे, धर्मबुद्धि वाले थे और नरेन्द्र थे। अतः उत्तम गति पाने की अभिलाषा से वे सब आपस में युद्ध करते थे। उस स्थल में शठता पूर्ण और शास्त्र रहित युद्ध नहीं हुआ। अधिक क्या कहा जाय, उस समय वहाँ पर कर्णी, विष में बुझे नालीकास्त्र, अनेक कपटकाकीयाँ सूचीअस्त्र, प्रज्वलित काँटों वाले कपीशास्त्र, गोश्रृङ्ग तथा हाथी की हड्डी के बने हुए और किसी प्रकार की त्रुटि से युक्त कोई अस्त्र काम में नहीं लाया गया था। उन समस्त वीरों ने उस धर्मयुद्ध में कीर्ति और परलोक प्राप्त करने की कामना से, सीधे जाने वाले, शुद्ध शरों से काम लिया था। उस समय, आपके चार योद्धाओं का पाण्डवों के तीन योद्धाओं के साथ समस्त दोषों से रहित घोर युद्ध हुआ। हे राजन्! नकुल और सहदेव ने आपके महारथी वीरों को आगे बढ़ने से रोक दिया। यह

देख, शस्त्र चलाने में बड़ा फुर्तीला धृष्टद्युम्न तुरन्त ही द्रोण से लड़ने को आगे बढ़ा। उधर आपके पक्ष के वीर पुरुषसिंह नकुल और सहदेव के साथ वैसे ही जुट गये जैसे पवन पहाड़ों से टकराता है। महारथी नकुल और सहदेव आपके दो दो योद्धाओं से लड़ने लगे। उस समय धृष्टद्युम्न निकल कर, द्रोणाचार्य की ओर बढ़ा। दुर्योधन रुधिर पीने वाले बाणों को छोड़ता हुआ, नकुल और सहदेव की ओर गया, किन्तु जब धृष्टद्युम्न को द्रोण की ओर बढ़ते देखा, तब वह वहाँ से लौट आया और उसने धृष्टद्युम्न को रोकना चाहा। इतने में सात्यकि और दुर्योधन की मुठभेड़ हो गयी। वे दोनों लड़कपन के चरित्र को स्मरण कर, प्रसन्न होते हुए हँस हँस कर युद्ध करने लगे। दुर्योधन ने बार बार अपने आचरण की निन्दा की और सात्यकि से कहा—मित्र! मेरे कोप, मेरे लोभ, मेरे मोह, मेरी असहिष्णुता, मेरे क्षात्र-धर्माचरण तथा मानसिक निर्बलता को अनेक बार धिक्कार है। यद्यपि तू मेरे ऊपर और मैं तेरे ऊपर प्रहार कर रहा हूँ; तथापि तू मुझे प्राणों से भी अधिक प्यारा है? मैं तो सदा से तुझे अपने प्राणों से भी अधिक प्रिय समझता रहा हूँ। इस रणभूमि में जब मैं अपने दोनों के बालचरित्रों को स्मरण करता हूँ, तब मुझे ऐसा जान पड़ता है मानों वे सब बातें आज पुरानी पड़ गयीं। आज जो युद्ध हो रहा है, उसमें क्रोध और लोभ को छोड़ और दूसरा कारण हो ही क्या सकता है?

दुर्योधन की इन बातों को सुन सात्यकि ने पैने बाण उठा और मुसक्या कर दुर्योधन से कहा—हे राजपुत्र! यह सभास्थल नहीं है और न यह किसी आचार्य का घर ही है जहाँ हम दोनों एकत्र हो खेला करते थे। दुर्योधन ने कहा—हे सात्यकि! बालकपन में तो हम दोनों खेले थे, किन्तु वह खेल कूद कहाँ चले गये? हमारे लिये यह युद्ध कहाँ से आ कर उपस्थित हो गया! सचमुच काल की गति अनिवार्य है। अरे हमें उस धन और धन के उस लालच से प्रयोजन ही क्या है जिसके पीछे हम सब एकत्र हो युद्ध कर रहे हैं।

सञ्जय ने कहा—हे राजन् ! जब दुर्योधन ने ये वचन कहे, तब सात्यकि ने दुर्योधन से कहा—क्षात्रधर्म तो क्षत्रियों को गुरुजनों से भी युद्ध करने को बाध्य करता है। अतः यदि तू मुझे प्यार करता है, तो तू पहले मेरे ऊपर प्रहार कर। अब देर मत कर। हे भारतसत्तम ! मैं तेरे पीछे पुण्यवानों को प्राप्त होने वाले स्वर्गादि लोकों में पहुँचूँगा। तेरे शरीर में जितनी शक्ति और बल हो, उस सब को तू अविलंब मेरे ऊपर दिखला. क्योंकि मुझे अपने मित्रों के ऊपर पड़ने वाले दुःख देखना अच्छा नहीं लगता। यह स्पष्ट उत्तर दे, निर्भीक सात्यकि अपने प्राणों को हथेली पर रख, तुरन्त ही दुर्योधन के सामने लड़ने के लिये जा खड़ा हुआ। तब आपके पुत्र दुर्योधन ने सात्यकि के ऊपर बाणवृष्टि करनी आरम्भ की। उस समय वे दोनों वीर क्रोध में भर, कोप में भरे हुए हाथी और सिंह की तरह आपस में लड़ने लगे। क्रोध में भर दुर्योधन ने युद्धदुर्मद सात्यकि के दस बाण मारे। तब सात्यकि ने दुर्योधन के प्रथम पचास फिर चालीस बाण मारे। हे राजन् ! आपके पुत्र ने मुसक्या कर और रोदे को कान तक खींच, सात्यकि के तीस बाण मारे। फिर क्षुरप्र बाण से उसने सात्यकि के धनुष को काट डाला। तब चटपट सात्यकि ने एक दूसरा दृढ़ धनुष ले, आपके पुत्र के ऊपर बाणवृष्टि की। तब दुर्योधन ने बाण चला कर सात्यकि के बाणों के टुकड़े टुकड़े कर के फेंक दिये। उस समय सिपाहियों ने बड़ा कोलाहल किया। दुर्योधन ने सुवर्णपुंख बड़े पैने तिहत्तर बाण सात्यकि के मार, उसे विकल कर डाला। जब दुर्योधन ने पुनः धनुष पर बाण रखा, तब सात्यकि ने उस बाण सहित दुर्योधन के धनुष को काट डाला। फिर बाण मार कर दुर्योधन को घायल कर डाला। सात्यकि के प्रचण्ड प्रहार से आपका पुत्र बड़ा पीड़ित हुआ। यहाँ तक कि, वह खिन्न हो दूसरे रथ में जा बैठा और सम्हल कर पुनः सात्यकि से लड़ने आया और सात्यकि के रथ पर बाण छोड़ने लगा। तब सात्यकि ने भी दुर्योधन के रथ पर बाणवृष्टि की। दोनों ओर से घोर युद्ध होने लगा। इस युद्ध में जो बाण छोड़े जाते थे और जब वे अन्य योद्धाओं

के ऊपर पड़ते थे, तब वैसा ही शब्द होता था, जैसा कि किसी बड़े वन के जलने पर हुआ करता है। उन दोनों योद्धाओं के सहस्रों बाणों से पृथिवी ढक गयी और आकाश छा गया। अतः आकाश का दिखलायी पड़ना ही बंद हो गया। सात्यकि को तेज़ पड़ते देख, कर्ण झट आपके पुत्र की रक्षा करने को आ पहुँचा। यह बात भीमसेन को अच्छी न लगी। भीम ने कर्ण पर आक्रमण कर, उसके बहुत से बाण मारे। कर्ण ने हँसते हँसते उसके तेज़ किये बाणों को और उसके धनुष को काट उसके रथ के सारथि को भी मार डाला। इस पर भीमसेन बड़ा कुपित हुआ। उसने हाथ में गदा ले कर्ण के रथ की ध्वजा, उसके हाथ का धनुष तोड़ डाला और सारथि को मार डाला। तदनन्तर महाबली भीम ने कर्ण के रथ का एक पहिया तोड़ डाला। पहिये के टूटते ही रथ बेकाम हो गया; किन्तु तब भी कर्ण हिमालय की तरह अटल अचल बना रहा। जैसे एक पहिये वाले सूर्य के रथ को सात घोड़े खींचते हैं, वैसे ही कर्ण के घोड़ों ने भी उसके एक पहिये वाले रथ को बहुत देर तक खींचा। किन्तु कर्ण को भीमसेन का यह कार्य सह्य नहीं हुआ। वह अनेक बाण तथा नाना प्रकार के शस्त्रों से भीमसेन के साथ लड़ने लगा। क्रोध में भरा भीम भी कर्ण के साथ बड़े वेग से लड़ने लगा। इस प्रकार उस समय युद्ध हो रहा था कि, इतने में कुपित हो धर्मराज ने पाञ्चाल एवं मत्स्य देशीय श्रेष्ठ योद्धाओं से कहा—मेरे प्राण रूप, मेरे मस्तक रूप, मेरे महारथी महाश्रेष्ठ योद्धा जब कौरवों के साथ लड़ रहे हैं, तब तुम लोग मूढ़ों की तरह खड़े खड़े यहाँ क्या कर रहे हो? तुम सब निश्चिन्त रहो और क्षात्र-धर्म का सम्मान कर, जहाँ मेरे महारथी युद्ध कर रहे हैं, वहाँ जा पहुँचो। यदि विजय प्राप्त करने में तुम मारे भी गये, तो तुम्हें स्वर्ग मिलेगा और यदि तुम्हीं विजयी हुए तो विपुल दक्षिणा वाले अनेक यज्ञ करना। ऐसा करने से भी तुम्हें स्वर्गप्राप्ति होगी। यदि युद्ध में मारे गये तो तुम देवता बन पवित्र लोकों में विचरण करोगे। जब धर्मराज ने इस प्रकार उन वीरों को उत्साहित किया; तब वे सब क्षात्रधर्म का सम्मान कर, तुरन्त लड़ने के लिये

द्रोणाचार्य के सामने जा पहुँचे। वे बड़े पैने पैने बाणों से द्रोणाचार्य पर प्रहार करने लगे। दूसरी ओर से भीमसेनादि योद्धा द्रोणाचार्य पर बाण प्रहार करने लगे। उस समय पाण्डवों की ओर तीन कुटिल महारथी योद्धा थे। भीम, नकुल और सहदेव ने पुकार कर अर्जुन से कहा—तुम आक्रमण कर, तुरन्त उन कौरवों को द्रोणाचार्य के पास से हटा दो, जो उनकी रक्षा कर रहे हैं। उस समय पाञ्चाल योद्धा, द्रोणाचार्य का अनायास ही वध कर डालेंगे। उनकी इस पुकार को सुन, अर्जुन ने कौरवों पर धावा बोला। उधर द्रोणाचार्य भी पाँचवे दिन धृष्टद्युम्नादि पाञ्चालों के ऊपर वेग से आक्रमण कर, उन्हें पीड़ित करने लगे।

एक सौ नब्बे का अध्याय

"नरो वा कुञ्जरो वा"

सञ्जय ने कहा—हे राजन्! पूर्वकाल में जैसे देवराज इन्द्र ने क्रोध में भर, दानवों का संहार किया था, वैसे ही प्रबल पराक्रमी द्रोणाचार्य लगातार पाञ्चाल योद्धाओं को नाश करने लगे। किन्तु पाञ्चाल योद्धा द्रोणाचार्य के बाणों के प्रहार से पीड़ित तो होते थे; किन्तु भयभीत नहीं होते थे। तदनन्तर पाञ्चाल और सृञ्जय योद्धा एकत्र हो और आपके पक्ष के सब रथियों को मुग्ध कर, द्रोणाचार्य की ओर दौड़े। उस समय द्रोण की बाणवृष्टि से पाञ्चाल योद्धा मर कर धड़ाम धड़ाम भूमि पर गिरने लगे। उस समय बड़ा कोलाहल मचा। फिर जब द्रोण के अस्त्रप्रहार से पीड़ित तथा विकल हो पाञ्चाल योद्धा इधर उधर दौड़ने लगे, तब पाण्डव पक्षीय समस्त योद्धा भयभीत हुए। उस समय रथ हाथी, घोड़े, तथा पाण्डवों की चतुरङ्गिणी सेना के समस्त योद्धा अपने पक्ष के योद्धाओं को द्रोण द्वारा मारे जाते देख, विजयप्राप्ति की आशा से हाथ धो बैठे। वे मन ही मन सोचने लगे कि, प्रबल पराक्रमी द्रोण आज हम सब लोगों को वैसे

ही नष्ट कर देंगे, जैसे ग्रीष्मऋतु में जलती हुई आग घास फूस को जला कर भस्म कर डालती है। वे कहने लगे इस समय द्रोणाचार्य की ओर कोई देख तक नहीं सकता। हे अर्जुन—सो वे कदापि आचार्य द्रोण के साथ युद्ध न करेंगे।

उस समय पाण्डवों के हितैषी श्रीकृष्ण पाण्डवों को द्रोणाचार्य के बाण-प्रहार से पीड़ित एवं भयग्रस्त देख, अर्जुनादि पाण्डवों से कहने लगे—हे पाण्डवों! जब तक द्रोणाचार्य के हाथ में धनुष है, तब तक इन्द्रादि देवता भी उन्हें परास्त नहीं कर सकते, किन्तु जब उनके हाथ में कोई हथियार ही न रहे, तब तो एक साधारण मनुष्य ही उनका वध कर सकता है। अतः इस समय धर्मयुद्ध त्याग कर, ऐसा कोई उपाय सोचो, जिससे द्रोण तुम सब का संहार न कर पावें। मुझे निश्चय जान पड़ता है कि, द्रोण अपने पुत्र अश्वत्थामा के मारे जाने का संवाद सुन नहीं सकेंगे। अतः कोई आदमी उनके पास जा उन्हें अश्वत्थामा के मरने का वृत्तान्त सुनावे।

जब श्रीकृष्ण ने यह कहा, तब उनकी इस बात को अर्जुन ने किसी प्रकार भी न माना। किन्तु बहुत कुछ समझाने बुझाने पर युधिष्ठिर तथा अन्य योद्धाओं ने श्रीकृष्ण की बात मान ली। उसी समय आपकी सेना में घुस, मालवा देश के राजा इन्द्रवर्मा के अश्वत्थामा नामक हाथी को गदा के प्रहार से मार कर, लज्जा से सिर नीचा कर, द्रोणाचार्य के निकट जा कर—अश्वत्थामा मारा गया—यह कह कर, भीम ने बड़े ज़ोर से सिंहनाद किया। उक्त वचन कहते समय भीमसेन ने धीरे से अपने मन में यह भी कह लिया कि अश्वत्थामा नामक हाथी मारा गया। भीम के इस कठोर अप्रिय-वचन को सुन जलस्थ बालू की तरह द्रोणाचार्य का मन सन्न हो गया और शरीर ठंडा पड़ गया। किन्तु उन्हें अपने पुत्र के शारीरिक बल का पूर्ण ज्ञान था, अतः उन्होंने सहसा भीमसेन के कथन पर विश्वास न किया। अतः वे धैर्य से च्युत न हुए। क्षण भर में सम्हल कर उन्होंने सोचा कि, मेरे पुत्र का पराक्रम शत्रु लोग नहीं सम्हाल सकते। फिर वह मारा

कैसे आ सकता है। यह विचार वे अपने कालरूप धृष्टद्युम्न के सामने लड़ने को आ पहुँचे और कङ्कपक्षी के परों से युक्त एक हज़ार बाण उसके ऊपर बरसा दिये। उस समय द्रोणाचार्य अङ्गिरा के दिये हुए दिव्य धनुष और ब्रह्मदण्ड तुल्य बाणों को ले धृष्टद्युम्न के साथ युद्ध करने लगे। मुहूर्त भर में द्रोणाचार्य ने क्रोधी धृष्टद्युम्न को बाणवृष्टि से ढक कर उसे घायल कर डाला। उस समय जैसे वर्षाकाल में मेघाच्छादित सूर्य नहीं देख पड़ते, वैसे ही बाणजाल से ढके हुए द्रोण भी नहीं देख पड़ते थे। तदनन्तर महारथी द्रोण ने ईर्ष्या के वश हो, पाञ्चालों के बाणों का नाश कर डाला। फिर उन सब का नाश करने के अभिप्राय से द्रोण ने ब्रह्मास्त्र छोड़ा। उस समय द्रोण का तेज बहुत बढ़ गया था। द्रोण युद्ध में पाँचालों के सिरों को तथा लोहदण्ड सदृश विशाल एवं भूषणभूषित भुजदण्डों को काट काट कर, भूमि पर धपाधप गिराने लगे। जैसे पवन के झकोरों से वृक्ष टूट टूट कर भूमि पर गिरते हैं, वैसे ही द्रोण के हाथ से मरने वाले योद्धा राजा लोग भूमि पर गिर रहे थे। हे राजन्! रणभूमि में हाथियों की तथा घोड़ों की अनेक लाशें पड़ी हुई थीं। अतः समरभूमि में माँस और रुधिर की कीच हो रही थी। यहाँ तक कि, वहाँ कठिनाई से लोग चल सकते थे। इस युद्ध में धूमरहित अग्नि तुल्य प्रकाशमान द्रोण ने पाञ्चालों के बीस हज़ार रथियों को मार डाला। तदनन्तर क्रोध में भर भल्ल बाण से वसुदान का सिर काट डाला। फिर उन्होंने पाँच सौ मत्स्य देशीय राजाओं का, छः हज़ार सृञ्जयों का, दस हज़ार हाथियों का तथा दस हज़ार घोड़ों का लड़ते लड़ते क्षण भर में ही नाश कर डाला। इस प्रकार क्षत्रियों का नाश करने के लिये समरभूमि में द्रोण को उद्यत देख, अग्नि आदि ऋषि, उन्हें ब्रह्मलोक ले जाने के लिये उनके निकट आये। उन ऋषियों में विश्वामित्र, जमदग्नि, भरद्वाज, गौतम, वसिष्ठ, कश्यप, अत्रि, सिकता, पृश्नि, गर्ग, एवं सूर्य-रश्मि-पायी बालखिल्य, भृगु, अङ्गिरा तथा अन्य सूक्ष्म शरीरधारी महर्षि थे। उन सब ने द्रोणाचार्य से कहा—हे द्रोण! तुम अधर्म युद्ध कर रहे हो। अब तुम्हारे मरने का समय

अत्यन्त निकट है। अतः अब तुम अस्त्रत्याग दो। हम खड़े हैं, हमारी ओर देखो! अब आपको इससे अधिक क्रूर कर्म नहीं करना चाहिये। तुम वेद-वेदाङ्ग के ज्ञाता हो और सत्यधर्म-परायण हो। तिस पर तुम ब्राह्मण हो। अतः तुमको ऐसा कर्म न करना चाहिये। तुम्हारे बाण अमोघ हैं। अतः अब तुम हथियार रख दो। मर्त्यलोक में रहने की तुम्हारी अवधि पूरी हो चुकी। तुम ने निरपराधी मनुष्यों को ब्रह्मास्त्र चला कर मार डाला है। ऐसा करना तुम्हें कदापि उचित न था। अतः अब तुम लड़ना बंद करो और हथियार रख दो। हे द्विज! ऐसा पापकर्म फिर कभी मत करना।

ऋषियों के इन वचनों को सुन और भीमसेन के वचन को स्मरण कर, द्रोण का मन उदास हो गया। वे धृष्टद्युम्न की ओर देखने लगे। अपने पुत्र के मारे जाने के विषय में सन्दिग्ध हो द्रोण खिन्न तो हो ही रहे थे। अतः उन्होंने अपना सन्देह दूर करने के लिये सत्यवादी युधिष्ठिर से यह पूँछने का निश्चय किया कि, मेरा पुत्र जीवित है या मारा गया? क्योंकि द्रोण को पूर्ण विश्वास था कि, त्रिलोकी का ऐश्वर्य भी युधिष्ठिर को कभी मिथ्या नहीं बुलवा सकता और युधिष्ठिर बालणावस्था ही से सत्यवादी हैं। अतः द्रोण ने अन्य किसी से न पूँछ कर, युधिष्ठिर ही से पूँछना विचारा।

किन्तु जब श्रीकृष्ण ने जाना कि, महारथी द्रोण इस धराधाम पर पाण्डवों का नाम निशान भी न रहने देंगे, तब उन्होंने धर्मराज से कहा—यदि द्रोणाचार्य क्रुद्ध हो आधे ही दिन और लड़ा किये तो मैं सत्य कहता हूँ कि, तुम्हारी सेना का एक भी आदमी जीता न बचेगा। अतः तुम द्रोणाचार्य से हम सब की रक्षा करो। किसी किसी अवसर पर, मिथ्या बोलना भी सत्य की अपेक्षा श्रेष्ठ माना जाता है। यदि प्राणियों की प्राण-रक्षा के लिये कभी मिथ्या भी बोलना पड़े, तो उस असत्यवक्ता को पाप नहीं लगता।

[नोट—किन्तु ऐसा हुआ नहीं—युधिष्ठिर को असत्य बोलने का पातक लगा और उन्हें पीछे नरक में जाना पड़ा था। यह कथा आगे आवेगी।]

जब श्रीकृष्ण और धर्मराज में इस प्रकार बातचीत हो रही थी कि, इसी बीच में भीमसेन ने आ कर युधिष्ठिर से कहा कि, आपका नाश करने वाले द्रोणाचार्य के मार डालने का उपाय मुझे सूझ गया और तदनुसार ही मैंने काम किया है। मालवनरेश के इन्द्र के गज के समान प्रसिद्ध अश्वत्थामा नाम के हाथी को मैंने मार डाला। तदनन्तर मैंने द्रोण के निकट जा उनसे कहा कि, अश्वत्थामा मारा गया। अतः तुम रण से निवृत्त हो कर लौट जाओ, किन्तु द्रोण को मेरी बात पर विश्वास नहीं हुआ। अतः वे मेरी बात की सत्यता के सम्बन्ध में आपसे पूँछने वाले हैं। अतएव हे राजन्! अब आप श्रीकृष्ण की बात को मान कर, द्रोण से कह देना कि, अश्वत्थामा मारा गया। हे राजन्! जब आप अश्वत्थामा के मारे जाने की बात को पुष्ट कर देंगे, तब वह ब्राह्मण कभी युद्ध न करेगा। क्योंकि हे राजन्! आप तीनों लोकों में सत्यवादी कहलाते हो, अतः वे आपकी बात को असत्य न मानेंगे।

हे धृतराष्ट्र! भीम और अर्जुन की बात को सुन भावी के वश हो और असत्यभाषण के भय में निमग्न होने पर भी विजयकामी युधिष्ठिर तदनुसार कहने को उद्यत हो गये। जब द्रोणाचार्य ने अश्वत्थामा के मारे जाने के बारे में उनसे पूँछा, तब वे बोले—अश्वत्थामा मारा गया। फिर ऐसे धीरे से जिससे कोई सुन न सके, युधिष्ठिर ने कहा—नरो वा कुञ्जरो वा अर्थात् न जाने मनुष्य न जाने गज, यह कहते ही युधिष्ठिर का वह रथ जो भूमि से सदा ऊँचा रहता था—इस असत्यभाषण के कारण भूमि पर घसिटता हुआ चलने लगा। उधर युधिष्ठिर के मुख से द्रोण ने ज्योंहीं अश्वत्थामा के मारे जाने की बात सुनी, त्योंहीं वे शोक और सन्ताप में डूब गये और अपने जीवन से हताश हो बैठे। वे ऋषियों के कथनानुसार अपने को पाण्डवों का अपराधी मानने लगे। पुत्र के मारे जाने का दुस्संवाद सुन कर, उनका मन उचट गया और वे बड़े उदास हो गये। हे राजन्! द्रोण ने धृष्टद्युम्न की ओर देखा तो अवश्य; किन्तु शत्रुदमनकारी द्रोण जैसे पहले लड़ रहे थे, वैसे अब वे न लड़ सके।

एक सौ इक्यानबे का अध्याय

द्रोण का उदास होना

सञ्जय ने कहा—हे धृतराष्ट्र ! द्रोणाचार्य को खिन्न और उदास देख, धृष्टद्युम्न ने उनके ऊपर बड़े ज़ोर से आक्रमण किया। इसी धृष्टद्युम्न को राजा द्रुपद ने पूजन द्वारा प्रसन्न हुए अग्निदेव से द्रोण का नाश करने के लिये पाया था। उसने बड़ी बड़ी लपटों वाले अग्नि की तरह प्रकाशमान् द्रोण को मारने के लिये दृढ़ रोदा वाले और मेघ की तरह गम्भीर गर्जना वाले विजयी धनुष को हाथ में लिया और उस पर विषैले सर्प की तरह अजर और दिव्य बाण रखा। उस समय धनुष के रोदे के मण्डल में वह बाण आकाशमण्डल में शरद्कालीन सूर्य की तरह चमक रहा था। चमचमाता, यह धनुष जब धृष्टद्युम्न ने अपने हाथ में लिया; तब सैनिकों ने जान लिया कि, अब हम न बचेंगे। भरद्वाज के प्रतापी पुत्र द्रोण ने भी अपने शरीर का अन्तकाल समझ लिया। धृष्टद्युम्न के उस बाण को निवारण करने के लिये द्रोण ने अस्त्रों का स्मरण किया, परन्तु हे राजेन्द्र ! उन महात्मा के अस्त्र प्रकट ही नहीं हुए। हे राजन् ! द्रोणाचार्य चार दिन और एक रात्रि निरन्तर बाणवर्षा करते रहे थे। वे पाँचवें दिन के तीसरे पहर तक भी लड़ते रहे। तदनन्तर उनके अस्त्र निघट गये। साथ ही वे पुत्रशोक से पीड़ित हो रहे थे। अतः स्मरण करने पर भी दिव्यास्त्र प्रकट नहीं हुए। ऋषियों के कथनानुसार उन्होंने स्वयं हथियार रख देना चाहा। अतः वे पूर्ववत् पराक्रम सहित लड़ भी नहीं सके, तो भी उन्होंने आङ्गिरस नामक दिव्य धनुष और ब्रह्मदण्ड की तरह बाण ले कर धृष्टद्युम्न के साथ युद्ध किया। क्रोध में भर द्रोणाचार्य ने इस अन्तिम युद्ध में बाणों की बड़ी भारी वृष्टि की।

[नोट—ऊपर कहा गया है कि, द्रोणाचार्य के अस्त्र निघट गये थे। फिर उन्होंने बड़ी भारी बाणवृष्टि कहाँ से की ? इसका समाधान इस प्रकार

किया जा सकेगा कि, अस्त्रों से अभिप्राय मंत्र से अभिमंत्रित कर छोड़े जाने वाले अस्त्रों से है—न कि सामान्य बाणों से।]

और शत्रुप्रहार न सहने वाले धृष्टद्युम्न को विद्ध किया। आचार्य ने बाण चला, धृष्टद्युम्न के चलाये बाणों के टुकड़े कर डाले। फिर पैने बाण मार कर, उसकी ध्वजा और धनुष काटा तथा सारथि को भी मार डाला। तब धृष्टद्युम्न ने हँस कर दूसरा धनुष उठा लिया और उनकी छाती में एक बड़ा पैना बाण मारा। इस बाण प्रहार से द्रोण के बड़ी चोट लगी। तो भी वे घबड़ाने नहीं और अटल अचल भाव से खड़े रहे। तीखी धार वाला भल्ल बाण मार कर, उन्होंने धृष्टद्युम्न का धनुष पुनः काट डाला। हे परन्तप! क्रोध की साक्षात् मूर्ति दुराधर्ष द्रोण ने धृष्टद्युम्न की गदा, तलवार, बाण और धनुष को काट डाला। फिर उसका नाश करने के लिये उसके नौ पैने बाण मारे। फिर धृष्टद्युम्न ने अपने रथ के घोड़े द्रोण के रथ के घोड़ों के निकट ले जा कर, द्रोण पर ब्रह्मास्त्र का प्रयोग करना चाहा। द्रोण के लाल रंग के तथा धृष्टद्युम्न के कबूतर के रंग के पवन समान वेगवान शीघ्रगामी घोड़े बड़े सुन्दर जान पड़ते थे। जैसे वर्षाऋतु में बिजली युक्त मेघ गम्भीर गर्जन करता है, वैसे ही वे घोड़े भी रणक्षेत्र में हिनहिना रहे थे। विशालमना द्रोण ने धृष्टद्युम्न के रथ के ईषाबन्धन, चक्रबन्धन और रथबन्धन को काट डाला। फिर धृष्टद्युम्न के हाथ के धनुष, उसके रथ की ध्वजा को काट, उसके सारथि को भी मार डाला। जब इस प्रकार द्रोण ने धृष्टद्युम्न को विपन्नावस्था को पहुँचा दिया, तब धृष्टद्युम्न ने तान कर एक गदा द्रोणाचार्य के मारी। इस पर सत्यपराक्रमी द्रोण क्रोध में भर गये और पैने बाण मार कर, उसकी गदा के टुकड़े टुकड़े कर डाले। नरव्याघ्र धृष्टद्युम्न ने जब देखा कि, द्रोण ने उसकी गदा को बाण मार कर तोड़ डाला है; तब द्रोणाचार्य का अन्तिम काल निकट समझ, उसने सौ फुल्लियों वाली चमचमाती तलवार निकाली। फिर हाथ में उस चमचमाती नंगी तलवार को

लिये हुए, धृष्टद्युम्न अपने रथ की ईषा से कूद कर, धृष्टद्युम्न के रथ की ईषा पर चला गया और रथ की छत्री के नीचे बैठे हुए द्रोण के पास पहुँच कर, उनकी छाती विदीर्ण कर डालनी चाही। वह जुए के मध्य भाग पर और घोड़े की पीठ पर जुड़नों के बल खड़ा हो गया। धृष्टद्युम्न की इस फुर्ती को देख, सैनिक उसकी सराहना करने लगे। धृष्टद्युम्न जुए पर तथा लाल घोड़े की, पीठ पर इस तरह खड़ा था कि, द्रोण को उसे मारने का मौका ही हाथ न लगा। उसका यह काम लोगों को बड़े आश्चर्य का मालूम पड़ा। उस समय धृष्टद्युम्न और द्रोण में परस्पर वैसे ही प्रहार हो रहे थे जैसे माँसखण्ड के पीछे दो बाजों में चोटें हुआ करती हैं। द्रोणाचार्य ने रथशक्ति मार कर, धृष्टद्युम्न के कबूतर के रंग के समस्त घोड़ों को मार डाला और अपने लाल रंग के घोड़े बचा लिये। धृष्टद्युम्न के घोड़े मर कर पृथिवी पर गिर पड़े और द्रोण के रथ के घोड़े बंधनों से छूट गये। महात्मा द्रोणाचार्य द्वारा अपने घोड़ों को मरा देख, धृष्टद्युम्न इस बात को न सह सका। रथ से हीन हुआ खड्ग-धारियों में श्रेष्ठ धृष्टद्युम्न तुरन्त ही तलवार ले द्रोणाचार्य पर वैसे ही लपका जैसे गरुड़ साँप पर लपकता है। उस समय धृष्टद्युम्न वैसे ही सुशोभित हुआ, जैसे पूर्वकाल में हिरण्यकशिपु का वध करते समय विष्णुभगवान् सुशोभित हुए थे। हे राजन्! उस समय हाथ में ढाल तलवार ले धृष्टद्युम्न पैंतरे बदलता हुआ समरभूमि में घूमने लगा। उसने * भ्रान्त, † उद्भ्रान्त, ‡ आविद्ध, § आप्लुत, ‖ सृत, ¶ परिवृत्त, / निवृत्त, ȣ संपात,

---

* भ्रान्त—तलवार को मण्डलाकार घुमाना। † उद्भ्रान्त—हाथ ऊपर उठा कर तलवार घुमाना। ‡ आविद्ध—तलवार गोलाकार अपने शरीर के चारों ओर घुमाना। § प्लुत—तलवार की नोंक को वैरी के शरीर से छुलाना। ‖ सृत—शत्रु को धोखे में डाल, उसके शरीर पर खड्गप्रहार करना। ¶ परिवृत्त—शत्रु की दहिनी बाईं बगल की ओर घूमता फिरना। / निवृत्त—पैर पीछे को घुमाना। ȣ सपात—सामने हो शत्रु पर प्रहार करना।

* समुदीर्ण † भारत, ‡ कौशिक और § सात्वत आदि प्रधान इक्कीस प्रकार के तलवार के हाथ दिखलाये। वहाँ पर दर्शक रूप से जमा हुए देवता तथा योद्धा धृष्टद्युम्न को समरभूमि में पैतरे बदलते देख, बड़े विस्मित हुए। किन्तु द्रोण ने एक बालिश्त लंबे एक सहस्र बाण मार कर, धृष्टद्युम्न की शतचन्द्र नाम्नी तलवार तथा ढाल के टुकड़े टुकड़े कर डाले। वितस्त बाणों से उस समय काम लिया जाता है, जब पास खड़े शत्रु पर बाण चलाने होते हैं। ये बाण उस समय द्रोणाचार्य के पास थे। द्रोण, अर्जुन, अश्वत्थामा, कर्ण, प्रद्युम्न, युयुधान और अभिमन्यु को छोड़ अन्य किसी के पास ऐसे बाण न थे, द्रोण ने उन बाणों के प्रहार से धृष्टद्युम्न को पीड़ित करना आरम्भ कर दिया। फिर अपने पुत्र समान शिष्य धृष्टद्युम्न को उसी जगह मार डालने के लिये द्रोण ने एक बड़ा दृढ़ बाण धनुष पर रखा। किन्तु सात्यकि ने दस तेज़ बाण मार कर, उस बाण के टुकड़े टुकड़े कर डाले। आपके पुत्र दुर्योधन तथा कर्ण के सामने, द्रोणाचार्य ने घबड़ाहट में पड़े हुए धृष्टद्युम्न को बचा दिया। हे राजन्! उस समय सत्यपराक्रमी सात्यकि—द्रोण, कर्ण तथा कृपाचार्य के बीच, अपने रथ की गतियाँ प्रदर्शित करता हुआ घूम रहा था। रथ के मार्गों में घूमते तथा युद्ध में सब के दिव्य अस्त्रों का नाश करते हुए धैर्यधारी सात्यकि को देख, श्रीकृष्ण तथा अर्जुन ने धन्य धन्य कह, उसकी प्रशंसा की। श्रीकृष्ण और अर्जुन जब शत्रुसैन्य के निकट पहुँचे, तब अर्जुन ने श्रीकृष्ण से कहा—हे केशव! शत्रुओं का संहार करने वाला मधुवंशी सात्यकि द्रोणाचार्य आदि के रथों के आगे घूम रहा है और मुझे धर्मराज को, भीम को, नकुल को तथा सहदेव को आनन्दित कर रहा है। देखिये—वृष्णिवंश की कीर्ति को बढ़ाने वाला सात्यकि महारथियों को खेल खिलाता हुआ सा रण में घूम रहा है। देखो ये सिद्ध पुरुष और सैनिक

---

* समुदीर्ण—लड़ाई में अपना बल बाहुल्य दिखलाना। † भारत—अङ्ग प्रत्यङ्ग का घुमाना। ‡ कौशिक—विलक्षण ढंग से तलवार को घुमा कर प्रदर्शित करना। § सात्वत—पैंतरा बदल कर ढाल पर तलवार का प्रहार करना।

आश्चर्यचकित हो तथा सात्यकि को अजेय समझ उसकी सराहना कर रहे हैं। यही नहीं, बल्कि उभयपक्ष के वीर सात्यकि की प्रशंसा कर रहे हैं। यह देख मैं हर्षित हो रहा हूँ।

एक सौ बानबे का अध्याय

द्रोण-वध

संजय ने कहा—हे धृतराष्ट्र! दुर्योधन आदि योद्धा सात्वत वंशी वीर पुरुष के पराक्रम को देख, तुरन्त क्रोध में भर गये और उन्होंने चारों ओर से सात्यकि को घेर लिया। हे राजन्! आपके पुत्रों में, कृपाचार्य ने और कर्ण ने इस युद्ध में बड़ी फुर्ती से सात्यकि पर आक्रमण किया और उसके वे पैने बाण मारने लगे। यह सब देख कर, राजा युधिष्ठिर, नकुल, सहदेव और बलवान भीमसेन, सात्यकि की रक्षा करने के लिये उसको चारों ओर से घेर कर खड़े हो गये। जैसे जैसे पाण्डवों की ओर से सात्यकि की रक्षा का उद्योग होता था, वैसे ही वैसे कर्ण, महारथी कृपाचार्य और दुर्योधन आदि आपके पुत्र बाणों की वर्षा कर सात्यकि को ढकने लगे। किन्तु हे राजन्! उन सब महारथियों के साथ लड़ाई लड़, अपने ऊपर होने वाली बाणवर्षा को सात्यकि ने एक साथ छिन्न भिन्न कर डाला। उसने उस महासमर में उन महाबलवानों के चलाये हुए विविध प्रकार के दिव्यास्त्रों को पीछे हटा दिया। जैसे पूर्वकाल में कुपित रुद्र ने पशुओं का संहार किया था, वैसे ही इस समय उभय पक्ष के योद्धा आपस में एक दूसरे का संहार कर रहे थे। हे राजन्! रणभूमि में कटे हुए हाथ, सिर, धनुष, बाण, छत्र और चमर ढेरों पड़े हुए थे। टूटे पड़े हुए रथों के पहिये, टूटी बड़ी बड़ी ध्वजाएँ, मृत घुड़सवार और मरे हुए सिपाहियों से रणभूमि परिपूर्ण थी। बाणों से काटे गये योद्धा अनेक प्रकार की चेष्टाएँ करते हुए पड़े थे। देवासुर युद्ध की तरह यह महाघोर युद्ध हो रहा था। उस समय धर्मराज युधिष्ठिर ने लड़ने वाले क्षत्रियों से कहा—हे

महारथियों! तुम सब रथ में तैयार हो कर, द्रोणाचार्य के ऊपर आक्रमण करो। क्योंकि धृष्टद्युम्न तो आचार्य द्रोण से लड़ ही रहा है और द्रोण का वध करने के लिये यथाशक्ति उद्योग कर रहा है। उसकी चेष्टा से जान पड़ता है कि, कुपित धृष्टद्युम्न आज रण में द्रोणाचार्य को अवश्य ही मार डालेगा। अतः तुम सब एकत्र हो कर द्रोण से लड़ो। युधिष्ठिर के इस आदेश को सुन, सृञ्जय-राजाओं के महारथी तैयार हो गये और द्रोण का नाश करने के लिये उनके सामने जा डटे। सत्यप्रतिज्ञ महारथी द्रोण प्राण गँवाने का दृढ़ सङ्कल्प कर, उन महारथियों से लड़ने लगे। उस समय पृथिवी डगमगायी। वज्र गिराने जैसा शब्द करता हुआ पवन चला और सैनिकों को भयत्रस्त करने लगा। सूर्यमण्डल से बड़े बड़े लूके निकल कर, भूमि पर गिरने लगे। उनके गिरते ही दोनों सेनाओं में बड़ा प्रकाश फैल गया। द्रोणाचार्य के अस्त्र महाभय की सूचना देते हुए जल उठे। रथों के दौड़ने का महाभयङ्कर घरघराहट का शब्द होने लगा। घोड़ों की आँखों से अश्रुप्रवाह होने लगा। उस समय ऐसा जान पड़ा, मानों द्रोणाचार्य बलहीन हो गये। उनका वामनेत्र और वामहस्त फड़क उठे। धृष्टद्युम्न को देख वे उदास हो गये। ऋषियों के वेदवाक्यवत् वचनों को स्मरण कर और स्वर्ग जाने की कामना से वे डट कर युद्ध करने लगे तथा शरीर छोड़ने को तैयार हो गये। इतने ही में द्रुपदपुत्र धृष्टद्युम्न के सैनिकों ने द्रोणाचार्य को चारों ओर से घेर लिया। उस समय द्रोण भी क्षत्रियों के दलों का संहार करते हुए रणभूमि में भ्रमण करने लगे। शत्रुसंहारकारी द्रोण ने इस युद्ध में बाणप्रहार से बीस सहस्र योद्धाओं का और एक सहस्र गजों का संहार किया। उस समय आचार्य द्रोण रणक्षेत्र में निर्धूम अग्नि की तरह दमक रहे थे। जिस समय उन्होंने क्षत्रियों का नाश करने के लिये ब्रह्मास्त्र ग्रहण किया; उस समय धृष्टद्युम्न रथ छोड़, भूमि पर खड़ा हुआ था। उसके समस्त हथियार निबट चुके थे। अतः वह बड़ा उदास था। इतने में भीम दौड़ कर उसके निकट पहुँचा और उसे अपने रथ

पर बिठा लिया। फिर बाणवृष्टि करते हुए द्रोणाचार्य की ओर देख, भीम ने धृष्टद्युम्न से कहा—हे धृष्टद्युम्न! तुझे छोड़ और कोई भी द्रोणाचार्य से नहीं लड़ सकता। अतः अब तू झटपट इनका वध कर डाल। क्योंकि द्रोण के वध का दायित्व तेरे ही ऊपर है।

भीम की इस बात को सुन, धृष्टद्युम्न क्रोध में भर गया। उसने एक बड़ा दृढ़ धनुष हाथ में लिया और दुर्निवार्य द्रोण को पीछे हटाने की कामना से, उनके ऊपर बाणवृष्टि आरम्भ की। क्रुद्ध हो उन दोनों योद्धाओं ने एक दूसरे पर महास्त्र का प्रयोग किया। धृष्टद्युम्न ने बड़े बड़े अस्त्रों को छोड़, द्रोण को उनसे ढक दिया और उनके अस्त्रों के टुकड़े टुकड़े कर डाले। वसाती, शिवि, वाल्हीक और कौरव जो युद्ध में द्रोणाचार्य की रक्षा कर रहे थे, धृष्टद्युम्न ने उन सब के भी बाण मारे। बाणों से समस्त दिशाओं को आच्छादित कर, धृष्टद्युम्न, अपनी किरणों से दसों दिशाओं को प्रकाशित करते हुए सूर्य की तरह प्रकाशित हो रहा था। द्रोण ने बाण मार कर, धृष्टद्युम्न का धनुष काट डाला और उसके मर्मस्थानों को विद्ध किया। इससे धृष्टद्युम्न बड़ा पीड़ित हुआ। इतने में क्रोधी भीम ने द्रोण के रथ के निकट पहुँच, चुपके से कहा—आचार्य! यदि अस्त्र-शस्त्र-विद्या के ज्ञाता अधम ब्राह्मण अपने वर्णोचित कर्तव्य कर्मों के अनुष्ठान से मुँह मोड़, युद्ध न करते तो क्षत्रियों के कुल कदापि नष्ट न होते। हे विप्र! देखो, समस्त शास्त्रों और पण्डित जनों ने अहिंसा ही को सर्वश्रेष्ठ धर्म बतलाया है। ब्राह्मण ही इस धर्म के आश्रय रूप हैं। आप भी ब्रह्मज्ञ पुरुषों में अग्रगण्य ब्राह्मण हैं। तब पुत्र, स्त्री और धन की अभिलाषा में रत रह, आप अज्ञानता के कारण, एक मूर्ख चाण्डाल की तरह म्लेच्छ आदि अनेक जाति के पुरुषों को—विशेष कर, एक पुत्र के लिये, पापियों की तरह, एक मूर्ख चाण्डाल की तरह, अधर्मियों की तरह, क्षात्रधर्म में रत अनेक क्षत्रियों का अधर्म पूर्वक वध कर, क्यों नहीं लजाते? आपने जिनके लिये हथियार उठाया है और जिसके मुख को निहार, आप जीवन धारण किये हुए हैं, आज वही अश्वत्थामा मर कर, भूमि

कर पड़ा शयन कर रहा है। आप धर्मराज की बात को ज़रा भी अन्यथा न समझें।

भीम की इन बातों को सुन द्रोणाचार्य ने धनुष फेंक कर, यह कहा—हे महाधनुर्धर कर्ण! हे कृपाचार्य! हे दुर्योधन! अब तुम लोग सम्हल कर युद्ध करो। मैं बारबार कहता हूँ कि, पाण्डवों की ओर से तुम लोगों का मङ्गल हो। मैं अब हथियार रखता हूँ। यह कह और धनुष को फेंक द्रोण ने अश्वत्थामा का नाम ले कर उसे पुकारा। फिर रथ पर योगसाधन के लिये अपने मन को स्थिर कर, वे बैठ गये और समस्त प्राणियों को अभय दान दिया। प्रतापी धृष्टद्युम्न ने इस अवसर से लाभ उठा, धनुष तो रथ ही में पटक दिया फिर वह हाथ में नंगी तलवार ले कूद कर रथ के नीचे उतर पड़ा और एक सपाटे में द्रोण के निकट जा पहुँचा। द्रोण को धृष्टद्युम्न के वश में देख, सब लोग हाहाकार करने लगे और धृष्टद्युम्न को धिक्कारने लगे। इधर द्रोण ने तथास्तु कह, परम शान्त भाव अवलम्बन कर, योगबल से तेजोमय रूप धारण किया। फिर वे मन ही मन परमपुरुष सनातन भगवान विष्णु का ध्यान करने लगे। महातपस्वी द्रोणाचार्य की वह ज्योतिर्मयी मूर्त्ति का सिर आगे को लटक पड़ा, वक्षःस्थल की धड़कन बंद हो गयी, आँखें मुँद गयीं। वे शुद्ध भाव से और धैर्य धारण कर, देवों के देव सृष्टि पालक और सृष्टि का लय करने वाले, अविनाशी, ओंकार रूप, एकाक्षर, परब्रह्म का स्मरण कर, पूर्वोक्त ऋषियों के साथ दुर्लभ स्वर्ग लोकको चले गये।

हे राजन्! जब वे इस प्रकार दुर्लभ स्वर्गलोक को चले गये, तब उनके रथ से भास्वरामायं दिव्य प्रकाश से प्रकाशित हो गया। हम लोगों ने भी उस समय जाना कि, आकाश में दो सूर्य उदय हुए हैं। द्रोणाचार्य के मरने के समय सूर्य की ज्योति पूर्व की अपेक्षा अधिक प्रकाश युक्त जान पड़ी, किन्तु पल भर में वह अन्तर्धान हो गयी।

इस प्रकार जब द्रोणाचार्य ब्रह्मलोक को सिधार गये, तब धृष्टद्युम्न मुग्ध हो गया। देवताओं को परम हर्ष प्राप्त हुआ और वे हर्षध्वनि करने लगे।

हे राजन्! योगयुक्त महात्मा द्रोणाचार्य जब परमगति को प्राप्त हुए, तब सब मनुष्यों में अकेले अर्जुन, कृपाचार्य, श्रीकृष्ण और युधिष्ठिर ही को उनका दर्शन हुआ था। उन परब्रह्म के लोक में, जिन्हें देवता भी नहीं जान सकते, जाने वाले योगयुक्त बुद्धिमान् द्रोणाचार्य की महिमा को दूसरा पुरुष जान ही नहीं सकता था। शत्रुदमनकारी द्रोणाचार्य परमगति को प्राप्त हो गये, इस बात का ज्ञान न रखने वाले लोग यह न जान सके कि, द्रोणाचार्य योगबल से उन महर्षियों के साथ ब्रह्मलोक को गये हुए हैं। द्रोण के शस्त्ररहित और रक्त टपकते हुए शरीर को धृष्टद्युम्न ने जब पकड़ लिया; तब सब लोग धृष्टद्युम्न को धिक्कारने लगे। द्रोण के निर्जीव और मूक शरीर से धृष्टद्युम्न ने उनका सिर तलवार से काट डाला और अपने इस (जघन्य कृत्य से) वह अत्यानन्दित हुआ। वह तलवार को घुमाता हुआ एवं सिंहनाद करता हुआ रणक्षेत्र में घूमने लगा। द्रोण का शरीर श्याम रंग का था और कानों तक केश सफ़ेद हो गये थे। मरने के समय उनकी उम्र पचासी वर्ष की थी। तो भी वे, हे राजन्! आपके लिये रणक्षेत्र में सोलह वर्षीय युवा की तरह घूमते थे। जब धृष्टद्युम्न, द्रोणाचार्य का वध करने के लिये उद्यत हुआ, तब महाबली अर्जुन ने उससे कहा था—हे द्रुपदनन्दन! तू आचार्य को जीवित पकड़ लाना। उनका वध मत करना। अन्य सैनिकों ने भी चिल्ला कर उससे कहा था—आचार्य को मार मत, मार मत। अर्जुन तो चिल्लाता हुआ धृष्टद्युम्न के पीछे दौड़ा भी था, किन्तु अर्जुन तथा अन्य राजाओं के चिल्लाते रहने पर भी धृष्टद्युम्न ने रथस्थ द्रोणाचार्य का सिर काट ही तो डाला। द्रोण रक्त से लतपथ हो रथ से भूमि पर आ पड़े। उस समय द्रोण लाल लाल शरीर वाले सूर्य की तरह अपने तेज से लोगों को चौंधाये देते थे।

द्रोण के मारे जाने पर महाधनुर्धर धृष्टद्युम्न ने उनके कटे हुए मस्तक को उछाल कर, आपके पुत्रों के सामने फेंक दिया। आपके पुत्र और योद्धा द्रोणाचार्य का कटा हुआ सिर देख, भागने को उद्यत हुए और सचमुच चारों

ओर भागने लगे। हे राजन्! द्रोण आकाश में पहुँच, नक्षत्रों के मार्ग में घुस गये। सत्यवतीसुत व्यासदेव के अनुग्रह से उस समय मैंने उन्हें देखा था। निर्धूम उल्का प्रज्वलित हो जैसे आकाश को जाता है—वैसे ही महाकान्ति वाले द्रोणाचार्य को आकाश में गमन करते मैंने देखा था। द्रोण का पतन होते ही कौरवों, पाण्डवों और सृञ्जयों का उत्साह नष्ट हो गया। वे सब बड़ी तेज़ी से भागने लगे। समस्त सैनिक भाग खड़े हुए। इस युद्ध में हे राजन्! आपके बहुत से योद्धा खेत रहे। अधमरों की संख्या बतलाना असम्भव है। मरने से बचे हुए योद्धा द्रोणाचार्य के मारे जाने पर निर्जीव से हो गये। रणक्षेत्र मे पलायन कर, उन लोगों ने अपना परलोक भी बिगाड़ डाला। उभय लोकों से भ्रष्ट हो जाने के कारण वे सब बहुत घबड़ाये। हे राजन्! वीर राजाओं ने द्रोणाचार्य का शव प्राप्त करना चाहा; किन्तु असंख्य रुण्डों मुण्डों से परिपूर्ण रणभूमि में वे उनके शव का पता न लगा सके। उधर पाण्डव इस लोक में जय और अपर लोक में महान् यश प्राप्त कर, धनुषों को टंकारते और सिंहनाद कर रहे थे। दोनों सेनाओं में उदासी और हर्ष छाया हुआ था। उस समय भीम और धृष्टद्युम्न अपनी सेना के बीच खड़े हो कर, आपस में मिलाभेंटी कर, हर्षित हो नाच रहे थे। तदनन्तर वैरियों को सन्तप्त करने वाले धृष्टद्युम्न से भीम ने कहा—हे धृष्टद्युम्न! जब पापी कर्ण और दुर्योधन मारे जाँयगे, तब मैं पुनः तुझ विजयी को इसी प्रकार अपने गले लगाऊँगा। यह कह और अपने दोनों भुजदण्डों पर ताल ठोंक, धृष्टद्युम्न ने उसके शब्द से पृथिवी को कँपा दिया। भीम के ताल ठोंकने के शब्द को सुन, हे राजन्! आपकी ओर के योद्धा भयभीत हो गये और क्षात्र धर्म को त्याग कर, रण से भागे। पाण्डव अपने शत्रुओं का नाश कर तथा विजयी हो हर्षित होते हुए परम सुखी हुए।

द्रोणवध पर्व समाप्त

[नारायणास्त्र मोक्ष पर्व]

एक सौ तिरानवे का अध्याय

कृपाचार्य और अश्वत्थामा की बातचीत

सञ्जय ने कहा—हे धृतराष्ट्र ! जब युद्ध में द्रोणाचार्य मारे गये ; तब शस्त्रों से पीड़ित हो और अपने बहुत से योद्धाओं से हाथ धो, कौरवों को बड़ा शोक हुआ। वैरियों की वृद्धि देख, वे थरथरा गये। उनके नेत्रों में आँसू भर आये। वे भयभीत हो गये। उनको अपने शरीरों का कुछ भी भाव न रह गया। उनका उत्साह नष्ट हो गया। मारे दुःख के वे ओजहीन हो घबड़ा गये। आपके पुत्र को घेर कर खड़े खड़े वे रोने लगे। पूर्वकाल में हिरण्याक्ष के मारे जाने पर जो दशा दैत्यों की हुई थी—वही दशा इस समय कौरवों की थी। वे लोग मृगशावकों की तरह आपके पुत्र के चारों ओर उसे घेर कर खड़े हो गये। आपका पुत्र दुर्योधन अधिक देर तक उस जगह न खड़ा रह सका और वहाँ से भाग खड़ा हुआ। आपकी सेना के लोग भूख और प्यास से विकल तो थे ही—तिस पर सूर्य के प्रचण्ड आतप से उनके शरीर झुलसे जा रहे थे। अतः वे सन्तप्त हो बड़े खिन्न हो रहे थे। सूर्य का पतन, समुद्र के जल का सूखना, सुमेरु का डगमगाना और इन्द्र का पराजय जैसे असह्य व्यापार हैं, वैसे ही द्रोणाचार्य का मरण भी कौरवों के लिये न सहन करने योग्य व्यापार था। कौरव पक्षीय योद्धा बहुत घबड़ाये और भयभीत हो भाग गये। सुवर्ण के रथ पर सवार होने वाले आचार्य द्रोण के मारे जाने का समाचार सुन, गान्धार देशाधिपति शकुनि भी भयत्रस्त हो, अन्य रथियों के साथ समरभूमि से भागा। महाराज शल्य भी अपनी चतुरङ्गिणी सेना के पीछे पीछे चारों ओर चकित मनुष्य की तरह निहारते हुए रणक्षेत्र से भागे। बहुत बुरा हुआ, बहुत बुरा हुआ—कहते हुए कृपाचार्य भी पताकाधारिणी उस सेना से घिरे हुए, जिसके अनेक वीर मारे जा चुके थे, समरभूमि से भागे।

कृतवर्मा भी मरने से बची हुई कलिङ्ग की, अरिंद की और बाल्हीक की सेना से घिर शीघ्रगामी घोड़ों के रथ पर सवार हो, रणक्षेत्र से भागा।

हे राजन्! राजा उलूक समरभूमि में द्रोणाचार्य को मरा हुआ देख और भयभीत हो भागा। दर्शनीय, तरुण, शूरवीर, दुःशासन भी द्रोण के मारे जाने से बहुत घबड़ा गया और गजसैन्य सहित भागा। दस हज़ार रथ और तीन सहस्र गजों सहित वृषसेन भी भागा। महारथी दुर्योधन भी हाथी, घोड़े, रथ तथा पैदल सेना के साथ, रण से भाग गये। रण में द्रोणाचार्य का पतन देख और अर्जुन के संहार से बचे हुए संशप्तकों को साथ ले, वे रणक्षेत्र से भाग निकले। इनके अतिरिक्त अन्य बहुत से योद्धा हाथियों पर सवार हो हो कर भाग गये; कितने ही अपने घोड़ों को छोड़ भाग गये। कौरवों के कितने ही योद्धा अपने पिताओं से भागने के लिये चिल्ला रहे थे। कितने ही अपने भाइयों से शीघ्रता पूर्वक भागने के लिये अनुरोध करते हुए स्वयं भाग रहे थे। कोई कुरुरथी अपने मामाओं से और अपने पुत्रों से और अपने मित्रों से तुरन्त भागने की बात कहते हुए स्वयं भागे जा रहे थे, बहुत से, सैनिकों को भाग जाने के लिये कह रहे थे। कोई भाँजों से और कोई सगे नातैतों से भागने की प्रेरणा कर, दसों दिशाओं को भाग रहे थे। उस समय योद्धाओं के शरीर घायल हो रहे थे, सिरों के बाल खुल गये थे, रणक्षेत्र में उस समय इतने अधिक योद्धा थे कि, दो जन साथ साथ भागने की राह नहीं पाते थे। उस समय उन सब का उत्साह भङ्ग हो गया था और वे सामर्थ्यहीन हो समझ रहे थे कि, बस अब जीवित बचना कठिन है।

हे राजन्! आपके योद्धाओं में कितनों ही ने अपने अपने कवच उतार डाले और वे भाग [illegible]। भागते समय वे आपस में चिल्ला कर कहते जाते थे—खड़े रहो—खड़े रहो। किन्तु वे स्वयं रणभूमि में खड़े नहीं रह सके। कितने ही रथियों के सारथि मारे गये थे—अतः वे लोग अपने सुसज्जित

रथों से घोड़े खोल उन पर सवार हो गये थे और एड़ें लगा घोड़ों को भगाये जा रहे थे। जब इस प्रकार आपकी सेना भयभीत हो भागने लगी—तब अश्वत्थामा ने शत्रुओं पर वैसे ही धावा मारा, जैसे मक्र नदी के प्रवाह के सामने चढ़ कर जाता है। अश्वत्थामा का प्रभद्रक, पाञ्चाल, चेदी तथा केकयों के साथ बड़ा युद्ध हुआ। मदमत्त हाथी की तरह पराक्रमी अश्वत्थामा युद्धक्षेत्र में मतवाले की तरह घूम रहा था। वह पाण्डवों की सेना के बहुत से योद्धाओं को मार कर, बड़ी कठिनाई से छूट पाया। जब उसने अपनी सेना को भागते देखा, तब उसने दुर्योधन के निकट आ पूँछा कि—हे भरतवंशी राजन्! आपकी यह सेना भयभीत हुई सी घबड़ा कर क्यों भाग रही है। रण में से भागती हुई सेना को तुम रोकते क्यों नहीं? हे राजन्! यह कर्ण आदि योद्धा क्यों नहीं डट जाते। अन्य युद्धों के समय तो सेना इस प्रकार कभी नहीं भागती थी? आपकी सेना कुशल से तो है? महारथियों में से सिंह के समान कौन से योद्धा के मारे जाने से ऐसी दशा हो गयी है। यह तो बतलाओ। दुर्योधन ने अश्वत्थामा की यह बात सुनी; किन्तु आपका पुत्र भग्न नौका की तरह शोकसागर में डूब रहा था। अतः अश्वत्थामा से महाभयानक अप्रिय समाचार नहीं कह सका। वह रथ में सवार अश्वत्थामा को देख, फूट फूट कर रोने लगा। फिर दुर्योधन ने कृपाचार्य के सामने जा कर, लज्जा सहित कहा—आपका कल्याण हो! सेना के भागने का कारण आप अश्वत्थामा को बतला दीजिये। यह सुन कर, शरद्वानपुत्र कृपाचार्य ने शोकान्वित हो अश्वत्थामा से द्रोणाचार्य के मरण का वृत्तान्त कहा। कृपाचार्य बोले—हम द्रोणाचार्य के प्रधानत्व ही में केवल पाञ्चालों से लड़ रहे थे। संग्राम आरम्भ होते ही कौरव और सोमक इकट्ठे हुए और सिंहनाद करते हुए एक दूसरे के शरीरों को काट काट कर भूमि पर गिराने लगे। इस लड़ाई में सहस्रों योद्धा मारे गये। तब आपके पिता ने क्रोध में भर, शत्रुओं की सेना के ऊपर ब्रह्मास्त्र छोड़ना चाहा। फिर ब्रह्मास्त्र को छोड़, उन्होंने भल्ल बाणों से सैकड़ों और सहस्रों

शत्रुओं को मार डाला। केकय, मत्स्य और अधिकांश पाञ्चाल जो द्रोण के रथ के निकट गये, मार डाले गये। इस युद्ध में द्रोण ने ब्रह्मास्त्र मार कर, एक हज़ार बड़े बड़े योद्धाओं को और दो हज़ार हाथियों को मार डाला। जिनके कानों में झुर्रियाँ पड़ी हुई थीं—जिनका शरीर श्याम था और जिनकी उम्र पचासी वर्ष की थी—वे द्रोण वृद्ध हो कर भी, सोलह वर्ष के जवान पुरुष की तरह, रणक्षेत्र में घूम रहे थे। उनके संहार से सेनायें खिन्न हो गयीं और राजाओं का संहार होने लगा। यह देख कर, पाञ्चाल देश के योद्धा राजा घबड़ाये और रणक्षेत्र छोड़ कर भागे। जब पाञ्चाल राजा गए, भागे और अन्य लोगों में भगदड़ पड़ी, तब शत्रुविजयी द्रोण ने दिव्यास्त्र प्रकट किया। उस समय वे रण में उदीयमान सूर्य की तरह जान पड़ते थे। बाण रूपी रश्मियों से सम्पन्न, प्रबलप्रतापी आपके पिता, जब पाण्डवों की सेना के बीच स्थित थे, तब उनकी ओर वैसे ही कोई नहीं देख पाता था, जैसे मध्याह्नकालीन सूर्य की ओर कोई नहीं देख सकता। सूर्य की तरह तपते हुए आचार्य द्रोण शत्रुओं को भस्म करने लगे। शत्रु पराक्रम से रहित हो गये। उनका उत्साह भङ्ग हो गया और वे अचेत से हो गये। विजयाभिलाषी श्रीकृष्ण ने जब देखा कि, द्रोण बाणप्रहार से पाण्डवों की सेना को पीड़ित कर रहे हैं, तब वे पाण्डवों से कहने लगे— शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ और महारथियों के अग्रणी द्रोणाचार्य को कोई भी मनुष्य नहीं हरा सकता। रण में इन्द्र भी इन्हें नहीं हरा सकते। हे पाण्डवो! अतएव यदि तुम्हारी इच्छा जीतने की हो तो धर्माधर्म का विचार त्याग दो। जिससे द्रोणाचार्य तुम सब को मार न डालें। मैं तो समझता हूँ कि, अश्वत्थामा के मारे जाने का संवाद सुन, द्रोण रण में नहीं लड़ सकेंगे। अतः कोई भी पुरुष द्रोण से जा कर झूठ मूठ कह दे कि, अश्वत्थामा युद्ध में मारा गया। कुन्तीपुत्र अर्जुन को छोड़ और सब ने इस उपाय को अच्छा समझा। युधिष्ठिर ने पहले तो बड़ी आपत्ति की, किन्तु पीछे से यह बात मान ली। फिर भीमसेन ने तुम्हारे पिता के निकट जा कर, लजाते हुए

कहा—रण में अश्वत्थामा मारा गया, किन्तु तुम्हारे पिता ने उसके इस कथन पर विश्वास नहीं किया। उन्होंने भीम की बात पर विश्वास न कर धर्मराज से पूँछा—क्या रण में अश्वत्थामा मारा गया या वह जीवित है? इस बीच में भीम ने युद्ध में मालवराज इन्द्रवर्मा के पर्वताकार अश्वत्थामा नामक गज को मार डाला। उसे राजा युधिष्ठिर ने देखा था। अतः वे एक ओर तो असत्य बोलने के भय से त्रस्त थे और दूसरी ओर वे विजयकामी थे। इतने में द्रोण के निकट आ उन्होंने उच्चस्वर से कहा—हे द्रोणाचार्य! तुम जिसके पीछे अस्त्र धारण किये हुए हो और जिसका मुख देख देख तुम जीते हो—वह तुम्हारा प्यारा पुत्र अश्वत्थामा युद्ध में मारा गया। जैसे वन में सिंह का मरा बच्चा पड़ा होता है, वैसे वह मरा हुआ रणभूमि में पड़ा है। इस पर द्रोणाचार्य ने धर्मराज से समर्थन करवाना चाहा और उनसे पूँछा। यद्यपि युधिष्ठिर को विदित था कि, मिथ्याभाषण में बड़ा दोष है तथापि उन्होंने अस्पष्ट वाणी से कहा—नरो वा कुञ्जरो वा। युधिष्ठिर के वचन को सुन कर द्रोणाचार्य को रण में तुम्हारे मारे जाने का विश्वास हो गया, वे मारे दुःख के अत्यन्त मर्माहत हुए और दिव्यास्त्र रख दिये और पूर्ववत् युद्ध करने का उनके मन में हौंसिला ही न रह गया। द्रोणाचार्य को परम खिन्न शोकविह्वल और अचेत सा देख, क्रूरकर्मा द्रुपदनन्दन धृष्टद्युम्न झपट कर उनके सामने गया। लोक-व्यवहार-कुशल-द्रोणाचार्य यह जानते थे कि, धृष्टद्युम्न मेरा नाश करने ही के लिये जन्मा है। अतः उन्होंने फिर हथियार न उठाया और योगबल से मन को स्थिर कर, वे अपने रथ पर जा बैठे। धृष्टद्युम्न द्रोण के रथ पर चढ़ गया और वामहस्त से उनके सिर के बालों को पकड़ लिया। उस समय, हैं हैं कह समस्त योद्धा चिल्लाये; किन्तु तलवार से उसने द्रोण का सिर काट लिया। सब लोग मना करते हुए चिल्लाते रहे और अर्जुन तो धृष्टद्युम्न के पीछे दौड़ा भी—किन्तु उसने खड्ग से द्रोणाचार्य का सिर काट लिया। अर्जुन ने चिल्ला कर यह भी कहा, आचार्य को जीवित पकड़ लाना—

जान से मत मारना। इस तरह कौरवों के तथा अर्जुन के रोकने पर भी क्रूरकर्मा धृष्टद्युम्न ने तुम्हारे पिता का सिर काट डाला। हे निर्दोष! इसीसे हम सब लोग और हमारी सेना के सब लोग भयभीत और उत्साहहीन हो रणक्षेत्र से भागे जा रहे हैं।

सञ्जय बोले—हे धृतराष्ट्र! रणक्षेत्र में स्थित अश्वत्थामा ने जब अपने पिता के मरने का समाचार सुना, तब वह पददलित सर्प की तरह क्रुद्ध हो गया। हे राजन्! जैसे बहुत सा ईंधन पा कर आग भभक उठती है, वैसे ही अश्वत्थामा, इस समय क्रोध से बहुत तमतमा उठा। मारे क्रोध के उसकी आँखें लाल हो गयीं। वह सर्प की तरह फुँसकारने लगा और दोनों हाथ मींजता हुआ दाँत कट कटाने लगा।

एक सौ चौरानबे का अध्याय

धृतराष्ट्र की जिज्ञासा

अश्वत्थामा ने अपने वृद्ध ब्राह्मण पिता द्रोणाचार्य के वध का संवाद सुन, क्या कहा? जो आचार्य द्रोण मानवास्त्र, अग्न्यस्त्र, वारुणास्त्र, ब्रह्मास्त्र और नारायणास्त्र के ज्ञाता थे, उन धर्मप्रेमी द्रोण को रण में अधर्म से धृष्टद्युम्न ने मार डाला था। इस वृत्तान्त को सुन पराक्रमी अश्वत्थामा ने क्या किया? द्रोणाचार्य ने परशुराम से धनुर्वेद सीखा था। फिर धनुर्वेद की शिक्षा अपने पुत्र अश्वत्थामा को दी थी। उसे उस विद्या में अपने समान बनाने के लिये द्रोण ने अश्वत्थामा को अस्त्र चलाने की विद्या सिखलायी थी। क्योंकि हे सञ्जय! इस संसार में प्रत्येक पुरुष यह तो अवश्य ही चाहते हैं कि, मेरा पुत्र मुझसे बढ़ चढ़ कर गुणवान हो। किन्तु यह अन्य लोगों की बढ़ती [illegible] सकता। महात्माओं एवं गुरुओं के पास जो सर्वोत्तम रहस्य होता है, उसे वे अपने पुत्र अथवा प्रिय शिष्य ही को बतलाते हैं। हे सञ्जय! अश्वत्थामा-द्रोणाचार्य का पुत्र तथा शिष्य भी है।

अतः उसे अपने पिता द्वारा अस्त्रविद्या का रहस्य पूर्ण रूप से प्राप्त हुआ है। अतः उसने अपने पिता एवं गुरु के बध का संवाद सुन क्या उत्तर दिया? द्रोणाचार्य शस्त्र धारण करने में श्रीरामचन्द्र के समान, पराक्रम में कार्त्तवीर्य के समान, धैर्य में पर्वत की तरह, तेज में अग्नि की तरह, अवस्था में वरुण की तरह, गम्भीरता में सागरोपम, क्रोध में विषधर सर्प की तरह, थे। वे सारे संसार में एक सर्वप्रधान रथी विख्यात थे। वे दृढ़ धनुर्धर, निरोग, अश्व सञ्चालन क्रिया में पटु, गर्जने में वायु सदृश और काल के समान क्रोधी थे। उन्होंने युद्ध में मारे बाणों के पृथिवी को अत्यन्त पीड़ित किया था। वे वीर और सत्य पराक्रमी पुरुष लड़ते समय तनक भी खिन्न नहीं होते थे। वे वेद में प्रवीण व्रतधारी, धनुर्विद्या के पारगामी और दशरथ के पुत्र राम के समान पराक्रमी और महासागर जैसे अक्षोभ्य थे। ऐसे धर्मात्मा द्रोण को अधर्म से धृष्टद्युम्न ने मार डाला। ये सब सुन अश्वत्थामा ने क्या कहा? पाञ्चालराज यज्ञसेन का पुत्र धृष्टद्युम्न तो द्रोण का नाश करने ही को जन्मा था। साथ ही धृष्टद्युम्न का वध करने के लिये अश्वत्थामा का जन्म हुआ था। उस अश्वत्थामा ने नृशंस, पापिष्ठ, भयङ्कर धृष्टद्युम्न के द्वारा आचार्य द्रोण का वध किये जाने की बात सुन, जो कहा हो वह मुझे सुनाओ।

एक सौ पंचानबे का अध्याय

अश्वत्थामा का रोष

सञ्जय ने कहा—हे धृतराष्ट्र! पापी धृष्टद्युम्न द्वारा अपने बाप द्रोणाचार्य का कपट से मारा जाना सुन, अश्वत्थामा क्रोध से अधीर हो, रोने लगा। हे राजेन्द्र! प्रलय के समय प्राणियों का संहार करना चाहने वाले यमराज का शरीर जैसा तमतमाता हुआ देख पड़ता है, वैसा ही क्रोध में भरे अश्वत्थामा का शरीर दिखलायी पड़ने लगा। आँसुओं को वारंवार

पोंछते हुए और मारे क्रोध के वारंवार लंबी साँसें ले अश्वत्थामा ने दुर्योधन से यह कहा—हे दुर्योधन ! मेरे पिता ने रण में हथियार रख दिये थे, तो भी इन नीचों ने तथा धर्मध्वजी धृष्टद्युम्न ने उनको मार डाला। उसके इस दुष्ट, नृशंस और पापकर्म को मैं जान गया हूँ। युधिष्ठिर ने जो अनार्थ और पाप कर्म किया है, उसे भी मैंने सुन लिया है। जो युद्धक्षेत्र में युद्ध करते हैं, उनका यदि रणनीति के अनुसार मरण हो जाय, तो वह उत्तम माना जाता है। इसके लिये दुःख भी नहीं होता। यह पुराने पण्डितों का मत है। हे पुरुषव्याघ्र ! मेरे पिता रण में मरण पा कर अवश्य ही स्वर्ग में गये हैं। अतः उनके मरण के लिये मुझे शोक करना उचित नहीं है। किन्तु मेरे पिता तो धर्मात्मा थे। तिस पर भी उस दुष्ट पापिष्ठ ने सब योद्धाओं के सामने मेरे पिता के केश पकड़ कर खींचे। इससे मुझे मर्मान्तक पीड़ा पहुँची है। मेरे जीते रहने पर भी वैरी ने मेरे पिता के केश पकड़ कर खैंचे ! तब तो अन्य पिता अपने पुत्रों की चाहना ही क्यों करेंगे ? काम, क्रोध, हर्ष, अथवा अज्ञान से जैसे लोग दूसरे का अपमान कर बैठते हैं, वैसे ही क्रूरकर्मा दुरात्मा धृष्टद्युम्न ने भी मेरा अपमान कर के वास्तव में बड़े अधर्म का काम किया है। अतः धृष्टद्युम्न को इस कर्म का अतिदारुण फल अवश्य भोगना पड़ेगा। धर्मराज ने भी असत्य बोल कर, बड़ा ही बुरा काम किया है। उन्होंने भी उस समय कपट चाल चल कर और धोखा दे, आचार्य के हाथ से हथियार रखा दिये थे। अतः अब यह पृथिवी धर्मराज के रुधिर को पियेगी। हे कौरववंशी राजन् ! मैं सत्य की तथा इष्टापूर्त्त की शपथ खा कर कहता हूँ कि, मैं सकल पांचालों का नाश किये बिना कभी जीवित न रहूँगा। कोमल या क्रूर हर एक काम कर के मैं रणभूमि में पापी धृष्टद्युम्न को मार डालूँगा। हे राजन् ! सकल पांचाल राजाओं का नाश कर चुकने के पीछे ही मैं शान्त हो कर बैठ सकूँगा। हे पुरुषसिंह ! मनुष्य इस संसार में तथा मरने के बाद स्वर्गलोक में गये हुए पितरों की महाभय से रक्षा करें ; परन्तु यहाँ तो उससे उलटा ही

कार्य हुआ है। मैं पहाड़ जैसे डीलडौल का पुत्र और शिष्य जीवित बैठा हूँ, तिस पर भी मेरे पिता की वैसी ही गति हुई, जैसी पुत्रहीन पिता की होती है। इस दशा में मेरे दिव्य अस्त्रों को, दोनों भुजदण्डों को और पराक्रम को धिक्कार है। मुझ जैसे पु के होते हुए भी मेरे पिता के केश खींचे गये। अतः हे भरतसत्तम! अब मैं कोई ऐसा कार्य करूँगा जिससे मैं अपने परलोकगत पिता के ऋण से उऋण हो जाऊँ। आर्यपुरुषों को स्वयं अपनी प्रशंसा कदापि न करनी चाहिये। किन्तु अपने पिता का मारा जाना मुझसे सहन नहीं होता। अतः मैं रोष में भर अपने पराक्रम के विषय में तुमसे कहता हूँ। आज मैं युद्ध में समस्त सेना का संहार कर, प्रलयकाल का दृश्य उपस्थित कर दूँगा। कृष्ण और पाण्डवों को भी मेरे शारीरिक बल का पता आज चल जायगा। मैं जिस समय रथ पर सवार हो, युद्धक्षेत्र में आऊँगा, उस समय देवता, गन्धर्व, असुर, राक्षस तथा महापुरुष मुझे पराजित कर सकेंगे। क्योंकि इस लोक में तो मुझसे और अर्जुन से अधिक अस्त्रविद्या का ज्ञाता और कोई नहीं है। जैसे किरणों वाली वस्तुओं में सूर्य है, वैसे ही प्रकाशवान् पदार्थों में मैं तेजस्वी हूँ। मैं सेना में खड़ा हो कर, आज दिव्यास्त्रों को छोड़ूँगा। आज बड़ी तेज़ी से छोड़े हुए मेरे बाण महारण में अपना पराक्रम दिखाते हुए पाण्डवों को मार डालेंगे। आज मेरे पैने बाणों से आच्छादित दिशाएँ जल की धाराओं से पूर्ण जैसी जान पड़ेंगी। जैसे आँधड़ पेड़ों का नाश कर डालता है, वैसे ही मैं युद्ध में चारों ओर को बाण मार कर चारों ओर से भयङ्कर स्वर वाले, शत्रुओं का संहार कर डालूँगा। मैं नारायणास्त्र को छोड़ने और लौटाने की विधि जानता हूँ। इस अस्त्र का—छोड़ना लौटाना अर्जुन, कृष्ण, भीम, नकुल, सहदेव, युधिष्ठिर, धृष्टद्युम्न, शिखण्डी और सात्यकि को भी नहीं आता। पूर्वकाल में मेरे पिता ने नारायण को प्रणाम कर, वेदमंत्रों से उनका पूजन किया था। तब भगवान् नारायण ने कृपा कर जब मेरे पिता से वर माँगने को कहा तब मेरे पिता ने उनसे नारायणास्त्र माँगा। तब देवश्रेष्ठ नारायण ने प्रसन्न हो मेरे

पिता से कहा था। युद्ध में कोई भी मनुष्य तुम्हारे समान न होगा। जो मैं तुम्हें यह अस्त्र देता हूँ। किन्तु हे ब्राह्मण ! इस अस्त्र को तू, किसी के भी ऊपर बिना सोचे समझे एक बारगी ही न छोड़ना। क्योंकि यह अस्त्र वैरी का नाश किये बिना पीछे नहीं लौटता। हे समर्थ द्रोण ! यह अस्त्र रण में किसका नाश करेगा—यह भी कोई नहीं जान सकता। यह अस्त्र तो अवध्य का भी नाश कर डालता है। अतः सहसा इसको न छोड़ना चाहिये। हे परन्तप ! इस महास्त्र से रणक्षेत्र में रथरहित का, शस्त्र त्यागने वाले का, प्राणरक्षा की याचना करने वाले का और शरणागत शत्रु का नाश नहीं करता प्रत्युत स्वयं गिर जाता है। अतः जब कोई मनुष्य महाभयङ्कर सङ्कट में आ पड़े, तभी वह युद्ध में सर्वथा अवध्य पुरुष को भी भली भाँति पीड़ित कर, नारायणास्त्र से उसका नाश करे।

यह कह नारायण ने मेरे पिता को नारायणास्त्र दे दिया। मेरे पिता ने उसका प्रयोग मुझे सिखा दिया है। मेरे पिता को नारायणास्त्र दे, नारायण ने उनसे कहा था—इस अस्त्र द्वारा तुम अन्य समस्त अस्त्रों का युद्ध में नाश कर सकोगे और समर में अभिवृद्ध तेज सम्पन्न हो प्रकाशित होवोगे। यह कह नारायण अपने लोक को चले गये। सो यह नारायणास्त्र, मुझे अपने पिता से प्राप्त हुआ है। जैसे इन्द्र समर में असुरों को भगाते हैं, वैसे ही मैं भी इस अस्त्र से पाण्डवों, पाँचालों, मत्स्यों और केकयों को भगा दूँगा। हे राजन् ! मैं जैसा चाहूँगा, वैसा ही मेरे बाण काम करेंगे। वैरी चाहे जैसा पराक्रम प्रदर्शित करें, तब भी मेरे बाण उन पर पड़ेंगे। मैं युद्ध करते समय निज इच्छानुसार पत्थरों की वर्षा भी करूँगा। आकाशगामी लोहे के मुख वाले बाण, मार कर, महारथियों को रण में से भगा दूँगा और मैं तेज़ किये हुए फरसे से भी शत्रुओं पर प्रहार करूँगा। फिर नारायणास्त्र मार कर, मैं पाण्डवों का अपमान करता हुआ शत्रुओं का संहार करूँगा। मित्र, ब्राह्मण और गुरुओं से द्रोह करने वाला—धूर्त, अत्यन्त निन्दा का पात्र और पाँचालाधम धृष्टद्युम्न, मेरे सामने से बच कर न जाने पावेगा।

अश्वत्थामा की इन बातों को सुन, उसकी अधीनस्थ सेना उसे चारों ओर से घेर कर आ खड़ी हुई। उस सेना के सैनिक हर्ष में भर, बड़े बड़े शङ्ख, सहस्रों भेरियाँ और हज़ारों डिमिडम बजाने लगे। घोड़ों की टापों और रथों के पहियों की धारों से पीड़ित पृथिवी गाजने लगी। उन सब के एकत्रित तुमुलनाद ने आकाश और पृथिवी को पूरित कर, प्रतिध्वनित किया। मेघगर्जन की तरह, इस ध्वनि को सुन, रथिश्रेष्ठ पाण्डव एकत्र हो सोचने लगे कि यह कोलाहल क्यों हो रहा है। हे राजन्! द्रोणपुत्र अश्वत्थामा ने दुर्योधन से यह कह कर, जल से आचमन किया और दिव्य नारायणास्त्र का प्रादुर्भाव किया।

एक सौ छियानवे का अध्याय

युधिष्ठिर और अर्जुन का वार्तालाप

सञ्जय ने कहा—हे धृतराष्ट्र! जब नारायणास्त्र प्रकट हो गया, तब बादलशून्य निर्मल आकाश में मेघगर्जन जैसा शब्द सुन पड़ा। पृथिवी काँप उठी, महासागर खलभला उठा। समुद्रगामिनी नदियों की धार उलटी बहने लगी। पर्वतशृङ्ग टूट टूट कर नीचे गिरने लगे। हिरन पाण्डवों की सेना की दहिनी ओर से बाईं ओर आने लगे। चारों ओर अन्धकार छा गया। सूर्य मलिन हो गया। माँसाहारी प्राणी बड़े हर्षित हुए और रणक्षेत्र की ओर आने लगे। नारायणास्त्र को देख कर, देवता, दानव और गन्धर्व भयभीत हो गये और विकल हो कहने लगे—अब क्या करें।

हे राजन्! अश्वत्थामा के भयङ्कर अस्त्रों को देख, अन्य समस्त राजा लोग भी भयभीत हो गये।

इस पर धृतराष्ट्र ने पूँछा—हे सञ्जय! अश्वत्थामा अपने पितृवध को सहन न कर सका। उसने शोक से सन्तप्त हो, अपनी सेना पीछे

लौटायी। किन्तु कौरवों ने जब पाण्डवों पर आक्रमण किया। तब 'धृष्टद्युम्न' की रक्षा के लिये पाण्डवों ने जो प्रबन्ध किया हो, वह मुझे बतलाओ।

सञ्जय ने कहा—हे धृतराष्ट्र! यद्यपि धर्मराज युधिष्ठिर ने आपके पुत्रों को भागते देखा था, तो भी जब उन्होंने कौरवों की सेना का तुमुल नाद सुना, तब उन्होंने अर्जुन से पूँछा—अर्जुन! आज धृष्टद्युम्न ने तलवार से द्रोण का सिर वैसे ही काट डाला है, जैसे इन्द्र ने वज्र से वृत्रासुर का वध किया था। इस घटना से कौरवों में उदासी छा गयी थी और वे अपनी जीत की आशा त्याग, अपनी रक्षा के लिये रणक्षेत्र से भाग खड़े हुए थे। उस समय समस्त रथों की ध्वजाएँ, छत्र, पताकाएँ रथ के ढाँचे आदि टूट फूट गये थे। पृष्ठरक्षक और सारथि मर गये थे। रथों के भीतरी भाग, धुरो, पहिये और जुए भी टूट गये थे। कितने ही राजा उस समय बड़ी तेज़ी से इधर उधर दौड़ते हुए रथों में बैठ, भाग गये थे। कोई रथी अपने टूटे रथों को छोड़ एड़ों से घोड़ों को हाँक, रणक्षेत्र से भागे थे। कितने ही सवारों के घोड़ों की पीठ से काठी खिसक गयी थी। तिस पर भी वे उन पर सवार हो भागे थे। कितने ही वीर पुरुष अपने पक्ष के बाणों के प्रहार से काठियों पर से गिर पड़े थे। बहुत से हाथियों के कंधों से लिपट गये थे। उस समय तीव्र बाणों के प्रहारों से पीड़ा पा कर, भागते हुए हाथी उन्हें इधर उधर लिये फिरते थे। शस्त्रों से रहित और कवचों से हीन अनेक वीर पुरुष अपने वाहनों पर से पृथिवी पर गिर पड़े थे। वे रथों के पहियों से कट गये थे और हाथियों के तथा घोड़ों के पैरों से कुचल गये थे। कितने ही दुःखी योद्धा सामर्थ्यहीन हो गये थे और एक दूसरे को न पहचानने के कारण अरे बाप रे! अरे बेटा रे! चिल्लाते हुए और भयभीत हो समरक्षेत्र से भाग रहे थे। कितने ही योद्धा घायल हो, बाप, बेटा, भाई और मित्रादि को रणक्षेत्र से अन्यत्र ले गये और उन [illegible] के शरीरों से कवच उतार उनके ऊपर जल के छींटे दिये। [illegible]! द्रोण के मारे जाने पर ऐसी दुर्दशा में पड़ कर कौरवों की सेना रणक्षेत्र से भाग गयी थी। सो अब वह सेना पीछे लौटी क्यों आ

रही है ? यदि इसका कारण तुम्हें मालूम हो तो मुझे बतला दो। देखो घोड़े हिनहिना रहे हैं—हाथी चिंघार रहे हैं, रथ के पहियों कि घरघराहट सुन पड़ रही है। इन सब का मिला हुआ महाशब्द सुन पड़ता है। कौरवों के सेना रूपी सागर में बड़ा भयङ्कर शब्द हो रहा है। बारंबार होते हुए उस भयङ्कर शब्द को सुन मेरे पक्ष के योद्धा काँप उठे हैं। उस तुमुल शब्द को सुन रोएँ खड़े हो रहे हैं। मुझे तो ऐसा जान पड़ता है कि, यह शब्द इन्द्र सहित तीनों लोकों को निगल जायगा। मुझे तो यह भयावह शब्द इन्द्र जैसा जान पड़ता है। मेरी समझ में तो द्रोणाचार्य के मारे जाने से कौरवों की ओर से प्रत्यक्ष हो इन्द्र लड़ने को आ रहे हैं। हे अर्जुन ! महाभयानक और महागर्जन को सुन मेरे पक्ष के महारथियों के शरीर रोमाञ्चित हो गये हैं। वे घबड़ाये हुए हैं। इन्द्रतुल्य यह कौन महारथी भागते हुए सैनिकों को रोक कर, लड़ने के लिये पीछे को लौटा रहा है। अर्जुन ने कहा—महाराज ! शस्त्र त्यागे हुए गुरु द्रोणाचार्य के रणक्षेत्र में मारे जाने पर, भागते हुए कौरव पक्षीय योद्धाओं को रोक कर, सिंहनाद करने वाले के विषय में आपका सशङ्कित होना ठीक है। कौरव पक्षीय योद्धा जिसके पराक्रम के सहारे महादारुण कर्म करने को उद्यत हो, उच्चस्वर से शङ्खनाद कर रहे हैं, उस मतवाले गज जैसी चाल चलने वाले, लज्जालु, उग्रकर्मा, व्याघ्र-मुख, महाबाहु और कौरवों के अभयदाता पुरुष के सम्बन्ध में मैं आपसे निवेदन करता हूँ। जिसके जन्म के समय उसके पिता ने एक सहस्र गौएँ उपयुक्त एवं पूज्य ब्राह्मणों को दान में दी थीं, वही महाबली अश्वत्थामा सिंहनाद कर रहा है। जिसने जन्मकाल में उच्चैःश्रवा घोड़े की तरह हिन-हिना कर, तीनों लोकों को थरथरा दिया था, उसका नाम किसी अदृश्य रहने वाले प्राणी ने अश्वत्थामा रखा था। हे युधिष्ठिर ! उसी वीर अश्वत्थामा का यह सिंहनाद है। धृष्टद्युम्न ने बड़ी नृशंसता के साथ अनाथ की तरह द्रोण के केश पकड़ कर उन्हें मारा है, अतएव अश्वत्थामा उसका बदला लेने के लिये, खड़ा हुआ है। धृष्टद्युम्न ने मेरे गुरु की चोटी पकड़ उनको पटका था—सो

इस अपराध को निज पराक्रम को जानने वाला अश्वत्थामा कभी नहीं सहन करेगा। तुम धर्मज्ञ हो, तिस पर भी तुमने गुरु से मिथ्याभाषण किया। अतः धर्मज्ञ हो कर भी तुमने यह बड़ा भारी पापकर्म किया है। अतः बालि-वध से जैसे श्रीरामचन्द्र की सचराचर लोक में निन्दा हुई, वैसे ही द्रोण को मरवा देने के कारण तुम्हारी भी सर्वत्र चिरकाल तक अपकीर्ति बनी रहेगी। पाण्डुपुत्र युधिष्ठिर सब धर्मों को जानने वाला है, मेरा शिष्य है और कभी झूँठ नहीं बोलता। यह समझ कर ही द्रोणाचार्य ने तुम्हारे ऊपर विश्वास किया था; किन्तु तुमने सत्य के लबादे में असत्य को छिपा कर, आचार्य से कहा—"नरो वा कुञ्जरो वा" यह सुनते ही आचार्य ममताशून्य और चेतना रहित हो गये। उन्होंने हथियार रख दिये। पुत्रवत्सल द्रोण, पुत्रशोक से अचेत और विह्वल हो गये। उस समय मैंने उनको देखा था। इस तरह तुमने सनातन धर्म को त्याग कर, शस्त्र त्यागे हुए गुरु का कपट से वध करवा डाला है। अतः यदि तुममें और तुम्हारे मंत्रियों में धृष्टद्युम्न की रक्षा करने की शक्ति हो, तो उसे बचाओ। क्योंकि पितृवध के कारण कोप में भरे हुए अश्वत्थामा ने उस पर आक्रमण कर, उसे घेर लिया है। इससे तो आज धृष्टद्युम्न की रक्षा हो न सकेगी। क्योंकि जो अश्वत्थामा सब प्राणियों पर प्रेम करता है और दिव्य पुरुष है वह अपने पिता की चोटी खैंची जाने की बात सुन, हम सब को जला कर भस्म कर डालेगा। मुझ आचार्यभक्त ने बारंबार वर्जा। तिस पर भी शिष्यधर्म को त्याग धृष्टद्युम्न ने गुरु को मार डाला। इसका कारण यह है कि हमारी आयु का अधिकांश भाग व्यतीत हो कर, अब थोड़ा सा शेष रह गया है। अतः अब हमारी बुद्धि ठिकाने नहीं रही। उसीकी प्रेरणा से हमारे द्वारा यह महाअधर्म का कार्य हुआ है। जो गुरुदेव सदा हम लोगों के ऊपर पिता की तरह स्नेह करते थे और हमें अपना धर्मपुत्र मानते थे, उन्हीं गुरु को कतिपय दिनों के राज्यभोग के लिये हमने मरवा डाला।

राजन्! धृतराष्ट्र ने भीष्म एवं द्रोण को उनकी सेवा में संलग्न अपने

समस्त पुत्रों सहित सम्पूर्ण पृथिवी भेट कर दी थी। हमारे शत्रुओं ने उनको देखी उत्तम आजीविका दी और वे लोग सदा उनका बड़ा सम्मान किया करते थे। इतना होने पर भी गुरु द्रोण मुझे निज पुत्रवत् मानते थे। वे ही गुरुदेव युद्ध में अपने एकमात्र पुत्र अश्वत्थामा के मारे जाने का संवाद सुन हथियार रख, तुम्हारी और मेरी ओर देखते हुए बैठे हुए थे। तिस पर भी वे मार डाले गये। यदि वे हथियार न रख लड़ते रहते तो इन्द्र भी उनका बाल बाँका नहीं कर सकते थे। ऐसे अपने उपकारी एवं वृद्ध आचार्य का हम अनार्यों ने राज्य के लालच में पड़ वध करवा डाला। हरे! हरे! हमसे बड़ा नृशंस पापकर्म बन पड़ा है। हमने राज्य पाने के लालच में पड़, सद्गुणी गुरु द्रोण का नाश किया है। मेरे गुरु द्रोण को यह विदित था कि मेरे शिष्य अर्जुन की मेरे प्रति भक्ति है। इसीसे मेरे पीछे वह अपने पुत्र, भाई, पिता तथा सगे नातेदार तक को छोड़ देगा। किन्तु मैं तो राज्य के लोभ में फँस, अपने उन्हीं गुरुदेव का वध अपनी इन आँखों से देखता रहा। अतः हे राजन! मैं तो औंधे मुख नरक में गिर पड़ा। अपने गुरु, तिस पर ब्राह्मण और वयोवृद्ध आचार्य को, जो हथियार छोड़ चुके थे, मरवा कर, मेरे लिये तो अब जीने की अपेक्षा, मर जाना ही श्रेयस्कर है।

एक सौ सत्तानवे का अध्याय

भीमसेन और धृष्टद्युम्न

सञ्जय ने कहा—हे धृतराष्ट्र! अर्जुन की इन बातों को सुन वहाँ उपस्थित महारथियों ने अच्छा बुरा कुछ भी न कहा। किन्तु भीमसेन बहुत क्रुद्ध हुए और अर्जुन की निन्दा करते हुए कहने लगे। अर्जुन! वनवासी मुनि और दण्ड रहित ब्रह्मचारी परमहंस जिस प्रकार धर्मोपदेश देते हैं, वैसे ही तुम भी आज धर्मोपदेश दे रहे हो। जो स्त्री और साधु के

विषय में दया से काम लेता है; जो युद्ध में अपनी और दूसरों की रक्षा करता है; वही क्षत्रिय शीघ्र ही इस धराधाम में पुण्य, कीर्ति और लक्ष्मी प्राप्त करता है। तुम स्वयं भी इन समस्त क्षत्रियोचित गुणों से युक्त और शूरवीर हो। फिर भी तुम मूर्ख जैसी बातें क्यों कह रहे हो? ऐसी बातों का कहना तुम्हें नहीं सोहता। पराक्रम में तुम इन्द्र तुल्य हो और जैसे समुद्र अपने तट को अतिक्रम नहीं करता; वैसे ही तुम धर्म का अतिक्रम नहीं करते। किन्तु तेरह वर्षों से संचित क्रोध को पीठ दे, तुम धर्म धर्म पुकारते हो। अतः आज कौन तुम्हारा सम्मान न करेगा? अर्जुन! तुम्हारा मन स्वधर्मानुसार चलता है और तुम्हारी बुद्धि में सदा दया बनी रहती है। सो यह तो बड़ी ही अच्छी बात है। किन्तु हम धर्मानुसार बर्ताव करते थे, तब भी बैरियों ने अधर्म से हमारा राज्य अपहृत कर लिया, भरी सभा में द्रौपदी को खड़ा कर उसका घोर अपमान किया। हमने ऐसा कोई काम नहीं किया था, जिसके लिये हम वनवास के दण्ड से दण्डित किये जाते। तिस पर भी शत्रुओं ने वल्कल और मृगचर्म पहना हमें तेरह वर्षों के लिये वन में निकाल दिया। हे अर्जुन! ये सब बातें सर्वथा असह्य थीं। किन्तु हम लोगों ने सहीं। यह सब बैरियों ने क्या धर्मोचित काम किया था? मैं तो ऐसे शत्रुओं को तथा उनके इन अधर्म कृत्यों को स्मरण कर, और राज पाट छीनने वाले अपने बैरियों और उनके सहायकों को तुम्हारी सहायता से, निश्चय ही मार डालूँगा। पहले तुमने कहा था कि, तुम यहाँ लड़ने को एकत्रित हुए हो, और अपनी शक्ति के अनुसार तुम युद्ध भी करोगे; किन्तु मैं देखता हूँ कि, वे ही तुम आज धर्म के नाम पर मेरी निन्दा करते हो। तुम पहले जो बात स्वयं कह चुके हो, उसीको तुम आज मिथ्या कर रहे हो। मैं इस समय भयभीत और घायल हूँ। ऐसी दशा में तुम्हारी ये बातें मेरे मन में वैसी ही वेदना उत्पन्न कर रही हैं, जैसे घाव पर निमक। तुम्हारी बातों रूपी छुरी से मेरा हृदय विदीर्ण हुआ जाता है। तुम धार्मिक हो कर भी इस बड़े अधर्म को नहीं समझते। तुम्हें तो अपनी और मेरा

प्रशंसा करनी चाहिये थी, किन्तु तुम प्रशंसा नहीं करते। श्रीकृष्ण के सामने ही तुम अश्वत्थामा की प्रशंसा कर रहे हो, किन्तु अश्वत्थामा तो तुम्हारी सोलहवीं कला के समान भी नहीं है। हे धनञ्जय! तुम्हें अपने दोष कहते लज्जा क्यों मालूम नहीं होती। यदि मैं क्रुद्ध होऊँ तो पृथिवी को चीर डालूँ; पहाड़ों को तोड़ कर गिरा दूँ। भयानक तथा सुवर्ण की माला वाली इस विशाल गदा को घुमा कर, पवन की तरह पहाड़ से मोटे मोटे वृक्षों को तोड़ कर गिरा दूँ। इन्द्र सहित देवताओं को, राक्षसों को, असुरों को, नागों को और मनुष्यों को भी बाणवृष्टि कर मैं भगा सकता हूँ। अर्जुन! जब तुम्हारा सहोदर भाई ऐसा पराक्रमी है, तब तुम्हें अश्वत्थामा से तो ज़रा भी न डरना चाहिये। हे बीभत्सु! तुम अन्य सब भाइयों को ले यहीं बैठे रहो, अकेला मैं ही गदा ले, युद्ध में अश्वत्थामा को हराऊँगा।

जब भीमसेन ने इस प्रकार कहा—तब धृष्टद्युम्न ने अत्यन्त क्रुद्ध हो और गर्जना करते हुए अर्जुन से वैसे ही कहा जैसे विष्णु से हिरण्यकशिपु ने कहा था। धृष्टद्युम्न बोला—अर्जुन! ऋषि मुनियों के मतानुसार ब्राह्मणों के कर्म इस प्रकार हैं—यज्ञ कराना, यज्ञ करना; वेद पढ़ना, पढ़ाना, दान देना, दान लेना। इन छः ब्राह्मणोचित कर्मों में से द्रोण कौन सा कर्म करते थे, जिसके लिये, तुम मेरी निन्दा इसलिये करते हो कि मैंने उनको मार डाला। वे अपने कर्म से भ्रष्ट हो गये थे और उन्होंने क्षात्रधर्म अंगीकार कर लिया था। वह दिव्य अस्त्रों से हमें मार रहे थे, तथा क्षुद्र कर्म करने वाले थे। जिसने अलौकिक अस्त्रों से मेरी सेना के योद्धाओं का वध किया है, वैसे असह्य, कपटी, अधम ब्राह्मण का, जो पुरुष कपट ही से वध करे, क्या उसके साथ साथ सद्व्यवहार करना उचित है? जो हो, मैंने उस दुःशील को मार डाला है। इसीसे उसका पुत्र अश्वत्थामा क्रोध में भर, भयङ्कर सिंहनाद कर रहा है। इसका मुझे कुछ भी आश्चर्य नहीं है। वह भागते हुए कौरवों को लौटा कर, युद्ध करने के लिये ही सिंहनाद कर रहा है। किन्तु वह स्वयं उनकी रक्षा करने में असमर्थ हो, अंत में उन सब का

नाश करवायेगा। अर्जुन! तुम अपने के धर्मात्मा बतला और मुझे गुरु-घाती कह मेरी जो निन्दा कर रहे हो—सो क्या तुम्हें इसका भेद नहीं मालूम? मैं तो द्रोण का वध करने ही के लिये पाञ्चालराज के यहाँ पुत्र रूप से अग्नि से उत्पन्न हुआ हूँ। हे अर्जुन! युद्ध के समय जिसे कार्याकार्य का ज्ञान समभाव से था, ऐसे पुरुष को तुम ब्राह्मण या क्षत्रिय क्योंकर निश्चय करोगे? विशेष कर, जिन्होंने अस्त्र विद्या न जानने वाले सामान्य योद्धाओं को ब्रह्मास्त्र से संहार किया, उन्हें जैसे बने वैसे मार डालना क्या उचित नहीं है? हे धर्म-अर्थ-तत्त्वज्ञ! धर्मवेत्ताओं ने विधर्मी को विष तुल्य परित्याज्य बतलाया है। अतः तुम इन सब बातों को जानते हुए भी मेरी निन्दा क्यों करते हो? उस दुष्ट का वध तो मैंने उसके रथ पर आक्रमण कर के ही किया है। अतः मैं निन्दा का नहीं प्रत्युत प्रशंसा का पात्र हूँ। हे अर्जुन! मैंने साक्षात् प्रलयकाल के अग्नि अथवा सूर्य के समान तेजस्वी हो, द्रोण का शिरच्छेद किया है। अतः तुम मेरी प्रशंसा क्यों नहीं करते? द्रोण ने मेरे ही बन्धु बान्धवों का नाश किया है—दूसरे का नहीं—अतः मुझे द्रोण के सिर काटने का कुछ भी विषाद नहीं है। जयद्रथ के सिर की तरह द्रोण के सिर को कुत्तों और शृगालों को अर्पण न कर सकने के कारण मेरे मर्मस्थल विदीर्ण हो रहे हैं। अर्जुन! यह तो एक प्रसिद्ध बात है कि शत्रु का वध न करने से पाप लगता है। क्योंकि यदि शत्रु का वध न कर सके तो शत्रु के हाथ से मरना ही क्षत्रियों का धर्म है। हे अर्जुन! तुमने जिस धर्म के सहारे अपने पितृसखा भगदत्त का वध किया है, मैंने भी उसी धर्मानुसार अपने वैरी द्रोण का नाश किया है। फिर यदि तुम भीष्म पितामह का वध कर के भी धर्म का कार्य समझ सकते हो, तो मैं भी अपने अनिष्टकारक शत्रु का नाश कर, क्योंकर अधर्मी ठहराया जा सकता हूँ। जैसे हाथी, अपने सवार के सामने, अपने शरीर को झुका सीढ़ी जैसा बना देता है, वैसे ही मैं भी सम्बन्धी होने के कारण तुम्हारे सामने अवनत हो रहा हूँ। इसीसे तो तुम मुझसे ऐसी कड़ी कड़ी

बातें कह रहे हो। जो हो केवल द्रौपदी और उसके पुत्रों के अनुरोध से मुझे तुम्हारा यह अपराध क्षमा करना पड़ता है। अर्जुन! द्रोणाचार्य के साथ हम लोगों का कुलक्रमागत वैर था। यह बात सब लोगों को मालूम है। क्या तुम्हें नहीं मालूम? अर्जुन! तुम्हारे ज्येष्ठ भ्राता युधिष्ठिर मिथ्यावादी नहीं हैं? मैं भी अधार्मिक नहीं हूँ। पापी द्रोणाचार्य शिष्यद्रोही थे, अतः वे मारे गये। इससे तुम लड़ो—तुम्हारा निश्चय विजय होगा।

एक सौ अट्ठानवे का अध्याय

धृष्टद्युम्न और सात्यकि की तड़पा-तड़पी

धृतराष्ट्र बोले—हे सञ्जय! जिस महात्मा ने लोकानुरोध से यथाविधि साङ्गोपाङ्ग समस्त वेदों का अध्ययन किया था, जिसके सम्मुख धनुर्वेद मूर्तिमान हो उपस्थित रहता था, जिसकी कृपा से पुरुषश्रेष्ठ राजा लोग ऐसे कठिन और अलौकिक कार्य कर रहे हैं, जिन्हें देवता भी नहीं कर सकते, वे ही महर्षि भरद्वाजपुत्र आचार्य द्रोण, जब नीचमना पापिष्ठ, गुरुघाती एवं तुच्छ धृष्टद्युम्न के हाथ से मारे गये; उस समय किसी क्षत्रिय योद्धा ने क्रोध में भर आक्रमण नहीं किया। ऐसे क्रोध और क्षत्रिय कुल को धिक्कार है। हे सञ्जय! चाहे जो कुछ हो; उस समय धृष्टद्युम्न के वचन को सुन, महाधनुधर अर्जुन तथा अन्य राजाओं ने उसे क्या उत्तर दिया? उस वृत्तान्त को अब तुम मुझे सुनाओ।

सञ्जय बोले—राजन्! क्रूरकर्मा धृष्टद्युम्न के वचनों को सुन, उस समय राजाओं ने कुछ भी उत्तर न दिया। किन्तु अर्जुन ने वक्र दृष्टि से उसकी ओर देख, इतना ही कहा—धिक्कार है; फिर वे लंबी सांसें ले—नेत्रों से आँसू टपकाने लगे। युधिष्ठिर, भीमसेन, नकुल और सहदेव और

श्रीकृष्णचन्द्र अत्यन्त लज्जित हुए। उस समय केवल सात्यकि ने धृष्टद्युम्न को यह उत्तर दिया।

ओहो! यहाँ क्या कोई एक भी ऐसा मनुष्य नहीं जो अन्यायोचित वचन कहने वाले इस अधम एवं पापी धृष्टद्युम्न का तुरन्त नाश कर सके? रे धृष्टद्युम्न! जैसे ब्राह्मण लोग चाण्डाल की निन्दा करते हैं, वैसे ही तेरे पापाचरण से पाण्डवों की सेना के सम्पूर्ण पुरुष तेरी निन्दा करते हैं। लोकसमाज में तू इस प्रकार आर्य पुरुषों से निन्दित एक बड़े भारी पापकर्म को कर के भी निर्भीक हो बातें कहता हुआ लजाता नहीं। अरे नीच बुद्धि वाले! क्या तू गुरु का वध कर पतित नहीं हुआ। इस समय भी तेरे सिर और जिह्वा के सौ टुकड़े क्यों नहीं हो जाते। तू जिस कर्म को कर, जनसमुदाय में अपनी प्रशंसा कर रहा है, उससे तुझे पाण्डव और अन्धक पतित समझते हैं। जब तू ऐसा पतित कर्म कर के ऊपर से आचार्य की निन्दा करता है, तब तो इसी समय तेरा वध कर डालना ही उचित है। तुझे अब एक क्षण भी जीवित रखने की आवश्यकता नहीं है। अरे नराधम! तुझको छोड़ और कौन अपने गुरु की चोटी पकड़ उनका सिर काट सकता है। राजा द्रुपद के कुल में तू ऐसा कुलकलङ्क जन्मा है कि, तेरी करतूत से तेरी सात अगली और सात पिछली पीढ़ियाँ यशभ्रष्ट हो, नरक में गिरी हैं। तूने अभी जो अर्जुन के हाथ से भीष्म के मारे जाने की बात उठायी थी, वैसी मृत्यु का विधान तो भीष्म पितामह ने स्वयं ही किया था। किन्तु भीष्म का भी वध करने वाला, वास्तव में तेरा सहोदर भाई शिखण्डी ही है। इस धराधाम पर पाञ्चाल राजपुत्रों को छोड़ और दूसरा कौन ऐसा पुरुष होगा, जो इस प्रकार पापपूरित कर्मों को करेगा? तेरे पिता ने भीष्मवध के लिये ही न शिखण्डी को पैदा किया था? रण में अर्जुन ने शिखण्डी की रक्षा की थी—पर भीष्म का वध तो शिखण्डी ही ने किया था। मित्रद्रोही, गुरुद्रोही, नीचमना, पाञ्चाल लोग तुझे और शिखण्डी जैसों को पुत्ररूप में पा कर ही धर्मभ्रष्ट और जनसमाज में तिरस्करणीय हुए हैं।

यदि तूने फिर मेरे सामने ऐसी अन्याय युक्त बातें कहीं, तो मैं अपनी वज्रतुल्य भयङ्कर गदा से तेरा सिर चकनाचूर कर डालूँगा। रे पापी! ब्रह्महत्यारे को देख लोग प्रायश्चित्त के लिये सूर्य का दर्शन करते हैं। तुझे भी ब्रह्महत्या का पाप लगा है। अतः तेरा मुख देख कर भी सूर्यदर्शन कर प्रायश्चित्त करना पड़ेगा। रे नीच पाञ्चाल राजनन्दन! तू मेरे ही आगे मेरे गुरु तथा गुरु के गुरु की वारंवार निन्दा करता हुआ लज्जित नहीं होता। अच्छा मेरी गदा का प्रहार तू सह। मैं तो तेरी गदा के प्रहार को अनेक बार सहन करूँगा।

महाराज! सात्यकि ने क्रोध में भर जब धृष्टद्युम्न से ऐसे कठोर वचन कहे और उसका इस प्रकार अपमान किया, तब धृष्टद्युम्न ने सात्यकि से कहा—मैंने तुम्हारी सब बातें सुनीं और क्षमा भी किया। क्योंकि दुष्ट एवं नीच सदैव से साधुजनों का अपमान करने की चाहना किया ही करते हैं। इस लोक में क्षमा ही प्रशंसनीय है। क्योंकि क्षमावान् पुरुष का कोई अनिष्ट नहीं हो सकता। किन्तु जो पापी और दुष्टजन होते हैं वे क्षमावान् को सामर्थ्यहीन समझ बैठते हैं। तू भी उसी तरह पापी और नीच है। तेरा नख से शिख तक सारा शरीर निन्द्य है। तिस पर भी तू दूसरे की निन्दा करने का साहस करता है। बड़े आश्चर्य की बात है कि, लोगों के वारंवार निषेध करने पर भी तूने योगयुक्त उस भूरिश्रवा की गर्दन काट डाली, जिसकी भुजा अर्जुन काट चुका था। इससे बढ़ कर पापकर्म और क्या होगा? अरे क्रूर स्वभाव! यद्यपि द्रोणाचार्य अस्त्ररहित थे; तथापि कुरुसेना के वीर उनकी रक्षा में नियुक्त थे। मैंने उसी समय दिव्यास्त्र से उनका वध किया है। भला इससे मुझे क्या पाप लग सकता है? सात्यकि! पाप तो तुझे लगा है, क्योंकि तूने दूसरे के अस्त्र से कटी हुई भुजा वाले, युद्ध से विरत, योगयुक्त एवं मौनावलम्बी अस्त्ररहित भूरिश्रवा का वध किया है। अतः तू किस मुँह से दूसरे को अधर्मी कह सकता है? पराक्रमी भूरिश्रवा ने जिस समय तुझे भूमि पर दबोच कर, तेरी छाती में लात मारी थी, उस समय तेरा बल और पुरुषार्थ कहाँ था? उस समय अपना पुरुषार्थ दिखा, तूने क्यों

उसका वध नहीं कर डाला? प्रबलप्रतापी सोमदत्तपुत्र भूरिश्रवा जब पहले अर्जुन के बाण से भुजा कट जाने पर युद्ध से विरत हो और मन को एकाग्र कर, ईश्वर का ध्यान कर रहा था, तब तुझ नीच ने उसका वध किया था। द्रोणाचार्य ने जहाँ जहाँ पाण्डवों की सेना को छिन्न भिन्न कर, भगाया था, मैंने वहाँ वहाँ अगणित बाण छोड़ उनका सामना किया था। अस्तु, स्वयं चाण्डालवत् कार्य कर और जनसमाज की दृष्टि में स्वयं निन्दा का पात्र बन कर, तू मुझसे कठोर वचन क्यों कहता है? अरे वृष्णि कुल-कलङ्क! तू स्वयं पापकर्म करने वाला और कुकर्मी है। मैं अधर्मी नहीं हूँ। अतः अब मेरे विषय में कठोर वचन मत कहना। नीचों की तरह मेरे बारे में तू जो कुछ, बोलने की इच्छा कर रहा है, उसे फिर कभी न कहना। अब चुप साध ले और यदि इस पर भी मूर्खतावश तू फेर कुछ बोला, तो मैं अपने पैने बाणों से तुझे मार डालूँगा। रे मूर्ख! विजय प्राप्त करने के लिये केवल धर्म ही पर्याप्त नहीं है। कौरवों ने जो पापाचरण किये हैं, उन्हें सुन। प्रथम तो उन्होंने कपट से राजा युधिष्ठिर को ठगा। फिर द्रौपदी को कैसे कैसे कष्ट झेलने पड़े। तदनन्तर पाण्डवों ने कपट द्यूत द्वारा अपने राज-पाट से हाथ धोये। फिर द्रौपदी सहित वे वनवासी हुए। उन लोगों ने कपट चाल चल एवं अधर्मावलम्बन कर मद्रराज शल्य को अपनी ओर किया। फिर अधर्मयुद्ध कर सुभद्रानन्दन अभिमन्यु का वध किया। इतना सह कर पाण्डवों ने भी कपट चाल चल भीष्म का वध किया। तूने भी अधर्म कर, भूरिश्रवा का वध किया। इसी प्रकार वीर कौरवों और पाण्डवों ने अपनी अपनी जीत के लिये, समय समय पर अधर्माचरण किये हैं। हे सात्यकि! धर्माधर्म को जानना बड़ा कठिन बात है। अतः इस समय तू क्रोध में भर अपने पिता के निकट यमलोक में जाने की इच्छा क्यों करता है? जा और कौरवों से लड़।

सञ्जय बोले—हे धृतराष्ट्र! महारथी सात्यकि धृष्टद्युम्न के ऐसे वचन सुन कर, बड़ा कुपित हुआ। उस समय मारे क्रोध के उसकी आँखें लाल

हो गयीं। वह धनुष बाण उठा के रथ में रख साँप की तरह लंबी साँसें लेने लगा और गदा उठा रथ से कूद पड़ा। फिर अभिमान में भर उसने धृष्टद्युम्न से यह कहा—तू मार डालने योग्य है। अतः अब तुझसे कुछ भी न कह कर, अब मैं तेरा वध करूँगा। महाबली सात्यकि यमराज जैसे कालदण्ड समान गदा को ले, बड़े वेग से धृष्टद्युम्न की ओर लपका। तब महाबलवान भीमसेन ने श्रीकृष्ण के कहने से रथ से कूद सात्यकि को पकड़ लिया। बलवान सात्यकि भीमसेन को खींचता हुआ ही गमन करने लगा। अनन्तर भीम ने बल लगा पाँच पग आगे जा छठवें पग में सात्यकि को रोक पाया। तब सहदेव ने सात्यकि से ये मधुर वचन कहे—हे पुरुषसिंह! वृष्णि, अन्धक, पाञ्चाल योद्धाओं के अतिरिक्त और कोई भी हम लोगों को अधिक प्यारा नहीं है। वृष्णि एवं अन्धकवंशियों में श्रीकृष्ण का हम लोगों से अधिक प्रिय मित्र अन्य कोई नहीं है। पाञ्चाल योद्धाओं को, वृष्णि तथा अन्धक वंशियों के समान मित्र इस पृथिवी भर में ढूँढ़ने से भी न मिलेगा। अतः जैसे आप लोग हम लोगों के और हम लोग आपके मित्र हैं, वैसे ही धृष्टद्युम्न भी हमारे तथा आपके मित्र ही हैं। हे सात्यकि! आप धर्म के समस्त तत्त्वों के ज्ञाता हैं। अतः क्रोध त्याग, तुम्हें धृष्टद्युम्न के ऊपर प्रसन्न होना चाहिये। देखिये क्षमा से बढ़ कर उत्तम और कोई वस्तु नहीं है। इसी से हम लोग इस बारे में शान्त हैं। इस समय आप लोग आपस में एक दूसरे को क्षमा करें।

हे राजन्! जब सहदेव ने इस प्रकार सात्यकि को शान्त किया। तब धृष्टद्युम्न ने मुसक्या कर यह कहा—हे भीमसेन! तुम इस युद्धदुर्मद शिनि-पौत्र सात्यकि को छोड़ दो। क्योंकि यह मेरे निकट आ, वैसे ही प्राणहीन हो जायगा; जैसे पवन, पर्वत में आ समा जाता है। मैं अभी अपने पैने बाणों से युद्धाभिलाषी सात्यकि का संहार किये डालता हूँ। देखो, कौरव बड़ी तेज़ी के साथ मेरी ओर बढ़े चले आ रहे हैं। अतः अब मैं उन लोगों का सामना क्या कर सकूँगा? पाण्डवों के लिये अब बड़ा विषम कार्य

उपस्थित हैं। अथवा अकेला अर्जुन ही कौरवों को रोक लेगा। मैं तो सर्व-प्रथम अपने तेज़ बाणों से सात्यकि का सिर काटूँगा। सात्यकि ने क्या मुझे छटी भुजा वाला भूरिश्रवा समझ रखा है? हे भीम! तुम उसे छोड़ दो, या तो आज मैं ही उसका काम तमाम करूँगा—अथवा वही मेरा वध करेगा। भीमसेन की दोनों भुजाओं के बीच में स्थित बली सात्यकि, धृष्टद्युम्न के इन अभिमान भरे वचनों को सुन, मारे क्रोध के थर थर काँपने लगा। जब वे दोनों बलवान वीर, दो बलवान साँड़ों की तरह बारंबार गर्जने लगे, तब श्रीकृष्णचन्द्र और धर्मराज युधिष्ठिर ने तुरन्त, वहाँ जा यत्नपूर्वक उन दोनों को शान्त किया। तदनन्तर मुख्य मुख्य पराक्रमी क्षत्रिय वीर लोग, उन दोनों महाधनुर्धरों को रोक कर, कौरवों के योद्धाओं के साथ लड़ने को उनके सामने जा डटे।

एक सौ निन्यानवे का अध्याय

अश्वत्थामा द्वारा नारायणास्त्र का प्रयोग

सञ्जय ने कहा—हे धृतराष्ट्र! इस ओर द्रोणसुत अश्वत्थामा काल की तरह शत्रुसैन्य के योद्धाओं का नाश करने लगा। उसने भल्ल बाणों से शत्रुओं का संहार कर, उनके शवों से समरक्षेत्र परिपूर्ण कर दिया। उस समय समरक्षेत्र में मुर्दों के ढेर पर्वत जैसे जान पड़ते थे। ध्वजा पताकाएँ उस पर्वत के वृक्ष स्वरूप, शस्त्र उसके शृङ्ग, मृत गज एवं अश्व शिला खण्ड के समान जान पड़ते थे। शवों के ढेर रूपी पर्वत, माँसभक्षी पशुपक्षियों के भयङ्कर चीत्कार से युक्त और भूतों, प्रेतों, यक्षों तथा राक्षसों से सेवित हो कर, बड़े भयानक जान पड़ते थे।

फिर अश्वत्थामा ने भयङ्कर सिंहनाद कर, आपके पुत्र दुर्योधन को अपनी प्रतिज्ञा सुनायी। अश्वत्थामा ने कहा—हे राजन्! जब धर्मध्वजी युधिष्ठिर ने अपने गुरुदेव से, मिथ्याभाषण कर, अस्त्र त्याग कराया है; तब मैं उसके

सामने ही उसकी सारी सेना को छिन्न भिन्न कर के भगा दूँगा। फिर समस्त सैनिकों को परास्त कर उस क्रूर स्वभाव वाले धृष्टद्युम्न का वध करूँगा। आप अपनी ओर के समस्त योद्धाओं को लड़ने के लिये उत्साहित करें। मैं आपके सामने सत्य प्रतिज्ञा करता हूँ कि, आज शत्रुपक्ष के जो योद्धा मेरे सामने पड़ जायँगे, वे फिर जीवित लौट कर न जाने पावेंगे।

हे राजन्! आपका पुत्र दुर्योधन गुरुपुत्र अश्वत्थामा के इन वचनों को सुन हर्षित हुआ और सिंहनाद कर, उसने अपनी सेना के समस्त योद्धाओं को लड़ने के लिये उत्साहित किया। तब उमड़ते हुए दो समुद्रों की तरह कौरवों और पाण्डवों की सेनाओं में घोर युद्ध होने लगा। उस समय कौरव अश्वत्थामा के पराक्रम से गर्वित और पाञ्चाल योद्धा द्रोणवध से उत्साहित हो रहे थे। अतः उन दोनों सेनाओं के योद्धा अपने अपने विजय की कामना से क्रोध और अभिमान में भर, महाघोर युद्ध करने लगे। उस समय दोनों सेनाओं के बीच महाघोर कोलाहल होने लगा। जैसे एक पहाड़ से दूसरे पहाड़ की ओर लहराते हुए एक समुद्र से दूसरे समुद्र की टक्कर होने पर भयङ्कर शब्द होता है, वैसे ही कौरवों और पाण्डवों की सेनाओं के पुरुषों के संग्राम के समय अस्त्र शस्त्रों की झनकार और रथादयों का घोर शब्द सुनायी पड़ने लगा। तदनन्तर दोनों सेनाओं के बीच असंख्य शङ्ख, भेरी, ढोल, नगाड़े आदि जुझाऊ बाजे बजने लगे। किन्तु कौरवसेना के बीच समुद्र मन्थन जैसा महाभयङ्कर शब्द हुआ। जब अश्वत्थामा ने पाण्डवों और पाञ्चालों की सेनाओं को लक्ष्य कर, नारायणास्त्र छोड़ा, तब उससे अगणित महाभयङ्कर विषधर सर्प जैसे बाण निकले। मुहूर्त्त भर में जगत के अन्धकार की तरह वे बाण सम्पूर्ण दिशाओं और आकाशमण्डल में परिपूरित हो गये। उस समय उन बाणों से शत्रुसैन्य के समस्त सैनिक छिप गये। उस समय आकाशमण्डल में चमचमाते पदार्थों की तरह चमचमाते लोहे की बहुत सी शतघ्नियाँ, हूले, गदाएँ और सूर्य की तरह चमचमाते छुरे की धार की तरह बहुत से भयानक चक्र, शत्रुसैन्य में इधर उधर चलते

हुए देख पड़े। उस समय पाण्डव और सृञ्जय योद्धा सब दिशाओं और आकाशमण्डल को नाना भाँति के अस्त्रों शस्त्रों से परिपूर्ण देख, बड़े व्याकुल हुए। उस समय जहाँ पाण्डवों की ओर के महारथी योद्धा आपकी सेना के वीरों के साथ युद्ध करने में प्रवृत्त थे, उसी ओर नारायण अस्त्र का भयङ्कर प्रभाव देख पड़ा। उस समय शत्रुसैन्य के योद्धा वैसे ही भस्म होने लगे, जैसे आग से घास फूस भस्म होने लगता है। अधिक क्या कहा जाय; जैसे ग्रीष्म काल में वन के बीच आग प्रकट हो, वन को भस्म कर डालती है, वैसे ही नारायणास्त्र द्वारा अश्वत्थामा शत्रुसैन्य के योद्धाओं को भस्म करने लगा। महाराज! जब इस प्रकार भयङ्कर नारायणास्त्र द्वारा शत्रुसैन्य के योद्धा नष्ट होने लगे, तब उस समय धर्मपुत्र युधिष्ठिर बहुत डरे। जब उन्होंने देखा कि, अश्वत्थामा के चलाये नारायणास्त्र से उनकी सेना के सब योद्धा पीड़ित हैं तथा सब शूरवीर रणभूमि से भाग रहे हैं और अर्जुन मध्यस्थ पुरुष की तरह समरभूमि में खड़ा है, तब उन्होंने यह कहा—हे धृष्टद्युम्न! तुम अपनी सब पाञ्चाल सेना को साथ ले रणभूमि से भाग जाओ। हे सात्यकि! तुम भी वृष्णि और अन्धकवंशियों की सेना के साथ घर चले जाओ। धर्मात्मा श्रीकृष्ण अपनी रक्षा स्वयं कर लेंगे। जब वे तीनों लोकों के कल्याण में दत्तचित्त रह, सब की रक्षा किया करते हैं, तब वे अपनी रक्षा क्या न कर लेंगे। हे शूरों! मैं तुम सब से कहता हूँ कि, अब लड़ने की कुछ भी आवश्यकता नहीं है? मैं अपने सहोदरों सहित अग्नि में कूदूँगा। हा! मैं भीरुपुरुषों के भय को बढ़ाने वाले, भीष्म, द्रोण रूपी समुद्र के पार हो कर, अब बन्धु बान्धवों सहित अश्वत्थामा रूपी गोपद में डूबना चाहता हूँ! मैंने अपने हितैषी द्रोण का वध कराया है। अतः अर्जुन मुझसे इसके लिये विरक्त है। इस लिये अब उन्हींकी इच्छा पूरी हो, जिन्होंने अभिमन्यु की रक्षा न कर, कई एक युद्धदुर्मद योद्धाओं द्वारा उसका वध करवाया था। कौरवसभा में जब दासी की तरह लायी गयी द्रौपदी ने पूँछा था, तब उसकी उपेक्षा कर, जिन्होंने पुत्र सहित कुछ भी उत्तर नहीं दिया था,

जिन्होंने जयद्रथ के वध के दिन युद्ध में प्रवृत्त और थके हुए घोड़ों से युक्त रथ पर सवार अर्जुन को मार डालना चाहा था, जिन्होंने अभेद्य कवच धारण कर, दुर्योधन की रक्षा की थी, जिन्होंने जयद्रथ की रक्षा के लिये विशेष यत्न किया था, जिन्होंने मेरे विजय की अभिलाषा करने वाले सत्यजित् आदि पाञ्चाल वीरों को ब्रह्मास्त्र से पुत्र पौत्र और अनुयायियों सहित समूल नष्ट कर डाला था। हमें कौरवों ने जब राज से च्युत कर, वनवासी बनाया था; तब जिन्होंने लोगों को नहीं रोका था और युद्ध के समय जिन्होंने मेरी ओर न हो कर, कौरवों की ओर से युद्ध किया था और जिन्होंने हम लोगों के प्रति सुहृद्भाव प्रदर्शित किया था—वे ही द्रोणाचार्य मारे गये हैं। अतः अब हम सब लोगों को बन्धु बान्धवों सहित यमलोक जाना पड़ेगा।

जब युधिष्ठिर ने ये वचन कहे, तब यदु-कुल-भूषण श्रीकृष्ण ने अपने हाथ के सङ्केत से लड़ने का निषेध कर कहा—हे शूरों! तुम झटपट हथियार रख दो और अपने अपने वाहनों पर सवार हो, युद्धभूमि से चल दो। नारायणास्त्र का यही प्रतिकार है। जो योद्धा अश्वों, रथों तथा गजों पर सवार हैं, वे सब शीघ्र अस्त्र शस्त्र त्याग कर तथा अपने अपने वाहनों से नीचे उतर कर, खड़े हो जाँय। तभी तुम लोग इस अस्त्र से बच सकते हो। युधिष्ठिर के पक्ष के सैनिक जहाँ जहाँ युद्ध करेंगे, वहीं वहीं कौरवों के पक्ष के योद्धा प्रबल पड़ जाँयगे। जो सैनिक वाहनों से उतर हथियार रख देंगे, उनका इस अस्त्र से वध न होगा। यदि किसी ने मन से भी इस अस्त्र के प्रतिकार की इच्छा की तो, वह पाताल में जा कर छिपने पर भी न बचेगा।

श्रीकृष्ण के इन वचनों को सुन, युधिष्ठिर की सेना के लोगों ने हृदय से अस्त्र शस्त्र त्यागने की इच्छा प्रकट की। उस समय उन सब को अस्त्र शस्त्र त्यागते देख, भीमसेन कहने लगे—शूरों! तुम कोई भी हथियार मत रखो। मैं अपने अस्त्र से द्रोणपुत्र के अस्त्र को निवारण करूँगा। मैं अपनी सुवर्ण-भूषित गदा से द्रोणपुत्र अश्वत्थामा के अस्त्र को नष्ट करूँगा और प्रलय-कालीन रुद्र की तरह समरभूमि में घूमूँगा। जैसे चमकीले पदार्थों में सूर्य

से बढ़ कर चमकीला अन्य कोई पदार्थ नहीं है, वैसे ही कोई पुरुष भी मेरे समान पराक्रमी नहीं है। तुम लोग हाथी की सूँड़ जैसी मेरी इन दोनों भुजाओं को देखो। इनसे मैं हिमालय को भी तोड़ कर पृथिवी में मिला सकता हूँ। जैसे देवताओं में देवराज इन्द्र सब से अधिक पराक्रमी हैं, वैसे ही मनुष्यों में मैं हूँ। मेरे शरीर में दस हज़ार हाथियों का बल है। आज सब लोग देखेंगे कि, मैं अपनी दोनों भुजाओं के बल से अश्वत्थामा के प्रज्वलमान अस्त्र को कैसे निवारण करता हूँ। यद्यपि नारायणास्त्र के सामने कोई भी योद्धा नहीं ठहर सकते, तथापि मैं कौरवों और पाण्डवों के समस्त योद्धाओं के सामने ही नारायणास्त्र का सामना करूँगा।

यह कह भीम, सूर्य की तरह चमचमाते अपने रथ पर सवार हो, अश्वत्थामा की ओर लपके। उस बली भीम ने पल भर में अपने हस्त-लाघव से बाणवृष्टि कर अश्वत्थामा को ढक दिया। अश्वत्थामा ने भीम को अपनी ओर आते देख, हँस कर अग्निपुञ्ज से युक्त नारायणास्त्र के प्रभाव से असंख्य बाण चला भीम को छिपा दिया। उस समय भीम का शरीर सुवर्ण की तरह अग्निपुञ्ज से ऐसा जान पड़ने लगा जैसा सन्ध्या के समय खद्योतों से युक्त पर्वत जान पड़ता है। जब अश्वत्थामा ने भीम पर नारायणास्त्र को चलाया, तब वह अस्त्र प्रचण्ड ज्वाला से युक्त था और उसमें से वैसे ही ज्वालाएँ निकल रही थीं, जैसे पवन से अग्नि की शिखाएँ निकलती हैं। उस अस्त्र की भयङ्करता को बढ़ते देख, पाण्डवों की सेना में भीम को छोड़ और सब भयभीत हो गये। समस्त योद्धा रथों, गजों और घोड़ों को छोड़ भूमि पर खड़े हो गये और उन लोगों ने अपने अपने अस्त्र शस्त्र भूमि पर पटक दिये। उस समय वह अस्त्र प्रबल वेग से भीमसेन के मस्तक पर ही गिरने लगा। उस समय भीम को, नारायणास्त्र के प्रचण्ड अग्नि में छिपा हुआ देख, सब लोग और विशेष कर पाण्डव लोग, हाहाकार करने लगे।

दो सौ का अध्याय

नारायणास्त्र को विफल करना

सञ्जय कहने लगे—हे धृतराष्ट्र! भीम को नारायणास्त्र के चुंगुल में फँसा देख, अर्जुन ने उस अस्त्र की तेज़ी दूर करने के लिये भीम के ऊपर वारुणास्त्र का प्रयोग किया। अर्जुन अस्त्रसञ्चालन में बड़ा फुर्तीला था। उधर भीम तेज से ढका हुआ था। अतः अर्जुन ने भीम पर कब वारुणास्त्र का प्रयोग किया, यह किसी को न जान पड़ा। अश्वत्थामा के छोड़े हुए नारायणास्त्र से घोड़े, सारथि और रथ सहित भीम ढक गया और वह ज्वाला-माला-युक्त अग्नि में अदृश्य हो गया। हे राजन्! प्रातःकाल के समय जैसे समस्त प्रभापूर्ण पदार्थ अस्ताचल की ओर गमन करते हैं, वैसे ही चमचमाते बाणों के समूह के समूह भीमसेन के रथ पर गिरने लगे। उस समय भीम अपने घोड़ों और सारथि सहित उन बाणों के भीतर छिप गये थे। उस समय ऐसा जान पड़ता था—मानों प्रलय कालीन अग्नि सारे जगत् को भस्म कर के रुद्र के मुख में घुसा है। जैसे सूर्यमण्डल में अग्नि और अग्नि में सूर्य प्रवेश करते हैं, वैसे ही भीम के शरीर में प्रवेश करता हुआ नारायणास्त्र का अग्नि जान पड़ता था। उस समय द्रोणपुत्र अश्वत्थामा को अद्वितीय रूप से लड़ते देख, अस्त्रपरित्याग किये हुए पाण्डवों की सेना को अचेतावस्था जैसी दशा में देख, युधिष्ठिरादि महारथियों को समरभूमि से भागते देख और भीम के रथ पर दहकते बाणों की अविराम वृष्टि होते देख—महातेजस्वी श्रीकृष्ण और अर्जुन रथ से कूद बड़ी तेज़ी से भीमसेन के रथ की ओर गये। उस समय उन दोनों महाबलवान वीरों ने मायाबल से नारायणास्त्र के अग्नि के बीच प्रवेश किया। वे दोनों महात्मा उस समय ख़ाली हाथ थे। उनके पास एक भी अस्त्र न था। किन्तु वे दोनों थे असामान्य प्रभावशाली और पराक्रमी। फिर वारुणास्त्र का प्रयोग पहले ही

हो चुका था। इसीसे वे उस दिव्यास्त्र के अग्नि से नहीं जले। अनन्तर वे महाबलवान नर नारायण रूपी कृष्ण और अर्जुन, नारायणास्त्र को शान्त करने के लिये भीम के समस्त अस्त्र शस्त्रों को बरजोरी नीचे पटक, बरजोरी उन्हें भी खींच, रथ के नीचे उतारने लगे। जब उन दोनों ने बलपूर्वक पकड़ कर भीमसेन को रथ के नीचे उतारना चाहा, तब वह बड़े ज़ोर से चिल्लाया। इससे नारायणास्त्र का वेग और भी अधिक होने लगा। उस समय श्रीकृष्ण ने कहा—भीम! तुम मना करने पर भी नहीं मानते। तुम इस समय यह क्या मूर्खता कर रहे हो! यदि यह समय युद्ध कर के कौरवों को हराने के लिये उपयुक्त होता, तो हम सब मिल कर उनसे निश्चय ही लड़ते, किन्तु यह समय लड़ने का नहीं है। हम सब लोग रथों से उतर नीचे खड़े हुए हैं। अतः तुम भी तुरन्त रथ के नीचे उतर आओ। यह कह श्रीकृष्ण ने भीम को रथ से उतार उन्हें भूमि पर खड़ा किया। उस समय भीम क्रोध में भर सर्प की तरह फुंसकार रहे थे और उनके नेत्र लाल हो रहे थे।

भीमसेन के अस्त्र शस्त्र त्याग कर रथ से नीचे उतरते ही नारायणास्त्र शान्त हो गया। इस प्रकार उस कठिन एवं दुर्जेय नारायणास्त्र की तेज़ी शान्त पड़ गयी। पूर्ववत् सुखदायी पवन बहने लगा। सब दिशाएं निर्मल हो गयीं। पशु पक्षी शान्त हुए। योद्धाओं के हाथी घोड़े पूर्ववत् स्वस्थ हो गये। नारायणास्त्र के अग्नि के शान्त होने पर भीमसेन वैसे ही शोभित हुए जैसे रात्रि बीतने पर, प्रातःकालीन सूर्य आकाश में सुशोभित होता है। नारायणास्त्र के शान्त होने पर, मरने से बचे हुए योद्धा लोग, बेहवा आदमियों की तरह कौरवों के साथ पुनः लड़ने के लिये रणभूमि में जमा हुए। यह देख द्रोणपुत्र अश्वत्थामा से दुर्योधन बोला—देखो, पाञ्चाल योद्धा लड़ने के लिये फिर रणभूमि में जमा हो गये हैं। अतः तुम पुनः नारायणास्त्र का प्रयोग करो। हे राजन्! आपके पुत्र के इन वचनों को सुन कर, अश्वत्थामा ने लंबी साँस ली और यह कहा—हे राजेन्द्र! ऐसा अब नहीं हो सकता, अर्थात् नारायणास्त्र दुबारा नहीं चलाया जा सकता।

यदि चलाया जाय तो नारायणास्त्र चलाने वाले ही को निश्चय ही नष्ट कर डाले। राजन्! क्या कहूँ श्रीकृष्ण ने स्वयं ही इस अस्त्र को निवारण किया है। नहीं तो क्या आज एक भी शत्रु रणभूमि में जीवित बच सकता था। युद्धभूमि में या तो अपने वैरी योद्धा का नाश होता है या स्वयं उसे वैरी के हाथ से नष्ट होना पड़ता है। शत्रुओं ने जब पराजित हो कर, अस्त्र शस्त्र परित्याग किये हैं, तब उनके जीवित होने पर भी उन्हें मृत ही समझना चाहिये।

दुर्योधन ने कहा—अश्वत्थामा! यदि वह दुबारा नहीं चलाया जा सकता तो आप अन्य अस्त्रों ही से गुरुघाती वैरियों का नाश कीजिये। या तो आपके पास अथवा देवदेव महादेव जी के पास ही समस्त अस्त्र विद्यमान हैं। आप यदि चाहें तो क्रुद्ध हुए देवराज भी आपके अस्त्रों से छुटकारा नहीं पा सकते।

राजा धृतराष्ट्र ने पूँछा—हे सञ्जय! जब छल से द्रोणाचार्य मारे गये और अश्वत्थामा का चलाया नारायणास्त्र भी शान्त हो गया, तब दुर्योधनादि के वचनों को सुन और नारायणास्त्र के प्रभाव से मुक्त एवं रणभूमि में स्थित पाण्डवों की सेना को देख, अश्वत्थामा ने क्या किया?

सञ्जय ने कहा—हे राजन्! सिंहलाङ्गूल वाली ध्वजा से युक्त रथ पर सवार अश्वत्थामा अपने पिता की मृत्यु का कारण धृष्टद्युम्न को समझ और क्रोध में भर, निर्भय हो, उस पर लपका और बीस छोटे और पाँच सामान्य बाण मार धृष्टद्युम्न को उसने घायल किया। फिर अश्वत्थामा ने सुवर्णपुंख युक्त पैने बीस बाणों से धृष्टद्युम्न के सारथी को और चार बाणों से उसके रथ के चारों घोड़ों को विद्ध किया। अश्वत्थामा बार बार धृष्टद्युम्न को अपने पैने बाणों से घायल कर, पृथिवी को कँपाता हुआ सिंहनाद करने लगा। उस समय ऐसा जान पड़ा, मानों अश्वत्थामा उस महाघोर संग्राम-भूमि में समस्त प्राणियों का संहार कर डालेगा। किन्तु कृतास्त्र धृष्टद्युम्न अपने प्राणों का मोह त्याग, अश्वत्थामा के सामने गया और

अश्वत्थामा के ऊपर अविराम बाणवृष्टि करने लगा। तब क्रोध में भर अश्वत्थामा ने असंख्य बाण चला-धृष्टद्युम्न को छिपा दिया। पितृवध की याद कर, उसने दस पैने बाणों से धृष्टद्युम्न को विद्ध किया। फिर दो क्षुरप्र बाणों से उसे पीड़ित किया। इसी भाँति द्रोणपुत्र अश्वत्थामा, पाञ्चालराजपुत्र धृष्टद्युम्न को घोड़े, सारथी और रथ से रहित कर, क्रोध पूर्वक उसे और उसके अनुयायी योद्धाओं को अपने तीक्ष्ण बाणों से पीड़ित कर, युद्धभूमि में छिन्न भिन्न कर के चारों ओर घूमने लगा। इससे पाञ्चालसेना के सब योद्धा आर्त और भयभीत हो गये। उस समय वे लोग अन्य किसी की ओर निहारते भी न थे। पाञ्चाल सैनिकों को रणक्षेत्र से भागते और धृष्टद्युम्न को अश्वत्थामा के बाणों से पीड़ित देख, शिनिपुत्र सात्यकि अपना रथ दौड़ाता वहाँ आ उपस्थित हुआ और क्रोध में भर अश्वत्थामा को प्रथम आठ बाणों से, फिर तीस बाणों से विद्ध किया। अनन्तर सात्यकि ने अपने पैने बाणों से अश्वत्थामा के सारथि को घायल कर, चार बाणों से उसके चारों घोड़ों को घायल कर डाला। फिर बड़ी तेज़ी से बाण मार उसने अश्वत्थामा का धनुष और रथ की ध्वजा काट डाली। तदनन्तर सात्यकि ने सुवर्ण भूषित अश्वत्थामा के रथ के घोड़ों को प्राणरहित करके उसकी छाती में तीस बाण मारे। महाबली एवं अत्यन्त पराक्रमी अश्वत्थामा, सात्यकि के बाणजाल से छिप गया और पीड़ित हो मूर्छित हो गया।

गुरुपुत्र अश्वत्थामा को मूर्छित देख, आपके पुत्र महारथी दुर्योधन, कृपाचार्य और कर्ण आदि सैकड़ों महारथी योद्धाओं ने चारों ओर से सात्यकि को घेर लिया। दुर्योधन ने बीस, कृपाचार्य ने तीन, कृतवर्मा ने दस, कर्ण ने पचास, दुःशासन ने एक सौ तथा वृषसेन ने सात बाण सात्यकि पर छोड़े। ये सब एकत्र हो और चारों ओर से सात्यकि को घेर पैने बाणों से उसे घायल करने लगे। यह देख, सात्यकि ने क्षण भर में उन समस्त महारथियों को रथभ्रष्ट कर के युद्ध से विमुख कर दिया। उस समय सचेत हुआ अश्वत्थामा क्रोध में भर, बारंबार लंबी साँसें

लेता हुआ, सोचने लगा। फिर वह एक दूसरे रथ पर सवार हो एक एक बार सौ सौ बाण छोड़ता हुआ सात्यकि से लड़ने लगा। महारथी सात्यकि ने तुरन्त अश्वत्थामा के रथ के टुकड़े टुकड़े कर डाले और उसे रण से विमुख कर दिया। हे राजन्! पाण्डव, सात्यकि के पराक्रम को देख बारंबार शङ्खध्वनि एवं सिंहनाद कर रहे थे। पराक्रमी सात्यकि ने अश्वत्थामा को रथहीन कर वृषसेन के तीन सहस्र महारथियों का संहार कर डाला। फिर कृपाचार्य के पन्द्रह हज़ार गजों को मार शकुनि के पचास हज़ार घोड़ों को मारा। इतने में अश्वत्थामा दूसरे रथ में बैठ और क्रोध में भर सात्यकि का वध करने के लिये उसके सामने आ पहुँचा। अश्वत्थामा को पुनः रथ पर सवार देख, सात्यकि ने बड़े पैने बाण उस पर उसके मारने आरम्भ किये। महाधनुर्धर एवं असहिष्णु अश्वत्थामा को जब सात्यकि ने बाणों से बेध डाला; तब उसने हँस कर सात्यकि से कहा—सात्यकि! मैं जान गया तू गुरुघातक की तरफ़दारी करता है। किन्तु अब तो मैंने तुझे घेर लिया है। अतः अब न तो तू उसकी और न अपनी ही रक्षा कर सकता है। सात्यकि! मैं अपने सत्य और तप की शपथ खा कर कहता हूँ कि, मैं समस्त पाञ्चाल योद्धाओं और राजाओं का नाश किये बिना दम न लूँगा। पाण्डवों और सोमकों की जितनी सेना हो—उस सब को एकत्र कर ले। मैं सोमकों का बीज नाश कर डालूँगा। यह कह कर, अश्वत्थामा ने सूर्य की तरह चमचमाते बड़े पैने बाणों का प्रहार सात्यकि पर वैसे ही किया; जैसे इन्द्र ने वृत्रासुर के ऊपर वज्र का प्रहार किया था। अश्वत्थामा के बाण सात्यकि के कवच और उसके शरीर को फोड़ फुँसकारते हुए साँप की तरह पृथिवी में घुसने लगे। सात्यकि का कवच टूट फूट गया। वह भाले के प्रहार से पीड़ित गज की तरह हो गया। उसने अपना धनुष नीचे डाल दिया। उसके घावों से बहुत सा रुधिर टपकने लगा। लोहू में लथपथ सात्यकि घावों की पीड़ा से पीड़ित हो, रथ के भीतर बैठ गया। उस समय उसका सारथि तुरन्त उसे वहाँ से हटा अन्यत्र ले गया।

तदनन्तर अश्वत्थामा ने सुन्दर पुंख वाला और नतपर्व बाण ले धृष्टद्युम्न की दोनों भौं के बीच मारा। धृष्टद्युम्न पहले ही बहुत घायल हो चुका था और फिर भी अश्वत्थामा ने उसे बाणप्रहार से अत्यन्त विकल कर दिया था, अतः वह निर्बल हो गया था। सो वह अपने ध्वजा के डंडे का सहारा ले, रथ में बैठ गया।

हे राजन्! अश्वत्थामा ने धृष्टद्युम्न को वैसे ही पीड़ित किया; जैसे सिंह हाथी को पीड़ित करता है। यह देख पाण्डवों के पक्ष के पाँच वीर बड़े वेग से दौड़े। अर्थात् अर्जुन, भीम, वृद्धक्षत्र, चेदि का युवराज तथा मालवा-नरेश राजा सुदर्शन। इन सब महारथियों ने हा हा हा कह, चारों ओर से अश्वत्थामा को घेर लिया। बीस पग की दूरी पर खड़े हुए अश्वत्थामा के, उन सब ने एक साथ पाँच पाँच बाण मारे। तब अश्वत्थामा ने भी उनके ऊपर विषधर सर्पों की तरह भयङ्कर पैने पच्चीस बाण मार, उनके पचीसों बाण काट कर व्यर्थ कर दिये। फिर अश्वत्थामा ने पुरुवंशी राजा के सात, मालवराज के तीन, अर्जुन के एक और भीम के छः बाण मारे। हे राजन्! तदनन्तर उन समस्त महारथियों ने एक साथ तथा पृथक् पृथक् सुवर्णपुंख एवं पैने बाण अश्वत्थामा के मारे। अर्जुन ने आठ तथा अन्य लोगों ने तीन तीन बाण मारे। इस पर अश्वत्थामा ने अर्जुन के छः श्रीकृष्ण के दस, भीम के पाँच, चेदि के युवराज के चार तथा मालवराज एवं वृद्धक्षत्र के दो दो बाण मारे। तदनन्तर उसने भीम के सारथि के छः बाण मार, दो बाणों से उसका धनुष और रथ की ध्वजा काट डाली। फिर बाणों की वृष्टि कर, अर्जुन को वेध उसने सिंहनाद किया। अश्वत्थामा के चोखे बाणों से पृथिवी, आकाश, स्वर्ग, दिशाएँ और कोने ढक गये। उग्र तेजस्वी और इन्द्र की तरह बलवान अश्वत्थामा ने तीन बाण मार कर अपने रथ के पास खड़े हुए सुदर्शन की इन्द्रध्वजा की तरह विशाल दोनों भुजाओं को तथा मस्तक को एक साथ काट डाला। फिर रथशक्ति से वृद्धक्षत्र का वध कर, मारे बाणों के उसके रथ के टुकड़े टुकड़े कर डाले। फिर चेदिदेश के युवक राजकुमार को अग्नि की

तरह चमचमाते बाण मार कर, उसे उसके सारथि और घोड़ों सहित यमालय भेज दिया। अश्वत्थामा ने मालवराज, कौरवराज और चेदि देश के युवराज को मेरे सामने मारा था। यह देख भीमसेन को बड़ा क्रोध आया। उसने कुपित विषधर सर्पों की तरह सैकड़ों बाण मार कर, अश्वत्थामा को ढक दिया। किन्तु अश्वत्थामा ने उसकी बाणवृष्टि नष्ट कर डाली। तदनन्तर असहिष्णु अश्वत्थामा ने पैने बाण मार भीम को घायल किया। महाबली एवं महाबाहु भीम ने तब क्षुरप्र बाण चला अश्वत्थामा का धनुष काट डाला और उसे घायल किया। इस पर अश्वत्थामा ने कटे हुए धनुष को फेंक दिया और दूसरा एक धनुष ले, भीमसेन के बाण मारे। उस समय महाबाहु एवं महाबली अश्वत्थामा एवं भीमसेन जलवृष्टि करते हुए दो मेघों की तरह, बाणों की वर्षा कर रहे थे। भीम के नाम से अङ्कित एवं सुवर्ण पुंख और शान पर पैनाये हुए बाणों ने अश्वत्थामा को वैसे ही ढक दिया, जैसे मेघ सूर्य को ढक देते हैं। उधर अश्वत्थामा भी नतपर्व बाणों से भीम को आच्छादित करने लगा। युद्धनिपुण अश्वत्थामा ने सैकड़ों सहस्रों बाणों से भीम को आच्छादित कर दिया; तथापि भीम ज़रा भी विचलित न हुआ। यह एक विस्मयोत्पादक व्यापार था। तदनन्तर महाबाहु भीम ने सुवर्ण भूषित एवं यमदण्ड की तरह भयङ्कर दस बाण अश्वत्थामा के मारे। वे बाण अश्वत्थामा की हँसली की हड्डी को फोड़ उसमें वैसे ही घुस गये, जैसे साँप बिल में घुस जाता है। महाबली भीम ने अश्वत्थामा को ख़ूब घायल किया। इससे उसकी आँखें बंद हो गयीं और वह ध्वजा के दण्ड के सहारे बैठ गया। थोड़ी देर बाद जब वह सचेत हुआ तब भीम के बाणप्रहार से घायल अश्वत्थामा को बड़ा क्रोध चढ़ आया। वह भीम के रथ की ओर बड़ी तेज़ी के साथ लपका और धनुष तान तान कर बड़े पैने सौ बाण भीमसेन के मारे। अश्वत्थामा का ऐसा पराक्रम देख, भीम ने भी तीक्ष्ण बाणों से अश्वत्थामा को विद्ध किया। तब क्रुद्ध हो अश्वत्थामा ने भीम का धनुष काट डाला। फिर क्रोध में भर, उसने भीम

की छाती में बाण मारे। यह बात भीम को सह्य न हुई। उसने एक दूसरा धनुष ले, बड़े पैने पाँच बाण अश्वत्थामा के मारे। वे दोनों जन पुनः एक दूसरे पर वैसे ही बाणवृष्टि करने लगे, जैसे वर्षा कालीन मेघ जलवृष्टि करते हैं। क्रोध में भर और लाल नेत्र कर, दोनों जन एक दूसरे को बाणों से आच्छादित करने लगे। वे दोनों एक दूसरे से बदला लेने के लिये, क्रोध में भर विकट युद्ध कर रहे थे। उस समय अश्वत्थामा शरद् कालीन मध्यान्ह के सूर्य की तरह दमदमा रहा था। वह ऐसी फुर्ती से बाण छोड़ रहा था कि, देखने वाले को यही नहीं जान पड़ता था कि, वह कब बाण तूणीर से निकालता, कब उसे धनुष पर रखता और कब धनुष तान कर छोड़ता था। देखने वाले को तो उसका धनुष मण्डलाकार ही देख पड़ता था। उस समय उसके धनुष से सैकड़ों सहस्रों बाण छूट रहे थे। वे आकाश में पहुँच टिड्डी दल जैसे जान पड़ते थे। अश्वत्थामा के चलाये हुए सुवर्ण मण्डित भयङ्कर बाण भीम के रथ पर खटाखट गिरने लगे।

हे राजन्! इस युद्ध में भीमसेन ने भी अपने अद्भुत बल वीर्य, पराक्रम, प्रभाव और व्यवसाय का परिचय दिया था। जब वर्षाकालीन जलवृष्टि की तरह अश्वत्थामा के बाणों की वृष्टि चारों ओर से होने लगी—तब भीम चिन्तित हुए। तदनन्तर अश्वत्थामा का वध करने की इच्छा से भीम ने भी वर्षाकालीन मेघ की तरह बाण रूपी जल की वृष्टि की। सुवर्णपृष्ठ धनुष को भीम जब तानते, तब वह धनुष इन्द्रधनुष की तरह शोभायमान मालूम पड़ता था। उस धनुष से सैकड़ों, सहस्रों बाण बाहर निकल कर, अश्वत्थामा को आच्छादित कर रहे थे। दोनों वीर ऐसी बाणवृष्टि कर रहे थे कि, उन दोनों के बीच से वायु भी नहीं निकल सकता था। अश्वत्थामा ने भीम का वध करने की इच्छा से तीक्ष्ण नोंक वाले बाण छोड़े, तब भीम ने आकाश मार्ग से आते हुए अश्वत्थामा के बाणों को अपने बाणों की मार से तीन तीन टुकड़े कर के उन्हें भूमि पर गिरा दिया। उस समय अश्वत्थामा को नीचा दिखला, भीमसेन ने सिंहनाद किया और अश्वत्थामा को ललकारते हुए

रहा—रक्षा रहे! रक्षा रहे! फिर बलवान भीम ने क्रोध में भर, अश्वत्थामा का वध करने के लिये घोर और तीक्ष्ण बाणों से प्रहार करना आरम्भ किया। द्रोणनन्दन अश्वत्थामा ने अस्त्रमाया से भीम की बाणवृष्टि रोक दी और भीम का धनुष काट डाला। फिर बहुत से बाण मार भीम को विद्ध किया। धनुष के कट जाने पर भीम ने एक बड़ी भयङ्कर रथशक्ति हाथ में ली और बड़े वेग से उसे अश्वत्थामा के रथ पर फेंका, किन्तु अश्वत्थामा ने बाण मार मार कर उसके टुकड़े कर डाले और इस प्रकार अपना हस्तलाघव दिखलाया। इतने ही में भीम ने एक मज़बूत धनुष ले हँसते हँसते अश्वत्थामा के बहुत से बाण मारे। तब हे राजन्! अश्वत्थामा ने नतपर्व बाण मार भीम के सारथि का मस्तक विदीर्ण कर डाला। फिर उसे बहुत से बाणों से विद्ध किया। अश्वत्थामा के बाणों से अत्यन्त घायल भीम के सारथि ने घोड़ों की रासें छोड़ दीं और वह मूर्छित हो गया। सारथि के मूर्छित होते ही भीमसेन के रथ के घोड़े, रथ को लिये हुए इधर उधर भागने लगे। अन्त में वे घोड़े भीम के रथ को रणक्षेत्र के बाहिर ले गये। उस समय अजेय अश्वत्थामा ने अपना विशाल शङ्ख बजाया। तब समस्त पाञ्चाल राजा तथा भीमसेन आदि भयभीत हो तथा धृष्टद्युम्न के रथ को छोड़ चारों ओर भाग खड़े हुए। उन भागते हुए योद्धाओं के पीछे अश्वत्थामा ने बाण छोड़ना आरम्भ किया। अश्वत्थामा ने पाण्डवों की सेना को विकल कर भगा दिया। पाण्डव पक्षीय राजा लोग भी अश्वत्थामा के हाथ से मार खा और भयभीत हो भाग खड़े हुए।

दो सौ एक का अध्याय

अग्न्यास्त्र के विफल जाने पर अश्वत्थामा का विस्मय

सञ्जय ने कहा—हे धृतराष्ट्र! अपार बल वाले अर्जुन ने जब देखा कि, उसकी सेना भाग रही है; तब उसने अश्वत्थामा को पराजित करने की

इच्छा से उन भागते हुए सैनिकों को रोका। श्रीकृष्ण और अर्जुन—दोनों ने ही उनको रोकने के लिये बड़ा उद्योग किया; किन्तु वे रुके नहीं। तब अर्जुन ने सोमकवंशीय राजाओं, माण्डलिक राजाओं, मत्स्य देशीय राजाओं तथा अन्य कितने ही राजाओं को साथ ले और वाणों से प्रहार कर, कौरवों को पीछे हटाया। फिर तुरन्त ही उसने अश्वत्थामा के निकट जा, उससे कहा—हे अश्वत्थामा! तुझमें जितनी शक्ति, जितना विज्ञान, जितनी वीरता, जितना पुरुषार्थ, जितनी धृतराष्ट्र के पुत्रों पर प्रीति और हमारे प्रति तेरा जितना द्वेष हो—वह सब इस समय प्रदर्शित कर। तुझमें जितना तेज हो—उस सब का तू हमारे ऊपर प्रयोग कर। द्रोण को मारने वाला धृष्टद्युम्न तेरी सारी शेखी दूर कर देगा। प्रलयकालीन तथा वैरियों के काल की तरह प्रचण्ड धृष्टद्युम्न के, मेरे और श्रीकृष्ण के सामने तू लड़ने को आ। मैं आज रण में तेरी उद्दण्डता का सारा घमंड दूर कर दूँगा।

धृतराष्ट्र बोले—हे सञ्जय! आचार्यपुत्र अश्वत्थामा तो सम्मान का पात्र है। साथ ही वह बलवान है और उसका महात्मा अर्जुन के ऊपर अनुराग भी है। तिस पर भी अर्जुन ने अपूर्व कठोर वचन अपने मित्र अश्वत्थामा से क्यों कहे?

सञ्जय ने उत्तर दिया—हे राजन्! चेदि देश के युवराज का पुरुवंश के वृद्धक्षत्र का तथा धनुष चलाने में निपुण मालवे के राजा सुदर्शन का अश्वत्थामा वध कर चुका है। तदनन्तर धृष्टद्युम्न, सात्यकि तथा भीम को वह परास्त कर चुका है। इतना होने पर जब युधिष्ठिर ने अर्जुन को उत्तेजित किया और उसे अपने पुत्र अभिमन्यु के वध का स्मरण हुआ, तब उसके मन में असीम दुःख उत्पन्न हुआ। इससे अर्जुन ऐसा क्रुद्ध हुआ कि, जैसा वह अब से पहले कभी भी क्रुद्ध नहीं हुआ था। अतः अर्जुन ने आचार्य के श्रद्धेयपुत्र अश्वत्थामा से ऐसे कठोर और अनुचित वचन कहे; जैसे तीक्ष्ण वचन किसी ओछे जन के प्रति व्यवहृत किये जाते हैं। हे राजन्! अर्जुन के तीक्ष्ण और मर्मविदारक वचनों को सुन, महाधनुर्धर अश्वत्थामा क्रोध में

भर गया और लंबी सांस लेने लगा। उसे अर्जुन और श्रीकृष्ण पर बड़ा क्रोध उपजा। फिर रथ पर सवार हो और मन को एकाग्र कर उसने आचमन किया। तदनन्तर उसने उस आग्नेयास्त्र को जिसे देवता भी नहीं रोक सकते हाथ में लिया। फिर प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष शत्रुओं का नाश करने के लिये उसने अग्निवत् दहकते हुए उस बाण को रोष में भर और अभिमंत्रित कर वैरियों पर छोड़ा। तुरन्त ही आकाश से बाणवृष्टि होने लगी। चारों ओर फैला हुआ अस्त्र का तेज अर्जुन के ऊपर पड़ा। आकाश से उल्काएँ गिरने लगीं—दिशाएँ अन्धकारमयी हो गयीं और सहसा छाये हुए उस अँधियारे में पाण्डवों की सेना न देख पड़ने लगी। राक्षस और पिशाच आवेश में भर गर्जन तर्जन करने लगे। लोगों को कंपित करता हुआ पवन बहने लगा। सूर्य का ताप रुक गया। समस्त दिशाओं में काक भयङ्कर चीत्कार करने लगे। आकाशस्थित मेघों से रुधिर की वृष्टि होने लगी। पशु पक्षी और गौएँ धैर्य रखने पर भी घबड़ा उठीं और उच्चस्वर से चिल्लाने लगीं। मन को वश में रखने वाले और व्रतधारी मुनिजन भी विकल हो उठे। समस्त प्राणि आकुल हो गये। सूर्य का तेज मंद पड़ गया और तीनों लोक ऐसे उत्तप्त हो गये कि, मानों उनको जूड़ी चढ़ आयी हो। उस अस्त्र के तेज से अत्यन्त उत्तप्त गज भी आत्मरक्षा के लिये भूमि पर लोटने लगे। जलाशयों का जल गर्म हो जाने के कारण जल के भीतर रहने वाले जीव जन्तु भी उत्तप्त हो गये। वे इतने अधिक उत्तप्त हो गये कि, इन्हें किसी भी तरह शान्ति प्राप्त न हो सकी। दिशाओं से और उपदिशाओं से तथा आकाश से एवं भूमि से, इस तरह चारों ओर गरुड़ और पवन की तरह वेग से बाणवृष्टि होने लगी। अश्वत्थामा के वज्र की तरह वेगवान बाणों से हत और अस्त्र की लपटों से झुलसे हुए वैरी अग्नि से भस्म हुए वृक्षों की तरह धड़ाम धड़ाम भूमि पर गिरने लगे। अस्त्र की लपटों से झुलस कर बड़े बड़े गज मेघ की तरह गर्जते हुए चारों ओर रणभूमि में गिरने लगे। कितने ही हाथी पहले वन में घूमते समय, दावानल से घेरे आ कर, जैसे इधर

उधर भागते फिरते थे, वैसे ही भयभीत हो इस समय वे समरक्षेत्र में इधर उधर भागे भागे फिरते थे।

हे राजन्! दावानल से दग्ध वृक्षों की फुनगियाँ जैसी देख पड़ती हैं, वैसे ही घोड़ों एवं रथों के समूह देख पड़ते थे। सहस्रों रथी और रथ अग्न्यास्त्र से भस्म हो रणभूमि में गिरे पड़े थे। हे राजन्! रण में भयभीत हुआ सैन्य दल उत्तेजित हो उठा। जैसे प्रलय काल में संवर्त्तक नामक अग्नि समस्त प्राणियों को भस्म कर डालता है, वैसे ही इस लड़ाई में पाण्डवों की सेना भी उस अग्न्यास्त्र से भस्म होने लगी। हे राजन्! आपके पुत्र यह देख कर, अपनी जीत होने के कारण अत्यन्त हर्षित हुए और सिंहनाद करने लगे। साथ ही अनेक प्रकार के मारू बाजे बजाने लगे। इस समय सारा जगत अन्धकार से ढका हुआ था, अतः उस महायुद्ध में अर्जुन तथा उसकी अक्षौहिणी सेना नहीं देख पड़ती थी। अश्वत्थामा ने क्रोध में भर जैसे अस्त्र का प्रयोग किया था, वैसा अस्त्र इसने पहले कभी न तो देखा और न सुना ही था। फिर अर्जुन ने सब प्रकार के अस्त्रों का नाश करने के अर्थ, ब्रह्मारचित ब्रह्मास्त्र का प्रयोग किया। ब्रह्मास्त्र के चलाते ही मुहूर्त्त भर ही में अन्धकार नष्ट हो गया। शीतल वायु का सञ्चार हुआ; दिशाएँ स्वच्छ हो गयीं। उस समय हे राजन्! मैंने एक चमत्कार यह देखा कि, अश्वत्थामा के अग्न्यास्त्र से पाण्डवों की एक अक्षौहिणी सेना भस्म हो गयी और उसका नाम निशान तक न रह गया। अन्धकार के दूर होते ही श्रीकृष्ण और अर्जुन वैसे ही देख पड़े जैसे बादल के हटने से सूर्य देख पड़ते हैं। श्रीकृष्ण और अर्जुन के शरीरों पर एक खँरोच तक न थी। पताका और ध्वजा से भूषित उनका रथ, रथ के घोड़े और अर्जुन का गाण्डीव धनुष ज्यों के त्यों बने हुए थे। उन दोनों को देख आपके पुत्र भयभीत हो गये। क्योंकि वे दोनों सैन्यदल समझे बैठे थे कि, अर्जुन तथा श्रीकृष्ण मारे गये। श्रीकृष्ण और अर्जुन को सकुशल देख, पाण्डवों के आनन्द की सीमा न रही। वे झट शङ्ख तथा भेरियों के शब्दों के साथ आनन्दध्वनि करने लगे। श्रीकृष्ण और अर्जुन

ने भी शङ्ख बजाये। इस समय आपके पुत्र पाण्डवों को हर्षित देख, बहुत खिन्न हुए।

श्रीकृष्ण और अर्जुन को अस्त्र से अछूता बचा देख, अश्वत्थामा को भी बड़ा खेद हुआ। वह घड़ी भर यही सोचता विचारता रहा कि, बात क्या है? हे राजेन्द्र! इस प्रकार ध्यान में और शोक में निमग्न अश्वत्थामा लंबी सांसें छोड़ता हुआ उदास हो गया। तुरन्त उसने धनुष को पटक दिया और वह रथ से नीचे उतर पड़ा और धिक्कार है! धिक्कार है!! यह सब झूठ है!!! कहता हुआ; वह समरभूमि से भागा। भागते समय उसे श्याम घटा जैसे वर्ण वाले, वेद के आश्रयस्थल, निर्दोष, वेद के विस्तारक सरस्वती-तट-वासी, वेदव्यास जी का दर्शन हुआ। कुरुकुल का उद्धार करने वाले वेदव्यास जी को सामने देख, अश्वत्थामा ने एक दीन जन की तरह गद्गद हो प्रणाम किया। फिर उसने कहा—हे व्यासदेव! इसे मैं माया समझूँ या दैवगति। इस समय मेरी समझ में तो कुछ भी नहीं आता। यह सब हो क्या रहा है? मुझसे क्या अपचार बन पड़ा जो मेरा प्रयुक्त नारायणास्त्र निष्फल हुआ। श्रीकृष्ण और अर्जुन का जीवित बच जाना—प्रकट करता है कि, अब वह समय आ पहुँचा है, जब उत्तम अधम होंगे और अधम उत्तम। अथवा लोकों का नाश होने वाला है। निश्चय ही काल की गति अनिवार्य है। मेरे अस्त्र को तो असुर, गन्धर्व, पिशाच, राक्षस, सर्प, यक्ष, मनुष्य—कोई भी विफल नहीं कर सकता। फिर मेरा धधकता हुआ अस्त्र शत्रु की केवल एक अक्षौहिणी सेना ही को भस्म कर शान्त हो गया। वह तो सब का नाश करने वाला और महादारुण था। वह इन मरणशील श्रीकृष्ण और अर्जुन का नाश क्यों न कर सका? भगवन्! आप मेरी इस शङ्का का समाधान करें। मैं इन सब बातों का कारण ठीक ठीक जान लेना चाहता हूँ।

व्यास जी बोले—अश्वत्थामा! तू आश्चर्य चकित हो जो पूँछ रहा है—सो तेरा पूँछना ठीक है। अब तू अपने मन को सावधान कर मेरी बातें

सुन। नारायण पूर्वपुरुषों के भी पूर्वपुरुष हैं। उन विश्वकर्त्ता परमात्मा ने कार्य साधनार्थ, धर्मपुत्र के रूप में इस धराधाम पर अवतार लिया था। अग्नि अथवा सूर्य की तरह महातेजस्वी एवं कमलनयन नारायण ने हिमालय पर दोनों भुजाएं ऊपर उठा कठोर तप किया। छियासठ हज़ार वर्षों तक वे केवल पवन पान करते रहे और इस प्रकार उन्होंने अपना शरीर सुखा डाला। फिर एक सौ बत्तीस वर्षों तक तप कर उन्होंने अपने तेज से पृथिवी और आकाश को परिपूर्ण कर दिया। जब उनका तप सिद्ध हो गया, तब उन्हें विश्वेश्वर, जगत् कारण, जगत्पति, समस्त देवताओं द्वारा स्तुति किये हुए, छोटे से छोटे और बड़े से बड़े महादेव जी ने दर्शन दिये। वे ईशान, वृषभ, हर, शम्भु, सब को चेतन करने वाले, स्थावर-जङ्गमात्मक विश्व के परमाधार, जिन्हें कोई धारण ही नहीं कर सकता, जिनकी सेवा करना बड़ा दुरूह कार्य है, अत्यन्त क्रोधी, उदारमना, सब के संहार के कारण, दिव्य धनुष और तूणीर को धारण करने वाले, सुवर्ण कवचधारी, असीम पराक्रमी, पिनाकधारी, वज्र-त्रिशूल-फरसा-गदा-खड्ग-धारी, श्वेतवर्ण, जटाजूट धारी, मुकुट की जगह चन्द्रमा धारण करने वाले, व्याघ्राम्बरीय, दण्डहस्त और गले में सर्प का यज्ञोपवीत धारण किये हुए, भूतों से परिवेष्टित, एक स्वरूप, तप के भाण्डार, वृद्ध विप्रों द्वारा मधुर वचनों से स्तूयमान; पृथिवी, जल, वायु, आकाश, दिशा, सूर्य, चन्द्रमा तथा जगत के प्रमापक, अधर्मियों एवं ब्रह्मद्वेषियों के नाशक और मोक्षदाता हैं। उनका दर्शन वे लोग नहीं पा सकते जो असदाचारी हैं। किन्तु शोकशून्य, एवं पापक्षीण ब्राह्मण उनका दर्शन पाते हैं। वासुदेव नारायण ऋषि उनके परम भक्त हैं। सो वे अपने तप के प्रभाव से दिव्य तेज से सम्पन्न साक्षात् धर्म रूप, जगद्वन्द्य एवं विश्वव्यापक महादेव के दर्शन कर पाये।

हे अश्वत्थामा! कमलनयन नारायण ऋषि ने तेजस्वरूप, रुद्राक्ष की माला धारण करने वाले जगत्स्रष्टा, वृषभवाहन अत्यन्त सुन्दर अङ्गों वाली

पार्वती के साथ सदा क्रीड़ा करने वाले, भूत प्रेतों से घिरे हुए, अज, अव्यक्त, सम्पूर्ण चराचर प्राणियों के कारणात्मा महात्मा रुद्र ईशान का दर्शन कर, और हर्षित हो उनको प्रणाम किया। तदनन्तर नारायण ऋषि अन्धकासुर का नाश करने वाले, विरूपाक्ष रुद्र को नमस्कार कर, भक्तिभाव सहित इस प्रकार स्तव करने लगे—हे वरद! हे देवदेव! जो इस चराचरात्मक जगत् के रक्षक हैं, समस्त प्राणियों के रचयिता हैं, देवताओं के पूर्व प्रजापति हैं, वे तुम्हींसे प्रकट हो कर और पृथिवी तथा प्रकृति में प्रविष्ट हो, तुम्हारी रचित प्राचीन सृष्टि की रचना करते हैं। देवता, असुर, गन्धर्व, यक्ष, राक्षस, सर्प और पक्षी आदि समस्त प्राणी तुम्हारे ही प्रभाव से पैदा होते हैं। इन्द्र, यम, वरुण, कुबेर और चन्द्रमादि दिक्पाल, तथा त्वष्टा आदि प्रजापति तुम्हारे ही प्रभाव से अपने अधिकार युक्त कर्तव्यों का पालन किया करते हैं। शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध, पृथिवी, आकाश, वायु, जल, अग्नि, काल, ब्रह्मा, वेद और ब्राह्मण—ये सब तुम्हींसे उत्पन्न हुए हैं। यह जगत् जैसे जल में से उत्पन्न होकर, जल ही में लीन हो जाता है, वैसे ही सारा जगत् भी प्रलय के समय आपस ही में लीन हो जाता है। तत्व को जानने वाले पण्डित इस प्रकार तुमको प्राणिमात्र की उत्पत्ति और प्रलय का कारण जान कर, तुम्हारा सायुज्य प्राप्त करते हैं। हे देव! आप ही मानस रूप वृक्ष पर बैठने वाले जीव तथा ईश्वर रूप दो पक्षी, चार स्कन्ध और अनेक शाखाओं से युक्त सप्त लोक रूप फल के भोक्ता तथा द्रष्टा हैं और समस्त शरीर की पालक दस इन्द्रियों के रचयिता हैं। तिस पर भी आप इन सब से भिन्न परमात्मा हैं। आप भूत, भविष्यत् और वर्तमान काल रूप हैं। ये समस्त लोक आप ही से उत्पन्न हुए हैं। मैं आपका भक्त हूँ और आपका भजन किया करता हूँ। अतः आप मेरे ऊपर कृपा करें और मेरे मन में काम, क्रोध, मोह आदि अहितकारिणी वृत्तियों को उत्पन्न कर के मेरा नाश न करें। हे देववर्य! तत्वदर्शी जन आपको अपने आत्मा से अपृथक् जान कर निष्काम परब्रह्म को पाते हैं। मैं आपको आत्मरूप जान कर, केवल

आपके समान होने की इच्छा ही से आपका स्तव करता हूँ। मेरे द्वारा स्तव किये हुए आप मुझे अभीष्ट वर दीजिये और माया को मेरे प्रतिकूल न होने दीजिये।

व्यास जी बोले कि जब नारायण ऋषि ने इस प्रकार स्तुति की ; तब पिनाकहस्त शिव जी ने नारायण को वर दिया। वे बोले—हे नारायण! तुम मेरे अनुग्रह से ऐसे बलवान होओगे कि मनुष्य, देवता और गन्धर्वों की जाति में तुम्हारे समान कोई न निकलेगा। देवता असुर बड़े बड़े नाग, पिशाच, गन्धर्व, यक्ष, राक्षस, सुपर्ण, नाग तथा सिंह व्याघ्र आदि कोई भी प्राणी तुम्हारे सामने आ कर न टिक सकेगा। यहाँ तक रण में देवता भी तुम्हें पराजित न कर सकेंगे। मेरे अनुग्रह से कोई भी पुरुष शस्त्र से, वज्र से, अग्नि से, वायु से, तर से, सूखे से, चराचर से तुम्हें पीड़ा न होगी। तुम रण में पहुँचने पर मुझसे भी अधिक बली हो जाओगे। इस प्रकार श्रीकृष्ण ने पहले ही महादेवजी से ये वरदान प्राप्त कर लिये हैं, और यह देव अपनी माया से जगत को मुग्ध करते हुए, जगत् में विचरते हैं। रहा यह अर्जुन—सो यह नारायण ऋषि के तप ही से उत्पन्न हुआ है। यह नर नामक महामुनि है और इसे तुम नारायण ही तुल्य समझो। ब्रह्मा, विष्णु और रुद्र नामक देवताओं में ये नर नारायण नाम के दोनों ऋषि पूर्ण तपस्वी हैं। ये लोकों को मर्यादान्वित रखने के लिये प्रति युग में धराधाम पर अवतीर्ण होते हैं। हे अश्वत्थामा! तू बड़ी कठोर तपस्या के कारण एवं धर्म कर्म से तेज और क्रोध को धारण करने वाले रुद्र का अंशावतार है। अतः तू देवता के समान तथा बड़ा बुद्धिमान है। तूने इस जगत् को शिव मय जान कर, शङ्कर को प्रसन्न करने की इच्छा से नियम द्वारा पूर्वकाल में अपने शरीर को लटा डाला था। हे मानद! तूने तेजस्वी दिव्य शरीर धारण कर, जब होम और बलि द्वारा, श्रीशिव जी का पूर्वजन्म में आराधन किया था ; तब शिव जी तेरे ऊपर प्रसन्न हो गये थे। हे विद्वन्! तब तूने जो जो वर माँगे थे, वे सब तुझे दिये थे।

श्रीकृष्ण और अर्जुन के तुल्य तेरे भी जन्म कर्म और तप विपुल हैं; किन्तु उन दोनों ने सूक्ष्म शरीर से शिव जी की उपासना की थी और तूने शिवजी की प्रतिमा बना, उसका पूजन किया था। जो पुरुष शिव जी को सर्वस्वरूप जान कर प्रतिमा में उनका पूजन करता है, उस पुरुष को सनातन आत्मज्ञान की तथा सनातन शास्त्रज्ञान की प्राप्ति होती है। इस प्रकार विश्व देव, सिद्ध और परमर्षि अविकारी एक शिवजी का पूजन कर, उनकी प्रार्थना करते हैं। क्योंकि भगवान् शङ्कर समस्त जगत को उत्पन्न करने वाले, पालनकर्त्ता और संहारकर्त्ता हैं। यह श्रीकृष्ण रुद्र से उत्पन्न हुए हैं और रुद्र के परम भक्त हैं। अतः सनातन श्रीकृष्ण का यज्ञ द्वारा यजन करना चाहिये और समस्त प्राणियों की उत्पत्ति का स्थान जान, जो जन शिवलिङ्ग का पूजन करता है—उसके ऊपर शिव जी बहुत अधिक प्रसन्न होते हैं।

सञ्जय ने कहा—हे धृतराष्ट्र! वेदव्यास जी के इन वचनों को सुन महारथी अश्वत्थामा ने रुद्र को प्रणाम किया और श्रीकृष्ण को परम पुरुष जाना। व्यासजी से इस पुरातन वृत्तान्त को सुन कर, अपने मन को संयम से रखने वाले अश्वत्थामा के रोंगटे खड़े हो गये। उसने महर्षि वेदव्यास को नमस्कार किया और पुनः सेना की ओर जा कर, उसको छावनी की ओर लौटने की आज्ञा दी। हे राजन्! रण में जब द्रोणाचार्य मारे गये, तब कौरवों और पाण्डवों की सेना उदास हो अपने शिविरों में चली गयी। विप्रवर द्रोणाचार्य पाँच दिन तक युद्ध कर और एक अक्षौहिणी सेना का नाश कर, ब्रह्मलोक को गये।

दो सौ दो का अध्याय

शिवस्वरूप निरूपण

धृतराष्ट्र ने पूँछा—सञ्जय! जब धृष्टद्युम्न ने अतिरथी द्रोणाचार्य को मार डाला, तब मेरे पुत्रों और पाण्डवों ने जो कुछ किया हो सो मुझे बतलाओ।

सञ्जय ने कहा—हे राजन्! जब धृष्टद्युम्न ने अतिरथी द्रोण को मार डाला; तब कौरवों की सेना भाग खड़ी हुई। उस समय विस्मयोत्पादक अपना विजय देख तथा स्वेच्छा से अपने निकट आये हुए वेदव्यास को देख अर्जुन ने उनसे पूँछा—हे महर्षे! जब मैं अपने पैने बाणों से वैरियों का संहार कर रहा था, तब मैंने देखा कि, मेरे सामने, अग्नितुल्य तेजस्वी एक पुरुष चमचमाता त्रिशूल हाथ में ले कर खड़ा था। वह जिधर जाता उधर ही की शत्रुसैन्य छिन्न भिन्न हो भाग जाती थी। लोग समझते थे कि, शत्रुसैन्य के भागने का कारण मैं ही हूँ, किन्तु मैं तो भागते हुए योद्धाओं का पीछा कर, उन पर बाण चलाता था। उस महातेजस्वी पुरुष ने न तो अपने पैरों से पृथिवी का स्पर्श किया और न अपने चमचमाते त्रिशूल ही से काम लिया। किन्तु उसके तेज व प्रभाव से उसके हाथ के त्रिशूल से सहस्रों त्रिशूल निकलने लगे थे। हे भगवन्! सूर्य समान तेजस्वी अलौकिक प्रभाव युक्त वह त्रिशूलधारी पुरुषोत्तम कौन हैं? यह आप मुझे बतलावें।

श्रीवेदव्यास जी बोले—हे अर्जुन! जो प्रजापतियों से भी पूर्व निग्रह अनुग्रह करने में समर्थ, सम्पूर्ण प्राणी तथा सम्पूर्ण लोकों के आदि कारण, समस्त लोकों के सृष्टिकर्त्ता, सर्वव्यापी, तेजस्वरूप, शङ्कर, ईशान, वरदाता, और तैजस पुरुष हैं, तुम्हें उन्हींका दर्शन हुआ है। अतएव तुम उन वृषभ-वाहन, सम्पूर्ण जगत् के स्वामी, देवदेव महादेव के शरण में जाओ। वे महादेव, महात्मा, ईशान, जटिल, शिव, त्रिनेत्र, महाभुज, रुद्र, शिखी, चीरवासा, महादीप्तिमान, हर, स्थाणु, वरद, जगन्नियन्ता, जगत्प्रधान,

अजेय, जगत्पति और सम्पूर्ण प्राणियों के ईश्वर हैं। वे ही इस सम्पूर्ण जगत के उत्पन्न करने वाले, मूलस्वरूप, सर्वजयी, जगत की गति रूप, विश्वात्मा, विश्वचर, सम्पूर्ण कर्मों के नियोगकर्त्ता, प्रभु, शम्भु, स्वयम्भू, सब प्राणियों के स्वामी, भूत, भविष्यत् और वर्त्तमान काल के अधिष्ठान, योगमूर्त्ति, योगेश्वर, सर्वमय, सर्वलोकेश्वर के भी नियन्ता हैं। वे सर्वश्रेष्ठ, जगत्श्रेष्ठ, वरिष्ठ, परमेष्ठी, तीनों लोकों के विधाता और तीनों लोकों के अद्वितीय आश्रय स्वरूप हैं। वे दुर्जेय, जगन्नाथ, जन्म-मृत्यु-जरा से रहित हैं। वे शान्तात्मा, ज्ञानगम्य, ज्ञानप्रधान और कठिनाई से जानने योग्य हैं। वे ही प्रसन्न हो के भक्तों के अभीष्टों को पूरा करते हैं। वामन, जटिल, मुण्ड, ह्रस्वग्रीव, महोदर, महाकाय, महोत्साह और महाकर्ण आदि विकृताखन, विकृत चरण, विकृत वेष, अनेक रूपधारी और दिव्य मूर्तिवाले उनके बहुत से पारिषद् हैं। वह महादेव अपने उन पारिषदों से सदा पूजित हुआ करते हैं। हे तात! वह तेजस्वी महादेव ही प्रसन्नता के सहित रणभूमि में तुम्हारे आगे आगे गमन करते हैं। धनुर्धर वीरों में अग्रगण्य अनेक रूपधारी देवों के देव महादेव के अतिरिक्त इस महाघोर एवं रोएं खड़े करने वाली भयङ्कर रणभूमि में भीष्म, द्रोण, कर्ण और कृपाचार्य आदि युद्ध में प्रशंसित महाधनुर्धर वीरों से रक्षित कौरवों को पराजित करने की क्या कोई कल्पना भी कर सकता है; किन्तु महादेव के आगे उनके विरुद्ध कोई भी साहस नहीं कर सकता। क्योंकि तीनों लोकों में कोई भी भगवान् रुद्र के समान पराक्रमी नहीं है। अधिक क्या कहूँ—रणक्षेत्र में यदि भगवान् शम्भु क्रुद्ध हो कर खड़े हों तो शत्रु लोग उन्हें देख कर ही काँपते हुए मूर्छित से हो भूमि पर गिर पड़ते हैं। देवता, मनुष्य, आदि सभी महादेव को नमस्कार कर, स्वर्ग में वास करते हैं। विशेष क्या कहा जाय—जो लोग अत्यन्त ही भक्ति के साथ वरद रुद्रदेव, उमापति शिव को प्रणाम करते हैं, वे इस लोक में परमसुख पा कर, अन्त समय परमगति पाते हैं। हे अर्जुन! उस शान्त, रुद्र, शितिकण्ठ, कनिष्ठ, महातेजस्वी, कपर्दी, कराल, हरिनेत्र, वरदाता, याम्य, अव्यक्तकेश, सदाचारी,

शङ्कर, काम्य देव, पिङ्गलनेत्र, स्थाणु, पुरुषप्रधान, पिङ्गलकेश, मुण्ड, कृश, उद्धारकर्त्ता, भास्कर, सुतीर्थ, वेगवान, बहुरूप, सर्वप्रिय, प्रियवासा, देवदेव, महादेव को प्रणाम है। उस उष्णीषधारी, सुवक्र, सहस्राक्ष, पूज्य, प्रशान्त, यतिस्वरूप, चीरवासा, गिरीश, कपर्दी, कराल, उग्र, दिक्पति, पर्जन्यपति, भूतस्वामी को नमस्कार है। जिसका विश्रामस्थल विविध भाँति के पेड़ों से सुशोभित है, उस सेनानायक, मध्यम, स्रुवहस्त, धन्वी, भार्गव, बहुरूप, विश्वपति, चीरवासा, सहस्रशिर, सहस्रनेत्र, सहस्रबाहु, सहस्रचरण महादेव को प्रणाम है। हे अर्जुन! तुम दक्षयज्ञ के नाश करने वाले, विरूपाक्ष, वरद, त्रिलोकेश्वर, उमापति के शरण में जाओ। मैं भी उस प्रजापति, अव्यग्र, अव्यय, भूतपति, कपर्दी, वृषावर्त्त, वृषनाभ, वृषभध्वज, वृषदर्प, वृषपति, वृषशृङ्ग, वृषश्रेष्ठ, वृषाङ्क, वृषभोदर, वृषभेक्षण, वृषशर, वृषमूर्ति, महेश्वर, महोदर, महाकाय, वाघाम्बरी, लोकेश्वर, वरदाता, मुण्डी, ब्रह्मण्यदेव, ब्राह्मणप्रिय, त्रिशूलपाणि, वरप्रद, असिचर्मधारी, निग्रहानुग्रह समर्थ, पिनाकी, लोकेश्वर, जगत्पति, शरणागतरक्षक, एवं वल्कल वस्त्रधारी शङ्कर के मैं शरणागत होता हूँ। जिनके कुबेर मित्र हैं—उस शङ्कर को प्रणाम है। सुन्दर वस्त्र पहनने वाले, पार्षदों एवं पिनाक पर अनुराग रखने वाले, धनुष की प्रत्यञ्चा रूप, धनुषरूप, धनुर्वेद के आचार्य, उग्रायुध एवं देवश्रेष्ठ महादेव को नमस्कार है। स्थाणुमूर्ति को नमस्कार है, तपस्वी शङ्कर को प्रणाम है। त्रिपुरान्तक शिव को नमस्कार है। भगदेवता के नेत्रों का नाश करने वाले शिव को नमस्कार है। वनस्पतियों और नरों के पति को नमस्कार है। मातृकाओं के और नरों के पति को प्रणाम है। वाणियों के पति और यज्ञों के पति शङ्कर को नित्य प्रणाम है। जलों के स्वामी और देवों के देव को सदा प्रणाम है। पूषादेवता के दाँत तोड़ने वाले, त्रिनयन, वरद, नीलकण्ठ, पिङ्गलवर्ण, सुवर्णकेश श्रीशङ्कर को प्रणाम है। अब मैं तुम्हे महादेव जी के गुणानुवाद जो मैंने सुने हैं, अपनी बुद्ध्यानुसार सुनाता हूँ। सुनो। श्रीशङ्कर जब कोप करते हैं, तब देवता, दैत्य, गन्धर्व, और राक्षस

जो पाताल में घुस जाते हैं, वे भी सुख से नहीं रहने पाते । प्रथम यज्ञ करने वाले दक्ष ने विधिपूर्वक यज्ञ किया था । उस यज्ञ में जब महादेवजी को आमंत्रण न मिला, तब वे कुपित हुए । उन्होंने निष्ठुर हो, बाण मार दक्ष को घायल किया और फिर बड़ा सिंहनाद किया । उसमें निमंत्रण न होने से शिव जी के कुपित होने पर, यज्ञमण्डप में बड़ी गड़बड़ी मचो । धनुष के रोदे से तथा पाणितल के शब्द से सब लोक विकल हो गये । हे अर्जुन ! समस्त देवता और दानव घबड़ा कर गिर पड़े । नदियों के प्रवाह रुक गये, पृथिवी काँप उठी, पहाड़ डगमगाने लगे । दिशाएँ और दिक्कुञ्जर मोहित हो गये । प्रगाढ़ अन्धकार छा जाने से कुछ भी न देख पड़ने लगा । श्रीमहादेवजी ने सूर्य सहित समस्त तेजोमय पदार्थों की प्रभा नष्ट कर डाली । समस्त प्राणियों और अपने को सुखी करने की इच्छा रखने वाले ऋषिगण भयभीत हो गये और शुद्ध हो शान्तपाठ पढ़ने लगे । पुरोडाश खाते हुए पूषादेवता की ओर शङ्कर हँसते हुए से दौड़े और उसके दाँत तोड़ डाले । यह देख अन्य समस्त देवगण शङ्कर को प्रणाम कर वहाँ से नौ दो ग्यारह हो गये । तब सधूम और चिनगारियों से युक्त अग्नि तुल्य तेज़ बाण उन्होंने देवताओं की ओर ताने । तब सब देवताओं ने पुनः महेश्वर को प्रणाम किया । फिर शङ्कर के लिये यज्ञ से अलग भाग निकाला । हे राजन् ! जब वे सब भयभीत हो महादेव जी के शरण में गये, तब वे शान्त हुए और उस यज्ञ को पूर्ण किया । उस समय जो देवगण भयभीत हो भाग गये थे, वे अब तक उनसे भयभीत रहते हैं । पूर्वकाल में तीन बड़े पराक्रमी असुर आकाश में फिरा करते थे । उनके तीन नगर सोने चाँदी और लोहे के थे । तीनों नगर बहुत बड़े थे । इन तीन में कमलाक्ष का नगर सोने का, तारा‍क्ष का चाँदी का और विद्युन्माली का लोहे का था । इन नगरों में से किसी को किसी अस्त्र शस्त्र से तोड़ने की शक्ति इन्द्र में भी न थी । अतः इन्द्रादि समस्त देवता दुःखित हो रुद्र के शरण में गये और उन सब ने रुद्र से कहा— त्रिपुरनिवासी भयानक दैत्य ब्रह्मा जी के वरदान से गर्वीले हो गये हैं । वे

सब लोगों को बड़ा कष्ट देते हैं। अतः हे देव! देवेश! हे महादेव! आपको छोड़ कोई भी इन देवताओं के शत्रु दैत्यों में से नहीं मार सकता। अतः आप इनका नाश कीजिये। हे रुद्र! वे भयानक असुर सब प्रकार से पशुवत् हैं। अतः आप इन असुरों का नाश कीजिये।

जब इस प्रकार देवताओं ने महादेव जी से कहा—तब शङ्कर ने तथास्तु कह कर, देवताओं का हित करने के लिये, गन्धमादन और विन्ध्याचल को रथ के दोनों ओर की छोटी ध्वजाएं बना कर ससागरा और वनों सहित पृथिवी को रथ बनाया। महादेव जी ने नागराज शेष को रथ की धुरी बनाया। चन्द्रमा और सूर्य को रथ के दोनों पहिये बनाये इलापत्र के पुत्र एवं पुष्पदन्त को जुए के अन्त का बन्धन मलयाचल के रथ का जुआ, तक्षक को तीन लकड़ियों वाले जुए के बाँधने की रस्सी और समस्त प्राणियों को रास बनाया। उस रथ के चारों वेद चार घोड़े बने, उपनिषदें लगाम बने। महादेव ने गायत्री सावित्री को डोरी बना ओंकार का चाबुक बनाया! ब्रह्मा को सारथि, मन्दराचल को गाण्डीव धनुष, वासुकि को धनुष की डोरी, विष्णु को बाण, अग्नि को बाण का फलक. वायु को बाण के दोनों पंख, यम को बाण की पूँछ, विद्युत को बाण की धार और मेरु को रथ की ध्वजा बनाया। इस प्रकार सर्वदेवमय दिव्य रथ को तैयार किया। तदनन्तर अतुल पराक्रमी, असुरों का नाश करने वाले महान् योद्धा महादेव जी त्रिपुर दैत्यों का नाश करने को उस रथ पर सवार हुए। उस समय तपोधन महर्षि और देवगण उनका स्तव करने लगे। विकार रहित भगवान् शङ्कर ने माहेश्वर नाम का व्यूह बनाया। फिर एक हज़ार वर्षों तक उस रथ में स्थाणु रूप से रह कर वे तीनों पुरों के इकट्ठे होने की राह देखते रहे। जब तीनों नगर अन्तरिक्ष में एक स्थान पर एकत्रित हो गये; तब शङ्कर ने तीन पर्व वाले बाण से, तीनों नगरों को तोड़ दिया। उस समय शङ्कर का ऐसा तेज था कि, उनकी ओर अन्य आँख उठा देख तक न सकते थे।

विष्णु और सोम के तेज से पूर्ण कालाग्नि जैसे उसे बाण ने उन तीनों नगरों को जलाना आरम्भ किया। उस समय देवी उमा पंचशिख बालक को गोद में ले, उस दृश्य को देखने के लिये वहाँ आयी थी और उसने देवताओं से पूंछा था कि ये तीनों नगर कौन जला रहा है? यह सुन इन्द्र के मन में असूया पैदा हुई और उन्होंने वज्र प्रहार करना चाहा। तब सर्व सामर्थ्य युक्त लोकेश्वर परमात्मा ने मुसक्या कर, क्रुद्ध इन्द्र की भुजा स्तम्भित कर दी। इन्द्र की भुजा स्तम्भित होते ही वे देवताओं सहित झट ब्रह्मा जी के शरण हुए। देवताओं ने हाथ जोड़ कर और मस्तक नवा कर ब्रह्मा जी से कहा—हे ब्रह्मदेव! पार्वती की गोद में बालक रूपधारी कोई अद्भुत पुरुष बैठा था। उसे हमने प्रणाम न किया। अतः हम आपसे पूंछते हैं कि, जिसने युद्ध किये बिना ही खेल ही खेल में हम लोगों को तथा हमारे राजा इन्द्र को परास्त किया, वह है कौन?

ब्रह्मवेत्ताओं में श्रेष्ठ ब्रह्मा जी ने उनकी बात सुन और ध्यान धर कर, देखा तो उन्हें जान पड़ा कि, वह अपार तेज वाला बालक, स्वयं शङ्कर ही थे। यह जान लेने बाद उन्होंने उनसे कहा—वह चराचरात्मक जगत के स्वामी भगवान् शङ्कर ही थे। इन महेश्वर से श्रेष्ठ अन्य कोई देवता है ही नहीं। तुमने पार्वती के साथ जिस अमित कान्ति सम्पन्न बालक को देखा, वे भगवान शङ्कर थे। उन्होंने पार्वती के लिये बालक का रूप धारण किया था। अतः अब तुम मेरे साथ उन्हीं बाल रूप धारी शङ्कर की शरण गहो। भगवान् महादेव समस्त लोकों के प्रभु हैं। किन्तु देवता उन भुवनपति के स्वरूप को नहीं पहचान सके। तदनन्तर ब्रह्मा जी के साथ वे सब देवता बालसूर्य जैसी कान्ति वाले महेश्वर के निकट गये और ब्रह्मा ने महेश्वर शङ्कर का दर्शन कर और उन्हें श्रेष्ठ जान प्रणाम किया। फिर वे इस प्रकार उनकी स्तुति करने लगे। ब्रह्मा जी ने कहा—आप, यज्ञ रूप हैं और त्रिलोकी की गति एवं परमपद रूप हैं। आप इस चराचरात्मक विश्व में व्याप रहे हैं। हे भगवन्! हे तीनों कालों के नियामक!

हे लोकनाथ! हे जगत्पति! आपने क्रोध कर के इन्द्र को पीड़ित किया है। अब इन्द्र के ऊपर आप प्रसन्न हों।

व्यास जी बोले—ब्रह्मा जी के इन वचनों को सुन, महादेव जी प्रसन्न हो गये और प्रसन्न हो उन्होंने अट्टहास किया। तदनन्तर देवताओं ने उमा को और रुद्र को प्रसन्न किया। इन्द्र का जो हाथ सुन्न हो गया था; वह फिर अच्छा हो गया। दक्ष-यज्ञ-विध्वंस करने वाले, देवताओं में श्रेष्ठ उमापति, भगवान् शङ्कर देवताओं के ऊपर प्रसन्न हुए। शङ्कर—रुद्र, शिव, अग्नि, सर्ववेत्ता, इन्द्र, वायु, अश्विनीकुमार तथा विद्युत रूप हैं। वही भव, मेघ, सनातन महादेव हैं। वही काल, वही अन्तक रूप मृत्यु, वेही यमरात्रि और दिन हैं। वही धाता, विधाता, विश्वात्मा, विश्वकर्त्ता तथा देहरहित होने पर भी समस्त देवताओं के शरीरों को धारण करने वाले हैं। समस्त देवता उनकी एक प्रकार से, बहुत प्रकार से, सैकड़ों प्रकार से, सहस्रों प्रकार से और लाखों प्रकार से अनेक बार स्तुति करते हैं। उन महादेव की दो मूर्तियों का रहस्य, केवल ब्राह्मण ही जानते हैं। उन दो मूर्तियों में एक घोर और दूसरी शिव अर्थात् कल्याणकारिणी है। फिर ये दोनों प्रकार की मूर्तियाँ भी अनेक प्रकार की हैं। अग्नि और व्यापक सूर्य शङ्कर की घोर मूर्ति है और उसका पूजन यातुधान करते हैं। इसी प्रकार चन्द्रमा, जल और ज्योति उनकी सौम्य मूर्ति है। पुराणों, वेदों, वेद के अंगों तथा उपनिषदों में जो परम रहस्य है वह महेश्वर देव ही हैं। अजन्मा महादेव के इतने ही गुण नहीं, बल्कि इनसे भी अधिक गुण हैं। हे पाण्डुपुत्र! मैं सहस्र वर्षों तक यदि उनके गुणों का वर्णन किया करूँ तो भी पूर्ण नहीं हो सकते। सब प्रकार के ग्रहों से ग्रस्त और समस्त पापी जन जब उनके शरणागत होते हैं तब वे उनको ग्रह-बाधा और पाप से मुक्त कर देते हैं। साथ ही वे उन पर दयालु भी हो जाते हैं और उनको आयु, आरोग्यता, ऐश्वर्य तथा धन दे कर उनकी अन्य बहुत सी कामनाएं पूरी कर दिया करते हैं। जब वे कुपित होते हैं तब सब का संहार कर डालते हैं। इन्द्रादि देवताओं में

जो ऐश्वर्य है, वह सब उन्हींका है। वे मनुष्यों के शुभाशुभ समस्त कामों में व्याप्त रहते हैं और अपने प्रताप से मनुष्यों के समस्त अभीष्ट पूर्ण किया करते हैं। महाभूतों के नियन्ता होने के कारण, वे जगदीश्वर एवं महेश्वर कहलाते हैं। वे ही इस जगत् में असंख्य रूपों को रख व्याप्त हैं। इनका जो मुख समुद्र में रह कर, जल रूप हवि को पीता है, वह बड़वामुख कहलाता है। यह महादेव नित्य काशी में वास करते हैं। जितेन्द्रिय एवं वीर संन्यासियों के आवासस्थान रूप काशी में मनुष्य इनका पूजन करते हैं। इन शङ्कर के प्रदीप्त और भयानक तथा अघोर अनेक रूप हैं। मनुष्य इनका सदा पूजन किया करते हैं और इनका कीर्तिगान करते हैं। वेद में भी शङ्कर की शतरुद्रिय और अनन्त-रुद्रिय नाम की उपासना का निरूपण किया गया है। इनके द्वारा मनुष्यों की और देवताओं की लौकिक तथा पारलौकि कामनाएं पूरी हुआ करती हैं। क्योंकि ये विश्वव्यापक हैं, महान् हैं, दण्ड तथा वर देने की शक्ति से ये सम्पन्न हैं। ये स्वयंप्रभु हैं और देवादिदेव हैं। इनके मुख से अग्नि, आदि उत्पन्न होते हैं। अतएव ब्राह्मण और मुनि इनको ज्येष्ठभूत नाम से कहते हैं। ये पशुओं का पालन करते हैं। उनके साथ क्रीड़ा करते हैं और उनके ऊपर प्रभुता करते हैं। अतः ये पशुपति कहलाते हैं। उनकी एक मूर्ति नित्य ब्रह्मचर्य धारण कर, समस्त लोकों को हर्षित करती है। अतः ये महेश्वर के नाम से विख्यात हैं। ऋषि, देवता, गन्धर्व और अप्सराएँ तथा अप्सराओं के ऊपर वाले लोक के निवासी, शिवलिङ्ग का पूजन करते हैं। क्योंकि इन शङ्कर के लिङ्ग की पूजा करने से महेश्वर अतीव प्रसन्न और सुखी होते हैं। यह चराचरात्मक रूप जगत् तथा त्रिकालात्मक काल शङ्कर का रूप है। अतः बहुरूपधारी होने से शङ्कर बहुरूपी कहलाते हैं। शङ्कर के समस्त स्थानों में नेत्र होने पर भी उनका धधकते हुए अग्नि जैसा एक नेत्र है, जो महादेव के क्रुद्ध होने पर खुलता है और उसके खुलते ही सारा जगत् भस्म हो, नष्ट हो जाता है। इसीसे वे सर्व नाम से प्रसिद्ध हैं। उनका रूप क्रोधमय है। अतएव वे धूर्जटि

कहलाते हैं। विश्वदेवता इनमें निवास करते हैं। अतः वे विश्वरूप कहलाते हैं। भुवनपति शङ्कर आकाश, जल और पृथिवी अर्थात् स्वर्ग, मर्त्य और पाताल लोकों का पालन करते हैं। अतः इनका नाम त्र्यम्बक कहलाता है। वे सब लोगों के कार्यों में अर्थवृद्धि करते हैं तथा मनुष्यों का कल्याण चाहते हैं—इसीसे वे शिव कहलाते हैं। उनके सहस्रों नेत्र हैं तो भी वे समदृष्टि से सब का पालन करते हैं। अतः वे महादेव कहलाते हैं। वे ऊर्द्ध प्रदेश में रह कर, प्रकाशित होते हैं, प्राणियों की उत्पत्ति, स्थिति के कारण हैं और सदैव स्थिरमूर्ति हैं। अतः वे स्थाणु कहलाते हैं। त्र्यम्बक के नेत्र के प्रकाश के कारण, सूर्य एवं चन्द्र की जगत में प्रकाशित कान्ति महादेव की केशरूपिणी है। इसीसे वे व्योमकेश कहलाते हैं। यह त्रिकालात्मक विश्व शिव जी से उत्पन्न होता है। क्योंकि वे भूत, भव्य और भवोद्भव हैं, अतः वे भव कहलाते हैं। कपि का अर्थ श्रेष्ठ और वृष का अर्थ धर्म है—अतः वे वृषाकपि कहलाते हैं। ब्रह्मा, इन्द्र, वरुण, यम और कुबेर को जोरावरी पकड़, वे उनका संहार कर डालते हैं। अतः वे हर कहलाते हैं। महेश्वर ने दोनों नेत्र बंद कर, बरजोरी अपने ललाट में तीसरा नेत्र उत्पन्न किया था। अतः वे त्र्यक्ष के नाम से भी प्रसिद्ध हैं। समस्त प्राणियों के शरीरों में शिव जी का वास नृप प्राणरूप से है। इन दस में सम प्रीतिरूप है। पुण्यवान और पापियों के शरीरों में भी शिव जी प्राण अपान रूप से रहते हैं। जो लोग शिवलिङ्ग अथवा उनकी सावयव प्रतिमा का पूजन करते हैं, उन्हें बड़ा धन प्राप्त होता है। उनकी जंघाओं का आधा भाग आग्नेय और आधा भाग सोमरूप है। शेषमूर्ति शिव हैं। बहुत लोग कहते हैं कि शिव जी का आधा अङ्ग अग्न्यात्मक है और आधा सोमात्मक, उनकी महान, प्रदीप्त और तेजोमयी मूर्ति स्वर्ग में है। उसका नाम शिवा है। जो जठराग्निरूपी अति तेजोमयी मूर्ति मर्त्यलोक में है उसीका नाम घोरा है। शङ्कर शिवमूर्ति से ब्रह्मचर्य का सेवन करते हैं और घोर मूर्ति से सब प्राणियों का संहार करते हैं। शङ्कर

तीक्ष्ण, उग्र और प्रतापी हैं और सब को जला कर भस्म कर डालते हैं। उस मूर्ति द्वारा मांस, रुधिर तथा मज्जा को खाया करते हैं। अतः वे रुद्र कहलाते हैं।

हे अर्जुन! पिनाकपाणि जिन शिव को तूने रणभूमि में अपने सामने युद्ध करते देखा था, वे महादेव ही थे। हे अर्जुन! जयद्रथ-वध की प्रतिज्ञा करने के बाद स्वप्न में श्रीकृष्ण ने विशाल पर्वत पर जिनका तुझे दर्शन कराया था, वे यही महादेव जी थे। ये ही रण में तेरे आगे आगे चलते थे। इन्हींसे तुझे अस्त्र मिले थे और उन्हीं अस्त्रों से तूने दानवों को मारा था। हे अर्जुन! तुझे देवदेव शङ्कर का मैंने शतरुद्रिय आख्यान सुनाया। यह आख्यान धन, कीर्ति और आयु का बढ़ाने वाला है। यह वेद के समान पवित्र है और समस्त अर्थों को सिद्ध करने वाला, समस्त पापों को नाश करने वाला, अज्ञान, दुःख तथा भय को नाश करने वाला है। जो मनुष्य इन चार * रूपों को धारण करने वाले शिव के स्तोत्र को सुनते हैं; वे शत्रुओं को जीत कर, अन्त समय में निस्सन्देह रुद्रलोक में जाते हैं। शङ्कर का यह चरित्र सदा संग्राम में विजयप्रद है। जो इसका नित्य पाठ करता है या सुनता है उसका निरन्तर अभ्युदय होता है। जो मनुष्य महादेव जी में सदा भक्तिमान रहता है, उस पर महादेव जी प्रसन्न होते हैं और उसे उनसे उत्तम अभीष्ट वर प्राप्त होते हैं।

हे अर्जुन! तू जा और युद्ध कर। तू कभी पराजित न होगा, क्योंकि तेरे मंत्री, रक्षक और सदा निकट रहने वाले श्रीकृष्ण हैं।

सञ्जय ने कहा—हे धृतराष्ट्र! अर्जुन से यह कह व्यास जी वहाँ से चल दिये। महाबली द्विजश्रेष्ठ द्रोण पाँच दिवस भयङ्कर युद्ध कर मारे गये थे। वे मर्त्यलोक छोड़ ब्रह्मलोक को चले गये थे। वेद के स्वाध्याय से जो फल प्राप्त होता है, वही फल इस पर्व के पारायण से भी

* चार प्रकार के ब्रह्म, अयस्क, सूत्र और विराट।

मिलता है। इस पर्व में निर्भीक क्षत्रियों का महान् यश वर्णित है। जो जन इस पर्व का नित्य पारायण करता है, अथवा इसे सुनता है, वह बड़े बड़े पापों से छूट जाता है। इस पर्व का नित्य पारायण करने से अथवा नित्य सुनने से ब्राह्मण, यज्ञफल पाता है क्षत्रियों को विकट युद्ध में यश प्राप्त होता है, वैश्य तथा शूद्रों को पुत्र पौत्र और यथेच्छ अभीष्टों की प्राप्ति होती है।

द्रोणपर्व समाप्त